

का प्रचार कवसे और किसप्रकार से हुआ इतिहासों से वि
 ७७० में अवन्तिकापुरी अर्थात् पुञ्जैननगर में राजा भो
 वाठ्यविद्यामें अतिनिपुणथे उन्होंने ने पुष्पनाभक बन्दीजन
 अलङ्कारादि पदाये उमने उनको भाषा दोहों में अनुवाद
 भाषा काव्यकी नींव पड़ी तब से दिनभरि भाषा की उर
 तुलसीदास, केशवदास, बिहारीदास आदि कवियों ने
 निर्माण किये उनके शब्दों का ज्ञानदान केवल कोष
 प्रकारकी विद्या है और उनके विषय भिन्न २ हैं यथा
 चार, शब्दविचार, वाक्यरचना, छन्दरचना, उन
 शुद्धशुद्ध का ज्ञान होता है परन्तु वाक्य और छन्द
 ज्ञान न्यायशास्त्र से होता है और साहित्य संधान
 लालित्य और विचित्रता के काव्यमें आती है
 निकलना है अभिधान में एक २ शब्द के नाम
 है पर स्थानान्तर से भिन्न २ अर्थ दियेलाता
 कोषसंग्रहक पर रहना है क्योंकि वह शब्दों को अ
 भिन्न करना है वह शब्दों को इसद्वय से क्रमबद्ध करता
 के अर्थको जो लोग देखना चाहें तुरन्त निकल आवें व
 धातु, धातुर्थ, प्रत्ययादि की रचना का विषय ठीक न

का क० कर्म वाच्य का कर्म० करण वाच्यका म० अधिकरण वाच्य
भाववाच्य का भा० लिखा गया है ॥

मत्पय

अन, अ, ति, अ,

(संस्कृत में अनट, अल, क्ति, घञ्,) इन मत्पयों के योगसे शब्द निष्पन्न होता है (कहीं २ संज्ञा शब्द भी होता है) मकट हो कि अल मत्पय के ट, ल, काय में नहीं आते इस कारण अनट, अ स्थान में अन, अ को लिखते हैं अन, अ, (अनट, अल) के प्रायः सब ध्रुव पूर्ववर्ती इ, उ, अ, के स्थान में ए, ओ, अर्, होजाता है एवं धातु के स्थित इ, ई, के स्थान में अर् उ ऊ के स्थान में अर्, अर् अर् के स्थान अर् जाता है यथा तिप+अन=त्तेपन । विक्षिप+अ=विक्षेप । वि+अन=वध सञ्चि+अन=सञ्चयन इत्यादि ॥

ति (क्ति)

प्रायः सब धातु के अन्त्य में भाववाच्य में ति मत्पय होता है ति कभी न धातु में युक्त होजाता है यथा शक्+ति=शक्ति । कभी २ ति मत्पय के परे धातु के अन्तिम, एवं न, का लोप हो जाता है यथा गम्+ति=गति । आहन् +ति=आहति और कभी २ ति के परे धातु के अन्त स्थित म को न हो जाता है और मध्यम स्वर दीर्घ हो जाता भ्रम्+नि=भ्रान्ति इत्यादि ॥

अ (घञ्)

धातु के उत्तर भाववाच्य में अ मत्पय होता है अ मत्पय के योग से धातु के उपांत अ को आ हो जाता है और इ के स्थान में ए और उ को अर् होजाता है यथा स्मृ+अ=स्मृष्ट एवं अ मत्पय के योग के अन्त ई ई के स्थान में आर् उ ऊ के स्थान में आर् अर् अर् के आर् हो जाता है यथा अवि इ+अ=अविष्ट इत्यादि ॥

अक, वृ. इन, इण्णु, अन, उक, र, अ, आन, स्पमान, क्किप्, त, तव्य, अनीय, य, स, इ, य (संस्कृत क्रय से अक, वृण, णिन्, इण्णु, अन, उक, र, अ, आन, स्पमान ॥) क्किप्, त, तव्य, अनीय, य, वयप्, वयण्णु, सत्, मि, यस्-उक्त मत्स्ययोः का प्रयोग अर्थात् इत्यापाल, (अक=एक)

(अक=एक)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्यमें अक मत्स्य होता है अर्थात् धातु के साथ अक मत्स्य के योग से कर्तृबोधक शब्द निपद्य होता है अक मत्स्य के योग से धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आष् इत्यादि होजाता है एवं उपान्त का अदीर्घ आ- हो जाता है और इकारादिके स्थान में एकारादि होजाता है, एवं आकारान्त अकारान्त धातु के पीछे अक मत्स्य के पूर्व में य का आगम होजाता है यथा नी + अक=नायक, पठ + अक=पाठक, भिद् + अक=भेदक, कु० + अक=कारक, दा + अक=दायक ॥

(वृ=वृण)

धातु के उत्तर वृ मत्स्य होने से कर्तृवाच्य होता है वृ मत्स्य के योग से धातु के अन्त्य और उपांतिप इकारादिके स्थान में एकारादि होजाता है यथा नी + वृ=नेता, नी + वृ=नेता, स्तु + वृ=स्तोता, कृ + वृ=कर्ता, हृ + वृ=हर्ता, आ, हृ + वृ=आहर्ता, बिद् + वृ=वेत्ता, भिद् + वृ=भेत्ता ॥

(इन्=णिन्)

धातु के परे कर्तृवाच्य में इन् मत्स्य होता है इन् मत्स्य के योग में धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आष् प्रभृति होजाता है एवं उपांत के अ को आ हो जाता है और इकारादिके स्थान में एकारादि होजाता है एवं अकारान्त धातु के उत्तर इन् मत्स्य के परे यकार का आगम होता है यथा शी + इन्=शायी, वद + इन्=वादी, भिद् + इन्=भेदी, स्था + इन्=स्थायी, दा + इन्=दायी, पा + इन्=पायी, या + इन्=यायी ॥

(इण्णु)

चर, सर, वृष्ट, निर, आ, कृ, और कई एक धातु के उत्तर में कर्तृवाच्य में इण्णु मत्स्य होता है इण्णु मत्स्य के योग से धातु के अन्त्य और उपांतिप इकारादि एकारादि होजाता है यथा चर + इण्णु=चरिण्णु, वृष्ट + इण्णु=वृष्टिण्णु, अलं, कृ + इण्णु=अलंकरिण्णु इत्यादि ॥

योग्यार्थ और कर्मवाच्य

(तव्य)

यह प्रत्यय प्रायः बहुत धातुओं के साथ योग किया जाता है प्रायः योग्यार्थ और कर्मवाच्य में तव्य होता है तव्य के योग में धातु के अन्त्य किंवा उपान्त स्थित इकारादिके स्थान में एकारादि हो जाता है । एवं जिस धातु का (औ) अनुबन्ध नहीं है ऐसे धातु के उत्तर एवं वृ, विव, धि, दी, शो, पू, रु, लु, स्तु, चि, क्षण, धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकारका आगम हो जाता है तद्भिन्न एक स्वर आ, इ ई, उ ऊ, और अकारान्त धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकारका आगम नहीं होता है यथा चि + तव्य = चेतव्य, बुध + तव्य = बोद्धव्य, दा + तव्य = दातव्य ॥

कर्मवाच्य और योग्यार्थ

(अनीय)

यह प्रत्यय प्रायः सकल धातु के उत्तर कर्मवाच्य और योग्यार्थ में होता है अनीय प्रत्यय के योग में धातु के अन्त्य इ ई, उ ऊ, अ के स्थान में अय, अय् अर् हो जाता है एवं उपान्त के इकारादिके स्थान में एकारादि हो जाता है यथा चि + अनीय = चयनीय, भिद् + अनीय = भेदनीय, भज्, यज्, जप्, आ, नम् धातु के उत्तर एवं जिन सब धातुओं के साथ (य = वयप्) किंवा (य = वयप्) प्रत्यय का योग नहीं किया जाता है तिसके परवात् प्रायः कर्मवाच्य में और योग्यार्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के योग में तव्य प्रत्ययान्त धातु के अः नुसार स्वरका परिवर्तन होता है अर्थात् बदल जाता है एवं धातु का अन्त्य आ एकारसे परिवर्तित होता है यथा चि + य = चेय, भिद् + य = भेय, दा + य = देय, धा + य = धेय, हा + य = हेय, वि-हा + य = विहेय ।

(य = वयप्)

वृ, दृ, भृ, स्तु, इ, शम् एवं अकारान्त धातु के उत्तर एवं और वई एक धातु के उत्तर प्रायः कर्मवाच्य निष्प (य, वयप्) प्रत्यय होता है कृ, वृप्, मृत्, गुद्, दुद्, शम्, सम्प्रभृति वा अपि अभिपूर्वक ग्रह धातु के उत्तर विकल्पा से (य, वयप्) होता है य प्रत्यय के योग में धातु के स्वरका परिवर्तन नहीं होता अर्थात् नहीं बदलता यथा भृत् + य = भृय, गुह् + य = गुह्य परन्तु वृ, आ, दृ, स्तु, कृ धातु के उत्तर (य, वयप्) प्रत्यय के पूर्व तका आगम हो जाता है यथा भृ + य = भृय, आ, दृ + य = मादय ।

इकारान्त वा उकारान्त एवं इत्यन्त अथवा अकारान्त धातु के उत्तर कर्म-
वाच्य में (य, ध्यण्) होजाता है य मत्पय के योग में धातु के इकारादि
अन्त्यस्वर आय् आदि के रूप में बदलजाता है एवं उपान्त्यका इकारादि
स्वर एकारादि में परिवर्तित होजाता है एवं जन्, वञ धातुको छोड़ अन्य
धातुका उपान्त्य अ को आ होजाता है यथा भृ + य = भ्राज्य, दुह + य = दौघ,
क्रम् + य = क्राम्य ।

(इ, जि)

धातुके परे मेरुणार्थ में और स्वार्थ में इ मत्पय होता है इस मत्पय के होने
में मृन्द निष्पन्न नहीं होता है धातु के उत्तर इ मत्पय क्रियाभाष तिसके परे
और कोई एक मत्पय करते हैं इ मत्पय के परे धातु के अन्त्य इकारादि के
स्थान में आय् इत्यादि एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि हो-
जाता है परन्तु कभी २ इ मत्पय का लोप होजाता है वा कभी इ मत्पयका परि-
वर्तन अय् से होजाता है यथा कृ + इ + त = कारित, कृ + इ + वृ = कारयिता,
जुर् + इ + न = जोरित ।

(स, सन्)

धातुके परे इच्छार्थ में स मत्पय होता है इस स मत्पय के करने में और एक
मत्पयका योग होता है स मत्पय के परे एक स्वर के सहित धातुके आय् उत्तर
की द्विक्रिती अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विक्रिती के क को ख होजाता है
और ग को ग और भ को ब एवं प को द होता है यथा कृ + स = आ = चि-
कीर्षी, पा + स = आ = पिपासा, गुप् + स = आ = जुगुप्सा ।

स मत्पय के परे लभ्, दा, आप् के स्थान में क्रयणः लिप्, दिव्, इप्
होजाता है यथा लप् + स = आ = लिप्सा, दा + स = आ = दिप्सा, बि-
पाप् + स = आ = बीप्सा ।

(य, यद्)

धातु के उत्तर पुनः पुनः अर्थात् बारंबार अर्थ में य मत्पय होता है य
मत्पय के परे एक मत्पय और होता है य मत्पयके परे एकस्वर सहित धातुके
आय् अर्थात् द्विक्रिती अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विक्रिती के क को ख होजाता
है ग को ग और प को द एवं भ को ब होजाता है यथा दीप् + य = आ =
दीदीप्मान इस य मत्पय का द्विती २ स्थान में लोप होजाता है किन्तु

मार पीट और चोना से घोआई ठगनासे ठगाई सिखना से सिखावट लिखना से लिखावट ॥

४ करणवाचक वह है जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करता है उसके बनाने का नियम यह है कि धातु के ना के आ को ई कर देने से कोई २ ना का लोप करके ना से पूर्व अक्षर में आ लगाने से कोई २ धातुही करणवाचक का काम देती है यथा कतरना से कतरनी खोदना से खोदनी घेरना से घेरा फेरना से फेरा बेलना यह धातु ही करण का काम देती है ॥

५ क्रियाद्योतक संज्ञा वह है जो संज्ञा का विशेषण होके निरन्तर क्रिया को जनावे, उसके बनाने की रीति है कि धातु के न चिड को ता करने से और स्त्रीलिङ्गमें ती करने से बनती है अथवा उसके आगे हुआ लगानेसे बनती है यथा देखता देखताहुआ इत्यादि ।

इति कृदन्तप्रकरणम् ।

१ अन्वय्य अ=नहीं व्यय=माश, चय सर्व ।

अव्यय उसे कहते हैं जिस में लिङ्ग वचन कारक के कारण विकार नहीं होता है सदा एक सा रहता है अव्यय चार प्रकार के हैं क्रियाविशेषण अभ्यान्वयी, शब्दयोगी, विस्मयादिषोध्यक देशभाषा में क्रियाविशेषण बारंबार आते हैं वे पांच सर्व नामों से बने हैं उनका एक कोष्ठ आगे दिया गया है यह बट कौन जौन तौन इन पांच सर्व नामों से स्थलवाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक, क्रियाविशेषण-अव्यय बनते हैं ॥

यह	वह	कौन	जौन	तौन	
अथ	०	कथ	जथ	तथ	कालवाचक
०	०	कद	जद	तद	
२ यहाँ	वहाँ	कहाँ	जहाँ	तहाँ	स्थलवाचक
३ इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४ यों	वों	क्यों	ज्यों	त्यों	गुणवाचक वा
५ ऐसा	वैसा	कैसा	तैसा	जैसा	
६ इसा	उसा	किसा	जिसा	तिसा	परिमाणवाचक
७ इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

समुच्चय शोध्यक या अभ्यान्वयी अव्यय जो दो शब्दों या दो वाक्यों के बीच में आते हैं और प्रत्येक पद को पितृ २ क्रिया सहित अव्यय का

सदृशोत्रिपुल्लिङ्गसर्वासुच विभक्तिषु । वचनेषु वचनेषु यन्मन्वेतितदव्ययम् ॥

संयोग अथवा विभाग करने हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं जैसे राम और कृष्ण आये ।

संयोजक अव्यय

विभाजक अव्यय

और तथा

वा

और यदि

अथवा

एवं जो

वषा

अथ भी

परंतु

कि पुनः

किन्तु

तो पुनः

पर

किर

चाहे

जो

शब्द योगी अव्यय जब नाम या सर्वनाम के संग न आवे तो क्रिया विशेषण होने हैं जैसे नाम या सर्वनाम के साथ उदाहरण जिस लिये उस विना किमलिये इत्यादि गोपीसहित कृष्ण आये गोपालसमेत कृष्ण आये क्रिया विशेषण जैसे बाहर गया पीछे गया ।

शब्द योगी अव्यय ।

आगे पीछे भीतर ऊपर बाहर बराबर बदल बदले समीप बीच पास तले ऊपर बिना साथ मोहित समेत समस्त लिये प्रभृति ॥

विस्मयादिवोचक या केवल प्रयोगी अव्यय निम्न अव्ययों से करने वाले का दुःख हर्ष धिक्कार घण्यता इत्यादि के भाव या दशा का बोध होता है वे विस्मयादि बोधक हैं ।

दुःख और धिक्कार बोधक वा गे, हाय, हाय, अरे, रे, हा, धिक् दूर दूर चुर, छी, आदि, हर्ष और घण्यता बोधक अथ जय, शान्ति, बाहबाह, घण्यघण्य, सम्पुत्री वारण बोधक—अय, ओ, अरे, अये ॥

'नीचे के अव्यय संस्कृत और भाषा में उपसर्ग कहते हैं उप=ऊपर+सृज=सर्ग, मृज=वनाना) उपसर्ग प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्वयुक्त होके क्रिया के विधेय = अर्थ का प्रकाश करते हैं वे एक के लो चार तक क्रिया के पूर्व में आते हैं यथा विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, संयमिव्यवहार उपसर्गी योजक हैं वाचक नहीं संयुक्त होकर दूसरे का अर्थ प्रकाश करते हैं अर्थयुक्त रहने से निरर्थक रहने हैं उपसर्ग से धातु का अर्थ बदल जाता है यथा हार आहार प्रहार संहार इत्यादि ॥

(१) उपसर्गलुप्यन्तर्पोषितादन्वयनीयते । प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

अब मैं अपना संक्षेप वृत्तकाउल्लेख करता हूँ ।

मेरे पितामह पण्डित रामप्रसाद जी जोकि पौराणिक और अपने समय में बैद्य शिरोमणि थे कान्यकुब्ज मुहल्ला मकरंदनगर शुक्लनटोला के निवासी थे और मेरे पिता भी पण्डितलालमणिजी पुराण, ज्योतिष, बैद्यक के ज्ञाता थे उन्होंने सरकारी नौकरी भी १४ वर्ष पर्यन्त की और समयानुसार मुझे सातवर्ष की अवस्था से १६ वर्ष पर्यन्त संस्कृत अध्ययन कराकर फारसी और गणितविद्या पढ़ने को उपदेश किया उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने कुछ सीख पाया जिस का फल आप सज्जनों की सेवा में अर्पण किया जाता है ॥

इस अभिधान के बनाने में निम्न कोषों और समाचार पत्रों की सहायता ली गयी है ॥

फैलन साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष ।

फार्थ साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष ।

बेट साहेब का हिन्दी अंगरेजी कोष ।

पण्डित तारानाथ वाचस्पतिका शब्दस्तोम महानिधि ।

वाचन शिवरामभास्करत संस्कृत अंगरेजी कोष ।

शायू राधालाल साहेब का शब्द कोष ।

प्रतिष्ठित बंगवासी समाचार पत्र कलकत्ता और राजा रामलालसिंह काळे-कांकरका हिन्दोस्तान नामक समाचार पत्रादि इस कोष के मुद्रित कराने में मेरे चित्त में कई कारणों से नाना प्रकार के संकल्य बिरला उत्पन्न होते थे पर श्रीकृष्ण पंचशेखर लखीमपूरनिवासी पण्डितबेचेलालात्मज मनीषिमाननीय पण्डित बट्टी नारायणमिश्र डेटमास्टर नर्मलस्कूल लखनऊ की निर्भर सहायता और मेरणा से कटिपद होकर इस को मुद्रित कराया ॥

मरुत होकि सिबाय मेरे वक्त कोष गोबर्द्धन उपनाय मान त्रिपाठि कान्य-कुब्ज निवासि की दूकान अपीनाराद शहर लखनऊ में भी ग्राहक जनोको मूल्य प्रेषित करने पर मात्त हो सकेगा ।

सन्धिप्रकरण ॥

- १ अक्षरों के मेलको सन्धि कहते हैं ॥
- २ उनमें आगम और आदेशादि होते हैं ॥
- ३ पदके बीचमें ऊपर से जो अक्षर आता है वह आगम कहा जाता है ॥
- ४ जो किसी वर्णके स्थान में दूसरा वर्ण बनाया जाता है उसे आदेश कहते हैं ॥

स्वरसन्धिः ॥

- ५ जब इ ई उ ऊ ऋ ॠ नृ से कोई असवर्ण स्वरपरे होता है तब उक्त वर्णों के स्थान में क्रमसे य व र ल् आदेश किये जाते हैं उदाहरण यथा—यदि अवि=दयवि । देवी आगता=देव्यागता । यहाँ इ ई को ए और मधु अत्र=मध्व । वधू आगमन=वधागमन । यहाँ उ ऊ को व और पितृ अर्थ=पितृ यहाँ ऋ को र और लृ इन्=लित् यहाँ लृ को ल् आदेश हो जाता है ॥
- ६ जब ए ऐ ओ औ के पीछे कोई स्वर आता है तब चारों वर्णों को क्रम से अय आय् अव् आच् आदेश हो जाते हैं । यथा—जे अति=नयति । रो भाते=शयाने विने अन्न=विनायक । धो अन्न=धेवन । पौ अन्न=पावक इत्यादि ॥
- ७ परन्तु जब पदके अन्त में ए ओ से परे अकार इस्व आनेपर अकारका लोप हो जाता है ॥ यथा—ते अन्न=तेऽन्न । पयो अन्न=पयोऽन्न इत्यादि ॥
- ८ जिस सङ्ज्ञा अर्थात् नामके अन्त में विभक्ति हो उस (विभक्ति सहित) को पद कहते हैं ॥
- ९ अ इ उ ऋ ॠ ये इस्व और आ ई ऊ ऋ ए ऐ ओ औ दीर्घ और अ ऌ ॡ ॢ ॣ ऋ ॠ लृ ॡ ॢ ॣ ऐ । औ ॥ ये लुप्त कहते हैं एक मात्रिकको इस्व द्वित्रात्रिकको दीर्घ और त्रित्रात्रिक को घुन कहते हैं । मात्राका अर्थ परिमाण है ॥
- १० पर गवादिकों के मध्य में अ का आगम हो जाता है यथा—गो इन्द्रः=गो अ इन्द्रः यहाँ अकारका आगम हुआ=गवइन्द्रः यहाँ ओ का अच् आदेश होकर स्वरहीन वर्ण पर अक्षर में मिलगये और नियम ११ के अनुसार गवेन्द्रः सिद्ध हुआ । गो अग्रप्=गवाग्रप् । गोऽग्रम् नियम ७ के अनुसार हुआ ।

- यथा-उच्यते: तदा=उच्यते: । नया: तीरम्=नदास्तीरम् । र
 यदि=रामस्वंदति । यद्दत्तः सनोनि=यद्दत्तः सनोति ॥
 १७ यदि विसर्गं से ट ठ ड परे हो तो विसर्ग को पू आदेश होनाता है । य
 धनुःपट्टारः=धनुःपट्टारः । भग्नः ठट्टारः=भग्नपट्टारः । कः पट्टः=कपट्टः
 यदि विसर्ग से परे च, छ, श, हो तो (ः) को श आदेश होता है
 यथा-पूर्णः चन्द्रः=पूर्णचन्द्रः । रवेः क्षविः=रवेक्षविः । नरः शङ्खते
 नरः शङ्खते ॥
 १८ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होनाता है जब
 कि वर्गोंका मध्य द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श ष स ह परेहो तो ।
 यथा यशान् मी=यशांसी । किय करोपि=किकरोपि ॥
 १९ यदि पदके अन्त्य में ष होवे उससे परे व्यञ्जन हो तो म् को अनुस्वार
 होनाता है । यथा-हरिम् बन्दे हरिबन्दे चन्द्रम् परपति=चन्द्रपरपति ॥
 २० यदि अकारके नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्व अकार होवे तो
 पूर्व अकार सहित विसर्ग को ओ आदेश होनाता है उस ओ में पूर्व वर्ण
 को मिला देते हैं ओ से परे अकार का लोप करके ऽ ऐसा का छित्त
 देते हैं यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः । नरः अयम्=नरोऽयम् ॥
 २१ यदि अः के परे वर्णका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, व, र, ल, न, म, हो
 तो अः को ओ बनजाता है यथा—चौरः हरति=चौरो हरति ॥
 नरः पानि=नरोपाति पण्डितः भवति=पण्डितो भवति=इत्यादि ॥
 २२ यदि अ वा को छोड़ किसी स्वर में परे विसर्ग हो और उसके परे कोई
 स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्णका तृतीय चतुर्थ वर्ण
 हो तो विसर्ग को र हल बनजाता है, यथा—क्षविः अयम्=क्षविरयम् ।
 शत्रुः हता=शत्रुः हतः । हरेः वचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥
 २३ यदि सः और एषः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण
 हो तो सः और एषः को विसर्ग का छेप होनाता है और लोप होनेर
 मन्विन होती है । यथा—सः आगमः=स आगमः । सः पृच्छति=स पृच्छ-
 ति । सः करोति=स करोति । सः हसति=स हसति । एषः आयाति=एष
 आयाति । एषः गेहे=एष गेहे इत्यादि ॥
 २४ यदि हलांक वा अकार वादन् चौथाई पूर्ण करना हो तो मन्वि हो
 जावेगी ॥

२६ वर्गके प्रथम तृतीय अक्षरों से किसी वर्गका पञ्चम अक्षर परेहो तो इनको भी अपने वर्गका पञ्चमवर्ण प्रायः बनजाता है । यथा—त्वक्मांसम्=त्व-
मांसम् । दूसरारूप नियम ३० से त्वग्मांसम् । तन्मित्रम्=तन्मित्रम् ॥
३० च ट त क ष को ज ड द ग व आदेश होजाते हैं यदि स्वर वा ह य
व र वा वर्गका तृतीय चतुर्थवर्ण परेहो तो । यथा—वाक् ईश्वरः=वागी-
श्वरः । धिक् लोभिनम्=धिग्लोभिनम् । वाक् दानम्=वाग्दानम् ।
जगत् ईशः=जगदीशः । महत् धनुः=महद्भनुः । अच् अन्तः=अप्रन्तः ।
पद् अप्र=पद्म । कृप् ऐन्द्री=कृकुब्द्री इत्यादि ॥

३१ किसी वर्गके दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को वन २ का प्रथम अक्षर
भी होजाता है यदि वर्गके प्रथम द्वितीयवर्ण वा श ष स परेहो तो ।
यथा—उद् स्थानम्=उत्थानम् । त्वग् तत्र=त्वक्तत्र इत्यादि ॥

३२ यदि किसी वर्गके प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थवर्ण से परे ड हो तो ड
को उसी का चतुर्थ अक्षर होजावेगा पीछे नियम ३० के अनुसार
कार्य होगा । यथा—वाक् हासः=वाग्हासः । त्वच् हीनः=त्वज्हीनः । पद्
हसन्ति=पद्दसन्ति । तद् हविः=तद्दविः । कृप् हासः=कृकुम्भासः ॥

३३ ह्रस्व स्वर से परे छ हीवे तो उसके पूर्व च व आगम होता है अर्थात्
च अधिक होजाता है ॥ परन्तु दीर्घस्वर से परे च होता और नहीं
भी होता । यथा—परिच्छदः=परिच्छदः । वृत्तच्छाया=वृत्तच्छाया ल-
क्ष्मीच्छाया । लक्ष्मीच्छाया ।

३४ अनुस्वार से परे किसी वर्गका कोई अक्षरहो तो अनुस्वार को उसी
वर्गका पञ्चमवर्ण बनजाता है । यथा—अंक=अङ्क । पंच=पञ्च । कंड=
कण्ठ । अंत=अन्त । अंध=अन्ध । अंध=अम्ब । संवत्=सम्बत् । इत्या-
दि भाषाके ज्ञाता अनुस्वारको अनुस्वारही कियते हैं और संस्कृत
अनुस्वारके बदले वर्गका पञ्चमवर्ण काममें लातेहैं परन्तु लेख दोनों
रीतिसे प्रचलित हैं ॥

३५ ह्रस्व स्वरसे परे ङ ग् न् हों और इनके परे स्वर हो तो इनको द्विध
होजाता है । यथा—मृत्यङ् आत्मा=मृत्यङ्ङात्मा । सुगम् इह=सु-
गम्भिह । घावन् अश्वः=घावन्श्वः । इति व्यञ्जनसन्धिः ॥

अथ विसर्गसन्धिः ॥

३६ जब किसी वर्गसे त, थ, स, परे हों तो (:) को स आदेश होता है ।

- यथा-उचनः तरुः=उचनस्तरुः । नयाः तीरम्=नदास्तीरम् । रामः
 वेदति=रामस्य वेदति । यद्दत्तः सनोति=यद्दत्तस्सनोति ॥
- १७ यदि विसर्ग से ट ठ ड परे हो तो विसर्ग को ए आदेश होनाता है । यथा-
 धनुः टट्टारः=धनुष्टट्टारः । भग्नः ठट्टारः=भग्नठट्टारः । कः पट्टः=कपट्टः ॥
- १८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श, हो तो (ः) को श आदेश होता है ।
 यथा-पूर्णः चन्द्रः=पूर्णचन्द्रः । रवेः द्यविः=रवेरद्यविः नरः शङ्खते=
- नरशङ्खते ॥
- १९ यदि पदके मध्य में न वा म् हो तो उनको अनुस्वार होनाता है जब
 कि वर्गों का मयम द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श प स ह परे हो तो ।
 यथा यशान्मी=यशांसी । किम् करोषि=किंकरोषि ॥
- २० यदि पदके अन्त में म होवे उससे परे व्यञ्जन हो तो म् को अनुस्वार
 होनाता है । यथा-हरिम् वन्दे हरिवन्दे । चन्द्रम् पश्यति=चन्द्रं पश्यति ॥
- २१ यदि अक्षरके नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्व अक्षर होवे तो
 पूर्व अक्षर सहित विसर्ग को ओ आदेश होनाता है उस ओ में पूर्व वर्ण
 को मिला देते हैं ओ से परे अक्षर का लोप करने ऽ ऐसा कर छित्त
 देते हैं यथा-वेदः अपीतः=वेदोऽपीतः नरः अयम्=नरोऽयम् ॥
- २२ यदि अः के परे वर्गों का तृतीय चतुर्थ वा ह, य, वं, र, ल, न, म, हो
 तो अः को ओ बननाता है । यथा-चौरः हरति=चौरो हरति ॥
 नरः पाति=नरोपाति पण्डितः भवति=पण्डितो भवति=इत्यादि ॥
- २३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई
 स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्ग का तृतीय चतुर्थ वर्ण
 हो तो विसर्ग को ए इल बननाता है, यथा-कविः भयम्=कविरयम् ।
 शत्रुः इतः=शत्रुर्इतः । हरेः वचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥
- २४ यदि सः और एषः के परे अक्षर को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण
 हो तो सः और एषः की विसर्ग का लोप होनाता है और लोप होने पर
 सन्धिनहीं होती है । यथा-सः आगमः=स आगमः । सः इच्छति=स इच्छ-
 ति । सः करोति=स करोति । सः हसति=स हसति । एषः आयाति=एष
 आयाति । एषः रोते=एष रोते इत्यादि ॥
- यदि रलोकं वा अवाचा पादः चौवार्ध पूर्ण करना हो तो सन्धि हो
 जावेगी ॥

यथा-उन्नतः तरुः=उन्नतस्तनुः । नयाः तीरम्=नद्यास्तीरम् । राम-
वदति=रामस्यंवदति । यद्दत्तः सनोति=यद्दत्तस्तनोति ॥

३७ यदि विसर्ग से ट ठ ड परे हों तो विसर्गको प्रभादेश होजाता है । यथा-
धनुः=द्वारः=धनुष्टकारः । मग्नः ठकारः=मग्नष्टकारः । कः पठः=कप्पठः ॥
३८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श, हों तो (ः) को श आदेश होता है ।
यथा-पूर्णः चन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः । रवेः द्यविः=रवेरद्यविः नरः शङ्कते=

नरः शङ्कते ॥
३९ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होजाता है जब
कि वर्गोंका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श प स ह परे हों तो ।
यथा यशान्ती=यशांती । किम् करोषि=किंकरोषि ॥

४० यदि पदके अन्तमें म् होवे उससे परे व्यञ्जन हो तो म् को अनुस्वार
होजाता है । यथा-हरिम् चन्द्रे हरिचन्द्रे चन्द्रम् परयति=चन्द्रं परयति ॥

४१ यदि अकारके नीचे विसर्ग हो और विसर्गके परे ह्रस्व अकार होवे तो
पूर्व अकार सहित विसर्गको ओ आदेश होजाता है उस ओ में पूर्व वर्ण
को मिला देते हैं ओ से परे अकार का लोप करके ऽ ऐसा रूप मिल
देते हैं यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः नरः अयम्=नरोऽयम् ॥

४२ यदि अं के परे वर्गका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, व, र, ल, न, म, हो
तो अं को ओ बनजाता है यथा—चौरः हरति=चौरो हरति ॥
नरः याति=नरो याति पण्डितः भवति=पण्डितो भवति=इत्यादि ॥

४३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई
स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्ण
हो तो विसर्ग को र हल बनजाता है, यथा—कविः अयम्=कविरयम् ।
शत्रुः इतः=शत्रुर्इतः । हरेः वचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥

४४ यदि सः और एषः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण
हो तो सः और एषः को विसर्ग वा लोप होजाता है और लोप होने पर
सन्धि नहीं होती है । यथा—सः आगतः=स आगतः । सः इच्छति=स इच्छ-
ति । सः करोति=स करोति । सः हसति=स हसति । एषः आयाति=एष
आ याति । एषः शते=एष शते इत्यादि ॥

यदि श्लोक वा श्रुचा वा पादः चौपाई पूर्ण करना हो तो सन्धि हो
जावेगी ॥

(पत्वविधान)

४२ अ आभिन्न स्वर और क, ख, ल, के परे मत्वय का जो मकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य प्रकार हो जाता है । यथा-मुनिम्=मुनिषु । साधुम्=साधुषु । आतुम्=आतुषु । सर्वेसम्=सर्वेषाम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य प हो जाता है यथा-घनसि=घनपि । रशीसि=रशीपि । धनुःसु=धनुषु । अशीसु=अशीषु इत्यादि ॥

संहितैरपदेनित्या, नित्यापात्तपसर्गयोः । नित्यासमासे वाक्येण, सावि वसामौक्तने ॥

(अर्थ)

सन्धि एक पद में और पातु उपसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के अधीन है ॥

(इति सन्धिव्याख्यानम्)

विभक्तिीन शब्दों को नाम कहने हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहा जाता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं ।

समास ६ प्रकार का है ।

१ अव्ययी भाष २ तत्पुरुष ३ द्वन्द्व ४ बहुव्रीहि ५ कर्मधारय ६ द्विगु ॥

१ अव्ययीभाष उसे कहने हैं जिसमें समीप, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जायें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में प्रथम पद अव्यय होता है । यथा-निर्दोष । यथाशक्ति । उपकूल । निर्विष । आसमुद्र । प्रतिशुभ । समल ॥

२ तत्पुरुष उसे कहने हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्त हो और परे के पद में प्रथमाविभक्ति हो । यथा-यर गया । लोभनित । भनछोभी । सर्गमय । राजपुत्र । पुरुषोत्तम इन शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त हैं ॥

३ द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में परस्पर पद विशेष्य विशेषण नहीं पर प्रथमाविभक्ति युक्त अनेक पदों इस समास के मध्य में संस्कृत में

यथा-सःप्यदाशरपीरायः=सैपदाशरपीरायः । सःप्यपराजा युधिष्ठिरः=
मैपराजा युधिष्ठिरः । सःप्यकर्णोमहस्यागी=मैपकर्णोमहस्यागी । सःप्य
भीमो महावनः=सैपभीमो महावनः । यहाँ विसर्ग का लोप होनेपर
भी सन्धि होगई ॥

१४ अ सेपरे विसर्ग का लोप होजाताहै जबकि अ को छोड़ कोई अन्यस्वर
परे हो । यथा-देवःआगच्छति=देवआगच्छति । तथा आ से आगे वि-
मने का भी लोप होजाता है यदि कोई स्वर वा वर्गका तृतीय अनुर्थ
पञ्चम वा षष्ठ्य व रत्न परे हो । यथा-मनुष्याःनिवसन्ति=मनुष्यानि-
वसन्ति । वानाःवान्ति=वानावान्ति इत्यादि ॥

१५ यदि अ इ उ के नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे र हो तो विसर्ग
को हन र आदेश होकर लोप होजाता है और पूरे स्वर दीर्घ हो
जाता है यथा-पुनरयने=पुनररयने=पुनारयने । शुक्तिःकष्यामनामा-
नि=शुक्तिरुक्क=शुक्तीकष्यामनामानि इत्यादि ॥

१६ यदि स्वर वा वर्गका तृतीय अनुर्थ पञ्चम वर्ग वा षष्ठ्य व रत्न व भोग्यद
के परे होवें तो भोः के नीचे विसर्गका लोप होजाता है लोप होनेपर
सन्धि नहीं होती है ॥

यथा-भोग्यदायर=योगदायर । भोःअश्वरीय=भो अश्वरीय इत्यादि ॥

४७ कभी स्वर के परे भोः शब्द की विसर्ग को यू भी बन जाता है
यथा-भोः ईशान भोयीशान । भोः उपायने=भोयुपायने ।

इति विसर्गमन्त्रिः ॥

(एत्वविधान)

४८ अ अरु र क इनके परे न को ल आदेश होता है । यथा-नृ नाम=नृ
नाम । माननाय=म नृनाय । मर्तेन=मर्तेण । पुत्रे=पुत्रेण । इत्यादि
यदि स्वर वर्ग वा स्वर वर्ग वा य, व, र, और अनुस्वार मध्य में
अथवा न अर्थात् होइनेवाले हो तो भी न को ल बनजावेगा यथा-
मर्तेन=मर्तेण । दनेन=दनेण । मृगेन=मृगेण । पृथोक्त वर्गों को छोड़
और वर्गों के अथवा न होनेमें न को ल कभी न होगा । यथा-अर्चना ।
हरेन । अर्चन इत्यादि में न को ल नहीं हुआ ।

४९ एके अन्त में नृ हो तो ल कभी न होगा । यथा-हरीन् । मुचन् ।
नृगन् । इत्यादि ॥

(पत्वविधान)

म आभिन्न स्वर और क, ख, ल, के परे मत्वय का जो सकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य पकार होना है । यथा—मुनिमु=मुनिषु । साधुमु=साधुषु । भ्रातृमु=भ्रातृषु । सर्वेसःम्=सर्वेषःम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य प हो जाता है । यथा—धनुंसि=धनुषि । इषींसि=इषीषि । धनुःमु=धनुःषु । आशीःमु=अशीःषु इत्यादि ॥

संहितैकपदेनित्यः, नित्याधातूपसर्गयोः । नित्यासमासे-बाक्येण, सावि वक्ष्यामि ॥

(अर्थ)

सन्धि एक पद में और धातु उपसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के अधीन है ॥

(इति सन्धिव्याख्यानम्)

विभक्तिहीन शब्दों को नाम कहने हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहाता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं ।

समास ६ प्रकार का है ।

१. अध्ययी भाष २. तत्पुरुष ३. द्वन्द्व ४. बहुव्रीहि ५. कर्मधारय ६. द्विगु ॥
१. अध्ययीभाष उसे कहते हैं जिसमें समीप, आदर, उल्लङ्घना अभाष अर्थ पाये जावें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में प्रथम पद अध्यय होता है । यथा—निर्दोष । यथाशक्ति । उपकूल । निर्विष । आसमुद्र । प्रतिगृह । समल ॥
२. तत्पुरुष समे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्त हो और परे के पद में प्रथमाविभक्ति हो । यथा—पर गदा । लोभजित । घनछोभी । सर्वमय । राजपुत्र । पुरुषोत्तम इन शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त हैं ॥
३. द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में परस्पर पद विशेष्य विशेषण नहीं पर प्रथमाविभक्ति युक्त अनेक पदों इस समास के मध्य में संस्कृत में च क्त्वर और भाषा में च के स्थान में और आता है १२ समास बनने

यथा-सःपदाशरयीरामः=सैपदाशरयीरामः । सःपराजा युधिष्ठिरः=
मैपराजा युधिष्ठिरः । मःपयकणोमहस्यागी=मैपयकणोमहस्यागी । मःप
मोमो महावतः=सैपमीमो महावतः । यहाँ विमर्ग का लोप होनेपर
भी मन्थि होगई ॥

४२ अ मेपरे विमर्ग का लोप होजाना है जबकि अ को छोड़ कोई अन्यस्वर
परे हो । यथा-देवःमागञ्जनि=देवमागञ्जति । तथा आसे आगे वि-
मर्ग का भी लोप होजाना है यदि कोई स्वर वा वभेका तृतीय चतुर्थ
पञ्चम वा इ य व र ल परे हों । यथा-मनुष्याःनिवसन्ति=मनुष्यानि-
वसन्ति । व ताःवाँन=वतावाँन् इत्यादि ॥

४३ यदि अ इ उ के नीचे विमर्ग हो और विमर्ग के परे र हो तो विमर्ग
को रन र आदेश होकर लोप होजाना है और पूर्व स्वर दीर्घ हो
जाता है यथा-पुनारमने=पुनरामने=पुनारमने । शुक्तिःकल्याणनाभा-
नि=शुक्तिरूप=शुक्तिरूप्यामनामानि इत्यादि ॥

४४ यदि स्वर वा वभेका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वल्ले वा य र ल व इ भोःपद
के परे हों वे तो भोः के नीचे विमर्ग का लोप होजाना है लोप होनेपर
मन्थि नहीं होती है ॥

यथा-भोःपदाशर=भोगदाशर । भोःअश्वरीय=भो अश्वरीय इत्यादि ॥

४५ कभी स्वर के परे भोः शब्द की विमर्ग की वृ भी बन जाना है
यथा-भोः ईशान योयीशान । भोः उपायने=भोगुपायने ।

इति विमर्गमन्थिः ॥

(एत्वविधान)

४६ अ अ र व इनके परे न को ल आदेश होना है । यथा-नृ नाम=नृ
नाम । माननाम=मनूनाम । मर्नेन=मर्नेण । कूपने=कूपणे । इत्यादि
यदि स्वर वल्ले वा वभेके वल्ले वा य, व, इ, और अनुस्वार मध्य में
स्वरवान् अर्थात् होऊँवले हो तो भी न को ल बनजावेगा यथा-
मर्नेन=मर्नेण । मर्नेन=मर्नेण । मर्नेन=मर्नेण । पूर्वोक्त वल्ले को छोड़
और वल्ले के स्वरवान् होनेमें न को ल कभी न होगा । यथा-अर्चना ।
हरेन । मर्नेन इत्यादि में न को ल नहीं दूया ।

४७ पदके अन्त में नृ हो तो ल कभी न होगा । यथा-हरीन् । गुहन् ।
दरान् । इत्यादि ॥

(पत्वविधान)

य आभिम स्वर और क, र, ल, के परे प्रत्यय का जो सकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य पकार होना है। यथा—मुनिम्=मुनिषु। साधुम्=साधुषु। भ्रातृम्=भ्रातृषु। सर्वेसःम्=सर्वेषुम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य प हो जाता है यथा—धनूंसि=धनूषि। इवींसि=इवीषि। धनुःमु=धनुःषु। आशीःमु=अशीःषु इत्यादि ॥
संज्ञानैकपदेनित्या, नित्यापात्प्रसंगेयाः। नित्यासपासे यावपेतु, सावि वक्ष्यामीत्यने ॥

(अर्थ)

मन्त्रि एक पद में और पातु उपसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनना है तब वक्त्र के अधीन है ॥

(इति सन्धिव्याख्यानम्)

विभक्तिीन शब्दों को नाम कहने हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं।

समास ६ प्रकार का है।

१. अव्ययीभाव २. तत्पुरुष ३. द्वन्द्व ४. बहुव्रीहि ५. कर्मधारय ६. द्विगु ॥
१. अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें सपीप, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जावे और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में प्रथम पद अव्यय होता है। यथा—निर्दोष। यथाशक्ति। उपकूल। निर्विष। शासमुद्र। मनिष्ठ। समल ॥
२. तत्पुरुष उसे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि द्वे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्त हो और परे के पद में प्रथमाविभक्ति हो। यथा—पाप। लोभजित। धनशोभी। सपथय। राजपुत्र। पुरुषोत्तम। शब्दों में द्वितीयादि द्वे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त है ॥
३. द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में परस्पर पद विशेष्य विशेषण न पर प्रथमाविभक्ति युक्त अनेक पदों उस समास के मध्य में संस्कृत च अक्षर और भाषा में च के स्थान में और आता है पर समास

मे उसका लोप होना है । यथा—राम लक्ष्मण । माता पिता इनके मध्य में और शब्दका लोप होगया ॥

- ४ बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिसमें कई पदों से समास बनाया जावे पर पदोंका अर्थ ठीक २ न पाया जावे उनसे दूसरी वस्तु या व्यक्ति का अर्थ समझा जावे बहुव्रीहि में संस्कृत में येन, यस्य-पद आते हैं भाषा में यद्का वाचक जिस शब्दका रूप अवश्य आता है यथा—दीर्घ-बाहू इस स्थान में बड़ी दो भुजा न समझी जावेगी बल्कि बड़ी है दो भुजा जिस पुरुषकी वहपुरुष समझा जावेगा अर्थात् पुरुष दो भुजावाला । चन्द्रशेखर । त्रिशूलपाणि । चक्रपाणि । जलज । घंटीधर । निषेज भजा । ये समासास्त पद अपना अर्थत्याग विशेष अर्थ बनाते हैं इनमे दूसरेको विशेषण होते हैं ॥

- ५ कर्मधारय समास उसे कहने हैं जो विशेष्य और विशेषण के योगसे बने गुण्य संज्ञाको विशेष्य और उसके गुण धर्मको बनावे वह विशेषण है यथा—उष्णतरु । नीलकण्ठ । रत्नरत्न । सुन्दरपुरुष । पूर्व-वद् विशेषण और परेका पद विशेष्य से मिलके कर्मधारय बना ॥
- ६ द्विगु समास उसे कहने हैं जिसमें पूर्वपद सत्त्वावाचक परेका पद सत्त्वाहार अर्थात् अनेक वस्तुओंका बोधक हो यथा—त्रिभुवन पञ्चतन्त्र त्रिवेद । चतुर्गुण । पदस्रगु ॥

इति समासः ॥

श्रीधरभाषाकोष ।

अ० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर, जिस शब्द के आदि में आता है, उसका अर्थ पलट जाता है, जैसे पर्य से अपर्य और शोक से अशोक और जव शब्द का प्रथम अक्षर स्वरहीन है तो अ के स्थान में अन् होजाता है और न् शब्द के आदि स्वर में मिला देने हैं जैसे अन् + भेद = मनन, अन् + एक = अनेक इत्यादि ।

सं० अ (अव=वचाना) पु० रक्त, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पिता, गुरु, बापु, कृता, समर्थ, अधिपति, प्रा-
लिक ।

प्रा० अऊत { (सं० अपुत्र अ=नहीं
ऊत { पुत्र=बेटा) पु० जि-
सके लड़का वाला न हो, निर्वाह,
२ अनवशाह, मूर्ख, जाहिल ।

सं० अंश (अंश=पाटना) पा० पु० भाग, बाँट, बाँटा, टुकड़ा, २ हि-
स्सा, दर्जा, अंश, मित्र में वसे
करने हैं कि एक पूरी चीजके बस-

सं० अंशक (अंश + अक) क० पु० बाँटनेवाला, हिस्सेदार ।

सं० अंशांश (अंश + अंश) अंश का अंश, भागका भाग, हिस्सा दर हिस्सा ।

सं० अंशी (अंश + ई) क० पु० ब-
टाऊ, बाँटनेवाला, बटवैया साक्षी,
हिस्सेदार ।

सं० अंशु (अंश + उ) पु० सूर्य की,
किरण, २ नेत्र, बजाछा, मकाश ।

सं० अंशुक (अंश + क) पु० बल,
रेशमी बस, दसर, रेशम ।

सं० अंशुजाल (अंशु=किरण, जाल=
समूह) पु० किरन समूह, शुद्धार्थ ।

सं० अंशुधर (अंशु=किरण, धर=
पानेवाला) क० पु० किरनधारी,
सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप, दिया,
देवता, ब्रह्मा, प्रतापी ।

सं० अंशुमान् क० पु० सूर्य, चन्द्रमा,

नाम सूर्यवंशी राजा का असमंजस
का पुत्र सगर राजाका पोता ।

सं० अंगुमालिन् (अंगु=किरण
अंगुमाली) माला=गति

क० पु० सूर्य, आकाश ।

प्रा० अंसनि (सं० अंगु, अंस=बाँटना)
पु० किरन, २ भाग, ३ कंधे ।

प्रा० अंसल (सं० अंगुल=बाँटनेवा-
ला) पु० साभी, हिस्सेदार ।

मं० अंहति (अंह=माना+ति) पा०
श्री० स्वार्थ, दान, २ रोग ।

सं० अंहम् (अंह+अम्) पु० पाप,
स्वार्थ, स्वार्थ, गुनाह, दुःख ।

मं० अंहिना० पु० पाप, पाप, हाह
रे ।

सं० अकन्द (अ=नहीं, कन्=वा-
परा) गु० नगा, मेहरा, अंगु, हरीश ।

प्रा० अकड (अकडना) मा० श्री०
देव देहावन, बाँटावन, जेही ।

प्रा० अकडवातु बोल० अकडैत,
देना, बाँटा, देना, निवर्तित ।

प्रा० अकडमकड बोल० देव कर
बनना, देव, अनिमान, जेही ।

प्रा० अकडना (सं० अकडना अ=
कडना, कडना=मिटना) हि० अ०
देना, देहावन, २ दुःख, कडे
करना ३ कडना होना ।

प्रा० अकडैत (अकडना) पु० बाँटा,
देना, देना, अनिमान, जेही ।

सं० अकण्टक (अ=नहीं+कण्ट-
क=काँटा) गु० शत्रुहीन निरुपाधि,
चैनसे, बेखतर, बेसखशा ।

प्रा० अकय (सं० अकथ्य, अ=नहीं
कथ=कहना) गु० जो कहने में न
आये, जिसका वर्णन न होसके ।

सं० अकथनीय (अ+कथ+अ-
नीय) म्य० जो कहने योग्य न हो,
बयान से बाहर ।

प्रा० अकनि (सं० आकर्ण्य, आ=
पारोमोर से कर्ण=पैटना प्रा० ता०
अर्थ=गुनहर ।

सं० अकम्पन (अ=नहीं ।
कम्प=कांपना) गु० दृढ़, कठोर,
मजबूत, पु० सत्त्वविशेष ।

प्रा० अकन (सं० अ+करण, क=
करना) अयोग्य, बिना इधियाह,
बेमनव ।

प्रा० अकग (सं० अनर्थ अन=
नहीं, अर्थ=मोल होना) गु० महीना
बहुत मोलदा, बड़िया, बड़बुद्ध,
कीमती ।

सं० अकर्म (अ=नहीं वा पुरा कर्म=
काम) गु० बुगकाम, पाप, अपम,
अपराध, बुगई, कर्म के कारण ।

सं० अकर्मक (अ=नहीं, कर्म=कर्म-
कारण) गु० बेबीशिया जिसमें कर्म
न हो जैसे प्राना, स्वप्ना, आदि, केवल
मनोबल ।

सं० अकल (अ+कल) गु० अक्षरिणि
परमात्मा ।

प्रा० अकवार } स्त्री० गोद, गोदी,
अकवार } वगैरे, कांस २
दाती ।

प्रा० अकवारभरना, बोल० गले
लगाना, गोदमें लेना, मिलना ।

अ० अकस (अवस=डलना) परकाई,
बैर, विरोध, अक्षय ।

प्रा० अकसर-गु० अकेला २ तनहा
बहुधा ।

सं० अकस्मात् (अ=नहीं, कस्मात्=
किससे वा किसकारण, कि० वि०
अचानक, अनचित्, अकारण, एका-
एक, संयोग से, दैवात्, इतिहासकम् ।

प्रा० अकाज (सं० अकार्य अ=
नहीं, कार्य=काम) अर्थ० पु० बिगाड़,
हानि, पट्टी, पाटा, अनरय, मुकसान ।

सं० अकाण्ड (अ+काण्ड) गु०
कुसमय, पेवक, अचानक, बेकस्त ।

सं० अकापट्य-भा० पु० निश्चय-
ता, ईमानदारी, बेपट्र ।

प्रा० अकाम (सं० अकर्म वा
अकार्य) वृथा, निष्फल, बेफायदे,
बिचाररहित, कामहीन ऐवमुद्वचन,
बे तरकन ।

सं० अकाल (अ=नहीं, वा बुरा,
काल समय) पु० मर्ग, काल,
कुसमय, दुकाल, दुर्भिक्ष, कष्ट २
गु० दिनसमयका, बेकस्त ।

सं० अकिञ्चन-गु० निर्धन, तिरि
दस्त, मुकलित ।

प्रा० अकीरति (अ+कीरति, कृ०
=माना) भा० स्त्री० अग्रश, बदनामी ।

प्रा० अकुण्ड (सं० अ+कुण्ड=
गुठिला) गु० नाराहीन, तीक्ष्ण तेज,
बैरा ।

सं० अकुल गु० कुलदुष्ट, नीच, अशिश
शिव, बेहसब नसब ।

प्रा० अकुलाना (सं० आकुल) क्रि०
अ०, पवराना, दुखीहोना, व्या-
कुलहोना, थकना, मुजतरिब होना,
परेगानहोना ।

सं० अकुलीन (अ=नहीं, कुलीन=
अस्त्रेयानेका) गु० नीच, कुनाव,
कुलहीन, कमीना ।

प्रा० अकेला (सं० एक) गु० अकेला,
केवल, निराला, तनहा ।

सं० अक्र (अ=नहीं, क्रा=कठोर)
गु० कौमलस्वभाव, नम्र, नर्मदिल,
पु० श्रीकृष्णका चषा और पित्र ।

सं० अक्ष (अक्ष=फैलना) पु० पारिया
२ घुरी वा कील, ३ पोंसा, ४
जुमा, ५ गाफी, रथ, ६ आँख, ७
रुद्राक्ष, ८ बहेड़ा, ९ सर्प, १० गवड़
११ रावणका पुत्र, १२ आत्मा ।

सं० अक्षत (अ=नहीं, क्षत=दूदाहुआ
क्षत=नाराकरना, तोड़ना) ।

सं० अकल (अ + कल) गु० अकलीन
परमात्मा ।

प्रा० अंकवार } स्त्री० गोद, गोदी,
अंकवार } शाल, बाँस २
दाती ।

प्रा० अंकवारभरना, बोल० गले
लगाना, गोदमें लेना, मिलना ।

अ० अकस (अकस = उलटा) परदाई,
बैर, विरोध, अदावत ।

प्रा० अकसर-गु० अकेला २ तनहा
बहुधा ।

सं० अकस्मात् (अ = नहीं, कस्मात् =
किससे वा किसकारण, कि० वि०
अघानक, अनचित्, अकारण, एका-
एक, संयोग से, दैवात्, इच्छिकाकन् ।

प्रा० अकाज (सं० अकार्य अ=
नहीं, कार्य = काम) र्म० पु० पिगाड़,
हानि, पटी, पाटा, अनरय, नुकसान ।

सं० अकाण्ड (अ + काण्ड) गु०
कुसमय, पंचक, अघानक, बेफस्त ।

सं० अकापट्य-भा० पु० निरुद्धना-
ता, ईमानदारी, धैर्य ।

प्रा० अकाम (सं० अकर्म वा
अकार्य) दया, निष्फल, बेकायदे,
रुद्धारहित, कामहीन श्रेयमुद्धृत,
बे फल ।

सं० अकाल (अ = नहीं, वा बुरा,
काल समय) गु० अकाली, काल,
कुसमय, दुकाल, दुर्भिक्ष, काल २
गु० विनसमयका, बेअनु, बेफस्त ।

सं० अकिञ्चन-गु० निर्धन, तिही-
दस्त, मुकलिस ।

प्रा० अकीरति (अ + कीर्ति, क्त्
= गाना) भा० स्त्री० अपशं, बदनामी ।

प्रा० अकुरठा (सं० अ + कुरठ =
गुठिला) गु० नाशहीन, तीक्ष्ण तेज,
पैना ।

सं० अकुल गु० कुलट्ट, नीच, अशिव
शिव, बेहसब नसब ।

प्रा० अकुलाना (सं० आकुल) कि०
अ०, पचराना, दुखी होना, व्या-
कुल होना, थकना, मुसतरिब होना,
परेशान होना ।

सं० अकुलीन (अ = नहीं, कुलीन =
अच्छे घरानेका) गु० नीच, कुमात,
कुलीन, कमीना ।

प्रा० अकेला (सं० एक) गु० अकेला,
केवल, निराला, तनहा ।

सं० अक्रूर (अ = नहीं, क्रूर = क्रोह) र
गु० कोमलस्वभाव, नम्र, नर्मदिल,
पु० श्रीकृष्णका चचा और मित्र ।

सं० अक्ष (अक्ष = फैलना) पु० पहिया
२ घुरी वा कील, ३ पाँसा, ४
जुआ, ५ गाड़ी, रथ, ६ आँस, ७
रुद्राक्ष, ८ बहेड़ा, ९ सर्प, १० गरुड़
११ रावणका पुत्र, १२ आत्मा ।

सं० अक्षत (अ = नहीं, क्षत = टूटा हुआ
क्षण = नाशकरना, तोड़ना) गु० पु०

विनष्टा-भावना जो पुनः के काममें
आता है, विनाशहृत्मा ।

सं०अन्नय (अ=नहीं, अय=नाश,
नाशहोना (गु० अन्नय, चिरंजीव,
स्थिर, लाजवान ।

सं०अधर (अ=नहीं, अर=नाश हो-
ना) गु० अकारादिबर्णों, आहार,
रक्त, २. अथ गु० निमग्ननाशनही,
अविनाशी ।

सं०अज्ञान (अज्ञ=वृत्ती की कला,
ज्ञान भाग) गु० वृत्ती के उत्तरवा
दक्षिण के दूरक नष्ट होने की अज्ञान
भाव, अज्ञानजन्य, नींद मूढ़ ।

सं०अभि (अ=नहीं, अभि=अभिमान)
आंग, चरम ।

सं०अभिम (अ+भुज=हरना)
गु० निर्धर, बेगोश ।

सं०अमोहिणी (अम=अम, अ
हिलो=भीड़, अम=अमोहना) श्री
देवी जिस में १०८१५० पैदल,
६६६१० घोड़े, २१=३० हथ,
३३=३३ हाथी हैं ।

प्रा०अमृद-गु० अमृद, अमरपौधा,
अमरद, जेमनी ।

सं०अमृद (अ=नहीं, अमृद=दु-
खदा) गु० पूरा, अमर, अमरमर्त्य,
अमर ।

सं०अमृदित (अ=नहीं, अमृदित=

हृत्मा) गु० पूरा, विनष्टा सारा,
तमाम ।

प्रा०अस्ताड़ा } पु० अस्तों के कुरवी
अस्तारा } करनेकी गण, मभा ।

सं०अमिल (अ=नहीं, मिल=
नाश, मिल=कण, कण=केना)
गु० पूरा, सारा, सब, सम्पूर्ण, कुल ।

प्रा०अमैत्र्य (सं० अक्षयवृत्त,
अमैत्र्य) अक्षय=अमर, अक्षय
=वेद) पु० वेदा वेद जिसका कभी
नाशनही-दक्षिण लाजवान ।

सं०अग (अ=नहीं, अग=अनायास वा
जाना) गु० पडाइ, २. अक्ष ।

सं०अगणित (अ=नहीं, अगणित=गिन-
ना) गु० अनगिनत, अपार, अमे-
स्थान, रेगुमार ।

सं०अगद (अ+गद=बोलना) गु०
गुना, २. नीरोग, पु० ओषधि वा दवा ।

प्रा०अगम (सं० अगम्य=अ=नहीं
गम्य=जानेयोग्य, गम-जाना) गु०
नहीं जाने योग्य, विद्वत्, अपर,
अपरदृष्ट, दुर्गम, २. गहरा अगाह ।

प्रा०अगर (सं० अगुरु=अ=नहीं
गुरु=मारी) गु० एकमदारी गुं-
ति लाड़ी ।

प्रा०अगम्यान्ता (अगमोरा पद
जगत्ता नाम जो दिव्य के परिवर्तन
की ओर है) गु० अविनाशी पदजगत्ता-

ति-जो अगरोहा से निकले हैं।

प्रा० अगला (अग्र=आगे)

गु० आगेका, पहिलेका, परला २ सुविधा, प्रधान।

प्रा० अगलीन गु० गिनती में पहला, अवल।

प्रा० अगवा (सं० अग्र=आगे वा अग्रवा) अग्रगामी, अग्र=आगे, गम=जाना) गु० आगे चलने वाला, २ मार्ग समझानेवाला पु० दूत, अगवाणी।

सं० अगस्ति (अग्र=पहाड़ अस्त=फैलना) पु० एक ऋषि का नाम जो मिश्रवरुणका पुत्र था जिसने विन्ध्यारण्य पहाड़को गिरा दिया था करते हैं कि यह ऋषि पड़े से जन्माया और जब समुद्रमंथन होता था तो सारे समुद्र को पी गया, एक मूत्र का नाम ३ एक तारे का नाम है।

सं० अगस्त्य (अग्र=पहाड़, विन्ध्य=पर्वत, अस्त=फैलना) पु० अगस्त्य ऋषि।

प्रा० अगहन (सं० अग्रहायण, अग्र=पहले, राघन=राम, रा=छोड़ना अर्थात् पुर्गती रीति से राम का पहला महीना) पु० देवसप्त, मृगशिर वसंता आठवां महीना।

प्रा० अगहुड़-गु० अगला, अवल।

प्रा० अगाऊ (सं० अग्र=आगे) क्रि० वि० अगाड़ी, आगे, पहले, सामने।

प्रा० अगाऊजाना, धोल २ सामने जाना, किसीके दिलनेको जाना।

प्रा० अगाड़ी (सं० अग्र=आगे) क्रि० वि० आगे, सामने और बढ़के, स्त्री० रस्ती जिससे घोड़े के अगले पैर बांधते हैं—२ अगला हिस्सा, अगवाड़ा, आगा।

प्रा० अगाड़ी पिछाड़ी लगाना, धोल २ रोकना, पन्दफरना (घोड़ेको) घोड़े के अगले छिदने पैर बांधना।

प्रा० अगाड़ीमारना, धोल २ घोड़े-रामारना, बैरी की अगली सेना को हराना।

सं० अगाध (अ=नहीं, गाध=पाद जगह, गाध=दहराना) गु० अथाह, बहुतही गहरा, बेसोपां।

प्रा० अगिया पु० परपची या बीड़ा का नाम।

सं० अगुण (अ=नहीं, गुण=गुण, विद्या, वा, रत्न, तम, सत् ये तीन गुण) गु० निर्गुण, बेहुनर, २ निर्गुण, प्रलय।

सं० अगेन्द्र (अग्र=पहाड़ + इन्द्र=राजा, पु० सुमेरु, २ हिमालय।

सं० अगोचर अ=नहीं, गोचर=

इन्द्रियों के सामने, गो=इन्द्रो, चर=चलना (जो देखने में नहीं आवे, अदृश्य, अलख, गायब, ।

प्रा०अग्नौनी (सं० अग्रगमन, अग्र=आगे, गमन=जाना) स्त्री० मिलाप के लिये आगेजाना, पेशवाईकरना ।

प्रा०अग्नौनीकरना-बोल० दुलहा के मिलने के लिये सामने जाना, परात के सामने जाना, मिलनी करना ।

सं०अग्नि (अग्नि=जाना, जो ऊपर जाती है) स्त्री० आग, आगी, अनल २ दक्षिण पूर्वकोन का दिक्पाल ।

सं०अग्निकोण (अग्नि=आग, कोन =लुट वा गोशा) स्त्री० पूर्वदक्षिण के बीच का कोन जिसका स्वामी आग है ।

सं०अग्निक्लीडा (अग्नि + क्लीड = तेलना) भा० स्त्री० आतशवाजी ।

सं०अग्निचूर्ण (अग्नि + चूर्ण = पीसना) कर्म० पु० शब्द ।

सं०अग्निवाण (अग्नि + वाण = तीर) पु० आगका तीर ।

सं०अग्निसंस्कार (अग्नि + संस्कार = विधिता) पु० मुर्देको आगदेना, जलाना, दाग देना ।

सं०अग्निहोत्री (अग्नि + होत्री =

होमकरनेवाला) क० पु० अग्निहोत्रक, होमकरनेवाला, सदा आग रखने वाला आतशपरस्त ।

सं०अग्र (अग्नि=जाना) गु० आगे पहले, मुख्य, प्रधान, मुखिया, पहला ।

सं०अग्रगण्य (अग्र=आगे, गण्य = गिनाजाय, गण=गिनना) कर्म० सबसे पहला और बहुत अच्छा गिनाजाय, प्रधान, मुखिया, मुख्य ।

सं०अग्रगामी (अग्र=आगे, गामी=चलनेवाला, गममाना) क० पु० सबसे आगे चलनेवाला, अगुआ, सरदार, प्रधान, नायक, मुखिया, पेशवा ।

सं०अग्रज (अग्र=आगे, जन, पैदा होना) पु० बड़ामर्हि ।

सं०अग्रदूत (अग्र=आगे, दू=चलना दूत=चलनेवाला) क० पु० नकीब, जो आगे सवारीके तारीफ करता चलता है ।

सं०अग्रसर (अग्र=आगे, सर=जाना) गु० आगे चलनेवाला, अग्रगामी पु० सरदार ।

सं०अग्रिम=गु० अपौड़ी, पेशगी ।

सं०अघ (अघ=पापकरना) पु० पाप, अपराध, अधर्म, गुनाह, २ दोष, बुरा, दुःख ।

सं०अघसानि (अघ=पाप, सानि=

वत्पचि स्थान, स्वन=सोदना) गु०
पाकी स्थाने, पापी, गुनहवार ।

सं० अघटित (अ+घटित, यट=
होना, वा चेष्टा करना) गु० अयोग्य
अनहोनी, नाशुदनी, गैरमुमकिन ।

सं० अघमर्षण (अघ=पाप, मर्षण
मृप=छुटाना) भा० पु० पापनाशक
मेष मोक्ष=योपासनमें पड़ना मात्र ।

प्रा० अघाई (अघाना) भा० स्त्री०
पेटभराव, वृत्ति, आसुदगी ।

प्रा० अघाना कि० अ० पेटभराना,
ढरना, अफरना, मारपीटना, ठम
होना, आसुदारीना ।

सं० अघामुर (अघ=पाप, अमुर=
राक्षस) पु० एक राक्षसका नाम
जिससे कमने भीष्टण के पारने
के लिये भेजाया ।

सं० अघोर (अ=नहीं, घोर=हरावना
अर्थात् गाँव, वा जिससे अविद कोई
हरावना नहीं) पु० शिव, गु०
हरावना, भयानक ।

प्रा० अघोरी (सं०, अघोर) गु० अ
घोरपंथी, जो सब चीज बलिदत्त
भीर दुराधी खाते हैं ।

सं० अंक (अङ्क=विह करना, गिनना)
पु० आँक, विह, संख्या, संकेत,
नम्र २ मोट ।

प्रा० अंकना (सं० अङ्कविह करना)

कि० सं० छापना, मोहर देना,
लिखना, २ मोलकरना, नाँवना ।

सं० अंक विद्या (अङ्क=संख्या, वि-
द्या) स्त्री० गणितविद्या, हिसाब ।
प्रा० अंकाना (सं०, अङ्कविह करना)
कि० सं० मोल ठहराना, नाँवना,
परवाना ।

सं० अंकित (अङ्क=विह करना)
स्त्री० विह किया हुआ, नाँव हुआ,
मोल ठहराया हुआ, नाँवा हुआ,
लिखा हुआ ।

सं० अंकुर (अङ्क=विह करना, वा
जाना) पु० अंकुश, आँकुर, कोपल
गाड़ी, पुनगी ।

सं० अंकुश (अङ्क=विह करना) पु०
लोहेका बाँटा जिससे हाथीकी चला-
से हैं, आँकुर, आँकड़ी ।

प्रा० अँकोर पु० घूम, रिसव ।
प्रा० अँखिया (अँकि) स्त्री० अ० अ०
आँखें ।

सं० अङ्क (अङ्क=विह करना) पु०
शरीर, देश, शरीर का एक भाग,
अवयव, अंग २ देश विशेष, वा
भागलपुर ।

सं० अङ्गजनित (अङ्ग=शरीर +
जनित=उत्पन्न=जन्म=उद्धारोना)
व० पु० देहमे पैदा ।

प्रा० अङ्गड़ाटि (सं० अङ्ग) भा० स्त्री०
देह पगड़ना, उगार ।

सं० अक्षण् (अगि=जाना) पु०
 अक्षन् } आगन, अगनाई, चौक
 चौगान, आगन, महन ।

सं० अक्षद (अक्ष=शरीर, दै=शुद्धकर,
 ना, वा, दा=देना) पु० बह्दा भुज-
 वन्द, शान्द २ चालि वानरका
 वेदा ।

सं० अक्षना (अंग=शरीर, अंगान्
 गुन्दर शरीरवाली) स्त्री० सुन्दरग्री
 गुन्दरी, कामिनी, ग्री, लुगाई ।

प्रा० अक्षना पु० (सं० अंगन)
 अक्षनाई, स्त्री० } आगन, चौक ।

सं० अक्षन्याम (अंग=शरीर, न्याम=
 धरना) स्त्री० पु० अंगनद्वार अंग
 न्याम करना ।

सं० अक्षपत्र-पु० महापत्र, महदगार ।

प्रा० अक्षग्या (अंग=शरीर, ग्या=वचन) पु० अक्षग्या,
 वचन के उद्गार ।

प्रा० अक्षग्री स्त्री० वचन, वचनग्री ।

प्रा० अंगुली (सं० अंगुली, अंग-
 विह्वलना, तिनना)
 अंगुली } स्त्री० हाथका वह अंग
 अंगुली } वा अंग. हाथ पर
 की अंगुली ।

प्रा० अंगुली काटना, घोल= अ-
 कटने से होना, अकटना करना ।

सं० अक्षव (अंग+अव=रक्षित)
 पु० मेवा ।

प्रा० अक्षवनिहारा पु० संभेवाला,
 बरदारत करनेवाला ।

प्रा० अक्षा (सं० अंग=शरीर) पु०
 अंगरखा, कुरता, कुरती ।

सं० अक्षांगीभाव-भा० पु० शरी-
 रक सम्बन्ध, बाहमी मदद ।

सं० अक्षार (अंग चित्र करना) पु०
 अंगारा, जलनाहुमा, कोपना ।

प्रा० अक्षार (सं० अंगार) पु० जल-
 ना हुमा कोपना, अंगार ।

प्रा० अक्षारग्लोटना घोल=
 हाइ भे जलना, हुमागना, कलपना ।

प्रा० अक्षिया (सं० अक्षिका, अंग=
 शरीर) स्त्री० घोलनी, कानुनी, कंगुली ।

सं० अक्षिग (अंग=शरीर, अक्षि-
 ग=वचन) पु० अक्षिगि का नाम
 जो अक्षि के मुह से पैदा हुमा ।

सं० अक्षी (अंग+क्षी) पु०
 काना ।

सं० अक्षीका (अंग=शरीर, कृ-
 करना) वा पु० मानना, स्वीकार,
 अंगेजना, इत्ते, भेद ।

प्रा० अक्षीकाकटना, घोल= मान-
 ना, स्वीकार करना, अंगेजना,
 इत्ते करना ।

प्रा० अक्षीडी ? } स्त्री० भाग - रखने अक्षीडी } का वर्णन, भागकी बरोसी, कांगदी	सं० अचर (अ=नहीं, चर=चलना) गु० नहीं चरनेवाला, अचल, अटल ।
सं० अंगुल (अङ्ग=चिह्न करना) पु० आठ औं का नाप, एकगिरहका धीसरा हिस्सा ।	सं० अचल (अ=नहीं, चल=चलना) गु० नहीं चलनेवाला, ठहरा हुआ अ- टल, पु० पहाड़, पर्वत ।
सं० अंगुलित्राण (अंगुलि + त्राण =त्रा) हाथका मोजा, दस्ताना ।	सं० अचला (अचलता) स्त्री० पृथ्वी, परांती, भूमि, जमीन ।
प्रा० अंगुठा (सं० अंगुष्ठ, अंगु=हाथ, स्था=उठरना) पु० मोटी अंगुली ।	प्रा० अचानक ? (सं० अकस्मात्) अचानचक } कि० वि० एका एकी संयोग से, अनुचित, बिन कारण, दैवयोग से, दफ्तबतन ।
प्रा० अंगुठी (सं० अंगुलीय) स्त्री० मुंदरी, बज्जा, अंगुरी में पहनने का गरना ।	प्रा० अचाना ? (सं० आचमन, आ, अचवाना } चमु=साना) कि० सं० साने के पीछे मुंह साफ करना, आचमन करना ।
प्रा० अक्षोछा (सं० अक्ष=शरीर, चल=बांधना, या, अक्ष पोंदना) पु० गपदा, शरीर पोंदने का कपड़ा ।	प्रा० अचार (सं० आचार, आ, चर= चलना) भा० पु० चलन, चाल, चलन, रीतिपांति, व्यवहार, धर्मव्यवहार, तरीका ।
अंघ्रि (अपि=माना) पु० पांच अंगों की जड़ ।	सं० अचिन्त (अ=नहीं, चित्ति= सोचना) गु० अचेत, बेमुग्ध, निर्वुद्धि ।
अच पु० स्वर (अच=गुमकरना) उपाकर करना ।	सं० अचिर (अ=नहीं + चिर=देर) तुरन्त, जल्द ।
अचगरी स्त्री० अनुचित काम, आपसी, अस्वाचार ।	प्रा० अचीता (सं० अ=नहीं, चित सोचना) गु० बिनबाह, त्र (सं० अ- नहीं, चित्र, वेड बूझ, वा तसवीर) बिन तसवीर वा चित्र
अचल (अ=नहीं + चल=चलना) गु० स्थिर, कायम ।	
अमा (सं० आरवर्ष) पु० आरवर्ष, हिस्सा, हिस्सा	

प्रा० अचेत (सं० अचेतम्, अ=नहीं,
चित्त सोचना) गु० बेमुष, निर्बुद्धि,
मुन, मुर्छित, बेहोश ।

प्रा० अचेत होना, बोल० बेमुष हो-
ना, मुन होमाना, मुर्छा खाना,
मुर्छित होना ।

प्रा० अचैन (सं० अ=नहीं, चैन=
सुख) गु० बेरुछ, बराकुत, दुखी,
बे आनन्द ।

मं० अच्युत (अ=नहीं, च्युत=गिरना)
गु० ठहरा हुआ, अचल, अपल,
निरप, अमर, स्थिर, पु० विष्णु का
नाम ।

प्रा० अच्युता, } (सं० अच्युत=होना)
अच्युता, } कि० अ० जीना
रहना, होना, रहना ।

जैसे "तुमहि अच्युत अस हास्यकारी"

"मुमनजिम है शोक अपिकारी"

गुलसी हुन रामायण ।

"अच्युतानि मयि निहित हैं"

कबीरदास जीनि बनारस

मेयसागर,

प्रा० अच्युत (सं० अच्युत) गु० आगर,
बर्ल, हर्क, अचर, अहार आदि
बर्ल, २ नाहराइन ।

प्रा० अच्युता (सं० अच्युत, अ=नहीं,
च्यु=हाना) गु० बचा, उचप,
हुन्दर, स्वच्छ, मारु, पनोहर, बंगा ।

प्रा० अच्युतकरना-बोल० बंगा क-
रना, मला बंगा करना, बीमारी से
बंगा करना ।

प्रा० अच्युतलगना-बोल० मोहना,
कचना, सुलना, पसन्द आना, भाना,

प्रा० अच्युतहोना-बोल० बंगा होना
भना बंगा होना, बीमारी से आ-
राम पाना ।

प्रा० अच्युतसे अच्युत-बोल० सचसे
अच्युत, उचप, बहुत ही अच्युत, श्रेष्ठ ।

प्रा० अच्युताना पच्युताना, बोल०
कि० अ० पच्युताना, पस्ताना करना,
पचाचाप करना, अफसोस करना ।

प्रा० अच्युता (सं० अ=नहीं हिं०
च्युता) गु० नहीं हुआ हुआ जो चीज
होती न हो, पवित्र, देवता अथवा
आपिपुनिके लिये शुद्ध भोग आदि ।

प्रा० अज } (सं० अज, इदम् यज)
आज } कि० वि० आगत दिन,
वर्तमान दिन ।

सं० अज (अ=नहीं, ज=जैदा हुआ,
जन्=जैदा होना, वा अ=विष्णु, जन्=
जैदा हुआ) पु० अज, विष्णु, अज-
शिव, जीव, २ दंगरय राजा के
बाप का नाम ।

मं० अज (अज=जन्ना) पु० बहारा
मेयसागर ।

सं० अजा (अज्ञ=चलना) स्त्री०-
करी, २. माया ।

सं० अजगर (अज्ञ=चलना, गर=
निगलनेवाला, गृ निगलना) पु०
पहासाँव, अजदहा ।

सं० अजगत् (अजगु=शिव, अर्थात्
शिवका, अनोऽगम्यागौर्यस्य असी
अजगुः शिवः तत्त्वपनुः अजगत्
आजगत् वा,) पु० शिवका धनुष ।

सं० अजय (अ=नहीं, जि=जीतना)
गु० जिसकी जीत नहीं हुई हो, २
जो जीतानहीं जाय, अजीत, स्त्री० हार ।

सं० अजर (अ=नहीं, जरा=बुढ़ापा
लू=पूरा होना) गु० जो पूरा न हो
तदा जवान बनारहे ।

प्रा० अजहू } (अज्ञ=आज्ञ, हू=
भी, तह,) प्रि० वि०
अजहू } अयभी, आज भी,
अजो } अजब, आमतक ।

प्रा० अजान } (सं० अज्ञान) गु०
अनजान } मूर्ख, अनसमझ,
अनजान } अशुभ ।

सं० अजामिल- पक्षपाती आक्षेप
का नाम जो कदाचित् रहता था मि-
सरेपुत्र का नाम नारायण वा मरने
समय नाम लेनेसे नरगण ।

सं० अजिन (अ=नहीं, जि=जीतना)

ना) गु० जो जीतानहीं जाय, अपेल,
पत्थी, सबको जीतनेवाला ।

सं० अजिन (अज्ञ=जाना, वा च-
मकना) पु० मृगछाला, हरिण की
छाल जिसपर मछली और
संन्यासी लोग बैठा करते हैं ।

सं० अजिर (अज्ञ=जाना) पु०
आंगन, चौक, अँगना, अँगनाई ।

प्रा० अजीत (सं० अजित) गु० सप
को जीतनेवाला, यत्नी, जो जीता
नहीं जाय ।

सं० अजीर्ण (अ=नहीं, नीर्ण=पु-
राना व पुराना होना, पचना) गु०
अपच, नशीपचना, हस्य न होना ।

प्रा० अयोध्या (सं० अयोध्या, अ-
नहीं, पुद=लड़ना अर्थात् जहाँ कोई
लड़नेको नहीं आसक्त) स्त्री० अयध,
मूर्खशिष्य की रामपत्नी ।

सं० अज्ञ (अ=नहीं, ज्ञ=जानना)
गु० अज्ञान, अनजान, अनसमझ,
अशुभ, मूर्ख, बेचकूत ।

सं० अज्ञात (अ=नहीं, ज्ञात=जाना
हुआ, ज्ञा=जानना) गु० अन-
जाना, नहीं जाना हुआ, २. अज्ञ-
यक्त, मूर्ख ।

सं० अज्ञान (अ=नहीं, ज्ञा=जानना)
गु० अज्ञान, अनजान, अनसमझ, अशुभ, मूर्ख, बेचकूत ।

अवृक्ष पु० मूर्खता सेवकूफी ।

सं० अज्ञानता (अज्ञान) भा० स्त्री०

मूर्खता, अज्ञानपन, सेवकूफी, ना-
कदमी ।

सं० अज्ञानी (अज्ञान) पु० मूर्ख

अज्ञान, अवृक्ष, अनसमझ, सेवकूफ,
नादान ।

सं० अजल (अज्ज=जाना वा मांगना)

पु० धंघल, आंघल, कपड़ेका
किनारा ।

सं० अजून (अज्=मांगना,

मुरमा लगाना) पु० मुरमा, काजल ।

सं० अज्जना (अज्ज=शोभना)

श्री० अनुमान्ही मा ।

सं० अज्जलि (अज्ज=मिथाना) श्री०

दोनों हाथों का मिलाना, हाथ
का सम्बुद्ध, दोनों हाथों को इस
तरह से मिथाना कि बीच में मगर
छातीरहे त्रिममें पानीआदि लिये
जाय, २ एक मगरका नाव, इनकी
बीज कि दोनों हाथों में अटमके ।

सं० अज्जसा (अज्ज=जाना, मा=मां

धारण) २ शीघ्र सारा ।

श्री० अज्जमन-श्री० संधा, बदली ।

प्रा० अज्जमन-अज्ज=नहीं + अज्ज=

बचना) छद्मी कारीन ।

प्रा० अटक (अटकना) स्त्री० रोक,

रुकाव, आड़, २ सिंधु नदीका नाम ।

प्रा० अटकना-कि० स० रोकना

बंदकरना, कि० अ० रुकना, बंद
होना, ठहरना, रहना ।

प्रा० अटकल (अटकलना) स्त्री०

अनुमान, अंदाजा, कून ।

प्रा० अटकलपत्र, बोल० वे अं-

दास, वे हिसाब, उटक नाटक, वे
और ठिकाने, योंही ।

प्रा० अटकलना, कि० स० अं-

दाजा करना, अनुमान करना, सो-
चना, विचारना, कूनना ।

प्रा० अटका, पु० भीमगन्ध के

प्रसादके लिये भातबनानेका मिट्टी,
का बरतन ।

प्रा० अटकाना कि० स० रोकना,

ठहराना, रुकना, बंदकरना ।

प्रा० अटकाव (अटकाना) भा०

पु० रोक, रुकाव, प्रतिवन्ध ।

प्रा० अटसेल (सं० अटसेल

अटसेल } अट=बहुत, सेल=
केल) पु० धंघल
मिथाना, मिथानाही, शोध ।

प्रा० अटसेली (सं० अट से-

अटसेली } ला) स्त्री० धंघ
लना, मिथाना-
वन, मिथाना, धंघलाना,) जोड़ी ।

सं० अटन (अट=फिरना) भा०
पुं० फिरना, चलना, भ्रमण, यात्रा,
गमना, सफा, सँपारी, २ अटारी ।

प्रा० अटना (सं० अट=फिरना,
जाना) क्रि० अ० समाना, भर
जाना, २ फिरना ।

प्रा० अटपट, पुं० } गुं० टेढ़ा
अटपटी, स्त्री० } टेढ़ी, बाँका,
अटपटांगी, स्त्री० } बाँकी, टरी
टेरी, एरी,
बैठिकाने, बैठंगी, कठिन,
पैंगुन, पेचीदा ।

सं० अटल (अट=नहीं, टल=घब-
राना) गुं० अचल, जो टलेनहीं,
ठहराहुआ, दृढ़, पोंपदार ।

सं० अटवि } (अट=जाना, फिर-
अटवी } ना) स्त्री० बन, जंगल

प्रा० अटा } (सं० अट, अट=ऊँ
अटारी } चा होना, बड़जाना
या निरादर करना) स्त्री० अटारी,
ऊपरकी कोठरी ।

प्रा० अटाला-देर, असचाव, सा-
मान, सटला, सामग्री ।

प्रा० अट्ट (सं० अट=नहीं, हिं=
टटना) गुं० बहुतही बहुत जो टूटे
नहीं, समूचा, पूरा, कुल ।

प्रा० अटरन (भा० स्त्री० चरती,
आंठी) २ घोड़ेकी एक चाल ।

सं० अट्टहास (अट्ट=बहुत, हास
=हँसी) भा० पुं० बहुत हँसना,
सिलसिलाकर हँसना, कहकहा
पारना ।

सं० अट्टालिका (अट्ट=ऊँचाहोना
बढ़ना वा निरादर करना) स्त्री०
अटारी, अटा, ऊपरकी कोठरी,
बालाखाना ।

प्रा० अटतालीस } (सं० अष्टचत्वारिंशत्, अष्ट=
अड़तालीस } आठ, चत्वारिंशत्=वालीस) गुं० चालीस और
आठ ।

प्रा० अठतीस } (सं० अष्ट=आठ
अड़तीस } त्रिंशत्=तीस) गुं०
तीस और आठ ।

प्रा० अठवारा-सं० अष्टवार, (अष्ट=
आठ, वार=दिन) गुं० आठवाँदिन
२ इफ्ता, सप्ताह ।

प्रा० अठसठ } (सं० अष्टषष्टिः अष्ट
अड़सठ } =आठ, षष्टि=साठ)
गुं० साठ और आठ ।

प्रा० अठहत्तर (सं० अष्टसप्ततिः
अष्ट=आठ सप्तति=सत्तर) गुं०
सत्तर और आठ ।

प्रा० अठाईस } (सं० अष्टविंशतिः
अठाईस } अष्ट=आठ, विं-
शति=बीस) गुं० बीस और आठ

सं० अण्डकट्याह (सं० अण्ड +
कट्याह) पु० अण्डकट्याह ।

सं० अण्डज (अण्ड=अण्डा, ज=जैदा
हुआ, जनैदा होना) पु० अण्डजे से
पैदा होनेवाले जानवर जैसे पत्थर,
साँप मकली, और गोहं, गिरगिट,
बिससुरा आदि ।

प्रा० अण्डा (सं० अण्ड) पु० पत्थर
आदि के पैदो होने की जगह ।

सं० अतः क्रि० वि० इससे इस
लिथे, लिखाता ।

सं० अतएव—क्रि० वि० इसीलिये,
पस ।

सं० अतसी (अन्=जाना) स्त्री०
ठीसी, सन, अलसी ।

सं० अतत्त्वज्ञ (अ=नहीं + तत्त्व मूल
ल + ज्ञा=जानना) क० पु० मूल
का न जाननेवाला, गलतकरण,
बेसमझ ।

सं० अतत्त्वज्ञता—भा० स्त्री० नास-
मझी, गलतकरणी ।

सं० अतन (अ=नहीं + तन=श-
=अतनु) स्त्री० गु० शरीररहित,
पु० तानदेह ।

सं० अतन्द्रित—गु० आतस्परहित
सुखा ।

सं० अतल (अ=नहीं + तल=पाह)

गु० अण्ड पु० नीचे के सात लोको
में से पहिला लोक ।

प्रा० अताई, पु० गर्वया, वजंत्री, व-
जानेवाला ।

सं० अति (अन्=जाना) गु० उप०
बहुत, अधिक, बहुतही बहुत, बड़ा,
बीताहुआ, रोजुका, उल्लापना, पार ।

सं० अतिकाय (अति=बड़ी, काय=दे-
ह) पु० बड़ा शरीर, २ राखणका पुत्र
जिसे लक्ष्मण ने पारा पाया अथवा
गु० बड़ी देरवाला, दानवहारी, भया-
नक ।

सं० अतिक्रम (अति=पार + क्रम=
चलना) भा० पु० पारजाना, चञ्च-
यन, अपराध, दुर्प ।

सं० अतिक्रान्त (अति + क्रान्त,
क्रम=चलना) क० पु० पारगयाहु-
आ, बहुत बड़गया, सबकुछ पाया
हुआ ।

सं० अतिथि (अन्=जाना अर्थात्
जो एक जगह नहीं ठहरता फिरता
रहता है) पु० पाहुना, महिमान २
अभ्यागन, योगी, संन्यासी ।

सं० अतिथिमत्त (अतिथि + मत्त
मत्त=सेना करना) क० पु० अतिथि-
पूजक, महिमानपरस्त, मेतवान ।

सं० अतिथिमक्ति—भा० स्त्री० अति-
थि सेवा, मेतवानी ।

मं० अतिरिक्त (अति + रिक्त) मु०
पूराहुमा, मित्राय, अज्ञावह ।

मं० अनिरेक (अति + रेक, रिच = मुद्रा
होना) मा० पु० अचिह्ना, कमरन ।

मं० अनिनाय (अति = बहुत, शी =
मौला) मु० बहुतही बहुत, आ = पन्न
अतिरे, विहाय ।

मं० अनिमार (अति = बहुत, मू = मा-
ना) पु० वेद बनना, मेघप्रणीयोग,
वेदोंका योग, वेद की बीमारी ।

मं० अर्नान (अति = पीना दूमा, इ =
अना) इ० पु० पीनादूमा हो
गुहा, गे, गुहा दूमा ।

मा० अर्नान (मं० अर्नानि) पु०
अर्नाथ } कोली, मं०याभी ।

मं० अर्नान (अ = नहीं, नून = नो-
अनुक्ति) नना) मु० अमहा

मा० अर्नाट, अत नही अना
अर्नाट नही अना, अनायाग, =
अना उपाय, अमही अनाही न
होम ।

मं० अर्नान (अति = अर्नाट, अना =
अना) मु० बहुतही बहुत, अतिरिक्त,
अतिर ।

मं० अर्नान (अति = अना + अना =
अना, इ = अना) मा० पु० अनाति
अना, अनाट, अनाट ।

मं० अर्नान (अति = अना +

आचार = चलन) मा० पु० अनाति,
अना, अनाट ।

मं० अत्युक्ति (अति = बहुत, उक्ति = क-
हना, वत् बोलना) मा० श्री०
बहुत बड़ावा देकर कहना, पूरी
सराह करना, एक अंतकार का
नाम, मुवाजिदा ।

मं० अत्र (इदम् = यह) कि० रि० यहाँ
इम जगह, इस ठीर ।

मं० अत्रि (अत्र = गाना वा बषाना)
पु० मान अत्रिणी में का एकश्रुति
प्रथा का देश ।

मा० अथ यपुषः अथ, फिर, उप-
ना । इनके पीछे, मुक्त, आराम, इस
तरह से ।

मं० अथवा (अथ = फिर, वा, वा)
यपुषः वा, वा, विहा, यहा-
ना ।

मा० अथाट (मं० अ = नहीं, आ = रह-
ना) मा० श्री० जगह नहीं लोग
वातनीन और हीनी उदा करने के
निचे इहट्टे हीनेट्टे, पैरह, = अना
अना ।

मा० अथाट (मं० अ = नहीं अना =
जगह, वा अना) मु० अना मी.
अना, बहुतही अना, अनाट ।

मा० अट (अ = अट्टे) मु० अना ।
अना }

अदन (अद=दाने) पा=पु०
नन, राना ।

अदनीय (अद+नीय) अं=

पु० भोजन योग्य, सुदेवी ।

अदव. कापरा, कापार ।

अदम्र गु० बहुर, पुर्ण ।

अदमूजा (अं= अर्द्धपराज,
अर्द्ध=आपा, द=

अदमरा (अं= अर्द्ध=आपा, द=

अधमूजा (अं= अर्द्ध=आपा, द=

अधमरा (अं= अर्द्ध=आपा, द=

आपपा दूभा, नीम मुर्दा ।

प्रा० अदल बदल, शीत० एराफेरी,

वनय ।

प्रा० अदला बदला करना, शीत०

बनना, बनटना, एक शीत के

एकटे में हमी शीत लेना ।

प्रा० अदहन (अं=अ. दहन या=अवि

ह, दहन=अदहन) पु० दानवावन

अवरा शीत शीत एकादेनेनेने व-

दुनी मर्द व नी ।

मं० अदर (अ=अरी, दा=अरी)

पु० बहुराज्य, दुना ।

सं० अदूरदर्शी, क=पु० कलापि ।

कोना नतर ।

सं० अदृश्य (अ+नरी, दृ=देख

अदृष्ट (ना) गु० अलग, नोदेख

ने न न करे, अगोचर, गुप्त, अदेख ।

मं० अदेय (अ=नरी, देय=देनेयोग्य,

दा=देना) गु० नहीदेनेयोग्य ।

सं० अद्वा अय० माघान, सन्ध्या ।

प्रा० अद्दी (अं=अर्द्ध=आपा) श्री०

आर्षदपदी २ दहनघरबीवनसेव ।

मं० अद्भुत (अद्=अधमा, भू=श्रीता

वा, भा=बदलना) गु० अनोखा-

अद्भुत, अजीब ।

सं० अद्यापि (अद्य+अपि) हि०

वि० आजतक, अबतक ।

मं० अद्यावधि (अद्य+अधवि) हि०

वि० अर्थात्तक, इस समयतक ।

प्रा० अद्रक (अं= अर्द्ध, अर्द्ध=नी-

ला) पु० आटा, आद, वही मर्द ।

मं० अदि (अदू=माना) पु० दाद,

दरद, २ दल, देह, मान ।

मं० अदिर्नाय (अ=नरी, दिरीद=

दुमा) गु० केवल, निरेखन, एक

ही, २ अद्भुत, अद्भुत, अमनी ।

मं० अदेन (अ=नरी, देन=दुमा)

पु० अदिदे ममान दुमा नीति

सं० अधिप (अधि=ऊपर, पा=
अधिपति) पालना, क० पु० रा-

जा, मालिक, स्वामी, मधु ।

सं० अधिमास (अधि=अधिक, मा-
स=महीना) पु० मलमास, लौदका
महीना ॥

सं० अधिराज (अधि=ऊपर, वा,
ममान, राजन्=राजा) पु० महाराज,
राजाधिराज ।

सं० अधिरुद्ध (अधि=ऊपर, रुद्ध
रुद्ध=गमना) क० पु० आरुद्ध, सवार ।

सं० अधिवास (अधि+वास=वस
=रहना) भा० पु० रहनेकी जगह,
सकूनत ।

सं० अधिवेशनः (अधि=ऊपर, वे-
शन=विश=संसना, जाना) वैदिक,
दरबार, इजलास ।

सं० अधिष्ठाता (अधि=ऊपर, स्था=
ठहरना) क० पु० स्वामी, मालिक,
रक्षक, पालनेवाला, अध्यक्ष, मुखर्,
अगुना ।

सं० अधिष्ठान (अधि+स्थान=भा०
पु० स्थिति, केषाम, मुकाम ।

सं० अधीत (अधि+इत=जाना)
भा० पु० पढ़ा हुआ, पढ़ित ।

सं० अधीति (अधि+इति=इ=
जाना) भा० स्त्री० पढ़ना, अध्ययन,
इलादगी ।

सं० अधीन (अधि=पर अधिपता वश
इन=स्वामी) गु० वसमें, आज्ञाका-
री, दबेल, ताबेदार ।

सं० अधीनता (अधीन) स्त्री० ताबे-
दारी, चाकरी, दबाव हुकम मानना ।

सं० अधीर (अधि=नहीं, धीर=धीरज
बाला) गु० चंचल, उतावला, घब-
राया हुआ, असंतोषी, चपल, अस्थि-
र, इदबदिया, चटपटा, जल्दबाज,
पस्तीहम्पत ।

सं० अधीस्ता (अधीर) भा० स्त्री०
घबराहट, चंचलाहट, उतावेली, वे-
सवरी, इदबद्री, चटपटी ।

सं० अधीश (अधि=ऊपर वेअधि-
अधीश्वर) धिकेईश वा ईश्वर=
स्वामी) पु० राजाधिराज, राजाओं
का राजा, महाराज, शाहनशाही ।

सं० अधुना=कि० वि० अब, इसवक्त ।

प्रा० अधूरा (अधूरा) गु० अधवना,
अनवना, पूरानहीं, नांमुकम्मिली ।

प्रा० अधूराजाना=बोल० कथाजा
ना, कथेबचे का गिरना ।

प्रा० अधेड़ (अर्ध=आधा) गु० अर्ध-
वृद्ध, जिसकी आधीउमर बीत गई हो
यह शब्द स्त्री के लिये बहुत बार
बोला जाता है ।

प्रा० अधेन (सं० अध्ययन) भा०
पु० पढ़ना, इलादगी ।

प्रा० अधेला (सं० अर्ध=आधा) पु०
आधा पैसा, पैसेका आधा ।

प्रा० अधेली (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री०

आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना ।

सं० अधोमुख गु० नीचे मुख किये हुये,

शिर झुकाये हुये, उदांस, सरनंग ।

प्रा० अधोड़ी (सं० अर्द्ध=आधा)

स्त्री० आधी साल, मोटा और गाढ़ा

घमड़ा जिसके जूने के तले, डोल

डोलनी और घोड़े के माज आदि

पनते हैं ।

सं० अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अक्ष=कै

लाना) पु० स्वामी, मालिक, प्रधान,

मुखिया, मुख्य, अधिकारी ।

सं० अध्ययन (अधि+इ=पढ़ना)

पु० पढ़ना, पवित्र पोथियों का पाठ कर

ना, ब्राह्मणों के पटकर्मों का एककर्म ।

सं० अध्यवसाय (अधि+अव+सं

=गाग होना) पु० उद्यम, व्यवसाय,

रोजगार ।

सं० अभ्यापक (अधि+इ=पढ़ना)

पु० पाठक, गुरु उपाध्याय, आचार्य,

शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ानेवाला ।

सं० अभ्यापन (अधि+इ=जाना)

भा० पु० पढ़ाना, सबक देना ।

सं० अभ्याय (अधि+इ=पढ़ना) पु०

पाठ, पर्व, मर्म, यकरण, बाध, परि-

च्छेद ।

सं० अभ्यास (अधि+आस=पैटना)

भा० पु० मार, खपल, मारवण, वा-

जो अभेद मनीति है, उसी का नाम-

अभ्यास है ।

सं० अध्यासीन (अधि+आसी-

न-आस=पैटना) क० पु० पैठा हुआ ।

सं० अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=देना

अर्थात् जो सच्चा रस्ता बतलाता है)

पु० यज्ञ, होम, बलिदान ।

सं० अध्या (अध्वन्=मार्ग) स्त्री० राह ।

सं० अन्=निपेक्षवाचक अव्यय, सं-

स्कृत में जिस शब्द का पहला अ-

क्षर स्वर हो उस के पहले अ नहीं

आता बल्कि ऐसी जगह पर अ को

अन् होना है जैसे अनन्त, पर

हिन्दी में व्यंजन के पहले भी अन्

आता है जैसे अनदेखा ।

अं० अनुकृतांशुड-बड़ नौकर

जिन्हें सरकार नौकरी देनेकी जि-

म्मेदार नहीं ।

प्रा० अनस (अनव्याना) भा० स्त्री०

रिस, क्रोध, क्रोधगुस्सा, रेहाह, ईर्ष्या ।

सं० अनस (अ+नस) नमहीन,

जिस के नम न हो ।

प्रा० अनसाना-कि० अ० क्रोध करना,

विमियाना, क्रोध करना, गुस्सा हो-

ना बिड़ना, गुनसाला, लका होना ।

प्रा० अनगढ़; (अन्=

नहीं-गाढ़-

ना=बना-

ना) गु०

अनकड़ा, अकड़ा, अनसीमा, नहीं

पका हुआ ।

प्रा० अनगदीवात-बोल० बे ठिका-
ने यात, बे घेल पात, बे सिर पांच
की यात, बेडंगीयात ।

प्रा० अनगणित } (सं० अगणित
अनगिणत } त, अ = नहीं,
अनगिणती } गण = गिनना)
गु० अपार, बे-
गुमार, असेरुपात, बहुत, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना (सं० अगणित)
गु० नहीं गिना हुआ, बे गिना,
२ अनगणित, अपार, बेगुमार, बे-
हिसाब ।

प्रा० अनगिना महीना-बोल०
सी को गर्भ का आठवां महीना,
जब लुगई पेट से होती है उस
सपथ का आठवां महीना ॥

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=नाप)
गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सा-
दा, शुद्ध, बेगुनाह ।

प्रा० अनह (अ=नहीं, अह=देह)
पु० कामदेव, एकबार महादेव ने
अपनी तीसरी आंख की आग से
कामदेव को जला दिया था उसी
दिन से इसका नाम अनह हुआ,
यमराज और भद्रा का पुत्र ।

प्रा० अनचाहत (अ=नहीं, चाहना)
गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित ।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चित्
सोचना) गु० अचानक, एकाएक,
अधीता ।

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु०
नहीं जाना हुआ, २ निर्बुद्धि ।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि०
वि० चिनजाने, बे जाने बूझे, नहीं
जानके, अज्ञान ।

प्रा० अनजीवित (सं० अजीवित)
क० पु० मृतक, मुर्दा ।

सं० अनडुह (अन=अकड़ा + रह=
लेजाना) पु० बेल ।

सं० अनह्वान् (सं० अनडुह) पु०
बेल ।

प्रा० अनत (सं० अन्यत्र) क्रि० वि०
और जगह ।

सं० अनन्त (अन=नहीं, अन्त=पार)
गु० अपार, जिसका अन्त नहीं।
असीप, बेहद, पु० शेषजी, शेष-
नाग जिनके एक कनर हिंदू लोग
पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चौदह
गांठका एक धागा जिसको भादों
मुद्दी १४ अर्थात् अनन्त चौदसके
दिन पूजा करके हिंदू लोग अपने
दरिने हाथ पर बांधते हैं, ३ विष्णु,
धरणी, नक्षत्र, जीव, प्रह, लाह-
निहा ।

सं० अनन्य (अ=नहीं, अन्य=दूसरा)
गु० एकही, जिसको दूसरेका भारी-
सा नहीं ।

सं० अनपत्य (अन=नहीं + अपत्य=
पुत्र) पुत्रहीन, लावल्द ।

प्रा० अधेली (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री०
आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना ।

सं० अधोमुख गु० नीचे मुख किये हुये,
शिर झुकाये हुये, उदास, सरनगु ।

प्रा० अधोर्डी (सं० अर्द्ध=आधा)
स्त्री० आधी खाल, मोटा और गाढ़ा
घमड़ा जिसके जूने के तले, डोल
डोलघी और घोड़े के सान आदि
पनते हैं ।

सं० अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अक्ष=कै
लाना) पु० स्वामी, मालिक, प्रधान,
मुखिया, मुख्य, अधिकारी ।

सं० अध्ययन (अधि+इ=पढ़ना)
पु० पढ़ना, विषय पोषियों का पाठकर
ना, ग्राहकों के पटकर्मों का एककर्म ।

सं० अध्यवसाय (अधि+अव+सं
=गाय होना) पु० उपयुक्त, उपाय,
रोजगार ।

सं० अध्यापक (अधि+इ=पढ़ना)
पु० पाठक, गुरु उपाध्याय, आचार्य,
शिक्षक, बंद गाय पढ़ानेवाला ।

सं० अध्यापन (अधि+इ=पढ़ना)
भा० पु० पढ़ाना, सबक देना ।

सं० अध्याय (अधि+इ=पढ़ना) पु०
पाठ, पद, संग, वक्तव्य, वाक्य, परि-
च्छेद ।

सं० अध्यास (अधि+आस=बैठना)
भा० पु० आस, लपान, मंथन, वा-
स्तु २. सत्य असत्य वस्तुही

जो अभेद मतीति है, उसीका नाम
अध्यास है ।

सं० अध्यासीन (अधि+आसी-
न-आस=बैठना) क० पु० बैठा हुआ ।

सं० अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=देना
अर्थात् जो सच्चा रस्ता बतलाता है)
पु० यज्ञ, होम, बलिदान ।

सं० अध्या (अध्वन्=मार्ग) स्त्री० राह ।

सं० अन्=निषेधवाचक अव्यय, सं-
स्कृत में जिस शब्द का पहला अ-
क्षर स्वर हो उस के पहले अ नहीं
आता बल्कि ऐसी जगह पर अ को
अन् होता है जैसे अनन्त, अ-
हिन्दी में व्यंजन के पहले भी अ न
आता है जैसे अनदेखा ।

अं० अन्कवृत्तांश्वड=बह नीकर
जिन्हें सरकार नौकरी देनेकी जि-
म्मेदार नहीं ।

प्रा० अनस (अनखाना) भा० स्त्री०
रिस, कोप, कोप, गुस्सा, बहाह, ईर्ष्या ।

सं० अनस (अ+नस) नगहीन,
जिस के नख न हो ।

प्रा० अनखाना-कि० अ=कोपकरना,
विसिथाना, कोप करना, गुस्सा हो-
ना बिड़ना, खूनसाना, गलाहोना ।

प्रा० अनगढ़, अनगढ़ा, पु०
अनगढ़ी, स्त्री० } (अन्=
नहीं=गढ़-
ना=बना-
ना) पु०
अनबना, अदृक्, अनमीमा, नहीं
गढ़ा हुआ ।

प्रा० अनगदीवात-बोल० वे डिक्क-
ने बात, वे मेल बात, वे सिर पांच
की बात, बेदंगीबात ।

प्रा० अनगणित } (सं० अगणित
अनगणित } त, अ = नहीं,
अनगणित } गण = गिनना)
गु० अपार, बे-
शुमार, असंख्यात, बहुत, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना (सं० अगणित)
गु० नहीं गिना हुआ, वे गिना,
२ अनगणित, अपार, बेशुमार, बे-
हिसाब ।

प्रा० अनगिना महीना-बोल०
सूरी को गर्भ का आठवां महीना,
जब लुगाई पेट से होती है उस
समय का आठवां महीना ॥

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=गप)
गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सा-
दा, शुद्ध, बेगुनाह ।

प्रा० अनङ्ग (अ=नहीं, अङ्ग=देह)
गु० कामदेव, एकबार महादेव ने
अपनी तीसरी आंख की आग से
कामदेव को जला दिया था उसी
दिन से इसका नाम अनङ्ग हुआ,
यमराज और अद्धा का पुत्र ।

प्रा० अनचाहत (अ=नहीं, चाहना)
गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित ।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चित्
सोचना) गु० अमानक, एकाएक,
अधीता ।

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु०
नहीं जाना हुआ, २ निर्बुद्धि ।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि०
वि० बिनजाने, वे जाने धूँके, नहीं
जानके, अज्ञान ।

प्रा० अनजीवत (सं० अजीवित)
क० पु० मृतक, मुर्दा ।

सं० अनडुह (अनः=झकड़ा + वर=
लेजाना) पु० बँल ।

सं० अनड्वान् (सं० अनडुह) पु०
बँल ।

प्रा० अनत (सं० अन्यत्र) क्रि० वि०
और जगह ।

सं० अनन्त (अन्=नहीं, अन्त=पार)
गु० अपार, जिस का अन्त नहीं,
असीम, बेहर, पु० शेषजी, शेष-
नाग जिनके एक फनपर हिंदु लोग
पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चौदह
गांठका एक पागा जिसको भार्दां
मुदी १४ अर्थात् अनन्त चौदसके
दिन पूजा करके हिंदु लोग अपने
दहिने हाथ पर बांधते हैं, ३ विष्णु,
धरणी, नक्षत्र, जीव, व्रक्ष, लाई-
न्तिहा ।

सं० अनन्य (अ=नहीं, अन्य=दूसरा)
गु० एकही, जिसको दूसरेका भरो-
सा नहीं ।

सं० अनपत्य (अन्=नहीं + अपत्य=
पुत्र) पुत्रहीन, लावल्द ।

सं० अनिर्वचनीय (अ + निः + अनिर्वाच्या) वचनीय-क-
हने योग्य) जो कहने योग्य न हो,
अकथ्य ।

सं० अनिशम् - क्रि० वि० प्रतिदिन,
रोजपरा ।

सं० अनिल (अन्=जीना) पु०
पवन, हवा, वायु, वायु, पवार, वतास
संख्या ४९ ॥

सं० अनिष्ट (अन् + इष्ट, इष्ट=चाह
ना) अविष, अनिच्छित, साराव, बे
पारा ।

प्रा० अनी (अं=अणी श्री० नोक-
नीपी पार. = सं० अनीक) श्री-
कीर्ति, सेना, दल, बटुक ।

सं० अनीक (अन्=जीना अर्थात्
अभिमेरवा होती है) श्री० सेना,
कीर्ति, बटुक ।

सं० अनीति (अ=नहीं + नीति=
अच्छाचरन) श्री० अशाय, कुचाल,
बुरा चरन ।

सं० अनीय (अनी=धेना, पा=रचा
करना) क० पु०=मेवागति, मरदार ।

सं० अनीह (अ=नहीं + ईह=मुष,
इच्छा, चेश) गु० तिमको कुछ
पार नहीं, चेशाहित २ निर्गुण,
बेक ३ अज्ञमी, दीन्ता, बोदा,
अरे-प्रादे एक गवाहा नाम ।

सं० अनीहा (अन् + ईह) मा०
श्री० उदासीनता, बेरहाही ।

सं० अनु-उप० पीछे, साथ, अनुसार,
बराबर, पास, अनुकरण, नकल,
हरणक, कम, थोड़ा ।

सं० अनुकथन (अनु पीछे + कथ्=
कहना) भा० पु० कहे के पीछे क-
हना, बारंवार कहना, ताईद करना ।

सं० अनुकम्पा (अनु + कम्पा कां-
पना) भा० श्री० दया, कृपा, मेहर-
बानी ।

सं० अनुकरण (अनु=नकल, कृ-
करना) पु० नकल करना, अनुकृप ।

सं० अनुकूल (अनु साथ, कूल
पेरना) गु० महाय करनेवाला
मददगार, कृपालु, दयालु, मिहर,
वान, अनुसार, मुवाफिक ।

सं० अनुक्रम (अनु=पीछे क्रम=
चलना) गु० क्रमानुसार-नवीं बहार,
क्रमशः मा० पु० मरंभ, सूचीपत्र,
कहरिम्न ।

सं० अनुग- (अनु=पीछे + गम्=
जाना) क० पु० अनुसर, सेवक,
तावेदार ।

सं० अनुगानि (अनु=पीछे, गति=
चाल) मा० श्री० अनुमति, सम्म-
ति, मर्जी, आज्ञा ।

सं० अनुगामी (अनु=पीछे, गामी
=चलनेवाला, गम्=चलना) क०
पु० पीछे चलनेवाला, पु० गापी
२ नौकर, पीरोदार ।

सं० अनुग्रह (अनु=पीछे, ग्रह=ले-
ना) भा० पु० कृपा, मिहरधानी,
मंसमता, दया ।

सं० अनुगृहीत (अनु=पीछे + गृ-
हीत, गृह=लेना) र्भ्य० पु० दवाकिया
गया, निवाजागया, इहसानमन्द ।

सं० अनुचर (अनु=पीछे, चर=चल-
नेवाला, चर=चलना) पु० नौक-
र, दास, सेवक, चाकर, पीछेच-
लने वाला, २ साथी ।

सं० अनुचरी (अनुचर) स्त्री० दासी,
लौदी, बाँदी ।

सं० अनुचित (अ=नहीं, उचित=
ठीक) गु० अयोग्य, ठीक नहीं,
नामुनासिब ।

सं० अनुज (अनु=पीछे, ज=पैदाहो,
जन=पैदाहोना) पु० छोटाभाई ।

सं० अनुजा (अनुज) स्त्री० छोटी
बहन ।

सं० अनुजीवी (अनु=पीछे, जीविन्=
जीनेवाला, जीव=जीना) क० पु०
नौकर, दास, सेवक, चाकर, परा-
धीन ।

सं० अनुज्ञा (अनु=पीछे, ज्ञा=जान-
ना) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति,
हुक्म, चिहाना, ताकीद ।

सं० अनुत्त (अनु=पीछे + उत्त=उप-
हुआ) क० पु० दुःखसे पराहुआ,
रंजीदा ।

अनुताप (अनु + तप=तपना) भा० पु०
परचाचाप, अफ़सोस ।

सं० अनुदिन (अनु=हरएक
दिन) क्रि० वि० हरएक दिन,
दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोज-
मर्रा ।

सं० अनुनय (अनु + नी=लेजाना)
भा० पु० चिनप, शिक्ता, अदब,
नसीहत ।

सं० अनुनासिक (अनु=पीछे, नासि-
का=नाक) गु० सानुनासिक, जो
अन्तर मूँह और नाकसे ढोके जायें,
जैसे (रु, अ, ए, न, म) और अनुस्वार ।

सं० अनुपकारी (अनु + उप + का-
री, कृ=करना) क० पु० उपकार
रहित, बेफ़ैल ।

सं० अनुपम (अ=नहीं, उपमा=
बराबरी) गु० अनुप, उत्तम, अर्पूर्व,
जिसकी बराबरी न होतकी बेमि-
साल, बेनज़ीर ।

सं० अनुपयुक्त- र्भ्य० पु० अयोग्य
नामुनासिब ।

सं० अनुपल (अनु=कम पोढ़ा, पल=
निमेष,) पु० पल का, साठवाँ
हिसा, सेकण्ड ।

सं० अनुपात (अनु=पीछे, परावर
पत्न=गिरना) पु० जैराशिक, बराबर
सम्बन्ध ।

सं० अनिर्वचनीय (अ + निः + अनिर्वाच्या) वचनीय-क-
हने योग्य) जो कहने योग्य न हो,
अकथ्य ।

सं० अनिशम्-क्रि० वि० प्रतिदिन,
रोजपरा ।

सं० अनिल (अन=नीला) पु०
पवन, हवा, वायु, शब, बवार, बलास
मंरुपा ४२ ॥

सं० अनिष्ट (अन + इष्ट, इष्ट=चाह
ना) अविष, अनिच्छित, साराय, बे
पारा ।

प्रा० अनी (अं=अणी स्त्री० नोक-
नीपी धार. ० अं० अनीक) स्त्री०
दौल, सेना, दना, दटक ।

सं० अनीक (अन=नीला अर्थात्
असमेष्टा होती है) स्त्री० सेना,
फौज, दटक ।

सं० अनीति (अ=नहीं + नीति=
अच्छाचरन) स्त्री० अन्धकार, कुबान्त,
दुरा चरन ।

सं० अनीय (अनी=मेना, पा=रक्षा
करना) इ० पु०=मेनापति, मरदार ।

सं० अनीद (अ=नहीं + ईद=मुप,
ईश्वर, चेश) गु० जिसको कुछ
चाह नहीं, चेशाहित २ निर्गुण,
बेका ३ आजमी, दीना, बोदा,
अपेक्षादि कुछ राजा का नाप ।

सं० अनीहा (अन + ईह) भा०
क्रि० इहासीन, बेरहाही ।

सं० अनु-उप० पीछे, साथ, अनुसार,
बराबर, पास, अनुकरण, नकल,
हरएक, कम, थोड़ा ।

सं० अनुकथन (अनु पीछे + कथ=
कहना) भा० पु० कहे के पीछे क-
हना, बारबार कहना, ताईद करना ।

सं० अनुकम्पा (अनु + कम्पा कां-
पना) भा० स्त्री० दया, कृपा, देह-
वानी ।

सं० अनुकरण (अनु=नकल, क=
करना) पु० नकल करना, अनुकृप ।

सं० अनुकूल (अनु साथ, कूल
पेरना) गु० सहाय करनेवाला
मददगार, कृपानु, दयानु, विहर,
वान, अनुसार, मुवाफिक ।

सं० अनुक्रम (अनु=पीछे क्रम=
चलना) गु० क्रमानुसार, नतीकवार,
क्रमशः भा० पु० प्रबंध, सूचीपत्र,
केहरिम् ।

सं० अनुग- (अनु=पीछे + गम=
जाना) क० पु० अनुसर, सेवक,
तावेदार ।

सं० अनुगति (अनु=पीछे, गति=
चाल) भा० स्त्री० अनुगति, सम्प-
ति, पत्नी, आशा ।

सं० अनुगामी (अनु=पीछे, गमी
=चलनेवाला, गम=चलना) क०
पु० पीछे चलनेवाला, पु० मार्गी
२ नौकर, पैरोकार ।

सं० अनुग्रह (अनु=पीढ़े, ग्रह=ले-
ना) भा० पु० कृपा, मिहरवानी,
मंसमना, दया ।

सं० अनुगृहीत (अनु=पीढ़े + गृ-
हीत, ग्रह=लेना) र्थ० पु० दवाकिया
गया, निवासागया, इहसानमन्द ।

सं० अनुचर (अनु=पीढ़े, चर=चल-
नेवाला, चर=चलना) पु० नौकर,
दास, सेवक, चाकर, पीढ़ेच-
लने वाला, २ साथी ।

सं० अनुचरी (अनुचर) स्त्री० दासी,
लौकी, बांदी ।

सं० अनुचित (अनु=नहीं, उचित=
ठीक) गु० अयोग्य, ठीक नहीं,
नामुनासिब ।

सं० अनुज (अनु=पीढ़े, ज=पैदाहो,
जन्=पैदाहोना) पु० छोटाभाई ।

सं० अनुजा (अनुज) स्त्री० छोटी
बहन ।

सं० अनुजीवी (अनु=पीढ़े, जीविन्=
जीनेवाला, जीव=जीना) क० पु०
नौकर, दास, सेवक, चाकर, परा-
धीन ।

सं० अनुज्ञा (अनु=पीढ़े, ज्ञा=ज्ञान-
ना) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति,
हुक्म, पिछना, लाठीद ।

सं० अनुत्तम (अनु=पीढ़े + उत्तम=उत्त-
म) क० पु० दुःसमं, बरादुम्मा,
रंभीदा ।

अनुताप (अनु + तप=तपना) भा० पु०
परचात्ताप, अफसोस ।

सं० अनुदिन (अनु=हरएक
दिन) कि० बि० हरएक दिन,
दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोज-
मर्ती ।

सं० अनुनय (अनु + नी=लेमाना)
भा० पु० विनय, शिष्टा, अदब,
नसीहत ।

सं० अनुनासिक (अनु=पीढ़े, नासि-
क=नाक) गु० सानुनासिक, जो
अक्षर मुर और नाकसे थोछेनायै,
जैसे (र, ल, ग, न, य) और अनुस्वार ।

सं० अनुपकारी (अनु + उप + का-
री, कृ=करना) क० पु० उपकार
रहित, बेपैत ।

सं० अनुपम (अनु=नहीं, उपमा=
बराबरी) गु० अनूय, उचम, अपूर्व,
जिमही बराबरी न होसके बेमि-
ताल, बेनतीर ।

सं० अनुपयुक्त- र्थ० पु० अयोग्य
नामुनासिब ।

सं० अनुपल (अनु=इस पीढ़े, पल=
निपेय,) पु० पल बर, सादर
रिस्ता, सेहएद ।

सं० अनुपात (अनु=पीढ़े, पण्य=
पन्=गिरना) पु० बैरागिक, बराबर
समन्वय ।

सं० अनुपान (अनु + पा = पीना)

ए० औपधिकासहकारी, सहयोगी,
कारिया, बदका ।

सं० अनुबन्ध (अनु + बन्ध = बांधना)

बांधना, मिलाना, मेल, मिलाप,
धातुका गण सूचक पूर्वपर अन्तर ।

सं० अनुभव (अनु = पीछे, भू = होना)

भा० पु० ज्ञान, यथार्थज्ञान, विचार,
अनुमान, सोचना, समझना, सूझना,
तजरुवा ।

सं० अनुमत (अनु + मत्, मन् = सोच

ना) इमे० पु० सलाह दिया गया ।

सं० अनुमति (भा० स्त्री० सत्ताह, स-

म्पति ।

सं० अनुमान (अनु = पीछे, मा = माप

ना) भा० पु० अन्दाजा, अटकल,
विचार, कयास, तरामीना ।

सं० अनुमानी (क० पु० विचारने

वाला, अन्दाज करनेवाला ।

सं० अनुमित (अनु + मित, मा =

मापना) इमे० पु० अटकल गया,
कयास दिया गया ।

सं० अनुमेय (अनु + मेय = मापना)

इमे० पु० अन्दाज के लायक ।

सं० अनुमोदन (अनु + मुद = हँसना)

होना) प्रशंसा, समर्पण, नाईद करना ।

सं० अनुमोदित (अनु + मुद) क०

पु० आछादित, आनन्दित, खुश ।

सं० अनुयायी (अनु = पीछे, यायी =

आनेवाला, या = माना) इ० पु० पीछे

जानेवाला, दास, नौकर, अनुचर
परोकार ।

सं० अनुयोग (अनु + युज = मिल-

ना) भा० पु० तिरस्कार, निरादर,
बेकदरी !

सं० अनुयोजन (भा० पु० पूछ पाछ,

अपील ।

सं० अनुयोक्ता { (अनु + युज = मि-

अनुयोजक } लना, मिलाना)

पूछपाछ करनेवाला, अपीलार्थ, अ-

र्थात् अपील दायर करनेवाला ।

सं० अनुयोज्य (इमे० पु० निन्दायोग्य

काचित, हिकारत, रिश्वेट अ-

र्थात् वह जिसपर अपील की जाय ।

सं० अनुरक्त (अनु = साथ + रक्त =

रंगना) क० पु० प्रेमी, अनुहूत,
शायक, आशिक ।

सं० अनुराग (अनु = साथ, रक्त =

रंगना) भा० पु० प्यार, स्नेह, प्री-

ति, छेद, मोह, मुश्किल ।

सं० अनुरागी (क० पु० प्रेमी, स्नेही,

मुश्किली ।

सं० अनुसंधा (अनु = पीछे, राधा =

विशाला नक्षत्र, राध = पूरा करना)

स्त्री० सप्तरश्मि नक्षत्र ।

सं० अनुरुद्ध { (अनु + रुध = रोक-

अनुरोधित } ना) इमे० पु० रोका

गया, कैद किया गया ।

सं० अनुरूप (अनु = बराबर, रूप =

दौल) गु० बराबर, तुल्य, समान,
 एकमा, सदृश, अनुसार, अनुहार ।
 सं० अनुशासक (अनु + शास् = सि-
 स्ताना) क० पु० शास्त्रिण ।
 सं० अनुरोध (अनु + रुध् = आ-
 नुरोधन) पु० अपेक्षा, निम्न
 ३ रोकना, ३ आज्ञापालन, आग्रह,
 सम्मति, वार्तालि लिखित ।
 सं० अनुरोधक (अनु + रुध् = आ-
 नुरोधी) आज्ञापालक, क्रमा-
 वरदार ।
 सं० अनुलेप (अनु + लिप् = उगा-
 नुलेपन) ना० भा० पु० उच्च
 लगाना, नेत्रलगाना, मुग्ध्यादिकलेप ।
 सं० अनुलोम (अनु = पीछे + लोम =
 बाल) गु० बालसहित, यथाक्रम,
 विलोम ।
 सं० अनुवाद (अनु + वद = कहना)
 भा० पु० बारबार कहना, बल्वा,
 कर्तृपा ।
 सं० अनुवृत्ति (अनु + वृत्ति = चरना)
 मार्ग, सेना, जरिषा, वार्तालि ।
 सं० अनुवेदना (अनु + विद् = वि-
 चारना) भा० स्त्री० सहानुभूति,
 हृदय ।
 सं० अनुवर्जन (अनु + वृज् = वर्ज-
 नुवर्तन) = भाना, वर्जना)
 पीछेचलना, अनुगमन, परीक्षा करना ।

सं० अनुशासन (अनु = पास, शास् =
 सिस्ताना) भा० पु० आज्ञा, हुक्म,
 शिक्षा, सीस ।
 सं० अनुशीलन (अनु + शील = अभ्यास
 करना) भा० पु० आलोचन,
 अभ्यास करना, सेवन ।
 सं० अनुशीलन (अनु + शील = रज
 करना) भा० पु० परीक्षापत्र करना,
 अकसोस करना ।
 सं० अनुष्ठान (अनु + स्था = उदर-
 ना) भा० पु० आरम्भ, आगमन
 समल ।
 सं० अनुसन्धान (अनु = पीछे, सम् =
 अच्छी तरह से, धी = खोजना) पु०
 खोज, पता, खोजना, खोज, अ-
 न्वेषण, खोज, खोज, खोज, खोज,
 खोज, खोज, खोज, खोज ।
 प्रा० अनुसरण (अनु +
 अनुहरण) सरण, अनु =
 पीछे, सू = जाना) क्रि० अ० पीछे
 चलना, २ साथ चलना ।
 सं० अनुसार (अनु = पीछे, सू = जाना)
 भा० पु० बराबर, मुताबिक, समान ।
 सं० अनुस्यूत = धोवनी, परस्पर,
 धारण, खलपल ।
 सं० अनुस्वार (अनु = पीछे, वार =
 स्वर = उच्चारण करना) पु० स्वरके सि-
 रपर की विद्वत् ।
 प्रा० अनुग्रह पु० अनोखा, नया, अपूर्व ।
 प्रा० अनुप (सं० अनुपम) गु०
 अनुप (निसर्ग बराबरी नहीं,

सचय, धेनु, सचसेमच्छा, बेमिस्लं,
२ दलदल ।

सं० अनृत (अनृ=नहीं, कत=सांन,
अनृ=तानी) गु० भूटा, स्त्री० भूठ ।

सं० अनेक (अनृ=नहीं, एक) गु०
बहुत देर, अधिक, कई एक, एक नहीं ।

प्रा० अनेसे-कि० वि० कुरष्टिसे डेरे ।

प्रा० अनोसा गु० अनृता, अनृभुत ।

सं० अन्न (अन्न=जाना) गु० सीमा,
आगिर, सिरा, गूँद, सींच, सपासि,
पूराहोना, २ नाशहोना, मौन, गु०
निश्चिता, रेण, निदान ।

सं० अन्नःकण (अन्नर=भीतर
कारण=अन्ती) गु० मन, विन, हृदय, भी ।

सं० अन्नःपुत्र-पु० मिथी के रहने
का घर, जनानगाना, हर्म ।

सं० अन्नकाल (अन्न=निश्चिता, काल=समय) गु० मनेकासमय, मौन
का समय, मौनही नहीं ।

प्रा० अन्नही (सं० अन्न, अति=
बाँवना) स्त्री० आन, अन्नही ।

सं० अन्नर (अन्न=सीमा, रा=देना)
पु० भीतर, बीच, बीचही जगह, दू-
री, २ मन, ३ भेद, धरक, गु० और
कि० वि० भीतर, बीच में ।

सं० अन्नरक्या (अन्नर=अति, की
क्या=बान) स्त्री० बान में बान ।

सं० अन्नरंगमित्र पु० दिनी दोस्ती

सं० अन्नरंगममा (अन्नर+न+
मद=मवा है अन्नरमवा, दोस्ती मवा ।

प्रा० अन्नर (सं० अन्नर) पु० अ-

नन लपवा मौन आदि का चरण
पद, गु० बीचका पाँस ।

प्रा० अन्नरिया (सं० अन्नर) पु०
तिनारी, जोतण एक दिन की चमेआकर

तीसरे दिन फिरमाये, अन्नरा, तप ।

सं० अन्नरिक् गु० भितरी, अन्नरकी ।

सं० अन्नरिक् (अन्नर=स्वर्ग और
अन्नरीक्) पु० की के बीच,
ईस=देगना, वा अन्नरभीतर, अन्न,
तारा अर्थात् जिसमें तारे हैं) पु०
आकाश, शून्य, अंतर ।

सं० अन्नरित (अन्नर+रित=गया
हुमा) मध्यका, बीचका, दुमियाकी ।

सं० अन्नरितकृष्ण (अन्नरित+
कृष्ण, कृष्ण=तोपना) क० पु० मित्र-
पीकारनकार, वह किसान जो मौक-
सी कारनकार से लेकर जमीन
तोपता है ।

प्रा० अन्नरी (सं० अन्न, अति=बाँव-
ना) स्त्री० आन, अन्नरी ।

प्रा० अन्नरियां जलना बोल० बहुत
मूल लगना, भूलीपरना ।

प्रा० अन्नरिकावन्मोलना बोल०
मूल में नेत्र भरके गाना ।

प्रा० अन्नरियोंमें आगलगना-बो-
ल० बहुत मूला होना, बहुत मूल
लगना, बहुत मूलों मरना ।

सं० अन्नरिग (अन्नर=भीतर, आन=
बानी) पु० घरकी का घर टुटका
जो समुद्र में दूर तक बला गया हो,
जैसे कल्याणद्वारी ।

- प्रा० अन्तर्जामी } (अन्तर=मन
सं० अन्तर्यामी } दम्=ठहरना,
फैलना) गु० मन की बात जोनने
वाला, पदपदनिवासी, पु० परमे-
स्वर, ईश्वर, परमात्मा ।
- प्रा० अन्तर्धानहोना } (सं० अ-
न्तर्धानहोना } न्तर्दान, अ-
न्तर, भीतर=वा=रतना, पकड़ना)
क्रि० अ० अलख होना, दिपमाना,
नहीं दानना, विलाना, गुप्तहोना,
प्रायश्चित्त होना ।
- सं० अन्तर्पट (अन्तर=बीचमें, पट=
कपड़ा) पु० परदा, ओट, आड़, क-
नात, दही ।
- सं० अन्तर्दृष्टि-प्रा० श्री० दिलीहाल ।
- सं० अन्तर्हित (अन्तर=भीतर, वा=
रतना) गु० अन्तर्दान, दिया, अ-
लख, अदृश्य ।
- सं० अन्तिक-पु० समीप, भिन्न, चूल्हा-
जेडी बहिन ।
- सं० अन्तिम-गु० पिछला, आखिरी ।
- सं० अन्त्रावलि (अन्त्र=आंत, अति
बांधना, अवलि=धातु) श्री० बहुत
सी अन्त्रदियां, अंतर्दियों की पंक्ति ।
जैसे, धरिगाल फारहिं उरविदारहिं
गलअन्त्रावलि मेलहिं रामायणलं० ।
- सं० अन्व (अन्व=अंधा होना) गु०
अंधा, सदास, विन आंसका, पु०
अंधेरा ।
- सं० अन्वकार (अन्व=अन्धा, कार=
करनेवाला, कृ=करना) पु० अंधेरा,
अंधियारा ।

- सं० अन्धकूप (अन्ध=अन्धा, कूप=कु-
आ) पु० अन्धाकुआं, ऐसा कुआं
जिसमें यास पात जमनाता है और
पानी नहीं होता ।
- प्रा० अन्धड़ (सं० अन्धे) पु० अंधी,
तूफान ।
- सं० अन्धपरम्पराग्रस्त-सं० पु०
पुरानी रीतों में कैसाहुआ कदीम
रस्मों में मुयनला ।
- प्रा० अन्धला } (सं० अन्ध) गु०
अन्धा } विन आंस का,
सूदास, आंस फूटा, नेत्रहीन ।
- प्रा० अन्धाधुन्धबोल० अंधेरा, बेहि-
साब, बेदिकाना, बहुतरी बहुत अन्धों
की तरह, आंस मूंदे ।
- प्रा० अन्धाधुन्धलुटाना-बोल० उ-
ड़ाना, बेरिसाब खर्च करना, बेदि-
काने, खर्च करना, बेकायदह खर्च
करना, आंस मूंदे खर्च करना ।
- सं० अन्धमुत (अन्ध=अन्धा, मुत=
बेटा) पु० अन्धेका बेटा अन्धे राना
धूराष्ट्र का बेटा दुषोधन ।
- प्रा० अन्धियारा (सं० अन्धकार)
पु० अंधेरा, अन्धकार ।
- प्रा० अंधेरा (सं० अन्धकार) पु० अंधे-
रा, अन्धाप, बसेहा, टपटप, अन्धापु-
न्ध, चलाव, अनीत, चलवा, देगा ।
- प्रा० अंधेरकरना-बोल० अन्धाप
करना, अनीतकरना, बपट्ट करना,
अन्धाधुन्ध करना ।
- प्रा० अंधेरा (सं० अन्धकार) पु० अ-
ंधियारा, अन्धकार ।

प्रा० अंधेरीकोठरी-बोल० ऐसी
कोठरी जिसमें अंधेरा हो, २. पेट
गर्भस्थान, कोख, परन ।

सं० अन्न (अद्=खाना, वा, अन्=
जीना) पु० नाज, अनाज, गाना ।

सं० अन्नकूट (अस्=खाना, कूट=
ढेर) पु० दीवाली के दूसरे दिन
का पर्व, जिस में हिन्दू लोग बहुत
सा खाना और तरकारियां बनाकर
अपने देवताओं को भोग चढ़ाते हैं ।

सं० अन्नजल { बोल० दानापानी
अन्नपानी } संयोग, पु० गाना
पीना ।

सं० अन्नदाता (अन्न=अनाज, दाता=
देनेवाला, दा=देना) बोल० पाख-
नेवाला, बघानेवाला, मालिक,
दयावान्, उपकारी, दाता ।

सं० अन्नपूर्णा (अन्न=खाना, पूर्णा=
भरनेवाली) स्त्री० दुर्गाका नाम,
योगमाया, देवी ।

सं० अन्नप्राशन (अन्न=अनाज वा
खाना, प्राशन=निष्ठाना, प्र=प्र-
थ, अन्न=खाना) पु० जब बालक
छः महीनेका होता है तब पहली बार
अनाज अथवा मीठादिनिष्ठाना ।

सं० अन्य (अन्=जीना) पु० और,
दूसरा, गैर ।

सं० अन्यतर-पु० कोई पक्ष ।

सं० अन्यथा (अन्व और, वा=

प्रकार अर्थमें प्रत्यय) कि० नि० और
प्रकार से, और तरह से, नहीं तो
गु० उलटा ।

सं० अन्याये (अ=नहीं, न्याय=र-
स्ताफ, धर्म) वैद्वन्साफी, अर्थमें,
उपद्रव, जुल्म ।

सं० अन्यायी (अन्याय) गु० अ-
न्यायकरनेवाला, अधर्मी, दुष्टात्मा,
जालिम ।

सं० अन्योन्य (अन्य+अन्य) गु०
आपस में, एक दूसरे की, परस्पर-
बाह्य ।

सं० अन्योन्याश्रित-गु० एक दूसरे
के साथ संबंध रखनेवाला, लाजिम
परस्पर ।

सं० अन्यय (अनु=पीछे, इण=गा-
ना) पु० पेश, कुल, २ पदबंधद,
श्लोक के पदों का संबंध मिलाना,
तरकीबनस्वी ।

सं० अन्वित-स्त्री० पु० पुस्तक, शक्ति-
ल, पूरा ।

सं० अन्येषण (अनु=पीछे, इण=
गाना) पु० सोजना, पनातगाना,
हेरना, ईदना, मेलानाकरना ।

प्रा० अन्धाना (अन्=नहीं) कि०
सं० नदखाना, अंगपोना, स्नान
कराना ।

प्रा० अन्धान (अन्=स्नान वा अ-
गारन) पु० स्नान, अन्धाना ।

प्रा० अन्हाना (सं० अचगाहन, वा स्नान) क्रि० अ० अन्हाना, स्नान करना, शरीर साफ करना ।
 सं० अप, वा० से, उलटा, हानि, नहीं, घुरा, भेद, विपाव, घुरीतरह से, अलग, भिन्न ।
 सं० अपकर्ष (अप + कृप् = खींचना)
 भा० पु० खींचना, न्यूनता, निरादर ।
 सं० अपकार (अप = उलटा, वा घुरा वा हानि, कृ = करना) भा० पु० विगाड़, घुराकरना, हानि ।
 सं० अपकारी - क० पु० हानि करने वाला, नुकसान करनेवाला ।
 सं० अपकीर्ति (अप = घुरा, कीर्ति = पश) भा० स्त्री० घुराई, बदनामी, अपपश, कुपश ।
 सं० अपक्व — गु० कच्चा, खाम ।
 सं० अपगति — भा० स्त्री० दुर्दशा, घुरीहालत ।
 सं० अपगा (अप = नीचे, गम् = माना)
 स्त्री० नदी, दरिया ।
 सं० अपचय (अप + चि = चुनना)
 भा० पु० गिरना, हानि, नुकसान ।
 सं० अपडर — भा० पु० मिथ्याहर, अपना से दूर ।
 सं० अपत — गु० पापी, अशुचि, बेइज्जत ।
 सं० अपति (सं० आपत्ति) प्रा० स्त्री०

अपमान; मुसीबत, बेइज्जती, २ पति रहित, उपपत्ति ।
 सं० अपत्य (अ = नहीं, पत = गिरना)
 भिन्नकेद्वारा पितरं न गिरनेवाले पुत्र, संतान, औलाद ।
 प्रा० अपना — सं० सर्वना० निजका, आपका ।
 प्रा० अपनीगांना, बोल० अपनी तारीफ करना, अपनेतर्फे सराहना ।
 प्रा० अपनाना — क्रि० सं० अपना करना ।
 प्रा० अपनायत — स्त्री० नाता, संबंध, भाईचारा, घराना ।
 सं० अपनीत (अप + नीति = नी = छे जाना) स्म० पु० हठापागया, दूर किया गया ।
 सं० अपभ्रंश (अप = से, भ्रंश गिरना)
 भा० पु० गैवारी बोल चाल, व्याकरण की रीति से अशुद्ध शब्द-व्यकरणविरुद्धशब्द, विगाड़ा हुआ शब्द ।
 सं० अपमान (अप = उलटा, मान = आदर) पु० अनादर, निरादर, तिरस्कार, हलकापन, बेइज्जती ।
 सं० अपयश (अप = उलटा, यश = नामवरी) पु० घुराई, बदनामी, अपकीर्ति, घुरानाम ।
 सं० अपर (अ = नहीं, पृ = धरना वा अ = नहीं, पर = दूसरा) गु० और

द्वयः, एक श्रृंग, द्वयः कोटि ।

सं०अपर्मित श्रृंग + पर्म + पित्त
मा = नाशना, पापना । वेगमिमाणा, वेह-
द, अनपित्त ।

सं०अपर्मपात्र (अ = नहीं, पर-द
मरा, पात्र = अन्न । गुण मरा, अन्न-
न, वेह, तिमिरा पात्रनदी ।

सं०अपर्मध्व अ = नहीं, नर-ध्व
मय = शोककृता । पुण नर, नर, न-
र, अन्न, अन्न, नृप, गुनाह

सं०अपर्मशी अपर्म + शी कः पुः
पापी, शीपी, अपर्मी, गुनाहपात्र,
धूम्रपिप ।

सं०अपर्मह्र अपर्म = पिदना, अह्र
दिन पुः नीमगावह, मे पहर ।

सं०अपर्मचिन्त - गुण चिन्तन प-
हिर, न, अनन्तान, अनन्तरी ।

सं०अपर्मप्राङ् - भा० पु० अपर्मि-
पन, मैनापन ।

सं०अपर्मगं अपर्म = मिश्र, अन्नग-
वर्ग = पद, दनी, अपर्मात् सव दशों
से अलग और बदल है) पु०
दुर्लभ, दोष, शम्भद, परपगति, गुह-
कारा, निस्तारा, बदल, नन्ताह ।

सं०अपवाद (अप = बुरा, बद = बद-
नः) पु० गाली, निन्दा, दोष, बुराई,
बदनामी ।

सं०अपवाहन (अप + वह = लेना-
ना, वृत्तान्तः, लोगों को बरका

ले जाना । एक शत से दूरोता
पं लेजाकर बराना ।

सं०अपवित्र अ = नहीं, पवित्र-
गुण गुण = गुह, पवित्र, अपवित्र,
नरक ।

सं०अपजकुल अप = बुरा, शत्रु
अ = नहीं, गुणमग्न, गुणमग्न
अ = नहीं, गुणमग्न, गुणमग्न

सं०अपजह्र (गुण, शत्रु ।
गुण = गुण, शत्रु, शत्रु, शत्रु
अ = नहीं, शत्रु, शत्रु, शत्रु
मिल = शत्रु, शत्रु

सं०अपहगण अप = नहीं, ह-ने
माना । भा० पु०, ह-ने, ह-ने

सं०अपहरित अप = नहीं, ह-ने न
यागया हरति यागया ।

सं०अपहारी - क० पु० ह-ने जाना ।

सं०अपहत - अ० पु० दुर्कृतहमीन ।

सं०अपादान (अप = से, आदान =
लेना) भा० पु० लुदाकरना, विभाग
२ व्याकरण में पाँचवो कारक ।

सं०अपान (अप = भीषे + अन्त =
भीषा) पु० शरीर के पाँच पद,
जों में से एक जो गुदा से निकल-
ती है, अथोपाय, गोत, २ द्वापार
वर्ण्य गु० अन्ता, २ पानाहिन ।

सं०अपाय (अप = बुरीतरहसे, शान =
माना) पु० विगाह, नारा, हाँस
२ लुदा होना ।

सं० अमिलापी } क० पु० चाहने
अमिलापुक } वाला, लोभी,

द्वेषादिशयन्द, आर्जुनन्द ।

सं० अभिवादन (अभि + वद =
बहना) स्तुति, नमस्कार, वंदना ।

सं० अभिषिक्त (अभि = सामने, पित्त
सिच = सींचना) स्म० पु० तिलक
किया गया ।

सं० अभिषेक (अभि = ऊपर, सिच =
सींचना) भा० पु० राजातिथिक देने
के समय का स्नान, २ भोजन देते समय
शिरपर पानी डालना, शान्ति स्नान ।

सं० अभिसन्धान भा० पु० मि-
लाप, २ कपट ।

सं० अभिसन्धि भा० स्त्री० खूबमेल,
घोसा ।

सं० अभिसम्पात पु० संप्राप्त, युद्ध,
नाश ।

भा० अभी (अव + ही) क्रि० वि०
इसी, यही, इसीदिन, इसीसमय,
तुरन्त ।

सं० अभीरु (अ = नहीं, भीरु = डरने-
वाला) गु० निर्भय, निर्दोष, पु०
महादेव, भैरव, शनावरि ।

सं० अभीष्ट (अभि = बहुत, इष्ट = चाह
हुआ, इष्ट = चाहना) स्म० पु० चाहा
हुआ, बहुत चाहा हुआ, मनमाना,
प्यारा, बहीता, पसन्द ।

सं० अमृतपूर्व स्म० पु० जैसा कभी

पहले नहीं हुआ, अमृत, अजीब ।

अभ्यन्तर-गु० भीतरी, अंदरूनी ।

सं० अभेद (अ = नहीं, भेद = द्वितीयात्)

गु० निसका भेद नहीं जाना जाय,

२ जाना हुआ, ३ जो नहीं दूटसके,

निसमैकुछ नहीं घुससके, पु० मेल ।

सं० अभ्यर्थना (अभि = सामने, अर्थ
= मांगना) भा० स्त्री० निवेदन, दंर
इवास्त ।

अभ्यस्त स्म० पु० आदी, खुर ।

सं० अभ्यागत (अभि = सामने, गास,

आगत = आया हुआ, आ, गम = आ-
ना) पु० बाहुना, अतिथि, मेहमान

गु० आया हुआ ।

सं० अभ्यास (अभि = बारबार, अभ्य

कंदना, और अभि उपसर्ग के साथ

आनेसे इसका अर्थ दोहराना होता

है) पु० साधन, चिंतन, बारबार

करना, रत्न, मरक ।

अभ्यासक } क० पु० अभ्यासक

अभ्यासी } रनेवाला ।

अभ्युदय (अभि + उदय, उद् + इ =

आना) भा० पु० उदित, ऐरवर्ष, उदयन ।

सं० अभ्र (अभ्र = माना) पु० बादल,

मेघ, २ आकाश, अन्न ।

सं० अमङ्गल (अ = नहीं, मङ्गल =

कुशल, कल्याण) गु० अशुभ,

बुरा, पु० अकल्याण, अशुभ ।

भा० अमचूर (सं० आम्रचूर्ण, आ-

-अ=आम, चर्छ=चर) पु० सुग्राये
आम के दुकड़े वा फाँके ।

सं० अमत्त-गु० मत्तरहित, मर्महीन,
लाभजन्य ।

सं० अमर (अ=नहीं, म=मरेना) गु०
जो कभी नहीं मरे, अविनाशी, सदा
जीवित रहनेवाला— पु० देवता, २
अमरकोष का बनानेवाला ।

सं० अमरपति (अमर=देवता, पति=
स्वामी) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा ।

अमरपुर— (अमर=देवता,
सं० अमरलोक) पुर, लोक=जगह)

पु० स्वर्ग-शरीर ।

प्रा० अमराई (सं० आम्रराजि, आ-
म्र=आम-राजि=कता) स्त्री० आ-
म्रों का बाग ।

सं० अमरावती (अमर=देवता, वत-
=वाली) अर्थात् जिसमें देवता
रहने हैं, स्त्री० स्वर्ग, इन्द्र की राज-
धानी, देवलोक ।

प्रा० अमरुत (सं० अमृत) पु० एक
फल का नाम, अमरुद ।

सं० अमरेश (अमर=देवता, ईश=
राजा) पु० देवताओं का राजा, इन्द्र ।

प्रा० अमर्याद (अ=नहीं, मर्यादा
सं० अमर्यादा) =मान, इज्जत)

स्त्री० अनादर, अमर्याद, अमर्याद,
हठधर्म, इलज्जत ।

सं० अमर्ष (अ=नहीं, मर्ष=वृथा)

मा० पु० क्रोध, असह, गुस्सा ।

सं० अमात्य-पु० अधिकारमंत्री, वजीर
आराजी ।

सं० अमल (अ=नहीं, मल=मैल)
गु० निर्मल, शुद्ध, साफ, पवित्र,
स्वच्छ ।

प्रा० अमलतास-पु० एक औषध
का नाम ।

सं० अमान (अ=नहीं, मान=गर्व)
गु० मानरहित, निरहंकार, बेगुदर ।

प्रा० अमाना (सं० मान, मा=माप-
ना) क्रि० अ० समाना, भरमाना ।

सं० अमाय-गु० कपटरहित, बेपक ।

सं० अमाया-पा० स्त्री० सच्चाई,
दिशानेदारी ।

प्रा० अमावस्य (अमा=साथे
सं० अमावस्या) चम=रहना, अ-

सं० अमावस्या) यात्र जिसदिन
सूर्य और चांद एक राशिमें रहने हैं,

अमा सह वसतोऽस्याश्चन्द्राका अमा-
वस्या, अमावस्या) स्त्री० अंधेरे
पड़की पंद्रहवीं तिथि, माघमा ।

सं० अमित (अ=नहीं, मित्र=मापा
हुआ, मा=मापना) गु० अममाप्य,
अपार, बेहद, बेदिक्कने, जो नाप-
ने में नहीं आवे ।

प्रा० अमिय (अं० अमृत) पु० अ-
अमी) दूध, मुखा, पीया,

आव हयान ।

रों ओर से, दौक=जाना) पु०
अरहर, तर, एक प्रकार का जान
जिस की दाल होती है।

सं० अराति (अ=नहीं, रा=देना,
जो सुख नहीं देता) पु० बैरी, शत्रु,
दुरमन।

प्रा० अराधना (सं० आराधन) क्रि०
सं० पूजना, सेवा करना, भज
जपना।

सं० अरि- (अ=जाना) पु० बैरी, शत्रु,
दुरमन, अराति।

सं० अरिष्ट (रिप्=हिंसा करना) गुं०
अशुभ, पु० विम, कौआ, वृष-
भामुरदैत्य, नीवहत्त।

प्रा० अरहू (सं० अरु) स्त्री० तिवरी,
धकुटी।

प्रा० अरु-समुच्चय, और, फिर।

सं० अरुचि- भा० स्त्री० नफरत,
पृणा, अनिच्छा।

सं० अरुण (अ=जाना) पु० सूर्य २
सूर्य का सारथी, १ सूर्य का रण,
४ सिद्ध, कुंकुम, गुं० लाल।

अरुणचूड़ } पु० मुर्गा, कुकुर।
अरुणशिखा }

प्रा० अरुणई (सं० अरुणता, अरु-
ण=लाल) स्त्री० ललाई, बिहान
की ललाई, सुर्ती।

सं० अरुणोदय (अरुण=सूर्य, उद-
य=निकलना) पु० मोर, तड़का,
विरान।

सं० अरुणोपल- (अरुण=लाल,
उपल=पत्थर) पु० लाल चुन्नी, पथ-
राग, २ लालपत्थर।

सं० अरुन्तुद (अरु=ममस्थल, तुद=
काटना), केशकारक, मर्मचेदक।

सं० अरुन्धती- स्त्री० वशिष्ठमुनि
की स्त्री।

सं० अरुप (अ=नहीं, रुप=दौल)
गुं० निराकार, २ कुरूप, भौंदा,
कुरौल।

सं० अरोग (अ=नहीं, रोग=बीमारी)
गुं० मलानंगा, निरोग, अच्छा।

सं० अर्क (अर्च=पूजना, वा, अर्क=
गर्भ होना) पु० सूर्य, २ अरुवन,
आरु, मदार।

सं० अर्गल-पु० बिलारी, जंजीर, बे-
लहन।

सं० अर्घ (अर्घ=पूजना, वा अर्घ=मोल
होना) पु० आठ चीज मिनांक
ईश्वरको अथवा सूर्य चांद आदि
देवता के लिये अर्पण करना, पूज
न सूर्य चांद आदि देवताओं के
पानी देना, २ मोल, क्रीपन।

प्रा० अर्घी (सं० अर्घ) पु० अर्घ दे
का वरतन जो नाव के आकार
में होता है।

सं० अर्चक (अर्च=पूजना) पु०
जनेवाला, पुजारी, सेपक।

प्रा० अर्चना (सं० अर्चन) क्रि०
सं० पूजना, पूजाकरना, स्त्री० पूजा।

सं० अर्चा (अर्च=पूजना) भा० स्त्री०
पूजा, सेवा, आराधना ।

सं० अर्चित (अर्च=पूजना) कर्म० पु०
पूजाकिया हुआ, सेवाकिया हुआ ।

सं० अर्जन (अर्ज=इकट्ठा करना)
भा० पु० इकट्ठा, कमाई, संग्रह,
सञ्चय ।

सं० अर्जुन (अर्ज=इकट्ठा करना,
वा भीतना) पु० पाण्डु का तीस-
रा बेटा, युधिष्ठिर का भाई जो
इन्द्र के अश्व से पैदा हुआ, २ एक
पेड़ का नाम, रवेत, दिशा ।

सं० अर्णव (अर्णव=जानी, अर्ण=जा-
ना) पु० समुद्र, सागर ।

सं० अर्थ (अर्थ=मांगना, वा अर्ण-
माना) पु० अभिप्राय, मतलब, ता-
त्पर्य, कारण, प्रयोजन, विचार,
इरादा, मनोरथ, निपे, वास्ते नि-
मित्त, २ धन, मुनाफा ।

सं० अर्थकारी (अर्थ+कृ=करना)
क० पु० कार्यसाधक, उपयोगी,
मुफ्तीद ।

सं० अर्थशास्त्र-पु० रामनीति, हि-
कमतअमली, पालिसी ।

सं० अर्थात् (अर्थ) समुच्च० अव्य०
अर्थ से, जानो, यानि ।

सं० अर्थी (अर्थ) गु० धनी, धन-
वान् २ माँगनेवाला, याचक,
३ यादकरनेवाला, मतलबी, फरफा-
दी, ४ मुँह की खाद, रंगी ।

प्रा० अर्धावा-पु० मोटा आटा, दलिया ।

सं० अर्दित (अर्द=पीड़ित होना) कर्म०
पु० दुःखित, कष्टित, मुसीबतअदा ।

सं० अर्द्ध (अर्ध=वदना) गु० आधा ।

सं० अर्द्धचन्द्र (अर्ध=आधा, चन्द्र
=चांद) पु० आधाचांद, चंद्रबिंदु ।

सं० अर्द्धनिमेष-पु० आधापल, आ-
धाचरण ।

सं० अर्द्धवन्धु-गु० नीमबहरी ।

सं० अर्द्धरात्र (अर्ध=आधी, रात्रि=
रात) स्त्री० आधीरात ।

सं० अर्द्धाङ्ग (अर्ध=आधा, अंग=
शरीर) पु० आधा शरीर, २ पञ्चा-
यात, शीतांग, एक बीमारी जिसमें
आधा अंग रह जाता है ।

सं० अर्द्धाङ्गी (अर्द्धांग) स्त्री० लुगा-
ई, छी, नारी, पत्नी, गु० पञ्चायाती ।

सं० अर्पण (अर्ण=माना) पु० देवता
की भेददेना, भेंट, दान, समर्पण, नजारा ।

प्रा० अर्पणकरना { (सं० अर्पण)
अर्पना } क्रि० स० भेंट
बढ़ाना, ईश्वरको या देवताको भेंट
देना, सिपुर्देकरना, चारभेदना ।

प्रा० अर्ध (सं० अर्धुद, अर्ध=माना)
पु० सौकरोड़, और कहीं कहीं अ-
र्धुदका अर्थ दशकरोड़मी लिसा है ।

प्रा० अर्ध स्वर्ध-बोल० अपात, वे
शुभार, अनगनित्र, असंख्यात ।

मं० अर्भ (क्रं=जाना) पु० लङ्का
 अर्भक (पानक, पुत्र, मित्र, पु०
 होता ।

प्रा० अर्शु पु० बड़ापारीशब्द, म-
 कान आदि के गिरावनेका शब्द,
 अथवा बाग व मोलेका शब्द ।

मं० अर्वाचीन-पु० नया, जरीद ।

मं० अर्हन् (अर्ह=पूजना) पु० चौ-
 पदरी, भैर, भैरवों के एक मुनि-
 का नाम ।

मं० अलक (अल=मोहना) श्री०
 दूरवादेवान-दुर्ग, लक्ष्मी, लक्ष्मी,
 देवीबान, अमरिषी बान ।

मं० अलका-श्री० दुर्गा, दृग्वर्ग
 की दया ।

मं० अलकावलि (अलक=दूरवाले
 बान, आवलि=वाँट) श्री० वेणी,
 दूरवालेबान, मुक्त, दूरवे बान,
 अर्धदेवान ।

प्रा० अलक्षि । मं० अलक्षी) पु०
 धनहीन, शरीरी, कंगाल, मुकलिन ।

मं० अलक्ष्य (अ=नहीं, लक्ष्य देवना)
 मं० पु० अलक्ष्य, अलोपर, जो देव-
 ने दे नहीं पावे ।

प्रा० अलक्ष्य (मं० अलक्ष्य) पु०
 अलक्ष्य, अलोपर, जो देवने दे
 नहीं पावे ।

प्रा० अलक्षित (अ=नहीं, लक्षित
 देवना) मं० पु० अलक्षित, अलोपर, जो देवने दे
 नहीं पावे ।

नेही जानागया, बेचना, अलक्षित ।

प्रा० अलग (सं० अलग, अ-
 अलगा) नहीं, लान, लगा हु-

आ, लग=मिलना) पु० जुदा, अ-
 गा, न्यारा, भिन्न, अलगा ।

प्रा० अलगाना (सं० अलग) क्रि०
 सं० जुदाकरना, अलगकरना, न्या-
 राकरना, भिन्न २ करना ।

सं० अलङ्कार (अलप=शोभा, कार=
 करना, कृ=करना) पु० गहना,
 सूपण, शोभा, आभरण, २ साहित्य
 शास्त्र का एकभाग कविताका गुण
 दीप बनानेवाला ग्रन्थ, शब्दसूपण
 सनघन ।

मं० अलङ्कृत (अलप=शोभा, कृ=
 करना) मं० शोभागमान, शोभित
 सुगित, सवाराहुमा, गुपाराहुमा,
 बनायाहुमा, सुसुषित ।

प्रा० अलङ्कृ श्री० ओर, तर्क, ओर-
 पार-इमअङ्क=इमओर, इमपार ।

प्रा० अलङ्कृ (सं० अलङ्कृत, अ-नहीं,
 रक्त=जाना अर्थात् जिसमें अलङ्कृत
 ओर कोई अङ्क नहीं वहाँ र कोल
 होगया) पु० ज्ञानके रंगमें सुष
 नही गंभी हुई कई जिसमें निपा
 दान वेर रचानी है, यही ।

प्रा० अलङ्कृत-पु० अलङ्कृत, बाँटा,
 अलङ्कृत, अलङ्कृत निपा ।

मं० अलङ्कृत (अल+अन) अलङ्कृत,
 अलङ्कृत, अलङ्कृत निपा ।

भूषण, शोभ, निषेध, निवारण,
अवधारण, दृष्ट, मर, बाकी, वेका-
यदा, वस, ककत ।

सं० अलभ्य (अ=नहीं, लभ=मिल
ना) सं० पु० जो मिल न सके
इत्यर्थ, अमात्य, नापाव ।

प्रा० अलान (सं० आलान) स्त्री०
राणीदेवशंखेनीरस्त्री, अमीर आदि ।

प्रा० अलाप (सं० आलाप) वा०
पु० राग, शान, वर, न. बानचीन,
बोल बाल ।

प्रा० अलापना } (सं० आलाप)
आलापना } प्रि=अ=मुरदि-
लाना, रागदिदना, शाना, शानदेदना ।

प्रा० अलापी (अ=बहुन, लप=व.
रना) बरनेवाला, बरनेवाला,
गुनवशनेवाला ।

प्रा० अलाव-उ=पूर्वी ।

सं० अलि (अल=सर्व होना, अ
अली) पार्श्वक माथेवे जो
मुनेवे जो मधवे होशरी) पु० भैंर,
भैंरा, भैंर, ३ डोयल, ४ बाण,
५ दधार, ६ दिश ।

सं० अलिनि-श्री० अलि, भैंरी ।

सं० अलीक (अल=गोदना) पु०
भूत, पिशा, अमा, अकत, श्री०
भूत ।

सं० अलीन (अ=अलि, ली=मि-
लना वा मिलना) अलीन, ह-
रान, मातापति ।

प्रा० अलीहा (सं० अलीक) पु०
भूत, पिशा, दगोश ।

प्रा० अलैक पलवा (सं० अलीक
मलाप) बेहदा, परना, बारियात
परना, बेरीर टीक करना ।

प्रा० अलैया बलैया (सं० अलि=
भाग, बलि=बलिदेना) स्त्री० नि-
वार ।

प्रा० अलोना (सं० अलराण, अ
नहीं लराण=निषेध) पु० विने
लोन का, वे सवाद, पीवा ।

सं० अलोम (अ=नहीं, लोप=नुप
=बाहना) पु० निर्लोप, भंगुष्ट,
वेगदण ।

प्रा० अलोला-पु० नासक, वे अ-
कल, स्थिर, बेहरबन ।

सं० अलौकिक (अ=नहीं, लौकिक=
संगार का) पु० अलीला, अदृष्ट,
असलोक का नहीं बसलोक का ।

सं० अल्प (अल=सर्व होना, अ
गोदना) पु० थोड़ा, रुड, दीछ-
कर्मन ।

सं० अल्पवृद्धि (अल=थोड़ी, वृ-
द्धि=वृद्ध) पु० अल्पवृद्ध, अल्प
वृद्ध, अल्प ।

प्रा० अलहद-पु० अलहद, अलहद
का, न बखान ।

सं० अल-पु० अल, अल, अल, अल
दे, अल, अल, अल, अल, अल, अल,
लाल, विदल, अल, अल, अल ।

सं० अवकाश (अव=बीचमें, काश=चपकना) पु० औसर, सुचीता, सावकाश, फुरसत, बीचका समय ।

प्रा० अवगाहना (सं० अवगाहन, अव+गाह=मथना) क्रि० सं० मथना, गारपाना, २ गहाना ।

सं० अवगुण (अव=बुरा, गुण) पु० दोष, तोट, औगुण ।

सं० अवग्रह (अव=नीचे, ग्रह=पकड़ना) भा० पु० दकाष्ट, रौंके, २ समाप्तके पदों का विभाग ३ हाथियों का घुंटा ४ औंठ ।

सं० अवज्ञा (अव=बुरी, ज्ञा=ज्ञा, नना) स्त्री० अनादर, अपमान, २ धिन, नकरन ।

सं० अवतंस (अव=निरवयव, तंस=शोभना) पु० गहना, मूषण, २ कान का गहना, मूमका, कण्हना ।

प्रा० अवतरना (सं० अवतरण, अव=नीचे, तृ=तार होना) क्रि० अ० अवतार लेना, उतरना बिष्णु का अवतार लेना ।

सं० अवतार (अव=नीचे, तृ=तार होना, भा० पु० जन्म, घट्ट, उ, रतम, बिष्णुका जन्म लेना, बिष्णु के चौबीस अवतार हैं उन में से दस अवतार बहुत मसिद हैं जैसे १ मत्स्य, २ कृष्ण, ३ बराह, ४ वृद्ध, ५ बामन, ६ परशुराम,

७ रामचन्द्र, ८ श्रीकृष्ण, ९ बुध, १० कलही ।

सं० अवदान (अव=नीचे, दा=काटना) भा० पु० वध, कल्ल; पारडालना, पराक्रम, उल्लंघन ।

प्रा० अवदीच (सं० उदीचि=उत्तर दिशा, उन्=ऊपर, अश्च=जाना) पु० गुमराही घासणों की एकजात ।

सं० अवद्य (अ=नहीं, वद्य=कहने योग्य, वद्=कहना) पु० पाप, दोष, अपराध, गु० नीच, पापी, निदाकर-नैकेयोग्य, नहीं कहने योग्य ।

प्रा० अवध (सं० अवधि, अव=रू धा=रखना) स्त्री० बचन, सीमा सीव २ समय, मुदत ३ (सं० अवयोध्या) पु० अवधदेश, ४ (सं० अवध, अ=नहीं, वध्य=मारने योग्य वध=मारना) गु० नहीं मारने योग्य ।

सं० अवधान (अव+धा=रखना) भा० पु० कृपा, दया, तवज्जुह ।

प्रा० अवधारी-पु० निरवयव किया गया सोचा गया ।

सं० अवधीय-धा० अवध=विचारकर सोचकर ।

सं० अवधीस्ति-ध्मं० पु० अनारन, अथ मानिन, प्रकलवकीर्ण, तायाकीर्ण ।

सं० अवनति (अव=नीचे, नति=नष्ट=घुटना) भा० स्त्री० घटती, तन, उतुली, उतार ।

सं० अवनि (अव=वचाना) स्त्री०
अवनी परती, पृथ्वी, जमीन,
भूमि ।

सं० अवनिकुमारी (अवनि=पर
ती, कुमारी=बेटी) स्त्री० सीता, मा-
नकी, जनकराजा यज्ञ के लिये पर-
ती जोतने पे वससमय धरती में से
एक पहा निकल आ उस में से सीता
जी निकलीं (इसका पूरावर्णन राम
चरित्रवेदेवो) ।

सं० अवनिप (अवनि=पृथ्वी, प=
रवाकरना) क० पु० रामा, वादेगाइ ।

सं० अवनिपरमणि = स्त्री० रानी,
मलिका ।

सं० अवनीत (अव=नहीं, नी=ले,
जाना) कर्म० पु० वेदंगा, पदचक्रन,
पदसलीका, कुमारी ।

सं० अवनीश (अवनि=परती,
अवनीश्वर) ईश वा ईश्वर=रा-
जा) पु० राजा, महाराजा, राजा-
धिराजा ।

सं० अवन्ति (अव=वचाना) स्त्री०
मालवादेश ।

सं० अवन्तिका (अव=वचाना)
स्त्री० मालवादेशकी राजधानी उ-
ज्जैन, सात पवित्र पुरियोंमेंकी एक
पुरीभीमपोध्या, मथुरा, माया गया,
काशी, कांची, अवन्तिका, पुरी ।

सं० अवयव (अव=मुदानुदा, वु=वि
लना) पु० अंग, शरीरका कोईभाग ।

सं० अवराधक (अव=निरचयही,
राष्ट्र=पूराकरना) क० पु० सेवक, सन्त
आराधनाकरनेवाला, आविद ।

प्रा० अवराधना (सं० अवराधन)
भा० स्त्री० सेवा, चिदमव ।

प्रा० अवसेख-स्त्री० लेख, लकीर,
गिनती, गुमार ।

सं० अवरोध (अव, रुध=रोकना) पु०
रोक, रोकबा, अटकाव, रानिबास ।

प्रा० अवर्त (सं० आवर्त) पु० पानी
का चकर, भंवर, गिराव ।

सं० अवलम्ब (अव, लप्ति=ठहर-
अवलम्बन) ना) ए० पु०
सहारा, आसरा, आधार, आड़ ।

प्रा० अवली (सं० आवलि) स्त्री०
पात, पंक्ति, लकीर ।

सं० अवलेह (अव+लिह=चाटना)
पु० चाटना, चटनी ।

सं० अवलोकन (अव, लोक्=दे-
खना) भा० पु० दृष्टि, दीर्घ, नजर,
देखना, दर्शन, मुलाहिजाकरना ।

प्रा० अवलोकना (सं० अवलोकन)
क्रि० सं० देखना ।

सं० अवश (अव=नहीं, वश=चारना)
पेश्वर, बेइस्तिपार, बेहाब ।

सं० अवशिष्ट (अव+शिष्ट=बाकी
रहना) क० पु० बाकी अधिक, शेष ।

सं० अवशेष = भा० पु० बाकी ।

सं० अवश्य (अव=निश्चयही, रपे=जाना) क्रि० वि० निश्चयही चाहिये, जरूर ।

सं० अवश्यक (अवश्य) गुं० जरूर ।

सं० अवश्यकता (अवश्य) स्त्री० जरूरत, मयोजन, निश्चय ।

सं० अवसर (अव=निश्चय, सृ=जाना) पु० औसर, अवकाश, समय, मौका, विराम, ठहराव ।

सं० अवसन्न (अव+सन्न, सद्=बैठना) क० पु० थकाहुआ, गिरा हुआ, समाप्त, उदास, शोचनीय, हारा हुआ ।

सं० अवमान (अव, मो=नाशकर मा) पु० अन्न, ममात्रि, घीन, २ इह ।

प्रा० अवसेरी—स्त्री० देर, मर्यादा, हितकारी ।

सं० अवस्था (अव, स्था=ठहरना) स्त्री० दशा, उमर, आयुर्दा, हालत ।

सं० अवस्थित—क० पु० ठहराहुआ, मुकीप ।

सं० अवहित (अव+हित, धा=रखना) मनोबोगी, मावधान, मुत-वज्जेह, २ प्रस्थान, वराहूर ।

प्रा० अवहि (आना) स्त्री० आने की लहर, आना, २ मैत्रलोरा वा औनोरा भाट्टर मपेन ।

सं० अविकारी (अ=नहीं, विचार=दोष) क० पु० विकाररहित, बेदेव ।

सं० अविगत (अ+वि+गत—गम्=जाना) क० पु० व्यापक, सब जगह मौजूद ।

सं० अविचल (अ=नहीं, विचल=चलना) गु० अवल, अटल, जो चलेनहीं, दृढ़, मजबूत ।

सं० अविद्या (अ=नहीं, विद्या=ज्ञान) स्त्री० अज्ञान, मूर्खान, रमाया ।

सं० अविनय (अ+वि+भी=ले जाना) भा० पु० दिवारी, मोखी चेमदयी ।

सं० अविनारी (अ=नहीं, विनारी=नाशहोनेवाला, नश=नाशहोना) गु० जिसका कभी नाश न हो सदा रहनेवाला परमेश्वर ।

सं० अविरल (अ=नहीं, विरल=महीन, किल्=डकना, बिगाना) गु० गहरा, गाढा, मोटा, निरिह, निर-मर, सदा, इवेगा ।

सं० अविरोध (अ+वि+रोध, रुध=रोकना) भा० पु० मेक, इति-क्राक, सम्पत्ति ।

सं० अविवेक (अ=नहीं, विवेक=विचार) पु० अज्ञान, अविचार, मूर्खान, बे मपीसी ।

सं० अविवेकता—भा० स्त्री० अज्ञान-वन, बे मपीसी, निहालन ।

सं० अविवेकी (अविवेक) क० पु० अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारनेवाला, बेमपीन ।

सं० अव्यक्त (अ=नहीं, व्यक्त=प्रकट)
 सं० अमोघ (अ=नहीं, घ=प्रकट, द्विपादुआ,
 पु० विष्णु, परमेश्वर ।

सं० अव्यय (अ=नहीं, व्यय=नाश
 वा खर्च) पु० व्याकरणमें ऐसा श
 ब्द जो किसी संरहसे बदलना नहीं
 होता है। जैसे, और, अ
 धि, कि, पुनि, आदि, २ विष्णु,
 परमेश्वर, गु० अविनाशी वि
 कृष्ण, ब्रह्म ।

सं० अव्यवस्थित (अ=नहीं, व्य-
 वस्थित=अचल) गु० अचल, उताव-
 ला, अचेन, बेहोश, अनुचित, विचर
 विचर ।

सं० अव्याहत (अ=नहीं, व्याहत=
 निराश, बि, आ, इन्=मारना) र्म
 पु० जो नहीं रोका जाय, आशावान् ।

सं० अशकुन (अ=नहीं, वा पुंश, श
 कुन=सगुन) पु० अशुभ, अपसगुन

सं० अशक्त (अ=नहीं, शक्त=समर्थ)
 क० पु० निबल, कमजोर, दुबला,
 असमर्थ ।

सं० अशक्य (अ=नहीं, शक्य=सकना)
 असम्भव, शीघ्रमुक्ति, जो नहीं
 होसका ।

सं० अशंक-गु० निर्भय, वैद्यकी

सं० अशन (अश=खाना) भा० पु०
 खाना, भोजन ।

सं० अशनि (अश=ताड़ना, मारना
 पु० बज्र, विमली, इन्द्रका शस्त्र ।

सं० अशिक्षित (अ=नहीं, शिक्षित=
 सीखा हुआ, शिक्ष=सीखना, सिखा
 ना) गु० अनसीखा, मूर्ख ।

सं० अशित (अश=खाना) र्म पु०
 खाया हुआ, भुक्त, खुरा ।

सं० अशिव (अ=नहीं, शिव=शुभ)
 गु० अशुभ, अपंगल, घुरा ।

सं० अशुद्ध (अ=नहीं, शुद्ध=पवित्र
 गु० अपवित्र, ठीक नहीं, गलत ।

सं० अशुद्धता-भा० स्त्री० भूल, गल-
 ती, गलत कहणी, नापाकी ।

सं० अशुभ (अ=नहीं, शुभ=अच्छा)
 गु० घुरा, अपंगल, पु० घुराई, आ-
 पदा, दुःख ।

सं० अशुभचिन्तकता भा० स्त्री०
 घुराशोचना, बदबंदेशी ।

सं० अशोक (अ=नहीं, शोक=शोच)
 पु० सुख, चैन, आराम, एकवृत्त
 का नाम, गु० मसख, चैनसे, खुरा,
 बे फिकर ।

सं० अश्म } पु० पत्थर ।
 अश्मन् }

सं० अश्व (अश्व=फैलना वा खाना)
 पु० घोड़ा, नुरंग ।

सं० अश्वतर-पु० खबर, वह जानवर
 जो घोड़ी और गधे से पैदा हो ।

सं० अश्वपति (अश्व=घोड़ा पति=
 मालिक) पु० घोड़ेका मालिक, २
 सवार पुष्टका ।

सं० अश्वमेध (अश्व=घोड़ा, मेध=
यज्ञ) पु० घोड़े का यज्ञ, एक प्रकार
का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाता है ।

सं० अश्ववार (अश्व=घोड़ा, वृ=
पमंद करना या ठकना) पु० सवार,
घुड़वा ।

सं० अश्वशाला (अश्व=घोड़ा,
शाला=मगह) स्त्री० घुड़शाल, घोड़ों
का तरेला ।

सं० अश्वशिक्षक-क० पु० चापुक
गपार ।

सं० अश्वसेधक-क० पु० सारिंस ।

सं० अश्विनी (अश्व=घोड़ा, अर्थात्
जिनका आकार घोड़े के शिरमारे ।
स्त्री० पञ्चनक्षत्र का नाम, पहला
नक्षत्र ।

सं० अश्विनीकुमार (अश्विनी=
घोड़ी, कुमार=बेटा, अर्थात् मूष की
स्त्री पञ्चवार घोड़ीका कनक बन
गई थी तब घोड़े का कनक मूष बना
या उस समय के पेटा हुए दो लड़
कों का नाम अश्विनीकुमार है)
पु० देवताओं के बेटे ।

सं० अश्वत्थ (अश्वत्थ, पञ्च नक्षत्र का
नाम जो इस बरतने की पूर्णमासी
को होता है और इस बरतने में पूरा
बंद इस नक्षत्रके पास रहना है)
पु० राम का लोभन बरतना ।

सं० अष्टधातु (अष्ट=आठ, धातु=

प्रात) स्त्री० आठभानिकी धातु
जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ ताँबा,
४ पीतल, ५ रांगा, ६ काँसा, ७
सीसा, ८ लोहा ।

प्रा० अष्टधाती (सं० अष्टधातु) पु०
आठ धातुका बना हुआ ।

सं० अष्टमी (अष्टम=आठवाँ, अष्ट=
आठ) स्त्री० पक्ष की आठवीं तिथि

सं० अष्टसिद्धि (अष्ट=आठ, सिद्धि
मन का मनोरथ) स्त्री० आठ प्रकार
की सिद्धि १ अग्निमा बहुत छोटा
बन जानेकी शक्ति, २ मरिमा बहुत
बड़ा बन जानेकी शक्ति, ३ लपिमा
हलहा बन जाने की शक्ति, ४ माप्ति
चाँद जिनकी दूर पर जो चीज हो
उगको छे छेनेकी शक्ति, ५ माका-
उग चाँद जैसे मनोरथको पूराकरना ६
ईशित्व देवधरमना, वशिरवमचके
वशकरनेकी शक्ति, ७ कामावमापिना
सांभासिक मारी इच्छा को पूरा क-
रना अर्थात् किसी वानकी इच्छा
नहीं रहना ॥ अग्निमा लपिमा
माप्ति माकाव्यमरिमा तथा ।
ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामा
वमापिना ॥ १ ॥

सं० अष्टांगप्रणाम (अष्टाङ्ग=आठ-
अंग, प्रणाम=नमस्कार) पु० आठ
अंगों में दंडवत करना अर्थात् १
हाथों २ पैरों ३ गर्भ ४ शिरदा ५
आँखों ६ शिर ७ बदन ८ मन में
बल्लाम करना ।

सं० असंख्य (अ=नहीं, संख्या=गिन्ती) गु० अनगिनत, अगिनित, बेगुमार, बेहिसाब ।

सं० असंग्रह (अ=नहीं, सं=सब, ग्रह=लेना) गु० पु० संचयहीन, नहीं इकट्ठा ।

प्रा० अस-गु० ऐसा, ऐसी, हि० बि० इस तरह से, इस प्रकार से ।

सं० असत्य (अ=नहीं, सत्य=सांच) गु० झूठा, मिथ्या, पु० झूठ, दुरोश ।

सं० असत्यसंध गु० कपटपरायण, दगाबाज ।

सं० असफल (अ=नहीं, फल=सहित, फल) गु० पु० फलरहित, असिद्ध, फल न देनेवाला, बेकाम, बेमुराद, बेमकसद ।

सं० असम्य (अ=नहीं, सम्य=समा के योग्य) गु० गंवार, अनाड़ी, जो समा के योग्य न हो, बेतइजीब ।

सं० असमंजस (अ=नहीं, सम=अस=ठीक, सम=अधि, अंजसा=सचाई से, अंज=शुद्ध करना) पु० संदेह, द्विविधा, अनिश्चय, शक, गुंहरा, परोपेश, राजासगरके पुत्रका नाम ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, समर्थ=बलवान) गु० दुबला, निबला ।

सं० असमर्थता भा० स्त्री० द्वापारी, बेताकनी, निर्वज्रता ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, समर्थ=बलवान) गु० कुसमर्थ, बिसेतु, बेवक्त ।

सं० असमशर (असम=विषय, शर=तीर) पु० कामदेव ।

सं० असम्भव (अ=नहीं, सम्भव=होने योग्य) गु० अनहोना, नहीं होनेवाला, नहीं होसकेनेवाला, नैरस्यमकिन ।

सं० असत्यवादी (अ=नहीं, सत्य=सांच, वद=कहना) क० पु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, दुरोशगो ।

सं० असहा (अ=नहीं, सहा=सहने योग्य, सह=सहना) गु० जो सहा नहीं पाय, कठोर, कड़ी, क्रिदुवा, बेबरदाश्त ।

प्रा० असवार (सं० अस्ववार) पु० सवार } गुंड़बंदा ।

सं० असाधु (अ=नहीं, साधु=सीधा) गु० अपर्षी, पापी, दुष्ट, बुरा ।

सं० असाध्य (अ=नहीं, साध्य=सिद्ध होनेयोग्य) गु० कठिन, असम्भव, जिसका इलाज नहीं होसके, लादवा ।

सं० असार (अ=नहीं, सार=गूदा, तत्व) गु० सूखा, पोला, सूखा, दूधिया, बेकामदह, निष्फल, जिसमें कुछ सार न हो ।

सं० असावधान (अ=नहीं, सावधान=चौकस, होशियार) गु० अ-

सं० अश्वमेध (अरव=घोड़ा, पेध= यज्ञ) पु० घोड़ेका यज्ञ, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाता है ।

सं० अश्ववार (अरव=घोड़ा, वृ= पमंद करना वा ढकना) पु० सवार, घुड़वा ।

सं० अश्वशाला (अरव=घोड़ा, शाला=नगर) ग्री० घुड़शाला, घोड़ों का तरेना ।

सं० अश्वशिक्षक-क० पु० घोड़क सवार ।

सं० अश्वसेधक-क० पु० सारस ।

सं० अश्विनी (अरव=घोड़ा, अश्वी= जिनका आकार घोड़ेके शिरमारे) ग्री० एक नक्षत्र का नाम, पहला नक्षत्र ।

सं० अश्विनीकुमार (अश्विनी= घोड़ी, कुमार=बेटा, अश्वी= सूर्य की छाँ) एकवार घोड़ीका रूप बन गई थी तब घोड़े का रूप सूर्य बना था उस समय के पैदा हुए दो लड़कों का नाम अश्विनीकुमार है) पु० देवताओं के बेटे ।

सं० अनाद (अनादा, एक नक्षत्र का नाम जो इस बहीने की जन्मपत्नी को होता है और इस बहीने में पूरा बाद इस नक्षत्रके पास रहता है) पु० काम का तीसरा बहीने ।

सं० अष्टधातु (अष्ट=आठ, धातु=

धात) स्त्री० आठधातुकी धातु जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ ताँबा, ४ पीतल, ५ राँगा, ६ काँसा, ७ सीसा, ८ लोहा ।

प्रा० अष्टधाती (सं० अष्टधातु) गु० आठ-धातुका बना हुआ ।

सं० अष्टमी (अष्टम=आठवाँ, अष्ट= आठ) स्त्री० पक्षकी आठवीं तिथि

सं० अष्टसिद्धि (अष्ट=आठ; सिद्धि मन का मनोरथ) स्त्री० आठ प्रकार की सिद्धि १ अग्निमा बहुत छोटा बन जानेकी शक्ति, २ महिमा बहुत बड़ा बन जानेकी शक्ति, ३ लघिमा हलका बन जाने की शक्ति, ४ माप्ति धारे जिनकी दूर पर जो चीज हो उसको छे छेनेकी शक्ति, ५ माका-रूप धारे जैसे मनोरथको पूरा करना ६ ईशित्व धेरधैर्यरचना, वशिवसबके बशकरनेकी शक्ति, ७ कामावभायिता सामागिक मारी इच्छा को पूरा करना अर्थात् किसी बातकी इच्छा नहीं रचना ॥ अग्निमा लघिमा माप्तिः माकाभ्येमहिमा तथा । ईशित्वं वशित्वं तथा कामावभायिता ॥ १ ॥

सं० अष्टांगप्रणाम (अष्टाङ्ग=आठ-अंग, प्रणाम=नमस्कार) पु० आठ अंगों से देहवत् करना अर्थात् १ हाथों २ पैरों ३ त्रिंज ४ शिर ५ अंगों ६ शिर ७ वदन ८ मन से प्रणाम करना ।

सं० असंख्य (अ=नहीं, संख्या=गिन्ती) गु० अनगिनत, अनित, बेगुमार, बेहिसाव ।

सं० असंग्रह (अ=नहीं, सं=सव, ग्रह=लेना) गु० पु० संवर्णहीन, नहीं इकट्ठा ।

प्रा० अस-गु० ऐसा, ऐसी, किं० बि० इस तरह से, इस प्रकार से ।

सं० असत्य (अ=नहीं, सत्य=सांच) गु० झूठा, मिथ्या, पु० झूठ, दुरोग ।

सं० असत्यसंध गु० कपटपरायण, दयावाला ।

सं० अमफल (अ=नहीं, म+फल=सहित, फल) गु० पु० फलरहित, अमिद, फल न देनेवाला, बेकाम, बेमुराद, बेमकसद ।

सं० असंभ्य (अ=नहीं, संभ्य=सभा के योग्य) गु० गंवार, अनादी, मो सभा के योग्य न हो, बेतइजीब ।

सं० असमंजस (अ=नहीं, सम-जस=ठीक, सव=आये, अंजसा=सचाई से, अंज=शुद्ध करना) पु० संदेह, द्विविधा, अनिश्चय, गुरु, गुरुवा परोपेश, राजासगरके पुत्रका नाव ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, समर्थ=लवान) गु० दुबला, निबला ।

सं० असमर्थता भा० स्त्री० खाचारी, बेताकनी, निर्बलता ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, सपय=काल) गु० कुसमर्थ, बिचैतु, बेवक्त

सं० असमशर (अ=नहीं, सपय=विषय, शर=तीर) पु० कामदेव ।

सं० असम्भव (अ=नहीं, सम्भव=होने योग्य) गु० अनहोना, नहीं होनेवाला, नहीं होसकेनेवाला, सैरमुपकिन ।

सं० अमत्यवादी (अ=नहीं, सत्य=सांच, वद=कहना) क० पु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, दुरोग ।

सं० असह्य (अ=नहीं, सपय=सहन योग्य, सह=सहना) गु० जो सहा नहीं जाय, कठोर, कड़ो, कटुवा, बेबरदार ।

प्रा० असवार (सं० अरंवार) गु० सवार ।

सं० असाधु (अ=नहीं, साधु=सीपा) गु० अपपी, पापी, दुष्ट, बुरा ।

सं० असाध्य (अ=नहीं, साध्य=सिद्ध होनेयोग्य) गु० कठिन, असम्भव, जिसका इलाज नहीं होसके, लादवा ।

सं० असार (अ=नहीं, सार=गूदा, तत्व) गु० सूझा, पोला, सूखा, २ कृपा, बेकायदह, निष्फल, जिसमें कुछ सार न हो ।

सं० असावधान (अ=नहीं, सावधान=चौकस, होशियार) गु० अ-

चेत, वैमुप, वै मुरत, वैखर, शाफिला।
 सं० असावधानी-भा० श्री० वे-
 चौकसारी, वेखरी, शफिल।
 सं० असि (अस्=फेंकना, वा चम-
 कना) श्री० तलवार, सांडा, तल्वर,
 शम्भेर ।

सं० असित (अ=नहीं, सित=शैल)
 पु० काना, कृष्णपत्र ।

सं० अमिद्ध (अ=नहीं, सिद्ध=रूपा)
 पु० अपूर्ण, अनवना, २ विनयका,
 भूद, दृष्ट ।

सं० असिद्धता-भा० श्री० नाका-
 मय, पी, प्रुडाई ।

प्रा० असीम } (सं० आशिस) श्री०
 आर्मीम } आर्मी, बाँद, दृष्टा ।

सं० अमु (अस्=फेंकना) भा० पु०
 बाण, रक्षास, कड, जान ।

सं० अमुर (सं० अम=फेंकना, जो
 देवताओं को फेंकने हैं) पु० दिनि
 के बेटे, शत्रुम, दैत्य, दानव ।

सं० अमुग्मेन. गवानीय ।

सं० अमूयक (अस्+प्र+अक,
 अस्=निगदरकरना) पु० नि-
 म्रक, पुगुलवार, पुगई बनाने
 वाला ।

सं० अमूया-भा० श्री० गुणों दोष
 मगना, वेखरीकरना, निन्दा
 करना ।

अं० अनोनियेनने=वेख, ममा,
 ममा, ममा ।

सं० अस्खलित (अ=नहीं,
 गिरना) अं० पु० अच्युत, अचल ।

सं० अस्त (अस्=फेंकना) पु० पु-
 कां बिना वा ह्वना, गुस्सा ।

प्रा० अस्तहोना-क्रि० अ० को-
 सूर्य का ह्वना, सूर्य बिना ।

सं० अस्तव्यस्त (अस्=फेंकना)
 पु० तिवर-बितर, जुदाजुदा, क-
 लदा पुनडा, तीननेरद, इषा उल,
 जहां तहां, बिमभिम, नहोताना ।

सं० अस्ताचल (अस्त=सूर्योदय,
 अचल=पहाड़) पु० पथिप की
 ओर एक पहाड़ जहां हिन्दू लोग
 मानते हैं कि सूर्य उठता है ।

सं० अस्ति श्री० विद्यमान, मौहूर ।

प्रा० अस्तुत } सं० (शुनि) श्री० म
 अस्तुनि } राह, गारीक, मंगमा,
 मवन ।

सं० अम्र (अस्=फेंकना) पु० वेना
 इथियार निमको फेंकके मारे गेमा
 बाण नोकका मोला आदि, २ वन-
 वार आदि सब इथियारों को भी
 कभी कभी अम्र कहते हैं ।

सं० अस्थि (अम=फेंकना) पु०
 हाड, हड्डी ।

प्रा० अस्मी (सं० अशीति) पु०
 चारसीमी ।

सं० अहमिनि-श्री० अहंकार, अवि-
 मान, गकर, मुदी ।

म० अम्बु० पुं० अहंकार (अहम्, कां=करने
वाला, कृ=करना) पु० यमद, अ
धियान, अकदमकद, गर्व, मद, पैठ,
मरोद, शेत्यो ।

सं० अहङ्कारी (अहंकार) पु० य
मंदी, अकदमकद, अकदम, शेत्यो-
वाला, अधियानी ।

सं० अहन-पु० दिन, रोज, करार ।

सं० अहर्निश-श्री० रात्रिदिन, श-
यरात्रि ।

सं० अहल्या (अहन्व, अ=नहीं,
हन्=हल चोकरा) श्री० गौतम
कापिकी स्त्री ।

प्रा० अहार (सं० आहार) पु० आना,
भोजन ।

प्रा० अहाहाहा (अह, अहम्=
मं० अहह) दे० हा=होइना)

वि० शी० अचंभा, दुःख, और गु-
र्ख आदिकी अवतावेवाला शब्द,
आहा, आह, हाह ।

प्रा० अहर्हि (सं० अस्ति=है, अस्=
होना) वि० अ० है, विद्यमान है,
होकर है ।

मं० अहिंसा (अ=नहीं, हिंस=भार-
ना) श्री० दया, हिंस को नही
करना, हिंसीको नहीं मराना ।

मं० अहि (अ=हारीको मे. हन्=
करना) पु० सां० मर्ह, बाप ।

सं० अहिगति (अहि=बाद, गति=

चलना, जाना) श्री० सांपेकीच
देदीपाल, कमरफकारी ।

प्रा० अहिचार (सं० अहिचार
पु० सां० का विप ।

सं० अहित (अ=नहीं, हित=ल्या
भला) पु० बेरी, गुनु, २ बेर, विरोध

सं० अहितकारी (अ=नहीं, हित
भला, कारी=कृ=करना) क० पु०

अभियकरनेवाला, दुराईकरनेवाला ।

सं० अहिनी-श्री० सांपिन, मरिछी ।

सं० अहिपति (अहि=सां० गति=मा
लिक) पु० सां० कारागार, शेषमी,
२ बायमी ।

सं० अहिफेन-पु० अक्षय ।

सं० अहिलक=अभि+अत्र (अभि=
साधने+अत्र=दुबाना अयादु बाह)
२ सपोना, सां० दूहा, बधा ।

प्रा० अहिवात (सं० अस्ति=वति,
अस्ति=है, वति=वर्ता, साविद) पु०
मुशान, वतिदे भीनेवा विद ।

सं० अहीन (अहि=सां०, इन=मा
लिक) पु० सां० कारागार, शेषमी,
शेषनाग ।

सं० अहीन (अहि=सां०, ईश=मा-
लिक) पु० सां० कारागार, शेषमी ।

प्रा० अहीर (सं० आधीर का=चा-
रोकोमे, विद=हर, वा=देना, वा,
वा, ईश=देना) पु० आला ।

प्रा० अहीरणी (अहीर) श्री०
अहीरी) आनन ।

प्रा० आंखद्वडवाना-बोल० आंखो
मे आंख फुटाना ।

प्रा० आंखदिलाना } बोल० धप-
आंखदिलाना } काना, धुर-
कना ।

प्रा० आंखपथराना-बोल० चक्का
घोड़ा होना, भीषियाना ।

प्रा० आंखफड़कना-बोल० आंख
फड़कना, आंखके पथरों का रिछ-
ना (जब कि पुरुषकी दाहिनी और

सौ की दाई आंख फड़कती है तो
हिन्दू लोग उसको अशुभ मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ

अशुभा होनेवाला है परन्तु पुरुष
की दाई और सौ की दाहिनी आंख
फड़कती है तब सोचते हैं कि कुछ

शुभा होनेवाला है) ।

प्रा० आंखफुटना-बोल० धंसा होना ।

प्रा० आंखफूटी- पीड़गर्द-बोल०
यह मुशररा उस समय बोला जाता
है कि जब दो प्रादमी किसी एक

धीनके छिपे भगदूतों और वस
धीनके स्वामानेपर उबका भगदूत
बन्द हो जाय ।

प्रा० आंखफेरना } बोल० धिक्कासे
आंखमोड़ना } धिक्कासे ता-

ड़ना, धिक्कासे बर करना ।

प्रा० आंखवन्दकरलेना } बोल०

आंख मूंदना } दूसरे से

पूँछ मोड़ना, दूसरे की खबर में से-

र मरना ।

प्रा० आंखवचाना-बोल० आंख
राना, आंख परावर न कर सकना
जमाना ।

प्रा० आंखभरके देखना-बोल०
किसी अनोखी चीजको खूबदेखना
कि संतोष हो जाय ।

प्रा० आंखभरलाना-बोल० आंखों
में धातु भरलाना, आंखदेखदेखना,
खोनी मुरत बनाना ।

प्रा० आंखमारना-बोल० आंख
टकाना, सैनकरना, शराब करना,
आनाकानी करना ।

प्रा० आंखमिचनाना-बोल० मर-
ना, मरजाना ।

प्रा० आंखमिचोवल } बोल०

प्रा० आंखमिचोली } मिचोळ-

प्रा० आंखमुंदोरा } ना, मूंद-
ना, मोड़ना ।

प्रा० आंखमिलाना-बोल० मिच-
ताई करना, दोस्ती करना ।

प्रा० आंखरखना-बोल० प्यार क-
रना, प्यारकी यातेंकरना, शराब
करना, देखना, नकलना, किसी
की की बुरी छवि से देखना ।

प्रा० आंखलगाना-बोल० किसी
के प्यार में कैलना, प्यारकरना,
दोस्ती करना ।

प्रा० आंखलड़ना-बोल० अपनेप्यारे
से अचानक मिलजाना, अपनेप्यारे

अहे (वि० यो० संवोधनकास-
अहो) चक, शोच, दुख, दया, अचं
भा, चढ़ा, सराह आदि अर्थोंमें बोल
जाते हैं ।

० अहेर (सं० आखेट) स्त्री० शि-
कार, मृगया, आखेट ।

० अहेरिया (सं० आखेटकी)
अहेरी पु० शिकारी, बहे
लिया, आखेटकी ।

० अहो (सं० अहः वि० यो० आ-
श्चर्य, तत्पश्चात्, वृत्ति, दुःख ।

० अहोरात्रि (अहन्=दिन, रात्रि
=रात) क्रि० वि० रातदिन,
दिनरात ।

आ

सं० आ, वि० यो० हाय, आह, दुःख अथ
वा दयाकी अवलम्बनाला शब्द ।

सं० आ, उपस० से, (जैसे आकोमार
मू=पालकपन) २. तक, तलक,
लग, बोड़ी (जैसे आगोपाल=आ-
ल तक, अथवा आपरणमू=परनेतक)
३. चारों ओर से, ४. कुद, कुजेक,
सा, (जैसे आपात=कुजेक पीला, अ-
थवा पीलासा) ५. पहले, ६. वाक्यके
चलते अर्थ में ।

सं० आ-पु० शिव, महादेव, २. प्रभा ।

प्रा० आंक (सं० अङ्क) पु० अङ्क, सं-
ख्या, रकम, २. चिह्न, निशान, ३. क-
पड़े के पानपरका चिह्न जिससे उस
का मोल जाना जाता है, निरवय ।

प्रा० आंकना (सं० अङ्क=चिह्न कर-
ना) क्रि० स० जांचना, परखना, २
मोल करना, मोल ठहराना, ३ चि-
ह्न करना ।

प्रा० आंकुश (सं० अंकुश) पु० अं-
कुरा, अकिंदी, लोहेका कांटा जिससे
हाथी को चलाते हैं ।

प्रा० आंकुश मारना-बोलना बरा
करना ।

प्रा० आंस (सं० अन्वि) स्त्री० नेत्र,
नयन, चक्षुः, घण्टु ।

प्रा० आंस आना-बोल० आंस में
जलन रोनी, आंस छाल होजाना ।

प्रा० आंस खट्कना-बोल० आंस
दुखना, आंसमें दर्द होना ।

प्रा० आंस चढ़ाना-बोल० क्रोधक-
रना, पुस्ता करना, २. मस्त होना, मन
बाला होना, नशेमें होना ।

प्रा० आंस चीर चीरके देखना-
बोल० सूत्र ध्यान लगाके देखना,
२. अथवा क्रोधसे देखना ।
प्रा० आंस चुराना-बोल० ध्यान न
ही देना, २. शर्पसे आंस फेरलाना
३. किसी से आंस बचाना ।

प्रा० आंस छिपाना-बोल० किसी बुरे
कामके करने से सजाना ।

प्रा० आंस अंकीकरना-बोल०
मित्रों के मिलने से मस्त होना,
मस्त होना ।

प्रा० आंखद्वडवाना-बोल० आंखो

मे आंख फलाना में निनां

प्रा० आंखदिलाना } बोल० थप-

आंखदिलाना } काना, धुर-

प्रा० आंखपथराना-बोल० चका-

चोदा होना, चोबिधाना

प्रा० आंखफड़कना-बोल० आंख

फड़कना, आंखके पपों का हिस्-

ना (जब कि पुरुष की दाहिनी और

सो की बाई आंख फड़कती है तो

हिन्दू लोग उसको अच्छा-सगुन

मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ

अच्छा होनेवाला है पर जब पुरुष

की बाई और सो की दाहिनी आंख

फड़कती है तब सोचते हैं कि कुछ

बुरा होनेवाला है)

प्रा० आंखफड़ना-बोल० धंकाहोना

प्रा० आंखफूटी पीढ़गई-बोल०

यह मुराबरा उससमय बोला जाता

है कि जब दो आदमी किसी एक

बीजके छिपे भगदनेहों और उस

बीजके लोथप्रानेपर उनका भगदना

बंद होजाय ।

आंखफेरना } बोल० मिथोसे

आंखनोड़ना } मिथोसे तो-

ना, मिथोसे धर करना ।

आंखबंदकरलेना } बोल०

आंख मूंदना } हमारे-से

मुँह मोड़ना, दूसरेकी खबर में खे-

द मरना । नाना फलाना

प्रा० आंखवचाना-बोल० आंखवु-

राना, आंख-परावर न कर सकना,

धराना ।

प्रा० आंखभरके देखना-बोल०

किसी अनोखी चीजको खूबदेखना

कि संतोष होजावे ।

प्रा० आंखभरलाना-बोल० आंखो

में आंख भरकाना, आंखदेखेवाना,

शोनी मूत बनाना ।

प्रा० आंखमारना-बोल० आंखम-

टकाना, सैनकरना, इरादा करना,

आनाकानी करना ।

प्रा० आंखमिचजाना-बोल० मर-

ना, मरजाना ।

प्रा० आंखमिचविल } (आंख

प्रा० आंखमिचवली } मिथोड-

प्रा० आंखमुंदोरा } ना, मुँद-

एक विलहा नाम ।

प्रा० आंखमिलाना-बोल० मिथ-

नाई करन, दोस्ती करनेवाला

प्रा० आंखखना-बोल० प्यार-क-

रना, प्यारकी धानकरना, दे आशा

करना, देखना, नाकना, द किमी-

सो की बुझी छि मे देखना ।

प्रा० आंखलगाना-बोल० किसी

के प्यार में जेमका, प्यारकरना,

दोस्ती करना ।

प्रा० आंखलड़ना-बोल० अपनेप्यारे

से बचानक विद्वाना, करने प्यारे

के देखने से उसके प्रेम के बराबरी होना ।

प्रा० आंखलड़ाना-बोल० आंख
मारना, सैन करना, इशारा करना,
२ छिपी बात को इशारों से
जतलाना ।

प्रा० आंखलालकरना-बोल०
क्रोध करना, खिसियाना, गुस्सा
करना ।

प्रा० आंखसेकना-बोल० किसी के
रूपको अथवा सुन्दरताको देखना ।

प्रा० आंखसे गिरना-बोल० ० ह
लका होना, तुच्छ हो जाना, बेक-
दर होना ।

प्रा० आंखें नीली पीलीकरना-
बोल० बहुत गुस्से से मुँह का रंग
बदलना ।

प्रा० आंखोंपर बैठना-बोल० प्यारा
होना, ऊँचा बैठना, प्रतिष्ठित होना,
आंखों में जगह पाना ।

प्रा० आंखों में आना-बोल०
नशे में होना, मदिरा के नशे में
मस्त होना ।

प्रा० आंखों में धर करना-बोल०
प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

प्रा० आंखोंमें चरबीछाना-बोल०
पतलेपदसे पसंद करके अपने पुराने
पिशा को नया पीछा करना, जान-
बूझकर नष्ट करना ।

प्रा० आंखोंमें फिरना } आंखों में
आंखों में वसना } सदा
याद रखना, मन में सदा किसी का ध्यान
रखना ।

प्रा० आंखोंमें रातकाटना } बोल०
आंखोंमें रातलेजाना } रात
जागते बिताना ।

प्रा० आंग (सं० अङ्ग) पुं० शरीर,
देह, अंग, शरीर का एक भाग ।

प्रा० आंगन (सं० अङ्गन) पुं० चौ
आंगना } क, अंगनाई, सहेन ।

प्रा० आंच-स्त्री० गरमी, आग का
लूका भपूका ।

प्रा० आंचर (सं० अंचल) पुं० अंच
आंचल } आकृष्ट देश किनारा
२ नुगाईकी धानी ।

प्रा० आजना (सं० अजने) क्रि०
सं० अजन टाकना, गुरमा लगाना,
कामल लगाना ।

प्रा० आंठ (सं० आनद, आ=चारो
ओर से, नह=वापना) स्त्री० गाँठ, २
बैर, विरोध, दार ।

प्रा० आंत (सं० अन्त्र) स्त्री० अंतुड़ी ।

प्रा० आंधी (सं० अन्धकार) स्त्री०
फुफुड, तूफान, तेज हवा ।

होना) स्त्री० पेट में एक तरह का

रोग २. आमाशय, मूल ।

प्रा० आंसू (सं० अश्रु, अश्रु=फैलना)

पु० आंसू का यानी ।

प्रा० आंसू भरलाना-बोना० आंसू

हरदशाना, रोनी, सूरत बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक पेड़

का नाव, अरुचन, यदोर ।

सं० आकर (आ=चारों ओर से,

कू=विचरना अर्थात् जहाँ-यहाँ चित्ती

रहती है) स्त्री० स्नान, स्नानि ।

सं० आकर्णित- स्मृ० पु० सुना

गया; धृत ।

सं० आकर्ण्य अग्न्य० सुनकर ।

सं० आकर्ष (आ+कृष=लींघना)

भा० पु० लींघना, लींघना, पशेरना ।

सं० आकर्षक (आ=से; कृष=लींघ-

ना) पु० पुच्छक पत्तवर, लींघनेवाली

शक्ति, क० पु० लींघनेवाला ।

सं० आकर्षण (आ=से; कृष=लींघ-

ना) ना० पु० सिंचाव, लींघनेकी

शक्ति ।

सं० आकर्षित (आ=से, कृष=लींघ-

ना) स्मृ० पु० लींघना

गया ।

सं० आकांक्षा (आ=चारों ओर

से, कांचा=चाहना) स्त्री० चाँद, चाँ-

दना, इच्छा, चाँद, अभिलाष,

इत्यादि ।

सं० आकांक्षक (आ=से, कांचा=

चाहना, कांचा=चाहनेवाला) क० पु०

इच्छक, चाँदक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ=से, कांचा, +इ)

क० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ=करना, पु०

पु० कर, डील, स्वरूप, सूरत, पूरत,

२. विद्व, विशान, ३. आ अभिचर ।

सं० आकाश (आ=चारों ओर से

काश=वपकना) पु० आस्मान,

गगन, दृश्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश=आ-

स्मान, वृत्ति=जीविका) स्त्री० जो

आजीविका निपट नहीं है, अस्तिर

जीविका, बेकपापरोजी ।

सं० आकाशवाणी (आकाश=आ-

स्मान, वाणी=शब्द) स्त्री० आ-

काश से जो कुछ बात सुनी जाती

है, वाणी जो आकाश से होती है ।

सं० आकीर्ण (आ=चारों ओर से,

कृ=विचरना वा फैलना) स्मृ० पु०

परिपूर्ण, व्याप्त, पराहूँसा ।

सं० आकुञ्चन (आ=चारों ओर से,

कुञ्च=समेटना) भा० पु० संकोचन,

कुञ्च=सिपटना, सिकुड़ना ।

सं० आकुल (आ=चारों ओर से,

कुल=दुखी होना) पु० घबराया

हुआ, व्याकुल, दुखी, परेशान ।

के देखने से उसके मेमके बरहोना ।

प्रा० आंखलड़ाना-बोल० आंख
मारना, सैन करना, इशाराकरना,
२ दिपी बात को इशारा से
जतलाना ।

प्रा० आंखलालकरना-बोल०
क्रोध करना, खिसियाना, गुस्सा
करना ।

प्रा० आंखसेकना-बोल० किसी के
रूपको अथवा सुन्दरताको देखना ।

प्रा० आंखसे गिरना-बोल० ह
डका होना, तुच्छ होजाना, बेक-
दर होना ।

प्रा० आंखें नीली पीलीकरना-
बो० बहुत गुस्से से मुँह का रंग
बदलना ।

प्रा० आंखोंपरबैठना-बोल० प्यारा
होना, ऊँचा बैठना, प्रतिष्ठित होना,
आँखों में जगह पाना ।

प्रा० आंखों में आना-बोल०
नशे में होना, मदिरा के नशे में
मस्त होना ।

प्रा० आंखों में धर करना-बोल०
प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

प्रा० आंखोंमें चरबीछाना-बोल०
धनकेपदसे पयंट करके अपने पुराने
विश्वों को नहीं पहचानना, जान-
बूझ के भ्रम होना ।

प्रा० आंखोंमें फिरना } बोल
आंखों में बसना } सदा
ना, मन में सदा किसी का ध्या
वैरा रहना ।

प्रा० आंखोंमेंरातकाटना } बोल
आंखोंमेंसतलेजाना } सव
जागते बिनाना ।

प्रा० आंग से अङ्ग पु० शरीर
देह, अंग, शरीर का एक भाग ।

प्रा० आंगन } (सं० अङ्गन) पु० चौ
आंगना } क, अंगनाई, सहेन ।

प्रा० आंच-सी० गरमी, आग का
लूका भपूका ।

प्रा० आंचर } (सं० अंचल) पु० अंच
आंचल } आकरदेहा किनारा
२ लुगाईकी धानी ।

प्रा० आजना (सं० अङ्गन) कि०
स० अङ्गन दाखना, मुरमा लगाना,
काजल लगाना ।

प्रा० आंठ (सं० आनट, आ=चारों
ओर से, नह=बांधना) स्त्री० गांठ, २
बैर, विरोध, राह ।

प्रा० आंत (सं० अन्त्र, स्त्री० अंतरी ।

प्रा० आंधी (सं० अन्धकार) स्त्री०
फकड़, तूफान, भेज रहा ।

प्रा० आंव (सं० आम, अम्=वीमार

रोनी) स्त्री० पेट में एक तरह का

रोग । २. आमाशय, शूल । ३. ००

प्रा० आंसु (सं० अश्रु, अश्रु = फैलना)

पु० आंसु का पानी । १. ००

प्रा० आंसु भरलाना - बोल० - आंसु

। दृढ़वाना, रोनी, सूख बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक पेड़

का नाम, अकहन, बदर ।

सं० आकर (आ = चारों ओर से,

कृ = विपरीत अर्थात् जहाँ धातु चितरी

। रहती है) स्त्री० खान, खानि ।

सं० आकर्णित - र्म्य० पु० मुनी

५ गेपा, धुन ।

सं० आकर्ण्य - अण्य० मुनकर ।

सं० आकर्ष (आ + कृष = खींचना)

पा० पु० खींचना, खींचना, बदरना ।

सं० आकर्षक (आ = से, कृष = खींच-

ना) पु० पुष्करपत्रवर, खींचनेवाली

धीज, क० पु० खींचनेवाला ।

सं० आकर्षण (आ = से, कृष = खींच-

ना) ना० पु० विषाद, खींचनेकी

शक्ति ।

सं० आकर्षित (आ = से, कृष + इत

कृष = खींचना) र्म्य० पु० खींचा

गेपा ।

सं० आकांक्षा (आ = चारों ओर

से, कान्ता = चाहना) स्त्री० चाह, चा-

हना, इच्छा, बांछा, अभिलाष,

इरादिल ।

सं० आकांक्षक (आ = से, कान्ता +

अक, कान्ता = चाहनेवाला) क० पु०

इच्छक, बांछक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ = से, कान्ता, + इ)

क० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ = करना, ण०

पु० कन, डौल, स्वरूप, मूरत, मूरत,

२. चिह्न, निशान, ३. आभूषण ।

सं० आकाश (आ = चारों ओर से

काश = नपकना) पु० आस्मान,

गगन, शून्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश = आ-

स्मान, वृत्ति = जीविका) स्त्री० जो

आजीविका नियम नहीं है, अस्थिर

जीविका, बेकपापरोजी ।

सं० आकाशवाणी (आकाश = आ-

स्मान, वाणी = शब्द) स्त्री० आ-

काश में जो कुछ बात सुनी जाती

है, वाणी जो आकाश से होती है ।

सं० आकीर्ण (आ = चारों ओर से,

कृ = विपरीत अर्थात् फैलना) र्म्य० पु०

पारिपूर्ण, व्याप्त, मरा हुआ ।

सं० आकुञ्चन (आ = चारों ओर से,

कुञ्च = समेटना) पा० पु० संकोचन,

कुञ्च = सिपटना, सिकुड़ना ।

सं० आकुल (आ = चारों ओर से,

कुल = दुखी होना) पु०

दुःख, आकुल, दुःखी,

सं० आकुलित (आ=से, कुल +
इत) र्म्य० दुःखित, हेरित, रंजीदा ।

सं० आकृति (आ, कृ=करना)
स्त्री० रूप, स्वरूप, मूरत, मूरत, डौल ।

सं० आकृष्ट (आ=चारों ओर से
कृष्ट + त, कृष्ट=खींचना) र्म्य० पु०
खींचा हुआ, आकर्षित ।

सं० आकृष्टि (आ=से, कृष्ट + ति)
भा० पु० आकर्षण, खींचना, ख-
सीटना ।

सं० आक्रमक (आ=सब ओर से,
क्रम + प्रक, क्रम=माना) क० पु०
घेरनेवाला, हमला करनेवाला ।

सं० आक्रमण (आ=से, क्रम +
अन, क्रम=माना वा हमला करना)
भा० पु० व्यापन, घेरना, हमला
करना, भुसभरा करना ।

सं० आक्रम्य (आ=से क्रम + य)
भा० अक्षय० घेरकर, हमला करके ।

सं० आक्रान्त (आ=से, क्रम + त)
र्म्य० पु० घेरा हुआ, घेरा गया, हम-
ला किया गया, क० ३ भ्रान्त,
यका हुआ ।

सं० आक्रीड (आ=चारों ओर से,
क्रीड=खेलेना) पु० राजा का ख-
बन, बादशाहीशायी ।

सं० आक्रोश (आ=चारों ओर से,
क्रुश रोना) भा० पु० क्रोध, रोना,
गुस्सा, गिरिषावक्रादि ।

सं० आक्षेप (आ, क्षिप्=फेंकना)
पु० बुरी बात, निन्दा, दुर्वचन, रं फें-
ना ३ एक अर्थालंकारको नाम ।

प्रा० आस्त्र (सं० अस्त्र) पु० अस्त्र
वर्ण, हर्फ ।

सं० आसु-मूषक, मूश, मूसा, चूहा
सं० आसुभुक् (आसु + भिज्ना
भुज् मन्त्रण करना) क० पु० बिना
मारमार, गुर्वा ।

सं० आखेट (आ=से, खिन्=हराना
सताना) स्त्री० शिकार, अहेर, मृगया
सं० आख्य } (आ=सब प्रकार से
आख्या } खया=कहना, मसि-
होना) पु० नाम, संज्ञा, इत्थम् ।

सं० आख्यात (आ=से, सप् + त)
र्म्य० उक्त, मतकूर, कहा हुआ ।

सं० आख्यायिका-स्त्री० कहानी
कथा, रचयन, किसान ।

सं० आख्यायिकानि (आ=से, खया=मसि
देहोना) पु० यान, कथा, इत्थम्,
वर्णन, इतिहास ।

प्रा० आग (सं० अग्नि, स्त्री० अग्नी,
अग्नि, अन्न) ।

प्रा० आगउठाना-पोल० बनेरा
मचाना, कोपितकरना, गुस्सा
उठाना, खिलाना ।

प्रा० आग (सं० अग्नि, स्त्री० अग्नी,
अग्नि, अन्न) ।

प्रा० आगउठाना-पोल० बनेरा
मचाना, कोपितकरना, गुस्सा
उठाना, खिलाना ।

प्रा० आग (सं० अग्नि, स्त्री० अग्नी,
अग्नि, अन्न) ।

प्रा० आगउठाना-पोल० बनेरा
मचाना, कोपितकरना, गुस्सा
उठाना, खिलाना ।

प्रा० आग (सं० अग्नि, स्त्री० अग्नी,
अग्नि, अन्न) ।

प्रा० आगदेना-बोल० मुर्झाना ।

प्रा० आगपड़ना-बोल० गुस्से होना,

सिसिपाना, कोपकरना, झड़कना ।

प्रा० आगवरसना-बोल० परसना-

बरा उससमय बोला जाना है अब

बहुत गर्मी पड़ती है, थोड़ा लड़ाई

में होय के गोले चलते हैं ।

प्रा० आगबुझाना }
आगमें पानी डालना }

बोल० ठंडा करना, भगड़ा, बंद क-

रना, बनेड़ा मिश्रण ।

प्रा० आगभस्त्रना } बोल० निरु-

आगफांकना } स्वीकार कर-

ना, हवावरबाद करना, २ दोगमार-

ना, गेसीकरना, अपनी बड़ाई कर-

ना, परदे करना ।

प्रा० आगमें लोटना-बोल० सोच

से हुनी होना ।

प्रा० आगलगना-बोल० जलना,

झंझिप होना, सिसिपाना, गुस्से

होना, २ बहुत भूख लगना ।

प्रा० आगलगाकेपानीलेदोड़ना

बोल० जिसझगड़ेको आप छेड़ा हो

ससके मिश्रण का बहाना करना, २

झल करना, झलना, उगना ।

प्रा० आगलगाना-बोल० जलाना,

झंझिप, गुस्सेमें करना, झंझिप करना,

झड़कना ।

प्रा० आगसुलगाना-बोल० आग

जलाना, बसेड़ा बहाना, छुने छुने

देगा बनेड़ा उगना ।

प्रा० आगहोना-बोल० गुस्से होना ।

झंझिप होना, सिसिपाना ।

सं० आगत (आ=चारों, और=से,

गं+त, गम्=जाना) क० पु० आया

हुआ, पहुंचा, उपस्थित, आपात ।

सं० आगन्ता { क० पु० आनेवाला,

आगन्तुक } अजनबी ।

सं० आगम (आ, गम्=जाना, और

आ उपसर्ग के साथ आने से अर्थ

हुआ आना) पु० शास्त्र, तंत्रशास्त्र

मिससे पन्थों का वर्णन है, और उ-

सरी महादेव ने बनाया है संस्कृत में

आगमका पहलक्षण लिखा है "आ-

गमे शिवबन्धो, गन्ध गिरिजा

ध्रुवी । मनयन्तामुदेवस्य तस्मादागम

वच्यते" अर्थ महादेवने कहा और

पार्वतीने सुना और विष्णुने माना

इसलिये इसको आगम कहते हैं और

यहां आ का अर्थ आया (महादेव

से) । का अर्थ गया (पार्वती के

पास) और म का अर्थ माना (वि-

ष्णु ने) है २ आना, ३ मविष्यत,

आने वाला, आपदनी ।

प्रा० आगमवांधना-बोल० अगली

बात को डीककरना, वा अगली

बातका विचार करना, २ आगे से

जवाना, आगमकरना ।

पु० गुरु, पढ़ानेवाला; शिक्कर, च-
पदेश करनेवाला, वेदशास्त्रादिने-
वाला ।
सं० आच्छादक (आ + द + कृत्)
अकृ० पु० दांकनेवाला, ढि-
पानेवाला, मूदनेवाला ।
सं० आच्छादन (आ = से, दृक् = ढरना)
भा० पु० ढकनेका कपड़ा, चर, रू-
ढकना ।
सं० आच्छादित (अच् + पु० मूदा
हुआ, ढका हुआ)
भा० आच्छिन्न (अच् + पु० मूदा
हुआ)
भा० आच्छि (अच् + पु० मूदा
हुआ)
भा० आज (सं० अज्य) आजका दिन,
वर्तमान दिन ।
भा० आजकल-बोल० इनदिनों में
कुछ दिनों से ।
भा० आजकल करना (अज्य + कृत्)
आजकल बताना, बोलना,
हाँ कहना ।
भा० आज (सं० अज्य) पु० दा-
दा, पितामह ।
सं० आजीव (आ + जीव = जीना)
रोजगार, जीविका, पेशा ।
सं० आजीविका (आ = से, जीव =
जीना) स्त्री० जीविका, निर्वाह,
जीनेका, उपाय, रोजी, रिकत ।
सं० आज्ञा (आ = से, ज्ञा = जानना)
स्त्री० हुक्म, आदेश, आग्रह ।

सं० आज्ञाकारी (आ = से, ज्ञा = जानना,
कारी = पूरा करनेवाला, कृत् = करना)
गु० आज्ञा माननेवाला, हुक्ममानने
वाला, सेवक, आधीन, तारेदार ।
सं० आज्ञानुवर्ती (आ = से, ज्ञा = जानना,
नुवर्ती = मानना) क० पु० आज्ञा-
कारी, कर्मावरदार, बशीभूत, आधीन ।
सं० आज्ञापक (आ = से, ज्ञा = जानना,
पक = हुक्म करनेवाला) आदेश
करनेवाला, हुक्मकरनेवाला, हाकिम ।
सं० आज्ञापन (आ = से, ज्ञा + पु० मूदा
हुआ) भा० पु० विज्ञापन, चित्ताना,
इच्छा देना, हुक्म देना ।
सं० आज्ञप्त (आ + ज्ञप्त) म्पे० पु०
आज्ञापाया हुआ, महुक्म ।
सं० आज्ञापत्र (आ = से, ज्ञा = जानना,
पत्र = बाण) पु० हुक्म नामा लिखी हुई
आज्ञा कर्मान ।
सं० आज्य (अज्य + कृत्) पु० मूदा, पी, पीव, सु,
पिप, रोशनजर्द ।
सं० आटोप (आ = चारों ओर से,
टोप = ढकना, मारना) पु० पण्ड,
अभिधान, दर्प, आरदार ।
भा० आठ (सं० अष्ट) पु० अष्ट, एक
गिन्ती का नाम ।
भा० आठ आठ आँसू रोना-बो-
ल० बहुत रोना, पट्ट रोना ।
भा० आठपहर-बोल० रात दिन

हर घड़ी, हर आने, सदा, नितउठ।
प्रा० आड़-खी० ओठ, परदा, रोक।

सं० आडम्बर (आ=चारों ओर से,
दम्बर+अम्बर, दम्बर=फेंकना) पु०
रूप, पद, शर, पातंड, अत्र, मेघ,
मङ्गारा, मुरहीका शब्द, लटला, उ-
योग, घनावट, घनाव, आयोगन,
आरम्भ, मेघका गरजन, ध्वजम्भ,
विभाग, भेष।

प्रा० आड़ा-गु० तिरथा, देश, बांका।

प्रा० आड़ी-गु० रोक, मुराकिन,
स्वर विशेष।

प्रा० आड़े आना-बोल० बनावना,
रीषमें परना।

सं० आड़क-गणिषणविरोध, अड़ेवा,
श्रेष्ठ का बीया माग।

सं० आड़की-खी० अरदा

प्रा० आड़न-खी० अडा, बाध का
बलान।

प्रा० आड़निया-गु० बैगरी, पञ्जन,
दलत।

सं० आनड़ (आ=मे, नड़ि=दुष्ट से
भीना) पु० दर, पय, सौक, २ दुग्ग,
३ पीरा, रोग, मन्त्रा।

सं० आननायी अभिनतगाना, बिने
देना, दम्भान करना दूसरे का बन
मैं हूँ अन्धकारसे लेजेना हूँ है
हरे हरेकानेका आननायी कहाई।

जानद (आ=चारों ओर से, न

=तपाना) पु० पु० पूष, धर्म, धर्म
की गर्मी।

सं० आतपत्र (आतप=पूष, तै=रवा,
ना) पु० अतरी, काक, बक।

सं० आतर (आ=से, तै=माना वा, तै-
रना) पु० पु० अन्तर, बीच, कर्क;
उत्तराई।

सं० आतियेय-पु० अभिवि के नि-
मित्त भोजनादिदेनेवाला, अभिवि,
सेवक, महामानिवाज, देवदास।

सं० आतिय-भा० पु० अभिवितेवा,
सन्मान, महामानदारी, महामानिवाज।

सं० आतुर (आ, तुर=जल्दी क-
रना) पु० प्रयायापुष्पा, आकुल
वेनेन, दुर्ग, २ शोभी, कि० वि०
शीघ्र, अटपट जल्दी।

सं० आत्मचात (आत्मन्=अवस्था,
चात=नाश, वादना) पु० अन्तर्बल,
अने नई बारहालना, लुप्तपुसी।

सं० आत्मज (आत्मन्=अवस्था-
स्थामे जन=जन्म होना) पु० पुन,
वेश, मन्त्रान।

सं० आत्महत्या (आत्मन्=अवस्था
को हन=मारना) खी० आत्मघात,
अने नई बारहालना।

सं० आत्महन-ख० पु० आत्मघात,
मुददुग, आत्मघात, अन्तरोप।

सं० आत्मा (आ, अन्=अवस्था) खी०
मीर, वाग्, आन, वन।

सं० आपत्ति (आ, पट्=जाना)
 आपद (स्त्री० विपत्ति, वि,
 आपदा) पत, अभाग, पला
 पुरे दिन, दुख ।

सं० आपन्न (आ, पट्=जाना)
 क० पु० अभागा, विपत्ति में पंसा
 दुःखा, दुर्गी, २ बाधादुःखा, ३ ग-
 रण में अभागादुःखा, गरणाग्न ।

प्रा० आपस (आप) सर्वना० एक
 दूसरे को, परस्पर, आदि पद ।

सं० आप्त (आप्=पैलना, लाभ)
 म्ये० पु० विश्वसित, लब्ध, सम्प-
 यार्थ, अवरहित ।

सं० आपाक (आ=चारों ओर से,
 पाक=पच=रकाना) पि० पु० आपा,
 पताका, मिट्टी के बरतनों के पकाने
 की जगह ।

सं० आपान (आ+पान, पा=पीना)
 पि० मपपानस्पान, शराब की
 दूकान पु० मपप मदबालोंवा मुँह ।

अं० आफिस-पि० पु० कार्यालया,
 कचहरी ।

प्रा० आफू (सं० अ=नहीं, फेन=
 भाग, स्फापी=फूटना) पु० अ-
 भीष, घमेल ।

सं० आफूक=अफीम ।

सं० आभरण (आ=चारों ओर से
 भू=शरण करना या पहनना) पु०
 गरना, भूषण, अलङ्कार, जेवर,

आभरण १२ बारह हैं, १ नूपुर
 २ किंकिणी ३ चूरी ४ मुंदरी
 ५ कड़न ६ बाह्रदं ७ हार ८ कं-
 ठभी ९ वेसर-१० विरिमा-११
 टीका-१२ शीशमूल ।

सं० आभा (आ=चारों ओर से, भा=
 चमकना रोशनी) स्त्री० आ० च-
 मक, रोमा भङ्क ।

सं० आभाप (आ=चारों ओर से
 पाप्=कहना) पु० भूमिका, मुख
 बग्न तपरीद, पेशवन्दी ।

सं० आभाषण (आभाप्+अन)
 धा० पु० कथन, कहना बोलना ।

सं० आभूषण (आ=चारों ओर से
 भूष=शोभना) पु० गरना, आभरण,
 अलङ्कार ।

सं० आभास (आ=त, भास=चमकना)
 भा० पु० प्रकाश, रोशनी, अ-
 भिमाप, समानता ।

सं० आभिज्ञ (आभि+ज्ञ=जानना)
 क० पु० ज्ञाना, जनुका, आगाह,
 वाकिफ ।

सं० आभीर-अरि, गोप, बाल ।

प्रा० आम (सं० आघ्र) पु० एक
 फलवा नाय ।

सं० आम (अम=पीपाररोगा)
 पु० एक प्रकार का रोग, पेटका रोग
 ग अमप, अमीर्ण रोग ।

मं० आधिपत्य-पा० पु० प्रधानता,
अधिहार, स्वाधिन, वरा, अधिकार

प्रा० आधीन (मं० अधीन) गु० आशा
करा, वर, नरेश्वर ।

मं० आधेय (आ + धे = धरना)
इह = समे रोग, जो वस्तुपरीक्षा ।

प्रा० आन-मं० आन, वर्षाद, लान
संज्ञेय, ३ वरा ।

प्रा० आन (मं० आन = माँ) गु०
हो, रमा ।

प्रा० आन (मं० आशा) भी० आशा,
व वरिष्ठ, सीनद ।

मं० आनक भा० आ-लाना जो
मुक्ति हो जाता है । पु० नगाश
कहा, दुर्दृष्ट ।

सं० आनन (आ = ले, मन = लाना)
पु० दुःख, दुःख ।

मं० आनन्द (आ = वरों और मे,
वन्द = वन्द होना) पु० हर्ष, मृग,
वेद, मुक्ति ।

मं० आनन्ददायी (आनन्द + दा-
होना) पु० आनन्ददाता
मुक्ति देनेवाला ।

मं० आनन्दहर्षक (आनन्द = हर्ष,
हर्षक = हर्षक करने वाला) पु० हर्ष,
मुक्ति देने वाला ।

मं० आनन्दित (आ + नन्द + इत्)
इह = पु० आनन्दित होने, मुक्ति, वन्दना ।

मं० आनन्दित (आ + नन्द + इत्)
इह = पु० आनन्दित होने, मुक्ति, वन्दना ।

मं० आनन्दित (आ + नन्द + इत्)
इह = पु० आनन्दित होने, मुक्ति, वन्दना ।

सं० आनन्दी (आ + नन्द + इत्)
क = पु० आनन्दयुक्त, मत्त ।

प्रा० आनना (सं० आनयन, आ,
नी = लाना) कि० सं० लाना ।

अं० आनेस्वल्-पनिष्ठित, अनन्दार ।

प्रा० आना (सं० आगमन) कि०
आनना } अं० आनेना, आने-
ना, पु० आने का सोलहवाँ भाग ।

प्रा० आनिही (आनना काना)
कि० सं० लाइना के भाइया ।

मं० आनीन-मं० पु० लाया हुआ ।

मं० आनेता (आ + नी + त, नी =
लाना क० पु० लाने वाला ।

मं० आन्दोलन (आन्दोल + अन,
दोल = फैलना) भा० पु० चलन, गति-
वाना हिलाना, हरकत देना, ध्वन,
झूलना, हलना, अनुभूति ।

प्रा० आप-मरिना० अपने आप, स्व,
अपना, मुक्त, २ वर आदमी को मुक्त
ही अगर आप बोलते हैं ।

मं० आप (आप = फैलना, पु० पानी ।

प्रा० आपकाजी (आप = अपना,
काजी = दास) गु० स्वामी, आप
मन्त्रवा ।

मं० आपक-हं० पु० बोझा हुआ ।

मं० आपणु (आ + ण - वाणिज्य)
हि० दूध, दूध, दूध ।

मं० आणिक (आ, ण + इत्)
इह = पु० आणिक होने, दूध, दूध ।

सं० आपत्ति (आ, पृष्ठ=जाना)
 आपद (स्त्री० विपत्ति, नि,
 आपदा) पत, अभाग, बला
 पुरे दिन, दुख ।

सं० आपन्न (आ, पृष्ठ=जाना)
 क० पु० अभागा, निपत में फंसा
 हुआ, दुखी, २ पापाहुआ, ३ श-
 रण में आपाहुआ, शरणार्थी ।

प्रा० आपस (आप) सर्वना० एक
 दूसरे की, परस्पर, भाई-पुत्र ।

सं० आस (आप=कैलना, लाभ)
 क० पु० विरवासित, लप्स, सत्य
 यथार्थ, भ्रमरहित ।

सं० आपाक (आ=चारों ओर से,
 पाक=पच=काना) धि० पु० आवा,
 पलावा, मिट्टी के बरतनों के पकाने
 की मगह ।

सं० आपान (आ+पान, पा=पाना)
 धि० मद्यपानस्थान, शराब की
 दूकान पु० मद्य मद्यबालोंका छुट ।

अं० आफिस-धि० पु० कार्यालया,
 कचहरी ।

प्रा० आफू (सं० अ=नहीं, फेन=
 भाग, स्फापी=पूतना) पु० अ-
 धीम, अमल ।

सं० आफूक=अधीम ।

सं० आभरण (आ=चारों ओर से
 आभूषण करना वा पहनना) पु०
 पहना, भूषण, अलङ्कार, केसर,

आभरण १२ चारह हैं, १३ नूपुर
 १४ किंकिणी, १५ चूरी, १६ मुंदरी
 १७ कडून १८ बाहुबंद १९ हार २० कं-
 तधी २१ बेसर २२ विरिमा २३
 टीका २४ शीशफल ।

सं० आमा (आ=चारों ओर से, मा=
 चमकना रोशनी) स्त्री० च-
 मक, रोषा भट्कनी ।

सं० आभाष (आ=चारों ओर से
 बाप=कहना) पु० भूमिका, मुल
 बन्ध लमहीद, पेगबन्दी ।

सं० आभाषण (आभाष+अन)
 भा० पु० कपन, कहना बोलना ।

सं० आभूषण (आ=चारों ओर से
 भूष=शोभना) पु० पहना, आभरण,
 अलङ्कार ।

सं० आभास (आ=से, भास=चमकना)
 भा० पु० प्रकाश, रोशनी होना, अ-
 भिभाष, समानता ।

सं० आभिज्ञ (आधि+ज्ञ=जानना)
 क० पु० ज्ञाता, अनुका, आगाह,
 शक्ति ।

सं० आभीर-अभीर, गोप, ग्वाल ।

प्रा० आम (सं० आघ) पु० एक
 फलवा नाभ ।

सं० आम (अम=पीमार होना)
 पु० एक प्रकार का रोग, पेटका रोग
 अमष, अमीष कषा ।

सं० आरण्य (अरण्य=जंगल) गु०
जंगली, बनरो, बनैला ।

प्रा० आरज (सं० आर्य) गु० बड़ा,
धेष्ट, पूज्य, महाराज पु० समुद्र ।

प्रा० आरत (सं० आर्च, आ, अरु=
जाना) गु० दुखी, पेशवाया हुआ,
पीड़ित, व्याकुल ।

प्रा० आरति (सं० आर्चि, आ,
अरु=जाना) स्त्री० दुख, पीड़ा,
रोग, बध ।

प्रा० आरतीस्त्री० } (सं० आराधि
आस्ता पु० } क, अ=नहीं,
राधि=रात,
अर्थात् जो दिन में भी दिखाई
जाती है) पूना में देवता के साम्हने
दीपक दिखाना, दीपदर्शन, २ व्याह
की एक रीति विशेष ।

सं० आरब्ध-अर्थ० पु० उपक्रांत,
आरम्भित, शुरू किया गया ।

सं० आरम्भ (आ, रभि=शुरू कर-
ना) पु० शुरू, आरम्भ, उपक्रम ।

सं० आरा-स्त्री, कदच, बरत, खेदनी,
सूना ।

सं० आरात-अर्थ० दूर, समीप ।

सं० आराति (आ=चारों ओर से,
रा=देना दुःख) पु० घेरी, शत्रु,
दुश्मन ।

सं० आराधक (आ, राध=सिद्ध
करना, पूरा करना) क० पु० आराधना

करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक
भक्त, आदि ।

सं० आराधन भा० पु० } (आ,
आराधना स्त्री० } राध=
पूरा करना) पूना, सेवा, इबादत
भक्ति ।

सं० आराम (आ=चारों ओर से,
राम=खुशी करना) पु० धारा, चासी-
वा, फुलबाड़ी, उपवन ।

सं० आरुढ़ (आ, रुह=चढ़ना) गु०
चढ़ा हुआ, सवार ।

सं० आरोग्य (अरोग=निरोग)
पु० निरोगता, आराम, सुदुर्लब्धी,
कुशल ।

सं० आरोप (प्रा० रुह=उगना,
आरोपन } चढ़ना) भा० पु०
जपाना, स्थापन करना, कायम
करना ।

सं० आरोपित (आ, रुह=उगना
चढ़ना) अर्थ० पु० सौंपा हुआ,
खला हुआ, २ रोपा हुआ, बोया
हुआ, ३ बदला हुआ ।

सं० आर्द्र (अर्द्र=तांता) गु० गीला,
भीगा, ओढ़ा, तर, सीला ।

सं० आर्य्य (अरु=जाना) गु० बड़ा,
धेष्ट, कुत्तन, अच्छे घराने का, पूज्य,
पूजनीय, महाराज, पु० हिंदू ।

सं० आर्यावर्त्त (आर्य=हिंदू वा
उत्तमकुल के मनुष्य, आवर्त्त=दका

१. हुआ, दृत्=रोना) पु० हिंदुस्थान की वह पवित्र धरती जो पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रतक फैली हुई है और उत्तर और दक्खिन की ओर हिमालय और विन्ध्याचल से घिरी हुई है मनु ने इसी को आर्यावर्त लिखा है जैसे "आ स मुद्रात्पूर्वपूर्वा, दासमुद्रात्पश्चिमात् । हिमवद्रिः पयोर्मध्ये आर्यावर्त्तं प्रच ज्ञते ॥ १ ॥ "आर्यावर्त्तं पुण्यभूमि, मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ।

सं० आलम्ब (आ=से, लवि=उड़ आलम्बन) रना) पु० आसरा सरारा, अवलंब ।

सं० आलय आ=चारों ओरसे, ली=लेना, मिलना) पु० घर, स्थान, जगह ।

सं० आलवाल (आ=चारों ओरसे, ला=लेना) पु० थाला, घेरा, पेड़की जड़के आस पास का घेरा ।

सं० आलस्य (अलस, आ=नहीं प्रा० आलस) लम्=शोभना, लेलना) पु० मुस्ती, आरक्त, दील ।

प्रा० आलसी-गु० मुस्त, कारिल ।

प्रा० आला (सं० आलय) पु० दीप रखने के लिये भीत में या खंभे में छोटा सा खोद, दीया का ताक, ताक, वासा ।

सं० आलान (आ=से, ला या ली=

लेना) पु० हाथी के बांधने का खूंटा अथवा रस्ता, वेड़ी, जंजीर आदि ।

अ० आलान=इरित्तार, विज्ञापन ।

सं० आलाप (आ, लप्=बोलना) भा० पु० बातचीत, बोलचाल, कहना बोलना, २ स्वरका मिलान ।

सं० आलापनीय (आलाप्+अनीय) र्म्य० पु० भाषणयोग्य, कहने लायक ।

सं० आलिंगन आ=चारों ओरसे, लिगि=झातीसे लगाना, मिलना) पु० प्यारसे मिलना, गले लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का आपसमें मिलना ।

प्रा० आली (सं० आलि, अल्=शोभना) स्त्री० सली, सरेली, सारचारिणी ।

सं० आलीद (आं, लिह=स्वाद लेना) र्म्य० पु० चारा, भुक्त, स्वाद लिषा ।

सं० आलेख्य (आ, लिख=लिखना) र्म्य० पु० लिखा ।

सं० आलोक (आ, लोक=देखना) पु० दर्शन, दृष्टि, देखना, २ चमक, ज्योति, बड़ाई, पश, पश्यान्ता, विरद, झरोखा, रोशनदान ।

सं० आलोकन-पा० पु० दर्शन, देखना ।

सं० आलोचना (आ, लोच=देखना) भा० पु० विचारना, शुद्ध करना, चर्चाकरना, नज़रसानी करना ।

सं० आलोच्य, पादु, अन्व, विचारकरा

सं० आलोइन (भा, लुट्=मथना

वा घोटना) भा० पु० मथना,

तलाश करना, अन्वेषण ।

सं० आलोल-गु० चंचल, अति

चंचल ।

प्रा० आल्हा-पु० एक हिंदू शूरवीर

और कवि का नाम जिसके नाम से

एक मकार की कविता का नाम

भी आल्हा है ।

सं० आवरण (भा=से, ङ=ढकना)

पु० ढाल, ढकना, ढकनेकी कोई

भीत, पर्दा, आच्छादन ।

प्रा० आवभक्ति (हि० आना, सं०

भक्ति=सेवा)

आवभगत } स्त्री० आदर

आवभगति } मान, सत्कार ।

सं० आवर्जन (भा, ङ=फेंकना)

फनाकरना, रोकना ।

सं० आवर्त्त (भा=पारों ओर, ङ=

होना, घूमना) गु० भर्त्त, चक्कर,

फेर, घुमाव ।

सं० आवलि (भा=पारों ओर से

बन=पैना, ढकना) स्त्री० पाँव,

पंक्ति, धेनी, बरती ।

सं० आवश्यक (अवरय) गु०

निश्चय, जरूरी, जरूरत ।

सं० आवश्यकता-भा० स्त्री० जरूरत

प्रा० आवर्दा (सं० आ० पु० आ०

आव } पु०=आना) स्त्री०

द्वार, बरखा ।

प्रा० आवागमन (हि० आना

आवागमन } सं० गमन=

जाना) पु०

आना जाना, आमदरास्त ।

सं० आवाहन (भा, वृट्=लेजाना,

पासलाना) भा० पु० बुलाना, पुना

अथवा होमके समय देवताओं

में से बुलाना ।

सं० आविर्भाव-भा० पु० मरट

होना, जाहिर होना ।

सं० आविर्भूत (भा=मरट, पु=

होना) गु० मरट, जाहिर, प्रत्यक्ष ।

सं० आविष्कार (भा० पु० मरट

आविष्कृत } होना, मर्म निः

बला हुआ ।

सं० आविष्ट (भा, विष्ट=वशैकर-

ना) क० पु० बैठा, पुसा ।

सं० आवृत (भा, वृट्=होना, ढा

कना) मर्म० पु० आच्छादित, वे

ष्टित, ढाकाहुआ, ढेराहुआ ।

सं० आवृत्ति (भा, वृट्=लीटना

घोटना) भा० पु० अग्राह, १।२

करना, उपरना ।

सं० आवेदन (भा, विट्=डालना

मथना) भा० पु० निवेदन, प्रस्तावना ।

सं० आवेद्यमंगल-पु० भाविगुण

अर्थ, वह एक निमित्त से ज्योतिष

अंग अथवा अंगों से मिलकर

जातिन करते हैं ।

हुआ, दुः=रोना) पु० हिंदुस्थान की वह पवित्र धरती जो पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रतक फैली हुई है और उत्तर और दक्खिन की ओर हिमालय और बिन्ध्यचल से घिरी हुई है मनु ने इसी को आर्यावर्त लिखा है जैसे "आ स मुद्रात्पूर्वपूर्वा, दासमुद्रात्पश्चिमात् । हिमवदिन्ध्ययोर्मध्ये आर्यावर्त मघ क्षते ॥ १ ॥ "आर्यावर्त पुण्यभूमि, मध्य बिन्ध्यहिमालयोः ।

सं० आलम्ब्य (आ=से, लावि=ठह आलम्बन) रना) पु० आसरा सहारा, अवलंब ।

सं० आलय आ=चारों ओरसे, ली=लेना, मिलना) पु० घर, स्थान, जगह ।

सं० आलवाल (आ=चारों ओरसे, ला=लेना) पु० थाला, घेरा, वेड़की जड़के आस पास का घेरा ।

सं० आलस्य (अलस, आ=नहीं प्रा० आलस) लम्=शोभना, सेल-ना) पु० मुस्ती, आस्क्त, दील ।

प्रा० आलसी-गु० मुस्त, कारिल ।

प्रा० आला (सं० आलय) पु० दीप रखने के लिये घीत में या खंभे में झोटा सा खोह, दीपा का ठाक, गाऊ, तासा ।

सं० आलान (आ=से, ला. वा ली=

लेना) पु० हाथी के बांधने का सूत्र अथवा रस्सा, वेड़ी, जंजीर आदि ।

अ० आलान=रक्षितार, विज्ञापन ।

सं० आलाप (आ, लप्=बोलना) मा० पु० बातचीत, बोलचाल, काना बोलना, २ स्वरका मिलान ।

सं० आलापनीय (आलाप्+अनीय) र्म्य० पु० भाषणयोग्य, कहने लायक ।

सं० आलिंगन आ=चारों ओरसे, लिगि=झातीसे छगाना, मिलना) पु० प्यारसे मिलना, गले लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का आपसमें मिश्रना ।

प्रा० आली (सं० आलि, अल्=शोभना) स्त्री० सत्री, सहेली, सारिणी ।

सं० आलीद (आ, लिट्=स्वाद लेना) र्म्य० पु० चारा, भुक्त, स्वाद लिया ।

सं० आलेख्य (आ, लिट्=लिखना) र्म्य० पु० लिखा ।

सं० आलोक (आ, लोक्=देखना) पु० दर्शन, दृष्टि, देखना, २ चपल ज्योति, बढ़ाई, पश, बचाना, विरद, भरोसा, रोशनदान ।

सं० आलोकन-मा० पु० दर्श देखना ।

सं० आलोचना (आ, लोच=देखना) मा० पु० विचारना, शुद्धना, चर्चाकरना, नजरसानी करना

सं० आलोच्य, पातु, अन्व, विचारकर।
 सं० आलोड़न (आ, लुड=ययना
 वा पीटना) भा० पु० पयना,
 तलाश करना, अन्वेषण ।

सं० आलोल-गु० चंचल, अति
 चंचल ।

प्रा० आल्हा-पु० एक हिंदू शूरवीर
 और कवि का नाम जिसके नाम से
 एक प्रकार की कविता का नाम
 भी आल्हा है ।

सं० आवरण (आ=से, ढ=ढकना)
 पु० ढाल, ढकना, ढकनेकी कोई
 चीज, पर्दा, आच्छादन ।

प्रा० आवभक्ति (हि० आना, सं०
 आवभगत) भा० पु० आवभगति
 आवभगति (आ, भृ=भरना)
 भा० पु० आवभगति ।

सं० आवर्जन (आ, वृ=ढकना)
 मनाकरना, रोकना ।

सं० आवर्त्त (आ=चारों ओर, वृ=
 होना, घूमना) पु० भँवर, चक्र,
 फेर, घुमाव ।

सं० आवलि (आ=चारों ओर से
 बन्=पेरना, ढकना) स्त्री० पांठ,
 पंक्ति, भेणी, अवली ।

सं० आवश्यक (अवश्य) गु०
 निरचय, जरूरी, कर्त्तव्य ।

सं० आवश्यकता-भा० स्त्री० जरूरत
 प्रा० आवर्दा (सं० आवर्दीय,
 आव) भा० पु० आवर्दा ।

प्रा० आवागमन (हि० आना
 आवागमन) भा० पु० आवागमन
 आना जाना, आमदरफ्त ।

सं० आवाहन (आ, वह=ले जाना,
 पासलाना) भा० पु० बुलाना, पूजा

अथवा हमके समय देवता को
 मंत्रों से बुलाना ।

सं० आविर्भाव-भा० पु० प्रकट
 होना, जाहिर होना ।

सं० आविर्भूत (आविर्=प्रकट, भू=
 होना) गु० प्रकट, जाहिर, प्रत्यक्ष ।

सं० आविष्कार (आ, वि=प्रकट,
 आविष्कृत) भा० पु० प्रकट
 होना, उद्घाटन, निः
 कला हुआ ।

सं० आविष्ट (आ, वि=प्रवेशकर-
 ना) क० पु० बैठा, घुसा ।

सं० आवृत (आ, वृ=होना, ढा-
 कना) स्त्री० पु० आच्छादित, वे-
 दित, ढाकाहुआ, घेराहुआ ।

सं० आवृत्ति (आ, वृ=लौटना
 पीटना) भा० पु० अग्रास, धार-
 करना, वपन ।

सं० आवेदन (आ, वि=ज्ञान वा
 संपर्क) भा० पु० निवेदन, गुजारिश ।

सं० आवेद्यसंग्रह-पु० बाजिबुल
 अर्ज, वह पत्र जिसमें जमींदार
 अपना स्वत्व अर्थात् हक सरकारमें
 दाखिल करते हैं ।

सं० आवेश (आ, विश=युसना) पु०
मवेश, युसना, २. घमंड, ३. क्रोध,
गु० पकड़ा हुआ, अस्त ।

सं० आवेशन-मवेश=, २. शिल्पशाला ।

सं० आशंसा (आ, शम्=सराहना,
पर आ उपसर्ग के साथ आने से इस
का अर्थ चाहना होता है) भा० स्त्री०
इच्छा, चाह, चाहना, अभिलाष ।

सं० आशक्त (आ=से, सञ्=वि-
आसक्त) लना) क० पु०
लगा हुआ, मोहित, छीन, आशक्ति ।

सं० आशङ्का (आ=से, शक्ति=संदेह
करना) स्त्री० डर, भय, २. संदेह ।

सं० आशय (आ, शी=सोना) पु० म-
तलब, अभिप्राय, तात्पर्य, २. स्थान,
जगह, शरण ।

सं० आशा (आ=चारों ओर, अश=
फैलना) स्त्री० आस, भरोसा, आ-
सरा, उम्मेद, २. दिशा, ओर, तरफ ।

सं० आशातीत (आशा + अतीत)
गु० आशासे अधिक, उम्मेद से
जियादा ।

सं० आशिस् (आ, शम्=सिंघाना
पर आ उपसर्ग के साथ आने से
इसका अर्थ चारना होता है) स्त्री०
आशीर्वाद, आसीस, वर, दुआ ।

सं० आशीर्वचन (आशिस्=अ-
आशीर्वाद) सीस, वचन
वा बात कहना) पु० आसीस,
आशीस, दुआ ।

सं० आशु (अश=कैलना) क्ति० वि०
शीघ्र, जल्द, तुरन्त, झटपट ।

सं० आशुतोष (आशु=तुरन्त, तोष=
मसन्न होनेवाला, तुप्=मसन्न
होना) पु० महादेव, शिव ।

सं० आश्चर्य (आ, चर=चलना)
पु० अचंभा, अचरन, विस्मय, गु०
अनोखा, अद्भुत ।

सं० आश्रम (आ, श्रम्=तपकरना)
वि० पु० अपियों के रहने की
जगह, मठ, २. धर्म के अनुसार अ-
वस्था के चार भेद, १. ब्रह्मचर्य,
२. गृहस्थ, ३. वानप्रस्थ, ४. संन्यास,
कलियुग में केवल गृहस्थ और
संन्यास ये दोही आश्रम हैं, जैसे
“गृहस्थी भिक्षुकरचैव, आश्रमा द्वौ
कलौयुगे ।

सं० आश्रय (आ=चारों ओर से, भि-
=सेवा करना) भा० पु० आसरा,
शरण, अबलम्ब, २. घर, जगह, ३
पास, समीपता ।

सं० आश्रयभूत (आश्रय + भूत)
गु० आसरागीर ।

सं० आश्रयस्थान (आश्रय + स्था-
न, स्था=ठहरना) वि० पु० सहारा
की जगह, उम्मेदगाह ।

सं० आश्रित (आ, भि=सेवाकरना)
र्म्यं पु० शरणागत, आश्रित, तावे-
दार ।

सं० आश्रितस्वत्वाधिकारी—कं०

पु० एकदार, यातरत ।

सं० आश्लेष (आ, श्लिप्=मिल-
ना) पु० आलिंगन, जुड़ना, मिलना ।

सं० आश्वासन (आ, श्वासनं,
आश्वास) श्वस्=समभा-

ना) भा० पु० प्रबोधकरना, मनोसा-
देना, शिष्टाकरना ।

सं० आश्वास्य—भा० अव्य० सम्प-
भाकर ।

सं० आश्विन (अश्विनी एक नक्षत्र

का नाम, इस महीने में पूरा चाँद
इस नक्षत्रके पास रहता है और पुनो
के दिन अश्विनी नक्षत्र होता है)

पु० कुम्भार, आसोज, बरसका
छटा महीना ।

प्रा० आपर (सं० अपर) पु० हफ्ते, विह ।

सं० आपाद (आपादा एक नक्षत्र

का नाम इस महीने में पूरा चाँद इस
नक्षत्रके पास रहता है और पुनो
के दिन आपादा नक्षत्र होता है)

पु० बरस का तीसरा महीना
असाद ।

प्रा० आस (सं० आशा) स्त्री०

आसा } आसा, मनोसा, आ-
मन, २ दिशा ।

सं० आसन (आस=बैठना) धि०

पु० दाम या ऊनकी बनी हुई
बीज, जिसपर हिंदू लोग सन्ध्या

पूजा करने के समय बैठते हैं, २
बैठना, योगियों के बैठने का ढंग
जैसे पद्मासनादि योग का एक
अंग, ३ जाँघ के भीतर की ओर ।

प्रा० आसनतले आना—बोल=बस
होना आधीन होना, ताबे होना ।

प्रा० आसनसे आसन जोड़ना—
बोल० दूसरे आदमी के बहुत पास
बैठना ।

सं० आसन्न (आ, सद्=बैठना)
गु० पास, नगीच, समीप, निकट ।

सं० आसव (आ, सू=पैदा होना,
मदिरा बनाना,) स्त्री० मदिरा, मद्य,
दाक, शराब, मद, माछे ।

प्रा० आसावसन—भा० पु० मंगा,
वृष्णाहीन, बेतमछ ।

प्रा० आसिख (सं० आशिष) स्त्री०
असीस, आशीर्वाद, दुआ ।

प्रा० आसिन (सं० आश्विन)
पु० बरसका छठमहीना, कुम्भार,
आश्विन, आसोज ।

प्रा० आसीन (आस=बैठना) गु०
बैठा हुआ ।

सं० आस्तिक (अस्=होना) क०

पु० जो लोग ईश्वर का और पर-
लोक का होना मानते हैं, ईश्वर-
वादी, परमेश्वर में विश्वास रखने
वाला, विश्वासी ।

सं० आस्पद—धि० पु० पद, स्थान

सं० ईदरा } (ईदम्=पह, दम्=देस-
 ईदरा } ना) गु० ऐसा, इस
 भाँति, इस प्रकार का ।
 सं० ईप्सा (आइ=नाहना) ली०
 पाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।
 सं० ईप्सित (ईप्स + इत्) क्यै० पु०
 पाहाइया, आनेछिन, पाँछिन ।
 सं० ईप्सा } (ईप्स=हाइकरना)
 प्रा० ईप्सा } ली० हाइ, द्रोह, द्वेष,
 हिम की तरह नींदग हरमलना, हमदा ।
 सं० ईप्सा (ईप्स + ई) क० पु० श्रेणी,
 द्वेष, हमिद ।
 सं० ईप्सा (ईप्स=पेशपेशना) पु० ई-
 रार, पेशपेश, शक्ति, महादेव, ३
 राजा, स्वामी, प्रभु, पनी, मालिक ।
 सं० ईप्सा (ईप्स=महादेव) पु० शिव,
 महादेव, २ पूर्व उपाय के बीचका
 शोक, प्रियता दिवसानमहादेव ।
 सं० ईप्सा ली० } (ईप्स=पेशपेश
 ईप्सा ली० } रमना) अद्वय, न
 वरि, पात मिदमे की वक्त मिदि ।
 सं० ईप्सा (ईप्स=पेशपेश रमना)
 पु० परमेश्वर, शक्ति, प्रभु, २
 महादेव, ३ मालिक, पनी ।
 सं० ईप्सा (ईप्स) ली० वप्सा ।
 सं० ईप्सा क्यै० पु० ईप्सा
 चिन, ईप्साचिन ।
 सं० ईप्सा (ईप्स + वक्त) क्यै०
 पु० ईप्साचिन, ईप्सा का कदा
 कदा, वेद, कनमलना ।

प्रा० ईस (सं० ईस) पु० परमेश्वर,
 २ महादेव, ३ राजा, स्वामी ।
 सं० ईप्सा-कि० वि० पोडा, किचिन् ।
 सं० ईहा (ईह=यतन करना) ली०
 यतन, मेष्टा, उपाय, २ इच्छा ।

—:—

उ

सं० उ (उ=शब्दकरना) पु० मा-
 देव, दालना, नियोग, कोषचयन,
 २ वि० ली० संशोधक का सूचक
 है, २ तर्क अर्थ में बोला जाता है ।
 प्रा० उकटना (सं० उन्=ऊपर, कट=
 तोड़ना) कि० स० गद्दी हुई चीज
 को मोड़ना, २ उगाड़ना, ३ भेद
 लेना, ४ क्षिप्रान्तो लोनादेना ।
 प्रा० उकमना (उन्=ऊपर, कम=
 गाना) कि० अ० ऊँचा होना, उ-
 ना चलना ।
 सं० उक्र (वच=बोलना) क्यै० पु०
 कहा हुआ बोला हुआ, कथित ।
 सं० उक्रि (वच=बोलना) भा०
 ली० कहना, बोलना, बोलने की
 शक्ति, भाषण, बोलचाल, वचन,
 कलाप, दर्जील ।
 प्रा० उकनाना (सं० उन्=ऊपर, कट=
 दुगमे लीना, मोच करना) कि०
 अ० उगमना, उदाहरना, पचना ।
 प्रा० उमड़ना } (सं० उन्=ऊपर,
 टप्पाटना } उदाहरना)

क्रि० सं० जड़से तोड़-हालना, र
उभाड़ना, नाशकरना ।

प्रा० उखल, पु० } (सं० उदखल,
उखली, खी० } वा उन्खल,
खु=ऊपर, ख=गम्य, ला=लेना)
ऊखली, ओखली, निखल, खाल
आदि करने हैं ।

प्रा० उगेना (सं० उन्=ऊपर, गश्=
जाना) कि० अ० पैदा होना, बढना,
'निकलना' इत्यादि अर्थ आतात.

प्रा० उगतेही : जलजाना-गोल०
 यह मुहावरा उसमगद बोला जाता है
 कि जब किसी को भार शुरु करी
 वे दूट जाय ।

प्रा० उगलना (सं० उन्=ऊपर, गू=निगलना) क्रि० स० मुँहमें कोई चीज छुके पीछे निकाल देना, बयान करना, उलटी करना, ऊपर करना ।

प्रा० उगाहना (सं० वृत्त, प्रद० लेना)
क्रि० सं० इच्छा करना, यत्न करना
अपना करना, ठहरील करना ।

सं० उग्र (उग्र=दृढ़ होना, या बड़ा होना) गुं=कठोर होना) गुं=कठोर, दराबना भयंकर, मोहित, कड़ा, पुं० महादेव का नाम ।

सं० उग्रता-भा-सी-क-डो-स्ता, मजी
साली ।

सं० उग्रस्वभावः (उग्रः स्वभावः,
कठोर चित्तः, तेजः विभूतिः ।

सं० उग्रसेन (उग्र=दराचनी, सेना
क्रीड) पु० मथुराको राजा, आह

.. रामा का वेश देवता का भाई और
पवनसेना का प्रति, जिसके शुभलिंग
नाम राजस से कंस पैदा हुआ ।।।

प्रा० उधड़ना } कि० अ० खुलजा-
उधरना } ना, मकट्टा होना,
२. नंगा होना, नागि होना

प्रा० उघाडना } कि० स० खोल-
 उघारना } ना० मुक्त करना
 २. नष्ट करना ।

प्रा० उचकना-क्रि० अ० कूदवठना,
कूदना, उछलना । ॥ ११६ ॥

प्र० उचका-पु० उग, उगाईगीरा,
गांठकटा, मेवकतरा, चौर, धंली,
पाखणडी ।

प्रा० उच्यते (सं० वर, चर-तोड
ना) कि० अ० अलग अलग होना
उपहाना, बिखरना, पिछलना
छटास होना, मन नहीं लगना, त
नौद का टूटना ।

प्रा० उच्चारना (सं० उच्चारण)
उच्चारना { उच्च् = ऊपर, चार =
चलना, पर उच्च् उपसर्ग के साथ
माने में अर्थ बोलना होता है।
क्रि० सं० बोलना, करना, शब्द
का उच्चारण करना।

प्रा० उचाटना (सं० उचाटना, उचाटना)
 उचाटना (सं० उचाटना, उचाटना)
 उचाटना (सं० उचाटना, उचाटना)

प्रा० उचाटहोना-बोल० उदास होना, श्री नहीं उठना, उपाटी लगना
सं० उचित (धृ०-इच्छा होना, धृ०)

सं० ईदृशो } (ईदृश्=पह, दृग्=देख-
 ईदृच्छ } ना) गु० ऐमा, इस
 मानिका, इस प्रकार का ।
 सं० ईप्सा (आर्=नाहना) स्त्री०
 पाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।
 सं० ईप्सित (ईप्स् + इत्) स्त्री० पु०
 चाराहुआ, आपेक्षित, बाञ्छित ।
 सं० ईप्स्या } (ईप्से=डाहकरना)
 प्रा० ईप्सा } स्त्री० दाह, शोह, देष,
 हिमीर्वाचनीदेगहरनलना, इसदा ।
 सं० ईर्ष्या (ईर्ष + ई) स्त्री० पु० श्रोत्री,
 द्वेषी, हासिद ।
 सं० ईर्ष्या (ईर्ष=पेरवर्षणना) पु० ई-
 रर, रापेरवर्ष, शिक्, महादेव, ३
 राजा, स्वायी, मयू, यनी, मालिक ।
 सं० ईर्ष्यान् (ईर्ष=महादेव) पु० शिक्,
 महादेव, २ पुं ई उपा के बीषका
 कोन, त्रिमहा दिक्पालमहादेव ।
 सं० ईर्ष्यान्, स्त्री० } (ईर्ष=पेरवर्ष
 ईर्ष्यापु० } रणना) वदणन,
 बर्षा, आर्ष मिदमे की एक मिदि ।
 सं० ईर्ष्या (ईर्ष=पेरवर्ष रणना)
 पु० परपेरवर्ष, श्रुतिहनी, मयू, २
 महादेव, ३ मालिक, यनी ।
 सं० ईर्ष्यरता (ईर्ष) स्त्री० वपुषा ।
 सं० ईर्ष्यरत स्त्री० पु० ईर्ष्यर
 चित, ईर्ष्याविधि ।
 सं० ईर्ष्यगोत्र (ईर्ष्य + वक्) स्त्री०
 पु० ईर्ष्यकविन, ईर्ष्य का कहा
 हुमा, वेद, कनमःनाही ।

प्रा० ईस (सं० ईश) पु० परमेस्वर,
 २ महादेव, ३ राजा, स्वायी ।
 सं० ईपत्-क्रि० वि० गोड़ा, किचिन् ।
 सं० ईहा (ईह=पतन करना) स्त्री०
 पतन, गेष्ट, उपाय, २ इच्छा ।

—:—

उ

सं० उ (उ=शब्दकरना) पु० महा-
 देव, दानना, नियोग, कोपचन,
 २ वि० बी० संवोधक का सूचक
 है, २ तर्क अर्थ में बोला जाता है ।
 प्रा० उकटना (सं० उन्=ऊपर, कट=
 तोड़ना) क्रि० स० गड़ी हुई भीत
 को मोटना, २ उगाटना, ३ भेद
 लेना, ४ खिरीवानको मोलदेना ।
 प्रा० उकमना (उन्=ऊपर, कम=
 जाना) क्रि० अ० ऊँचाहोना, उठ-
 ना चलना ।
 सं० उक्त्र (वक्=बोलना) स्त्री० पु०
 कहा हुआ बोलाहुआ, कथित ।
 सं० उक्ति (वक्=बोलना) स्त्री०
 स्त्री० कहना, बोलना, बोलने की
 शक्ति, भाषण, बोलचाल, वचन,
 कलाप, दलील ।
 प्रा० उकनाना (सं० उन्=ऊपर, कट=
 दुगमे जीना, मोच करना) क्रि०
 अ० पतन, उदासहोना, वदना ।
 प्रा० उमड़ाना } (सं० उन्=ऊपर,
 उमड़ाटना } सट=मोड़ना)

क्रि० सं० अदसे तोड़-हालना, २
उजाड़ना, नाशकरना ।

प्रा० उखल, पु० } (सं० उदखल,
उखली, खी० } वा उलखल,
उख=ऊपर, ख=गुण्य, ला=लेना,
उखली, ओखली, जिसमें चाँवल
आदि कुटने हैं ।

प्रा० उगना (सं० उव्=ऊपर, गम्=
जाना) क्रि० प्र० पैदा होना, बढ़ना,
निकलना ।

प्रा० उगतेही जलजाना-बोल०
यह मुदाबरा उसमगद बोला जाता है
कि जब किसी की आंखें खुलझड़ी
में दूट जाय ।

प्रा० उगलना (सं० उव्=ऊपर, गम्=
निगलना) क्रि० सं० मुँहमें कोई चीज
केके पीछे निकाल देना, बमन कर-
ना, उलटी करना, कप करना ।

प्रा० उगाहना (सं० उव्=ऊपर, गम्=लेना)
क्रि० सं० इकट्ठा करना, घटोरना,
जमा करना, तरसीक करना ।

सं० उग्र (उव्=इकट्ठा होना, वा बन्ना
=कठोर होना) पु० कठोर, दराबना,
भयंकर, क्रोधित, कड़ा, पु० महादेव
का नाम ।

सं० उग्रता-भा० स्त्री० कठोरता, तेजी,
सखी ।

सं० उग्रस्वभाव (उग्र+स्वभाव)
कठोर विच, सेज यत्ताम ।

सं० उग्रसेन (उग्र=दराबनी, सेना=
फौज) पु० मथुरावां राजा, आहुक

.. राजा का बेटा देवका का भाई और
पवनसेना का पति, जिसके द्रुपदिक
नाम राजस से कंस पैदा हुआ ।

प्रा० उघड़ना-क्रि० प्र० खुलजा-
उघरना } ना, प्रकट होना,
२ नंगा होना ।

प्रा० उघाड़ना-क्रि० सं० खोल-
उधारना } ना, प्रकट करना,
२ नंगा करना ।

प्रा० उचकना-क्रि० प्र० कुँउठना,
कुटना, उद्धलना ।

प्रा० उचका-पु० उग, उठाईगीरा,
गाँउकट्टा, जेबकतरा, चौर, छेली,
पाँखण्डी ।

प्रा० उचटना (सं० उव्, उव्=तोड़-
ना) क्रि० प्र० अलग अलग होना
उसरना, बिखरना, पिछलना,
उदास होना, मन नहीं लगना, २
नींद का टूटना ।

प्रा० उचरना (सं० उचरण,
उचरना) उव्=ऊपर, उचर=
चलना, पर उव् उचरण के साथ
आने से अर्थ बोलना होता है)
क्रि० सं० बोलना, कहना, शब्दों
का उच्चारण करना ।

प्रा० उचाटना (सं० उचाटन, उचटन
ऊपर, उव्=तोड़ना) क्रि० सं०
जुदा २ करना, अलग २ करना ।

प्रा० उचाटहोना-बोल० उदास हो-
ना, जो नहीं लगना, उचाटी लगना ।

सं० उचित (उव्=इकट्ठा होना, वा

सं० ईदृशं } (ईदृशं=यह, दृशं=देख-
 ईदृज } ना) गु० घेमां, इस

मानिका, इस प्रकार का ।
 सं० ईप्सा (आप्=नाइना) स्त्री०
 जाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।

सं० ईप्सिन (ईप्स + इत) स्त्री० पु०
 बाहाइया, आगेछिन, बाज्जिन ।

सं० ईप्या } (ईप्ये=हाइकरना)
 प्रा० ईपां } स्त्री० हाइ, श्रोह, द्वेष,

हिमी की रानी देन करनलना, हमदा ।
 सं० ईपी (ईप + ई) क० पु० श्रोही,
 ईपी, इपिह ।

सं० ईग (ईग=नेरुपंरलना) पु० ई-
 रर, रावेर, रगिप, महादेव, र
 रात्र, रवापी, प्रमु, पनी, पानिक ।

सं० ईगान (ईग=महादेव) पु० गिप,
 रादेव, र पुन उल के बीषका
 होव, तिमका दिवानपरादेव ।

सं० ईगिना, स्त्री० } (ईग=नेरुपंर
 ईगिन्यपु० } रलना) रदणन,
 रराई, आइ सिद्धि की एक सिद्धि ।

सं० ईग्व (ईग=नेरुपंर रलना)
 पु० रावेर, श्रोह, प्रमु, र
 रादेव, र पानिक, पनी ।

सं० ईग्वना (ईग) स्त्री० वपुता ।

सं० ईग्वरुतु सं० पु० ईग्वर
 रिन, ईग्वरिदिन ।

सं० ईग्वनेक (ईग्व + नेक) स्त्री०
 पु० ईग्वरुतु, ईग्वर का कडा
 हुमा, रद, कनमःनः ।

प्रा० ईस (सं० ईश) पु० परवेर,
 र महादेव, र राता, रंमी ।

सं० ईपत्-क्रि० वि० गोडा, किपि ।

सं० ईहां (ईह=गतेन करना) स्त्री०
 यनन, नेष्ट, उपाय, र इन्हा ।

—:—

उ

सं० उ (उ=शब्दकरना) पु० मा-
 देव, दानना, निषोग, कोरवन
 र वि० बी० संवोध का मू-
 र, र तर्क अर्थ में पोना जाता है ।

प्रा० उकटना (सं० उन्=उपर, का
 तोड़ना) क्रि० सं० गद्दी हुई
 की मोटना, र उप्पाड़ना, र
 लेना, र द्वितीयातको मोलदेन

प्रा० उकमना (उन्=उपर,
 जाना) क्रि० सं० उवाहोना
 ना चलना ।

सं० उक्क (वन=बोलना) स्त्री०
 कडा हुआ बोलना हुआ, कपि

सं० उक्कि (वन=बोलना
 स्त्री० कडना, बोलना, बो-
 गति, मापण, बोलचाल
 कलाप, दलीन ।

प्रा० उकनाना सं० वन=
 हुममे मोना, मोप र
 अ=वपणन, उदासरो

प्रा० उग्वडाना } सं०
 उग्वडना }

क्रि० सं०-जड़से तोड़ डालना, उखाड़ना, नाश करना

सजादना, नाशकरना ।

प्रा० उखल, पु० } (सं० वदत्तव,
 उखली, स्त्री० } वा उलूखल,
 वद=जगत्, ख=गन्तव्य

उत्पन्न=उत्पन्न, स्व=स्वयं, ला=लेना)
उत्पत्नी, भोत्पत्नी, भित्तपत्नी, भावत्पत्नी
आदि कृते हैं।

प्र० उगना (सं० उव्=ऊपर, गम्=
जाना) कि० घ० उँदा होना, उँदना,
निकलना ।

प्रा० लगेतेही जलजाना-मोल०
यह मुदावरा वसुधैव कुटुम्बकम्

यह मुझा बरा वसन गढ़ बोला जाना है
कि जब किसी की आर शुरुवादी
ने दूत आय।

प्रा० उगलना (सं० उव्=ऊपर, गृ=
 निगलना) क्रि० सं० मुँह में कोई चीज
 छेके पीछे निकाल देना, बपन कर-
 ना, वनटी करना, ऊँच करना ।
 उगाहना (सं० उव्=ऊपर, गृ=

० उगाहना (सं. देव, प्रद-लेना)
कि० सं० इकट्ठा करना, बटोरना,
प्रपा करना, तरसीक करना।
उग्र (बुरा-)

उग्र (वच्=वृद्ध होना, वा वृत्त
कठोर होना) गुं कठोर, दरावना,
कर, क्रोधित, कडा, पुं महादेव
नाम ।

प्रता-भा-र्या-क-ठोरता, तेजी;

स्वभाव (इय + स्वभाव,)
विद्य, तेज मिताज ।

सेन (वग्र=हरावनी, सेना=

...राना का बेटा देवक का भाई और
पवनरत्न का प्रति, जिसके दृष्टिक
नाथ राजस से कंस के

प्रा० उषडना } कि० भ० खुलजा-
 उषरना } ना, नमकडु होना,
 २. नंगा-होना :

प्रा० उधाड़ना } कि० स० खोल-
 उधारना } ना, मुक्त करना,
 २ नष्ट करना।
 प्रा० उधारना }

प्रा० उचकना-क्रि० अ० रुद उठना,
रुदना, उदलना ।
प्रा० उचका-प० उच

गाँवका-पु० उग, उठाईगीरा,
गाँवका, जेवरनरा, चौर, धली,
पातपदी ।

मा० उचटना. (सं० उव, च० तोड-
ना) क्रि० प्र० अलग अलग होना
उतटना, बिखरना

प्र० उचरना ?

उच्चारण (सं. उच्चारण)
चलना, पर वृत्त चरित्र के साथ
माने से अर्थ बोलना होता है।
क्रि० सं० बोलना, कहना, शब्दों
का उच्चारण करना।
० उच्चारण

मा० उचाटना (सं० उचाटना, वृत्त
उचाटना, वृत्त-उचाटना) मि० उचाटना

शुद्ध करना; अलग २ करना।
 प्रा० उच्चाट होना-बोल० उद्घाट हो-
 ना, नीनहीं लगना, उच्चाटी लगना।
 सं० उचित (कच्चा-रकड़ा होना, वा

सं० उचित (चर=रुद्धा होना, वा

प्रा० उतरनहोना (सं० उचरीण, उडू=ऊपर, नू=पार होना) क्रि० अ० उचरण होना, छेद से छूटना कर्त से रिहा होना ।

प्रा० उतरना (सं० उतरण, उडू=ऊपर, नू=पार होना) क्रि० अ० भीषे आना, उतरना, टिकना, डेरा करना, बांसलेना, विश्राम करना, २ किनारे पहुँचना, पार होना, नांपना, ४ घटना, कम होना मंद होना, ५ उदास होना, फीका पड़ना, (जैसे "उसका रंग उतर गया" ६ उचरण होना, कर्त से छूटना, ७ नशा कम होना, ८ किसी पद अर्थात् धोरे से मौजूद होना ।

सं० उत्कट-पु० मग, अधिक, तीव्र, क्रोधी, गर्वी, भयानक, पु० क्रोध, गर्व, क्रोध, उग्र, दुःमह ।

सं० उत्कण्ठा (उडू=ऊपर, कड=मोचना, वा बाहने बाद करना) भा० स्त्री० छालव, चाह, चाहना, इच्छा, अभिलाषा ।

सं० उत्कण्ठित-क० पु० उन्मुक्त, अभिलाषी, इच्छादिगम्य ।

सं० उत्कर्ष (उडू=ऊपर, कृ=सँवना) भा० पु० बढ़ाई, सराह, मर्म-मा, उत्पन्न, भेदना ।

सं० उत्कर्षना=भा० स्त्री० उचरना, उचरना, उत्पन्न ।

सं० उत्कृष्ट (उडू=ऊपर, कृ=सँवना) पु० उत्तम, सबसे अच्छा वा बढ़ा, श्रेष्ठ, प्रधान ।

सं० उत्स्तात (उडू=ऊपर, स्त=सोदना) र्म० पु० उन्मूलित, उत्सर्जित ।

सं० उत्तम (उडू=ऊपर, तम=बहुत ही बहुत) पु० श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, मुख्य, पहला, प्रधान, मुखिया ।

सं० उत्तमर्ण-पु० कृपादाता, श्रेष्ठ, कर्त देनेवाला ।

सं० उत्तमांग (उत्तम=सबसे अच्छा वा मुख्य, अंग=शरीरका एक भाग) पु० शिर, माथा, मस्तक ।

सं० उत्तर (उडू=ऊपर, नू=पार होना) पु० मनाव, उत्तर दिशा, प्रतिवाक्य, दिक्, निम्न, पु० पिछला, पीछे ।

सं० उत्तराधिकारी (उत्तर=पीछे, अधिकारी=वारिस अथवा पालिक) पु० वारिस, मानशील ।

सं० उत्तानपात्र-पु० तवा, तावा ।

सं० उत्तरायण (उत्तर=उपर दिशा, अयन=चाल) पु० आषाढरात्रि तब कि सूर्य क्षिप्रवत् रेखा के उत्तर की ओर रहता है, माघ से असाढ़ तक के अयन ।

सं० उत्तगष्ट (उत्तर=पिछला, अष्ट=माथा) पु० पिछला माथा ।

सं० उत्तीर्ण (उद्=ऊपर, तृ=नार

माना) क० पु० उत्तीर्ण, पार-

गन, पारपहुँचा, कामयाब ।

प्रो० उत्तु-पु० पारत, तट, घुनन घड़ी ।

प्रा० उत्तुकरना-बोल० तह जिया-

ना, चुनना ।

सं० उत्तेजक-क० पु० प्रेरकनिवाला,

प्रेरणा करनेवाला ।

सं० उत्तेजना (उद्=ऊपर, तित्=नी

रुपकरना) प्रो० स्त्री० प्रेरणा करना,

प्रेरणा करना, तीव्रकरना प्रे-

राना, भड़काना, तेजकरना ।

सं० उत्तेजित-पु० प्रेरित, प्रेरकाया

गया, भड़कायागया ।

सं० उत्तोलन (उद्=ऊपर, पुल=

नोलना) पु० तोलना, ऊपर को

ढठाना ।

सं० उत्थान (उद्=ऊपर, स्था=

ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाव,

वर्षाग ।

सं० उत्थान एकादशी (सं० उत्थान

=उठना, एकादशी ग्यारहवीं तिथि)

स्त्री० काविक मुद्रा ११ जिस दिन

विष्णु नींद से उठते हैं ।

सं० उत्थापन (उद्=ऊपर, स्था=उ-

ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाकर

रखना ।

सं० उत्पत्तन (उद्=ऊपर, पत्=गिर-

ना) भा० पु० ऊपर से गिरना ।

सं० उत्पत्ति (उद्=ऊपर, पद्=जाना)

स्त्री० जन्मना, पैदा होना पैदाचारी,

उगना ।

सं० उत्पन्न (उद्=ऊपर, पद्=जाना)

पु० पैदा हुआ, जन्मा हुआ ।

प्रा० उत्पन्न (उद्=ऊपर, पद्=जाना)

सं० उत्पल (उद्=ऊपर, पल=माना)

पु० कमल, ऊँचल, नीलाकमल ।

सं० उत्पाटन (उद्=ऊपर, पट=तिपेटना)

उखाड़ना) भा० पु० उखाड़ना ।

सं० उत्पात (उद्=ऊपर, पत्=गिर-

ना) पु० उपद्रव, बलैदा, बिगाड़,

हानि, अन्धेरा ।

सं० उत्पादक-क० पु० जनक, उत्पन्नक

सं० उत्पादन-भा० पु० जनना, पैदा

करना ।

सं० उत्प्रेक्षा (उद्=ऊपर, प्र=वहन,

प्रै=देखना भावना करना) भा०

स्त्री० बराबरी, उपा, मुख्यता, एक

असंवार का नाम, दील, देर ।

सं० उत्प्लुत (उद् + प्लु=कटमाना) क०

पु० तरऊपर होना, नीटपीटमाना ।

सं० उत्सव (उद्=ऊपर, सू=पैदा

होना) पु० आनन्द का काम, जैसे

धार, नाच, राग, रंग, आदि, पर्व,

त्योहार, बड़ादिन ।

सं० उत्सर्ग (उद् + र्ग=बाँटना)

का पैदा करना) भा० पु० न्याय,

वर्णन, दान, रोचना, अर्पण करना ।

मं० उत्साह (उद्=ऊपर, सह=सं-
 रना) पु० आनन्द, उद्याह, सुशी,
 २. यत्न, उद्योग ।

मं० उत्सुक (वदन्-भू-पैदाशोना)
पु० पारनेवाला ।

प्रा० उथलना—कि० स० उकटना,
धोषाना, तलेऊपर करना ।

प्रा० उयलपुथल-श्री० बलटपुसट,
बनडा पुसटा, ऊपर नीचे, तले
ऊपर, गडगड गडगड, इधर का उधर
उधर का इधर ।

मं० उद० } (उ=शब्द करना) उप०
लन० } ऊपर, ऊँचा, ऊपर की
और, ऊँचाईवा हुआ, मकड़, बड़ाई
बन आदि अर्थों में भी आता है
और जगह बड़ और पद अर्थान्
तमें की अधिकारी में भी योना
आता है और अर्थः का उच्छ्रय है ।

मं० उद { (उम्बू=मिमीना) पु०
उदक } १११, मन्त ।

मं० उदग्र (उग्र=उग्र, अग्र=सिरा
वा मोह) यु० ऊँवा, नीन्वा, दरा-
वना ।

मै० उद्दिष्टि (उद्=गानी, धा=रमना)
 पु० समुद्र, सागर, जलानिधि।

मं० उदय (उदू=उत्पत्ति, इ=माना)
 पु० एव पदार्थ का नाम अर्थात् तो
 हिंदू मानते हैं कि मूर्ति निकलना
 है, रक्षण, निरूपण, ई-जीव.

उभयनि, भागपानी ।

सं० उदयास्तावधि (
 स्त + भवधि) स्त्री० नि
 डवने की सीमा । -

प्रा० उदयहोना-क्रि०
निकलना, २. वृद्धि होना,
होना, माग जागना, कुन

सं० उदर (उद=ऊपर, उद, द=काटना) पु० वे

सं० उदरम्भरि-पु० फे०

सं० उदर्वि-पः अग्नि,
चिनगारी ।

मं० उदात्त (उद=ऊपर, प्राप्ति)
देना) पु० उंवा हार, श्रृंगार
से बोलना, उ० दान,)
का अनेकार्थ ।

मं० उदार (उद्=ऊपर, दा=देना) गु० दावार, दाव, दावेवाला, बड़ा, मीठा, मार, दाव

सं० उदायना (उदाय)
दानागी, ममावन

मं० उद्दाम उद्दाम
वैजना १ पु० वैजना १
वैजना, गु० पलिन, पलिन.
करनाहुआ, दुःखिन १
२ वै पलनाह

सं० उदामी (उदम)

की बराबर देखने वाला, २
छिन, स्त्री० शोच, धूलिनता,
बता, फिक, दुःख, संताप ।

उदासीन (उद्=ऊपर, आत्=
देना) पु० संन्यासी, बैरागी,
योगी, अतिथि, वनवासी, तपसी,

जिसने संसार छोड़ दिया और
जिसके मित्र और पैरी बराबर हों,
त्यागी वानप्रस्थ ।

० उदाहरण (उद्=ऊपर, आ=
से, ह=लेना) पु० दृष्टान्त, मिसाल ।

३० उदित (उद्=ऊपर, इ=जाना)
र्म० पु० बहाहुआ, निरुलाहुआ,
महाशिव, मरुट, बहा हुआ ।

सं० उदीची=उत्तरदिशा ।

सं० उदीरण (उद्=ऊपर, र=प्रेरण क०)
भा० पु० कपन, करना ।

सं० उदीरित-र्म० पु० कथित,
कहा गया ।

३० उद्गार (उद्=ऊपर, गु=निगल-
ना) पु० बमन, टकर, मुस, दुःख,
विस्मय ।

उधारना (सं० उद्घाटन, उद्=
पर, घट=खोलना) क्रि० सं०
खोलना, उधारना ।

उद्दाल (उद्=ऊपर, दन्=दो
रुद्धे करना) पु० एक अपिका नाम
तो छः महीनेमें एकवार खानापा ।

उद्दिष्ट-र्म० पु० लज्जित, दि-
खाया गया ।

सं० उद्देश (उद्=ऊपर, दिश=
देना) पु० चाह, २ अनुसंधान,
सोज, पता, प्रयोजन, मतलब,
जिसके विषयमें कुछ कहा जाय ।

सं० उद्धरण (उद्=ऊपर, ह=लेना)
भा० पु० उद्धार करना मुक्ति देना ।

सं० उद्धार (उद्=ऊपर, ह=लेना)
पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, नि-
स्कारा ।

सं० उद्धृत-र्म० पु० ऊंचा किया गया,
उठाया गया ।

सं० उद्भव (उद्=मरुट, भू=होना
पु० पैदा होना, जन्म, उत्पत्ति ।

सं० उद्यत (उद्=ऊपर, यम्=रोक-
ना) पु० तैयार, लगाहुआ, प्रवृत्त,
पु० आप्याय ।

सं० उद्यम (उद्=ऊपर, यम्=रोक-
ना, पर उद् उपसर्ग के साथ आने
से यत्न करना होता है) भा० पु०
यत्न, उपाय, परिश्रम, मिहनत,
कोशिश, उद्योग, वेश ।

सं० उद्यान (उद्=ऊपर, पा=जाना)
भा० पु० बाग, बगीचा, उपवन, २
मशलब, प्रयोजन ।

सं० उद्यानपाल (उद्यान=फूलबा-
ड़ी, पाल=पालना) क० पु० माली,
बागवान ।

सं० उद्योग (उद्=ऊपर, युज=मि-
लना) पु० उपाय, उद्यम, यत्न,
परिश्रम, वेश ।

मं० उत्साह (उद्=ऊपर, सह=स-
हना) पु० आनन्द, उत्साह, लुगी,
० मनन, उपयोग ।

मं० उत्सुक (उद्+भू=पैदाहोना)
पु० चाहनेवाला ।

प्रा० उपलना-क्रि० स० उलटना,
भीषाना, मनेऊपर करना ।

प्रा० उपलपुथल-बो० उलटपुलट,
उलटा पुलटा, ऊपर नीचे, मने
ऊपर, नीचे गड़गड़, ऊपर का उपर
उपर का इपर ।

मं० उद् (उ=गड़गड़ करना) उ०
उत्त) ऊपर, ऊँचा, ऊपर की
ओर, ऊँचाई का हुआ, गड़गड़, गड़गड़
रत आदि अर्थों में भी आता है
और अगड़ गड़ और गड़ अर्थों
में भी ऊँचाई में भी होता
है और अर्थः ऊँचाई है ।

मं० उद् (उद्=विगोना) पु०
उदक) जल, जल ।

मं० उद्ग (उद्=ऊपर, अग्र=विश
व मोड़) पु० ऊँचा, भीमा, दहा-
वना ।

मं० उद्वि (उद्=ऊपर, वि=विश्व)
पु० उद्वि, उद्वि, उद्वि ।

मं० उद्वि (उद्=ऊपर, वि=विश्व)
पु० उद्वि, उद्वि, उद्वि ।
हिंदू धर्म में हिंदू धर्म के
हिंदू धर्म के हिंदू धर्म के

मकार, उद्ग, उद्वि, उद्वि,
उद्वि, मागमानी ।

मं० उदयास्तावधि (उदय+अ-
स्त+अवधि) स्त्री० निकलने और
हवने की सीमा ।

प्रा० उदयहोना-क्रि० अ० सूर्यका
निकलना, २. उद्वि होना, उद्वि
होना, माग मागना, फूलना फूलना ।

मं० उदर (उद्=ऊपर, उ=नाना, वा
उद्, उ=फाड़ना) पु० पेट ।

मं० उदरम्भरि-पु० पेटाधी, पेट ।

मं० उद्वि-प० अग्नि, अग्नि की
विनगारी ।

मं० उदान (उद्=ऊपर, आ=मे, दा=
देना) पु० उँचा स्वर, उँचे स्वर
से बालना, ० दान, १ एक प्रकार
का अर्थः दान ।

मं० उदार (उद्=ऊपर, आ=मे, दा=
देना) पु० दावार, दाता, दानी,
देनेवाला, बड़ा, सीमा, मर्यादा ।

मं० उदाग्ना (उदार) वा० श्री०
दागरी, मन्दागरी ।

मं० उदाम (उद्=ऊपर, आ=मे,
दा=देना) पु० उदाम, उदाम में
केलक, पु० अग्नि, अग्नि, अग्नि,
अग्नि, अग्नि, अग्नि, अग्नि,
० उदाम ।

मं० उदाम (उद्=ऊपर, आ=मे,
दा=देना) पु० उदाम, उदाम में
केलक के कलक के कलक, अग्नि और

पैरी की बराबर देखने वाला, २
मस्तिन, स्त्री० शोष, मलिनता,
धिना, क्रिक, दुःख, संताप ।

सं० उदासीन (उद्=ऊपर, आन्=
बैठना) पु० संन्यासी, बैरागी,
योगी, अनिधि, वनवासी, वामी,
जिसने संसार छोड़ दिया और
जिसके मित्र और पैरी बराबरहों,
स्वामी वानप्रस्थ ।

सं० उदाहरण (उद्=ऊपर, आ=
से, ह=लेना) पु० दृष्टान्त, पिसाल ।

सं० उदित (उद्=ऊपर, ह=जाना)
र्म्यं पु० बराहृमा, निवृत्ताहृमा,
महाशिव, मकट, बड़ा हृमा ।

सं० उदीची=उत्तरदिशा ।

सं० उदीरण (उद्=ऊपर, र=प्रेरणा क०)
भा० पु० कपन, करना ।

सं० उदीरित-र्म्यं पु० कथित,
कहा गया ।

सं० उद्गार (उद्=ऊपर, गू=निगल-
ना) पु० वमन, डकार, मुस, दास,
विस्मय ।

भा० उधारना (सं० उद्धारन, उद्=
ऊपर, धर=सोलना) कि० सं०
खोलना, उधारना ।

सं० उद्दाल (उद्=ऊपर, दन्=दो
दुई करना) पु० एक अयिका नाम
जो द्वाः मीनिषे एकवार खाताथा ।

सं० उद्दिष्ट-र्म्यं पु० लक्षित, दि-
गाया गया ।

सं० उद्देश (उद्=ऊपर, दिग्=
देना) पु० चाह, २ अनुसंपान,
गोत्र, पत्ता, प्रयोजन, मतलब,
जिसके विषयमें कुछ कहा जाय ।

सं० उद्धारण (उद्=ऊपर, ह=लेना)
भा० पु० उद्धार करना मुक्ति देना ।

सं० उद्धार (उद्=ऊपर, ह=लेना)
पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, नि-
स्तारा ।

सं० उद्भूत-र्म्यं पु० ऊँचाकिपागया,
उठाया गया ।

सं० उद्भव (उद्=मकट, भू=रोना
पु० पैदा होना, मन्म, उत्पत्ति ।

सं० उद्यत (उद्=ऊपर, यम्=रोक-
ना) पु० तैयार, लगाहृमा, मट्टच,
पु० अप्याय ।

सं० उद्यम (उद्=ऊपर, यम्=रोक-
ना, पर उद् उपसर्ग के साथ आने
से यत्र करना होता है) भा० पु०
यत्र, उपाय, परिश्रम, विहनत,
कोशिश, उद्योग, प्रेरण ।

सं० उद्यान (उद्=ऊपर, या=जाना)
भा० पु० बाग, बगीचा, उपवन, २
मञ्जव, प्रयोजन ।

सं० उद्यानपाल (उद्यान=कुम्हवा-
दी, पाल=पालना) क० पु० माली,
बागवान ।

सं० उद्योग (उद्=ऊपर, युह=मि-
लना) पु० उपाय, उद्यम, यत्र,
परिश्रम, प्रेरण ।

सं० उपगम (उप=समीप, मप्=जा-
ना) पु० यात्रा, यासि, स्वीकार,
पासमाना, उदय ।

सं० उपगुरु=छोटा पादक, छोटा
मास्टर, यानीटर ।

सं० उपचार (उप=पास, चर=चल-
ना) पु० सेवा, यत्र का जयना,
२. बैद्य का काम, इलाज, चिकित्सा,
उपाय, यत्र, ३. घूम, रिशवत ।

प्रा० उपज (सं० उप=पास, जन्=
पैदा होना) स्त्री० बिन सोचने के
भी कुछ बात उसी दम कही जाय
वा, कुछ गाया जाय, मान, जान,
अन्तरा ।

प्रा० उपजना (सं० उप=पास, जन्=
पैदा होना वा उत्पन्न होना) क्रि०
स० उगना, बढ़ना, पैदा होना, अं-
कुर निकलना ।

प्रा० उपजाऊ (उपजना) पु० उर्वर ।

सं० उपजाप (उप=पास, जप्=जय-
ना) भा० पु० मद्य, फरेव, कपट ।

सं० उपजीवी (उप + जीव=जीना)
क० पु० आश्रयी, आसरागीर,
अवलम्बी ।

प्रा० उपड़ना (सं० उत्पाटन, उट्=
ऊपर, पट्=जाना) क्रि० अं०
उलटना ।

सं० उपदेश (उप + देश=काटना)
पु० गर्वीका रोग, सांघका काटना ।

सं० उपदा (उप, दा=देना) स्त्री० धेट ।

सं० उपदेश (उप=पास, दिश=देना
भा० पु० शिक्षा, सीख, सिखावन,
नसीहत, मन्पति, सलाह, २. मंत्रदेना ।

सं० उपदेशक (उपदेश) क० पु०
उपदेशदेनेवाला
उपदेशी शिक्षक, गुरु,
उपदेश आचार्य ।

सं० उपद्रव (उप=पास, द्रु=जाना)
पु० बहैदा, उत्पात, उपाध, विगाह,
अन्वाध, अन्धेर ।

सं० उपद्वीप (उप=छोटा, द्वीप=पट-
ती का टुकड़ा) पु० टापू, छोटा द्वीप ।

सं० उपधान (उप=पास, धा=ऊपर,
धा=रखना) पु० तर्कियागी ।

सं० उपनयन-पु० यज्ञोपवीत (उप-
नीत, जनेऊ) ।

सं० उपनिषद् (उप=पास, णि=अच्छी
गरहसे, सद्=जाना) पु० वेद का
उच्च भाग, वेद का अंग, वेदान्त
शास्त्र ।

सं० उपनेत्र (उप=पास, नेत्र=आँख)
पु० चरमा, आँखों का सहायक काँच ।

सं० उपन्यास (उप=ऊपर, न्यास=
रखना) भा० पु० स्थाग, हाथ, कपन
करना, रखना, स्थापन ।

सं० उपपत्ति (उप=पास, पट्=जाना)
स्त्री० युक्ति, योग्यता, २. सबूत,
शोबन, समाधान, प्रमाण ।

सं० उपपातक (उप=छोटा, पातक=
पाप) पु० छोटा पाप, पाप जैसे



पञ्चमरी आदि से फैली है। इसमें रोगों की पहचान और औषधी आदि का वर्णन है। दूसरी गन्धर्व विद्या को भरत ने निकाली और फैलाई। और तीसरी धनुष विद्या को विश्वामित्र ने राजपूतों की शस्त्रों के काममें लाने के लिये निकाली। और चौथी स्थापत्य विद्या को दृष्ट कर्मा के काममें लाने के लिये विश्वकर्मा ने निकाली।

सं० उपवेष्टन (उप=ऊपर, विश=ल-
वेष्टना) भा० पु० उपवेष्टना, बसना,
जाया।

सं० उपशम (उप+शम्=रोकना,
बा दवाना) भा० पु० शान्ति, समता,
समाधि, शान्तिप्रद।

सं० उपसर्ग (उप=वास, मूल=पैदा
होना) पु० अक्षय जो क्रिया के साथ
लगाये जाते हैं, जैसे प्र, परा, अप,
सम, अनु, अर्ध, आदि, २ उपद्रव,
पौडा, मेत, प्रह, उत्पात, अयंगल,
-उत्पत्ति।

सं० उपस्थान (उप=वास, स्था=ठहर-
ना) भा० पु० उपस्थित, मौजूदगी,
सेवा, नजदीकी, हाजिरी, स्तुति,
पूजा।

सं० उपस्थित (उप=वास, स्था=
ठहरना) गु० तैयार, हाजिर, सा-
मने, पास ठहरा हुआ, पास आया
हुआ।

सं० उपस्थितिपत्र पु० नकशा हाजिरी
सं० उपहार (उप=वास, ह=लेना)
पु० भेंट, पूजा।

सं० उपहास (उप=दोष कहना, हास=
हँसी, हस=हँसना) भा० पु० उद्धा,
हँसी, निन्दा के साथ हँसी करना,
बोली बोली बोलना, परिहास, उद्धा।

सं० उपहासक (उप+हास+
अक) क० पु० हँसनेवाला, मसखरा।

सं० उपहास्य (उप+हास+य)
र्म्य० पु० हँसनेयोग्य, निन्दायोग्य,
निन्दनीय।

सं० उपाख्यान (उपा, आ, ख्या=
मकट करना) पु० पुरानी कहानी
इतिहास, बान, कहानी, कथा।

प्रा० उपाङ्गना (सं० उत्प्राङ्गन उद=
ऊपर, पट=जाना) क्रि० सं० उत्प्राङ्गना।

प्रा० उपाध (सं० उप, आ, पा=
रसना) स्त्री० बतेड़ा, पिगाड़, उप-
द्रव, धन्याय।

सं० उपाधान (उप+आधान) धि०
सक्रिया, बालीन।

सं० उपाधि (उप=वास, आ=से,
पा=रसना) स्त्री० पर्येकी धिन्ता,
२ विशेषण, नाय, पदवी, खल, कपट।

सं० उपाधिकारक (उपाधि+का-
रक, कृ=करना) क० पु० भगवान्,
मुक्तिदा, कमादी।

सं० उपाध्याय (उप=पास, आ=से, अधि+इ=पढ़ना) पु० अध्यापक, पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक, मुद्गरिप, गुरु ।
 सं० उपानह (उप, आ, नह=चाँपना) पु० जूय, गगरम्भी, पनही, पापौश ।
 प्रा० उपाना (सं० उपपन्न) क्रि० सं० पैदा करना, इकट्ठा करना, कमाना ।
 सं० उपाय (उप=गम, अय=जाना) पु० उपाय, उपा, उपाय=जाना) पु० यज्ञ, मदबीर, उपपन्न, उपयोग, विहनन, साधन, इत्यादि ।
 सं० उपायी-इ० साधक, यज्ञी, मदबीरी ।
 सं० उपायन पु० भेद, नञ्, उपहार, पाम जाना ।
 सं० उपाज्जन (उप=गम, अज्ज=इकट्ठा करना) धा० पु० इकट्ठा करना, संग्रह, संवय, कपार ।
 सं० उपार्जित-अर्थ० संचित, जोड़ा हुआ ।
 सं० उपार्जनीय (उपाज्जन+अर्थ० अर्थ=पु० संग्रह योग्य, जोड़ने लायक ।
 सं० उपालम्भ (उप+लभ्=लभ्=प्राप्त करना) धा० पु० विहायन, गिनना, उगहना, बाँटना, काने ।
 सं० उपालम्भन-अर्थ० पु० उगहन, हनना, किकड़ी ।
 सं० उपासक (उप=गम, आ=से,

बैठना) क० पु० उपासना करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, दास, भक्त ।
 सं० उपासना (उप=पास, आ=बैठना) स्त्री० सेवा, पूजा, टंडल, भक्ति, देवता की पूजा, आराधना ।
 प्रा० उपास (सं० उपास) पु० यज्ञ, लंघन, अनाहार, उपास, ग्यारहना ।
 सं० उपासनीय (उप+आस+अनीय) अर्थ० सेवायोग्य, आराध्य, सेव्य शिष्य के लायक ।
 सं० उपास्य उप गम, आस=बैठना । अर्थ० उपासना करने योग्य, पूजन योग्य, आराधना करने योग्य ।
 सं० उपेक्षा (उप=पास+ईश=देवता, उसके लगने से छोड़ना अर्थ होगया) धा० स्त्री त्याग, हीन, गहनन ।
 सं० उपेक्षित (उप+ईक्षि) अर्थ० पु० छोड़ा गया, रहक ।
 सं० उपेत उप+इ+त, इ=जाना) इ० ग्राहित, युक्त ।
 सं० उपेन्द्र (उप=बोटा, इन्द्र=देवताओं का राजा) पु० वाहन, इन्द्र का बोटा यही, किन्तु अब वाहन लक्ष्मण निवा लव इन्द्र के बोटे में है ।
 सं० उपेक्षा (सं०

कण=माना) क्रि० अ० बहुत
आप उगने से रूप अथवा और
किसी चीज का हाँसी अथवा बट-
लोही से बाहर निकल आना ।
सं० उवकना-क्रि० अ० बपन होना,
कै होना, उबड़ी होना, रहरना ।
प्रा० उवटन } (सं० उद्वर्धनः उद्-
उवटना } ह्व=होना) पु०
शरीर का पैल उतारने के लिये
आप सरसों बसन आदि की बनी
हुई चीज ।
प्रा० उवलना (सं० उद्=ऊपर, वल=
माना) क्रि० अ० उवलना, खो-
लना, झोटना, मीलना, मलव-
लाना, समीपना ।
प्रा० उवसना-क्रि० अ० सड़ना,
गजना, पचना, बिगड़ना ।
प्रा० उवारना (सं० उदारण) क्रि०
सं० बचाना, छुड़ाना, रखना ।
सं० उभय } पु० दो, दोनों, आप-
प्रा० उभौ } स व ।
प्रा० उभरना (सं० उद्=ऊपर, उद्-
भ=ना) क्रि० अ० उमड़ना, बड़-
ना, बहुत भरना, निकलना, निह-
लमाना, उठना, उठाना ।
उभारना-क्रि० स० फुलाना,
उभारना, सड़ाकरना, भड़काना ।
उमंग-सी० बहुत खुशी, आ-

नंद, पानना, २ चाट, इच्छा, भा-
जाप, ३ धुन, तरंग, लहर ।
प्रा० उमंडना } क्रि० अ० दलकना
उमडना } बहुत भारने से फूट
निकलना, झनकना, बहना, जल
पल होना ।
प्रा० उमंड उमंड कर रोना—
बोल=फूट फूट के रोना ।
सं० उमा (उ=शिव, मा=मानना, वा
“मो शिवस्य मा=लक्ष्मीः, शिव
की लक्ष्मी, वा उ=दे, मा=मत
“दे वत्स मा कुप”, जैसे कुमार-
संभवहाव में लिखा है “अमेति
मावातपसो निपिदा पश्चादुमास्वपां
सुमुग्धा जगाम”, अर्थात् जब पार्वती
तब करने को जाती थी तब उनकी
माने कहा कि हे बेटी तब मनकर)
स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवराणी,
गिरिजा, भवानी, रुद्राणी ।
सं० उमापति (उमा=पार्वती, पति
=पति) पु० महादेव, शिव ।
सं० उमासुत (उमा=पार्वती, सुत
=पुत्र) पु० कार्तिकेय, देवताओं
का सेनापति ।
सं० उमेश उमा=पार्वती, ईश=पति)
पु० महादेव, शिव ।
प्रा० उर (सं० उरस, अ=प्र-

कण=माना) क्रि० अ० बहुत
आंच लगने से दूध अथवा और
किसी चीज का हाँदी अपना बट-
लोही से बाहर निकल आना ।

सं० उबकना-क्रि० अ० घमन होना,
कै होना, उबड़ी होना, रहकरना ।

प्रा० उबटन } (सं० उदचनः उद-
उबटना } हर=होना) पु०

शरीर का मूल उतारने के लिये
आँखों से रसों बसत आदि की बनी
हुई चीज ।

प्रा० उबलना (सं० उड्=ऊपर, चल=
जाना) क्रि० अ० उबलना, खौ-
लना, मोदना, मीलना, मल-
नाना, वमीनना ।

प्रा० उबसना-क्रि० अ० सड़ना,
गमना, पचना, बिगड़ना ।

प्रा० उवारना (सं० उदारण) क्रि०
सं० बचाना, छुड़ाना, रगाना ।

सं० उभय } पु० दो, दोनों, आप-
प्रा० उभौ } स में ।

प्रा० उभरना (सं० उड्=ऊपर, भृ=
भ-ना) क्रि० अ० उभड़ना, बड़-
ना, बहुत भरना, निकलना, निह-
स माना, उटना, उडमाना ।

प्रा० उभारना-क्रि० सं० छुलाना,
उरसाना, गढ़ाऊना, भड़काना ।

प्रा० उमंग-स्त्री० बहुत खुरी, आ-

नंद, मगनता, २ चाह, इच्छा, अभि-
लाष, ३ धुन, तरंग, लहर ।

प्रा० उमंडना } क्रि० अ० छलकना,
उमडना } बहुत भरने से फूट
निकलना, झनझना, बहना, जल
घल होना ।

प्रा० उमंड उमंड कर रोना-
बोल० फूट फूट के रोना ।

सं० उमा (उ=शिव, मा=मानना, वा
“मां शिवस्य मा=लक्ष्मीः, शिव
की लक्ष्मी, वा उ=दे, मा=मत
“दे वत्स मा कुरु, जैते कुमार-
संभवकाव्य में लिखा है “उमेति
मां प्रातपसो निपिदा १२ बाहुमाख्यां
मुमुग्मी जगाप, अर्पितं जव पार्वती
तव करने को जानी थी तब उनकी
माने कहा कि हे बेटी तव मतकर)
स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवरात्री,
गिरिजा, भवानी, रुद्राणी ।

सं० उमापति (उमा=पार्वती, पति
=पति) पु० मरादेश, शिव ।

सं० उमासुन (उमा=पार्वती, सुन
=वेडा) पु० कानिक्केट, देवताओं
का सेनापति ।

सं० उमेश उमा=पार्वती, शि=पति)
पु० मरादेश, शिव ।

प्रा० उर (सं० उरम, अ=माना)
पु० शायी, हिरदा, हृदय, वक्षस्पत ।

सं० उरग (उरग=झाती, गम=चल-
ना जो झाती जो चले) पु० सांप,
नाग, सर्प, भुजंग ।

सं० उरगाद (उरग=सांप, अदू=
गाना) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन ।

सं० उरगारि (उरग=सांप, अरि=
वैरी) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन ।

सं० उरु (उरु=ढकना) स्त्री० जांच,
अंघा, रान, गु० चौड़ा, विशाल,
बड़ा, बहुत, अधिक ।

प्रा० उरिण (सं० अनृण, अन
=नहीं, ऋण=कर्ज) गु० बिन कर्ज,
श्रृण से छूटना, उतरना उद्धार ।

सं० उर्वरा (उरु=बड़ा, चौड़ा, अरु=
जाना) स्त्री० उपजाऊ धरती ।

सं० उर्वशी उरु=बहुत, अशु=बश
करना, जो अपने रूप से बहुतों
को बश कर लेती है, स्त्री० एक
अप्सरा का नाम, स्वर्गकी देवता ।

सं० उर्वी (उरु=बड़ा, चौड़ा) स्त्री०
धरती, पृथ्वी, जमीन ।

सं० उर्विजा (उर्वी=धरती, जन्
=पैदा होना) स्त्री० सीता, जान
की, कहते हैं कि जब राजा जनक
यज्ञ के लिये धरती जोतते थे तब
जमीनमें से सीता भी निकली थी ।

प्रा० उलभना-कि० अ० कैसना
लिपटना, २ भगदना ।

प्रा० उलटना-कि० सं० के
पलटना, दोहराना, मोड़ना,
ऊपर करना, नीचे ऊपर क
औंधाना ।

प्रा० उलट पुलट-बो० उलट
पल, ऊपर नीचे, तले ऊपर,
पट, गड़बड़, इधर का उधर, ३
का इधर ।

प्रा० उलथा-पु० तनुमा, अनुमा
प्रा० उलहना (सं० उपालम्भ, उपा
लम्भ=पाना) पु० शिवायन, पुन
निंदा, दोष ।

प्रा० उलहनादेना-बो० शिवा
करना, पुकारना ।

प्रा० उलीचना-कि० सं० उलेल
जल सींचना, पानी लेना ।

सं० उलूक (उलू=पेरना) पु० उल
पुपुआ ।

सं० उलूका (उलू=जलाना) स्त्री
लूका आग वा सौरा जो आकाश
गिरता है ।

सं० उल्लङ्घन (उलू=ऊपर, लघि=
पार होना) पु० उलटा करना, रीति
तोड़ना, २ लांपना ।

सं० उल्लास (उलू=ऊपर, लम्भ=लेक
ना, सुगी करना) पु० हर्ष, आ-
नंद, हुलास, खुशी, प्रसन्नता, २ अ-
ध्याय, परिच्छेद ।

सं० उल्लङ्घन (उलू=ऊपर, लम्भ + अ-
न, लम्भ=जाना) मो० पु० पार होना,

- प्रा० उल्क (सं० उल्क) पु० पुष्पमा,
पेचा, उल्क, एक जानवर का नाम,
२ गवार, मूस, उज्जड़ ।
सं० उल्लेख (उल्, लिख्=लिखना)
भा० पु० वर्णन, बयान, २ एक
अलंकार का नाम ।
सं० उदाना (उद+उशन, उश्=रह-
ना) पु० मुकाबलार्थ, दैत्यगुरु ।
सं० उपा (उप=चपकना) पु० घोर,
तड़का, पोट, मधान, स्त्री० बाणामुर
की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री ।
सं० उष्ट्र (उष्ट्र=पारना) पु० कंट ।
सं० उष्ण (उप=जलाना) पु० गरम ।
सं० उष्णीष=पंगड़ी, सिरबन्द ।
सं० उष्णता (उष्ण=गरम) स्त्री०
गरमी ।
उष्मा (उप=जलाना, वा गरम
पाना) स्त्री० गरमी, धूर, ताप ।
उसरना (सं० अपसरण, आप
सिद्धि, सू=जाना) क्रि० अ०
ना, पीठदेना, इटना ।
सारा-पु० ओमारा, दिहुरी,
दा ।
सं० उरु (सं० उरुकास, उरु=ऊँचा,
मांस) पु० सांस, ऊँचासांस ।
सा (सं० उन्नीषिन्, उन्=
मिर) पु० मिरहाना ।
- सं० ऊ (अश्=बचाना) पु० मारादेव,
महा, मरनवाक्य) बन्धन, मोक्ष
मयान, २ चांद, बि० बो० दे ।
प्रा० ऊँघना-क्रि० अ० निद्रानुशोना,
भपकी केना, भांस लगाना ।
प्रा० ऊँच (सं० उष) पु० लंघा,
ऊँचा ऊपर ।
प्रा० ऊँचा बोलबोलना-बोल
पपंद से बोलना, अभिमान से
बोलना ।
प्रा० ऊँचासुनना-बोल=रूपसुनना ।
प्रा० ऊँचाकानी-बो० बहरापन ।
प्रा० ऊँचेबोलका बोलनीचा—
बोल=जो कोई किसी को पपंदका
बोल बोलता है वह अन्त में आप
हसका और नीचा होता है ।
प्रा० ऊँट (सं० उष्ट्र, उप=पारना)
पु० एक जानवर का नाम ।
प्रा० ऊँटकटारा—पु० एक तरह के
कैंटीले पेट का नाम जिसको ऊँट
बाले हैं, भरमांड, कंटकटार ।
प्रा० ऊस्त्र (सं० इष्टु) स्त्री० ईस्त्र,
केशरी, गधा ।
प्रा० ऊँद (सं० उद्र, उद्र=पि-
उदविलाव) गोना) पु० एक गनी
के जानवर का नाम ।
प्रा० ऊदा (सं० ऊवदाव, ऊव, दै=
उद करना) पु० मृग, पुंजा ।

सं० श्रुजु (श्रुज=जाना, इकट्ठा कर-
ना) (वा, अर्ज=इकट्ठा करना) गु०

सीधा, सरल, सूधा, सोभा ।

सं० श्रुण (श्रु=जाना) पु० चशर,
कर्ज देना, २ बीजगणित में घटाव
का चिह्न, मनकी ।

सं० श्रुणपत्र=वमस्सुक ।

सं० श्रुणमुकपत्र=कारियखती ।

प्रा० श्रुणिया (श्रुण=कर्ज) गु०

सं० श्रुणी कर्जदार, देनदार,
जिसके शिरकर्ज हो,

प्रा० श्रुनियां २५ हस्तानयंद, घन-
वाद् करनेवाला, शु-
कारगुजार ।

सं० श्रुत (श्रुत=जाना, दान=देना, पु०
सत्य, मोक्ष, ज्ञान, पुजन, इतर, दीप्त,
और शीलौछ, कटेलेतमेवाली धीनना ।

सं० श्रुतु (श्रु=जाना) स्त्री० मौसिम,
वसंतमादि ऋः श्रुतु १ वसन्त (वैत
और बैशाख) २ ग्रीष्म (ज्येष्ठ और
आषाढ़) ३ वर्षा (सावन और
भादों) ४ शरद (कुंवार और का-
तिक) ५ हिम (अगहन और पूस)
६ शिशिर (माघ और फागुन) एक
श्रुतु दो महीने रहती है २ स्त्रीधर्म,
जशोंके कपड़ोंसे होनेका समय ।

श्रुते- अव्य० क्रि० वि० विना,
इके, रहित, बिदूत ।

श्रुतुमती (श्रुतु=स्त्रीधर्म, मती=
स्त्री० कपड़ोंसे, रजस्वला,
ने ।

सं० श्रुतुराज (श्रुतु=मौसिम, राजन-
राजा) पु० वसंत ऋतु, मौसम वहार

सं० श्रुतुस्नान (श्रुतु=स्त्रीधर्म, स्नान=
म्हाना) पु० स्त्रियोंका कपड़ोंमें होने
के पीछे चौथे दिनोंका न्हाना वा
स्नान ।

सं० श्रुत्विज (श्रुतु=समय, यज्ञ=यज्ञ
करना) क० पु० यज्ञ करनेवाला,
पुरोहित, यानक ।

सं० श्रुद्धि (श्रुध=वढ़ना) स्त्री० संपदा,
संपत्ति, धन, दौलत, यद्धती, २ एक
औपधीका नाम, श्पावती, गिरिजा,
रुद्राणी ।

सं० श्रुपि (ऋपु=जाना) पु० मुनि,
तपस्वी, यही, श्रुपि सात प्रकार के
हैं १ धृतपि जिसने पवित्र कथामुनी
हो, २ कायदापि जो वेदका कोई
मुख्यकांड सिललाता है, ३ परमपि
जिसमें मुनि भेलआदि हैं, ४ मह-
पि जिस में व्यास आदि हैं, ५
राजपि जैसे विरवायिक ६ ब्रह्मपि
जिसमें वसिष्ठ हैं, ७ देवपि जिस में
नारद आदि हैं ।

सं० श्रुपीश (श्रुपिमुनि, ईश=स्वाधी,
राजा, पु० श्रुपियोंमें मुख्य वा प्रधान)

सं० श्रुप्यमूक (श्रुप्य=हरिण, ऋपु=
जाना, मूक=गुंथा) पु० एक पहाड़का
नाम जो किष्किन्धापुरीके पास है ।

प्रा० ऊधो (सं० उद्धव) पु० श्रीकृष्ण
का मित्र और चचा ।

प्रा० ऊन (सं० ऊर्ण, ऊर्णु=ढकना)

श्री० भेड़ी चकरी के पीठ पर के
वाल, पशम ।

सं० ऊन } (ऊन=कम होना) गु०
प्रा० ऊना } कम, कमनी, मोटा,
गून, हीन ।

प्रा० ऊपर (सं० उपरि) क्रि० वि०
ऊँचा, ऊर्ध्व, २ अधिक ।

प्रा० ऊपरसे=शोच० ऊपरके ऊपर ।

प्रा० उपरी (ऊपर) गु० विदेशी,
पारदेशी, २ ऊपर का ।

प्रा० ऊघट (सं० अववाट, अव=
बुरा, वाट=रास्ता) पु० औघट,
बिकट रास्ता, बुरा रास्ता ।

सं० ऊर्ध्व-पु० भ्रंषा, भ्रंष ।

सं० ऊर्ध्व (उर्ध्व=ऊपर, रा=छोड़ना)
गु० ऊपर, ऊँचा, लंबा ।

प्रा० ऊर्ध्वपुं० (सं० ऊर्ध्वपुं०, ऊर्ध्व
=लंबा-पुं०=निलक, पुं०=मजना)
पु० लंबा निलक जो बैष्णव लोग
करते हैं, बैष्णवीनिलक ।

सं० ऊर्ध्ववाहु (ऊर्ध्व=ऊँची, वाहु
=भुजा) गु० ऊँचाहायरसनेवा-
ला, तपसी, तपस्वी जो अपना
हाथ ऊँचा रगता है ।

प्रा० ऊर्ध्वसांस (सं० ऊर्ध्वरसांस,

ऊर्ध्व=ऊपर, रसांस=सांस) पु० उ-
सांस, ऊपर का दम, सांस, दम ।

सं० ऊर्मि (श्रद्धे=नाना) श्री० ल-
हर, तंग ।

सं० ऊपर (ऊर्ध्व=बीमार होना) गु०
रारी धरती, बनजर धरती, ऐसी
धरती जिसमें बोने से कुछ नहीं
उपज ।

सं० ऊपा (ऊर्ध्व=चमकना) श्री० वा-
गासुर की बेटी और अनिरुद्ध की
श्री, पु० भोर, तड़का, पोह, ममात ।

सं० ऊपाकाल (ऊपा=भोर, काल=
समय) पु० प्रातःकाल, विहान,
भोर, ममात ।

सं० ऊहा (ऊह=तर्क करना) श्री०
तर्क, बितर्क, दलील ।

श्रद्धे

सं० श्रद्धे-श्री० अदिनि, देवताओं की
मा पु० सूर्य, गणेश, विष्णु ।

सं० श्रद्धे (श्रद्धे=मराहना) पु० श्र-
द्धे, पहला वेद ।

सं० श्रद्धे (श्रद्धे=माना) पु० श्रद्धे
मान्, २ मन्त्र । [ला वेद ।

सं० श्रद्धेवेद (श्रद्धे+वेद) पु० पर

सं० श्रद्धे (श्रद्धे=मराहना) श्री०
वेद का मंत्र, वेद का दंड, काण्डिका ।

प्रा० श्रद्धेश (सं० श्रद्धेश, श्रद्धे=
श्रद्धे, ईश=राजा) पु० नामधन
श्रीश का राजा ।

सं० श्रुजु (श्रुज्=जाना, इच्छा कर-
ना) (वा, कर्ज=इच्छा करना) गु०
सीसा, सरल, सूपा, सोफा ।

सं० श्रुण (श्रु=जाना) पु० उचार,
कर्ज देना, २ बीजगणित में घट्टाव
का चिह्न, दनकी ।

सं० श्रुणपत्र=वदस्सुक ।

सं० श्रुणमुक्तपत्र=कारिगखती ।

प्रा० श्रुणिया (श्रुण=कर्ज) गु०

सं० श्रुणी कर्जदार, देनदार,
निससे गिरकर्जही,

प्रा० श्रुनियाँ २५३ सानपद, पन-
प्रा० श्रुनी बाद करनेवाला, गु-
करगुजार ।

सं० श्रुत (श्रुत=जाना, दान=देना) पु०
सत्य, मोक्ष, नक्ष, पूजन, इनर, दीप्त,

और शीलौष, कटेतेनमेवालीवीनना ।

सं० श्रुतु (श्रु=जाना) स्त्री० श्रुतिप,

वर्षनमादि दः श्रुतु ? वसन्ता (वैत

और वैशाख) २. श्रुष्य (उपेष्ट और

कापाह) ३ वर्षा (सावन और

भादों) ४ शरद (कुवार और का-

निक) ५ हिम (कगहन और पूम)

६ शिशिर (माय और फागुन) एक

श्रुतु दो महीने रहती है २ स्त्रीधर्म,

स्त्रियोंके कपड़ोंसे होनेका समय ।

श्रुते- अथ० क्रि० वि० विना,
दोड़के, रहित, बिदूत ।

श्रुतुमती (श्रुतु=स्त्रीधर्म, मती=

माली) स्त्री० कपड़ोंसे, रजस्वला,
मासे ।

सं० श्रुतुराज (श्रुतु=प्राप्तिप, राजन्=

राजा) पु० वसंतकृत, मौसमबहार-

सं० श्रुतुस्नान (श्रुतु=स्त्रीधर्म, स्नान=

नाना) पु० स्त्रियोंका कपड़ोंमें होने

के पीछे चाँये दिनेका नाना वा

स्नान ।

सं० श्रुतिज्ञ (श्रुतु=समय, यज्ञ=यज्ञ

करना) क० पु० यज्ञ करनेवाला,

पुरोहित, पात्रक ।

सं० श्रुद्धि (श्रुध=वदना) स्त्री० संपदा,

संपत्ति, धन, दौलत, वृद्धी, २ एक

श्रीपथीका नाम, शैशवी, गिरिमा,

रुद्राणी ।

सं० श्रुपि (श्रुप=जाना) पु० मुनि,

तपस्वी, यती, श्रुपि सात प्रकार के

हैं ? धुनवि जिसने पवित्र कयामुनी

हो, २ कायदावि जो वेदका कोई

मुख्यकांट सितलाता है, ३ परमवि

जिसमें मुनि भेलमादि हैं, ४ मह-

वि जिसमें व्यास आदि हैं, ५

रात्रवि जैसे विरवादि ६ ब्रह्मवि

जिसमें वसिष्ठ हैं, ७ देवावि जिसमें

नारद आदि हैं ।

सं० श्रुपीशा (श्रुपिमुनि, ईशु=स्वाधी,

राजा, पु० श्रुपियोंमें मुख्य वा प्रधान)

सं० श्रुप्यमृक (श्रुप्य=हरिण, कृप=

जाना, मृक=गूँगा) पु० एक पहाड़ का

नाम जो हिमालयपुरीके पास है ।

सं० ऋ० देवताओं की मा, २

दानों की मा, पु० शिव, मेरु, राक्षस, वि० वो० भय और निंदा को जललानेवाला, अव्यय ।

—०—

ए

सं० ए (इण=जाना) पु० विष्णु, वि० वो० हे, संयोधन का सूचक ।

सं० एक (इण=जाना) गु० गिन्ती का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम, पहला, प्रधान, केवल सिर्फ ।

प्रा० एकआध-बोल० कुछ, थोड़ा, एक या आधा ।

प्रा० एककी दशसुनाना-बोल० यह बोल चाल वहां बोल जाता है जब कि कोई आदमी किसी को एक घुरी बात कहे अथवा एक गाछीदे तो उसके बदले में बहुत सी घुरी बातें कहे और बहुतेरी गालियाँ दे ।

सं० एकचित्त-(एक, चित्त=मन) गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी एक ही चीज पर हो ।

सं० एकत्र (एक+त्र, जगह अर्थमें प्रत्यय) कि० वि० इकट्ठा, एक-ठौरा, एक जगह । [हुआ ।

सं० एकत्रित-अर्थ० पु० इकट्ठा किया सं० एकदा (एक+दा) समय अर्थ

में प्रत्यय) कि० वि० एक बार, एक समय ।

सं० एकधा (एक+धा, प्रकार अर्थ में प्रत्यय) कि० वि० एकभांति, एकप्रकार ।

प्रा० एकनएक-बोल० एकयादूसरा ।

प्रा० एकरसी-बोल० बहुत थोड़ा ।

सं० एकरस-पु० जो एकसा रहे, जन्ममरणरहित ।

सं० एकरूप (एक, रूप=ढाँचा) पु० बराबर, एकसा, समान, सदा ।

प्रा० एकला (सं० एकल, एक, एकला ला=लेना) गु० अकेला, केवल, निराला, सिर्फ, तनहा । [एकरी (बेड़ा) ।

प्रा० एकलौता (सं० एकल) गु० सं० एकसर (एक, सू=जाना) कि० वि० एक साथ ।

प्रा० एकसे दिन न रहना-बोल० सदा कोई धनवान् रहता है न गरीब, दशा का केरफार होना ।

प्रा० एका (सं० एवम्=एकपन) पु० मेल, मिलाप किसी काम के करने के लिये आपस में एक सलाह करना, साजिश ।

अं० एकाउतर=जैसा, हिसाब ।

प्रा० एकाएकी (सं० एक) कि० वि० अचानक, एकबारमें, दफा अतन ।

सं० एकाक्ष (एक, अक्षि=आँख)

पु० काना, एक कांश बान्ना, एक
परम, कोर, २ कागा, कौमा ।

सं० एकाग्र (एक, अग्र=मागे) पु०
एकचित्त, एकमन, एकदित्त, किसी
काम में लगा हुआ ।

सं० एकादशी (एक + दश = दश)
सी० ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने
के पक्ष में ग्यारहवां दिन ।

सं० एकाधिनति (एक, अधिनति,
रात्राधिनति) पु० चक्रवर्तीरात्रा ।

सं० एकान्त (एक, अन्त=हर)
पु० एक कोर, एक तरफ, अलग,
निराला, किनारे, हुदा, आवही
आर, भिन्न, निर्जन ।

अं० एर्षाकलचरलकान्तेस=हरी
विषकलसभा, मेनोके बारेमें कवेरी ।

अं० एर्झिनियर=पञ्चड, इमारत बना
नेवाला ।

अं० एर्न्युकेनानल=शिरा, अमलीपः

प्रा० एड-सी० एही, २ एहीकी बार,
दोहे के बजाने के लिये एही की
टोहर ।

प्रा० एडमारना=कोल० टोहर का-
रना, एही की टोहर कारके योहे
की बलाना ।

प्रा० एडी-अं० ऐरका विदना भाग ।

अं० एडस=अधिर दनव, सिचम-
नाका, एरा, मित्रना, निचका,
रवान करना, अडकाना ।

सं० एतत्=सर्वना० यह ।

सं० एतदर्थ=इसकासे ।

प्रा० एतवार (सं० आदित्यवार)
पु० इतवार, रविवार, आदित्यवार ।

सं० एतादृश-पु० इसीतरहसे, ऐसाही
सं० एतावत्-पु० इतना, इतनी ।

सं० एरण्ड (ईर=जाना) पु० अ-
रंड, रंड, एक पेड़ का नाम ।

सं० एला (इन=जाना, भेजना)
स्त्री० इलायची, एलाची ।

सं० एवम् (इम्=जाना) समुच्च-
इमवहार, इमभांति, इमगहर ।

ऐ

सं० ऐ-पु० शिराहुलाना, संशोधन ।

अं० ऐक्य=विषय, कावदा ।

सं० ऐक्यना-पा० पु० मेन, इति-
काक, एकमन । [वई ।

अं० ऐरलोवर्नाक्यूलर=अंगोसी-

प्रा० ऐवना-कि० म० मेवना, जानना ।

प्रा० ऐटु (ऐटका) स्त्री० बल, बर,
दोहर, अडर, २ गोट ।

प्रा० ऐटुना-कि० स० कनका, जानना,
मेवना, अडकना, कि० अ० अ-
कनका, एहीहुलाना, अकनका, २ अ-
कनका, एनका, ऐर के बजना, अ-
कडके बजना ।

सं० ऐगवत् (इगवत् मन्त्र-
ऐगवत्) इग=जाना, इर-

सं० ऋ० घी० देवताओं की मा, २
दानवों की मा, पु० शिव, भैरव,
राक्षस, वि० वो० मय और निंदा
को जतलानेवाला, अन्यथ ।

—०—

ए

सं० ए (इण=जाना) पु० विष्णु,
वि० वो० हे, संशोधन का सूचक ।
सं० एक (इण=जाना) गु० गिन्ती
का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम,
पहला, प्रधान, केवल सिर्फ ।
प्रा० एकआध-बोल० कुछ, थोड़ा,
एक या आधा ।

प्रा० एककी दशसुनाना-बोल०
यह बोछ चाल बड़ा बोला जाता
है जब कि कोई आदमी किसी को
एक घुरी घात करे अथवा एक
गाछीदे तो उसके बदले में बहुत
सी घुरी बाने कहें और बहुतेरी गा-
लिपा दें ।

सं० एकचित्त-(एक, चित्त=मन)
गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी
एकही चीज पर हो ।

सं० एकत्र (एक+त्र, जगह अर्थमें
प्रत्यय) क्रि० वि० इकट्ठा, एक-
ठौरा, एक जगह । [हुआ ।

सं० एकत्रित-स्थ० पु० इकट्ठा किया

सं० एकदा (एक+दा) समय अर्थ

में प्रत्यय) क्रि० वि० एक बार,
एक समय ।

सं० एकधा (एक+धा, प्रकार अर्थ
में प्रत्यय) क्रि० वि० एकभांति,
एकप्रकार ।

प्रा० एकनएक-बोल० एकयादूसरा ।

प्रा० एकरत्ती-बोल० बहुत थोड़ा ।

सं० एकरस-पु० जो एकसा रस,
जन्ममरणरहित ।

सं० एकरूप (एक, रूप=ढाल) पु०
बराबर, एकसा, सरीला, सटा ।

प्रा० एकला (सं० एकल, एक,
एकेला) ला=लेना) गु० अ-
केला, केवल, निराला, सिर्फ,
तनहा । [एकही (बेड़ा) ।

प्रा० एकलौता (सं० एकल) गु०

सं० एकसर (एक, सृ=जाना) क्रि०
वि० एक साथ ।

प्रा० एकमे दिन न रहना-बोल०
सदा कोई धनवान् रहता है न गरीब,
दशा का फेरफार होना ।

प्रा० एका (सं० एक्य=एकपन)
पु० मेल, मिलान किसी काम के
करने के लिये आपस में एक स-
लाह करना, साजिश ।

अं० एकाउराट=जैसा, हिसाब ।

प्रा० एकाएकी (सं० एक) क्रि०
वि० अचानक, एकबारमें, दफा अतना

सं० एकाक्ष (एक, अक्षि=आंख)

पु० काना, एक आंख, चाला, एक चरम, कोर, २-कागा, कौआ।

सं० एकाग्र (एक, अग्र=आगे) गु० एकचित्त, एकमन, एकदिल, किसी काम में लगा हुआ।

सं० एकादशी (एक+दश=दश) स्त्री० ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने के पक्ष में ग्यारहवां दिन।

सं० एकाधिपति (एक, अधिगति, राजाधिराज) पु० चक्रवर्तीराजा।

सं० एकान्त (एक, अन्त=इद) गु० एक ओर, एक तरफ, अलग, निराला, किनारे, जुदा, आपसी धार, मित्र, निर्जन।

अं० एभीकलचरलकान्फ़ेस=रुपी विपयकसमा, सेतोंके बारेमें कपेती।

अं० एञ्जिनियर=यंत्रज्ञ, इमारत बना-नेवाला।

अं० एज्यूकेशनल=शिक्षा, नमूनी।

प्रा० एड-स्त्री० एड़ी, २. एड़ीकी मार, घोड़े के चढाने के लिये एड़ी की डोकर।

प्रा० एडमारना-बोल० डोकर बा-रना, एड़ी की डोकर मारके घोड़े को चलाना।

प्रा० एड़ी-स्त्री० पैरका पिछला भाग।

अं० एट्स=अभिवादनपत्र, सिपास-नामा, पता, सिरनामा, लिकाफा, वधान करना, अर्जकरना।

सं० एतत्-सर्वना० यह।

सं० एतदर्थ=इसवास्ते।

प्रा० एतवार (सं० आदित्यवार) पु० इतवार, रविवार, आदित्यवार।

सं० एतादृश-गु० इसीतरहसे, ऐसाही

सं० एतावत्-गु० इतना, इतनी।

सं० एरण्ड (ईर=जाना) पु० अ-रंड, रेंड, एक पेड़ का नाम।

सं० एला (इल्=जाना, भोजना) स्त्री० इलायची, एलाची।

सं० एवम् (इण्=जाना) समुच्च० इसप्रकार, इसभांति, इसतरह।

ऐ

सं० ऐ-पु० शिवाबुलाना, संवोधन।

अं० ऐकट=निषम, कायदा।

सं० ऐक्यता-भा० पु० मेल, इत्ति-फाक, एकमन। [उर्दू]

अं० ऐंगलोवर्नाक्यूलर=अंगरेजी-

प्रा० ऐचना-कि० स० चैचना, नानना।

प्रा० ऐठ (ऐठना) स्त्री० बत्त, झड़, परोड़, अकड़, २ गांठ।

प्रा० ऐठना-कि० स० कटना, नानना, सींचना, जकड़ना, कि० अ० अ-कड़ना, परोड़राना, पछानना, २ इत-राना, फूलना, ऐंठ के चलना, अ-कड़के चलना।

सं० ऐरावण (इरावत् समुद्र, ऐरावत) इरा=पानी, ईर=

- प्रा० ओटहोना-बोल० छिपना ।
 प्रा० ओड़न-छी० ढाल, फरी ।
 प्रा० ओड़ा-पु० टोकरा, सांचा ।
 प्रा० ओड़ना (सं० ऊर्ण=ढकना)
 क्रि० म० पहनना, पहनना, पु० चढ़ा,
 पड़, लोई आदि ओड़ने की चीज ।
 प्रा० ओड़नी (सं० ऊर्ण=ढकना)
 स्त्री० मिथों के ओड़ने का कपड़ा,
 साड़ी ।
 सं० ओदन (उद्=भिंगोना) पु०
 भात, राखे हुए चावल । [भीना ।
 प्रा० ओदा (सं० आर्द्र) पु० भीगा,
 प्रा० ओप-छी० चपक, झलक,
 दमक, चमकमाहट, सुन्दरना, घोट,
 चिकनाहट ।
 प्रा० ओपदेना-बोल साफ करना,
 चिकना करना, ओपना, घोटना ।
 ओम् (अङ्=बचना, या अ वि-
 णु, व शिव, म ब्रह्मा) पु० तीनों
 देवताओं का मंत्र अंकार का बीज
 मण्डप ।
 ओर-छी० तरफ, अलग, पार,
 रना, उड़क, सीमा ।
 ओल=बदला, एवज, बदले
 सी आदमी को देना ।
 ओयंटलकम्पनी-पूरी समूह,
 गैर ।
 ओला (सं० ओल=भीगा, अ,
 भिंगोना) पु० पानी के बने
 जैसे टुकड़े जो कभी कभी
 चरसते हैं, र चीनी की बनी हुई मि-
 ठाई जिसको गरमियों में ठंडाई के
 लिये पानी में घोळ कर पीते हैं ।
 प्रा० ओलाहोजाना-बोल० खूब
 ठंडा होना ।
 प्रा० ओसिमुड़ायातों ओलेपड़े-
 बो० यह मुहावरा उस समय बोला
 जाता है जब कोई आदमी किसी
 काम को शुरू करे और शुरू
 करने ही किण्व जाये ।
 सं० ओपधि (ओप=गरमी, उप
 ओपधि) = गर्भ करना, या=
 रचना) स्त्री० ओपंद, दवा दारु,
 रोग दूर करने की चीज ।
 सं० ओपधालय (धि=पु० दवाखा-
 न, होस्पिटल ।
 ओपधालय)
 सं० ओष्ठ (उपे=गर्भ करना) पु०
 होठ, ओठ, ओठ, लव ।
 प्रा० ओस-पु० गीत जो रात को
 छोटी-छोटी वृद्धा वृद्धा है, शबनम ।
 प्रा० ओसरा (सं० अवसर) पु०
 बारी, पारी ।
 प्रा० ओसीसा-पु० नाकिश ।
 प्रा० ओहो-वि० बो० आहवाह, आह ।
 ओ
 सं० ओ-पु० अनन्त, वि० बो० ओह,
 आह ।
 प्रा० ओगी-उप, गुंगापन, मोन ।

माना अर्थात् जो समुद्र में पैदा हुआ) पु० इन्द्र का हाथी ।

सं० ओरावनी (इरा=पानी) ग्री० एक नदी का नाम, रावी नदी का नाम एक नदी जो ब्रह्मा देशमें है ।

सं० ओरंग्य बुद्धिबद्ध मक्षिरा जो कम लगा करती है अंगूर आदि में बनती है ।

सं० ओरवर्ग्य (इरा) पु० बनाय, बड़ाई, मर्यादा, मर्यापि, विभव, हलचल आदि में बनाय ।

प्रा० ऐमा (इम + मा, म=ईश्वर) पु० इमरका का, इसके बगल ।

प्रा० ऐमानमा } कान् ६६ यो
गैमानमा } हां, न मना न दुरा, न बुराई, न श्रेष्ठी ।

प्रा० ऐहें (अन्वयाया) द्वि० अ० आयेगे ।

— ६० —

ओ

सं० ओ० पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव, वि० वे० आदि, आशा, संशोधन का मूलक, संवरण ।

सं० ओ० पु० ब्रह्म, ओंकार जो अ + उ + इ, संवनाई, अ-विष्णु का वाचक, उ-महेश्वर का वाचक, म=ब्रह्मा का वाचक है ।

प्रा० ओट (सं० ओट) पु० हँट, ओट } अल, मर ।

प्रा० ओंड़ा / पु० गहरा, गंभीर, ओंड़ा } अर्थात् ।

प्रा० ओंघा } पु० उलझ, तले ऊपर ।
ओंघा }

प्रा० ओसली—(सं० अनुमल) ग्री० जगनी ।

सं० ओच (उच=इच्छा करना) पु० समूह, इच्छा, २ जल का वेग ।

प्रा० ओछा=पु० हलका, नीच ।

सं० ओज } पु० बल, दीप्ति, तेज,
ओजग } प्रकाश, २ विपण, प्रथम, नवीन, पांचवों, सातवों आदि ।

सं० ओकाइ (ओम नीनों देवताओं का वेग, अन्व=बनाना, कार, कुं=करना) पु० नीलपत्र, प्रथा, विष्णु, शिव इन तीनों देवताओं का नाम ।

प्रा० ओमल—ग्री० ओट, भाड़, प. रदा, टट्टी, बिगाव, पकान ।

प्रा० ओमलकना—पौ० बिगाना, ओट करना, पकड़ा करना, भाड़ करना ।

प्रा० ओमलहोना—पौ० बिगाना ।

प्रा० ओट सं० बट-येना) ग्री० बकाव, बाँव, भाड़, पादा, ओमल, टट्टी, बिगाव, २ पट ।

प्रा० ओटकना—पौ० बिगाना, ओमल करना, भाड़ करना, पकड़ा करना ।

प्रा० ओटहोना—बोल० छिपना ।

प्रा० ओड़न—स्त्री० ढाल, फरी ।

प्रा० ओड़ा—पु० टोकरा, खांचा ।

प्रा० ओढ़ना (सं० ऊर्ण=ढकना)

कि० म० पहनना, पहरना, पु० चढ़र,

गन्ध, लोई आदि ओढ़नेकी चीज ।

प्रा० ओढ़नी (सं० ऊर्ण=ढकना)

स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा,

साड़ी ।

सं० ओदन (उद्=भिगोना) पु०

भात, रींछे हुए चावल । [गीला ।

प्रा० ओदा (सं० आर्द्र) पु० भीगा,

प्रा० ओप—स्त्री० चमक, झलक,

दमक, चमचमाइट, सुन्दरता, पोटा,

चिकनाइट ।

प्रा० ओपदेना—बोल साफ करना,

चिकना करना, ओपना, घोटना ।

सं० ओम् (अ० अवचना; या अ वि-

ष्णु, इ शिव, म ब्रह्मा) पु० तीनों

देवताओंका मंत्र अकार का बीज

मंत्र, मणव ।

प्रा० ओर—स्त्री० तरफ, अलग, पार,

१२ रस्ता, इ इद, सीमा ।

प्रा० ओल=बदला, एवज, बदले

में किसी आदमी को देना ।

अं० ओरीयंटलकम्पनी—पूर्वसमुद्र,

पूर्वी गिरोह ।

प्रा० ओला (सं० ओल=भीगा, अ,

उन्ट=भिगोना) पु० पानी के बने

हुए पत्थर जैसे ठुक्ड़े जो कभी कभी

परसते हैं, २ चीनीकी चुनी हुई मि-

ठाई जिसको गर्मियों में ठंडाई के

लिये पानी में घोळ कर पीते हैं ।

प्रा० ओलाहोजाना—बोल० खूब

ठंडा होजाना ।

प्रा० जोसिरमुड़ायातोंओलेपडे-

बो० यह मुड़ावरा उस समय बोला

जाता है जब कोई आदमी किसी

काम को गुरुत्व करे और गुरुत्व

करनेकी विगड़ जाय ।

सं० ओपधि (ओप=गर्भमी, उप

ओपधि) =गर्भ करना, धा=

रखना) स्त्री० ओपेद, दवां दारु,

रोग दूर करने की चीज ।

सं० ओपधालय (धि=पु० दवांला-

ओपधालय) न, हास्पिटल ।

सं० ओष्ठ (उप=गर्भ करना) पु०

होठ, थोठ, ओठ, लव ।

प्रा० ओस—पु० शीत जो रात को

बोटी २ फुहार पड़ती है, शबनम ।

प्रा० ओसरा (सं० अवसर) पु०

पारी, पारी ।

प्रा० ओसीसा—पु० लकिया ।

प्रा० ओहो—वि० बो० बाहरार, आशा

ओ

सं० ओ-पु० अनन्त, वि० बो० ओह,

आहा ।

प्रा० ओगी—उप, मुंगापन, मान ।

प्रा० औगुण (सं० अथगुण) पु० दोष,
केलंक, खोट, चूक, बुराई ।
प्रा० औघट (सं० अवघट, अव=बुरा
वा कठिन, घट=रस्ता, घट=जाना) गु०
ऊबट, खराब रस्ता, अगम्य रस्ता ।
प्रा० औतार (सं० अवतार) पु० जन्म,
मरुट, अवतार, (अवतारशब्दकोदेखो)
प्रा० औदात (सं० अवदात) गु०
धोला, सफेद, रवेत, शुद्ध ।
प्रा० ओनेपोने—बोल० कपचीबडनी ।
प्रा० औवट (सं० अववाट, अव=बुरा
वा कठिन, वाट=रस्ता) गु० ऊबट,
औघट, बुरा रस्ता, दुर्गम ।
प्रा० और—मसुब० फिर, पुनि. भी
गु० अधिक, २ दूसरा ।
प्रा० औरएक—बोल० दूसरा कोई,
और कोई, और भी ।
प्रा० औग्ही—बोल० बिलकुल दूसरा,
अनूठा, नुदा बिलकुल फरक ।
सं० औरम (उरम=हृदय) पु० स्पाही
हुई स्त्री से पैदा हुआ लड़का ।
सं० और्ध्वदेहिकक्रिया—श्री० दश-
गात्र, मण्डी, नेहरी ।
सं० और्व—गु० बड़बानल, दावानल ।
प्रा० ओसर (सं० अवसर) पु० समय,
मौका, अवकाश, फुरत ।
प्रा० ओसान—पु० चेतना, चेत, होमि-
टा, मुगट, माहम, हिम्मत, होशियारी ।
प्रा० ओसेर—सी० चिन्ता, सटक ।

क ॥
सं० क—पु० ब्रह्मा, २ पवन, इवा, ३ मूर्ति,
४ आत्मा, ५ यम, ६ आग, ७ विष्णु,
८ शिव, ९ पानी, १० मृत्यु, ११
शुभ, सुन्दर, १२ दम, १३ मयू, १४
कामदेव, १५ दत्त १६ गङ्गा ।
सं० कङ्क (कङ्क=जाना) पु० कौआ,
२ केकड़ा, ३ कपट, ४ ब्राह्मण, ५ बुद्धि-
घिर, ६ देग विशेष, ७ तेज्जनादि, ८
इनीमार, गुला ।
प्रा० कंकर (सं० कर्कर, क=हानि
पहुँचाना) पु० छोटे छोटे पत्थर
डुकड़े, कांकर, रोड़ा ।
प्रा० कंकेला (कङ्कर) गु० पपरेल
पथरीला, किरकिरा, कंकीला-
बलुवा ।
प्रा० कहन्न (सं० कङ्कण) पु० शि-
शों के पहने में पहनने का गहना,
बाला. कड़ा ।
प्रा० कहन्नी—श्री० एकमकारका अ-
नाम, २ चूड़ी, कहन्न, कहना, कन्नी ।
प्रा० कहार (कङ्क्याधार) क० कहार ।
प्रा० कहाल—गु० दहिरी, दीन, दुखी,
गरीब । [और पपेरी ।
प्रा० कहालवांका—बोल० गरीब
प्रा० कहालता—मा० श्री० दहिता,
गरीबी दीनता ।
प्रा० कंथी (सं० कंठनी, कंठि=

जाना) श्री० बालभाइनेकी चीज,
कंथा, केश, मार्मनी । [बालना ।]

प्रा० कंघीकरना-बोल० बालसं-

प्रा० कंजर-पु० एकजाति के मनुष्य

मिनका धिया होरी बेचने का है

और बे साँप को भी पकड़ते हैं

और खाते हैं । [कृष्ण ।]

प्रा० कंजूस-पु० भूष, मवलीचूस,

प्रा० कंठला (सं० कण्ठमाला)

कंठला पु० माला, कंठी,

कंठा मोने चांदी आदि

की माला जो गले

में पहनते हैं, रणपटा (छोटी माला) ।

प्रा० कंठी (सं० कण्ठीय, कण्ठ) श्री०

प्रा० कंचल (सं० कंचल) पु० कमल, पद्म

सं० कंस (कम्=चाहना, वा कस=

दुख देना) पु० मथुरा के राजा

वज्रसेन का बेटा, और श्रीकृष्ण

का मामा और बैरी जिसको श्री

कृष्ण ने मारा, २ कांसा, ३ पानपात्र,

गुरापात्र, ४ मंजीरा, भौंक ।

सं० कंसकार (कंस=कांसा, क=

करना) क० पु० कौमे की वस्तु

बनानेवाला ।

प्रा० कंकड़ी-एक प्रकार का फल ।

प्रा० कंकनी (सं० कङ्कणी) श्री०

पहुंची, कंगनी, शिपों के हाथ में

पहनने का गहरा । [रंग ।]

प्रा० ककरेजा-पु० कंगनीरंग, कंगनी

प्रा० ककहरा-पु० कस ग आदि

बर्णमाला । [का फोड़ा ।]

प्रा० कसौरी (सं० कञ्ज) श्री० कांख

सं० कक्षा (कप्=मारना, कश=जाना)

श्री० कटिबंध, रज्ज्योतिषचक्र, दक्षिण ।

सं० कट्टण (क=सुन्दर, कण=शब्द

करना, व कम्=चाहना) पु० कट्टन,

बोला, कड़ा । [बाल, रोम ।]

सं० कच (कञ्=चांचना) पु० केश,

प्रा० कचनार (सं० काञ्चनार, वा

कांचनाल, कांचन=चमक, अश्व=जाना,

वा कांचन सोने सी चमक, अश्व=

पाना) श्री० एक वृक्ष का नाम ।

प्रा० कचूमर-पु० एक तरह का मचार ।

प्रा० कचूमरकरडालना-बोल०

टुकड़े टुकड़े कर टाकना, गडबड

कर टाकना ।

प्रा० कचा सन्नय=छाप तहसील ।

सं० कच्छाप कच्छ (किमारा, वा=पीना)

पु० कहुमा, कपड, कूमे ।

प्रा० कछ (सं० कच्छ) पु० कछ

कच्छ आ, कछा ।

प्रा० कछनी-श्री० नौपिया ।

प्रा० कदलम्पट (सं० कञ्ज=काष्ठ,

लम्प=झड़ा) पु० चमिचारी, लुथा,

बदप्पन, रंटीराज ।

प्रा० कदवाहा-पु० राजपूतों की

एकजाति जो अपने को रामचन्द्र

के बेटे कुश के वंश में बतलाते हैं ।
जैपुर के राजा इस वंशके हैं ।

प्रा० कल्लु (सं० विधि) पु० कुल्ल, थोड़ा ।

प्रा० कल्लोटी (सं० कच्छोटीका, कच्छ,
=काछा, बट=घेरना) स्त्री० लंगोटी,
कोपीन । [जल, भंजन ।

प्रा० कजरा (सं० कज्जल) पु० का-

सं० कज्जल (कट=पुरा वा थोड़ा, ज-
ल=पानी) पु० काजल, मुरमा, भंजन ।

प्रा० कंचन (सं० काञ्चन, कचि=
चमकना) पु० सोना, सुवर्ण, २. जाति
विशेष ।

प्रा० कजु (सं० कज्जुक, कचि=वां-
कजुकी) धना) स्त्री० चोली, बांधु-
ली, भंगिया, कुरती ।

सं० कज्ज (कं=पानी, और शिर, जन्-
=पैदा होना) पु० कंबल, कपल,
२. प्रथा, ३. बाल, केस ।

प्रा० कज्जा-गु० निमकी आंखें भूरी हैं ।

सं० कट=भाँप काटकी । [कौत्र ।

सं० कटक (कट=घेरना) पु० सेना,

प्रा० कटना (सं० कट=काटना)
त्रि० अ० कटमाना, २. बीगना,
घनामाना ।

प्रा० कटनी (कटना) स्त्री० कटार,
अनाज कटने का समय ।

प्रा० कटरा-पु० चौड़, गहरा का बीष ।

प्रा० कटहल (सं० कट्टकफल)

पु० बटहर, एकमकार का फल ।

प्रा० कटा (कटना) पु० मारना,
कतल । [रना, मारना ।

प्रा० कटाकरना-बोल० कतलक-

सं० कटाक्ष (कट=नाना, अक्षि=
आंस वा, कट=गाल, अक्ष=कै-
लना) पु० देखी आंस से देवना
निरखी बितवन ।

प्रा० कटार (सं० कटार, कट=माना)
पु० मंतर, कटारी ।

सं० कटि (कटि=घेरना) स्त्री० कमर ।

सं० कटिवन्ध (कटि=कमर, बन्ध
=बांधना) भा० पु० कमरबैंधे,
२. पृथ्वी के ठंढे रम आदि भाग ।

सं० कटिवद्ध-मर्म० पु० कमरवाधि
हुये तैयार, मुस्तैद ।

सं० कटुं (कट=घेरना, माना) गु०
तीव्र, बहुत, तीखा, तीता २. द-
रावना, मचेद । [पंका ।

प्रा० कट्टर-गु० काटनेवाला, २

सं० कटोल (कट=दाँपना) पु०
भंडाल, बट, पुरा ।

सं० कट=आवेद ।

प्रा० कटंदर (सं० काष्ठोदर, काष्ठ=
काठ, उदर=पेट) पु० पक्षरोग का
नाम ।

सं० कटिन (कट=दुःख से जीना)
गु० क्रोध, कड़ा, निद्रु, पुरिक्त,
मग्न ।

कठि

सं० कठिनता (कठिन) भा० श्री०
कठोरता, निदुरता, मुश्किलता, क-
ठिनता ।

सं० कठोर (बट=दुग से जीना)
गु० कड़ा, कठिन, निदुर, सख्त ।

प्रा० कठोती (सं० काष्ठ) श्री० क-
ठौवा, बठड़ा, काठ का बरतन ।

प्रा० कड़क (बड़कना) श्री० य-
हारा, चटाका, गर्म, बड़बड़ाहट,
कड़ाका ।

प्रा० कड़सा-पु० लड़ाई में पुराने
समय के गूर बौरों की बड़ाई कर
के लड़नेवालों को माहम देना,
लड़ाई का मोठ जियमें लड़नेवालों
की हिम्मत बढ़ाने के लिये उनका
परा गायाजाना है ।

प्रा० कड़खेत-पु० भाट, लड़ाई में
बड़बाढ़नेवाला, एक जानि के
भाट अथवा चारण जो लड़ाई में
बढ़ा गाकर लड़नेवालों की
हिम्मत बढ़ावे है ।

प्रा० कड़ा } सं० कठोर) गु०
कड़ा } कठोर, दह, मखन, श्री०
पसी, परण ।

प्रा० कड़ा (सं० कटक, कट=पेरना)
पु० एक तरह का प्राण का गहरा,
२ दरवाजे का अथवा कड़ाह कड़ा-
होके पकड़नेकी चीज, हस्ता, बंद ।

प्रा० कड़ाका-पु० किसी चीज के
टूटने का घड़ाकावा शब्द, बरतास,
उपवास, फाका । [दिनारा ।

प्रा० कड़ाड़ा-पु० नदी का ऊंचा ।
प्रा० कड़ाह (सं० कटाह) पु० एक
तरह का लोहे का बरतन ।

प्रा० कड़वा (सं० कटु) गु० तीखा,
कस्वा । नेत्र ।

प्रा० कड़ोड़ } (सं० कटि गु० ती
कड़ार } लास-करोड़ प-
करोड़ } ति, जिसके पास
करोड़ रुपये हों,
करोर } बड़ा सेठ ।

प्रा० कड़ी-श्री० भोजनविशेष ।
सं० कण . बण=जाना) पु० बनाना
का दाना, बना, कनिका, परमा
गु, लव ।

सं० कण्टक (कण्ट=जाना) पु० कण्ट
२ बीरी, मधु, ३ नीब, ४ कण्ट
सं० कण्टकमय=कौटुम्बिक, क
का कण ।

सं० कण्ट (कण्ट=कट कराना)
गला, गरदन, घांटी २ प्रा
स्वर, गु० मुखस्थ, कंठस्थ,
भी याद ।

सं० कण्टस्थ (कण्ट=गला,
ठहरना) गु० मुखस्थ, मुख
बानी याद ।

प्रा० कण्ठा-पु० सोने के
घों की माला ।

के बड़े कुश के वंश में बतलाते हैं ।
जैपुर के राजा इस वंश के हैं ।

प्रा० कल्लु (सं० विचित्र) पु० कुल्ल, थोड़ा ।

प्रा० कल्लोटी (सं० कच्छोदिका, कच्छ
= काछा, बट=पेरना) स्त्री० लंगोटी,
कोपीन । [जल, भंजन ।

प्रा० कजरा (सं० कज्ज) पु० का-
सं० कज्जल (बट=बुरा बाधोका, ज-
न=पानी) गु० राजन, गुग्गुलु, भंजन ।

प्रा० कंजन (सं० काधन, कधि=
धमकना) पु० सोना, गुग्गुलु, २. नाति
रोग ।

प्रा० कजु (सं० कज्जु, कधि=वां-
कजुकी (पना) स्त्री० थोली, वांगु-
नी, भंगिया, कुम्भी ।

सं० कज्ज (बट=पानी, और गिर, जन
= पैदा होना) पु० कैंजन, कपल,
२. प्रसा, ३. बाल, बेश ।

प्रा० कज्जा-गुग्गुलुमही आदि मूली हैं ।

सं० कट=कौंय काटनी । [कौंय ।

सं० कटक (बट=पेरना) पु० मेना,

प्रा० कटना (सं० कट=काटना)
वि० अ० कटजना, २. बीजना,
बनाजाना ।

प्रा० कटनी (कटना) स्त्री० कटनी,
अनाज कटने का समय ।

प्रा० कटग-पु० कौंय काटनी ।

प्रा० कटहल (सं० कटहल)

पु० कटहर, एक प्रकार का फल ।

प्रा० कटा (कटना) पु० मारना,
कतन । [रना, मारना ।

प्रा० कटाकरना-बोल० कटकरना

सं० कटाक्ष (कट=मार्ना, अक्षि=
आंस बा, कट=माल, अक्षु=कै-
लना) पु० देखी आंस से देखना
निरखी चितवन ।

प्रा० कटार (सं० कटार, कट=जाना)
पु० मंतर, कटारी ।

सं० कटि (कटि=गेरना) स्त्री० कपरा ।

सं० कटिवन्ध (कटि=कपरा, बन्ध
=बांधना) प्रा० पु० कपराबन्ध,
२. पृथ्वी के बड़े रम आदि भाग ।

सं० कटिवद्ध-सं० पु० कपराबन्ध
हूये नैवार, मुस्तैद ।

सं० कटु० (बट=पेरना, जाना) गु०
नीम, कटुवा, तीखा, तीता २. ह-
रावना, मधुद । [पका ।

प्रा० कट्टर-गु० काटनेवाला, २.

सं० कटोल (कट=काटना) पु०
भंडाल, बट, बुरा ।

सं० कट=अभेद ।

प्रा० कटंदर (सं० काशेदर, काटु=
काट उदर=पेट) पु० पेटोग का
नाम ।

सं० कटिन (कट=दुग से पीना)
गु० कटोरा, कट्टा, निदुर, मुट्ठिन,
मटन ।

सं० कठिनता (कठिन) भा० स्त्री०
कठोरता, निदुरता, मुश्किलाव, क-
ठिनाई ।

सं० कठोर (कट=दुख से जीना)
गु० कड़ा, कठिन, निदुर, सख्त ।

प्रा० कठोरी (सं० कठ) स्त्री० क-
ठोरी, कठड़ा, कठ का बरतन ।

प्रा० कड़क (कड़कना) स्त्री० थ-
ड़ाका, घटाका, गर्जे, कड़कड़ाहट,
कड़ाका ।

प्रा० कड़खा-पु० लड़ाई में पुराने
समय के गुर धीरों की बढ़ाई कर
के लड़नेवालों को साहस देना,
लड़ाई का गीत जिसमें लड़नेवालों
की हिम्मत बढ़ाने के लिये उनका
यश गाया जाता है ।

प्रा० कड़वित-पु० भाट, लड़ाई में
बढ़ावा देनेवाला, एक भाग के
भाट अथवा चारण जो लड़ाई में
बढ़कर गाकर लड़नेवालों की
हिम्मत बढ़ाते हैं ।

प्रा० कड़ा (सं० कठोर) गु०
कड़ा } कठोर, दृढ़, मजबूत, स्त्री०
धर्मी, शरण ।

प्रा० कड़ा (सं० कट, कट=पेरना)
पु० एक तरफ का हाथ का गहना,
२ दरवाजे का अथवा कड़ाह कड़ा-
हों के एकदुनेकी चीज, हत्या, बेट ।

प्रा० कड़ाका-पु० किसी चीज के
दुने का घड़ाकावा शब्द, उठवास,
उपवास, फाका । [किनारा ।

प्रा० कड़ाड़ा-पु० नदी का ऊंचा ।

प्रा० कड़ाह (सं० कटाह) पु० एक
गरह का लोहे का बरतन ।

प्रा० कड़वा (सं० कटु) गु० तीता,
करवा } तेज ।

प्रा० कड़ोड़ } (सं० कोटि गु० सौ
कड़ोर } लाख--करोड़ प-
करोड़ } ति, जिसके पास
करोड़ रुपये हैं,
करोड़ } बड़ा सेठ ।

प्रा० कड़ी-स्त्री० भोजनविशेष ।

सं० कण (कण=जाना) पु० अमान
का दाना, कना, कनिका, परमा-
णु, लव ।

सं० कण्टक (कण्ट=जाना) पु० कंटा
२ बीरे, शत्रु, ३ नीच, ४ कण ।

सं० कण्टकमय=कौड़ेमेपरा, बोट
का रूप ।

सं० कण्ट (कण्ट=कट करना) पु०
गला, गरदन, घांटी २ आवाज,
स्वर, गु० मुखस्थ, पेटस्थ, जपा-
नी याद ।

सं० कण्टस्थ (कण्ट=गला, स्था=
ठहरना) गु० मुखस्थ, मुखप्र, ज-
बानी याद ।

प्रा० कण्ठा-पु० मोने के बड़े गुरि-
यों की माना ।

सं० कट्ट (कट्ट=मारना, वा कम्=
चाटना) स्त्री० वरपणमुनिकी स्त्री०
और नागों की माता ।

प्रा० कदराई (सं० कातरता) प्रा०
स्त्री० कायरपन ।

प्रा० कदराना (सं० कातर-) कि०
अ० कायर होना, दरपोक होना,
दरना, हिम्मत हारना ।

सं० कदर्य-गु० कायर, दरपोक,
हुसादिल, निन्दित, बदनाम, धूर्त ।

सं० कनक (कन्=चाहना वा चम
काना) पु० सोना, कंचन, मुवर्ण,
स्वर्ण, २ घन्टा ।

सं० कनककशिपु (कनक=सोना,
कशिपु=चपड़ा, पु० हिरण्यकश्यप,
एक दैत्यका नाम, महादेवका पिता ।

सं० कनकलोचन (कनक=सोना,
लोचन=आँख-) पु० हिरण्यचन्द्र,
एक दैत्यकानाम ।

सं० कनकाचल (कनक=सोना,
अचल=पहाड़) पु० मुमेर पहाड़,
मुमेर गिरि ।

प्रा० कनखल्ला-पु० कनखलाई, एक
मानवर का नाम ।

प्रा० कनपटी (सं० कर्णपट्टिका,
कर्ण=कान, पट्टिका=पट्टी) स्त्री०
पटपट्टी, कान के पास की जगह ।

प्रा० कनफटा-पु० एक प्रकार के
योगी मिनके कान फटे होते हैं ।

प्रा० कनागत (सं० कन्यागत,

कन्या राशिमें आगत ध्यान, जिस
में सूर्य कन्या राशि के भाते हैं २
(कणा + आगत=कनागत) पु०
आदपन्न, पितृपन्न, आशिवनका
पहला पन्थ ।

सं० कनिष्ठ (कन्=चाहना) गु०
छोटा, लहुरा, अनुज, पु० छोटा
भाई, युवन शब्द को बहुत अर्थ,
कनिष्ठ होना है ।

सं० कनिष्ठा (कनिष्ठ) स्त्री० छोटी
कनिष्ठिका (अंगुली, द्विगुली ।

प्रा० कने=गस, समीप, साथ ।

प्रा० कनेटी (कान बैठना) स्त्री०
कान बैठना, कान खंचना ।

प्रा० कनेर (सं० करबीर) पु० कने-
ल, एक प्रकार का फूल ।

प्रा० कनौजिया (सं० कान्पकुन्ज)
पु० कनौज देश का रहनेवाला,
२ माछणोंकी एकजाति जो कनौज
से निकले हैं ।

अं० कन्नेक्टर=कारखानादार, टे-
काधिकारी ।

अं० कन्ट्रीन्यु=मुसल्लल, धेणीपद,
जारी, संचलित ।

प्रा० कन्त (सं० कान्त, कम्=चाह-
ना) पु० पति, स्वामी, भर्ता, प्यारा,
मियतम, शीहर ।

सं० कन्या (कम्=चाहना) स्त्री०
गुदरी, कपड़ी, कपरी ।

मं० कन्द (कदि=मियोना, वा कं=
पानी, दी=देना) पु० कन्, कड
२० मंडली, कड, जैमिप्राजमौलर-
मुन आदि ।

मं० कन्दग (कं=गनी, इ=छड़ना,
गो हलमे फल्ये है) म्ये० मोह,
गुल, गुल ।

मं० कन्दर्प (कन्=कान्तु होना,
वा कन्=कुल । द्रुप=द्वन्द्व कर्त्तु
विमके होनेसे कुल कन्द रंभाई)
पु० कान्देव, काम, कन्द ।

मं० कन्दु-पु० कडाही, गुलछोईडा ।

मं० कन्दुक (कन्=कान्तु) पु० कंठ

मं० कन्ध (कं=शिर, वा कं=
कन्ध) मन्दा काक, मन्दा,
कंवा, कौव, कंज, २ कंज ।

मं० कन्धि (कं=कन, वि=गना ।
पु० मनुद, देव, कं=कौव, मन्दा ।

मं० कन्याका (कन=काना, कं=
कौव लड़की, दशरथ १६ की
लड़की ।

मं० कन्या (कन=काना) कं=लड़
की, २ बेटी, ३ कुमारी, ४ दशर
थामें की लड़की रामि, ५ कौव
रथ, ६ विक्रम कन्यादान (क-
न्या=बेटी, दान=देना) लड़की की
प्राप्त देना ।

प्रा० कन्देया (मं० कन्ध) पु० की
कन्ध का नाम ।

सं० कण्ट (कं=शिर, द्रुप=छड़ना)

पु० कन, कौवा, कौव, कौव
कौव, दगा ।

मं० कपटी (कन्ध) पु० कन
बेना देने वाला, छेरी का
दगाकाज, कावरी ।

प्रा० कपट्टा (मं० कन्ध, कन्=विनेमो
देना) पु० कन्, कन्, कन्

प्रा० कपट्टि होना-कौम=क
मनाहोना, कौमनाहोना, इतिहास

मं० कपट्टे (कं=कन, दं=दुर्ग का
ना) पु० कपट्ट, कपट्टे की मं
विममे कपट्टिने काज दिया ।

मं० कपट्टि } कं=दं=दुर्ग
कपट्टी } पु० कपट्टे ।

मं० कपट्टिका-मं० कपट्टिका
है ।

मं० कपट्ट (कन्ध, कन्=विनेमो
का काज विनेमो कपट्ट दिया

कन्ध कन्धमे दगा कौमनाहोना
पु० कपट्ट, कपट्टी, कौमना

मं० कपट्ट (कं=शिर, द्रुप=छड़ना)
पु० कपट्ट, कपट्ट, २ कपट्ट

कपट्ट ४ कपट्ट, कपट्ट, कपट्ट
कपट्ट दिया कपट्ट=कपट्ट की

दगा, कपट्ट, कपट्ट, कपट्ट, कपट्ट
दुर्ग की कपट्ट

कपट्ट

कपट्ट

कपट्ट

सं० कपाली (क० पु० महादेव ।

प्रा० कपास (सं० कर्पास, क० क०
रना) पु० रई, रई का पेड़ ।

सं० कपि (क० क० क०) पु० चन्द्र,
पानर ।

सं० कपिकुञ्जर (कपि=चन्द्र, कुंजर
=रायो) पु० चन्द्रों का राजा,
चन्द्रों का प्रधान ।

प्रा० कपिन्दा (सं० कपीन्द्र, कपि=
चन्द्र, इन्द्र=राजा) पु० बानरों का
राजा, सुग्रीव, हनुमान्, अंगद ।

सं० कपिपति (कपि=चन्द्र, पति=
राजा) पु० बानरों का राजा, सुग्रीव ।

सं० कपिध्वज (कपि=चन्द्र, ध्वज=
ध्वज, अर्थात् जिसके झंडे में चन्द्र
का निशान है) पु० अर्जुन ।

सं० कपिपोत (सं० कपि+पुत्र)
पु० बानर का बच्चा ।

सं० कपिल (इव=सराहना) पु० एक
मुनि का नाम जिसने सांग्यशास्त्र
बनाया ।

सं० कपिला (क०=मराहना) स्त्री०
पीली गाय, कपिलगाय ।

सं० कपीश (कपि=चन्द्र, ईश वा
कपीश्वर) ईश्वर, राजा) पु० सुग्रीव
हनुमान्, बानरों का राजा ।

प्रा० कपुत्र (सं० कुपुत्र, क०=बुरा
पुत्र=बेटा) पु० बुरा
लड़का, कुबुदिलका

प्रा० कपूर (सं० कर्पूर, क०=
रमना वा कर्पूर सुगन्धित है)

पु० एक सुगन्धित चीज, का

सं० कपूर तिलक=नाम, रायी
जो ब्रह्मावर्त कर्पावृष्टि में

सं० कपोत (क०=इवा, पोत=महा
जिमके छिये इवा महाजके तुल्य
वा क०=रंगरंग का होना, पु० क०
तर, पदेवा ।

सं० कपोल (क०=काँतना, वा क०=
पानी, पुन=बहना) पु० गाल,
करसारा ।

सं० कफ (क०=पानी, फन्=बहना,
जो पानी से बढ़ता है) पु० राखार
धूर, बलगाय ।

प्रा० कव (सं० कदा) कि० वि०
कद किममय ।

प्रा० कवतक } कि० वि० किस स-
कवतलक } मयनक, कर्त्तव्य,
कवलों } किन्ती देरतक ।

प्रा० कवकव-बोल० किमकिममय ।

प्रा० कवडी-स्त्री० लड़कों के एक
खेल वा नाम जिसमें सब लड़के
छपने दो झुपट बनाने हैं और
जमीन पर खेतने हैं ।

सं० कवन्ध (क०=गिर, वध=राटना,
वा मारना) पु० विन गिरा पड़,
एक राक्षस का नाम ।

प्रा० कवरा (सं० कर्चुर, कवू=रंगना
बा० कर्वू=जाना) गु० चितकवरा,
रंग रंग का, रंग वरंग । [काम ।

प्रा० कवारू-पु० गुन, हुनर, धंधा,
सं० कमठ (क=मल, अठ=जाना,
वा कम्=चाहना) पु० कछुवा क-
च्छ, कर्प ।

प्रा० कमठा-पु० एक प्रकार का धनुष ।

प्रा० कमण्डल (सं० कमण्डलु, का
=गानी, मण्ड=शोभा, लां=केना)
पु० दंडी और संन्यासीलोगों के
पानी रखने का काठ का अथवा
मिट्टी का बरतन खप्पर २ कासा,
प्याला ।

सं० कमनीय (कम्=चाहना) मं०
पु० सुन्दर, सुयरा, सुयद, सुहावना,
मनोहर, मनभावन, दिलचस्प,
दिलगीर ।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरद्द, कर्म=
काम (भोजनआदि) रद्द=थार)
पु० एक प्रकार का फन ।

सं० कमल (कं=गानी को, अठ=
शोभा देना, वा कम्=चाहना, शो-
भना) पु० कपल, पत्त, भलज ।

सं० कमला (कमल, अर्थात् त्रिमूर्ति
हाथ में बसन्त है) स्त्री० शङ्खी,
विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत ।

सं० कमलापति (कमला=नरसी,

पति=मर्चा) पु० विष्णु, भगवान्,
नारायण ।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री० कु-
मोदनी, २ कमलों का समूह ।

प्रा० कमाई (कमाना) पा=स्त्री० मांति,
लाभ, उपार्जन, २ काम ।

प्रा० कमाऊ (कमाना) गु० कमाने
वाला, मिहन्ती, उद्यमी, परिश्रमी ।

अं० कमाण्डनचीफ=मधान, सेना-
ध्यक्ष कौमन्ता आलाहाकिम ।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म,
कृ=करना) कि० सं० कमाई करना,
पाना, नसि करना, पैदा करना,
उपार्जन करना, २ काम करना, ३
साक करना (चमड़ा या पाखाना)
४ (कम) कम करना, घटाना ।

अं० कमीशन=नियुक्तगण, किसी
मुख्य बात के हेतु चुने मनुष्य अ-
न्य देश में भेजे जाते हैं २ मुल्लि-
यारनामा ३ मेहनताना ।

अं० कमनांटयडसिविलसर्विस
=१६ शास या सनद त्रिमूर्ति सर-
कार नौकरी देनेकी त्रिमूर्तिदार है ।

प्रा० कमेरा (काम) पु० काम करने
वाला, मजदूर, २ सहायक, मदद-
गार ।

प्रा० कमोदनी (सं० कुमुदिनी, कु-
मुनी, मुद=वर्धन करना) स्त्री०

- कपलिनी जो रात को तिलवी है ।
और दिन को बंद हो जाती है ।
प्रा० कपोरी-स्त्री० मटकी, गगरी ।
सं० कम्प } (कम्प=कौपना) भा०
कम्पन } पु० परपराइट, कम्प
कम्पी, कर्ता ।
प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प=
कांपना) कि० अ० परपराणा,
कौपना ।
सं० कम्पित (कम्प=कांपना) र्भ्य०
कांपता हुआ, परपराता हुआ,
कम्पायमान ।
सं० कम्बल (कम्ब=जाना वा कम्प=
चाहना) पु० कामरी, लोई, ऊनी
कपड़ा, दोशाला ॥
सं० कम्बु (कम्प=चाहना) पु० शंख,
हस्ती, शम्बूक, पौषा, सूती घुड़ी गु०
विषवर्ण अर्थात् चितकचड़ा ।
सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा=
गरदन) गु० मिसकी गरदन शंख
देसी हो ।
सं० कर (क=करना) पु० हाथ, २ हाथी
की सूँड़, १ (क=विलेखना, फैलाना)
किरन, ४ पशमून, मातगुजारी,
५ जड़, हस्तनक्षत्र ।
सं० कर्करा (सं० कर्कर, क=करना)
पु० स्रोटा सिफा, २ एक पल्लवका
नाम गु० कठोर, कड़ा ।
करगहना (सं० कर=ग्रहण;
१४
- कर=हाथ, प्र=छेना, पकड़ना) मि
सं० व्याह करना, व्याह में दुलहि
का हाथ पकड़ना ।
सं० करटक-पु० नाम मृगाल, सि
यार, कलेजा ।
सं० करभर्षण (कर=हाथ, भर्षण=
मलना, गृष्प=पिसना, गलना) भा०
पु० हाथमलना, हाथपीजना ।
सं० करज (कर + जन्म=पैदा होना)
पु० नम्र, नागून ।
सं० करण (क=करना) पु० साधन,
काम सिद्ध करने का उपाय, हथि-
यार, औजार, २ व्याकरणमें तीस-
रा कारक, १ इन्द्रिय, ४ काम, ५ काया,
शरीर, ६ कारण, ७ धर्म, ८ कारण,
कायस्थ, ९ उपोतिष में एकरह के
समयके विभागों को कारण कहते हैं
वे ११ हैं, उनमें से ७ चलते हैं और ४
स्थिर हैं और दो कारण मिल के
एक चन्द्र दिनके घरावर होते हैं ।
प्रा० काणी (सं० करणीय, करने
योग्य, क=करना) स्त्री० काम, धंधा,
२ हाथी ।
सं० करणी (क=करना) स्त्री० गणित
विद्या में ऐसी राशि को कहते हैं
जिसका ठीक मूल नहीं मिले ।
सं० करण्ड (क + शब्द) पु० कारक
पत्ती, कौवा, २ टिन्ना, टिबियां,

प्रा० कवरा (सं० कर्वुर, कर्वू=रंगना
(वा० कर्वू=जाना) गु० चितकवरा,
रंग, रंग का, रंग वरंग । [काम ।
प्रा० कवारू-पु० गुन, हुनर, धंधा,
सं० कमठ (क=जल, अल्=जाना,
वा कम्=चाहना) पु० कडुवा क-
च्छप, कूर्प ।

प्रा० कमठा-पु० एक प्रकार का धनुष ।

प्रा० कमण्डल (सं० कण्डल, का
=गानी, मण्ड=शोभा, कां=केना)

पु० दंडी और संन्यासी लोगों के
पानी रखने का काठ का अथवा
मिट्टी का बरतन खण्ड २ कासा,
प्याला ।

सं० कमनीय (कम्=चाहना) र्म्यं०
पु० सुन्दर, सुधरा, सुघट, सुहावना,
मनोरम, मनभावन, दिलचस्प,
दिनगीर ।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरख, कर्म=
काम (भोजनआदि) रख=धार)
पु० एक प्रकार का फल ।

सं० कमल (कं=गानी के, अल्=
शोभा देना, वा कम्=चाहना, शो-
भना) पु० कमल, पद्म, जलज ।

सं० कमला (कमल, अर्थात् जिसके
हाथ में कमल है) स्त्री० लक्ष्मी,
विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत ।

सं० कमलापति (कमला=लक्ष्मी,

पति=भर्ता) पु० विष्णु, भगवान्,
नारायण ।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री० कु-
मोदनी, २ कमलों का समूह ।

प्रा० कमाई (कमाना) भा० स्त्री० भाति,
लाभ, उपार्जन, २ काम ।

प्रा० कमाऊ (कमाना) पु० कमाने
वाला, मिहन्ती, उद्यमी, परिश्रमी ।

अं० कमाण्डूनचीफ=प्रधान, सेना-
ध्यक्ष फौज का आलाहाकिम ।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म,
कृ=करना) कि० सं० कमाई करना,
पाना, नसि करना, पैदा करना,
उपार्जन करना, २ काम करना, ३
साक करना (चमड़ा या पाखाना)
४ (कम्) कम् करना, घसाना ।

अं० कमीशन=नियुक्तगण, किसी
मुख्य बात के हेतु जुने मनुष्य अ-
न्य देश में भेजे जाते हैं २ मुल्लि-
धारनामा ३ मेहनताना ।

अं० कमनांट्यडसिविलसर्विस
=बह पास या सनद जिनमें सर-
कार नौकरी देनेकी जिम्मेदार है ।

प्रा० कमेरा (काम, पु० काम करने
वाला, मजदूर, २ सहायक, मदद,
गार ।

प्रा० कमोदनी (सं० कुमोदनी, कु-
मुनी, मुद=हर्षित करना) स्त्री०

मं० करण्ड (कृत् + णञ्) दु० अक
बर्ही, भीरा, २ दिन्ना, तिरिपा,

कमलिनी जो रात को रिलती है।
और दिन को बंद हो जाती है।

प्रा० कपोरी-स्त्री० मटकी, गगरी।

सं० कम्प { (कम्प=कौपना) भा०
कम्पन पु० परपराइट, कम्प
कम्पी, कर्ता ।

प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प=
कौपना) कि० अ० परपराणा,
कौपना ।

सं० कम्पित (कम्प=कौपना) र्भ०
काँटा हुआ, परपराता हुआ,
कम्पापमान ।

सं० कम्बल (कम्प=जाना वा कम्प=
चाहना) पु० कापरी, तोर, ऊनी
कपडा, दोशाला ॥

सं० कम्बु (कम्प=चाहना) पु० शंख,
हस्ती, शम्बूक, पौषा, मृती चूड़ी गु०
विभरण अर्थात् चिह्नकपडा ।

सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा=
गरदन) गु० जिसकी गरदन शंख
देसी हो ।

सं० कर (क=करना) पु० हाथ, २ हाथी
की सूँड, १ (क=विलेखना, कैलाश)
किरन, ४ महमूल, माछगुमारी,
५ नद, इस्त्रनचत्र ।

प्रा० कर्करा (सं० कर्कर, क=करना)
पु० खोटा सिक्का, २ पट्टे पलेरुका
नाम गु० कठोर, कडा ।

सं० करगहना (सं० कर=ग्रहण,
१४

कर=हाथ, ग्रह=केना, पकड़ना) कि०
सं० व्याह करना, व्याह में दुलहिन
का हाथ पकड़ना ।

सं० करटक-पु० नाम मृगाल, सि-
यार, कलेजा ।

सं० करधर्पण (कर=हाथ, धर्पण=
मलना, धृप्=पिसना, गलना) भा०
पु० हाथमलना, हाथपीजना ।

सं० करज (कर+जन्=पैदा होना)
पु० नख, नाखून ।

सं० करण (क=करना) पु० साधन,
बाप सिद्ध करने का उपाय, दधि-
सार, औजार, २ व्याकरणमें तीस-
रा कारक, १ इन्द्रिय, ४ काम, ५ काया,
शरीर, ६ कारण, ७ छत्र, ८ कारण,
कायरप, ९ व्योतिष में एकतरह के
समयके विभागों को कारण कहते हैं
वे ११ हैं, उनमें से ७ चलते हैं और ४
स्थिर हैं और दो कारण मिल के
एक चन्द्र दिनके बराबर होते हैं ।

प्रा० करणी (सं० करणीय, करने
योग्य, क=करना) स्त्री० काम, पंथा,
२ थायी ।

सं० करणी (क=करना) स्त्री० गणित
विद्या में ऐसी राशि को कहते हैं
जिसका ठीक मूल नहीं मिले ।

सं० करण्ड (क+जन्=पैदा होना) पु० काक
पंजी, कौवा, २ दिन्वा, दिविवा,

- पीड़ा अथवा दुःखके कारणे आह
मारना, कहरना ।
- सं० करिण (कर=सूँद अर्थात् सूँद
वाला) पु० हाथी, गज, मत्तग ।
- सं० करीर (कू=फैलाना, वा मारना)
पु० बांसका अंकुर, २ करील, एक
महारका कैंटीला वृक्ष जो मरुस्थल
में वगडारे और उसको जड़ें लाते हैं ।
- सं० करुणा (कृ=करना, वा कू=
कैंटना) श्री० दया, कृपा, अनुग्रह,
२ नाम वृत्तका ३ नवरसमें एक रस ।
- सं० करुणानिधान (करुणा=दया,
निधान=रक्षाना) गु० करुणा के
रक्षाना, कृपालु, दयालु ।
- सं० करुणामय (करुणा=दया, मय
=रूप) गु० दयाके रूप, दयामय,
दया करनेवाला, दयालु, कृपालु ।
- सं० करुणायुतन (करुणा + आयु-
तन) पु० दया के स्थान ।
- सं० करुणार्द्रि (करुणा=दया, आर्द्रि=
गीला) पु० करुणानिधान, करु-
णामय, दयालु ।
- प्रा० करुवा (सं० करक, कृ=करना)
पु० कर्मदन्तु, करवा, कठारी, पिटी
का कोरा बरतन—करवाचौय=एक
पर अथवा तयोहार जो आठिक के
मराने में होता है ।
- सं० करेणु—पु० हाथी, हस्ती ।
- प्रा० करेला (सं० कटिष्ठ, कृद=धेर-
- ना) पु० एक तरकारी का नाम जो
कुछ कड़वी होती है ।
- प्रा० करोनी-श्री० दूधकी सुर्वनः ।
- प्रा० करौदा (सं० कर्मदन्तु, कर
=हाथ, कृद=मलना) पु० एक फल
का नाम ।
- सं० कर्क (कृ=करना, वा कू=कैंटना)
पु० कैंकड़ा, २ चौथीराशि, ।
- सं० कर्कट (कृ=करना) पु० कैंकड़ा,
गिगडा, २ चौथीराशि, सर्प ।
- सं० कर्कश (कर्क=कठिनता, वा कू=
कैंटना, कश=मारना) गु० कठोर,
कठिन, कड़ा, निर्दय, लड़ाका ।
- सं० कर्कशा-श्री० लड़ाका, भगड़ा
करनेवाला, कलारी । [का पैदा ।
- सं० कर्कन्धु श्री० बदरीवृक्ष, धेर
- सं० कर्ण (कृ=करना, अर्थात् शब्द
का ज्ञान करना) पु० कान, २ (कर्ण=
मेदना, वा कू=फैलाना) पनवार,
१ त्रिभुज स्तेनमें भुज और कोटि को
बोदे तीसरी भुजाका नाम, ४ चौको-
ने स्तेन में उस लकड़ी का नाम जो
सायने के कोनों से सींची जाती है,
आध काट, ४ कुंजीका बेटा जो सूर्यके
अंग से पैदा हुआ ।
- सं० कर्णधार (कर्ण=पनवार, धृ=रख-
ना) पु० बांझी, चहनदार, जरात
बतानेवाला, नाबिक, केवट, मज्जाह ।
- सं० कर्णफूल (कर्ण=ज्ञान, फूल

अर्थात् कानकाफल) पु० कान में
पहनने का गहरना, कर्णभूषण ।

सं० कर्णवेध } (कर्ण=कान, विघ्न=
कर्णवेधन } वेदना) पु० कान
विन्यसना, कानछिदाना ।

सं० कर्णमण्डक (मण्ड=शोभा
देना) क० पु० कर्णफल, पिरिया,
२ मण्डगण्ड ।

सं० कर्णाट-पु० कर्णाटकदेश ।

सं० कर्णिका (कर्ण + इक, कर्ण
वेदना) श्री० शरीर की सूँड़ की
नोक, हाथ की बीच की अंगुली,
मध्यमा, कलम, लेखनी, कुटिनी,
हस्तभूषण, कर्णदूत ।

सं० कर्त्तन (कृ=काटना) पु० कतरन,
काटना, छांटना ।

सं० कर्त्तरिका } (कृ=काटना) श्री०
कर्त्तरी } कतरनी, कैची ।

सं० कर्त्तव्य (कृ=करना) श्री० पु०
करने योग्य, जो कृद्धारनाचाहिये,
अवश्य उचित, योग्य, शान्तिव ।

सं० कर्त्ता (कृ=करना) पु० करने
वाला, बनानेवाला, २ सृष्टि पैदा
करनेवाला, ईश्वर, ३ व्याकरण
में पहला भाग, ४ अन्य बनाने
वाला, ५ पति, मालिक, स्वामी,
कारिवासी ।

प्रा० कर्त्तार (कं=करनी) पु० करने
वाला, २ पैदा करनेवाला, ईश्वर,
मित्रवत्सल, मृदुहृदय ।

सं० कर्द } (कर्द=कुरा, शब्दकरना)

कर्दम } पु० कीचड़, कादो, बहला ।

प्रा० कर्धनी (सं० कटि=घारलीव,

कटि=कमर, घारलीव=पहनने वो-

ग्य, घृ=घारणकरना वा कटिबन्धन,

कटि=कमर, बन्धन=बांधना) श्री०

कंपनी, कमर में पहननेका गहना ।

सं० कर्पूर (कृष्=लक्ष्य होना) पु०

कपूर, बाहुभूषण ।

सं० कर्बूर (कर्ब=माना) पु० लस,

हरिताल, राक्षस ।

सं० कर्म (कृ=करना) पु० काम,

धंधा, २ धर्मसंबंधी काम, जैसे ब्रह्म,

होम, दान आदि, ३ पहले जन्म में

दिया हुआ, ४ कर्मकारक, दूसरे

कारक (व्याकरण में) ५ भाग,

किस्म ।

सं० कर्मकाण्ड (कर्म=काम, कर्म

=समूह) पु० कर्मों का समूह, ३

जय होम व्रत आदि, ३ केद का

एक भाग ॥

सं० कर्मकार (कर्म=काम, कर्म

=करने वाला, कृ=करना) पु०

काम करने वाला, ३ मुहुर ।

सं० कर्मनागा (कर्म=काम, काम,

वा पुण्य, नाश=नष्ट करने) श्री०

एक नदी जो बनारस की किनारे

के बीच में है ॥

सं० कर्मनिपुणार्द्ध-भा० स्त्री० कर्म-
कुशलता, काम की चतुर्ताई, कारीगरी।
पं० कर्मनिपुणार्द्ध-भा० स्त्री० कर्म-

ॐ कर्मपथ-स्त्री० कर्ममार्गः, वेद
स्त्री रीति, तरीकय शरीर ।

० कर्मभोग (कर्म=गले जन्म
में किये हुये काम का फल, भोग=
भोगना) पु० भले बुरे का फल, मा-
रूप के फल का भोग।

सं० कर्मेन्द्रिय (कर्म=काम, इन्द्रिय=इंद्र) की० काम करने की इंद्रि जैसे हाथ पांव आदि (इन्द्रिय शब्द को देती) ।

सं० कर्प (कृष्=सौवर्णा) पु० वैर
रितोष, रोष, ईर्ष्या, जैसे " वातदि
शत्रु कर्प यदि ध्याई" (रामायण)
२. सोलह मासे का

सं० कर्पक (हृष्ट-वर्षा, इल-जो-
वना) पु०: किसान, जोषा, जोवने
= बाला ।

सं० कर्पण (कृष्ण-सूचिना, इल जो-
तना) पु० संघ, तान; २ श्रोतना,
प्रेरणी करना ।

प्रा० कल } (सं० कल्य, कल्य=गिन-
काल } ना) पु० भानका परला
वा पिदला दिने ११११ ११११

प्रा० कलकीवात-बोल० नो० पोदे
दिनों की बात, जो कुछ पोदे दिन
पहले हुआ हो ।

प्रा० कल-व्री० वैत, भाराम, सुत,
राइत ।

प्रा० कलमकल-बोल० बेचैनी, बे-
आरापी, बेकली, दुःख, तकलीफ ।
प्रा० कल (सं०)

प्रा० कल (सं० कला, कल-शब्द
करना) स्त्री० जन्म, यन्त्र, २ वेदक
की कल, चाप, ३ दाँव, पैवा ।
प्रा० कलकल-शब्द

प्रा० कलका आदमी-बोल० बहुत
दुखला आदमी, २ पुतला ।

प्रा० कलकाघोड़ा-बोल० बहुत अ-
वका सिसाया हुआ और अधीन
घोड़ा ।

सं० कल (कल्=शब्द करना) पुं०
 बीठा शब्द, २ (कल्=पतनश्रोता)
 बीर्य, बीज, गुं० बीठा, सुन्दर ।

सं० कलकण्ठ (कल=मीठा, बा
मुन्दर, कंड=गला) स्त्री० कोयले,
बोहिला, गु० मुन्दर वा मीठे
कण्ठवाली ।

सं० कलकल (कल=शब्द करना)
 पु० कोठारल, कलरन्तो, ऐसा
 शब्द, कचकच, भकभक, पकपक...

सं० कलङ्कः (क=मुक्त, बा=आत्मा,
कङ्कि=विगादना, बा कल्=माना)
पु० दाघ, दोष, चिह्न, लक्षणत,
लाञ्छन ।

प्रा० कललिभां (सं० कल्लमिह,
काल=काली, मिह=मीप) गु०

पुरा चीतनेवाला, दुर्जन, पुरा चाह-
नेवाला ।

सं० कलत्र (कल=वीर्य, त्रा=वचा-
ना वा गड=सींचना, यहाँ ग को
क और ड को ल हो जाता है)
स्त्री० पत्नी, भार्या, लुगाई, स्त्री ।

सं० कलधौत (कल=मैल, धौत=
धोया) गु० मलरहित २ सोना ।

सं० कलन (कल्=गिनना) भा०
पु० गिनना, चिह्न-।

प्रा० कल्प-पु० बालों के रंगने का
रंग, खिताब, माँड़, छेई ।

प्रा० कल्पना (सं० कल्पन, कप्=
दुबला होना) क्रि० अ० कुदना,
पद्यताना, पिलावाना, दुःखी होना,
दुःख पाना-।

प्रा० कल्पाना (कल्पना) क्रि०
सं० कुदना, सताना, दुःख देना ।

सं० कलभ (कल्=शब्द करना)
पु० हाथी का बच्चा, ।

अ० कलम=लेखनी ।

प्रा० कलमकल-स्त्री० पवरानि, दुःखा

प्रा० कलमलाना-क्रि० अ० कुल-
बुलाना, छटपटाना, कुलबुलाना,
विलना ।

प्रा० कलवार-पु० कलाल, कलार,
मुंढी, मदिरा खींचनेवाला और
बेचनेवाला ।

सं० कलश (कल=शब्द, श=जाना)
पु० घड़ा, गगरा, पानी रखने का
बरतन, २ मन्दिरों के ऊपर का
शिवर ।

प्रा० कलशिरा (सं० काल=कासा;
कलसिरा) शीर्ष=शिर) गु०
काले शिरवाला, काले शिर का,
पु० मनुष्य, आदमी ।

सं० कलस (क=पानी, लम्=शो-
भना) पु० घड़ा, कलश, २ मन्दिर
का शिवर ।

सं० कलहंस (कल=सुन्दर, हंस)
पु० राजहंस ।

सं० कलह (कल=पीडा, शब्द, हन्
=मारना) पु० लड़ाई, झगडा,
विरोध, गु० कलहकार=झगडालू,
लड़ाई करनेवाला २ कलहकारिणी
=झगडालू स्त्री लड़ाई करनेवाली ।

सं० कला (कल्=गिनना, जाना)
स्त्री० बहुत छोटा, भाग, भेद का
साठवाँ हिस्सा, २ चन्द्रमण्डल का
सोलहवाँ भाग, ३ समय का हिस्सा,
साठ सेकंड, ४ दल, कपड, बेहाना,
करेव, ५ गुच्छ, हुनर, राजा, बच्चा
ना आदि ५४ कला ।

कला चौंसठहै ॥

१-गीत=गाना अर्थात् स्वरों रानों
और रागिनियों को जानना और उन
को अभ्यास करना ।

- २-चाद्य=धाना बजाना ।
 ३-नृत्य=नाचना ।
 ४-नाट्य=नकल करना, नाटक खे-
 लना ।
 ५-आलेख्य=लिखना और चित्र-
 पट्टी या नी मुसव्वरी करना ।
 ६-विशेषक छेद्य=अनेक प्रकार के
 गौर और तिलक लगाने के सांघे
 बनाना ।
 ७-तण्डुलकुसुमवलिविकार
 क्रिया=बिना दूधे चारल और
 फूलों के चौक देवमन्दिरों में पूरना ।
 ८-पुष्पास्तरण=फूलों की सेज
 बनाना ।
 ९-दशनवसनांगराग=दांतों के
 वसन मिस्री आदि और बत्त और
 अंगराग बनाना और लगाना ।
 १०-मणिभूमिकाकर्म=गर्भी के
 दिनों में रहने के लिये घरविशेष
 बनाना ।
 ११-शयनरचन=पलंग विधाना ।
 १२-उदकवाद्य=पानीमें धाना ध-
 जाना या मलनरंग ।
 १३-उदकघात=पानी के रेत, धी-
 ला देना या पानी हाथों से दबाकर
 ऊपर उठाना ।
 १४-चित्रयोग=१ नपुंसक करना,
 २ भवान की छुरदाँ और ३ छुरदा
 की प्रवान करना ।

- १५-माल्यग्रन्थनविकल्प=देव
 पूजा के लिये अनेक प्रकार के माला
 और बस्त्र बनाना ।
 १६-शेखरापीडयोजन=शिरः में
 अनेक प्रकार के फूलों की रचना ।
 १७-नेपथ्यप्रयोग=देशकालानु-
 सार बस्त्र पहिना ।
 १८-कर्णपत्रभंग=हाथीदांत और
 शंखादि के कर्णफूल बनाना ।
 १९-गन्धियुक्ति=अनेक प्रकार के
 सुगन्धित पदार्थ बनाना और ल-
 गाना ।
 २०-भूषणयोजना=गहनेपहनना ।
 २१-ऐन्द्रजाल=राजीगरों की तरह
 शोबिंदे अर्थात् लीला दिखाना ।
 २२-कौटुमारयोग=कुत्तों को सु-
 न्दर करना ।
 २३-हस्तलाघव=हाथों को फुरती
 और हलकेपने से काममें लाना ।
 २४-चित्रशाका पृष भक्ष्य
 विकार क्रिया=अनेक प्रकार
 की तरकारियाँ और भोजन के
 व्यवजन बनाना ।
 २५-पानकरसरगासव्योजन=
 अनेक प्रकार के पीने के शर्बत या
 मर्क और शराब बनाना ।
 २६-सूचीकर्म=सीना और बुनना ।
 २७-मूत्रप्रोद्धान=मूत्र प्रोद्धान के सांघे

- दिग्गताका सत्त्विक हो दूध और दूधे हो सत्त्विक दिग्गता । [कहना]
- २८-प्रदेनिका=वेनीपीनना और
- २९-प्रनिनाला=वैरकभी पा रजो-
रहे कनिर कचुगने दूध रजो क
काय । [का कहना ।
- ३०-द्वान्नक्तयोग=रहित रातों
- ३१-दुग्धकसानन=पैपासादि क-
रद्वय और रात के रात दुग्धक
३२-११ ।
- ३३-द्वान्नक्तयोगिका दग्धन=
रहे रजो रजो रजो रजो रजो रजो
३४-११ ।
- ३५-कान्तममयापुर्ण=दीप्त,
कान्त से रजो क हो पूर्ण करना
- ३६-गदिकाप्रेषणापिकल्प=
३७-११ ।
- ३८-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
३९-११ ।
- ४०-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
४१-११ ।
- ४२-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
४३-११ ।
- ४४-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
४५-११ ।
- ४६-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
४७-११ ।
- ४८-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
४९-११ ।
- ५०-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
५१-११ ।
- ५२-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
५३-११ ।
- ५४-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
५५-११ ।
- ५६-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
५७-११ ।
- ५८-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
५९-११ ।
- ६०-नक्तममयापुर्ण=रजो रजो
६१-११ ।

- घोंके रंग और घन की शानि मा-
नना और परिधानना ।
- ४१-वृत्तायुर्वेदयोग=दृष्टों का
तरीक़ा रजो रजो रजो रजो रजो
योग काय ।
- ४२-मेघ कुमुद लावक युद्ध
विधि=मेघे पुर्ण लावक के युद्ध की
रीति ।
- ४३-शुक मागिका प्रदापन
अपुष्पा और पैना को पशाना ।
- ४४-उत्पादन=उत्पादन करना और
लगाता और शरीर का दापना ।
- ४५-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ४६-अश्वमुद्रिकाकथन=पैना
लिखा हुआ पशाना ।
- ४७-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ४८-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ४९-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५०-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५१-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५२-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५३-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५४-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५५-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५६-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५७-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५८-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ५९-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ६०-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।
- ६१-कैग मा र्जन कौशल=पानी
का लपना और नेत्र डगाना ।

- ५२-धारणमात्रिका=स्पर्शशक्ति का बदना जिस से मुनतेरी याद होनावे ।
- ५३-समवाच्यसमपाठ्य=बिना पढ़े हुये को दूसरे का पढ़ना मुन कर उसके समानही पढ़ते या चाँच-ते जाना ।
- ५४-मानसीकाव्य क्रिया=उसी क्षण काव्य बनाना दूसरे के मन की बात जानना । [ना ।
- ५५-अभिधान-कोप=कोपबना-
- ५६-छन्दोज्ञान=नरहरहर के छन्दों का परिचानना ।
- ५७-क्रियाविकल्प=काव्यों के अलङ्कार जानना ।
- ५८-छलितक योग=बैचन करने या मोहने के हेतु बेप बदलना अर्थात् देवारी ।
- ५९-वस्त्र गोपन=फटे कपड़ों का ऐसा पहिनना कि मालूम न पड़े या इच्छित प्रकार से पहिनना ।
- ६०-दृष्टविशेष=तुम्हां देखना ।
- ६१-आकर्ष्यकीड़ा=गँगाखेलना
- ६२-वालकीड़न कर्म=वालकों के लिये सिलाने बनाना ।
- ६३-वैनयिकी वैजयिकी विद्या=विनय और विजय के उपाय ।
- ६४-वैतालिकी व्यायामिकी

- विद्या=मन में और दाँवपैच आदि ।
- प्रा० कलाई-श्री० पहुँचा ।
- सं० कलाधर (कला + धृ=धरना) क० पु० चन्द्रमा, महताव ।
- सं० कलाप (कला=भाग, आप=पाना) पु० समूह, २ संस्कृत भाषा का व्याकरण, २ मोरकी पूँछ ।
- सं० कलापक (कलाप + अक) क० मोर, मयूर, ताऊस ।
- सं० कलापी (कला + मोरकी पूँछ) पु० मोर, मयूर । [का तार ।
- प्रा० कलावचन-पु० सोना चाँदी
- प्रा० कलार } पु० कलार, मदिरा
कलाल } खेचनेवाला और
बैचनेवाला । [श्री० ।
- प्रा० कलारिन-श्री० कलार की
- प्रा० कलावंत-पु० गानेवाला, गवैया, दादी ।
- सं० कलि (कल्=गिनना) पु० घोषा युग, कलियुग, कलियुग, (युगशब्द को देखो) २ लड़ाई, भगड़ा ।
- सं० कलिका } (कल्=माना, वा
कली } गिनना) श्री० कौपल
विन सिला हुआ फूल ।
- सं० कलिह (कलि=भगवा, गम्=जाना) पु० कटक से मंदरामतक का देश ।
- सं० कलियुग (कलि, युग=समय)०

- विचार, बनावट, मानना, युगल,
मालमाजी, नरक ।
सं० कल्पांत (कल्प=ब्रह्माका दिन
रात, चन्त=पूरा होना) पु० मत्तप,
दुगान्त. कल्प का चन्त ।
सं० कल्पित (कल्प=विचारना) र्म्यं
बनाया हुआ, माना हुआ, कविप,
२ हटा, असम्भ ।
मं० कल्पप (कर्म=कष्टदा काम,
सं० पुण्य, मो=नाश करना वहां रको
ल, और स को प हो गया) पु० पाप,
नरक, मल ।
सं० कल्याण (कल्प=निरोध, अण्=
नीना, वा कल्प=वधात, अण्=शब्द
करना) पु० कुरल, मंगल, शुभ,
२ एक रागनी का नाम ।
सं० कल्ल-पु० धरित, बहरा ।
प्रा० कल्लर-पु० ऊपर, तारी ।
प्रा० कल्ला-पु० जवाड़ा, मचड़ा ।
सं० कवच (क=दवा, वच=ढगना,
वाकु=शब्द करना) पु० भिन्नप,
बालर वर्म ।
सं० कवल (क=शानी, वल=करना)
पु० प्रास, कहर, कवा, और लुकमा ।
सं० कवि (क=शब्दकरना) पु० कव्य,
बनाने वाला, जैसे वात्सीकि, का-
लीदाम आदि, शास्त्र, पंडित,
बुद्धिमान्, २ माद, चारण ।
० कवित्त (सं० कवित्व, कवि)
पु० कविता, काव्य, शब्द ।
० कविता (कवि) स्त्री० कवित्वी
- बनाई हुई रचना, काव्य, पद्य, रत्नलोक,
छन्द आदि, शास्त्री ।
प्रा० कविताई (कविता) स्त्री० पद्य
रचना, तपनीक ।
सं० कवीश्वर (कवि, ईश्वर=स्वा-
मी) पु० बड़ा कवि, वात्सीकि ।
सं० कव्य कु=शब्दकरना) पु० पितरों
के लिये जो अन्न आदि पदार्थ ।
मं० कश्मल पु० मोह, अज्ञानता ।
सं० कश्य-पु० पदिरा, पोंढ़ेकावंग ।
सं० कश्यप (कश्य=सोमलता, सोम-
वर्षी, पा=पीना) पु० एक मुनि का
नाम, परीच अपि का पेदा और दे-
बना राक्षस और मनुष्यों का पुरुषा,
महापति. कश्यप शब्द यथार्थ में-
परपक्ष या आदि अन्त अक्षरों के वि-
पर्यय अर्थान् बदलने से कश्यपवना
इसका अर्थ हुआ सर्वज्ञ, २ अज्ञान
नाशक, विशेषज्ञानवान् ३ आत्मज्ञा-
नी, ४ परमेश्वर ६ गृष्टिकर्ता ।
सं० कष्ट (कष्ट=भारना, शानिपट्टवाना)
पु० दुःख, क्लेश, पीड़ा, नरकलोक, संतडा ।
प्रा० कस-पु० कैसा, पु० परत,
ताव, २ जोर, बल, कैसा । [टीस ।
प्रा० कसक-स्त्री० पीड़ा दुःख, टसक,
प्रा० कसना (सं० कष्ट=वैषम्य, वा
कष्ट=जांचना) क्रि० सं० संवना,
तानना, जकड़ना, २ सोने की कसौ-
टी पर बिसके परतना, जांचना,
परतना, ३ चलना, धीमे मूचना ।
प्रा० कसमसाना-क्रि० अ=हिसना,

प्रा० कांडासानिकलजाना-बोल०

दुम अथवा हानि से छुटमाना ।

प्रा० कांडोपरघसीटना-बोल०

दुत सराहना, किसी की योग्यता

में अधिक बढ़ाई करना, (जब कोई

किसी आदमी को बहुत सराहना

करना है तब वह आदमी नम्रतासे

सेमा कहना है)

प्रा० कांडोने-बोल० अपने लिये

आपसी दुत पैदा करना, अपनी

दुताई आप करना, किसी को दुत

देना । [नगीच, निकट ।

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

प्रा० कांडा (सं० कण्ड) पु० पास,

सं० काकतालन्याय=काँवा थमकर

ताड़ के छत्रपर जाकर फलको

राताई तात्पर्य यह कि थप से

सब पदार्थ प्राप्त होते हैं ।

सं० काकपक्ष (काक=कौवा, पक्ष=

पंख, अर्थात् कौवे का पंख जैसे)

पु० पट्टा, जुल्फी ।

प्रा० काका } पु० चना, पाप का

प्रा० कका } छोटा भाई, पित्रुप ।

सं० काकिणी-स्त्री० बदाम, कबी

दो दमड़ी ।

प्रा० काकी-स्त्री० चची, चचाकीस्त्री,

किसदी ।

प्रा० काकातूआ-पु० मूँचे की जान

का चची ।

प्रा० काकवधू-कवपी ।

प्रा० कागा } (सं० काकः) पु० काँवा ।

कागा } (सं० काकः) पु० काँवा ।

प्रा० कागार-पु० किनारा, कोर, आँठ,

= कंचड़ी सर्पही ।

सं० कांसा (काक=चाहना) स्त्री०

चाह, इच्छा, चाहना, अभिनाह,

इबाहिम ।

अ० कांग्रेस=मेज, मिनाय ।

सं० कात्र (कच=चमटना)-पु०

-शीशा, भाँसा, २ एक तरह की

भाँसों की बीनारी । [अश्वानी ।

प्रा० काचा-पु० कचा, २ कचरा,

प्रा० काज (सं० कण्ड, कच=कां-

धना) श्री० श्रीं का पत्रा जो
पीछे से चकरावां जाना है, नांग,
२ नांग के ऊपर का भाग ।

प्रा० काञ्चन-श्री० काञ्ची की श्री ।

प्रा० काञ्चनी-श्री० लंगोटी, कोपीन,
जांघिया ।

प्रा० काछी पु० कुंजरा, पाली ।

प्रा० काज } (सं० कार्य्य) पु०

प्रा० काजा } काम, धंसा, वारज ।

प्रा० काजल (सं० कज्जन) पु०
सुरमा, भजन ।

सं० काञ्चन (काचि=चमकना)

पु० मोना, सुवर्ण, स्वर्ण, तिला ।

प्रा० काट (काटना) पु० चीरा,
जगम, घाव, २ मैल, छांटन, नलछट,
३ कढ़ाह, नेजी, ४ धार ।

प्रा० काटकरना-बोल० घायलकर-
ना, जगपी करना, काटना ।

प्रा० काटकट-बोल० छांट छूट, कतर-
न, छांटन, छीलन, टुकड़ा ।

प्रा० काटकटकरना-बोल० कतरना,
काटना, तराशना, काट डालना,
२ काटलेना, सेतेना, मुमरा लेना ।

प्रा० काटखाना-बोल० दांतघारना,
दांत काटना, २ खोदना, चकड़ना,
३ घसना, रसना, ४ खरना ।

प्रा० काटना (सं० काटना)

प्रा० काटना (सं० काटना)

प्रा० काटना (सं० काटना)

प्रा० काटना (सं० काटना)

ना, कतरना, चीरना, टुक-
करना, २ काटखाना, ख-
नाना, गालेना, ३ छील-
करना, ४ घावे से चीरना,
चनाना, ५ बिनाना ममप-
जाना, ६ करना रटना ।

प्रा० काटडालना-बोल० का-
टना, माक करना, उतार डाल-
ना, डालना ।

प्रा० काठ (सं० काष्ठ) पु० लकड़ी

प्रा० काठकाड़ा-बोल० लकड़ी की
चीसें ।

प्रा० काठकाउल्लु-बोल० मृत्त, बेव-
रूफ, य.पद, पिचड़ा, भुष, मिषा-
मिट्टू ममगगा, गावड़ी ।

प्रा० काठकीभंवा-बोल० मृत्त,
बिलजी, भुष श्री, बेवरूफ जुगई ।

प्रा० काठचवाना बोल० दूध से
निवाह करना, दूधमे जीना, बडिनवा
मे गुजगान करना ।

प्रा० काठमैपांवदेना -बोल० कैद
होना, कैदी होना ।

प्रा० काठहोना-बोल० कड़ाहोना,
मूसजाना, पथराना, पन्थरहोना ।

प्रा० काठपुतली (सं० काष्ठपुतली)

काठपुतली (श्री० छकड़ी की
बनी हुई मूरत ।

प्रा० काठकीड़ा (सं० काष्ठकीट)

पु० सतपछ, उड़ीस 'काट कीट',

२ घुन, एक कीड़ा जो लकड़ों को
काटता है और खाता है ।

प्रा० काठडा (सं० काष्ठ) पु० ल-
कठडा } कड़ी का बरतन ।

० काठी (सं० काय, वा काष्ठ)
स्त्री० जोन, २ शरीर, ३ दीखदौल ।

प्रा० काढ़ना—क्रि० अ० निकालना,
लेचना, बाहर लेना; उधेड़ना, बा-
हर निकालना, कपड़े पर मूँह से फूज
बनाना, कसीदा निकालना ।

प्रा० काढ़ा—पु० जोश दिया हुआ
दबाई का पानी, काय, कसैलारस ।

प्रा० काणा (सं० काण, कण=आंख
इकना) गु० एक आंखवाला,
एकान्त, २ (कछ) निसका गूदा सड़

गयाहो, अथवा जिसमें कुछ गूदा न
हो, १ मूर्त, वैवकुल, पु० काग, कौआ ।

स० काण्ड (क.ण=शब्दकरना, वा
जाना, वां कई विभाग करना)

पु० सर्ग, लंद, प्रकरण, अध्याय,
भाग, त्वाक, विभाग, २ समूह, ३
हंडल, ४ समय, ५ बाण, ६ सेन,
७ घोड़ा, ८ तमा ।

० कातना (सं० कर्चन, कृत्=
लेपटना) क्रि० सं० सूत कातना;
बरोपे पर कई से सूत बनाना ।

कातर (का=घोड़ा, तृ=पार हो-
यां कु=को का हो गया है)

गु० कायर, दरपोक, व्याकुल, घ-
बरापा हुआ ।

प्रा० कातिक (सं० कात्तिक) पु०
सातवां हिंदी महीना, कात्तिक ।

प्रा० कादर (सं० कातर) गु० कायर,
दरपोक ।

प्रा० कादा (सं० कर्दप) पु० की-
कांदों } चढ़, चहला, पैर ।

प्रा० कान (सं० कर्ण, क=करना,
शब्द ज्ञान को) पु० सुनने की
इंद्री, भक्षण, सुनने की राह ।

प्रा० कानएठना } बोल० कान खी-
कानअमेठना } चना, ताड़ना
करना, सतादेना ।

प्रा० कानभरना—बोल० बिरोध
हालना, चुपली स्थावर भगड़ा
सड़ा करना, बलेड़ा हाकना, तोड़
फोड़ करना ।

प्रा० कानपरजूनचलना—बोल०
बहुत असावधान होना, बहुत दी-
ला होना । [रत्नम् ।

प्रा० कानपररखना—बोल० याद
प्रा० कानपरहाथधरना—बोल०
सुकरना; नहीं करना, न मानना,
उहं करना, न करना ।

प्रा० कानपकड़ना—बोल० अपने
तई छोटा मानलेना; अपनी छोटाई
अपना निर्माई को मानलेना ।

प्रा० कानफूटना—बोल० बहराहोना।
 प्रा० कानफोड़ना—बोल० शोरकर-
 ना, गुल करना, गुहार करना, हल्ला
 करना, हा ह करना।
 प्रा० कानफूंकना—बोल० चुगकी
 खाना, भेद कहना, भगड़ा उठाना,
 २. मँषदेना, सिम्बाना, शिन्नादेना।
 प्रा० कानभुंकाना बोल० सुनने
 को चाहना, मुना चाहना।
 प्रा० कानदवाकर चले जाना—
 बोल० भागजाना, पनाना, रमजाना।
 प्रा० कानधरना—बोल० सुनना,
 ध्यान देना। [देकर सुनना।
 प्रा० कानदेसुनना बोल० ध्यान
 प्रा० कानदेना—बोल० सुनना, ध्यान
 देना।
 प्रा० कानकाटना—बोल० बढ़
 निहलना, बढ़चलना, थकाना,
 हराना, पीछेदेना।
 प्रा० कानमड़ेहोना—बोल० बौक-
 ना, दरना, भड़कना।
 प्रा० कानखोल्लदेना—बोल० खाना,
 चिनना, माचखाना, सुनेलहना।
 प्रा० कानलगना—बोल० भरोसे
 जाना होना, विश्वासी होना।
 प्रा० कानमलना—बोल० नाचना
 बगना, मलदेना, हाटना, कान
 देना, कान कमेटना।
 प्रा० कानमें डैगडी देहना—

बोल० कानबंदकरना, बहरा बनना,
 मुनी अनमुनी करना।
 प्रा० कानमें बात मारना—बोल०
 नहीं सुनने का बहाना करना, कान
 में तेल डालना।
 प्रा० कानमें तेलडालना—बोल०
 नहीं सुनने का बहाना करना, का-
 न में बात मारना।
 प्रा० कानमें तेलडालकेसोरहना—
 बोल० असावधान होना, अचेत
 होना, बे परवाह होना, ग्राहिक
 होना।
 प्रा० कानमें कहना } बोल० काना
 कानमें डालना } फूमी करना
 करना, कानाकारी करना, कहदेना।
 प्रा० काननहिलाना—बोल० गुप्त
 रहना।
 प्रा० कानहिलाना—बोल० राती
 होना, पसल होना, हाँ हूँ करना।
 प्रा० कानहोने—बोल० मयभना,
 झूकना, बढ़चना।
 प्रा० कानावाती करना—बोल०
 कान में बात कहना, काना फूमी
 करना, काना कारी करना, मुम
 गुम करना, २. सट्टाह करना।
 प्रा० कानादूमी—बोल० काना वा-
 नी, काना कारी, गुम दूमारह,
 सुपर गुमर।
 प्रा० कानाकारी करना—बोल०

धाती करना, कानाफूसी करना, रस-
सफस करना ।

प्रा० कानोकानकहना—बोल०
काना धानी करना कानाफूसी
करना ।

प्रा० कान—बोल० लाम, संकोच, मर्षा-
दा, पान, परदा, अदब । [लमाना ।

प्रा० कानकरना—बोल० शरमाना,

प्रा० कानछोड़ना—बोल० पेशरम
होना, निर्लज्ज होना, हीठ होना,
गुस्साग्र होना ।

प्रा० काननकरना } बोल० दिक्का-
काननमानना } रिकाना, गु-
हशाली करना, अदब नहीं मानना ।

सं० कानन (कन्=चमकना, शोधना,
वा क=धानी, कन्=बीना, कर्मात्
ओ धानी से कानना पूजना है) पु०
जंगल, वन, विविध, २ (क=प्रसा,
कानन=हैर) प्रसा का हैर ।

प्रा० कानी (सं० काण्ठी) स्त्री० गु०
एक काँचवाली स्त्री ।

प्रा० कानीकोड़ी (सं० काण्ठी=वा-
नी, कर्द=छोड़ी) स्त्री० बोल०
ऐसी छोड़ी जिसमें छेद हो, एंटीछोड़ी ।

प्रा० कानी—बोल० बैर, ईद, राह ।

सं० कान्त (कन्=चमकना, वा कन्
=चारन) पु० दहादी, धरती, क्षिति,
ईश, गु० सुन्दर, दन्तेहर, प्यार,
विज, पाशः हुआ ।

सं० कान्ता (कन्=चमकना, वा कन्

=चारना) स्त्री० पत्नी, नुगार्ह, स्त्री,
माधर्षी, धारवाली, प्यारी, मिठा,
मुन्दरी, २ कान्ति, मुन्दरता ।

सं० कान्ति (कम्=चारना) स्त्री०
शोभा, मुन्दरगर्ह, चमक, दमक, मुर
मुरती, दीप्ति, प्रकाश, २ चार, ईच्छा ।

अं० कान्तेन्स=सभा, समाज, म-
जलिस, जसमा ।

सं० कान्यकुञ्जः कन्वा=मङ्गली, कु-
ञ्जा=हुवड़ी) पु० कनौजदेश, २ ब्राह्म-
णोंकी एकजाति, कनौजिया ।

प्रा० कान्ह } (सं० कृष्ण, पु० धीह-
कान्ह } ण्यका लप । [नाथ ।

प्रा० कान्हड़ा—पु० एक रागिणीका
सं० कापुरुष (का=बुरा, पुरुष=पुरुष)
पु० सोया मनुष्य, बुरा मनुष्य,
२ दरबोक ।

अ० काप्ती=रक्षा, बलम् ।

सं० कान (कन्=चारना) पु० चार,
दमक, ईच्छा, कामना, मनोरथ,
चाहीदूई बोल, चारा हुआ बि,
वन, २ चामदेव, प्यार, वा देखना,
१ मुग, २ शहरन ।

प्रा० काम (सं० कर्म) पु० काम,
कार्य, धर्म ।

प्रा० कामजाना—बोल० काम से
काना, दाया काना २ दायाजाना
लड़ाई से दाया काना ।

प्रा० कानपूसीकरना—बोल० काम
मिन्द करना, काम चार करना, नि-

सका काम तरकारी और फलफला-
कारी बिचने का है ।

प्रा० कुंजी (सं० कुञ्जिका, कुञ्ज=टेढ़ा
होना वा खींचना, कसना) स्त्री०

चापी, नाली ।

प्रा० कुंदी स्त्री० कपड़ों का पीटना ।

प्रा० कुंदीकरना-बोल० कपड़ों का
पीटना, पीटना ।

प्रा० कुंवर (सं० कुमार) पु० बेटा,
लड़का, २ राजा का बेटा, राजकु-
मार, राजपुत्र ।

प्रा० कुंवरी (सं० कुमारी) स्त्री०
बेटी, लड़की, २ राजा की बेटी,
राजकन्या, राजपुत्री ।

प्रा० कुंवारा (सं० कुमार) पु० अन-
व्याहा लड़का, गु० अनव्याहा ।

प्रा० कुंवारी (सं० कुमारी) स्त्री०
अनव्याही लड़की, गु० अनव्याही ।

सं० कुकर्म (कु=बुरा, कर्म=काम)
पु० बुरा काम, अन्याय, पाप, दुष्टकर्म ।

सं० कुकुट (कु=शब्द करना, वा कुक
=लेना) पु० मुर्गा, कुकड़ा ।

सं० कुकुर (कुक=लेना वा कुक=
शब्द करना) पु० कुत्ता, नवान ।

सं० कुक्षि (कुप्=निहालना) स्त्री०
पेट, कोख ।

सं० कुंकुम (कुङ्कु=लेना अथवा लिखा
जाना) पु० केसर, मुगान्धनद्रव्य-

विशेष—२ रोरी ।

प्रा० कुंकुमा (सं० कुंकुमे) पु० गुलाब
रसने का बरतन ।

सं० कुच (कुच्=बांधना, वा मिलाना)
पु० छाती, चूची, यन, स्तन, पिस्तौ ।

सं० कुचन्दन (कु=कर्म अर्थात् विन-
मुगन्ध, चन्दन) पु० लालचन्दन,
रक्तचन्दन ।

सं० कुचकुड्मल-पु० कुचकली, चू-
ची की फुंडी ।

प्रा० कुचर-गु० निंदक, दोषदेहनेवाला

प्रा० कुचलना-क्रि० स० घुंरकरना,
ममलना ।

प्रा० कुचला-पु० मैनफल, एक औ-
षध का नाम ।

प्रा० कुचाल (कु=बुरी, चाल=रीति)
स्त्री० कुरीति, बुरा चरन, कुदेव,
बुरा चालचलन ।

प्रा० कुचाह-स्त्री० बुरी खबर, बद-
खबर, २ नपहना, स्नेह ।

प्रा० कुचेला-गु० मैला, मैले कपड़े
परने हुए ।

प्रा० कुच्छे (सं० क्षिधित्=घोड़ा)
गु० घोड़ा कम कुच्छक, आध, जो
कुच्छ, घोड़ा बहुत ।

प्रा० कुच्छओरगाना-बोल० सूटी
बान बनाना, २ औरही बात कहना ।

प्रा० कुच्छेक-बोल० घोड़ा बहुत, कुच्छ-
कुच्छ, कुच्छ ।

प्रा० कुटसेकुटहोना { बोझ० बि-
कुटकाकुटहोना } नकुसुम-
सजाना, सबकासब बंदखाना ।

प्रा० कुटकुट-बोल० थोड़ासा,
कुटकुट, थोड़ाएक थोड़ा बहुत, कुट ।

प्रा० कुटनकुट-बोल० थोड़ापहुच,
थोड़ासा ।

प्रा० कुटनहीं-बोल० कोई और
धील नहीं, कुछ और नहीं, २ नि-
कम्मा, कामका नहीं ।

प्रा० कुटहो-बोल० चारे सों हो,
जो कुछ हो ।

सं० कुज (कुटुम्बी, जन्म=पैदा हो-
ना) क० पु० पुष्पीपुष्प, मंगल,
पीप, सेराम्मा ।

प्रा० कुजलीवन (सं० कुजलवन,
कजलीवन) कुञ्जर=हाथी,

जन्म=मंगल) पु० हाथियों का वन,
जिस मंगल में हाथी बहुत हैं ।

सं० कुजाति (कु=बुरी, जाति=जात)
पु० नीचजातिका, कमीना, नीच,
अधम ।

सं० कुचित (कुञ्च=देहा होना)
भी=देहा, सिपया, हुआ, गुंघराला ।

सं० कुञ्ज (कु=पराधी, जन्म=पैदा हो-
ना) पु० चर-मगद जहां सयनपेद
और बेनी आदि हैं, गुंमान,
२ हाथी की दुई ।

सं० कुञ्जर (कुञ्ज=हाथी की दुई
या कुञ्ज=सयन वृक्षों की ओर,
परा=देना, धर्यात जो कुञ्जमें रहता
है) पु० हाथी, हस्ती, पंथ ।

प्रा० कुटकी (सं० कुटका, कुट=क-
टुका) स्त्री० एक दुवाई का नाम ।

प्रा० कुटकी-स्त्री० एक मन्दार का
मन्दार, एक जानवर का नाम ।

सं० कुटज (कुट=पराध, जन्म=पैदा हो-
ना) पु० एकदुवाई व कुँआका नाम ।

प्रा० कुटनी (सं० कुटनी, कुट=काट-
ना, निंदा करना) स्त्री० कुँआ, परा-
ई स्त्री को पराये पुरुष से मिलाने
वाली, दलाला ।

सं० कुटिल (कुट=देहाहोना) क० पु०
देहा, कपटी, छोटा, कड़ा, कूर,
मगरा ।

सं० कुटी (कुट=देहाहोना) स्त्री०
कुटीर (भीपड़ी, मड़ी) ।

प्रा० कुटुम (सं० कुटुम्ब, कुटुम्ब=कुल
का पालन करना) पु० कुनवा, परि-
वार, पराना, कुल, खानदान ।

सं० कुटुम्बी (कुटुम्ब) पु० परवाला,
परवारी, पुरख, खानदान ।

प्रा० कुटुव (सं० कु=बुरी, दि=देव=
स्वभाव) स्त्री० कुचाल, बुराचलन ।

सं० कुटार (कुट=टूट, कुट=काटना
और श्रु=जाना, अर्थात् जो टूटों

परिकाटने के लिये चलाया जाता है) पु० कुंहराड़ी, चमूला, टांगी ।

प्रा० कुंठाहर (सं० कुस्यान, कु=बुरी, स्थान=जगह) स्त्री० बुरी जगह ।

प्रा० कुड़कना (क्रि० अ० कुड़कुड़ाना, कुड़कुड़ाना, कड़कड़ाना, २ क्रोधसे बोलना) ।

सं० कुड़व-पु०, प्रस्थ का चौथा भाग चारपल, आधपाव ।

प्रा० कुड़ना (सं० कुप=क्रोधकरना) क्रि० अ० कुड़ना, दुख करना, शोच करना २ गुस्सा करना, क्रोध करना, ३ जलना, दूसरे की पदती देव्यकर मनमें दुख करना ।

सं० कुण्डक (कुण्ड+अक) क० पु० मूर्ख, मन्द, जाहिल, ठठनेवाला ।

सं० कुण्डित (कुण्ड=भोया होना, या मुस्न होना) क० पु० भोया । अथालसी ३ लज्जित, रफा हुआ ।

सं० कुण्ड (कुडि=जलाना, वा पचाना) पु० जल के रहनेकी जगह, हाँस, चरमा, २ होम की आग रखने का गड़हा, होम का कुण्ड ।

सं० कुण्डल (कुडि=पचाना वा जलाना) पु० कानमें पहननेका गहरा, कर्णमण्डप, २ घेरा, घेदछ ।

प्रा० कुंडलिया (सं० कुण्डलिका) पु० एक ब्रह्म का नाम ३१४ मात्रा का छन्द ।

सं० कुण्डली (कुण्डल+ली) स्त्री० घेरा, २ साँव, ३ मन्त्रपत्री, साकंवर ।

प्रा० कुण्डी (सं० कुण्ड=पचाना) स्त्री० दरवाजे की सिकली वा जंजीर ।

प्रा० कुतरना (सं० कर्त्तव्य, कर्त्तव्यकाटना) क्रि० स० दीर्घात् से काटना ।

सं० कुतर्क (कु=बुरी, वा बुरी, तर्क=दलील) स्त्री० बुरी तर्क, बुरी तर्क, हुज्मत ।

सं० कुतूहल (कुतू=कुत्ता, हल=लिसना, अर्थात् कुत्तलेलकरना) पु० खेल, कौतुक ।

प्रा० कुत्ता (सं० कुत्तर) पु० जानवरकानाम, श्वान ।

सं० कुत्सा (कुत्स=निंदा करना) प्रा० स्त्री० निंदा, बुराई, अपमान, अपमान ।

सं० कुत्सित (कुत्स=निंदा करना) अर्थ० निन्दित, नीच, बुराई करने योग्य, नीचा, कपीना ।

प्रा० कुदाल (सं० कुदाल, कुदाल) परती, उद=बल, उदकाटना) स्त्री० मिट्टी सोखने का औजार, कुदाही, पेठ, पेलाका ।

सं० कुदृष्टि (कु=बुरी, पापकी, दृष्टि=दीख) स्त्री० बुरी दीख, पापकी, पाप से देखना, बदनाम, बुरी निगाह ।

सं० कुधर (कु=धरती, धृ=रसना)

कुध्र (पु० पदाङ्क, पर्वत, शैल ।

प्रा० कुधातु (कु=धुरी, धातु=धातु) श्री० लोहा, से नीच, धातु=धातु) श्री० लोहा, लोहा ।

सं० कुन्वा (सं० कुडम्ब) पु० प-

राना, कुडम्ब, कुल, छानदान ।

सं० कुनारी (कु=धुरी, नारी=स्त्री)

श्री० दृष्टनारी, रराव चौरव ।

सं० कुनीति (कु=धुरी, नीति=वात्)

श्री० कुपाल, धुरी बाल, कुनीति ।

सं० कुन्त (कु=धुरा, कन्त=जाग्रि)

पु० बरधी, माला ।

सं० कुन्ती (कम्=चारनां) श्री०

शरसेन की बड़ी बेटी, धीकृष्ण की

कृषी, पांडु की श्री और दुषिष्टि

अर्जुन और भीमसेन की मा ।

सं० कुन्द (कु=धरती, दो=छटना, बा दे=गुद करना, बा. क=पानी,

बन्द=मिथोना अर्थात् जो पानी

से सींचा जाता है) पु० योगरा, एक

नर का, सज्जद पूज ।

प्रा० कुन्दन-पु० अच्छा सोना,

साक सोना, वचप सोना ।

सं० कुपथ (कु=धुरा, पथ=रस्ता)

पु० कुपार्ग, धुरी राह, धुरागस्त्य,

कुप्य, २ धुरा, धुरा चलन ।

सं० कुपात्र (कु=धुरा, पात्र=दानदेने

योग्य ; दाहाण, वा बरतन) पु०

अयोग्य, नालापक ।

सं० कुपित (कुप=कोपना) पु० क्रो-

पित, कोपित ।

सं० कुपुरुष (कु=धुरा, पुरुष=पुरुष)

पु० बुद्धिमान, निपिद मनुष्य ।

प्रा० कुपा (सं० कुन्, कु=धुरी सर

से, नन्=कैलास) पु० श्री अयबा से

रसने का चमड़े का बरतन । [शीना ।

प्रा० कुपाहोना-शैल० बहुत मोटा

सं० कुफल (कु=धुरा, फल=नृती-

ना) पु० रराव नवीना, धुराफल ।

प्रा० कुत्र (सं० कुत्र, कु=धुरी) पु०

कुत्र (कुत्र, पीठ का छेदाव ।

प्रा० कुञ्जा (सं० कुञ्ज, कु=धुरीतरह

से अथवा पीड़ा, उच्छ=पीड़ा शोना ।

श्री० कुर्दी कुचदा, देरी पीठका, नि-

सकी पीठ भुकी हुई हो, २ श्री० कंस

की एक दाही का नाम जिसको

धीकृष्ण ने मीसी की थी ।

सं० कुमार्या (कु=धुरी, भार्या=प-

त्नी) श्री० धुरी सुपारी, कुलाहिनी,

लदाका श्री, कुलप ।

सं० कुमति (कु=धुरी, पति=बुद्धि)

श्री० धुरी मदभा, बुपत्र, २ पु० बुद्धि, बुद्धि, बुद्धि ।

सं० कुमार (कुमार=मेनका, बाकु

=धुरा अथवा पीड़ा, पार=अपदेव)

सं० कुंवर-कुमार, वाचक, चित्त्याहा,
कुंतारा ।

सं० कुमार्ग (कु=पुरा, मार्ग=रेस्ता)
पु० कुप, कुरी राह, कुनाल ।

सं० कुमार्गगामी (कुमार्ग=पुरीमार्ग,
गम+ई, गम=माना) क० पु० पुरीरा
इ चननेवाला, पुराइ चननेवाला ।

सं० कुमुद (कु=भरणी, मुद=मगध
होना वा करना) पु० कुमुदनी,
कोई, यौना कमल जो रात को ति-
सता है और दिन को सुंद जाना
है—२ पद वानर का नाम ।

सं० कुमुदवन्तु-पु० पद, पाद ।

सं० कुमुदिनी (कुमुद) श्री० कम-
लिनी, २ कमलों का समूह, ३ वह
जवर जहाँ कमल पैदा हो ।

सं० कुम्भ (कु=दुर्ग, कुम्भ=म-
रना, वा कु=गर्भी, कुम्भ=भरना,
वा कु=दकना) पु० पदा, कलश,
कलषा, २ हाथी का गिर, ३ शो-
नित हैं—वाचस्वी वशि—कुम्भ का
देव=वेला जो शिंदार में बारहवें
वाम होना है, कुम्भी=वेला जो छठे
वाम होना है ।

सं० कुम्भकर्णी (कुम्भ=हाथी का
दिगु या पदा, कर्ण=कान, जिसके
बाज हाथी के शिर के बाहर हो)
पु० हाथ का कर्ण ।

सं० कुम्भहार (कुम्भ=हाथी का
दिगु) पु० कुम्भ, कुम्भ ।

सं० कुम्भज- (कुम्भ=गड़ा, जन्=जन्म
होना) पु० अंगस्ति श्रुति का नाम ।

सं० कुम्भशाला-श्री० पदा रखने
की अंगठ, धनौची ।

सं० कुम्भसंभव (भू=होना) पु०
अंगस्ति श्रुति, वशिष्ठश्रुति, द्रोणा-
चार्य, ये मित्रावरुण के पुत्र हैं ।

सं० कुम्भिका (कुम्भ=होना) श्री०
कुम्भी पदवृत्त का नाम ।

सं० कुम्भीपाक (कुम्भी=तेल का
कड़ाह, पाक=पचाना) पु० कुंवररह
का नाम, जहाँ पापी गर्म तेल के
कड़ाहों में टांके जाते हैं ।

सं० कुम्भीर (कुम्भित=गायी, ईर
=पीड़ा देना) पु० मगरमच्छ, प-
डिवाल, घाह ।

श्री० कुम्भार (सं० कुम्भहार) पु०
मिष्टीकेवातनवनानेवाला कुलास ।

सं० कुयोग (कु=पुरा, योग=वेष्ट)
पु० कुमेगन, पुरी मगन, वृगमेयोग ।

सं० कुट-पु० गन्ध, आवाज, शब्द
कथा, गाना, तर्फीदार, हिमात ।

सं० कुटी-श्री० बीज, पेदी ।

सं० कुंग (कु० दुर्ग, रत्न-सुगी
होना) पु० हथिन वृग ।

श्री० कुंगि-पु० मयतोप, मयमादि,
माति, वृत्त । [तिप्प्या, प्राप्तेन ।

सं० कुंगिर (कु + ईर, कुम्भी देना)

सं० कुरीति (कु=बुरी, रीति=चाल)

पु० कुचाल, कुचैव, बुरीचाल ।

सं० कुरु (क=करना) पु० दिछी के

एक पुराने राजा का नाम ।

सं० कुरुक्षेत्र (कुरु=एक राजा का

नाम, क्षेत्र=प्रगढ़, या कुरु=गाय,

कु=बुरी तरह से, क=रोना, क्षेत्र,

जगह, अर्थात् पाप को दूर करने

वाली जगह) पु० दिछी के पास

एक जगह है जहाँ कौरवों और

पाण्डवों में लड़ाई हुई थी ।

सं० कुरुप (कु=बुरा, रुप=स्वकार) गु०

भोड़ा, कुबौल, भदिसा, बुरी

सूरत का ।

प्रा० कुर्मी-पु० एकनामिका नाम जो

सेना का ध्वजा करते हैं ।

प्रा० कुर्याल-सी० पत्थर के चैन और

बचाव से बँडने की दशा, कि जब

बद बौवसे अपने पत्नों की सवारी

है, (हसीसे) २ चैन, मुल, आराम

प्रचाव ।

प्रा० कुर्याल में गुलेला लगना-

बोल० निराश होना, थपका चैन

के सपथ, दुख में गिरना ।

गं० कुरी-सी० अपनी, नरमहडी ।

गं० कुल (कुल=बँडा होना, वा

बाँधना) पु० बंश, पराना, कुनवा,

जाति, बण्ण ।

सं० कुलघाती (कुल=बंश, घात=

नाश करना, इ का घ होता है)

क० पु० कुलनाशक ।

सं० कुलतारण (कुल=बंश, तारण=

पार करनेवाला) पु० कुल को बचाने

वाला बड़का, सपूत लड़का, गुगु-

वानलड़का जिससे कुलशोभता है ।

सं० कुलदोही (कुल=बंश, दोही=

बिरोधी) गु० कुलका नाश करने

वाला, बुरे काम करने से अपने कु-

लकी निन्दा करानेवाला ।

सं० कुलधर्म (कुल=बंश, धर्म=

पत) पु० अपने बंशकी धर्म, कुल-

व्यवहार, कुलकी चाल ।

सं० कुलपालक (कुल=बंश, पाल=

पोखना) क० पु० कुलवर्धक,

छानदान परवर ।

सं० कुलपूज्य (कुल=बंश, पूज्य=पूज-

ने योग्य) गु० सब पराने के पूजनी-

क, २ कुलदेवता, इ अपने परा-

ने का पुरोहित ।

प्रा० कुलबुलाना-कि० अ० खुम-

छाना, २ कलमलाना ।

सं० कुलवन्ती-कुल=पराना, वन्ती

=बाँधी) सी० अच्छे घराने की सी,

पतिव्रता, सदा, मुरीला ।

सं० कुलवान् (कुल=पराना, वान्

=वाला) गु० अच्छे घराने का,

कुलीन, भेष ।

सं० कुलक्षण (कु=पुरा, लक्षण=चिह्न) पु० पुरा चलन, कुस्वभाव कुचाल ।

प्रा० कुलोच सी=कुंद, फांद, उद्याल, लपके, छलांग ।

प्रा० कुलोचमोरना-बोल=छलांग मोरना, फांदना ।

प्रा० कुम्हलाना-किं० अ० मुर-भाना, सराना ।

क्रा० कुलह } टोपी, जंघीटोपी ।
कुलाह }

सं० कुलाचार (कुल=पराना, आचार=चलन, या पर्य) पु० कुलधर्म, कुलप्यवहार, छानदानी रसम ।

सं० कुलाल (कुल=रकड़ा करना) पु० कुम्हार, मिट्टी के घरान-बनाने वाला, कुम्भकार ।

प्रा० कुल्हिया श्री० कुतरही मिट्टी का एक श्रेष्ठ गोलघरान ।

प्रा० कुल्हियामें गुड़ फोड़ना-बीन० किमी कापको छुदे २ करना, जो काम बहनों से होता है उसको बोदे भादमियों के साथ करने के लिये परिश्रम करना ।

प्रा० कुल्हाड़ी (सं० कुटारी) श्री० बम्हा, कुन्हाड़ी ।

सं० कुलिश (कु=कुली, शरभेनिय=पोड़ा करना, वा कुलिश=पहाड़,

शी=नाशकरना, वा कुलि=हाथ, शी=सोना) पु० वज्र, इन्द्रको शस्त्र ।

सं० कुलीन (कुल) पु० कुलवान्, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ, शरीर ।

सं० कुवलय (कु=प्रती, बलय=कंकण) पु० कमल, कोई सकेद या नीला कमल, नीलोफर ।

सं० कुवलिया (कु=पुरा, बल=जोर) पु० कंस के हाथी का नाम जिसमें १०००० हाथियों का बल था जिसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

सं० कुविहङ्ग (कु=पुरा, विहङ्ग=आकाश, गम्=माना) पु० बाज, भुर्रा, शहीन ।

सं० कुवेर (कु=फलाना अपने धन को, वा कु=पृथ्वी, वृ=दकना, अपने धन से, वा कु=पुरा, वेर=शरीर) पु० धन का देवता, यक्षों का राजा, उत्तर दिशाका दिक्पाल ।

सं० कुश (कु=पृथ्वी, शी=सोना, वा कु=पाप, शी=नाशकरना, वा कुश=मिट्टना) पु० एक प्रकारकी घास, दध, दाम, कुशा, २ रावण इन्द्रका वेता ।

सं० कुशल (कुश=कितना, वा कु=पृथ्वी, शल=माना) पु० कल्याण, भंग, पैर चान, मु० चतुर ।

सं० कुशलधेम (कुशल + धेम) पु० कुशल भंग, कैयचान ।

प्रा० कुशलांत (सं=कुशल) श्री०
कुशलांत (कुशल=स्वस्थ, चैन
मान, अमन अमान ।

सं० कुशाग्रबुद्धि (कुश+अग्र+
बुद्धि) श्री० तेजमय, पैनीबुद्धि,
वीर्य बुद्धि ।

सं० कुशूला-पुं० दिहरी, कुविली ।

सं० कुश (कुश=निदानना) पुं० कोह,
एक प्रकार का रोग जो अकार
नकार का है, उन में से सात तरह
का तो बड़ा कोर और दुःखदायी
होता है, और ११ तरह का हल्का
और थोड़ा दुःख देता है ।

सं० कुशनाशिनी (कुश=कोह, ना-
शिनी=नाश करनेवाली) श्री० एक
बेनी का नाम, सोमराज बेनी ।

सं० कुशी (कुश) पुं० कोही ।

सं० कुष्माण्ड (कु=घोड़ी, उष्मा
=गरमी, अण्ड=बी-

ज, अर्थात् जिसके बीज में घोड़ी
गरमी है) पुं० कोहरे का फल ।

सं० कुसंग (कु=बुरा, संग=साथ)
पुं० बुरी संगति, बुरों का साथ,
बुरा सोहवन ।

सं० कुसुम (कुस=पिजना, वा कु=
नी, सिम=पिजना) पुं० पूत,
लाल फूल जिसमें कोढ़े लाल
जाते हैं ।

सं० कुसुमशर (कुसुम=कुसुम, शर=
बाण) पुं० कामदेव ।

सं० कुसुमिति (कुसुम) पुं० तिलो
ह्वाना, फूलह्वाना, महुलिन ।

सं० कुसुम्भ (कुस=पिजना, वा कु=
पूनी, दुग्ध=बभकवा) पुं० कुसुम,
लाल फूल जिसमें कोढ़े लालरंग
जाते हैं, स्वर्ण, सोना ।

प्रा० कुसुम्भा (सं० कुसुम्भ) पुं०
कुसुम का रंग, २ दानी हुई धंग ।

सं० कुस्वम (कु=बुरा, स्वम=साना)
पुं० बुरा साना ।

सं० कुहक (कुह=अक, कुह=मारव-
र्थ) क० पुं० कुटिल, क्रोधी, बड़ी,
मायावी, इन्द्रमाली, राजांगार ।

प्रा० कुहड़ (सं० कुष्माण्ड) पुं०
कुहड़ कोहरे का फल ।

प्रा० कुहराम-पुं० विलाप, रोना,
फतारना ।

प्रा० कुहाव-मा, श्री० कुटना, रुद
प्रा० कुहासा (सं० कुहेलिका, कु=
बारी, कुह=धेरना) पुं० कुरा,
कोहर, धुंध ।

प्रा० कुहक (कुह=अक, कुह=मारव-
र्थ) क० पुं० कुटिल, क्रोधी, बड़ी,
मायावी, इन्द्रमाली, राजांगार ।

प्रा० कुहड़ (सं० कुष्माण्ड) पुं०
कुहड़ कोहरे का फल ।

प्रा० कुहराम-पुं० विलाप, रोना,
फतारना ।

प्रा० कुहाव-मा, श्री० कुटना, रुद
प्रा० कुहासा (सं० कुहेलिका, कु=
बारी, कुह=धेरना) पुं० कुरा,
कोहर, धुंध ।

प्रा० कुहक (कुह=अक, कुह=मारव-
र्थ) क० पुं० कुटिल, क्रोधी, बड़ी,
मायावी, इन्द्रमाली, राजांगार ।

प्रा० कुहड़ (सं० कुष्माण्ड) पुं०
कुहड़ कोहरे का फल ।

प्रा० कुहराम-पुं० विलाप, रोना,
फतारना ।

प्रा० कुहाव-मा, श्री० कुटना, रुद
प्रा० कुहासा (सं० कुहेलिका, कु=
बारी, कुह=धेरना) पुं० कुरा,
कोहर, धुंध ।

प्रा० कुहक (कुह=अक, कुह=मारव-
र्थ) क० पुं० कुटिल, क्रोधी, बड़ी,
मायावी, इन्द्रमाली, राजांगार ।

प्रा० कुहड़ (सं० कुष्माण्ड) पुं०
कुहड़ कोहरे का फल ।

करना) स्त्री० भाङ्गने की चीज;
पोचारा देनेकी चढ़नी ।

प्रा० कूंडी-स्त्री० भांग आदि पीसने
का बरतन, लोहे की टोपी ।

प्रा० कूतना { क्रि० स० मोल ठहर-
कूतना } ना, मोल जांचना,
मोल थटकलना ।

प्रा० कूकना (सं० कू=शब्दकरना)
क्रि० अ० चिल्लाना, बोलना, कुह-
कुह करना ।

प्रा० कूकर (सं० कुङ्कुर) पु० कुत्ता ।

प्रा० कूजना (सं० कूजन, कूज=शब्द
करना) क्रि० अ० शब्दकरना, बोलना ।

सं० कूट (कूट=जलना, वा ढकना)
पु० पहाड़ की चोटी, २ ढेर, ३
छिछ, काटे, भूँट ।

प्रा० कूट-पु० गला हुआ कागज जो
ढकनी बनाने के काम में आता है,
३ स्त्री० नकल, भट्टी, बंदरबासी ।

प्रा० कूटना (सं० कुटन, कुट=काट-
ना) क्रि० स० ठुकड़े २ करना,
घूरना, कुचलना, तोड़ना, २ पीटना,
मारना, लठियाना ।

प्रा० कूड़ा-पु० भाङ्गन, बुरान,
कुँकुटे, पास पात, अगूँड़ बगूँड़, पास
फूस, कपरा ।

प्रा० कूडि-स्त्री० लोहे की टोपी ।

प्रा० कूट-पु० मूर, मूँद, भौंद, गैवार ।

प्रा० कूदना { (सं० कूदन, कूद=खे-
कूदकना) लना } क्रि० अ० उ-

बलना, फांदना, २ मसत्र होना,
खुश होना ।

सं० कूप-कू=शब्द करना, जिसमें
मेढ़क शब्द करते हैं, वा कु=पोड़ा,
भाप=गानी (जिसमें) पु० कूबा,
कूबां, इंदारा ।

प्रा० कूर (सं० कूर) पु० निंदुर,
निर्दयी, कड़ोर, २ मूर, भौंद, गैवार, कूड़ ।
सं० कुर्म (कु=बुरा वा पोड़ा, उर्मि, वेग
जिसका) पु० कलुषा, कच्छप, कमठ ।

सं० कुल (कुल=घेरना, ढकना वा
रोकना) पु० तीरे, तट, किनारा ।

सं० कुलद्रुम, पु० तटस्थद्रुम, मदी के
किनारे के वृक्ष ।

प्रा० कुला, पु० पट, घूट, नितम्ब ।

अ० कूली { पु० मजदूर, बोझा देने-
कूली } बाछा, पोढ़िया, पोढ़िया ।

सं० कूच्छ-भा० पु० कठिनता, सख्ती ।

सं० कूत (कू=करना) म्मे० किया हुआ,
बनाया हुआ, रचित, पु० सुतपुंग
२ फल ।

सं० कृतकार्य (कृत=किया, कार्य
=काम) म्मे० पु० फलीभूत,
कामयाब, कामपूरा हुआ ।

सं० कृतकार्यता-भा० स्त्री० काम-
यारी, काम की पूर्णता ।

सं० कृतकृत्य (कृ=क्रिया, कृत्य=करने योग्य, कृ=करना) र्म्यं पु०
योग्य काम को जिसने किया हो,
कृतार्थ, कृतकार्य, धन्य ।

सं० कृतम (कृ=क्रिया हुआ,
प्रा० कृतमी) र्म्यं पु०
जो उपकार को नहीं माने, गुण
नहीं माननेवाला, नपकहराम, ना-
शुक्ला, इहसान करामोश ।

सं० कृतमता—भा० स्त्री० इहसान
करामोशी, उपकारहन ।

सं० कृतज्ञ (कृ=क्रिया हुआ, ज्ञा=जानना) कं० पु० जो उपकार को माने, गुण माननेवाला, उपकार माननेवाला, नपकदलाल ।

कृतविद्य (कृ=क्रिया हुआ, विद्=मानना) र्म्यं पु० मशहूर,
धन्यवादित, शारदा, अश्रीतविद्या ।

सं० कृतवीर्य्य-पु० पिता, वीरविशेष ।

सं० कृतान्त (कृ=क्रिया, अन्त अर्थात् नाश करनेवाला) पु० यम,
काल, मौत ।

सं० कृतार्थ (कृ=क्रिया, र्थ्य=प्रयोजन) र्म्यं पु० जिसने अपना प्रयोगनपराक्रियाही, जिसकी इच्छा पूरी होगी हो, कामयाब, संतुष्ट ।

सं० कृति (कृ=करना) स्त्री० कार्य्य,
काम, हिता, आचरण, उपकार,
कारण ।

सं० कृत्ति-स्त्री० चर्म, चमड़ा, भोजन पत्र, कृत्तिका नक्षत्र, चमड़ेकी रस्सी ।

सं० कृत्तिकर (कृत्ति=काम, कृ=करना) कं० पु० सेवर, कृत्तिकर, उपकारी ।

सं० कृत्तिका (कृ=काटना) स्त्री० दोसरे नक्षत्र का नाम ।

सं० कृतिन { कं० स्त्री० पण्डित,
कृती } योग्य, लायक, पुण्यवान्, निपुण, साधु, वीर्य्य ।

सं० कृत्य (कृ=करना) पु० काम करने योग्य काम, कर्त्तव्य कर्म, र्म्यं करने योग्य, कर्त्तव्य ।

सं० कृत्रिम (कृ=करना) र्म्यं पु० क्रिया हुआ, बनाया हुआ, बना-बट हा, कालान्, जो असली न हो, पसतुर ।

सं० कृत्रिमपुत्र (कृत्रिम=क्रिया हुआ पुत्र=वेश, पु० गोद लिया हुआ लड़का, धर्मशास्त्र में बारह प्रकार के पुत्र गिनाये हैं उनमें से एक प्रकार का वेश ।

सं० कृत्स्न—गु० कृत्स्नवत्, आहत, दहा हुआ, जलान्नग्न, दूरा हुआ, पु० संपूर्ण, जल, गंधूष अर्थात् कुला ।

सं० कृत्स्न—पु० सम्पूर्ण, सब, जल, रुचि, उदा, कृत्स्न, समग्र ।

सं० कृपण (कृ=दुःखकारोना) पु० कंड़स, सूय, जुष्ट, बर्तील ।

सं० कृपणता—भा० स्त्री० चुष्टा,
कंजूसी, बखीली ।

सं० कृपा (कृप्=कृपा करना) स्त्री०
दया, अनुग्रह, मिहिरवानी ।

सं० कृपाण (कृप्=समर्थ होना, वा
कृपा=दया, नुद्=माना) स्त्री० तल-
वार, लद्दा, सांड़ा, शमशेर ।

सं० कृपानिधान (कृपा=दया, नि-
धान=जगह) पि० पु० कृपा के
घर, दयालु, कृपालु, कृपा करने
वाला, जायमिहिरवाजी ।

सं० कृमि (कृम्=जाना) पु० की-
कृमि डा, पतंगा, मकोड़ा, पर-
वाना ।

अं० कृमिनल—कौजदारी ।

सं० कृश (कृश=पतजा होना) पु०
दुबला, पतजा, दुर्बल, चीण,
लागर, नकीह ।

सं० कृशाक्षी (कृश=मन्द, अक्षि=
आँख) पु० मन्ददृष्टि, कोताहिनतर ।

सं० कृशानु (कृश=पतलाकरना) पु०
आग, अग्नि, आगी, अनल ।

सं० कृपक (कृप्=हलजोतना) पु०
कृपाण } हिमान, हल जोतने
वाला ।

सं० कृपि (कृप्=हलजोतना) स्त्री०
सेनी २ धरती ।

सं० कृपिकर्म—पु० सेनी, चारनकारी ।

सं० कृपिकारक (कृपि + कारक)
पु० पु० कृपान, चारनकार ।

सं० कृष्ण (कृष्=लैचना, वा काला
रंग होना) पु० काला, अंधेरा, पु०
विष्णुका आठवां अवतार, वासुदेव,
देवकीनन्दन । “कृपिर्मुवाचकः शब्दः
यश्च निर्वृत्तिवाचकः । तपोरैव्यं पर
ब्रह्म, कृष्ण इत्यभिधीयते” बायस,
कौब, कलिपुग, कोकिल ।

सं० कृष्णपक्ष (कृष्ण=अंधेरा वा
काला, पक्ष=पक्ष) पु० अंधेरा
पक्ष, बार्द ।

सं० कृष्णमय (कृष्ण=भीकृष्ण,
मय=रुपा वा मिलाहुआ) पु० कृष्ण
के ध्यानमें लगाहुआ, भीकृष्णरूप ।

सं० कृष्ण (कृष्=कलाना करना) पु०
निषमित, बाकायदा ।

सं० कृष्णसार—पु० कालामृग ।

प्रा० केंचुवा (सं० किंचुनुक, किम्
=कुब्ज, चुनुम्प=हिलाना, वा काट-
ना) पु० जमीन का कीड़ा, एक
प्रकार का कीड़ा ।

प्रा० केकड़ा (सं० कर्कट) पु० गेंडा,
एक जानवर का नाम ।

सं० केकयी (केकय एकराना का
नाम) स्त्री० केकयराजा
केकेयी } की बेटी, राजादशरथ
की स्त्री, और भरत की मा ।

सं० केकी (केका=घोर की बोली)
पु० गोर, मयूर ।

प्रा० केतकी (सं० केतक, किन्=

रत्ना) श्री० एक फूल का नाम ।

॥ केता (सं० कनि) कि० वि०
दिवना, किचा ।

॥ केनिक (सं० कनि) मु० पोंडे,
दोवार, झल, दिवना, दिवनाही ।

सं० केतन—वि० पु० घर, २ दाना,
१ निभंघण, ४ आलम, ४ झोड़ा,
६ कोड़ा, ७ काम, = विड ।

सं० केतु (चाप=दूतना, वा वि०=
जानना) पु० नवां घर, २ भंडा,
१ पना, १ पनाका, १ सुंदल तारा,
एकैतु ।

सं० केन्द्र—पु० जरां से पृथी वा
माप होता है और वे दो हैं ? ठहर
केन्द्र, दक्षिण केन्द्र, २ हथ का बीच,
मईस । [मापत ।

सं० केयूर—पु० धंरद, दृष्ट्य, वि०

सं० केरल—पु० आलवादेश, २ द्वेप,
श्री० १ नवीनविद्या, देशविद्या, देश
का इत्य ।

प्रा० केला (सं० बदली) पु० एकपेड़
वा जपरा वमके फल का नाम ।

सं० केलि (वि०=दिटना, वा वि०=
भेतना) श्री०=मंड, झोड़ा, विहार ।

प्रा० केवड़ा (सं० केवड़) पु० एक
केजोड़ा } पुन का नाम ।

प्रा० केवट (सं० कैरव) पु० मंड, दाना,
मदरा, दाना, नाव बलानेकता ।

सं० केवल (के०=सेवाकरना) मु०
एकरी, निगला, भकेता, मुख्य, मास ।

प्रा० केवाड़ (सं० कपाड) पु०
किवाड़ } दिवाड़ी, दरवाजा ।

प्रा० केवान—० कैवर, कमल ।

सं० केश—वि०=दुःखदेना वा रो-
कना, वा का=शिर, ईश=पालिक,
वा क=शिर, शी=सोना) पु० बार,
रोम, लोप, कच ।

सं० केशर (के=शनी में, कषरा शिर
पर, कू=रुटना, वा विरमना, वा
कैलना) पु० कुंज, आकरान, एक
मुग्धविष पीता २ मिह की गारदन
पर के बाल ।

सं० केशरी (केशर) पु० मिह, कू-
गराज, शेर, हनुमान् के कावका नाम ।

केशव (के=शनी में, शी=मोम,
वा केश, बाल, वन=बाला) पु०
धीहृण्य, विष्णु ।

सं० केशी (केश) पु० दूरापुस्त
का नाम जिसकी बंमने धीहृण्य
के बरने केलिपे भेला या वमही
धीहृण्य ने मरा, मु० कपड़े बालों
बाना, जिसमें कपड़े और बहुत
बाल हैं ।

सं० केसर (के=शनी, कू=शान्द)
श्री० केश, कुंज, नामदेवन, वा
करान ।

प्रा० केसरिया (सं० केसर) पु०

केसर में रंगाहुआ, पीला ।

प्रा० केहरी (सं० केसरी) पु० सिंह,

मृगराज, शेर, एक बंदर का नाम ।

प्रा० कैचली (सं० कंचुल, कचि=

बांधना, या चमकना) स्त्री० साँप

की खाल, साँप की खोल ।

सं० कैटभ (कीट=कीड़ा, भा=च-

मकना जो कीड़े के बराबर चमक-

ता हो) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० कैतव-पु० कपट, २ घूत, जुआं,

३ वैद्वर्थ मणि, ४ घृत्त का फल ।

प्रा० कैथी (सं० कायस्थ) स्त्री०

हिंदी अक्षर जो कायस्थ लोग लि-

खते हैं, कायथी हिंदी अक्षर जो

सूखे पिहार के पट्टा, गया आदि

जिलों में लिखे जाते हैं ।

सं० कैरव (के=गानी में, रु=शब्द

करना) पु० कुमुदिनी, कैवलनी,

कमोदनी, सपेद कैवल । [आम ।

प्रा० कैरी-स्त्री० बिन पकाहुआ छोटा

सं० कैलास (कैल=लेल, वा आनं-

द, आस=रहना, या बैठना, अर्था-

त् जहां आनंद से रहने हैं) पु० एक

पराइ विमलयुक्ती धेणीमें है जो

महादेव और कुंजर के रहने की

जगह है ।

सं० कैवर्त (के=गानीमें, वृत्=रह-

कैवर्तक) ना) पु० केवट, धीवर,

मडवा, मडवाह, नावचलनेवाला ।

सं० कैवल्य (कैवल एकही) पु०

मुक्ति, मोक्ष, परमगति, निर्वाण ।

प्रा० कैसा (किस + सा, सं० कीदृश)

, क्रि० वि० किस प्रकार का, किस

तरह का ।

प्रा० कैसाही-बोल० चाहे जैसाही,

किननाही, किसी ही तरह का ।

प्रा० को (सं० कः, कौन) सर्वना० कौन,

२ कर्म कौर सम्प्रदानकारकता चिह्न ।

प्रा० कोई (सं० कोपि, कः=कौन,

कोऊ) अपि=भी) सर्वना०

अनिरचयवाचक । [कोई चीजों

प्रा० कोईसा-बोल० कोई आदमी,

प्रा० कोईनकोई-बोल० यह अथ-

वा यह, कोई एक ।

प्रा० कोईदममें-बोल० गुरन्त, अभी,

थोड़ी देरमें, बहुत जल्द ।

प्रा० कोण्डी (पु० एक जाति जिसका

कोण्डी) पेधा सेती करनेका है ।

प्रा० कोपल (सं० कोरक, कुर=शब्द

करना) स्त्री० अंकुर, मंजरी, पत्नी ।

सं० कोक (कुरु=लेना) पु० चक्रवा,

चक्रवाक, —कोकी=चकरी ।

प्रा० कोका-पु० दूधमाई, घायमाई,

काटिया, कमल । [कोपल ।

सं० कोकिल (कुरु=लेना) स्त्री०

- प्रा० कोम (सं० कुम्भि) श्री० गर्भ, नेट ।
 प्रा० कोमवंध (सं० कुम्भि=बन्धा)
 गु० धांक, बंध्या, जिस स्त्री के लड़का
 बाला न हो ।
 प्रा० कोट (सं० कोट, कुट्ट=काटना)
 पु० गड, किना, दुर्ग ।
 सं० कोटर (कोट=देहापन, कुट्ट=देहा
 होना, कोटर रा=जेना) श्री० पेड़वें
 मोखली जगह, मोड़कल, मोहरा ।
 सं० कोटि (कुट्ट=देहा होना, बा दि-
 स्ता करना) श्री० त्रिभुवन की एक
 पुता, २ धनुष का जगला भाग, गु०
 करोड़, सौलाख ।
 प्रा० कोटरी (सं० कोट, कुट्ट=नि-
 कालना) श्री० छोटा घर, कमरा ।
 प्रा० कोडा (सं० कोट) पु० घर,
 पटा हुआ घर, पहापर, ऊपर का
 मकान ।
 प्रा० कोडी (सं० कोट) श्री० छोटा,
 पकापर, २ भंडार, अम्बार, गोदाम,
 चीज बस्तु रखने की जगह, गोला,
 अनाम रखने की जगह, ३ हुंटीवाल
 की दुकान, महामनी घर, ४ बड़ा
 मकान, बंगला, ५ कारखाना, ६
 कोल, गर्भ-छोटीवाल=हुंटीवाल,
 बड़ासड, बड़ासौदागर, बड़ाधौ-
 पारी, साहकार, महामन ।
 प्रा० कोड़ना-कि० सं० सोड़ना, स-
 तोरना, मोलना रटना, गड़ा रटना,
 खुरचना ।
 प्रा० कोड़ा-पु० चाबुक ।
 प्रा० कोड़ाकरना-बोल० कोड़ा
 मारना, चाबुक छगाना, २ धरा में
 करना, ३ कोड़ा मार के गोड़े को
 सेत करना ।
 प्रा० कोड़ामारना=चाबुक छगाना ।
 प्रा० कोड़ी-श्री० बीसी, बीस २० ।
 प्रा० कोढ़ (सं० कुष्ठ) पु० एक प्रकार
 का रोग, महारोग ।
 प्रा० कोढ़ में स्वाज निकलाना-
 बोल० एक दुग में दूसरे दुग का
 घाना, दुग पर दुग गिरना ।
 प्रा० कोढ़ी (सं० कुष्ठ) गु० जिसके
 कोढ़ निकला हो, कुष्ठी, महारोगी ।
 सं० कोण (कुण=कुनावा) पु० कोना-
 दो लक्षों का भुजाव ।
 प्रा० कोतल-पु० खाली घोड़ा ।
 प्रा० कोथमीर-पु० कधी धोनेपां,
 धनियां की हरीपची ।
 प्रा० कोतली-श्री० बैली, बटुमां ।
 प्रा० कोदो (सं० कोदर, कु=पर-
 कोदो) श्री० दु=माना) श्री०
 एक तरह का घान ।
 सं० कोदण्ड (को=बांस, कु=शब्द
 करना, दंड=दंडा) पु० धनुष, कमान ।
 प्रा० कोना (सं० कोण) पु० सूंड,

कोन, दो लकीरों का झुकाव ।
 प्रा० कोनाकुथरा-बोल० कोई कोना
 क्रिधरहो, किसी जगह, कहीं ।
 सं० कोप (कुप्=क्रोध करना) पु०
 क्रोध, गुस्सा, रोस, खिसियाहट ।
 प्रा० कोपना (सं० कुप्=क्रोध करना)
 क्रि० अ० क्रोध करना, गुस्सा होना ।
 प्रा० कोपर-पु० कटोरा, कटोरी,
 पियाला ।
 सं० कोपि (कः + अपि) सर्वना० कौन ।
 सं० कोपित (कोप् + इत) क० पु०
 क्रुद्ध, कोपयुक्त ।
 सं० कोपी (कोप) गु० क्रोधी, नामसी ।
 प्रा० कोपीन (सं० कौपीन) स्त्री०
 लंगोटी ।
 प्रा० कोवी } स्त्री० एक तरकारी का
 गोवी } नाम ।
 सं० कोमल (कम्=चाहना, वा कु=
 शब्दकरना) गु० नर्म, नम्र मृदु, मुला-
 यम, मृदुल, मनोहर, पु० पानी, नल ।
 सं० कोमलता (कोमल) भा० स्त्री०
 नरमपन, मृदुलता, कोमलताई ।
 प्रा० कोयण } (सं० कोन) पु०
 कोये } आँख से रोने देना,
 आँख से कोना ।
 प्रा० कोयल (सं० कोकिला) स्त्री०
 एक पक्षी का नाम, कोकिला, पिकू,
 २ एक फूल का नाम ।

प्रा० कोर-स्त्री० किनारा, छोर, कगार ।
 प्रा० कोरा-गु० नया, टटका, नहीं
 चरता हुआ, जो काम में नहीं आया
 हो (यह शब्द मिट्टी के चरतन, और
 कपड़ा और कागज के लिये बहुत
 बार बोला जाता है) ।
 प्रा० कोररहना-बोल० निराश होना,
 योंही रहना, कुछ नहीं मिलना ।
 अं० कोर्ट आफ् इन्डिआन्=पूँजनां-
 चकीसभा, तदकीकात का दरबार ।
 प्रा० कोल-पु० खाड़ी, खाल, २
 सड़की गली, ३ अंगुली मनुष्यों
 की जानि, त्वननिवासी, म्लेच्छ भेद ।
 सं० कोलाहल (कोल्=ढेर, इल्=
 धरना) पु० कलकल, कलाहल, बहुत
 मनुष्यों का शब्द, रौला, कलमल,
 धूमधाम, गुनगुनाह ।
 प्रा० कोल्हू-पु० तेल निकालने की
 कल, धानी ।
 सं० कोविद (क=प्रज्ञा, अथवा वेद-
 विद=ज्ञानना) पु० पण्डित, बुद्धिमान ।
 प्रा० कोशना } (सं० कोशन, कुश=
 कोसना } रोना) क्रि० स०
 सराना ।
 सं० कोशलता } (कोश वा कोप=भं-
 कोपला } टार ला=लेना) पु०
 स्त्री० अयोध्यापुरी, अवध ।
 सं० कोष (कुप्=निकालना) पु०
 भंडार, सज्जाना २ दिक्कामरी, अने-

कार्य, आदिपान, ऐसी पुस्तक जि,
समें शब्दों के अर्थ मिलें, ३ अंश-
कोष, ४ मियान, नियाम, लाप,
तटवार का घर ।

सं० कोपलाधीश (कोपला वा
कोशलाधीश) कोशला=अ-
श्वेत, अधीश=राजा) पु० श्री-
रामचन्द्र, २ अधोष्पाके राजा ।

सं० कोपाध्यक्ष (कोप=उजाना, अ-
ध्यक्ष=पालिक) पु० खनांची, भंडारी ।

सं० कोष्ठ (कुष्ठ=निकालना) पु०
कोठा, राधा, कोठरी, जगह ।

प्रा० कोस (सं० कोश, कुश=मुलाना)
पु० आठ हजार हाथ का रस्सा, दो

मील, कोई कोई चार हजार हाथ का
भी कोस मानते हैं ।

प्रा० कोह (सं० कोष) पु० कोष, दुस्सा ।

प्रा० कोहवर } पु० जगह का घर,
कोहवर } कौतुकघर, देवतापर ।

प्रा० कोहाना (सं० कोष) क्रि० अ०
रुजना, कोन करना, प्रोचकरना,
रिसिदाना ।

प्रा० कोही (सं० कोषी) पु० कोषी ।

प्रा० कोषना-क्रि० अ० चपटना,
मराया होना ।

प्रा० कोषा (कोषका) श्री० विमर्शी ।

प्रा० कोला-पु० गुजरा एक फल
का नाम ।

प्रा० कौड़ा (सं० कपर्द) पु० पट्टी
कौड़ी, नांगी ।

प्रा० कौड़ियाला-पु० एक प्रकार
का साग ।

प्रा० कौड़ी (सं० कपर्दिका, क=
पानी, वा सुस, परा=पूर्णता, दा=
देना) श्री० छोटा शंख जो व्यवहार
में लेन देन में चलवाते, २ पन,
दौलत, ३ कर्पाई ।

प्रा० कूटीकौड़ी } शोल० कुदनरी,
कानीकौड़ी } बाँधी नहीं ।

सं० कौतुक (कुतुक) पु० कुतूहल,
हँसी मुशी, आनंद, हँस, खेड, मन
बहलाना ।

सं० कौतुकी (कौतुक) पु० तेल
तिलाही, हँसमुख, कौतुककरनेवाला ।

सं० कौतुकमाला-श्री० तथाशापर ।

प्रा० कोन (सं० कः) परनवाचक
संबेनाम ।

प्रा० कोनसा-शोल० कैसा, किस
तरह का ।

अं० कौंसिल=तथा, दरबार ।

सं० कोमार (कुमार=बालक) पु०
बालकपन, लड़कपन, पुत्रावस्था,
नवानी ।

सं० कौमुदी (कुमुद=चांद, जयरा
कुमुद=कमोदीनी कपातु मिमवे क-
पेदीनी लिखती है, कुमुदार्था, मुद्द
=रमन करना) श्री० चांदनी
चांदिनी ३ एक व्याकरण का ग्रंथ ।

प्रा० क्रान्ति (सं० क्रान्ति) स्त्री०
पपक, पकाश दीप्ति ।

सं० क्रान्ति (कम्प=माना) स्त्री० जा-
ना, पदना, २ रागोक्त में सूर्य का
रहना, रागोक्त में गोलें में देखी गोलें
रहना ।

सं० क्रान्तिमण्डल (क्रान्ति+मं-
ण्डल) पु० रागोक्त में उस दृष्ट का
नाम जो सूर्य का मार्ग जलजाना है ।

सं० क्रामक } क० क्रान्ति, राशीददार ।
क्रायक }

सं० क्रियमाण-कर्म० करने योग्य ।

सं० क्रिया (कृ=करना) स्त्री० काम,
काम, दण्डहार, २ क्रिया कर्म,
३ पर्यवेक्षण की काम, ४ दण्डहारण में
ऐसा शब्द जो धातु से बना हो और
असमय कोई समय पाया जाय, ५
सौन्दर्य, शाय ।

सं० क्रियादत्त-पु० वाममें निपुण ।

सं० क्रीडा } (क्रीड=खेलना) भा०
क्रीडन } स्त्री० खेल, हैसीमुशी,
मन बरलाना, कौतुक ।

सं० क्रीडक } क० पु० गितादी ।
क्रीडित }

सं० क्रुद्ध (क्रुध=क्रोध करना) क०
पु० क्रोध किए हुए, क्रोधिन् ।

सं० क्रूर (क्रु=हाटना) पु० निहुर,
निर्दयी, क्रोह, कड़ा ।

सं० क्रूरता भा० निहुराई, क्रोहस्पता ।

सं० क्रोडपत्र (क्रुड=क्रोडना) चप-
काना, जम करना) पु० संयोजित,
जयीमा, धोड़े से लगाया गया ।

सं० क्रोध (क्रुध=क्रोध करना) पु०
क्रोध, रिस, गुस्सा ।

सं० क्रोधवान् } (क्रोध=क्रोध, वान्
क्रोधवन्त } =वान्ता) पु० क्रोधी
क्रोध करनेवाला ।

सं० क्रोधावेश (क्रोध=क्रोध, आवेश
=पुसना, धा, विश्=पुसना) पु०
क्रोधपुक्त, क्रोध के बरा ।

सं० क्रोधी (क्रोध) पु० क्रोध करने
वाला, गुस्सा करनेवाला, रिसरा ।

सं० क्रोधना-क० स्त्री० क्रोधवती,
क्रोध करनेवाली ।

सं० क्रोश (क्रुश=बुलाना) पु० क्रोश,
कोई = ००० हाथ और कोई ४०००
हाथ का क्रोश मानने हैं ।

सं० क्रोश (क्रुश=खेलना, चिंत्तना)
क० पु० शृंगाल, सियार, २ गधा ।

सं० क्रोश (क्रुश=जाना) पु०
बगुला, २ एक द्वीपका नाम ।

सं० क्रान्त (कम्प=पकना) क०
पु० यका, मांदा, यकिन, यका हुआ ।

सं० क्रान्ति (कम्प=पकना) भा०
स्त्री० यकाबट, कलेश, परिश्रम ।

सं० क्रिन्न (क्रिड=भीगना, रोना) क०
पु० आर्द्र, भीदा, समल, तर, दुस्ती

सं० क्रिष्ट (क्रिष्ट=दुग्धपाना) क० पु०

कड़ा, सल्ल, कठिन ।

सं० क्रीव (क्रीव=नपुंसक होना)

पु० नपुंसक, नापद, रोगा, हिज-
डा, गु० दरपोक, वायर ।

सं० क्रेद (क्रिदु=वमाना) लु० पु०

पूय, पीर, मवाद ।

सं० क्रेग (क्रिग=दुग्धपाना) पु०

दुग्ध, कष्ट, पीडा ।

सं० क्रेगक-क० पु० क्रेगयुक्त, क्रेग-

दाता, दानदाता ।

सं० क्रेगन भा० पीडा, दुःख ।

सं० क्रेगिन सं० पु० दुग्धी, पी-

हित, कष्टित [कहीं, कहीं से]

सं० क्वचिन् । क=कहीं) क्रि० वि०

सं० क्षामुन (क्षम=बोलना) भा०

पु० शब्द, आवाज ।

सं० क्षाथ-पु० निर्यास, पीडा, काका ।

सं० क्षाथिन (क्षथ=रक्षणा) सं०

पु० पचाया हुआ ।

सं० क्षट (सं० क्षथ) स्त्री० क्षय

रोग, राजरोग, दुग्ध की बीमारी ।

सं० क्षण (क्षण=नाश करना) स्त्री०

पल, दण्ड, दण्ड पल का समय या

विनष्ट का समय ।

सं० क्षणिक-क० पु० चोटी देरका ।

सं० क्षत्र (क्षत्र=नाश करना) पु०

घात, चोट, चीरा, जखम, घण ।

सं० क्षत-पु० घण घात, जखम, चोट,

र्म० नष्ट, घातित, विदीर्ण, भान ।

सं० क्षत्ता-पु० गूदा, दासीपुत्र ।

सं० क्षति (क्षण=नाश करना) स्त्री०

हानि, घटी, नुकसान, बिगाड़, मपकार ।

सं० क्षत्र-पु० गरीर, निस्प ।

सं० क्षत्रिय (क्षत्र=घात, त्रै=व-

क्षत्री } चाना) पु० राजपूत,

दुमरा वर्ण, राजन्य ।

सं० क्षत्रिकुलश्रेही-क० पु० क्षत्री

कुल का श्रेही, परशुराम ।

सं० क्षयण (क्षय+अण, क्षय=कै-

कना) क० पु० निर्गुज, बेशाम

बेहया, बेरण, गंदा, गिरगिट ।

सं० क्षमता (क्षम=सहना) स्त्री०

सहनशीलता, सहना, योग्यता,

सामर्थ्य ।

सं० क्षमना (सं० क्षम=सहना)

चमाकरना } क्रि० सं० माफ कर-

ना, सहना, छोड़ना ।

सं० क्षमा (क्षम=सहना) भा० स्त्री०

माफी, माफ करना, मंजूर, माफ,

क्षमि २ सहम, मय, कदाचन ।

सं० क्षमिन् क० पु० क्षम, क्षमा-

क्षयी } क्षीय, गच्छाव ।

सं० क्षय (क्षि=नाश करना) भा०

पु० क्षय, २

सं० क्षरण (क्षर+अण, क्षर=व-
हना, टपकना) भा० पु०, चपुव
होना, गिरना ।

सं० क्षान्त (क्षम्=सहना) गु०
सहनेवाला, धीरनवान्, प्रभावान्,
सन्तोषी ।

सं० क्षान्ति (क्षम्=सहना) स्त्री०
समा, धीरज, संतोष ।

सं० क्षाम-पु० क्षीण, दुर्बल, हरा ।

सं० क्षार (क्षर=गिरना, नाशहोना)
स्त्री० क्षार, २. राग, भस्म ।

सं० क्षालन (क्षल्=शुद्ध करना)
पु० पोना, पोंदना, साफ करना,
भेगालना ।

सं० क्षालक (क्षल्+कङ्) क०
पु० पोनेवाला ।

सं० क्षालिन (क्षल्+इन्) र्व्य०
पु० पोवा हुआ, धीन ।

सं० क्षिति (क्षि=रहना, बसना)
स्त्री० परती, तृप्ती, जपती, पराणी ।

सं० क्षितिधर (क्षिति=परती, धर=
सहनेवाला, धृ=रहना) पु०
पहाड़, चर्वट ।

सं० क्षितिप } (क्षिति=रहना, पा
क्षितिपति } =बवाना) पु० राधा ।

सं० क्षितिपाल (क्षिति=तृप्ती, पा-
ल्=बवाना) पु० राधा, महाराज ।

सं० क्षिपक (क्षि+कङ्) क० पु०

बोदा, बहादुर । [तुरंत, सी

सं० क्षिप्र (क्षिप्=फेंकना) गु० जल्द

सं० क्षीण (क्षि=नाश करना) गु०
दुबना, निर्बल, दुर्बल, शरीर ।

सं० क्षीर (क्षम्=सहना) पु० दूध,
पानी ।

सं० क्षुब्ध (क्षु+व, क्षुब्ध=पीसना)
र्य्य० पु० पीसा हुआ, चूणोंदित ।

सं० क्षुद्र (क्षु+वृ, क्षुद्र=होना) गु०
बेधा, नीच, अल, मूर्ख ।

सं० क्षुद्रा-स्त्री० बेरवा, नदी, मधु-
पातिका, भट्टकटैया ।

सं० क्षुधा (क्षु+भूयाहोना) भा०
स्त्री० भूय, माने की पाह ।

सं० क्षुधातुर-क० पु० भूय से
आकुल, भूया ।

सं० क्षुधार्त (क्षुधा=भूया, धार्त=
परवावा हुआ) गु० भूया, बहुत
ही भूया ।

सं० क्षुधावन्न (क्षुधा=भूय, वन्न=
वाला) गु० भूया ।

सं० क्षुधित (क्षु+वृ, क० पु० भूया ।

सं० क्षुभिन } (क्षु+भोजना) क०
क्षुब्ध } पु० टगा हुआ, गव-
राया हुआ, आकुल ।

सं० क्षुर (क्षुर=छटना) भा० पु० च-
स्ता, घुहा, २. गुर ।

सं० क्षुरभाण्ड (क्षुर=टूटा, भाण्ड

प्रा० खांडे की धार पर चलना-
बोल० न्यायपरचलना, न्याय करना ।

प्रा० खांसी (सं० काश, कश=शब्द
करना) स्त्री० गोखी, धांसी ।

प्रा० खाई (सं० खात, खन=खोदना)
स्त्री० खंदक, नाला, गढ़वा गढ़ के
धार का नाला ।

प्रा० खाऊ (खाना) पु० पेट, पेटाँधी,
बहुत खानेवाला ।

प्रा० खाग (सं० खड्ग) पु० गैंडे का
सींग ।

प्रा० खाज (सं० खर्ज, खर्ज=दुख
देना) स्त्री० खुमछी ।

प्रा० खाजा (सं० खाद्य=खानेयोग्य)
पु० एक तरह की मिठाई ।

प्रा० खाट (सं० खट्टा) स्त्री० चार-
पाई, खटिया ।

सं० खात (खन=खोदना) स्त्री०
पु० खाई, खेय, परिया, दुर्गवेष्टन,
खन्दक ।

प्रा० खाता-पु० लेखापत्री, रोजके
हिसाब की बही, खमरा, हिताव ।

प्रा० खाती-पु० बर्तन, मिशनी ।

सं० खादक (खाद + शक) क० पु०
श्रेणी, कर्मदार, सवैया ।

सं० खादन (खाद + खन) प्रा० पु०
भक्षण, भोजन, खुराक, -

सं० खाद्य (खाद=खाना) स्त्री० खाने
योग्य, पु० खाना, खाने की चीज ।

प्रा० खान (सं० खानि, वा खनि,
खानी) खन=खोदना) स्त्री०

खानि, आकर, पादन, देहर, खंवर ।

प्रा० खाना (भं० खादन, खाद=खा-
ना) क्रि० स० भोजन करना,
दे खानाना, उढ़ाना, चोरीकरना,
मारखाना, चाटखाना, निगलना,
ढवार जाना, हजम करखाना, चट
करना, हाथ मारना, पु० खाने की
चीज, भोजन, आहार ।

प्रा० खानाना-बोल० खालेना,
ढकारना, चट करना, हजम करना,
मारखाना, निगलना, उढ़ाना ।

प्रा० खानापीना-बोल० भोजन,
खुराक, खाना ।

सं० खानिक (खन=खोदना) क०
जो खानिमें पैदा हो, स्त्री० खानि ।

प्रा० खार (सं० खार) पु० लोना,
एक सफेद खारीचीज जिससे बहुत
बार घोषी कपड़े साफ करते हैं ।

प्रा० खारा (सं० खार) पु० लोना,
गमकीन ।

प्रा० खारुआ (पु० एक तरह का गोटा,
खारुआ) लाल कपड़ा ।

प्रा० खाल (सं० खाल) स्त्री० चमड़ा,
दे घोंकनी, दे साड़ी, कोल ।

प्रा० खालखचना-बोल० खनुप्य
की तरह से चमड़ा उतारलेना, बहुत

दुग्देकर पावदानना, चमदानेना,
सपडा उदेडना, सानिधाना ।

प्रा० निचना-कि० अ० ननना, पेंडना ।

प्रा० निजलाना (सं० निहू=दुग
निजाना देना) कि० म०

मगना, पिडाना, सेडना, दुगरेना,
रहना देना, कोना रहना ।

प्रा० निहूकी-सं० भगोना, रसीपी ।

सं० निज (१५५-दुगरेना वा दुग
ना) सं० पु० दुगा, दुगिन, थका
दुग, थका, मगना, मगना ।

प्रा० निगनी (सं० निगनी, सीर
ना) सं० पु० क० सीर वमरे
१६६-५५

प्रा० निजमिलाना (सं० निज-
ना १६०-म० वरुनो मेरेगना ।

प्रा० निजना-कि० अ० क० देना, ०
देना १६०-५५ देना देना ।

प्रा० निजना (सं० निजना, पु० नि-
जना १६०-५५)

प्रा० निजना (सं० निजना, पु० निज-
ना १६०-५५)

प्रा० निजना (सं० निजना, पु० निज-
ना १६०-५५)

प्रा० निजना (सं० निजना, पु० निज-
ना १६०-५५)

प्रा० निजना (सं० निजना, पु० निज-
ना १६०-५५)

प्रा० निजना (सं० निजना, पु० निज-
ना १६०-५५)

होना, कोप करना, दुगिन होना,
दुगी होना ।

प्रा० सीर (सं० सीर) पु० दुग
और चांचन से बनी हुई एक लाने
की बीज जाउर, पायस ।

प्रा० सीरा सी० एक मकार की
कहती ।

प्रा० सील-सी० भूनादना चांचन,
लाना ।

प्रा० सीली-सी० लाना की बीज ।

प्रा० सीगना-कि० सं० नाकलाना,
उभावना, चिगावना, ० गिगियाना ।

प्रा० सीम-ना० सी० लाना हुई,
० दान निहानना ।

प्रा० सीमा (का० सीमद) पु०
मेरा, गतीना ।

प्रा० सुजलाना (सं० सुजे दुगरेना)
कि० म० कनकलाना, सुजलाना-
ना, लजलाना, लगेदना, लगेगना ।

प्रा० सुजलादृष्ट (सं० सुजे, लगे
सुजलादृष्ट)=दुग देना)

सी० सुजलाना, सुजली, सुजलि,
सुजली ।

प्रा० सुजली (सं० सुजे, लगे दुग
देना) सी० लाना, पायस, लाना ।

प्रा० सुजना-कि० म० क० देना,
पडना ।

प्रा० सुजनी-सी० ० बीज हुई, देना
हुई, लाना हुई ।

प्रा० सुदाना (सं० सुद=कोरना

वा सुद=सूर २ करना) क्रि० स० सुदाना ।	पर देवता, गु० धाराश में चन- नेवाला ।
प्रा० सुनस-धी० रोस, बैर, क्रोध, बोन, लाग, रिस ।	सं० सुद (सिद्=सवाना) पु० ग्रह २ पक्षी=अथपक्षमय/सेतुदक्षिणार ।
प्रा० सुनसाना-क्रि० अ० क्रोधित होना, विमियाना, क्रोध करना, बोप करना, गिमाना ।	सं० सुदक (गिट=द्वाना, सवाना) क० पु० शिखर, अक्षर, २ डाल, १ पय, ४ कुत्तियन, २ ग्राम, ६ कक, ७ सपम ।
प्रा० सुवना १ क्रि० अ० चुपना, सुभना १ विपना, ठना, अमर करना, मन में सिच जाना ।	प्रा० सुवडा सं० सुद, सुद=राना) पु० पुखा, गांव ।
सं० सुव (सुव=काटना) पु० सुय, पौंके गाय काटि के पैरवा नरा ।	प्रा० सुवडी-धी० अचछा नोहा, कानाद, ईसान ।
प्रा० सुवपा (सं० सुव=काटना) पु० पाता खोदने का औजार ।	प्रा० सुवन (सं० सुव) पु० जगह जरा अनाज नरकासी आदि बोने हैं, २ पवित्रधरनी, ३ धरनी, जमीन, ४ लड़ाई का मैदान ।
प्रा० सुवमा (प्रा० सुवई) पु० एक नरह की मिट्टई ।	प्रा० सुवदोड़ना-बोल० छड़ाई में भागमाना ।
प्रा० सुवना-क्रि० अ० सुनमाना, महद होना, नहीं रहना, विगाना, (जैसे बादल) नाक हो जाना, स्वच्छ होमाना (जैसे आकाश) हूना, हूमाना (जैसे स्थान)	प्रा० सुवगहना-धोन० छड़ाई में रहमाना, कासाना ।
प्रा० सुव-पु० बीना, बोप, २ काम का पैना ।	प्रा० सुवनी (सेव) धी० विगनी, बाइवकारी, तिरावन, अमन ।
प्रा० सुवना (सं० सुव=सुनकरना) क्रि० स० सुने में करनी को सुव- ना, टपकाना ।	प्रा० सुवनीवाडी-बोछ० सुवनीवापेप, विमनी, बारनवासी, तिरावन ।
सं० सुव (से=आकाश में पर= पतनेवाला, पर=चनना) पु० इर, बाहु, गारागड, पक्षी, बैर, २ विना-	सं० सुद (गिट=दुगमाना) पु० दुय, शोष, शोष, पक्षपात, बह, गह- नीक, पीडा, चढवा ।
	सं० सुदिन (गिट=दुगमाना) पु० दुगिट, दुय, पीदिन ।
	प्रा० सुव (सं० सुव, सिव=नेवना,

भेजना) स्त्री० सफर, सर्वदरकी यात्रा,
२ जहाज का बोझ ।

प्रा० खेपहारना—बोल० नुकसान
उठाना, हानि होना ।

प्रा० खेल (सं० खेला, खेल=हिलना
चलना) पु० क्रीड़ा, बिहार ।

प्रा० खेवट (सं० खेवर्त्त) पु० नाव
खेवटिया } चलानेवाला, मांझी,
मल्लाह, डांडी, खेवक ।

प्रा० खेवना (सं० खेपण) क्रि० स०
डांडमारना, नावचलाना ।

प्रा० खेवा (सं० खेप्य) पु० उतराई,
नाव की उतराई का भाड़ा,
२ नदी पार होना ।

प्रा० खेस—पु० एक कपड़े का नाम ।

प्रा० खेंचना—क्रि० सं० तानना, क-
सना, धेंचना, २ तसवीरमें रंग भरना,
तसवीर उतारना, तसवीर बनाना ।

प्रा० खेंचाखेंची—बोल० खेंचातानी,
लड़ाई, मारामारी ।

प्रा० खैर (सं० खादिर) पु० एक
वृक्ष का नाम, खादिर पेड़ का गुद्दा ।

प्रा० खोंता—पु० घोंसला, पगेरुका घर ।

प्रा० खोंसना—क्रि० स० आंसना,
ठोंसना, भरना ।

प्रा० खोंखला (सं० कोटर) पु०
साली, छूड़ा, थोपा, पोला ।

प्रा० खोखा—पु० बंद हुंडी जिसके
रूपे दिये जा चुके हों ।

प्रा० खोजं—पु० पता, निशान, डि-
काना, चिह्न । [अवगुण ।

प्रा० खोट-स्त्री० चूक, भूल, दोष,

प्रा० खोटा—पु० भूठा, नमकहराम,
सगाव ।

प्रा० खोदना (सं० खन=खोदना
वा खुद=चूर चूर करना) क्रि०
स० खनना, गोड़ना, कुदना ।

प्रा० खोना (सं० क्षय) क्रि० स०
गंवाना, उड़ाना, नाशकरना, हारना ।

प्रा० खोपरा (सं० खपर) पु० ना-
रियल की गरी ।

प्रा० खोपरी (सं० खपर) स्त्री०
कपाल की इड़ी, शिर की इड़ी,
खोपड़ी ।

प्रा० खोह-स्त्री० गुफा, गुहा, गड़हा ।

प्रा० खोरि— (सं० खोद=खेदी
खोरी) बाल) भा० खी०
खुदाई, दोष, कमूर ।

प्रा० खोल-स्त्री० खोलना, २ मियान ।

प्रा० खोह-स्त्री० गुफा, कंदला ।

प्रा० खोड़-स्त्री० तिलक, बिपुंड ।

प्रा० खौलना—क्रि० अ० उकालना,
उकलना, बहून गर्म होना ।

सं० रुयात (रुवा=प्रसिद्ध होना)
मर्म० नामवर, प्रसिद्ध, प्रसिद्धि, वि-
दित, प्रचार, उजागर ।

सं० रुयाति (रुवा=प्रसिद्ध होना)

भा० स्त्री० यमनाम, कीर्ति, सहाय,
नानवरी ।

अ० स्त्री०=रिमरी ।

प्रा० स्याल (गेल) पु० तपस्या,
कौतुक, मठल, स्वयं, खेल ।

फा० स्वाहिश=आपना, चाद ।

ग

सं० ग (गै=गाना, पु० गंधर्व, २ ग
मेगनी, ३ गंधी, ४ गीत ।

प्रा० गंग (भे=गङ्गा) स्त्री० गंगानदी ।

प्रा० गंज-स्त्री० चांदनी, चांदनीरा ।

प्रा० गंजा (गंज) पु० जिनके गिर
में गंग हो, चंदना ।

प्रा० गंजना-क्रि० स० नागहरना ।

प्रा० गंडजोरा (भं० ग्रन्थ जोड़,
ग्रंथि=गांड जुड़=बांधना) पु० गांड
बांधना ।

प्रा० गंडजोड़ाबांधना-बोल=ज्याह
में दुलहा दुलहिनी के बांधना से
गांड बांधना ।

प्रा० गंडकडा } (सं० गन्धि=गांड,
गंडकडा } कृत्=गांधना) पु०
जेब बनना ।

प्रा० गंडा (सं० गण्डक) पु० वेग,
२ चार काँड़ी, चार, ३ गंडोला
नागा जो बालकों के गलेमें बांधा
जाता है, तावीज ।

प्रा० गंडासा-पु० फरसा, तबल ।

प्रा० गंडेरी (सं० ग्रन्थि) स्त्री० जग
का दुकड़ा ।

प्रा० गंधी (सं० गन्धि) पु० धनर
गुहावनन आदि बचनेवाला ।

प्रा० गँव (पु० अवसर, दांव, सु-
गाँ) भीता, अवकाश, मौका ।

प्रा० गंवाना (सं० गन्=गाना) क्रि०
स० सोना, उड़ाना, फैलना, छर्च
वरना ।

प्रा० गवार (सं० ग्राह्य) पु० गाँवमें
रहनेवाला, २ जनरक, मूर्ख ।

प्रा० गंवी० } (ग्रन्थ) पु० गाँव का
गँवई } गँवड़ा, दिहायी, पु०
गाँव, दिहात ।

सं० गगण } (गम्=गाना) पु० आ-
गगन } काश, आस्मान ।

प्रा० गगरी } सं० गर्गरी, गर्ग ऐसा
गागरी } शब्द, रा=लेना) स्त्री०
मटरही, कलसी, श्लोकाचढ़ा, डिलिया ।

सं० गङ्गा (गम्=गाना) स्त्री० एक
नदी का नाम, भागीरथी, नाइवी,
मुसरी ।

प्रा० गङ्गाजमुनी (सं० गङ्गा + य-
मुनः) स्त्री० कानका रहना, पाली,
२ घोड़े अथवा बैलों की धौली और
काली भूज, ३ धौला और काला
दिनाङ्क का रंग ।

सं० गङ्गाजल (गङ्गा=नदी का नाम
जल=पानी) पु० गङ्गा का पानी ।

सं० गङ्गाद्वार (गङ्गा=नदी का नाम,
द्वार=द्वार) पु० गङ्गा का द्वार ।

द्वार बह जगह जहां गङ्गा निचला
कर बहती है ।

सं० गङ्गाधर (गङ्गा=नदी का नाम,
धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु०
शिव, महादेव, जिन्होंने पहले गङ्गा
को अपनी जटा में रखलियाथा ।

सं० गङ्गासागर (गङ्गा, सागर=
समुद्र) पु० वह जगह जहां गङ्गा
समुद्र से मिलती है ।

प्रा० गजपत्र-घोल० भीड़माद,
धना, गहरा, कष्टमकष्ट ।

सं० गज (गज=मस्त होने, गज्ज
करना) पु० हाथी ।

फ्रा० गज्ज-पु० दो हाथका नाव, ३३
इंच या ३६ इंच का नाव ।

सं० गजगामिनी (गज=हाथी, ग-
म=माना) स्त्री० जिस स्त्री की भा-
ल हाथी कैसी हो ।

प्रा० गजगाह (सं० गज=हाथी,
गाह=गहरा) पु० हाथी, घोड़ों
का गहरा ।

सं० गजपति (गज=हाथी, पति
=मानिक) पु० राजा, २ हाथी का
मानिक अथवा हाथीपर चढ़नेवाला,
३ बड़ा हाथी ।

सं० गजपाल (गज=हाथी, पाल=
पालनेवाला, पाल=पालना) पु०
मरावन, हाथीचान ।

प्रा० गजमोती (सं० गजमुक्ता) पु०
हाथी के शिर का मोती, गजमणि ।

सं० गजगूथ (गज=हाथी, गूथ=घोला,
भुण्ड) पु० हाथियों का घोला,
हाथियों का भुण्ड ।

प्रा० गजरा (सं० गजेर) पु० गाजर
का पत्ता, २ हाथमें पहननेका गहरा ।

सं० गजराज (गज=हाथी, राजन्=
राजा) पु० बड़ा, हाथी, गजेन्द्र ।

सं० गजनदन (गज=हाथी, दन=
मुँह) पु० गणेशजी ।

सं० गजानन (गज=हाथी, आनन
=मुँह) पु० गणेशजी ।

सं० गजारि (गज=हाथी, अरि=
बेरी) सिंह, शेर ।

सं० गजेन्द्र (गज=हाथी, इन्द्र=रा-
जा) पु० हाथियों का राजा, गज-
राज, २ इन्द्र का हाथी ।

सं० गज्ज (गज्ज=मस्त होना, वा
गज्ज=हरना) पु० डेर, राताना,
भरार, २ हाड, याजार ।

सं० गज्जना-भा० स्त्री० यानना,
घोड़ा, वहलौक, जाकन्दनी ।

सं० गज्जित (गज्ज+इत) स्मे०
लांछित, दूषित । [गदयद ।

प्रा० गजपट्ट-क्रि० वि० उलटपुलट,

सं० गजक (गज+अक, गज=निर्मा-
णकरना, बनाना) क० पु० बनाने
बाना, मुमयिक ।

सं० गठन (गठ + जन) भा० पु०

निर्माण करना, तमनीक करना ।

सं० गठित (गठ + इत) स्त्री० नि-
मित्त, इनो हुई ।

प्रा० गट्टा (सं० ग्रन्थि) पु० गट्टड़ी,

बस्ता, २ लहरगुन, राजा आदि की

गाँठ अथवा गड़, ३ जरीव का बी-
सवाँ हिस्सा, गट्टा ।

प्रा० गट्टड़ी (सं० ग्रन्थि) स्त्री०

गट्टरी } गाँठ, मोट, थोटी ।

प्रा० गठिया (सं० ग्रन्थि) स्त्री० ग-

ठड़ी, गाँठ, एक प्रकार का बालरोग,
कुनाव ।

प्रा० गठीला (गाँठ) क० गाँठदार,

गाँठवाला, २ हरमुड़ा, संदमुमंड ।

प्रा० गड़गड़ाना-क्रि० अ० गर्जन।

गुड़गुड़ाना ।

प्रा० गड़गुड़-पु० चियड़ा, फटा

पुराना कपड़ा । [ट पुत्तट ।

प्रा० गड़वड़-क्रि० वि० गटपट, उल-

प्रा० गड़रिया (गाटर=भेड़ी) पु०

भेड़ी बकरी को चरानेवाला, रम-

बाला, चरबाहा, देशवाल ।

प्रा० गड़हा (सं० गर्न) पु० ग-

गढ़ा } देला, मट्टा ।

प्रा० गड़ी-भी० कागजके दशदस्ते ।

प्रा० गढ़-पु० कोट, दुर्ग, गढ़ा ।

प्रा० गढ़ना-क्रि० सं० ठोकना, ब-

नाना, सुधारना । [गाढ़ा ।

प्रा० गढ़वार (सं० गाढ़) पु० मोटा,

सं० गण (गण=गिनना) पु० समूह,

थोक, मुँह, २ शिव के दूत, ३ सेना

मिसमें २९ रथ ८१ घोड़े और

१३५ पैदल हों ४ गण आठ हैं

मिनका काम वर्णरूप ध्वज में पढ़ता

है गण २ जगण ३ सगण ४ यगण

५ रगण ६ तगण ७ मगण ८ न-

गण इनके जानने के बास्ते, दोहा-

आदिपञ्च अयसानमें, भनसहोहि

गुरुनाना परतहोहि लगुरुपहि सो,

मन गुरु लपु सयजान ॥

सं० गणक (गण=गिनना) क० पु०

गिननेवाला, गणितज्ञ, उद्योतिपी,

नृत्तपी ।

सं० गणना-भा० पम्प्टर, जगधन ।

सं० गणना (गण=गिनना) स्त्री०

गिनी, संख्या ।

सं० गणनाथ (गण=शिव के दूत,

नाथ=स्वामी) पु० गणेशभी ।

सं० गणनायक (गण, नायक=प-

लिक) पु० गणेशभी ।

सं० गणपति (गण, गनि=पालिक)

पु० गणेशभी, गजानन ।

प्रा० गणराऊ (सं० गणरान) पु०

गणेशभी ।

सं० गणाधिप (गण + अधिप=मा-

- लिक) पु० गणेशजी, गणुराज ।
 सं० गणिका (गण=समूह, अर्थात् जिसके बहुत से पतिरों) स्त्री०
 वैश्य, पतुरिया, कंचनी ।
 सं० गणित (गण=गिनना) पु०
 हिसाब, अङ्कविद्या ।
 सं० गणितज्ञ (गणित=हिसाब, ज्ञ=जानना) पु० हिसाब जाननेवाला ।
 सं० गणेश (गण=महादेव के दूत, ईश=स्वामी) पु० गजानन, गणपति, महादेव का वेश ।
 सं० गरुड (गरुड, मुंड का एक भाग होना) पु० गाल, दाँतों का गाल ।
 सं० गरुडकी (गरुड=सींचना) स्त्री०
 एक नदी का नाम ।
 सं० गुण्य (गुण=गिनना) अर्थात् गिनने योग्य ।
 सं० गत (गत=जाना) क० गतादृशा, २. पायादृशा, भाषा, ३. ज्ञातदृशा ।
 प्रा० गत (गत=जाना) स्त्री० चान
 सं० गति (चलन, बदला, शान, ३. रीति, गह, रक्षा, ४. ज्ञान, ५. उपाय ६. क्रिया ७. मोक्ष, मुक्ति) ।
 सं० गतागत (गत+आगत) प्रा०
 पु० जाना आना, आसद्वय ।
 सं० गतान्न (गत=गई अन्न=आंश) पु०
 वह वस्तु जिसमें आंश की गोदनी जाती रही, अन्न ।
 सं० गतानुगतिक (गत=गया, अनु-
 गति=पीछे चलनेवाला) क०

- एक के पीछे चलनेवाला, अनुवा-
 यी, अनुगामी, उपर सतम होगई ।
 सं० गतायुः (गत=गई, आयुम्=उ-
 मर) पु० वह वस्तु जिसकी उमर पूरी होगई । [कथायद् ।
 सं० गतिपरिपाटी-स्त्री०, क्रीड़ी
 सं० गद-पु० रोग, बीमारी, मर्त ।
 प्रा० गदका (सं० गदा) पु० पटा
 प्रा० गदहा (सं० गर्दभ, गर्द=
 गधा) शब्द करना) पु०
 एक जानवर का नाम, रार ।
 सं० गदहा (गद=रोग, हन्=नाश
 करना) क० पु० वैद्य, इकीम, राफटर ।
 सं० गदा (गद्=शब्द करना) स्त्री०
 सोरा, लाठी, चोब ।
 सं० गदाधर (गदा=मोटा, धर=रखने
 वाला, धृ=गयना) पु० विष्णु का नाम ।
 सं० गद्विन (गद्+इन, गद=हहना)
 अन्=कहादृका ।
 सं० गर्दा (गद्+इ) क० पु० विष्णु
 २. रोगी, मरीज ।
 प्रा० गर्दला-पु० मोटा निर्दोष, वि-
 द्योता जिसमें गद् बहुतभरी हुई हो ।
 सं० गद्गद् (गद्=रुष्ट, और गद्=
 शानना, वा गद्द प्रांशों नही
 निरन्तर) पु० मागेमुनी के पूराबोल
 नहीं निरन्तर, पु० आनन्दन, म-
 सन, नकुष, बागबाग, मृग ।

प्रा० गद्दी ? स्त्री० चिह्नौना, २
गादी } आसन, ३ राजा का
सिंहासन, वस्त्र ।

सं० गद्य (गद् = बोलना) पु० बन्द
रहित वाक्य, बिना छंद का वाक्य,
वाचिक, नसर ।

प्रा० गनना (सं० गणना, गण =
गिनना) कि० सं० गिनना, गुमार
करना, गिन्ती करना ।

सं० गन्ता (गम् + ता, गम् = जाना)
क० पु० गमनकर्ता, जानेवाला ।

सं० गन्तु - क० पु० पथिक, मुसाफिर ।

सं० गन्ध (गन्ध = धूमना, स्त्री० वास,
मसक, सुगन्ध, सौरभ ।

सं० गन्धक (गन्ध) पु० एकशीले
रंग की धातु ।

सं० गन्धमादन (गन्ध = मसक, मादन
= मसक करनेवाला, मद् = मस्नक-
रना) पु० एक पहाड़ का नाम,
२ बंदरी के एक सरदार का नाम,
३ गन्धक ।

सं० गन्धराज (गन्ध = मसक, राज =
शोमना) पु० चन्दन, २ सुगन्धितफूल ।

सं० गन्धर्व (गन्ध = सुगन्ध, अर्व =
जाना) पु० स्वर्ग का गन्धवा ।

सं० गन्धवह ? (गन्ध = सुगन्ध, वह =
लेजाना) पु० हवा,
धवन, वायु, २ वस्तुविषय हरित,
३ नाक, नासिका ।

सं० गन्धसार (गन्ध = सुगन्ध, सार =
रस) पु० चन्दन, धीसुगन्ध ।

सं० गन्धार (गन्ध = सुगन्ध, ध्व = जाना)
पु० एकरागका नाम, २ कंधारदेश ।

प्रा० गन्धारी (सं० गान्धारी, गा-
न्धार, कंधारदेश) स्त्री० कंधारदेश
के राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की पत्नी
और दुर्योधन की मा ।

प्रा० गप - स्त्री० इपर तपर की झूठ
सच बान, बक बक, झूठ २ ।

प्रा० गपमारना - बोल० झूठी सची
बाने करना । [बात, गप ।

प्रा० गपशप - बोल० झूठी सची

सं० गभीर ? (गम् = जाना) पु० गहरा,
गम्भीर } अगार, अगगाह, २ धीर,
धीमा, सोधी, भारी, गहरा, निगूह,
अभीक, इलीय ।

सं० गमन (गम् = जाना) भा० पु०
चलना, जाना, चक्कन, यात्रा ।

सं० गमनागमन (गमन + आगमन)
भा० पु० आना जाना, आगमनप्रव ।

सं० गमी - क० पु० जानेवाला ।

प्रा० गमी - क० पु० गमकरनेवाला,
रंज करनेवाला ।

सं० गम्य (गम् = जाना) कर्म० जाने
योग्य, पाने योग्य, जानने योग्य ।

प्रा० गयन्द ? (गं = गमने, पु० बड़ा
गंद } हाथी, गन्ध -

सं० गर्व—भा० यमंड, गरुड । ०१

सं० गर्वित (गर्व=यमंड करना) पु०
यमंडी, अहंकारी, अभिमानो, य-
मंडार ।

सं० गर्हक (गर्ह + अक, गर्ह=निन्दा
करना) क० पु० निन्दक, चुगुल ।

सं० गर्हण (गर्ह + ण) ण० पु०
निन्दा, मज्जम्पत । [यमयम ।

सं० गर्हित (गर्ह + इत) क्त्वा० निन्दित,

सं० गल (गल्=लाना, वा गु=नि-
गलना) पु० गला, गरदन ।

प्रा० गलदेना—बोल० फांसी देना ।

प्रा० गलवहियां (सं० गलवाहु, गल
=गला, वाहु=मुझ) स्त्री० गल-
वाह, गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलवहियां डालना—बोल०
किसी के गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलना (सं० गलन, गल्=
गिरना) क्त्वा० घिसलना, नर्ध
होना—२ सड़ना, बिगड़ना ।

प्रा० गला (सं० गल) पु० कण्ठ,
गरदन, ग्रीवा, नरटी, २ स्वर, आ-
वाज, गु० सड़ाहुआ, पिचलाहुआ ।

प्रा० गलाघोंटना—बोल० आवाज
गलापड़ना) घोंटना, भारी

शब्द होना, गला घनघनाना,
गला रसैराना ।

प्रा० गलाफांसना—बोल० फांसी

देना, गल देना, गला दवाना, दम
बंदकरना ।

प्रा० गलादवाना—बोल० गला घों-
टना, नरटी दवाना, फांसी देना ।

प्रा० गलाघोंटना—बोल० नरटी द-
वाना, गलादवाना, दम बंदकरना ।

प्रा० गलेपड़ना—बोल० मज्जामद
करना, जो मज्जामद प्रीति नष्ट करना
चाहता उससे प्रीति किया चाहता ।

प्रा० गलेपड़ीवजायेसिद्ध—बोल०
जो काम आपड़े उसको करना ही
चाहिये ।

प्रा० गले का हार होना—बोल०
किसी से बड़ी लगन के साथ प्यार
करना, मन हर लेना, सदा मन
में बसना ।

प्रा० गलेलगना—बोल० मिलना,
घाती से लगाना ।

प्रा० गलाना (गलना) क्त्वा० स०
घिसलाना, २ सड़ाना ।

सं० गलित (गल्=गिरना) क० गला
हुआ, पड़ाहुआ, सड़ाहुआ, गिरा
हुआ, जो गिर पड़ा हो ।

प्रा० गली—स्त्री० बोतारस्ता, भेगारस्ता ।

प्रा० गलीगली—बोल० एकगली में
दूसरी गली तक, हरगली ।

प्रा० गवन (सं० गमन) भा० पु०
जाना, चलना, कूच, जाना ।

सं० गवय (गो=गाय) पु० गाय के

गिरिन्दा (मं० गिरीन्द्र) पु० बड़ा पहाड़, मुमेरु पहाड़, हिमालय पहाड़।
गिरिराज (गिरि=पहाड़, राज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, गोवर्द्धन, हिमालय, मुमेरु, २ श्री-कृष्ण का नाम।

सं० गिरिवर (गिरि=पहाड़, वर=बड़ा) पु० बड़ा पहाड़।

सं० गिरिसुता (गिरि=पहाड़, सुता=पुत्री) श्री० पार्वती, गौरी, गिरिजा, वमा।

सं० गिरीन्द्र (गिरि=पहाड़, इन्द्र=राजा) पु० हिमालय, मुमेरु, गिरीश।

सं० गिरीश (गिरि=पहाड़, ईश=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ हिमालय।

प्रा० गिलई-भा० श्री० निगलनाह।
सं० गिलन (गु=निगलना वा गाना) भा० पु० भक्षण, खाना।

अ० गिलन=अः घोटल का घसाना।
सं० गिलित (गिल् + इत) ईव० श्री० सादित, पक्षित, लाई हुई।

सं० गीतिका=नाम एक छन्द का।
प्रा० गिलहरी-श्री० एक जानवर का नाम, रुसी चीमुर।

प्रा० गिलौरी-श्री० पान की बीड़ी।
सं० गीन (गै=गाना) पु० गान, वजन
सं० गीता (गै=गाना) श्री० एक पु-नाम जिस में श्रीकृष्ण

और अर्जुन का संवाद है और उसको भगवद्गीता कहते हैं इसके सिवाय रामगीता, पांडवगीता, आदि और भी गीता हैं पर इन सब में भगवद्गीता बहुत प्रसिद्ध है।

प्रा० गीदड़-पु० शिवाल, गूगल।

प्रा० गीध (सं० गृध्र) पु० गिद्ध, गृध्र।

प्रा० गीला-गु० ओढ़ा, पीना, सीला।

सं० गु-मं० विष्टा, गलीज।

प्रा० गुंजान-गु० गहरा, सयन, पना, पामपाम।

प्रा० गुजरात (सं० गुर्जर) श्री० एक देशानाम, हिंदुस्तान का एक सूबा।

प्रा० गुजगनी-गु० गुजरात का।

सं० गुञ्जन-भा० गुंजना।

सं० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) पु० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

सं० गुञ्जा (गुञ्ज=गुजरात) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुड़गुड़ी—स्त्री० छोटा हुआ ।

प्रा० गुड़िया—स्त्री० लड़कियों का खिलौना । [कनकौचा ।

प्रा० गुड़ी—स्त्री० पतंग, तिलंगी,

सं० गुण—(गुण=बुलाना वा गुनना)

पु० स्वभाव, विशेषण, २ हुनर, चतुराई, मवीणता, विद्या, ३ रस्सी, टोरी, ४ सत्त्व रज तम ये तीन गुण ५ कृपा, मिहरबानी; भना, भजार्, ६ गुना हुआ, धार ।

प्रा० गुणकरना—बोल० भला करना, भलाई करना ।

प्रा० गुणकापलत्र देना—बोल० भलाई का बदला देना, भलाई के पलट्टे भलाई करना ।

प्रा० गुणमानना—बोल० भला मानना, अहसान मानना ।

सं० गुणक (गुण=गुनाकरना) क० पु० घर भंक्र मिससे गुणा किया जाना है, मजकूरफ्रीड ।

प्रा० गुणगाहक—(सं० गुण+ग्राहक) क० पु० गुण जाननेवाला, गुण प्राप्ति, कदरदान ।

सं० गुणग्राही } (गुण=विद्या, हुनर,
गुणग्राहक } ग्राही=लेने वाला,
ग्रह=लेना) क० पु० गुण को जानने-
वाला, गुणग्राहक ।

सं० गुणज्ञ (गुण, ज्ञा=ज्ञानना) क० पु० गुण को जाननेवाला ।

सं० गुणन } (गुण=गुनना) भा०
गुणना } पु० गुना करना, सम-
झना, अभ्यासकरना ।

सं० गुणवान् } (गुण=हुनर, वन-
गुणवन्त } वाला) गु० गुणी,
चतुर, मवीण, पंडित ।

सं० गुणित (गुण=गुणना) र्भे० गुणा हुआ ।

सं० गुणी (गुण) गु० गुणवान्, विद्यावान्, निपुण, मवीण, हुनरमन्द ।

सं० गुण्य (गुण=गुणना) र्भे० पु० जो भंक्र गुणाग्राय, मजकूर ।

प्रा० गुन (सं० गुण) पु० (गुण शब्द को देखो)

प्रा० गुनगुना—गु० थोड़ा गर्भ ।

सं० गुप्त } (गुप्त=छिपाना वा बचाना)
गोपित } र्भे० छिपा हुआ दहा हुआ,
लुका हुआ, २ बचा हुआ, रक्षित ।

सं० गुप्ति—भा० स्त्री० रक्षण, पोशी-
दगी ।

प्रा० गुप्ती (सं० गुप्त) स्त्री० छिपी हुई तलवार, लाठी के भीतर छोटी तलवार ।

सं० गोप्ता (गुप्त+ता) क० पु० रक्षक, मुहाफिज ।

सं० गोप्य—र्भे० गुप्त, छिपाने योग्य ।

प्रा० गुफा (सं० गुहा) स्त्री० सोद, कंदरा, गुहा, पहाड़ के बीचकी जगह ।

सं० गुरु (गृ=निकातना) (अज्ञान को) वा गृ उपदेश करना (पर्यका)

पु० मंत्रदेनेवाला, पं० उपदेशक, पं०
मिथानेवाला। आचार्य, उपदेशक,
२ वाग, शयन सपना और कोई वडा
गुरु, ३ गिज्ञक, पढ़ानेवाला,
४ बृहस्पति, देवताओं का गुरु, ५ दि-
वायिक ज्ञान, दीर्घायु, अनुस्वार
और विनयेवाला अथ मंगोशी,
अपनी के पढ़ने का घर गु० भारी,
बडा, पुरा, पगनीय ।

मं० गुप्त (गुप्त-गुह्य, गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

मं० गुह्यता (गु० गुह्यता, गुह्यता) भा०
गु० गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता, गुह्यता ।

की मिठाई, एक तरह का फल ।
प्रा० गुलेल (सी० एक तरह का
गुलेल) धनुष ।

मं० गुल्फ—पु० गैर की गाँठ, टरना ।
सं० गुल्म (गुल्म=रक्षा करना, लो-
ना) पु० वायुमोला, ग्रीह, २ भाव,
लता, ३ मन्त्ररथ=मन्त्ररथप्रदाता
सेना की संख्या २ विगुप्त मानव ।

मं० गुह (गुह=दरना) पु० निपाद,
गुंभवापुराण शाना और भीरामचन्द्र
वा मित्र, २ वाणिज्य ।

प्रा० गुहना (सं० गुह्यता, गुह्यता
गुह्यता) क्रि० सं० गुह्यता, गिराना ।

मं० गुह्य (गुह=दरना) सी० गुह्य,
गोह, बंदरा । [२ सहाय ।

प्रा० गुह्यार—सी० पुहार, शोर, हाह,
मं० गुह्य (गुह=दरना, दिवाना)
अप० दिवाने योग्य, गुप्त, गु० म

ह के दहे दहे मंत्र ।

मं० गुह्यक (गुह=दिवाना) पु०
कुंवर के दन, पद मन्त्र के देवता ।

प्रा० गुमाँडे (मं० गोमापी) पु०
गोमाँडे (गानिफ, शर्म,
२ संन्यासी ।

प्रा० गुंगा—गु० सुवर्ण, अन्ते-
लता, मूक, मौन ।

प्रा० गुंजना (मं० गुंजन, गुंजि-
गुंजि करना) दि० अ० दिन

निकल, २ बीड़ी आना आना,

प्रतिध्वनि होना, गुंज रहना,
ह गर्जना, घुरना ।

प्रा० गुंम्रा-पु० एकतरकी मिठाई ।

प्रा० गुंथना-(सं० गुम्फन, गुम्फ=
गुपना) क्रि० सं० चिरोना, लड़ि-
याना, गुहना ।

गूजर-(सं० गुर्जर= गुजरात) पु०

एक जानि जिगसा खेग दूध खेवने

का है और जो गुजरात से फैली

है, गाला, गोष, कहीर—गुजरी

= कहीरी, गोषी, गुजर की खी ।

प्रा० गूजरी खी० लुगाइयो के हाथ

में परनने का एक गरना ।

सं० गूढ़-(गुह= छिपाना) गु० सूक्ष्म,

कठिन, २ विषा, गुप्त ।

प्रा० गूदा-(सं० गौर्द) पु० सार, भेगा ।

प्रा० गूलर-पु० खंभीर, हूपर, एक

फल का नाम ।

सं० गृध्रु०-क० पु० लोभी, लालची ।

सं० गृध्र-(एध= चारना) पु० शीघ्र,

गिद ।

सं० गृध्रराज-(एध= शीघ्र, राज=

राजा) पु० जगत्पु पक्षी जिमहा

बर्जिन सामान्य में है ।

गूह-(घर का घर= लेना) पु०

घर, वाता, देर, मराम, बागवतने

की जगह, रहने की जगह, देरा,

२ खी, पाराखी ।

सं० गृहस्थ-(एह= घर, स्था= उतरना)

पु० घरवाला, घरवारी, दूसरा आ-

थप = किमान ।

सं० गृहस्थाश्रम-(एहस्थ + आ-

थम) पु० एहस्थ का धर्म सम्यक्

काय, हमरा आश्रम (आश्रम शब्द

को देखो) ।

सं० गृहागन-(एह + आगन, आ +

गम + न) क० पु० आगन्तुक, अ-

तिथि, परमान, पाहुन, प्राप्ति ।

सं० गृहिणी-(एह= घर) स्त्री० घर

वाली, लुगाई, ओरु भाषा, गी,

पत्नी । [एहस्थ ।

सं० गृही-(एह) पु० घरवाला,

सं० गृहीत-(एह= लेना) भ्य० पु०

लियाहुआ, दकड़ाहुआ, स्वीकार

विदाहुआ, प्ररण कियाहुआ ।

प्रा० गेंडा-(सं० गण्ड) पु० एक

जानवर का नाम जिसके हुडों पर

के घाय की टाल टपम बनती है ।

प्रा० गेंद-(सं० गेरु, गन्ध का गा=

जाना) स्त्री० लड़की के खेलने की

बगड़े की या बगड़े की गोल बॉल,

बन्दुक ।

प्रा० गेंदनी खेलना- खेल = हँटे

में गेंद की बॉल खेलना ।

प्रा० गेंदा-(सं० गेंदक, गन्ध का गा
= जाना) पु० एहस्थ का कर्म, गेंद ।

सं० गेय-(ग=गाय) र्म्य० गाने योग्य ।

प्रा० गेरु-(सं० गैरिक, गिरि=पहाड़) श्री० पहाड़ की छाल मिट्टी ।

प्रा० गेरुआ-(गेरु) गु० गेरु से अथवा गेरु जैसा रंगा हुआ ।

सं० गेह-(ग=गणेशजी, ईह=वाहना) अर्थात् घर की मेव दालने के दिन ही से घर में गणेशजी को स्थापन करने हैं) पु० घर, मकान ।

प्रा० गेहूँ-(सं० गोपूष, गुप=वहना) पु० गोहूँ, एक प्रकार का अनाज, गेहूँ ।

प्रा० गेहूँआ { गेहूँ } पु० गेहूँ का गेहूँवा { रंग, = एक प्रकार की घाम, गु० गेहूँवर्णा, सांचला, गेहूँ के रंग जैसा ।

प्रा० गेगर्ली-श्री० बेदी, कूहड़, लुबरी, बेमनीका ।

प्रा० गैया { सं० गाँ, गम्=जाना) गइया { र्म्य० गाय ।

प्रा० गेल्ल-पु० रस्ता, मार्ग, पैदा, बाट ।

सं० गो-(गम्=जाना) पु० श्री० गाय, गैर, धेनु, २ स्वर्ग, ३ द्विगुण, ४ चूर्वी, धानी, यक्षी, ६ बाणी, बेसी, ७ इन्द्रिय, = स्वर्ग, द्विगुण ८ वज्र ।

प्रा० गोदं-(सं० गुद) गु० दिवाहृत्वा, हुन, दि० म० दिवाहृत्वा ।

सं० गोकर्ण-पु० पुरुषविशेष, वृत्त ।

सं० गोकुल-(गो=गाय, कुल=समूह वा घर) पु० व्रज, मथुरा के पास एक गाँव जहाँ नन्दजी रहने थे और जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना बाल्यन बिताया, श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, २ गायोंका समूह, ३ गाँवों के रहने की जगह ।

प्रा० गोखुरु (सं० गोखुर, गो=गाय, खुरु=खुर) पु० एक पौधे का नाम, २ एक प्रकार का गहना ।

सं० गोचर (गो=इन्द्रिय, चर=चलना जिसमें इन्द्रियाँ जाती हैं) पु० इन्द्रियों के विषय जैसे रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श, गु० जो इन्द्रियों से जाना जाय ।

प्रा० गोद (सं० गुदिका) श्री० चौपड़ वा शररंज की गोदी ।

प्रा० गोद-श्री० संजाक, कोर ।

प्रा० गोदा-पु० सोना या चाँदी के बुने हुए तार, छिनारी, तागतोड़ ।

प्रा० गोदी (सं० गुदिका) गो० गीत-या का दाग, बेचक का दाग ।

प्रा० गोड़-पु० पाँव, पैर, पिटनी, टाँग । [गृहना ।

प्रा० गोड़ना-दि० स० मोदना,

प्रा० गोण-(सं० गोड़ी, गुण=गण-

ना) स्त्री० घैला, कोरा, अनाज
 ढालने का घैला । [जात, कुड ।
 प्रा० गोत-(सं० गोत्र) पु० वंश,
 सं० गोतम-पु० एक ऋषिका नाम,
 जिसने व्याघ्रशास्त्र बनाया ।
 सं० गोतमनारी-स्त्री० गोतम की
 स्त्री, अरुण्या ।
 प्रा० गोतिया } (गोत)पु० जातभार्थ
 गोती } सम्बन्धी, कुटुम्बी ।
 सं० गोत्र-(गो=वृद्धी, त्रै=वचाना)
 पु० गोत, कुल, वंश, जातिरूपवाङ् ।
 सं० गोत्रज (गोत्र=गोत, जन=उद्भा-
 होना) पु० गोतिया, गोत्री, एक
 गोत का, संबंधी ।
 सं० गोतीत-(गो=इन्द्रिय, अतीत=
 परे) पु० जो इन्द्रियोंसे नहीं देखा-
 जाय, अगोचर ।
 प्रा० गोद } (सं० क्रोड्) स्त्री० संक्र-
 गोदी } वार ।
 सं० गोदान-(गो=वेश, गौ, दान=
 देना) पु० मुण्डन, केशान्तरूप,
 संस्कार भेद, अयास्य गोदान विवे-
 रनन्दरमितरपुः गोपुण्यकरना ।
 प्रा० गोदपसारना-बोल० मांगना,
 जांचना ।
 प्रा० गोदलेना-बोल० ले पालना,
 बेटा करलेना, पोस पुन करना ।
 सं० गोदावरी (गो=स्वर्ग, दा=देना)

स्त्री० एक नदी का नाम, जो द-
 क्षिण में है ।
 सं० गोधन-(गो+घन)पु० गोसुधन ।
 सं० गोधूम-पु० गेहूँ ।
 सं० गोधूलि-(गो=गाय, धूलि, रंज,
 अर्थात् जिस समय अंगल से शरीर
 में आने से गायों के पैरों से रंज उड़ती
 है) स्त्री० संध्या, स. य. रा. रा. सूर्य
 के अस्त होने का समय ।
 प्रा० गोना } (सं० गोपन) क्र० सं०
 गोवना } छिपाना ।
 सं० गोप-(गो=गाय, पा=पालना)
 पु० ग्वाला, अहीर, घोसी ।
 प्रा० गोप-पु० गले में पहनने का
 एक गरना ।
 सं० गोपन-(गुप्त=छिपाना, वचाना)
 पु० छिपाव, लुकाव, दुराव, पचाव ।
 सं० गोपनीय (गुप्त=छिपाना) स्म०
 छिपाने योग्य, गुप्त ।
 सं० गोपाल } (गो=गाय, पाल्=
 गोपालक } पालना) पु० गोप,
 ग्वाला, अहीर, गायों को पालनेवाला ।
 सं० गोपी-(गोप) स्त्री० ग्वालिन,
 अहीरी ।
 सं० गोपीनाथ (गोपी=ग्वालिन,
 नाथ=स्वामी) पु० श्रीकृष्ण, गो-
 पियों का पति ।
 सं० गोप्य-(गुप्त+य, गुप्त=छिपाना)
 स्म० छिपाने योग्य ।

प्रा० घट-पु० मन, जी, अन्तःकरण ।

सं० घटज (घट=पड़ा, जन=पैदा होना) पु० अगस्त्यश्रुति, कुंभेज ।

सं० घटयोनि (घट=पड़ा, योनि=पैदा होनेकी जगह) पु० अगस्त्यश्रुति जो घड़े में पैदा हुआ ।

प्रा० घटती (घटना) स्त्री० कपती, घड़ी, दोटा ।

प्रा० घटना-क्रि० अ० कम होना, कपनी, न्यून होना, २ योगना, हादसा, बाकिया, संयोग ।

प्रा० घटाव (घट=इच्छा होना) घटाने स्त्री० पादलोंका समूह, पादलोंका उपदेना, पादल, २ समूह आदम्बर ।

सं० घटाशेष (घटा=समूह, घाटोप=ढरना) पु० पालकी अथवा रथके ढरनेका कपड़ा, बहुत पादल । [थोड़ाकरदेना ।

प्रा० घटाना-क्रि० स० कम करना,

प्रा० घटाव-भा० पु० कपती, न्यूनना, उतार, २ घटाने का चिह्न, श्रृण ।

प्रा० घटिया-गु० थोड़े मोल का, सस्ता । [सान ।

प्रा० घटी-स्त्री० घाटा, हानि, नुक-

सं० घटी (घट=चाना) स्त्री० घटिका पड़ी, साठ पल, मूर्च्छ, २ छोटा पड़ा ।

सं० घट्ट- (घट=चाना) पु० घाट, रस्ता ।

प्रा० घड़घड़ाना-क्रि० अ० गर्जना, कड़कड़ाना ।

प्रा० घड़ना-क्रि० स० गड़ना, चाना, गहना चाना या और कोई यातु को गड़ना ।

प्रा० घड़ा (सं० घट) पु० मिट्टी का बरतन, गमरा, कलश, कुम्भ ।

प्रा० घड़ियाल (सं० घटिका, बाघटी) स्त्री० घण्टा, २ मगरमच्छ, कुंभीर ।

प्रा० घड़ी (सं० घटी) स्त्री० साठ पल का समय, चौबीस मिनट, २ समय जानने की कल ।

प्रा० घड़ीमेंतोला घड़ीमेंमाशा-बोल० यह उस आदमी के लिये बोला जाता है जिसका स्वभाव या मन यही यही में बदलता हो ।

सं० घण्टा- (घट=मारना) पु० यड़ी, घड़ियाल ।

सं० घण्टाली- (घण्टा) स्त्री० छोटी घण्टी जो घंटों के गले में डालने है, घण्टी ।

सं० घन (घट=मागना) पु० बादल, घटा, बादलों का समूह, २ रघौड़ा, निहाई, ३ हिसाब में पक्की अंक को उसी से तीन बार गुणने को घन करते हैं जैसे ३ का घन २७

४ रेखागणितमें ऐसी चीज जिसमें
लंबाई, चौड़ाई और मोटाई ये तीनों
पाई जायें, गु० दोस, दस, निविड़,
गहरा, घना ।

मं० घनघोर (घन=बादल, घोर=
दरावना) गु० गहरा बादल, घंटा,
घनगर्ज, दरावना शब्द ।

मं० घननाद (घन=बादल, नाद=
शब्द) गु० शब्द का घंटा, घननाद,
शब्द ।

मं० घनमूल (घन+मूल गु० घन
का मूल जिस मूलका घन किया
गया, जैसे २७ का घनमूल ३ ।

मं० घनाम-गु० गहरा, मोटा, अक्-
छेद, शब्द, गु० दूध, जल, गिट्टी ।

मं० घनग्राम (घन=बादल, ग्राम
=ठाना) गु० धर्म दृष्टि, २ काशी
घंटा, गु० बादल जैसा वाता ।

मं० घनमात्र-गु० दूध, गाढ़ा, घना ।
घा० घना (घन=घन गु० गहरा,
घन=घन, दूध ।

घा० घनेग (घन=घन) गु० घन,
घनेग (घनेग, अक्षि, गुंथान,
बहुल) ।

घा० घनगना-क० घन=घनगुन
होना, दूरकटना ।

घा० घनगट्ट (घनगना) घा०
घा० दूरकटना, घनगट्ट, घनगट्ट,
घनगट्ट, घनगट्ट, घनगट्ट, घनगट्ट ।

घा० घनरि-गु० घनगट्ट ।

घा० घमंड-गु० अहंकार, गर्व, अभि-
मान, दर्प, सखर ।

घा० घमंडी-गु० अभिमान, गर्व ।

घा० घमसान (सं० घोररक्षण)
गु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम, बर्तनबाई ।

घा० घमोई-श्री० नरसज, नरसज,
घेन, सरसगडा, नज ।

घा० घर (सं० घर) गु० बकास,
रहने की जगह, गांव, नामा, देश,
२ स्थान, रात ।

घा० घरचालना-घोल० उभाड़ना,
नाश करना, घरनाश करना ।

घा० घरचलाना-घोल० घरका सब
चलाना, घरका काम चलाना ।

घा० घरजाना-घोल० घरका नाश
होना, उभाड़ना, बिगड़ना ।

घा० घरहुवोना-घोल० गिरी का पत
रिगड़ना, हिमी के पगले का
नाश करना ।

घा० घरहुवना-घोल० नाशहोना,
घरका नाश होना, उभाड़ना ।

घा० घरवेटना (घाल० मचलना)
घरवेटना (होना, मचलना)
मचना घर हुटना, घरजाना ।

घा० घरवेटना-घोल० श्री और दुष्टों के
आत्ममें द्वेषहोना का घन क्लेश ।

घा० घरगी (मं० घरगी) श्री०
घरगी (घरगी, घरगी, घरगी,
घा०, घरगी, श्री ।

प्रा० घरनई (सं० घटनौका, घट=
घड़ा, नौका=नाव) स्त्री० घड़ों से ब-
नाई हुई नाव, चौपड़ा, बेड़ा ।
प्रा० घरवार-पु० घराना, कुनवा ।
प्रा० घरवारी-गु० गृहस्थी, कुटुंबी ।
प्रा० घराना-पु० कुटुम्ब, घरके लोग ।
प्रा० घरी-स्त्री० १. पद, चुनत, २. यही ।
प्रा० घरेला (पा) गु० घरहा, बालू ।
सं० घर्म (घृ=सींचना) पु० गर्मी,
घाम, धूप । [नेवाला, घिसेपा ।
सं० घर्षक (घृष्+अक क० पु० घिस-
सं० घर्षित (घृष्+इत्) र्वं० पु०
घिसा हुआ । [सना, रगड़ना ।
सं० घर्षण (घृष्+रगड़ना) पु० घि-
प्रा० घसना (सं० घर्षण) क्रि० सं०
घिसना (रगड़ना, मलना ।
प्रा० घसियारा (सं० घासहारक)
पु० घास काटनेवाला ।
प्रा० घसीटना (सं० घृष्+रगड़ना)
क्रि० सं० सींचना, सींचलेजाना ।
प्रा० घांटी-स्त्री० टेंडुवा, मोटी ।
प्रा० घाघ-गु० बूढ़ा, जिसने बहुत
देता मुना हो ।
प्रा० घाघरा (सं० घर्षर, घृ=सीं-
चना) स्त्री० सरयू नदी का नाम,
२. पु० लईगा ।
प्रा० घाट (सं० घट) पु० नदी या

तालाब आदि में नहाने की जगह ।
उतरने की जगह ।
प्रा० घाट पु० ढोल, रूप, मूरत,
२. घंटी, कपी, गु० कम ।
प्रा० घाटा पहाड़ का चराच, पहाड़ में
रस्ता, २. घंटी, कपी, नुकसान ।
प्रा० घाटिया (घाट) पु० घाटपर
रहनेवाला, ब्राह्मण, गद्दापुत्र ।
प्रा० घांटी (सं० घट) स्त्री० पहाड़
में गनी. पहाड़ में तह रस्ता, दर्रा ।
सं० घात (हन्=मारना) पु० मारना,
घोट. महार. हत्या, दांव, मौक़ा ।
प्रा० घात-स्त्री० दांव, विचार, इरादा,
दांव की जगह, पेच ।
प्रा० घातकरना-बोल० घातलगा-
ना, घातमें रहना, द्विपके पैडना ।
प्रा० घातताकना-बोल० गौतकना,
अवसर देखना, दांव पाना ।
सं० घातक (हन्=मारना) क० पु०,
घातुक (मारनेवाला, हत्यारा ।
सं० घाती (हन्=मारना) क० पु०
मारनेवाला—घातिनी=मार करने
वाली, मारनेवाली ।
प्रा० घानी-स्त्री० कोल्ह, धिलसेतेल
निकाशने की कल, २. उत्त से उत्त ।
निकाशने की कल । [गर्मी ।
प्रा० घाम (सं० घर्म) स्त्री०, धूप,
प्रा० घामड़-गु० भोला, सीपा, उल्लू ।
प्रा० घायल (घाव=घोट, सं० ला=
लेना) गु० घाव लगा, जखमी ।

प्रा० घालक क० पु० नाशकरनेवाला

प्रा० घालना क्रि० सं० उजाड़ना,
नाशकरना, २ ढालना, घुसेड़ना ।

प्रा० घाला-म्है० नाशकिया ।

प्रा० घाव-पु० चोट, व्रण, जखम ।

सं० घास (घम् + खाना) पु० वृण,
फूस, चारा, गोरु, गाय आदि का
खाना ।

प्रा० घिघियाना-डरसे या खुशी
से धौल नहीं निकलना, २ फुस-
लाना, बदलाना, ३ लड़खड़ाना,
गुनलाना, हकलाना, ४ छत्रोपचो
करना, गिड़गिड़ाना, बहुतगरीबी
से प्रार्थना करना, विनती करना ।

प्रा० घिधीबंधजाना-धोल० मुत-
लाना, हलकाना, २ मारे लाजके
या डरके मुँहसे धोल नहीं निकलना ।

प्रा० घिए } (सं० घृणा) स्त्री० न
घिन } करत, गलानि, अवज्ञा,
घिना ।

प्रा० घिया स्त्री० घियातुरई, एक
तरकारी का नाम ।

प्रा० घिरना क्रि० अ० घिरजाना,
बन्द होजाना, घेरे में आजाना,
बादलों का उमड़ना ।

प्रा० घिरनी (सं० घूर्ण = घूमना) स्त्री०
चरणी, छोटा पहिया, बेल विद्या
में एक कठ का नाम, २ रस्सी

बटने की कल, ३ लोटन कूतर,
पुरु तरह का कूतर ।

प्रा० घिरनीखाना-धोल० लोटन
खाना, गोलगोल खाना, गोलघूमना ।

प्रा० घी (सं० घृत) पु० घृत, घी ।

प्रा० घुंड़ी स्त्री० बटन, बूताम ।

प्रा० घुटना-पु० डेवना, गोड़ा, जानू ।

प्रा० घुटनोंचलना-धोल० देवने से
चलना, (जैसे घालक) रिसकना ।

प्रा० घुड़ (घोड़ा) पु० घोड़ा ।

प्रा० घुड़चड़ा-पु० घोड़े पर चढ़ने
वाला, सवार ।

प्रा० घुड़दौड़-स्त्री० घोड़ों का
दौड़ना, वह जगह जहाँ शर्त करके
दो दो आदमी घोड़ा दौड़ाते हैं ।

प्रा० घुड़बहल-चार पहियों का, रथ
जिसमें घोड़े जुते हैं ।

प्रा० घुड़मुँहा-पु० जिसका मुँह
घोड़े कैसा हो ।

प्रा० घुड़साल पु० तपेला, अस्तपल ।

सं० घुण (घृण = घूमना) पु० एक
कीड़ा जो लकड़ों को और अन्नान्न
को खाकर थोथा कर डालता है ।

प्रा० घुणा (सं० घृण) पु० घुणका
साया हुआ, थोथा, पोला ।

सं० घुणाक्षरन्याय (घृण + भक्ष
र + न्याय) पु० घुनके खाने से

जो लकड़ी में कभी अक्षर का सा रूप बन जाता है तात्पर्य यह है कि कोई वस्तु अक्षरान् संयोग से प्राप्त होना प तो इस स्थल पर कहा जाता है ।

प्रा० घुप-घु० अन्धेरा ।

प्रा० घुमंडना-क्रि० अ० घादलों का घिसना ।

प्रा० घुमाना (घूमना) क्रि० स० गोल गोल फिराना, फिराना, २ बहकाना ।

प्रा० घुरकना } (सं० घुर=हरना)
घुरकाना } क्रि० स० घमकाना, झिड़की देना, डराना ।

प्रा० घुरकी (घुरकना) स्त्री० घमकी, झिड़की ।

प्रा० घुरनाना-क्रि० स० सर्राटा मारना, नाक मार मारना । [माना ।

प्रा० घुसना-क्रि० अ० पैटना, भीतर

प्रा० घुंगर } पु० लहराये हुये बाल,
घुंगर } मुड़े हुये बाल, अंगूठिये बाल ।

प्रा० घुंगची } (सं० घुङ्गा) स्त्री०
घुंगची } लाल निरमो, रची ।

प्रा० घुंघट-पु० अचले की आड़, घुरका, भोदनी के अचले से मुँह ढाँकना ।

प्रा० घुंघटकाढ़ना-बोल० थोदनी को मुँह ढाँकना, लाजकरना ।

प्रा० घुंघटकरना-बोल० भोदनीसे मुँह ढाँकना, घुरका ढालना, मुँह छिपाना, लाजकरना ।

प्रा० घुंघरू } (सं० चर्वरा) पु०
घुंघरू } छोटी घंटी, मुद्रघंटिका, पाँव में पहनने का एक प्रकार का गहरा ।

प्रा० घुंम-स्त्री० बड़ामूसा, बड़ा घड़ा ।

प्रा० घुंसा-पु० मुका, मुकी, घण्टा, मुका ।

प्रा० घूघू-पु० उल्टू एक जानवरका नाम ।

प्रा० घूमघुमाला-बोल० घेरदार ।

प्रा० घूमना (सं० घूर्ण=घूमना) क्रि० अ० फिरना, गोल गोल फिरना, चक्कर खाना ।

प्रा० शिरघूमना-बोल० सिरमें कुछ दर्द होना, सिर फिरना, सिर चकराना ।

प्रा० घूरना-क्रि० स० ताकना, ताक लगाना, २ कोपकी आँखसे देखना, क्रोध से देखना ।

सं० घूर्णन (घूर्ण=घूमना) भा० पु० भ्रमण, घूमना ।

सं० घूर्णित-क० पु० भ्रमिन ।

प्रा० घूस-स्त्री० बड़ामूसा, २ रिरिखत, अक्षर, मुँहमरी, मुँहतेपी ।

सं० घृणा (घृ=ग्रीयना) स्त्री० घिन, ग्लानि, नफरत, अक्ल, २ धिक्कार, २ करुणा, दया ।

वर्ग, पुनर्निर्वाण, रश्मिवाणा ।
 में० घोषण-भा० पु० भादकरना ।
 रटना, मचार करना ।
 सं० घोषणत्र-पु० घटान, शिखर ।
 प्रा० घोमी (सं० घोम) पु० मुम-
 चकन भवाना ।
 सं० घ्राण (घ्रा=स्वपना) पु० सुग-
 न्य, मन्थ, प, सास, सुपना, २ नाक,
 नासिका ।
 सं० घ्राणेंद्रिय (घ्राण+इन्द्रिय)
 पु० स्त्री० भूषने की इन्द्री, नाक,
 नासिका । [घाला ।
 सं० घ्रायक-त० पु० भूषणार्थ, भूषने
 च
 सं० च-पु० शिव, २ चाँद, ३ चौर,
 ४ कटुवा, ५ दुष्ट, ६ निर्वाण-तमुष०
 घौर, फिर, पुनि ।
 प्रा० चंगा-स्त्री० गुह्री, गर्भ, २ बीज,
 किंगरी, मुरचंग । [भला चंगा ।
 प्रा० चंगा-पु० निरोगी, निरोग, सुखी,
 प्रा० चंगाकरना-बोल० अच्छा
 करना, बीमारी से अच्छा करना ।
 प्रा० भलाचंगा-बोल० निरोग,
 अच्छा, सुखी ।
 प्रा० चंगेर-पु० फूलरगनेका चलन ।
 प्रा० चंगेरा-पु० सांचा, चठरा,
 शेकरा, चंगेरी=स्त्री० टोकरी, ल-
 चिपा, चट्टी ।

प्रा० चंचनाना-कि० अ० दीसपा-
 रना, मनसवाना, २ चनचन ऐसा
 मन्द करना ।
 प्रा० चंडोल-पु० डोला, पालकी,
 डोली, बीपाला, २ एक पत्थर का
 नाप, ३ एक रिलौने का नाम ।
 प्रा० चंदला-पु० गंगा । [याना ।
 प्रा० चंदवा-पु० चाँदनी, छोटासामि-
 प्रा० चंदा (सं० चन्द्र) पु० चाँद ।
 प्रा० चंदा-पु० बाज, बगाही लग-
 सी, लगान, विहरी
 प्रा० चंदेला (सं० चंद्र) पु० राजपूतों
 की एक जात जो अपने तई चंद्रवंशी
 बनलाते हैं ।
 प्रा० चंवर (सं० चमर) पु० सुरहगाय
 की वृद्ध का घनाहुवा चमर जो रा-
 गाओं के सिरपर मक्खी आदिको
 दूर करनेके लिये हिलाया जाता है ।
 प्रा० चक्र (सं० चक्र) पु० नागीर,
 हजार, जोसी बोई हुई परती ।
 प्रा० चकई (सं० चक्रवाकी) स्त्री०
 चक्की, २ (सं० चक्र) एक ति-
 लांगे का नाम ।
 प्रा० चकनाचूर-पु० टुकड़ा, दूर,
 छोटेछोटे टुकड़े, फरतल ।
 प्रा० चकनाचूरहोना-बोल० टुक-
 टूटहोना, चूरचूरहोना, टुकड़े होना ।
 प्रा० चकनाचूरकरना-बोल० चूर

चूर करना, टुकड़े २ करना, टुक २ करना । (कण्डा, २ मोजा ।

प्रा० चक्रमा-पु० एक भांतिका ऊनी

प्रा० चक्रवा-पु० धूमधाम, चक्रवा ।

प्रा० चक्रवामचाना-चोल० धूम धाम करना ।

प्रा० चक्रा-पु० दाल का बड़ा ।

प्रा० चक्रगना-क्रि० अ० अवधे में होना । [दासी ।

प्रा० चक्रानी(गावर)ग्री० टहलेंबी,

प्रा० चक्रा-(सं० चक्र) पु० पतुरिया का पत्र, घेरवाना, २ एक भांतिका कण्डा ओ रंगम और कड़े में बनाया जाता है, गु० चौड़ा ।

प्रा० चक्रा (सं० चक्र) पु० देश का एकभाग जिसमें बहुतसे पामने होते हैं, पंडित, प्रदेश । [शास्त्र ।

प्रा० चक्रदेदार-पु० चक्रने का

प्रा० चक्रा सं० चक्राक) पु० चक्राक का नाम, २ (भं० चक्र) में ।

प्रा० चक्राचौथी) श्री० विष्णुजी, चक्राचौथी) भक्ति में ।

प्रा० चक्रा-पु० भक्ति ।

सं० चक्रित (चक्र=चक्रमा करना, वा घानि करना) पु० चक्रित, चक्रने में विष्णु, २ व्याख्यान,

ध्वरापाहुआ, दरा हुआ ।

प्रा० चक्रोत्रा-पु० एक फलकानाम ।

सं० चकोर (चक्र=वृत्तगोना, प्रसन्न-गोना) पु० एक पयेल का नाम जो चांद को देखकर बड़ी प्रसन्नता से आकाश में ऊंचा उड़ता है ।

प्रा० चक्रोदा (सं० चक्रमर्दक, चक्रोड़) चक्र=गोल २ दाद, मर्दक=नाश करनेवाला) पु० एक पीथा जो दाद की दवाई में काम आता है ।

प्रा० चक्रा (सं० चक्र=गोल) पु० दही जमाहुआ, दूध, २ गाढ़ी का पहिया, ३ घेरा, गु० गोल, गाढ़ा, २ जमा हुआ (जैसे दही) ।

प्रा० चक्री (सं० चक्र=गोल) ग्री० पाद, गांजा, चक्री, २ घुरिया, चक्री, घूटने की दहनी, ३ गात्र, विमर्ती, ४ लड़कों के एक शिषीने का नाम ।

प्रा० चक्र-पु० घूनी, चारू ।

प्रा० चक्र-(भं० चक्र) पु० पैरा, २ चक्रा, चक्र, ३ एक गोल गुम्ब जिसमें विष्णु बरके मिल लोग स्थित हैं, ४ गोलचाप, कावा, ५ शिवलिंग, ६ चक्रा, ७ और, ८ चक्र ।

प्रा० चक्रदेना-भंज० चक्रा, चक्रा,

पुमाना, अश्वना, धनना, योगादेना।
प्रा० चक्रखाना-बेल, फिना,
मूयना, २ पोले में, पाना, दगा
गाना ।

पञ्चकर्मरत्ना-शेखर-शैलमोना
सुमान, विधाना ।

प्रा० घोडेको चक्र देना - घाल ० का
। बाँधना, घोडेको घाल २ पिराना ।

सं० चक्र (क=रंजना) पु० परिहा
 १. कुम्हार का चक्र, २. बिष्णु का
 चक्र, ३. घोड़ा, दृष्ट, ४. द्युतरचना,
 गेता को चक्रों आकार पर सजा
 ना, ६ शाय में एक चित्र को भाग
 मानीया लक्षण है, उभौर्क, = सेन
 ६ भुवर्ण, देव, मुन्हा, रात्र, १०
 परवा दृष्टी, बशीर । =

सि० चक्रपाणि (चक्र=चक्र, गणपति)
पाणि=हाथ) पु० विष्णु भिनह
पाणि गणपति ।

मं० चक्रवर्ती (यम-मार्ग) पूर्वी
 वधो-विम्वाला, हृद-विम्वाला । क.
 पु० मः-विम्वाला, मः-विम्वाला । क.
 वं० मः-विम्वाला, मः-विम्वाला । क.

सं० चयनाक. (४२=१५४, २२१४०)
 १. बा०=१४. ला०, व०=१४०) पु.
 २. व०=१४. ला०, व०=१४०) पु.

रा० चक्रित (गं० ब्रिज) मु०
पं० वि० वि० वि० वि० वि०

१० वस्तुः ॥ २५ ॥

प्रा० चतु (सं० चतु) द्वेः आदि,
चतु नेत्र, नयन, लोभन ।

का० चत्वारिंशत्-गी० विंशति,
विशेषः । [कोटिः]

प्रा० चत्ताना-पु० गिनाना, पिन

प्रा० चतुर्ना
चासना
त्रिसना

प्रा०चक्षा - गुल्फपदा, वीरिग, मुरी

प्रा० चचेरा (चषा) शुः चषा द्य
 अमे चषेरा माई = चवेद्या वेद्या माई,
 चचेरा पदन = चवेद्या चेषी पदन ।

प्रा० चचोरना—दि० स० सुमना
नो० सुमना, निवेदना । [भ्रष्ट

सं० चंदरीक (वर=माना) पु० भाँसा

मं० चमल (५६=बाए, ना=तेन
 वा, ५७=अगवा ५८=वनवा
 मू० ५९=वन, ६०=अगि
 ६१=मेनवादी ।

श्री० चमलाई (मं० सदन)
 श्री० श्री० उमावती, चमलाई, स
 निवास । [मिहिर, दोर]

मं० चतु (५४ = ५४) मं० ५४

श्री० चरु (मं० कर्त्तव्य) वि० वि०
कर्मचारी, सुवि०, उच्च शिक्षण, सुवि०
उच्च शिक्षण, उच्च शिक्षण, उच्च शिक्षण
उच्च शिक्षण, उच्च शिक्षण ।

धावा, चदाव, रदा, रमला, २ चदने
का भादा ।

१० चदाना-क्रि०स०सचारकरना,
२ भेंट करना, बलिदान कराना,
३ तारचदाना, दोरीलगाना, ४ ढोल
कसना, ५ ऊंचा करना, खड़ा करना,
६ कपड़े पर रंग चदाना ।

॥० चदान (चदना) भा० पु० ऊंचा-
व, उंचाई, चदाव. पहाड़ में ऊपर
रस्ता, २ चदाई, धावा, ३ चदनी,
४ समुद्र की बाढ़ । [इट ।

सं० चणक (चणू=देना) पु० चना,

सं० चण्ड (चडि=क्रोधकरना) गु०
दरावना, भयानक, क्रोषित, तेज,
उग्र, सीसा, तीव्र, तीक्ष्ण, गर्म,
पु० एक दैत्य का नाम ।

सं० चण्डाल (चडि=क्रोधकरना)
चाण्डाल पु० नीच, कुजात,
नीच जात का मनुष्य जिसका बाप
शूद्र और मा ब्राह्मणी हो, वर्णसं-
कर, श्वपच, निर्दुर, निर्दयी, पापी,
दुराचारी ।

सं० चण्डांशु (चण्ड+अंशु) इ० पु०
सूर्य, आफलाव ।

सं० चण्डिका (चडि=क्रोधकरना,
चण्डी) स्त्री० दुर्गा, देवी,
काली, २ क्रोध करनेवाली स्त्री ।

सं० चण्डिल (चण्ड+इल) क० पु०
शिव, रुद्र, क्रोधी, नापित, नाई ।

सं० चण्ड (चण्ड+च) पु० मूषक,
मर्कट, छोटा बन्दर ।

सं० चतुर (चतु=मांगना) गु० निपुण,
प्रवीण, स्थाना, सिथाना, बुद्धिमान्,
२ छली, कपटी, धूर्त, चालाक,
नटखट ।

सं० चतुर- (चतु=मांगना) गु० चार-

सं० चतुरस्र-गु० चौखुटा, चौकोण ।

प्रा० चतुर-पु० बुद्धिमान्, होशियार ।

प्रा० चतुराई (सं० चतुरता) भा०
स्त्री० निपुणता, प्रवीणता, स्थान-
पन, बुद्धिमानी, २ धूर्तता, कपट, नट-
खटी, चालाकी ।

सं० चतुरंगिनी (चतुर=चार, अ-
ङ्गिनी=अंगवाली) स्त्री०, सेना
जिसमें हाथी, रथ, घोड़े और पै-
दल-बारी हों ।

सं० चतुरानन- (चतुर=चार, आनन
=मुँह) पु० ब्रह्मा ।

सं० चतुर्थ- (चतुर=चार) गु० चौथा ।

सं० चतुर्दशी- (चतुर=चार, दश=
दश) स्त्री० चौदस, चौदशीतिथि ।

सं० चतुर्भुज (चतुर=चार, भुज=
भुजा) पु० त्रिपुण, चारभुजा, २
चौखुटा सेत, चौकोर, गु० चार
हाथवाला ।

सं० चतुर्मुख (चतुर=चार, मुख=वा-
चतुर्मुख) चतुर्मुख, पु० ब्रह्मा ।

सं० चपाल पु० यज्ञके संवा का
कड़ा, पुनकटक, होमकुण्ड, कुर्या ।

प्रा० चसका-पु० प्यार, सालसा,
चाट, खाद, चाल, देव ।

सं० चह (चर=दलना, मनारण) पु०
अहंकार, पासण्ड, परिवर्तन,
गु० अहंकारी, दम्भकृत, लक्ष्मी ।

प्रा० चहकना-क्रि० प्र० चरचहा-
ना, चिड़ियों का बोलना ।

प्रा० चहचहा-गु० गररा रंगगुआ,

प्रा० चहचहाना-क्रि० प्र० पलेर-
घों का बोलना ।

प्रा० चहलपहल-श्री० ज्ञानन्द, रं-
सी लुशी, घुहल, रंग रस ।

प्रा० चहला } पु० कीचड़, काँदा,
चिहला } पांशु, पंक, दलदल ।

प्रा० चहुं } (सं० चगुर) गु० चार,
चहुं } चारों-चहुंओर=चारों
तरफ, सब तरफ ।

प्रा० चहुंचक } (सं० चतुश्चक्र, चतु-
चहुंचक } र=चार, चक्र=देश)
क्रि० वि० चारों ओर, सब ओर,
चारों रुंद में, चहुंदिश ।

प्रा० चहुंदिस (सं० चतुर्दिश, चतु-
र=चार, दिश=ओर) क्रि० वि०
सब ओर, चारों ओर, चहुं ओर,
चहुं चक्र ।

प्रा० चाकी-श्री० पिनली ।

प्रा० चांद (सं० चन्द्र) पु० चन्द्रमा,

चन्द्र, सोम, चन्द्र, २ एक गरने का
नाम ।

प्रा० चांदरात-श्री० महीने का अन्त
पूनों की रात [मारना ।

प्रा० चांदमारना-बोल० निशाना-

प्रा० चांद ने सेतकिया-बोल०
चांद उगा ।

प्रा० चांदना (सं० चन्द्र) पु० प्रका-
श, उद्योति, तेज ।

प्रा० चांदनापख-पु० उजाला प-
ख, शुक्र पत्र, मुदी ।

प्रा० चांदनी (सं० चांद्री, चंद्र
=चांद) श्री० चांदकी उजियाली
चांद का प्रकाश, अँनोरी, चंद्रि-
का, २ एक फूल का नाम, ३ स-
केद कपड़ा जो दूरी पर पिछाया
जाता है, ४ सकेद और चमड़ीली
बीज ।

प्रा० चांदनीचौक-बोल० चौड़ा
याजार, वा गली, चौक ।

प्रा० चांदी (सं० चांद) श्री० अ-
च्छा कथा, २ टट्टी, टॉट, खोपड़ी ।

प्रा० चांपना-क्रि० सं० दाबना,
दबाना, ठांसना, २ जोड़ना ।

फ्रा० चा-श्री० एक पाँपे की पची
जिससे पीनेसे शरीर में कुत्ती रहती है ।

प्रा० चाक (सं० चक्र) पु० कुम्हार
की चक्री अथवा परिघा जिसपर
बरतन बनाये जाते हैं, २ पाट, चक्री ।

प्रा० चाका (सं० चक) पु० पहिया ।

प्रा० चाकी (सं० चक्र) स्त्री० चकी
जाता, चिकनी ।

प्रा० चाचा-पु० चाचा, काका ।

प्रा० चाट (चाटना) स्त्री० चमका,
रवाद, रस, नानागा, रङ्गगा,
रुचि, २ स्वभाव ।

प्रा० चाटना-क्रि० म० स्वादलेना
लपलप राना, चबड़चबड़ राना ।

सं० चाटु-प्यासीवान, चापलोमी
लछोपत्ता, खुशामद । [गुशामदी

सं० चारुपटु-पु० भाण्ड, मशरवा.

सं० चाटु लक्ष्मी-क० पु० खुशामदी
पाने, चिकनी चुपड़ी पाने ।

प्रा० चाड़-स्त्री० चाड़, २ चोट, ३
हँकली, उठंगन ।

सं० चाणक्य-पु० चाणक मुनि के
गोत्र का, विश्वगुप्त ।

सं० चाणूर-पु० कस का प्रधान
मन्त्र, बड़ा महलवान । [नीच ।

सं० चाण्डाल-पु० रजपत्र, होम,

सं० चातक (चतु=माँगना, अर्थात्
यादलों से पानी माँगना) पु०
पत्थर ।

सं० चानुर (चतुर) पु० चतुर, पबो-
ग, बुद्धिमान, २ धूर्त, ३ चार ।

सं० चातुरी (चानुर) स्त्री० चतुराई,
निपुणता २ धूर्तता ।

सं० चातुर्वर्ष-व्यासका २ च

वैश्य ४ शुद्ध चातुर्वर्ष-मेषा शुद्ध
मिति गीता ।

प्रा० चातुक (सं० चातक) पु० पपीहा

सं० चान्द्रायण (चंद्र=चांद्र, अर्थात्
=चाल, वा चांद्र=चंद्रलोक, अर्थात्

पाना (जिस व्रत से) पु० एक
व्रत जिसमें अंगरे पक्ष में जब चांद्र

की कला घटती है, हर एक दिन
ग्रहों में एक ग्रह घटाते हैं और

चांद्रने पक्ष में ज्यों चंद्रमा की कला
बढ़ती है त्यों हर एक दिन एक

एक ग्रह बढ़ाते हैं, रोजा कमरी ।

सं० चाप (चप=बाँस अर्थात् बाँस
का बना हुआ, चप=जाना) पु०
धनुष, कमान ।

सं० चापखण्ड (चाप+खण्ड) प-
नृप के दुश्मन ।

प्रा० चापी स्त्री० टवार् ।

प्रा० चावना (सं० चर्वण) क्रि० स०
चवाना, दाँत से कुचलना, चिड़-
लना ।

प्रा० चावी-स्त्री० कुंजी, ताली ।

प्रा० चाम (सं० चर्प) पु० चमड़ा,
साले ।

सं० चामुण्डा (चम्=साना, वा च-
म=सेना, ला=लेना अर्थात् ला

) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली-
देवी ।

सं० चामुण्डा-व्यासका २ च

सं० चार (चर=चलना) पु० दूत,
जासूस । [द्विगुना, ४।

प्रा० चार (सं० चतुर) पु० दो का

प्रा० चारआँखें-बोल० चोखे, चोखे,
मिष्टना, भेद हो जाना । [देहकडे।

प्रा० चारदुक-बोल० दूक दूक, दुक-
प्रा० चारण (चर=लेनाना, अर्थात्

जो पशु को फँलाता है) पु० भाट,
पशु पकानेवाला ।

प्रा० चारा (सं० चर=खाना) पु० प-
गुमों का खाना, घास ।

सं० चारु (चर=चलना) पु० सुन्दर,
मनोहर, सुहाना, मनभावन ।

प्रा० चाल (सं० चल्=चलना) मा०
स्त्री० चलना, चलन, गति, गमन,
शीघ्रगति, शीघ्र गति, दंग, गह,
२ चाटचलन ।

॥० चालपकड़ना-बोल० फँसना,
बनाना, मचलित होना ।

प्रा० चालचलना-बोल० निराहता,
दरबहार करना । [रीति भोंति ।

प्रा० चालदाल-बोल० चालचलन,

प्रा० चालना (सं० चालन, चल्=
चलना) क्रि० सं० चालना (जैसे
आटा) चारना, पटवना, देखना ।

सं० चालनी (चन=चलना) स्त्री०
चलनी ।

प्रा० चालीस (सं० चालीस) पु०
गु० दो बीसी, ४० ।

प्रा० चाव (सं० च्वा) पु० व-
चाय (दीवाह, चरकपटा, कवि,
अभिलाष, चोप, शौक, २ चारभंगुल,
३ एक सरह का घाँस ।

प्रा० चावचोचला-बोल० चोर;
दुलार, अनुराग, प्रेम, स्नेह, किलोले ।

प्रा० चावल } पु० एक प्रकार का
चवल } अनाज ।

प्रा० चापु (सं० चाप, चप=भक्षण
करना) पु० नीलरक्त, कटनाश ।

प्रा० चासा-पु० किसान, जोतार,
इल चलानेवाला ।

प्रा० चाह (सं० च्वा) स्त्री० चारना,
अभिलाष, इच्छा, चार, प्रेम, शीघ्र,
पसंद ।

प्रा० चाहना-क्रि० सं० इच्छाकर-
ना, माँगना, चापना, चारकरना,
प्रेषण, मानना, पसंदकरना,
मनये माना, आवश्यकता होना, म-
योजन पड़ना ।

प्रा० चिवाड़ (सं० चिरासचिन्) सं०
मा शब्द चार=चरना) स्त्री० हाथी
का शब्द ।

प्रा० चिवाड़मारना-बोल० चिन्ता-
रना चिवाड़ना, हाथी का शब्द
करना ।

प्रा० चिक-पु० चरदा, जवानिया,
२ कपर में दई ।

प्रा० चिकना (सं० चिकण) पु०

घोटाहुआ, साफ, २ सुन्दर, ३ च-
पड़ा हुआ, तिलहा, तेलसा, तेल
मय, चिकण, ४ निर्लज्ज, वेशरम
लंपट, चंचल ।

प्रा० चिकनाघड़ावनना-बोल०
किसी की कुछ शिक्षा नहींमानना,
निलज्ज होना ।

प्रा० चिकनाचांदा (सं० चिकण-
चन्द्र) बोल० सुन्दर, मनोहर, सुहा-
वना ।

प्रा० चिकनाई (सं० चिकणता, भा०
स्त्री० औप, घोटा, संवार, सफाई,
चिकनाइट, २ चर्बी, ३ चंचलता,
भंचलाई ।

सं० चिकित्सक (कित्=इलाज क-
रना, चंगाकरना) क० पु० वैद्य,
डकीम, डाक्टर ।

सं० चिकित्सा (कित्=इलाजकरना
चंगाकरना) भा० स्त्री० औपपकर-
ना, इलाज, चैदाई, रोग प्रतीकार ।

सं० चिकित्सालय (चिकित्सा +
आलय) वि० पु० शिक्षास्थान, हा-
स्पिटल ।

सं० चिकित्साशास्त्र-पु० रूप=डा-
क्टर, विवाचन ।

सं० चिकीर्षा (क्=करना) स्त्री० कर-
नेकी इच्छा, आकांक्षा ।

सं० चिकीर्षु क० पु० आकांक्षी ।

सं० चिकुर- (चि=इच्छा करना, ना

चि=ऐसा शब्द, कुर=शब्द-करना)
पु० बाल, केश, धूपर ।

प्रा० चिकुला=चिचा, बालक ।

प्रा० चिट्-स्त्री० टुकड़ा, लीर, प्रज्जी ।

प्रा० चिट्टा-पु० गोरा, रवेत, सफेद,
पु० रुपया, मुद्रा ।

प्रा० चिट्ठी-स्त्री० पाती, पत्ती, पीन-
का, रत्न, कागज ।

प्रा० चिट्ठीपत्री (पु० लिखापत्री,
चिट्ठीपाती) चिट्ठीका आना
जाना स्वतः किताबत ।

प्रा० चिड़चिड़ा-पु० खुस्ताहा, भे-
नफना, कर्कश, रिसाहा, पु० एक-
पेड़ का नाम ।

प्रा० चिड़ना-कि० अ० खुनसाना
झुझाना, कुदना, खिसियाना,
भट्ट क्रोध करना ।

प्रा० चिड़िया (सं० चटक) स्त्री०
चिड़ी (गौरिया, पलेरु,
पच्ची ।

प्रा० चिड़ीमार-पु० चिड़िया पकड़-
ने और मारनेवाला, बहेलिया,
व्याधा ।

प्रा० चित (सं० चित्) पु० मन,
बुद्धि, हृदय, अन्तःकरण, हिया, हिय,
जो, मुद्य, स्मरण, स्मृति, आव ।

प्रा० चितचाय-बोल० मनकावय
जो मनकी अच्छालने ।

प्रा० चितचेता-बोल० मनमाना, स-
संद आना ।

१० चितचोर-बोल० मन हरनेवाला ।

१० चितदेना-बोल० ध्यानदेना,
मन लगाना ।

० चितलगना-बोल० मनोरंजन
मनभावन ।

चितलाना-बोल० सचेत हो-
ना, तटार होना, मन लगाना,
ध्यानदेना ।

प्रा० चित-(सं० चित्=ज्ञानना) स्त्री०
चितवन, दृष्टि, दीड, नजर, अब-
लोकन, २ समझ, सूझ, बोध, ज्ञा-
न, विचार, गु० पट, सीधा, अन्वा-
चित, चितार्ग ।

१० चितकरना-बोल० उलटाना,
चित गिराना (जैसे कुत्तों में) जी-
तना, मात करना, हराना, परास्त
करना ।

प्रा० चितकरा (सं० चित्र कर्तुर) पु०
करना, रंगरंग का, चित्रका ।

प्रा० चितरना सं० चित्र क्रि० स०
चित्रना, रंगदेना, रंगना, चित्रकरना

प्रा० चितला (सं० चित्रल, चित्र=
रंग, ला=लेना) गु० चित्रकरा ।

प्रा० चितवन-स्त्री० दृष्टि, नजर,
अवलोकन, चित, भांख, कटाक्ष ।

प्रा० चितवना } क्रि० स० देखना ।
चितना }

० चिता (चि=चिह्न करना) स्त्री०

जगह जिसपर मुर्दा जलाया जाता है
चितासा, मसान, मरघट ।

प्रा० चिताना } (सं० चेतन, चित्
चितावना- } याद, करना, सो-
चना) क्रि० स० मताना, मतलाना,
जनाना, चौकसकरना, खबरदार
करना, सूचनकरना, याददिलाना,
बताना ।

प्रा० चितेरा (सं० चित्रकार) पु०
लकड़ी पर अथवा दीवार पर बेल
बूटे खेचनेवाला, चित्रखेचनेवाला ।

सं० चिति स्त्री० समूह, ढेर, राशि,
जमखान ।

सं० चित्त (चित्=ज्ञानना, वा पाद
करना) पु० मन, अन्तःकरण, बुद्धि,
हृदय, जी, चित्त, ज्ञान ।

सं० चित्तनाप पु० मनका लेद,
चित्तोत्थाप } दिलीरंज ।

प्रा० चितौनी-स्त्री० सूचना, विज्ञा-
पन, मताना ।

सं० चित्कार-पु० रेंकना, विलाप,
चित्राहट, चीखमारना, 'शूह',
निउला, झुंझर ।

सं० चित्र (चित्=चिह्न-महारके रंगों
से रंगना, वा चित=मन बै=बचाना)
पु० तलबोर, बेल-बूटे, छावि, रूप,
सूरत, स्वर, लिपि, २ यम, गु०
अधुमन, मनोसा, रंगरंगका रंगारंग,
भाति भांति वा ।

० चीवर—पु० प्राचीनवस्त्र, जीर्ण वस्त्र, फटावस्त्र, विषदा, प्राचीन, पुराना ।
० चील (सं० चिल्ल, चिल्ल=दीला शेर) स्त्री० एक पक्षेरु का नाव ।
० चीलभपट्टामारना—बोल० बीनना, बीन लेना, झगड़ लेना ।
० चीलर } स्त्री० लं, जूँ, शील ।
चीलहड }
० चुआन (सं० च्यु=जाना, भ्रमना) स्त्री० कोट के आस पास की गली साई जिस में पानी भरा रहता है, २ कुंड, नलाशय ।
० चुगी—स्त्री० महमून का इतना अनाज जिसका कि हाथ में संगीचे जो कि अनाज के व्योपारियों से सदा बचाया जाता ।
० चुकाना (चुंकना) क्रि० स० निपटारना, पूराकरना, मोलटहराना ।
० चुक्रे—पु० खट्टा का हस्त, पूर, तिरका, गु० खट्टा, भस्त्र, अमलवेव ।
० चुगना—क्रि० स० चोच से खाना, चेरना, खाना, २ चुनना, बीनना, चुगना ।
० चुगलेना—बोल० झगड़ना, बराय लेना, चुनलेना, पसंद करना ।
० चुचि—पु० स्तन, कुच, बूँची ।
० चुचक—पु० स्तनाग्रभाग, कुचाग्रभाग, बूँची की गुप्ती ।

प्रा० चुटकुला—पु० चुटल, परिहास, हँसी, ठोली, हँसीकी बात, आनन्द, रस ।
प्रा० चुडैल—स्त्री० दावेत, भितनी, दाहिनी, २ फूहड़ स्त्री, मैली कुवैली स्त्री ।
प्रा० चुनत—(चुनना) स्त्री० चुनन, परत, उत्त, पड़ी, पुट, तट ।
प्रा० चुनरी—स्त्री० एक तरह का रंग हुमा कपड़ा जिस में कई तरह के रंग होते हैं । [बूँचा ।
प्रा० चुंधेला—गु० तिरमिरा, चक्रे ।
प्रा० चुनना—क्रि० स० चुगना, इवडा करना, बीनना, झटिना, बराय लेना, पसंद करना, २ अपनी अपनी जगहपर रखना, सजाना, डीकटाक करना, ३ तट जमाना, कपड़ों की पड़ी बनाना ।
प्रा० चुनौती—सांगन्द, कसेप ।
प्रा० चुनी—स्त्री० लाल ।
प्रा० चुप—गु० मौन, अनबोल, अवाक, बि० बो० चुप रहो, मत बोलो ।
प्रा० चुपचाप—बोल० चुप, अनबोल ।
प्रा० चुपड़ना—क्रि० स० चिकना करना, चिकनाना, घी अथवा तेल लगाना, २ तेल मलना ।
प्रा० चुमकी—इवडी, गोता ।

यों के हाथ में परने की काच
आदि की बनी हुई चीज ।

सं० चूत } पु० आग्रहच, चरण,
चूतक } भाव, बहन, टपना ।

प्रा० चुनना—क्रि० स० चोना, च्ये-
रना, इतिहास करना ।

प्रा० चुनाहुआ—उत्तर ।

प्रा० चून (सं० चूर्ण) पु० आटा,
२ चूना ।

प्रा० चूना—(सं० चयन, च्यु=माना)
क्रि० अ० टपकना, रसना, झरना,
(सं० चूर्ण) पु० चून, एक चीज
जिससे पकान बनाये जाते हैं ।

प्रा० चूनालगाना—बोल० पदनाम
करना, लिप लगाना ।

प्रा० चूमना (सं० चुम्बन) क्रि०
स० चूमा लेना । [बोला ।

प्रा० चूमा—(सं० चुम्बन) पु० चुम्बा

प्रा० चूमाचाटी—बोल० दुलार,
प्यार, रंग, रस, राबचाव ।

प्रा० चूर—(सं० चूर्ण) पु० घुसनी, घु-
स्रा, चूर्ण, रेतन, पु० चूर किया
हुआ ।

प्रा० चूरचूर—बोल० टुक टुक, सण्ड
सण्ड । [टूटा रहना ।

प्रा० चूर रहना—बोल० मस्त रहना,
प्रा० चूर करना—बोल० टुकड़े २
करना ।

प्रा० चूर होना—बोल० टुकड़े २
होना, २ किसी के प्यार में फँसना,
अत्यन्त प्यार वा स्नेह करना,
३ थकना ।

प्रा० नशे में चूर होना—बोल०
मस्त होना, मत्वा होना ।

प्रा० चूरण } (सं० चूर्ण) पु०
चूरन } पावक औषध जिससे
खाना बनता है ।

प्रा० चूरा—(सं० चूर्ण) पु० रेतन, चूर्ण
सं० चूर्ण—(चूर्ण=पीसना, घुसनी
करना) पु० घुसनी, रेतन, चूर,
चूरा, धूल, २ चूरन, एक पावक
औषध ।

सं० चूर्णन—भा० पु० पीसना ।

सं० चूर्णक—(चूर्ण+अक) क० पु०
पीसनेवाला ।

सं० चूर्णित—(चूर्ण+इत) क्मे० पु०
पीसा हुआ ।

प्रा० चूर्नी—(सं० चूर्ण) क्रि० सं०
टुकड़े २ करना ।

प्रा० चूर्मा—(सं० चूर्ण=चूरा) पु०
एक प्रकार का मीठा खाना ।

प्रा० चूल—पु० लकड़ी का जोड़ वा
शील जिसपर किया हुआ फिरता है ।

प्रा० चूल्हा—(सं० चूड़ी) पु० आग
रखने की जगह ।

सं० चूपक- (चूप + अक, चुप = चुपना)

६० पु० चुपनेवाला ।

सं० चूपण - भा० पु० चुपना ।

सं० चूपिन - स्मे० चुपा हुआ ।

प्रा० चुमना - (सं० चुप = चुपना)

क्रि० म० पी लेना, मोसना,
चनोदना ।

प्रा० चुहा - पु० प्रमा, मापिक

प्रा० चैन (स० चैनम् चित् = भाव-
ना) पु० सुख, पाद, स्मरण, वि-
चार, बोध, ज्ञान, अनुभव, भाव
पानी, पीइमी ।

सं० चैनन - (चित् गोचना) पु० जी-
व, भाव्य, भाव, ० ज्ञान, बुद्धि,
विचार, विवेचना, समझ, गु०
चैतन्य, जीनाहुमा, मचैन, चाणी ।

सं० चैनना - (चित् = भावना) श्री०
बुद्धि, ज्ञान, चेत ।

प्रा० चैनना - (सं० चैनन) क्रि० म०

पाद करना, स्मरण करना, सु-
ख करना, मन में स्मरण, भावना, ०
चैन में आना, होश में आना ।

प्रा० चैना - (सं० चित्) पु० चित्,
चैन, मन, ० चेतिक, ज्ञानदाता ।

प्रा० चैरना - क्रि० म० मादना, ल-
भना, विचारना ।

प्रा० चैरा - (सं० चैरा चेट, चिट् =
भेदना पु० चैरा, ज्ञान, ज्ञान)

प्रा० चैरी - स्त्री० दासी ।

प्रा० चैला - (सं० चैला चेट, चिट् =
भेजना) पु० शिष्य, विद्यार्थी,
० दास ।

प्रा० चैवली - स्त्री० एक प्रकार का
भेजनी कपड़ा ।

सं० चैष्टक - (चैष्ट + अक) क० पु०
यज्ञहारी, उपाधी, तदधीरी ।

सं० चैष्टा (चैष्ट परिश्रम वा यज्ञ
करना) मा० श्री० यज्ञ, उपय,
परिश्रम, उद्योग, काम, शरीर का
रक्षण ।

प्रा० चैत (म० चैत) पु० वह
महीन का नाम ।

सं० चैतन्य (चैनन) मा० पु० जीवा-
त्मा, परमात्मा, प्रज्ञा, ० बुद्धि,
ज्ञान, चित्त, विवेचना, चेत, चै-
तना, गु० मनेन, चेत में, चैतम,
मज्ञान, चैनन, मनेन, गुचेत ।

सं० चैत्र - (चित्रा नक्षत्र का नाम,
पु० म०, हिंदुओं के चरम का रा-
श्व महीना जिसमें पूरा चांद चि-
त्रा नक्षत्र के नाम रहता है और
जिस महीने की पूर्णिमा की दिन
चित्रा नक्षत्र होता है ।

सं० चैत्रव - पु० कुबेर का नाम ।

प्रा० चैत - पु० सुख, भावना, भाव-
ना, चैत ।

प्रा० चौगा—पु० नली, नलुवा, नल ।

प्रा० चौच—(सं० चञ्चु) स्त्री० ठोंठ, पसेरझों की चञ्चु ।

प्रा० चौडा—(सं० चूडा) पु० चौटा, बाल का झुड़ा ।

प्रा० चौप } स्त्री० इच्छा, चाह,
चौप } रुचि, उद्धार, लालसा,
चौप } कुर्ती, २ शिपों के
दाँतों में पहननेका सोनेका गरना ।

प्रा० चौआ } पु० मुगनिषत चौआ,
चौवा } अंगना ।

प्रा० चौखा—पु० साफ, सफा, स्वरा, अच्छा, नीला, वीक्षण ।

प्रा० चौचला—पु० सिलाइपन, मान, नखरा, पीठोवाते, प्यारीबाते, मोलीपाते, हावभाव ।

प्रा० चौट—पु० मार, पीट, चपेट मुका, घुंसा, घना, आघात, पड़ाइ ।

प्रा० चौटपरचोट—बोल० दुस पर दुल, एक विश्व पर दूसरी विपत्त का आना ।

प्रा० चौटखाना—बोल० चिटना, मारखाना, २ नुकसान उठाना ।

प्रा० चौटी—(सं० चूडा, चुन=इच्छा होना) स्त्री० शिता, शिरके पिछले पाल, २ शितर, पहाड़ का शृंग ।

प्रा० चौटीआस्मानपरधिमना—बोल० बहुत यपंही होना, बहुत अभिमान करना ।

प्रा० चौटीकट—बोल० दास, शिष्य ।

प्रा० चौटीकटवाना—बोल० दास होना, २ शिष्य होना ।

प्रा० चौटी किसी की हाथ में आना—बोल० किसी पर अधिकार रखना, किसी की बरा में करना, इवाना, नवाना ।

प्रा० चौट्टा—(सं० चोर) पु० चोर ।

सं० चोर—(चुन=चोरी करना) पु० चौटा, चोरी करनेवाला, डंग, लुंटेरा, सहर ।

प्रा० चोरचकार—बोल० चोर ।

प्रा० चोरखाना } बोल० धिना
चोरघर } हुआ मकान,
एवाना घर, गुप्तघर ।

प्रा० चोरस्ता—बोल० धिपीराह गुफा, पगडेही, लीक ।

प्रा० चोरलगना—बोल० चिगाइरी ना, शानिहोना, नुकसान उठाना ।

प्रा० चोरी—(सं० चौर्य, चोर, चुन=चोरी करना) स्त्री० चुराने का काम, डकैती, डगी ।

सं० चोली—(चुन=इच्छा होना) स्त्री० अंगिया, चञ्चुली ।

प्रा० चौ—(सं० चणु=चोर) पु० चार पु० हल का फाड़ ।

प्रा० चौअत्री—(चौ=चार, आना) स्त्री० चारभानी, सूही, चारभाना ।

प्रा० चौकना—क्रि० प्र० भिभक्तना,
मड़कना, दर उठना, ठठकना,
चमकना, नींद उठना, नींद उचटना ।

प्रा० चौक उठना—बोल० भड़क उठना,
भिभक्त उठना, चमक उठना ।

प्रा० चौक पड़ना—बोल० उड़ना पड़ना,
चौकड़ी भरना, मड़क जाना,
चमक जाना । [देखा ।

प्रा० चौतंग—पु० (चतुर्गण) गण्ड को

प्रा० चौतीस } (सं० चतुर्विंशति)
चौतीस } पु० तीस और
चार, ३४ ।

प्रा० चौधियाना—क्रि० प्र० उठना,
झाकना होना, डगना, ५ घंटे
में होना, निर्गमना ।

प्रा० चौमार } (सं० चतुर्गण हि०
चौमार } चतुः-चार, गणित-
गोटी) पु० गण्ड सेना का नाम जो
चारों में सेना जानाई, चौपड़,
२ दूधों की माना ।

प्रा० चौक—पु० बाजार, हाट, गुदड़ी,
भाटेरीवेदी, पेठ २ नगर का चौक
हा, चौकट, २ चौकान, भंगना ।

प्रा० चौकड़ा—पु० दो मोनीका बाछा ।

प्रा० चौकड़ी—सं० रूढ़, काँड़, क-
लांग, उड़ना ।

प्रा० चौकड़ी भगना—बोल० रूढ़ना,
काँड़ना, उड़ना ।

प्रा० चौकड़ी भूलना—बोल० सो-
जाना, मोह में आना, भूलासा रा-
जाना, होश ठीक न रहना,

प्रा० चौकड़ी मार बैठना—बोल०
उड़दू बैठना, मिपट बैठना, मुग
बैठना, चार जानू बैठना ।

प्रा० चौकना—पु० सावधान, मुने,
चौकस, फुर्तीला ।

प्रा० चौकम—पु० सावधान, मुने,
चलाक, फुर्तीला ।

प्रा० चौका—पु० रमोई, बहजगदर
हा हिन्दू ग्याना पढ़ाने और सगे
ह २ नीकीनी चीस, चौकोनी जग
२ भांगे क चार दांग ।

प्रा० चौकी—दुसरी, पीड़ा, चौकीर
काठकी बनी गई चीस, २ जग
ली, चौकीरगाँ, पहरा, २ घाना जग
चौकादार और पहरादार रहने है
२ पहरागदना । नवकोमलेमें पहरा
चौकीदार पु० चौकी देनेवाला ।

पहरा देनेवाला, पहरागदना ।

प्रा० चौकीदारि—सं० चौकीदार
का काम, २ चौकीदार की पदवी,
चौकीदारि, इन्जम ।

प्रा० चौकीदेना—बोल० पहरा देना,
पहरा देना ।

प्रा० चौकीपानना—बोल० पहरा
पहनुनी चन्नुनाना वा भेजना
मारना, पहराजत पुराना ।

प्रा० चौकोना } (सं० चतुष्कोण)
चौकोर } गु० चौखंडा, चार
कोना ।

प्रा० चौखंड } (सं० चतुष्काष्ठ) स्त्री०
चौकट } दरवाजे का टांचा ।

प्रा० चौखंडा (सं० चतुष्कोण) गु०
चौकोर, चौकोना ।

प्रा० चौगुणा } (सं० चतुर्गुण) गु०
चौगुना } चारगुना, चारचार
लिखा हुआ ।

प्रा० चौड़ा—गु० फैला हुआ, विशाल ।

प्रा० चौड़ाचकला—बोझ० विपदा,
फैलाऊ, बिस्तृत, फैला हुआ, चौड़ा ।

प्रा० चौतनी—चौगोशिया टोपी ।

प्रा० चौतारा—गु० चारतार का बाजा ।

प्रा० चौताल—स्त्री० एकरागिणी
का नाम ।

प्रा० चौथ (सं० चतुर्थी) स्त्री० चौथी
दिधि, २ (सं० चतुर्थी) चौथा हि-
स्सा, कर अथवा खिरान जो मरहटे
जगाहा करते थे । [चौथा ।

प्रा० चौथा (सं० चतुर्थ) गु० चारहवां,

प्रा० चौथेपन } (चौथा चारहवां)
चौथापन } गु० बुढ़ापा, मनुष्य
के उमर का चौथा
अथवा सब से पिछला हिस्सा ।

प्रा० चौदस (सं० चतुर्दशी, चतुर=
चार, दश=दस) स्त्री० चौदहवीं ।

तिथि चतुर्दशी । [चार, १४ ।

प्रा० चौदह (सं० चतुर्दश) गु० दस और

प्रा० चौदानिया-पु० } (चौ=चार
चौदानी-स्त्री० } दाना)
चार मोटी का बाला ।

प्रा० चौधरी—पु० पञ्च, मथान, जमी-
दार की पदवी ।

प्रा० चौपट—गु० उभाड़, बरबाद,
नष्ट, बराबर किया हुआ, चपटा ।

प्रा० चौपटकरना—बोल० संभाड़ना,
नष्ट करना, बरबाद करना, डहाड़ना-
विनाश करना, बराबर करना ।

प्रा० चौपड़ (सं० चतुष्पदी, वा
चतुष्पादिका, चतुर=चार, पुट=तर-
का पद पैर) स्त्री० पाँसों का खेल, २ कप-
का जिसपर यह खेल खेलता जावारे ।

प्रा० चौपाई (सं० चतुष्पदी) स्त्री०
चार पद का छन्द ।

प्रा० चौपाड़ (सं० चतुष्पादिका) पु०
बैद्यपय, २ (सं० चतुष्पाद) चौपाया ।

प्रा० चौपाया—(सं० चतुष्पाद) पु०
चारपाया, पशु, जानवर ।

प्रा० चौपाला—(सं० चतुष्पाद) पु०
पालकी, डोली ।

प्रा० चौवारा—(सं० चतुष्पादिका)
पु० ऊपर का कोठा, इसारा ।

प्रा० चौवीस—(सं० चतुर्विंशति) गु०
चीस और चार ।

प्रा० छका- (सं० छक, छक=छक)
पु० छः का समूह, २ एक तरहका
पिंजरा ।

प्रा० छकापजाकरना-बोल
ठगना, छलना, धोखा देना, छुआ
गेलना ।

प्रा० छफेछटजाना-बोल, पचोना,
रफा पसा रहजाना ।

सं० छग (छो=काटना) पु० बक-
छगल (रा, दाग, भेडा, लो० भे
री, बकरी ।

प्रा० छटाक- (सं० छटक, छट=छः
द्वय एक मकार का मोल) स्त्री०
सिर का मोलइवां भाग, कनका ।

सं० छटा- (छो=काटना) स्त्री० प-
यक मटका, गोमा, दमक, चपचपा-
हट, बजाला । [गालहट ।

सं० छटाफल-पु० नागिपल हट,

सं० छटमा-स्त्री० चिकली ।

प्रा० छट्टी (भे० पट्टी) स्त्री० पगकी
छट्ट (छट्टी गिधि ।

प्रा० छट्टी (सं० पट्टी) स्त्री० छट-
छट्टी (बी, लकडाके पैदाशीने
के पीछे छडे दिनकी रीति ।

प्रा० छट्टा-पु० पैका गहना, मोती
की लड़ी, गु० छेलेना ।

प्रा० छट्टी-श्री० बेन, हाथ में रखने
की लकड़ी, २ छट्टी का गुच्छा ।

प्रा० छट्ट- (सं० छल) स्त्री० पल,
दम, छल, धिक् ।

प्रा० छत (सं० छत्र, छत्र=छतना)
छात (स्त्री० घर के छपर के का
पटाक, गज, पु० फोडागाना ।

प्रा० छत्ता- (सं० छत्र, छत्र=छतना)
पु० मधुमक्षिपों का छाता ।

प्रा० छत्तीस- (सं० पद्म, पद्म
=छत्तीस, बिगु=जीसे) गु० तीसमीरदां

सं० छत्र- (छट्ट=छतना) पु० रागाओं
के गिरपर रखने का छतना, छतरी ।

सं० छत्रक- (छत्र) क० पु० भुँवोर,
कुरुरमुसा, परनी का फूल ।

सं० छत्रघारी- (छत्र=छतना, घारी
=रखनेवाला, घृ=रखना) क० पु०
रामा, पशाराम, छत्रपति ।

सं० छत्रपति- (छत्र=छतना, पति=
मानिक) पु० राजा, पशाराम, छत्र
घारी ।

सं० छत्रमह- (छत्र=छतना, मह=द-
टना) पु० पति का घरना, रिहाया,
विपरागम, २ रामा का घरना ।

प्रा० छत्री- (सं० छत्र) स्त्री० दोरा
धागा, २ पंदवा, ३ बँडनेकी मगर ।

प्रा० छत्री- (सं० छत्री) पु० रामपुत्र ।

सं० छत्र-पु० छत्र, कुंज, कोटरी,
गोहर ।

सं० छट्ट- (छट्ट=छातना) पु० छत्र,
आपदादम, बचावक, बचानहट्ट ।

सं० छट्टन-भा० पु० वचा, आपदादम,
छान, छत्र, विधान, गिनताक ।

प्रा० चौवे—(सं० चतुर्वेदी) पु० ब्राह्मण
जो चारों वेद जानता हो, अथ एक
जातिके ब्राह्मणों को चौवे कहते हैं
चार वेद पढ़े हों वा न पढ़े हों ।

प्रा० चौमासा—(सं० चतुर्मास, चतु-
र=चार, मास=महीना) पु० चरसान,
पर्याश्रित, ससाइ हो कुंवार तक के
चार महीने ।

प्रा० चौमुखा—(सं० चतुर्मुखा) पु०
चौमुखों दीया ।

प्रा० चौमुखी—(सं० चतुर्मुखी) स्त्री०
देवी, चारमुखाली दुर्गा, २ द्वाज
का देता ।

प्रा० चौगम—(चौ=चार, रम=वरा-
वर) गु० चारों ओर से वरावर,
गमान, सब ओर से वरावर ।

प्रा० चौगनवे—(सं० चतुर्गवनि,
चतुर=चार, गवनि=गधे) गु० नदों
और चार ।

प्रा० चौगमी—(सं० चतुर्गमीनि,
चतुर=चार, गमीनि=गमी) गु०
गमी और चार ।

प्रा० चौवन } (सं० चतुर्विधवाचन)
चवन } गु० चारों ओर चार ।

प्रा० चौवाड़े—(सं० चतुर्वार, चतुर=
चार, वाड़=इका, अर्थात् चारों दि-
शों में इका का बहना) स्त्री० चाँची,
कनार, झरका ।

प्रा० चौमट—(सं० चतुर्वट) गु०
मट और चार ।

प्रा० चौहटा } (सं० चतुर्विध)
चौहटा } =चार,
चौराहा, चौर, चौराहा

प्रा० चौहत्तर—(सं०
गु० सत्तर और चार ।

प्रा० चौहान—(सं० चौहान)
राजपूतों की एकजाति ।

सं० च्युन—(च्युन=गिरना)
गिरा, टपकपड़ा, पतित,

सं० च्युति—(च्युत + इ) भा०
पतन, हानि, सिक्का ।

सं० छ—(छो=काटना) गु०
बाला, २ निर्मना, ३ धंचन,
क, नाशक ।

प्रा० छः—(सं० षट्) गु० दुगुना तीन ।

प्रा० छड़े—(सं० छव) स्त्री० एक छे
का नाव ।

प्रा० छड़े—(सं० छदि, छदु=दहना)
स्त्री० नाव का छपर ।

प्रा० छकड़ा—(सं० छकट) गु० गार्-
रह, आगवा ।

प्रा० छकना—छि० या० अमाना, ह-
होना, संतुष्ट होना, २ हवातुन
होना, अर्थात् होना, ३ घटन होना ।

प्रा० छकाना—छि० या० अमाना,
तुन काना, २ छेक करना, भीक
करना ।

प्रा० छका- (सं० पृष्ठ, पृष्ठ=छका)
पु० छः का समूह, २ एक-वहका
पिनरा ।

प्रा० छकापंजाकरना- (सं०)
छाया, छनना, धोखादेना, छुआ
मेलना ।

प्रा० छकेछटजाना- (सं०)
छका पड़ा रहना ।

सं० छग- (सं०=छाटना) पु० बक-
छगल- (सं०) रा, छाग, भेड़ा, शी० मे
ड़ी, बकरी ।

प्रा० छटाक- (सं० पृष्ठ, पृष्ठ=छटाक)
छटाक प्रकार का- (सं०) शी०
सेर का सौलहावां भाग, कनका ।

सं० छटा- (सं०=छाटना) शी० च-
मक भड़क, शोभा, दमक, चमकमा-
रहना ।

सं० छटाफल- (सं०) नागफल छटा,

सं० छत्रभा- (सं०) विपत्ती ।

प्रा० छट्टी- (सं० पृष्ठ) शी० पगड़ी
छट्टी- (सं०) छट्टी गिरि ।

प्रा० छट्टी- (सं० पृष्ठ) शी० छट्टी
छट्टी- (सं०) लड़का के पैदा होने
के पीछे छठे दिन की रीति ।

प्रा० छट्टा- (सं०) पैरों पहना, शी०
की नदी, पु० चलेला ।

प्रा० छट्टी- (सं०) बक, राय में रखने
की लड़की, २ पृष्ठों का गुच्छा ।

प्रा० छटा- (सं० पृष्ठ) शी० पल,
दम, पल, दिन ।

प्रा० छते- (सं०=छत्र, छत्र=छाया)
छात- (सं०) शी० छत्र के छपर का
पट्टा, गज, पु० फोड़ा गाना ।

प्रा० छत्ता- (सं० छत्र, छत्र=छाया)
पु० प्रथम विलयों का छाता ।

प्रा० छत्तीस- (सं०) पद=छत्तीस, पद
=छत्तीस, बिगुन=छत्तीस) पु० छत्तीस मोरवा ।

सं० छत्र- (सं०=छाटना) पु० रागाओं
के गिरपर रखने का छाया, छतरी ।

सं० छत्रक- (सं०) पु० भूँकोर,
कुरुमुत्ता, परमों का पुन ।

सं० छत्रधारी- (सं०=छाटना, धारी
=राखनेवाला, धृ=रखना) क० पु०
राजा, महाराज, छत्रपति ।

सं० छत्रपति- (सं०=छाटना, पति=
मालिक) पु० राजा, महाराज, छत्र
धारी ।

सं० छत्रभट्ट- (सं०=छाटना, भट्ट=छ-
टना) पु० पति का मरना, देहाव,
विधवापन, देहाव का दरवाजा ।

प्रा० छत्री- (सं० छत्र) शी० छोटा
छाया, २ पदवा, ३ पदवा की नगर ।

प्रा० छत्री- (सं०=छाटना) पु० राजपूत ।

सं० छत्र- (सं०) छत्र, छत्र, छोटी,
छत्र ।

सं० छट्ट- (सं०=छाटना) पु० छत्र,
छायादेन, पट्टाईक, नगरनरु ।

सं० छट्टन- (सं०=छाटना, छट्टन=छा-
टना, छत्र, विधान, पिताका ।

प्रा० छदाम-सी० पैसेका चौथाभाग,
दो दमड़ी, ६ दाम ।

सं० छन्न-पु० कपट, छप्पर, पत्ता, अप-
दंश वा दुष्मन, उत्तर, दखील ।

प्रा० छनाक-पु० गर्भे बीज पर पानी
के गिरने का शब्द ।

मं० छन्द-(छदि=ठकना, और मा-
हना) पु० श्लोक, वाक्य, पद्य,
व्यासों का मिनास, २ वेद, ३
वेदका स्वर जैसे गायत्री आदि, ४
छन्द, अभिज्ञान ।

मं० छन्दपानन-(छन्द + पानन,
पान गिरना) पु० कपट, कुटिल-
ता, धूर्तता, बहाना ।

मं० छन्दोग-पु० ऊँच, मामनेद का
मानवर्ण, वेदपात्री ।

मं० छन्न-मं० पु० पद्मान, गुप्त, छिपा
हूँसा, कटा ।

प्रा० छन्ना-पु० पानी छाननेका बरदा,
कोई बीज छाननेका बरदा ।

प्रा० छपना-क्रि० अ० छाया होना,
नष्ट होना ।

प्रा० छपाई-श्री० छाननेकी बस्तुकी,
छापने का काम ।

प्रा० छप्पन-(मं० पट पड़ना, पट,
पट=छः पदवाक्य=पचास) पु०
पचास और छः ।

प्रा० छप्पन-(मं० पटपटी, पट=छः
पट=पचास) छः पदवाक्य ।

प्रा० छप्पर-पु० छप्पर की दाबरी ।

प्रा० छप्परस्त-पु० पलंग, सात

प्रा० छर्वीला-पु० सुन्दर, सुरावना

प्रा० छर्वीस-(पटविंशति, पट=४
विंशति=बीस) पु० बीस और छः

प्रा० छयासठ } (सं० पट+पवि
छियासठ } पट=४ पट्टि
साठ) पु० सा

और छः ।

प्रा० छरे-पु० छेद, चुने मुरक ।

मं० छर्दे-(छर्द=वचन करन, कप
करना) पु० वचन, कथ ।

मं० छर्देन-(छर्द + अन) भा० पु०
छाँद, वचन, कथ, असंख्य ।

मं० छर्दि-श्री० छाँद, कथ ।

प्रा० छर्ग-पु० छोटी २ गोली ।

मं० छल-(छो=छाटना) पु० कपट,
धोला, फरेब, बहाना, मिथ, माल,
उगाई । [छलविद् ।

प्रा० छलवल-बोल० कपट, धोला,

प्रा० छलकना-(मं० उद्यतन, उद्य-
उद्य, चल=चलना) क्रि० अ०
उपहसा, डगडना, बहलना, पुट
निहलना, धोरना ।

मं० छलविद्-(छल + विद्) पु०
दुष्टजन, कपट, धोला ।

मं० छलविनय-श्री० कपटमे बर्दाई,
छेद के साथ नमसीक ।

प्रा० दलांग-सी० फलांग, फांद,
रुदफांद ।

प्रा० दलांगें मारना-बोल० रुद-
ना, रुदखना, भपटना, कुलाच
मारना ।

प्रा० दलिया } (सं० दल) गु०
दली } कपटी, दगाबाज,
धोखा देनेवाला ।

प्रा० दल्ला-पु० मुंदरी, मंगूरी ।
सं० दवि (द्रो=काटना, धंभेको)
सी० शोभा, सुन्दरता, चमक,
मकाश ।

प्रा० द्वां- (सं० द्वाया) सी० द्वाया,
आइ, प्रतिविम्ब, परछाई ।

प्रा० द्वांटना-कि० सं० धिपनकरना,
उलटी करना, कै करना, २ अनाज
से धूमा अलग करना, फटटना, ३
काटना, फटना, काट कूट करना,
४ सँवारना, साफ करना, ५ बु-
नलेना, पसंद करना ।

प्रा० द्वांटकरना-बोल० बपन क-
रना, कै करना ।

प्रा० द्वांटलेना-बोल० पुन लेना,
बराब लेना, पसंद करना ।

प्रा० द्वाड़ना-कि० सं० उगेलेना,
निकालना, २ छोड़ना ।

प्रा० द्वांव } (सं० द्वाया) सी०
द्वांह } द्वाया, द्वां, प्रतिविम्ब,
परछाई ।

प्रा० द्वाक-पु० द्वालेबा, जलाना ।
सं० द्वाग } (द्रो=काटना) पु० द-
द्वागल } करा, खस्सी ।

प्रा० द्वाख- } सी० मद्धा, मरी ।
द्वावी }

प्रा० द्वाज-पु० मूष, दगुरा ।

प्रा० द्वाजना- (सं० द्वाजना, द्वा-
दना) कि० सं० खाना, २ फूट
बना, सोहना, खनना, खुलना,
योग्य होना ।

प्रा० द्वाड़ना-कि० सं० छोड़ना,
त्यागना, तमना ।

प्रा० द्वाता- (सं० द्वाज) पु० द्वाती,
२ प्रथमविषयों का द्वाता ।

प्रा० द्वाती-सी० द्वाइरा, दर,
बुद्धिस्थल, २ दूँधी, कुब ।

प्रा० द्वातीभर-बोल० दाती भिन्न-
ना ऊँचा, दाती तक ।

प्रा० द्वाती भर आना-बोल०
रोना, आंसू डालना, मोह आना ।

प्रा० द्वाती पर पत्थर रखना-
बोल० संगोप करना, सवर करना,
धीरु धरना, सहलेना ।

प्रा० द्वाती पर मूंग दलना-
बोल० किसीके सामने ऐसा काम
करना कि जिस से वह दुखपावे,
किसीको कुहाना, सिक्काना, मगाना ।

प्रा० द्वाती फटना-बोल० दुल अ-
थवा किसीसे पहराना, शपथाना ।

सं० छाया—(छो=छाया, संघी=
जाले को रोचना) छो=छाँद, छाँव,
छाँ, परदाँ, प्रतिविम्ब, २ भेदेरा,
३ धन. वेन. ४ शनैरकर की भावा;
सूर्य की छाँ ।

सं० छायापय—पु० छाया, पोला,
अवराग, आसपान ।

सं० छायामृत—(छाया+अमृत)
पु० चन्द्रमा ।

प्रा० छार—(सं० चार) छो=चार,
भस्म, छिद्र, ग्राहक ।

प्रा० छाल—(सं० छल, बाँझी, छद
=इरना) छो=छिद्रका, गूला,
पोर ।

प्रा० छाला—पु० पुनगी, पुंसी, क-
छोला, पुनरा । [सुगम] ।

प्रा० छालिया—छो=एक प्रकार की

प्रा० छावनी—(छना) छो=पल-
के रहने की जगह, भिगाहियों के
रहने के घर, छाँने का काम ।

प्रा० छिगुर्ला—छो=छोटी छंगुली,
कन छंगुनी । [अभेधीर] ।

प्रा० छिदला—पु० छपला, पैलला,

प्रा० छिदोड़ा—पु० छलका, मोटा,
विचित्र ।

प्रा० छिटकना—छि० अ० छितरना,
फैलना, छिटकना, छिपना ।

प्रा० छिटकनाचादनीका—फैल-
वाँदनी का फैलना ।

प्रा० छिटकोना—छि० स० छिपेरना,
फैलाना, छितराना, छिपाना ।

प्रा० छिड़कना—छि० स० छोटना,
गरकरना, सींचना ।

प्रा० छिड़काव—(छिड़कना) पु० सींचने
का छिड़कना, सिंचाई, सींचना ।

प्रा० छितरना—छि० अ० छितरना,
फैलना, गसरना, छिटकना, छिपना ।

प्रा० छितति—(सं० छितति) छो=भरती,
जघन, पूर्वी, भूमि, पराणी ।

प्रा० छिदना—(सं० छेदना, छिद-
वाटना) छि० अ० छिपना, पार
राना, पगना, चुपना ।

सं० छिद—(छिद=छेदना, बाँझी)
छेदना) पु० छेद, गदा, रंध्र, विवर

दिल, २ दोष, दुष्पण ।

सं० छिदित—(छिद+इत) अ० पु०
वेधित, छेद किया गया ।

प्रा० छिन—(सं० छल) छो=पल,
चल, निपेय ।

प्रा० छिनमरमें—छेल० एक एक में
पल भर में । [चारिखो] ।

प्रा० छिनाल—छो=बेरवा, बरसि-

प्रा० छिनाला—(छिनाला) पु० छि-
नालन, बरसिवाँ ।

सं० छिन—(छिद=छाटना) अ० छिद-
वाटना, छोटना, भाग दिया हुआ,

छुड़के दिया हुआ ।

सं० छिनमिन—(छिद+मिन) अ०

अन्नं अन्नं, निरर निरर, कया
हुमा, दया हुआ ।

प्रा० द्विपकर्त्ता । द्विकर्त्ता, एक
द्विपकर्त्ता । जानवरका नाम।

प्रा० छिपना । कि० अनुकूल, अ-
लपना । लग होना, व्यव-
ना. अदृश्य होना ।

प्रा० लिमा--(सं० चमा) स्त्री०
चमा, माती ।

प्रा० द्विगालीम. (मं० पाठान्तरांशम्.
नर-सन्ध्यापारिंशत्-पञ्चमीस) गु०
पञ्चमीस श्रीर द्रः ।

प्रा० द्वितीयार्धे- सं० चतुर्थीति-पद-
-द्वयः अस्तीति=अस्तीति । गु० अ-
-स्तीति=अस्तीति ।

ना० द्विलका-(मं० छनी, धरू=वक-
न) वृ० बाल, वकला, म्बवा, गोम्व।

प्रा० द्विहस्य सं० नदगमनिः
 १८=६: सप्तनि=सप्त) गृ० सप्त
 की० ७: ।

प्रा० सी०-वि० ब० मुखर्जी और गिन
हारे का गल्ल ।

ना० टीका- सं० विद्या, विद्या सेवा
शब्द, कृ=काना) श्री० गुरु जी
नाम से होता है ।

श्री० टीका (सं० शिखर, नि० देवना)
 पु० हुला, बईपीकी होरी, मानकी
 गग बनी हुई सोख सिमसे सोई
 सोख गगले ललहा देवे ई ।

प्रा० छींटि—(सं० चित्र रंग रंगता)

सी० एक मनार का रंगा हुआ
कपड़ा । [सींचना ।

प्रा० छांटना—कि० स० लिखना,

प्रा० ली० अ०-पु० ली० अ०, टपका, विन्दु ।

प्रा० लीजना-क्रि० अ० यदना,

कम होना, सूखना, सूटना, देहा
 देवी की नै योग, स्वीकृताया बाई
 रोग, कहावन० मो कोई हिंसी की
 देगा देवी नय अथवा प्रन आदि
 करता है उसका शरीर दुबना, हो
 नाना और बीमारी बढती है।

प्रा० श्रीन-१ सं० तीण) गु० मन्त्र
पवता, दुरता, रुग्ण, यश इत्यादि
नाम ।

प्रा० छीनना—कि० हा० लेखना
मीचलेना, जवरदहनी मे लेलेना,
भयल लेना ।

प्रा० र्थिनाथानां करना - वोन
भयत नोना, भयत भयती करना
र्थिना भयती करना । । ३ ।

प्रा० टीका—(सं० बी०) पु० पु० ।

प्रा० शैलना - कि० म० कारन
दिनांक उतारना ।

प्रा० सुहृद्देव (मं० सुहृद्देव, सु
मेमा शब्द, द-काङ्क्षा) पु० प०
मानस का नाम ।

श्री० सुकृदाजीदना-धेन० सुग
नीः नाना, ककड नगानः, पुः

करना, निंदा करना, झड़काना,
घरकाना ।

प्रा० छुट-(सं० छुट=छुड़ा) करना
क्रि० वि० सिवाय, २ छोटा) गु०
छोटा, थोड़ा ।

प्रा० छुटकारा-(छटना) पु० छुड़ाव,
उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, रिहाई ।

प्रा० छुट्टी-श्री० छुट्टाई, रुकसत,
अवकाश, फुरसत, समय ।

सं० छुड़-(छेदना) पु० व्यावृद्धादन,
आवरण, नीच, स्पर्श, मिथ्यावादी,
मुद्ग, पेच, पेर, किरण, भूषण ।

प्रा० छुड़ौतो-(छड़ाना) श्री० छुड़ा-
ने या मोन । [चूना, नींबू ।

सं० छुर-पु० छुरा छुरी श्री० छुरा,
सं० छुरिका } (छुरा=काटना) श्री०
छुरी } चक्र, चाकू ।

प्रा० छुहारा-पु० राहा, एक फल
का नाम ।

प्रा० छूछा-पु० माली, खोगला,
गुन्य, वृथा, निष्फल, पु० दोना,
दोस्का, नाद ।

प्रा० छूट-(छटना) श्री० छोड़ना,
बहा, छुड़ाना ।

प्रा० छूत (छूना) श्री० छूना, अपवि-
त्रता, किसी से छूमा जाना ।

सं० छूद-(छूद=प्रकाशकरना) पु०
प्रकाश, दीप्ति, वपन, विलास, गु०
प्रकाशक, प्रकाशवान् ।

प्रा० छेंकना-क्रि० सं० सड़ना, रोकना,
थटकाना, घेरना ।

प्रा० छेड़-(छेड़ना) श्री० खिनावट,
सताना ।

प्रा० छेड़छाड़ } बोल=टोकटाक,
छेड़खानी } ताना, सिमावट,
टेरीबात ।

सं० छेद-(छिद=काटना) पु० काटा
दृमा, भिन्न का हर, भाग ।

प्रा० छेद-सं० छिद) पु० गंदरा,
खड़ा, पाँद ।

प्रा० छेदना-(सं० छेदन, छिद=का-
टना, क्रि० सं० छेपना, पारकरना)
घसाना, चुमाना, नायना ।

प्रा० छेनी श्री० सरानी, दाँकी, छेनी ।

सं० छेमण्ड-पु० मुरा, माता पिता
रहित बालक, यनीम, बेबारिस,
शनाथ ।

प्रा० छेरी-(सं० छगी, छो=काटना)
श्री० चकरी ।

प्रा० छेदा-(सं० छेदन, छिद=काट-
ना) पु० चिह्न, लकीर ।

प्रा० छेल } पु० बांकाभकईत धि-
छेला } कनिया ।

प्रा० छेलाचिकनियां-बोल=चोका,
छेला ।

प्रा० छोकरा-पु० लकड़ा, बालक ।

प्रा० छोकरी-श्री० लकड़ी, कन्या ।

॥० छोटा-(सं० छुट) पु० लघु,
छहुरा, कनिष्ठ ।

॥० छोटिका-(छुट + उका) स्त्री०
उज्ज्वल, रश्मि, छूना, अंगुष्ठ, अं-
गूठा, कोपीन, लंगोटा, कज्जोटा,
कबौट ।

॥० छोर-पु० अन्त, किनारा ।

॥० छोराण-(छुर + अन. छुर = वेद-
ना) पु०, त्याग, पैना काना, कने-
कारना ।

॥० छोरा-पु० नीच, सहा, बूना,
सफेदी, मफेदा, करीदा ।

॥० छोह-(सं० छोम) पु० प्यार,
स्नेह, मोह, भीति ।

॥० छोही-(छोम) पु० प्रेमी, प्यारा,
स्नेही, अनुरागी ।

॥० छोना-पु० जानवर का बच्चा ।

ज

॥० ज-(जन्म, जन्मदा होना, वा जन्म =
जीवना) पु० शिव, २ विष्णु, ३ ज-
न्म, ४ माता पिता, मरणाति, मरणा,
अन्त, शेष, शान्त, जीव, शरीर
आदि ।

॥० जक-पु० दाढ़ावन वा रक्त ।

॥० जकड़ना-क्रि० म० कमना,
कसके बाँधना, रोकना, बाँधना,
जानना ।

॥० जग-(सं० जगत्) पु० संसार,
जगत्, दुनियाँ, भूतल, जगत् ।

॥० जग-(सं० यज्ञ) पु० यज्ञ, व-
लि, २ उत्सव, पर्व ।

॥० जगजगाहट-स्त्री०
चमकाहट, प्रकाश, उत्तल ।

॥० जगजागी-स्त्री० संसार में
बिदिन हुई, दुनियाँ में जाहिर हुई ।

॥० जगत्-(गम् = जाना) पु० संसार
जग. दुनियाँ ।

॥० जगती-(गम् = जाना) स्त्री०
पृथ्वी, धनी, २ लोग ।

॥० जगदम्बा (जगत् = संसार, अं-
म्बा = मा) स्त्री० जगमाता, मरामा-
या, देवी, दुर्गा ।

॥० जगदाधार-(जगत् = संसार,
आधार = आधार) पु० अनन्त-
शेषही, संसार, का आधार,
२ हवा, वायु ।

॥० जगदीश (जगत् = संसार, ईश
= स्थायी) पु० प्रभेदवर, संसारका
कर्ता, जगसाथ, विष्णु ।

॥० जगना-(सं० जागरण, जाग
= जागना) क्रि० अ० मोह में उठा-
ना, सचेत होना, जागना ।

॥० जगन्नाथ-(जगत् = संसार, नाथ
= स्थायी) पु० विष्णु, जगदीश, जग-
न्पति, जगन्नाथ का भेदिन उड़ीसा
में जगन्नाथपुरी में है जहाँ बहुत से
यात्री जाया करते हैं ।

॥० जगमगा-पु० जगदीश, जग-
ददार, भगवान् ।

प्रा० जगमाता-(सं० जगन्माता
जगन्=संसार, माता=मा) स्त्री०
संसार-की मा, जगदम्बा, देवी
दुर्गा, सरस्वती ।

प्रा० जगह } स्त्री० और, स्थान,
जागह } ठिठाना ।

प्रा० जगहछोड़ना-बोल० कारागृह
में कुछ जगह बिन लिखी रहना ।

प्रा० जगहसिरस्तरचना-बोल०
भाँके पर रख कराना, यथोचित स्त-
रचना, जहाँ चाहिये वहाँ रखकराना ।

प्रा० जगह सिर होना-बोल०
किसी काम पर होना, ठीक होना,
यथोचित होना, जैसा चाहिये वै-
सा होना ।

प्रा० जगाज्योति-(भे० जगज्ज्यो-
तिः) स्त्री० चमक, मड़क, जगजगा-
रट, बहुत लपका बढ़ी जोम ।

सं० जह्म-(जम्=जाना) गु० पन्ने
बाला, जिगमें चलने की शक्ति हो
ए पु० योगी-जिगके सिर पर ज
टा होनी है और छोटी पंथी को
बसाया करते हैं और महादेव के
भजन गाया करते हैं । [भादों ।

सं० जहल्ल-(जन्=गिरना) पु०, जन

प्रा० जहल्ली-(सं० जहल्ल) गु० बने-
ला, बनवायी ।

सं० जग्ध-(जद्=भोजन करना)
भे० पु० भुक्त, खायाका ।

सं० जग्धि-(जद्+ति) भः० पु०
भोजन ।

सं० जघन-(जन+घन) पु० स्त्रियों
के कटि का अग्रभाग, जघा, करि-
हाँव, कटिदेश, ऊरुस्थल ।

सं० जघन्य-(जघ+हन्) भे० पु० अ-
धम, नीच, पिछला ।

सं० जघन्यज-पु० कनिष्ठ, शूद्र, अपमा

सं० जह्वा-(हन्=टेका जाना, वा ज-
न्=पैदा होना) स्त्री० जाँघ, जानु,
जानू ।

प्रा० जचना-कि० स० अटकल होना
नगर में रहना ।

प्रा० जचावट-(जाँघना) भा० स्त्री०
जाँघ, परत ।

प्रा० जंजाल-(सं० जनजाल, जन्=
दनुष्य, जाल=संदा) पु० डल संदा,
बलभ्रान्त, क्लेश, भ्रमभ्रम, परावृत्त,
ध्याकुलता, कठिनता ।

सं० जटा-(जट=बट्टाकरना) स्त्री०
बालों का तूट्टा, बिर्रोबाछ, मिने
हुँथवान, २ मड़, दत्त की मड़ ।

सं० जटजूट-(जटा+जूट=तूट्टा)
पु० जटावा तूट्टा, जटा का थप ।

सं० जटाधारी-(जटा+धारी=रगने
बाला, धृ=रहना) पु० गिर, जटा
रगने वाला ।

सं० जटामांसी-(जटामन्=रगना)

प्रा० छोट्टा-(सं० छुट्टा) पु० लघु,
छट्टरा, कनिष्ठ ।

सं० छोट्टिका-(छुट्टा + इका) स्त्री०
उद्धान, सार, छूना, भंगुष्ट, भं-
गूठा, कोपीन, लँगोटा, कछोट्टा,
कछोट्ट ।

प्रा० छोर-पु० पन्न, किनारा ।
सं० छोरण-छुर + अन, छुर=छेद-
ना) पु० प्याग, पैना करना, कर्तन,
काटना ।

सं० छोरंग-पु० नीच, सड़ा, चूना,
मकेदी मकेदा, करीदा ।

प्रा० छोट्ट-(सं० छोम) पु० प्यार,
स्नेह, मोह, धीनि ।

प्रा० छोट्टी (छोम) पु० मेथी, प्याग,
स्नेही, अनुरागी ।

प्रा० छोना-पु० जानवर का बच्चा ।

ज

सं० ज-(जन्=जन्मा होना, वा जन्म=
जीवना) पु० शिव, २ विष्णु, ३ ब्र-
ह्म, ४ ब्रह्मा पिता, उत्पत्ति, सूरवा,
भोजन, शेष, सत्त्व, जीव, गरीर
आदि ।

प्रा० जक-पु० गाढ़ावन का रक्त ।

प्रा० जकड़ना-क्रि० स० कमना,
कमके बांधना, मीचन, बांधना,
जानना ।

प्रा० जग-(सं० जगत्) पु० संसार,
जगत्, दुनियाँ, ब्रह्म, वायु ।

प्रा० जग-(सं० यज्ञ) पु० यज्ञ, क-
लि, २ उत्सव, पर्व ।

प्रा० जगजगाहट-स्त्री०
जगकाहट, मकाश, उजलई ।

प्रा० जगजागी-स्त्री० संसार में
विदिन हुई, दुनियाँ में जागि हुई ।

सं० जगत्-(जम्=जाना) पु० संसार
-जग, दुनियाँ ।

सं० जगती-(जम्=जाना) स्त्री०
पृथ्वी, धाती, २ लोग ।

सं० जगदम्बा (जगत्=संसार, भं-
म्बा=मा) स्त्री० जगमाना, महाभा-
या, देवी, दुर्गा ।

सं० जगदाधार-(जगत्=संसार,
आधार=आसरा) पु० अनन्त
शेषमी, संसार, का आसरा,
२ हवा, वायु ।

सं० जगदीश-(जगत्=संसार, ईश
=स्वामी) पु० परमेश्वर, संसारका
कर्ता, जगन्नाथ, विष्णु ।

प्रा० जगना-(सं० जागरण, जागृ
=जागना) क्रि० अ० नींद में उठा-
ना, सचेतहोना, जागना ।

सं० जगन्नाथ-(जगत्=संसार, नाथ=
स्वामी) पु० विष्णु, जगदीश, जग
न्याय, जगन्नाथ का भेंटि उड़ीसा
में जगन्नाथपुरी में है जहाँ बहुत मे
यात्री जया करने हैं ।

प्रा० जगमगा-पु० बघड़ाना, बघ-
वदार, कनाकना ।

प्रा० जगमाता- (सं० जगन्माता
जगत्=संसार, माता=मा) स्त्री०
संसार की मा, जगदम्बा, देवी
दुर्गा, सरस्वती ।

प्रा० जगह } स्त्री० टौर, स्थान,
जागह } डिक्काना ।

प्रा० जगहलोड़ना-बोल० कागज
में कुछ जगह बिन लिखी रखना ।

प्रा० जगहसिरखरचना-बोल०
मौके पर खर्च करना, यथोचित ख-
र्चना, जहां चाहिये वहां खर्च करना ।

प्रा० जगह सिर होना-बोल०
किसी काम पर होना, ठीक होना,
यथोचित होना, जैसा चाहिये वै-
सा होना ।

प्रा० जगाज्योति- (सं० जाग्रज्ज्यो-
तिः) स्त्री० चमक, मड़क, जगजगा-
हट, बहुत जगवा बड़ी ज्योति ।

सं० जह्म- (जम्=माना) मु० चलने
वाला, जिसमें चलने की शक्ति हो
२ पु० योगी जिनके सिर पर ज
टा होती है और छोटी पंखों को
बनाया करते हैं और महादेव के
भजन गाया करते हैं । [झट्टी ।

सं० जहल- (जन्=गिरना) पु०, रन
प्रा० जहली- (सं० जहल) मु० बूँ-
ला, बनवासी ।

सं० जग्ध- (जग्ध=भोजन करना)
स्त्री० पु० भुक्त, खायादया ।

सं० जग्धि- (जग्ध+नि) भा० पु०
भोजन ।

सं० जघन- (जन+घन) पु० स्त्रियों
के कटि का अग्रभाग, जंघा, करि-
हाँव, कटिदेश, ऊरुस्थल ।

सं० जघन्य- (जघ+ह्य) स्त्री० पु० ध-
धम, नीच, पिछला ।

सं० जघन्यज- पु० कनिष्ठ, शूद्र, अपरा

सं० जह्वा- (हन्=देहा जाना, वा ज-
न्=पैदा होना) स्त्री० माँघ, जानु,
जानू ।

प्रा० जघना- कि० सं० अटकल होना
नज़र में रखना ।

प्रा० जचावट- (जांचना) भा० स्त्री०
माँघ, परत ।

प्रा० जंजाल- (सं० जनजाल, जन्=
मनुष्य, जाल=फँदा) पु० उना सेड़ा,
बलभान, कलेश, भ्रंशदयराहट,
व्याकुलता, कठिनता ।

सं० जटा- (जट=झड़वाकरना) स्त्री०
बालों का झूड़ा, बिखरेबोझ, मिले
हुयेबाल, २ जड़, हत्त की जड़ ।

सं० जटाजूट- (जटा+जूट=जूड़ा)
पु० जटाका जूड़ा, जटा का बंध ।

सं० जटाधारी- (जटा+धारी=रखने
वाला, धृ=रखना) पु० शिव, जटा
रखने वाला ।

सं० जटामांसी- (जटा, मन्=रगना)

समूह, समाज, योद्धा, भुंड ।
 प्रा० जत्थावाँधना-घोल० भुण्ड
 बनाना, गोल बांधना ।

सं० जन-(जन्=पैदाहोना) पु० मनु-
 प्य, लोग, आदमी, मनुष्य जाति
 व्यक्ति, २ दुष्ट वा नीच मनुष्य ।

सं० जनक-(जन=पैदाकरना) क० पु०
 बाप, पिता, २ मिथिला के राजा
 और सीताके बाप का नाम ।

सं० जनकतनया (जनक=एक
 जनकमुता) राजाका नाम,
 तनया या मुता=बेटी) स्त्री० सीता,
 जानकी ।

सं० जनकपुर-(जनक=एक राजा
 का नाम, पुर=शहर) पु० तिरहुतमें
 एक शहर है जो राजा जनक की
 राजधानी था । [नक बा ।

प्रा० जनकौरा-(सं० जनक) पु० ज-
 सं० जनता-स्त्री० जनसमूह, मनुष्य
 समूह ।

प्रा० जनना-(सं० जनन, जन्=पैदा
 होना) क्रि० अ० जन्म होना पैदा
 होना ।

सं० जननी-(जन्=पैदाहोना) स्त्री०
 मा, मैया, माता, महतारी ।

सं० जनपद-(जन+पद) पु० देश, प्रा-
 म, लोक, जाति, कौम, जनस्थान ।

सं० जनप्रवाद-पु० किंवदन्ती, अफ-
 बाद, बदगोई, झगमग, गुरगुर,
 खबर, कतह ।

सं० जननीय-(जन्+जनीय) मर्प०
 संतान, उपजायागया, पैदा किया
 हुआ ।

सं० जनमेजय-(जन=संसार, एज=
 चमकना, वा जन्=दुष्ट लोग, एज=
 कंपाना) पु० राजापरीक्षितका बेटा

सं० जनयिता(जन्+ई+इ, जन्
 पैदा करना) क० पु० पिता, जनक,
 बाप, जन्मदाता ।

सं० जनयित्री(जनयि+ई) स्त्री०
 माता, जननी, मा, महतारी ।

सं० जनलोक-(जन=मनुष्य, लोक
 =जगह) पु० सातलोकों में कां-
 एकलोक जहाँ धर्मात्मा मनुष्य मरने
 के पीछे रहते हैं ।

प्रा० जनवासा-(सं० जन्यवास, जन्य=
 हुलहेकेभिप्रभादि. वास=जगह) पु०
 बरातियों के उतरने की जगह ।

सं० जनाश्रय-(जन=मनुष्य, आश्रय
 =अवलंब) पु० विश्रामस्थान, टि-
 हासरा, २ अफिहार, मन्त्री ।

सं० जनश्रुति-(जन=मनुष्य, श्रुति=
 सुनी हुई) स्त्री० खबर समाचार, किं-
 वदन्ती, संदेश, अफवाह ।

प्रा० जनाना(जनना) क्रि० सं० पै-
 दा करना, जन्माना, २ (जानना)
 चिठाना, जताना, चेठाना, बुझाना ।

प्रा० जानव-(जानना) भा० पु० सै-
 न मंजेल, लसार, चेठार, सूचना ।

प्रा० जानाव-अवधान, चेष्टा,
 रक्ष्यान ।

सं० जनार्दन-(जन=दुष्टलोग, अर्द=पीड़ा देना, मारना, वा जन मनुष्यों से, अर्द जांचा जाना अर्थात् जिससे मनुष्यजींचने हैं)-पु० विष्णु, यगन्वान्, नारायण ।

प्रा० जनि } क्रि० दि० मत, नहीं ।
जिन }

सं० जनि-(जन+इ) भा० स्त्री० जन्म, पैदाइश, उत्पत्ति ।

सं० जनित-(जन=पैदा होना) स्त्री० पु० पैदाहुआ, उत्पन्न, भया, जन्मा ।

सं० जनुस्-पु० उत्पत्ति, पैदाइश, स्त्री० जनु, उत्पत्ति, जनन ।

प्रा० जनेऊ-(सं० यज्ञोपवीत) पु० सूत का, तार जिसको तीन वर्षके लोग गले में पहनते हैं, उपवीत, यज्ञोपवीत-२ जनेऊ जैसा चिड़ जो होरे आदि रतनों में होता है ।

प्रा० जनेत-(सं० जन्म) पु० बराती, स्त्री० बरात ।

प्रा० जज्जाल-पु० झगड़ा, बखेड़ा, सांसारिक कार्यों का समूह ।

प्रा० जन्ता-(सं० यंत्र) पु० तार खींचने का औजार ।

सं० जन्तु-(जन=पैदा होना) पु० जीवधारी, प्राणी, जीव, जानवर, बगु, देशधारी, देशी ।

प्रा० जन्त्र-(सं० यन्त्र) पु० कल

२ बाजा, ३ गंडा, तावीज, जन्तर, टोटका ।

सं० जन्म-(जन=पैदा होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, पैदाइश ।

सं० जन्मद-(जन्म+द=देनेवाला, दा=देना) पु० जन्मदाता, बाप, पिता ।

सं० जन्मदिन-(जन्म+दिन) पु० पैदा होने का दिन, बरस गांठ, बरसवां दिन, सालगिरह ।

सं० जन्मपत्री-(जन्म+पत्री) स्त्री० लग्न कुंडली, जन्मपत्र, जापचा ।

सं० जन्मभूमि-(जन्म+भूमि) स्त्री० अपना देश, उत्पत्तिस्थान, वतन ।

सं० जन्मान्तर-(जन्म=पैदाइश, अन्तर और) पु० दूसरा जन्म, नया जन्म, पुनर्जन्म, फिर जन्मना ।

सं० जन्मान्ध-(जन्म+अन्ध) पु० जन्म का अन्धा, मूरदास ।

सं० जन्माष्टमी-(जन्म+अष्टमी) स्त्री० श्री कृष्णका जन्म दिन भार्दी बंदी = ।

सं० जन्मोत्सव-(जन्म+उत्सव) पु० जन्मदिन का उत्सव, २ जन्माष्टमी के दिनका उत्सव ।

सं० जन्य-(जन=पैदा करना) स्त्री० पु० संग्राम, निन्दितवाद तलाब कौलीनि, हट, उत्थाय सेवक भृत्य मित्र, शक्ति, बाप, २ दुलहे के मित्र और साथी आदि ।

मं० जप (सं० जप, पु० जप) ॥
 हा हा हा हा हा, हा हा हा हा हा, हा हा
 हा हा ।

प्रा० जपन (सं० जपन, जप-जप-
 हा) हा० जपना हुआ, हा हा हा हा
 हा हा हा ।

मं० जपमाना (जपन माना) पु०
 हा हा हा, जप करने की माना,
 माना ।

प्रा० जप (सं० जप, जप-ओ)
 जप } हि० वि० जप जप, जप
 जप करने में ।

प्रा० जपनक } हि० वि० जपनक,
 जपनक, जपनक, जपनक
 जपनकी } न ।

प्रा० जवनप-पोलः बभीकभी ।
 प्रा० जवनव-पोलः बभीकभी ।
 प्रा० जवननव-पोलः बभीकभी ।

प्रा० जवडा-पु० जप, जपडा, जपडा ।
 प्रा० जमकना-हि० जमकना,
 निधना ।

प्रा० जम-(सं० जम) पु० जमराज,
 बान, मोह ।

प्रा० जमदूत-(सं० जमदूत) पु० जमदूत

प्रा० जमदीया-(सं० जमदीया) पु०
 जो दिया बानिक बदी १२ की
 जम के नाम से जाना है ।

प्रा० जमदूत-(सं० जमदूत, जम-ज-
 हा, जहा बहूत भीड़ में जमदी
 बनने में १२ जाने हैं) पु० जमदी,
 भीड़ पाद, भूद ।

प्रा० जमधर-(सं० जमधर, जम-ध-
 हा, धा-१, धीमोह १ पु० जमधर ।

प्रा० जमना-(सं० जम-नदी) पु०
 हि० जम जमना, जमना, जमना-
 गा, जमना, १ हा हा हा, हा हा हा-
 जना, हा हा हा जना (भीड़ बाधा
 जपना भी) २ हा हा हा हा हा, धी-
 जमना, हा हा हा, हा हा हा ।

प्रा० जमहाई-(सं० जमहा, जमहा-
 -जमहा) हि० जमहा में जम-
 हा हा हा हा हा, हा हा हा, हा हा हा ।

प्रा० जमहाना-(सं० जमहा=जमहा) हि०
 जमहा हा हा हा हा हा, जमहा हा हा हा ।

प्रा० जमाई } (सं० जमाया) पु०
 जमाई } दायाद, बेटी का
 पति ।

प्रा० जमालगोटा-पु० एक दहा
 का नाव, दशुनिवा ।

प्रा० जमुना } (सं० जमुना) हि०
 जमन } एक नदी का नाम ।
 जमना }

सं० जम्बू } (जम्बू=ताना) पु० जा-
 जम्बू }

जम ।

भंडा, शैवान, मित्रा, इन्द्र यन्त्र।
सं० जल-(जल=इकना) पु० पानी।

सं० जलक-पु० पराटिका, कौडी,
शुक्तिका, सूती, जंग, घोषा।

सं० जलकरङ्क-पु० शंख, घोषा,
पराटिका, नारियलका फल दूध-
पुक्त, सिंघार, काई।

सं० जलकाक-पु० मोनोदोर, पक्क,
पनटुदरी।

सं० जलकुक्षुट-(जल=पानी, कुक्षुट
=मुर्गा) पु० जलमुर्गा, मुर्गापी।

सं० जलकूपी-श्री० तडाग, झील।

सं० जलगुल्म-पु० जल भौर, क-
लुआ, बर्फी, हिम, पाला।

सं० जलक्रीड़ा-(जल+क्रीड़ा) श्री०
पानी में खेल करना।

सं० जलचर-(जल=पानी, चर-
चलनेवाला, चर=चलना, पु० जल
का जीव मत्त, मछली, साह आदि।

सं० जलचरकेतु-(जलचर=मत्त
केतु=भंडा, शर्यान् जिसके भंडेपर
मत्त का चिह्न है) पु० कामदेव,
मदन, मत्तचम।

सं० जलज-(जल=पानी, ज=पैदा
होनेवाला, जन्=पैदा होना) पु०
नैवल, कमल, पंकज, २ मछली,
१ शङ्ख, ४ चन्द्रमा, २ मोती।

सं० जलजात-(जल=पानी, जात

पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु०
नैवल, कमल।

सं० जलत्र-(जल+त्र, त्र=रसो
करना) छत्र, छाता, नौका, नाव।

प्रा० जलथल-(सं० जल+थल) पु०
आधी धरती पानी से ढकी हुई भीर
आधी सुखी, दलदल।

सं० जलद-(जल=पानी, द=देने-
वाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ,
घन, घटा, बारिद, मोथा घास,
कलश, पक्का, पु० पानी देनेवाला।

सं० जलधर-(जल=पानी, धर=
रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल
२ ममंदर, ३ एकनकारका घास, पु०
पानी को रखनेवाला।

सं० जलधारा-(जल=पानी, धारा
=धार) शा० झरना, मवाद, सो-
ता, मोत, पानी का गिरना।

सं० जलधि-(जल=पानी, धा=रा-
ना) पु० समंदर।

प्रा० जलन-(सं० ज्वलन) श्री०
जलना, तपन, २ तप. ३ रिस,
क्रोध, कुहन।

सं० जलनिर्गम-पु० मोरी, पानी
का निगस।

प्रा० जलना-(सं० ज्वलन, ज्वल
=जलना) क्रि० अ० चलना, दह-
ना, मुलगना, भड़कना, आंचक-

प्रा० जव } (सं० यव) पु० एक अ-
जौ } नाज का नाम ।

सं० जवतिका—(जु=जाना, जिसमें)
खी० परदा, कनांत, काई ।

प्रा० जवान—(सं० युवन्, यु=मिलना)
पु० लक्षण, सोलह बरस की उमर का ।

प्रा० जवार—पु० सपेंदर की बाढ़,
२ एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० जवारभाटा—पु० समुद्र का
बगार बहाव ।

प्रा० जवासा—(सं० यवास, यु=मिलना)
पु० एक प्रकार की घास जिसकी

गर्मी के दिनों में टट्टी बनाई जाती
है और इससे बरसान का पानी

गिरने से सूख जाता है ।
प्रा० जस—(सं० यश) पु० कीर्ति,
नामवरी ।

प्रा० जस-क्रि० वि० भैसे, जिस प्रकार से ।
प्रा० जसोदा } (सं० यशोदा) स्त्री०

जसुमति } नन्दजी की स्त्री, श्री,
कृष्ण की दूसरी मा ।

प्रा० जस्त } पु० रांगा, एक प्रकार
जस्ता } की धातु ।

सं० जहक—(ज+हक, हाक=होड़ना)
पु० सपय, बाकक के बुज-गुं
त्यागी, होड़नेवाला ।

प्रा० जहँ } (सं० यव) क्रि० वि० जिस
जहाँ } जगह ।

प्रा० जहाँतहाँ—बोल० हर-एक ज-
गह, सब ठौर ।

प्रा० जहाँकातहाँ—बोल० जहाँ था
वहीं, उसी जगह । [जगह ।

प्रा० जहाँजहाँ—बोल० जिस जिस
प्रा० जहाँकहीं—बोल० चाहे जहाँ,

किसी जगह ।
प्रा० जहाँतहाँफिरना—बोल० भट-

कना, इधर उधर फिरना ।
सं० जहनु—पु० चन्द्रवंशियोंमें एक राजपि

का नाम जो गंगाको उतरने के समय
पीगया था (पुराणोंके अनुसार) ।

सं० जहनुतनया—(जहु+तनया=

बेटी) स्त्री० गंगा, कहते हैं कि जब
जहनु राता तप करते थे तब गंगाकी

धारा से ब्याकुल हुए तो गंगा की
पी गये फिर देवताओं के कहने से

पीछे पेट से निकाल दी इसलिये
गंगाको जहनुकी बेटी कहते हैं ।

प्रा० जाई—(सं० जाना, जन्=जन्मना)
स्त्री० बेटी, लड़की, जनी, पुं० पैदा

हुई, २ (सं० जाती) चपेटी ।
प्रा० जांच—(सं० जहा) स्त्री० रान, जंघा ।

प्रा० जांचिया—(जांच) पु० बड़नी ।
प्रा० जांचना—क्रि० स० परखना,

अटकलना, बसना ।
प्रा० जाना—(सं० यन्) स्त्री० पट्टी,
पाट, पेपणी ।

प्रा० जाकड़—पु० घन्धक, घरोहर,
कोई चीज शर्त पर लेना ।

प्रा० जागना—(सं० जागरण, जा-
गृ=जागना) कि० अ० नींद से
उठना, मनेन होना ।

सं० जागर } (जागृ=जागना मा०
जागरण } पु० रतनगा, जगौनी
रात को जागरूक परमेश्वर का
पान करना ।

सं० जागरित
जागरिता
जागरी
जागरूक
जाग्रत
क० पु० जगैया,
निद्रोत्थान,
मनेन, वेदार ।

सं० जाहल—पु० गौवागरी, गरगौटा ।

प्रा० जाचक—(सं० याचक) पु० मांतिने-
वाला, भित्तारी, याचनेवाला ।

प्रा० जाचना—(सं० याचन) कि०
मा० मांगना, पारना ।

प्रा० जाजम—सं० जगंजी, दही,
रिद्वीक ।

प्रा० जाट—पु० रिद्वीक से पृथ्वी ।

प्रा० जाड़ा—(सं० जड़, जन्मदहन)
पु० मरी, डंड, जैवहज ।

सं० जान—(जन्=जन्मा होना) पु०
जन्म, दुष्ट, पैदाहुआ, जन्म ।

प्रा० जान—(सं० जान) कि० जानि,

बंश, कुल, वर्ण, गोत्र, २ प्रकार,
भेद, गण, वर्ग ।

सं० जातक—(जन्=जन्मा होना) पु०
वेदा, २ बृहज्जातक आदि उपोनिषद्
के ग्रन्थ, ३ जातकर्म ।

सं० जातकर्म—(जान=जन्म, कर्म
=काम) पु० जन्मके समय की पंक्तीति ।

प्रा० जानपान—(सं० जातिपानि)
सं० बंशावली, बंश, उरगति, गीर्दी ।

सं० जानरूप—पु० मोना, चांदी ।

सं० जानि—(जन्=जन्मा होना) सं०
जान, वर्ण मोर, बंश, २ उगति ।

सं० जानकर्म—पु० नादीमृगश्राद्धादि ।

सं० जानी—(जन्=जन्मा होना) सं०
चपेली, जावित्री ।

सं० जानीफल—पु० जायफल ।

सं० जानुधान—(जागु=कभी, धान=
पान, अर्थात् जो समय पाकर
मनुष्यों के पास आता है) पु०
राजुत, समुद्र ।

प्रा० जात्रा—(सं० यात्रा) सं०
वीर्यहोत्रात्रा, देगादन, गकर, कूर ।

प्रा० जात्री—(सं० यात्री) पु० यात्रा
करनेवाला, वीर्य को मानिसना,
मुसाफिर ।

प्रा० जान—कर, भीव, आगवा ।

सं० जानकी—(जन्=जन्मा होना) पु०
जन्म, दुष्ट, पैदाहुआ, जन्म ।

प्रा० जान—(सं० जान) कि० जानि,

प्रा० जानना—(सं० ज्ञान, ज्ञा=जानना)

क्रि० सं० सपन्नना, वृक्षना, पद-
चानना, जानवृक्ष के, धोल० मन
से, जीसे, समझ वृक्ष कर ।

प्रा० जाना—(सं० यान, या=जाना)

क्रि० अ० गमन करना, चलना,
धीतना, पहुँचना, जारी रहना,
चला जाना ।

प्रा० जातारहना—धोल० सोयाजा-

ना, चलाजाना, अदृश्य होना, अलोप
हो जाना, मर जाना, चंचल होना,
विलाप जाना ।

प्रा० जानेदेना—धोल० छोड़देना,

लमाकरना, कुञ्जध्यान नहीं करना ।

सं० जानु—(जन्=जैदा होना) पु०

घुटना, टगना, टेवना, ऊरु, जानू ।

सं० जाप—(जप=जपना) क० पु० जप

रहना, माला फेरना, मंत्र जपना ।

सं० जापक—(जप=जपना) क० पु०

जप करनेवाला, जपनेवाला ।

प्रा० जाम—(सं० याम) स्त्री० गहर, दिन

रात का आठवाँ भाग, गीन घण्टा ।

प्रा० जामन—(सं० जम्बु, जम्बे=जाना)

पु० एकपेड़ और उसके फल का नाम ।

सं० जामाता—(जापा=पत्नी, पा=

आदर करना) पु० जमाई, बेटे

का पति, दामाद । [रात, रात्रि ।

प्रा० जामिनी—(सं० यामिनी) स्त्री०

प्रा० जाम्बवन्त—(सं० जाम्बवन्त,

जाम्बु=जामन, पद्=वाला) पु०

रीछों का राजा जो श्रीरामचन्द्र
का मित्र और श्रीकृष्णका समुरथा ।

सं० जाम्बूनद—पु० सुवर्ण, स्त्री०

जाया, विवाहिता स्त्री ।

प्रा० जायफल—(सं० जायफल)

पु० एकतरह का गन्धे मसाला ।

प्रा० जाय—क्रि० चि० घृणा ।

सं० जाया—(जन्=जैदा होना) स्त्री०

माया, पत्नी, व्याही हुई स्त्री ।

सं० जायानुजीवी—(जाया + अनु-

जीवी) पु० नट, बेरवापति, भंडू

आ, चरपच्ची ।

सं० जायापती—दंपती, स्त्री पुरुषों

सं० जार—(ज=दुबला होना, अर्थात्,

स्त्री के साथ पतिका प्यार घटनेवाला)

पु० बार, दूसरा पति, उपपति ।

सं० जारज—(जार=बार, जन्=जैदा

होना) पु० जार से पैदा हुए

लड़का, इराधी बेटा ।

प्रा० जारना—(सं० चक्कन) क्रि०

सं० जलाना, गुलमाना, भड़काना,

आंच लगाना ।

सं० जाल—(जल्=टकना, घेरना)

स्त्री० फँदा, पाश, २० जालीदार

सिइकी, फरोसा, २ माया इन्द्र-

जाल, जादू, ४ समूह ।

सं० जालक—(जाल + अक) क० पु०

फरोसी, मकार, २ मयलों का जाल

स्त्री० ३ जाली लोट कपड़ा, ४ शिलाजीत, ५ जोंक, ६ रौंड़, रंदा, ७ भिल्लप, बखनर, ८ व्याघ्र, घड़े-लिया, मछार। [मयनी, रयी।

सं० जालगणिका—स्त्री० मयेनी,

प्रा० जाला—(सं० जाल, जल्=ढ-कना) पु० मकड़ी का फाँदा २ मोतियाबिंद, आँख की धीमारी।

प्रा० जाली—(सं० जाल) स्त्री० एक तरहका कपड़ा, २ भंभरी, जाली-दार लिङ्गी, भरोखा।

सं० जाल्म—पु० नार, धूर्त, पांमर, अधम, क्रूर, डीठ।

प्रा० जावक—(सं० यावक, पु=मिलना) पु० महावर, अलना।

प्रा० जावित्री } (सं० जातीपत्री)
जायपत्री } स्त्री० एक प्रकार का गर्म मसाला।

प्रा० जासु—(सं० यस्य) सर्वना० जिस हा, जिस से ॥

प्रा० जाहि—सर्वना० जिस को।

सं० जाह्नवी—(जह्नु एक राजपिंका नाम) स्त्री० गंगा, मागीरपी, (जह्नुतनया देखो)।

सं० जिगमिषा (गम्=जाना) भा० स्त्री० गमनेच्छा, जानेका इरादा।

सं० जिगीषा—(जि=जीवना, भा० स्त्री० जीवने की इच्छा, जय की इच्छा, हिसका।

सं० जिघत्सा—(अद्=प्रवृत्तकरणे) भा० स्त्री० भोजनेच्छा, खाने का इरादा।

सं० जिघत्सु—(अद्=खाना) क० पु० बुझु, भोजन करनेकी इच्छा करनेवाला।

सं० जिघांसा—(हन्=मारना) भा० स्त्री० मारने की इच्छा करना।

सं० जिघांसु—(हन्=मारना) क० पु० मारने की इच्छा करनेवाला।

सं० जिज्ञासा—(ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० जाननेकी इच्छा, पूछना, प्रश्न।

सं० जिज्ञासु—क० पु० पूछनेवाला।

प्रा० जित—(सं० यत्र) क्रि० वि० जहां, जिधर, २ जीता गया, शाराहुआ।

सं० जितेन्द्रिय—(जित=जीतछी वा वश बरली, इन्द्रिय=इन्द्रियां, जिस ने) गु० इन्द्रियवित्त, जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, आपि, मुनि, यनी, संन्यासी।

सं० जिन—(जि=जीतना) पु० बुद्ध, जैनियों का देवता, जैनधर्म में २४ जिन हुए धतलाते हैं।

का० जिन्स—जात, कौम।

प्रा० जिमाना—(मं=जेपन, जिम्=साना) क्रि० स० सिलाना। [प्रकार।

प्रा० जिमि—क्रि० वि० जैसे, जिस

प्रा० जिय } (सं० जीव) पु० जीव,
जियरा } प्राण, आत्मा, रुह ।

प्रा० जियाना (सं० जीवन) क्रि० स०
मिलाना, प्राणदेना, रक्षालना, पोषना ।

प्रा० जिहि—सर्वना० जिनको, जिस
को, जिससे, जो ।

सं० जिह्वा—(लिह=स्वाद लेना)
ही० रसज्ञानेन्द्री, जीभ, रसना ।

प्रा० जी (सं० जीव) पु० जीव, प्राण,
आत्मा, जिय, २ मन, चित्त ।

सं० जिह्वल—क० पुं० चटोरा, आ-
स्वादक, जिमोर ।

प्रा० जीउठाना—बोल० मन खींच
लेना, किसीसे मित्राई छोड़देना ।

प्रा० जीबुराकरना—बोल० जीमिष-
लाना, बचन करना, या किया
चाहना, रद्द किया चाहना ।

प्रा० जीवदाना—बोल० मनमें कि-
सी चीजकी चाह पैदा होना, जी
में बसाह होना, हौसिलता होना ।

प्रा० जीविखरना—बोल० अचेत हो-
ना, मूर्च्छित होना, मूर्च्छी आना ।

प्रा० जीभरजाना—बोल० सन्तोष
होना, मन तृप्त होजाना, आसूदा
होना, अयामाना ।

प्रा० जीआजाना—बोल० किसी
चीज पर अचानक मन लग जाना,
किसी से प्रसन्न होना ।

प्रा० जीभरआना—बोल० मन में

दयाका उपजना, दया हर्ष अपरा
शोच से मुँहसे बोल न निकलना ।

प्रा० जीवहलाना—बोल० मन बह-
लाना ।

प्रा० जीपाना—बोल० किसीके स्वर-
भाव को जानना ।

प्रा० जीपानीकरना—बोल० सता-
ना, दुखदेना, विभ्राना, पीड़ादेना ।

प्रा० जीपरखेलना—बोल० अपने
को जोरिम में डालना, जी देने पर
उपन होना ।

प्रा० जीपसीजना } बोल० दया
जीपिघलना } आना, मोह
आना ।

प्रा० जीपकड़ाजाना—बोल० शोष
में होना, उदास होना ।

प्रा० जीफटजाना—बोल० दिलट्ट
जाना, निराश होना ।

प्रा० जीफिरजाना—बोल० किसी
चीजमें नहीं चाहना, सन्तुष्ट होना,
तृप्त होना, किसी चीज से अयामाना ।

प्रा० जीजलना—बोल० मनमें दुःख-
पाना, कुदना ।

प्रा० जीजलाना—बोल० मंहाप क-
रना, रुपा करना, आप दुन सहकर
दुसरेका उपहार करना, २० सनाना
रिजाना, दिख दुनाना, बखाना ।

प्रा० जीचाहना—बोल० किसी ची-

- ॥ जकी इच्छा करना, दिललल चाना,
मनमें किसी की चाह पैदा होना ।
- प्रा० जीझिपाना } बोल०, किसी
जीचुराना } कामको मुस्ती
से करना, असावधानी करना ।
- प्रा० जीचलाना-बोल० किसी का-
मको बीरता से करना ।
- प्रा० जीचलना-बोल० चाहना,
इच्छा करना । [वचाना ।
- प्रा० जीदान-बोल० वचाना, मरनेसे
- प्रा० जीदानकरना-बोल० किसी
के प्राण मचाना, बड़े दोषको क्षमा
करना, जान बख्श देना ।
- प्रा० जीधड़कना-बोल० डर से
अथवा शोच से दिछ धुक्क धुक्क
करना, दिल कांपना ।
- प्रा० जीझुवजाना-बोल० अचेत
होना, मूर्च्छा आना, जी बिलरना,
गिरावना, बेरोश होना ।
- प्रा० जीरखना-बोल० भटपट प्रसन्न
हो जाना, प्रसन्न करना, दिल खुश करना ।
- प्रा० जीसे उतर जाना-बोल०
नहीं चाहना, दिलसे गिरना ।
- प्रा० जीसे मारना-बोल० मारदा-
लना, जानसे मार डालना ।
- प्रा० जीकरना } बोल० चाहना,
जीहोना } किसी चीज की
चाह मनमें पैदा होना ।
- प्रा० जीखोलकेकुछकरना-बोल०
किसी काम को चाहसे अधना
प्रसन्नता से करना ।
- प्रा० जीपरखाना-बोल० मुश्किल
पढ़ना, जी क्लेश में होना ।
- प्रा० जीघटजाना-बोल० किसी
चीजसे मन हट जाना, घिनाना,
अवज्ञा करना, उदास होना ।
- प्रा० जीलगना-बोल० किसी से
प्यार करना, किसीकी चाह होना ।
- प्रा० जीलगाना-बोल० किसी
चीज पर मन लगाना, किसी की
चाह मनमें पैदा होना ।
- प्रा० जीलेना-बोल० किसीके मन
की बातको जानना, मार डालना ।
- प्रा० जीमारना-बोल० किसी की
इच्छा को खोड़ना, निराश करना,
अप्रसन्न करना ।
- प्रा० जीमिलाना-बोल० किसीसे
मिश्राई करना, मुश्किल पढ़ाना ।
- प्रा० जीमेंआना-बोल० कोई बात
सूझना, याद पड़ना ।
- प्रा० जीमेंजलजाना-बोल० दाह
से दुख पाना ।
- प्रा० जीमेंजीआना-बोल० सुख
पाना, पैर होना, प्रसन्न होना ।
- प्रा० जीमेंघरकरना-बोल० मन
माना, किसीको बहुत चाहना ।
- प्रा० जीनिकलना-बोल० मरना ।

२. घेरल होना; ३. बहुत-दरना ।

प्रा० जीहारना—बोल० हिम्मत हा-

रना, पहराना, साहस नहीं रखना,

निराश होना ।

प्रा० जीहट जाना—बोल० मन हट-

जाना, जी घट जाना ।

प्रा० जी—अव्यय० हां, २. मादिच

आप ।

प्रा० जीत (सं० जित, जि=जीतना)

स्त्री० विजय, जय, फतह ।

प्रा० जीतना—(सं० जि=जीतना)

क्रि० स० जयकरना, पराजय कर-

ना, हराना ।

प्रा० जीतव—(सं० जीवन वा जीवि-

तव्य) पु० जीना, जीवन, जिंदगी ।

प्रा० जीता—(जीना) गु० जीना हुआ,

बलता, धैर्य, २. अधिक,

सं० करार—

प्रा० जीतेजी—बोल० जवतक

जीता है ।

प्रा० जीना—(सं० जीवन) क्रि० अ०

जीना रहना ।

प्रा० जीभ—(सं० जिह्वा) स्त्री० जिह्वा

रसना, ज़रान ।

प्रा० जीमवदाना—बोल० चार्त व-

नाना, चरुचक करना, निंदाकरना ।

प्रा० जीमपकड़ना—बोल० चुप-

होना वा करना, २. किसी की-चांत

काटना, ३. छोटे-दोष निकालना ।

प्रा० जीभचाटना—बोल० बड़ी

लालसा करना, जी ललचाना,

बहुत चाहना ।

प्रा० जीभनिकालना—बोल० बहुत

ही बहुत यकजाना या प्यासा होना,

हाँफना ।

प्रा० जीभी—(जीम) स्त्री० जीभ

साफ करने की चीज ।

जीमना } (सं० जेमन, जिम्=

जेवना } खाना) क्रि० सं०

खाना, भोजनकरना ।

प्रा० जीमूत—पु० मेघ, २. पर्वत,

३. घोषा, ४. दण्डकारण्य, ५. शेष ६

घूम, ७. इन्द्री ।

प्रा० जीरा—(सं० जीर, कषा=पुराना

होना) पु० एक पसाले का नाम ।

संजीर्ण—(ज=बूझा होना, पुराना

होना) पु० बूझा आदमी, गु० पु-

राना मुझिया हुआ, पचा हुआ ।

सं० जीर्णोद्धार—(जीर्ण + उद्धार)

परम्पन, लेसपीत ।

प्रा० जील—स्त्री० गाने में ऊँचा स्वर

तोसो राग ।

सं० जीव—(जीव=जीना) पु० माण

जी, आत्मा, २. जीवधारी जन्तु,

जानवर, ३. जीविका ।

सं० जीवक—(जीव+अक) क० पु०

सेवक, किरा, कृपण ।

सं० जीवन—पु० जीना, जीतव, २ जीविका, वृत्ति, ३ पानी ४ बेटा, पुत्र ।

सं० जीवनचर्या—जीवनवृत्तान्त, हाल, सवानह उर्ध्व ।

सं० जीविका—स्त्री० जीने का उपाय, आजीविका, वृत्ति, निवाह, रोजी ।

सं० जीवित { गु० जीताहुआ, भीता,
जीवी { पु० जीना, जीवन,
वर्तमान ।

प्रा० जीह { (सं० जिहा) स्त्री०
जीहा { जीभ, रसना ।

प्रा० जुआरी { (सं० घूतकारी) क०
जुवारी { पु० जूमा खेलनेवाला ।

प्रा० जुग (सं० युग) पु० सत्य, प्रेता,
द्वार, कलि ये चार, जुग कहलाते
हैं, समय, २ जोड़ा ।

प्रा० जुगानजुग—(सं० युगानुयुगः
युग, + अनु+युग) बोल० कई
युग, कई बरस, बहुत बरसतक ।

प्रा० जुगजुग—बोल० सदा, नित,
सर्वदा, हमेशह ।

प्रा० जुगत—(सं० युक्ति) स्त्री० चतु-
राई, निपुणता, चलावट, हिकमत ।

प्रा० जुगनी—स्त्री० चमकनेवाला कीड़ा ।

प्रा० जुगल—(सं० युगल) गु० दो,
जोड़ा ।

प्रा० जुगवना—क्रि० सं० देखना, बत
करना, खबरलेना, रखना, रक्षा करना ।

प्रा० जुगालना { क्रि० अ० बग-
जुगालीकरना { लना, पागुराना,
राउथ करना । [रोमथ ।

प्रा० जुगाली—स्त्री० पागुर, बगाल,
सं० जुगुप्सा—(गुप्=निन्दाकरना)

भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, असूया ।

सं० जुगुप्सित—अर्थ० पु० निन्दित,
बदनाम ।

प्रा० जुभाऊ—(सं० युद्धीय, लड़ाई
का) गु० लड़ाई का, जुभाऊवा-
जा, लड़ाई वा बाना ।

प्रा० जुम्मार—(सं० योद्धा) क० पु०
लड़ाका, वीर, भट, लड़नेवाला
यहादुर ।

प्रा० जुटना—(सं० युक्त, युग्म=मिलना)
क्रि० अ० भिड़ना, मिलना, लड़ने,
को सामने होना ।

प्रा० जुड़ना—(सं० जुड=जुड़ना) क्रि०
अ० मिलना, सटना ।

प्रा० जुड़ाना { क्रि० सं० धात्री
जुराना { ठेंदी करना, ठेंदा
होना, २ मिलाना, जोड़ना ।

प्रा० जुन्हरी—स्त्री० ज्वार, एक प्रकार
का अनाज । [अनाज ।

प्रा० जुवार—स्त्री० एक प्रकार का

प्रा० जुहार—पु० सलाम, रामराम,
पाछागन, दण्डवत, नवस्कार ।

प्रा० जुआ—(सं० पूत) स्त्री० पांसा
खेचना, दांव लगाना ।

प्रा० जुआ } (सं० युग) पु० एक
जुवा } लकड़ी की खील जो

बैनों के गले में बांधने हैं, जूआट ।

प्रा० जुं—स्त्री० चिड़ड़ा, दील, बीलहड़ ।

प्रा० जूमना—(सं० पुष=लटना)
फि० घ० लटना, लड़ाई करना,

२ लड़ाई में मरना ।

प्रा० जूममरना—घोल० लड़ाई में
लड़ के मरना ।

सं० जुष्ट—(जुष्ट=सेवाकरना) मं० पु०
जूठा, भेषित, सेवा किया गया ।

सं० जुट—(जट=बांधना) पु० बैलों
का बंध, जटाका हड़ा, २ समूह ।

प्रा० जूड़ा—(सं० जूट) पु० बंधे हुए
बाल, २ (जड़) टेंद ।

सं० जुड़ित } (जड़+इत) मं० पु०
जुड़िया } मिलित, नौग्रम, दो
लड़के जुड़े हुए ।

प्रा० जूड़ी—(सं० जड़=जाड़ा) स्त्री०
उसर, गीतचर, कंपज्वर, जाड़ा,
लरजा ।

प्रा० जूता } बनही, पगरली, मोड़ा,
जूती } चर्मगादुका ।

प्रा० जूहा—(सं० पूष) पु० समूह, झुंड ।

प्रा० जूही } (सं० यूषी, पुं=मिलना)
जूही } स्त्री० एक फूलका नाम ।

सं० जृम्भ } जृम्भ = जम्हाना,
जृम्भा } भा० स्त्री० जम्हाई,
जृम्भाण } आलस्य ।

प्रा० जेट—स्त्री० डेर, डेरी, समूह, परत ।

प्रा० जेठ—(सं० ज्येष्ठ) पु० पतिका
बड़ा भारी, २ एक महीने का नाम ।

प्रा० जेठा—(सं० ज्येष्ठ) पु० बड़ा,
पहलौठा, २ पु० कुसुम का बहुत

अच्छा और गाढ़ा रंग ।

प्रा० जेठानी } (जेठ) स्त्री० जेठ
जिठानी } की स्त्री ।

प्रा० जेठीमधु—(सं० यष्टीमधु यष्टी=
तांत, मधु=गहड़) स्त्री० मुलहठी,
एक दवाई ।

प्रा० जेठौन—(जेठ) पु० जेठका बेटा ।

प्रा० जेव—स्त्री० खलीना, पाकट ।

प्रा० जेवकतरा—पु० वनका, जेव
वनजेराना ।

सं० जेता—(जि=जीतना) पु० पु०
विजयी, जीतनेवाला, कताह ।

सं० जेमन—(जिम्=खाना) भा० पु०
भोजन, खाना, भोज्यपदार्थ, खाने
की वस्तु ।

प्रा० जेवड़ी } स्त्री० रस्सी, डोरी
जेवरी }

प्रा० जेहर—पु० तिरपों के पहनने
एक पहना ।

प्रा० जै-गु० जितना ।

प्रा० जै-(सं० जय) स्त्री० जीत,
विजय, जय, फतेह ।

प्रा० जैजैकार-(सं० जयकार) पु०
आनन्द, उत्सव, हर्ष, जीत, विजय,
जय, खोलवाला ।

प्रा० जैजैकारकरना-बोल० जय
का शब्द करना ।

सं० जैन-(जिन अर्हण, बुद्ध) पु०
जिनधर्मको माननेवाला, बौद्धधर्मी ।

प्रा० जैनी-(सं० जैन) क० पु० जैन
मतका माननेवाला, श्रावक, भगवत ।

प्रा० जैमा-(सं० यादव, यनु=जो,
हज=देखना) क्रि० वि० जिम
मरह, जिम प्रकार ।

प्रा० जैमाचाहिये-बोल० यथोचि-
त, ठीक ।

प्रा० जैमाकानैमा बोल० ठीक
जैम चाहिये, यथोचित ।

प्रा० जैहं यजभाषा । क्रि० अ०
जापना, जावेना, जावेने । [जव]

प्रा० जौ क्रि० वि० जैसे, जिमतरह ।

प्रा० जौतों }
जौतोंकरके } बोल० किसी तरहसे ।

प्रा० जौकानों-बोल० जैमा का
तैमा, जैमाया तैमाही, ठीक तैमाही ।

प्रा० जौक-(सं० ज्यौष्ट) स्त्री०
मज का बौद्ध, ज्यौष्ट ।

प्रा० जौही-क्रि० वि० अभी, दूरत ।

प्रा० जोखना-क्रि० म० तौलना
पाना ।

प्रा० जोखिम } स्त्री० बीमा, २६
जोखों } चिन्ता, शङ्का कठि
काम ।

प्रा० जोखिमउठाना-बोल० अप
नई चिन्ता में डालना, कठिन का
के बरने का साहम करना ।

प्रा० जोड़ } (सं० जोड़, जुड़=मि
जोड़ } लाना पु० जोड़ी, माथी
मय, बराबरी के, गु० बराबर ।

सं० जोड़ (जड़-बाँटना, मिलाना,
प० घेन मिलान, इकट्ठा, पीछान,
देखना, २ गाँव, मारि ।

प्रा० जोड़देना-बोल० गिनना,
हिमाव करना, पीछान देना, ठीक
करना, जोड़ना ।

प्रा० जोड़नोड़ बोल० बनावट,
तरत, हिकमत, जुगन, २ गाँव ।

प्रा० जोड़जाड़-बोल० बचन, पचा-
व, थोड़ा थोड़ाकरके इकट्ठा करना ।

प्रा० जोड़ना } (प० जुड़=मिलाना)
जोड़ना } क्रि० म० मिलाना,
इकट्ठा करना, २ गाँवना, घेगली

छगाना, पैवन्द लगाना, ३ गिनना,
हिमाव करना, पीछान देना, जोड़
देना, ४ बनाना, लगाना, चिपटा-
ना, साटना, पीछे लगा देना ।

प्रा० जोड़ा (सं० जुड़=जोड़ना) पु०

दो मनुष्य अथवा दो चीज, युग्म,
२ जूता, ३ कपड़े का जोड़ा ।

प्रा० जोतना—(सं० योजन; युज्
=मिलाना)क्रि० स० जुआमें छगाना,
रत्न जोतना, चासना ।

प्रा० जोति } (सं० उद्योति) स्त्री०
जोत } अमर, उजाला, प्रका-
श, किरन, तेज, दीप्ति, रोशनी,
दीपक का प्रकाश, २ दृष्टि, दीठ ।

प्रा० जोतिस्वरूप—(सं० उद्योतिः
स्वरूप) पु० आप-से प्रकाशित,
दीप्तिमान्, प्रकाशरूप, परमेश्वर
का गुण वा विशेषण ।

प्रा० जोतिष—(सं० उद्योतिष) पु०
ग्रह नक्षत्र आदि ज्ञान के शास्त्र ।

प्रा० जोतिषी } (सं० उद्योतिषिक)
जोतिषी } क० पु० जोतिष
विद्या ज्ञाननेवाला, जोषी, गणक,
दैवज्ञ, नक्षत्री ।

प्रा० जोती—स्त्री० तराजू के पलड़े
की रस्सी ।

प्रा० जोधा—(सं० योधा) पु० छ-
डाका, धीर, बहादुर, भट, जुझार ।

प्रा० जोना } क्रि० स० देखना,
जोवना } चितवना, ताकना ।

प्रा० जोवन—(सं० यौवन) पु० ज-
वान्, तरुणार्थ ।

प्रा० जोय } (सं० जायो) स्त्री० पत्नी,
जोरु } भार्या, स्त्री, लुगई ।

प्रा० जोरी } (सं० युज्=मिलना)
जोड़ी } स्त्री० जोड़ा, युगल,
युग्म-दो ।

सं० जोषित } (जुष=प्रसन्न करना,
जोषिता } प्रसन्न करना, स्त्री० नारी,
लुगई ।

प्रा० जोषी } (सं० उद्योतिषी) पु०
जोसी } उद्योतिषी, आसणों का
प्रकाशति ।

प्रा० जोहना—क्रि० स० बाट देवना,
बाट निहारना, अपेक्षा करना, दे-
खना, सोचना, हँसना ।

प्रा० जोही—पु० रोमी, हँसैया,
मुनजारी ।

प्रा० जौलें }
जौलंग } क्रि० वि० जलतक ।

प्रा० जौ—(सं० यव) पु० जव एक
प्रकार का अनाज ।

प्रा० जौन—(सं० यव वा यः जौ)
सर्वना० जो, जिस ।

प्रा० जौनार } (सं० जेवन) स्त्री०
जेवनार } भोजन, भोज, खाना,
उत्सव, अन्ने भाई यंत्र अथवा मिश्री
को खिलाना ।

सं० ज्ञात—(ज्ञा=ज्ञानना) मर्म० पु०
ज्ञाना हुआ, समझा हुआ, जाना
गया, विदित ।

सं० ज्ञाता—(ज्ञा=ज्ञानना) क० पु० ज-
नैया, वाक्कि ।

सं० ज्ञाति—(ज्ञा=ज्ञानना) पु० पिता,
बाप, २ सम्बन्धी, जातभाई ।

सं० ज्ञान—(ज्ञा=ज्ञानना) पु० जान-
ना, बोध, बुद्धि, समझ, विज्ञता ।

सं० ज्ञानवान् } (ज्ञान) गु० बुद्धि-
ज्ञानी } मान्. पण्डित, वि-
द्वान्, विज्ञ, विचारक.न् ।

सं० ज्ञानवापी—ज्ञान, बापी=बाव-
ली) स्त्री० एक बावली का नाम जो
बनारस में विश्वेश्वर के मन्दिर
में है ।

सं० ज्ञानेन्द्रिय—(ज्ञान+इन्द्रिय)
स्त्री० इन्द्रियां जिनसे देखने, न
सुंघने, स्वाद लेने और सूने दि-
का ज्ञान होता है अर्थात् आँख, कान,
नाक, भीम, त्वचा, अर्थात् शरीर
, पर का घमड़ा अन्तःकरण, मन ।

सं० ज्ञापक—(ज्ञप्=जानना) क० पु०
जतानेवाला, बतलानेवाला, आ-
हानेवाला ।

सं० ज्ञापन—(ज्ञप्+अन, ज्ञप्=जानना)
भा० पु० जानना, विदित करना,
२ निदेश, हुक्म ।

सं० ज्ञापित } अर्थ० पु० जानाहुआ,
ज्ञाप्य } जानने योग्य ।
ज्ञेय }

सं० ज्या—(ज्या=पुराना होना, या
बड़ा होना) स्त्री० मा, माना, २
पृथ्वी, परती, ३ पदपत्रा विज्ञा ।

सं० ज्येष्ठ—(वृद्ध, यहां वृद्ध को ज्या
आदेश होजाता है) गु० बड़ा प्र-
धान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा, पहलौठा ।

सं० ज्येष्ठा—(ज्या=बूढ़ा वा बड़ा वा
पुराना होना) स्त्री० अठारहवां न-
क्षत्र, २ चिचली अंगुली, ३ गंगा ।

सं० ज्येष्ठ—(ज्येष्ठा) पु० जेठ का मही-
ना जिसकी पूर्णमासी के दिन ज्ये-
ष्ठा नक्षत्र होता है और पूजा चाँद
इस नक्षत्र के पास रहता है ।

प्रा० ज्यों—क्रि० वि० जैसे ।

प्रा० ज्योंकात्यों—बोल० ठीक, वै-
साही, ठीक २ ।

सं० ज्योतिः—(ज्यु=चमकना) भा० स्त्री०
ज्योत, उजाला, प्रकाश, चमक, दीप्ति,
ममा ।

सं० ज्योतिरशास्त्र (ज्योतिस्+
शास्त्र) पु० ग्रहनक्षत्र आदिकी बाह्य
जानने का शास्त्र, ज्योतिष, तिथि,
वार, नक्षत्र, योग, करण आदि जा-
नने का शास्त्र, पंचाङ्गशास्त्र ।

सं० ज्योतिर्विद्—(ज्योतिः+विद्,
विद्=जानना) क० पु० ज्योतिषी,
नक्षत्री ।

सं० ज्योतिष—(ज्योतिः) पु० ज्योतिष
शास्त्र, ज्योतिरशास्त्र ।

सं० ज्योत्स्ना—(ज्यु=चमकना) स्त्री०
चाँदनी, चन्द्रिका, चाँदकी किरण ।

सं० ज्वर—(ज्वर=बीमार होना) पु०
तप, ताप, ज्वर ।

सं० ज्वराग्नि (ज्वर+अग्नि) पु०
तप की गरमी ।

सं० ज्वलन—(ज्वन्=जलना, चमकना) भा० स्त्री० जलन, तपन, दाह-
न भाग ।

सं० ज्वलित—(ज्वल्=चमकना) क०
पु० प्रकाशित, जलता हुआ ।

प्रा० ज्वार—स्त्री० एक प्रकार का
अनाज ।

सं० ज्वाला—(ज्वन्=चमकना) स्त्री०
आंच, लौ, लपट, लूका, चमक ।

सं० ज्वालामुखी (ज्वाला=आग
कालूरा, मुँह=मुँह) स्त्री० वह जगह
जहाँ से आग निकलती है, आग का
पहाड़, २. देवी, अम्बिका, दुर्गा ।

भक्त

सं० भक्त—पु० पृथ्वरति, २. इन्द्र, ३. शब्द
अग्नि, ४. नैषध, ५. भंकोर, ६
मिताग, ७. स्थिति ।

सं० भक्तार—(भक्त=प्रेमाशब्द, कृ=
करना) पु० भक्तारहट, भक्तना
होने का शब्द ।

प्रा० भक्तना—क्रि० अ० चढ़वड़ाना,
चढ़वड़ाना, टेंटे करना, घटना, २.
पहनाना, धिलपना ।

प्रा० भक्ताड़—पु० चिनचोका पेड़ ।

प्रा० भंगा } पु० भंगा, कुरता, ऊँ-
भंगा } पर पहननेका कपड़ा ।

प्रा० भंमट—पु० घराहट, भंगड़ा,
रगड़ा ।

प्रा० भंमनाना—(सं० भण्टकार,
भण्ट=पेसा शब्द, कृ=करना) क्रि०
अ० टनठनाना, वाजना ।

प्रा० भंमरी—स्त्री० जाली, भरोसा ।

प्रा० भंडा—पु० निशान, ध्वजा, पः
तावा, फरहा ।

प्रा० भंय }
भंय } स्त्री० मूर्च्छा ।

प्रा० भक्त—स्त्री० कोप, क्रोध, रिस,
सनक, २. लहर ।

प्रा० भक्तमारना—बोल० छपा का-
म करना, निरर्थक काम करना, यह
'बोल० दूसरे की हलवाई' जगाने
के लिये बोला जाता है ।

प्रा० भक्तभोरी—स्त्री० धीनाधीनी;
भपटा भपटी, सैबा सैबी, लूट
पाट ।

प्रा० भक्ताभक्त—पु० भलाभला,
जगामग, २. मुपरा, साक ।

प्रा० भक्तोरना—क्रि० स० हिलाना,
कंपाना, भक्तोरानेना, भोरा देना ।

प्रा० भक्कड़—(सं० भंकार) पु०
आंधी, चौवाई, शूषण, हवा का
बौदल ।

ट, मैना मैवी, २. लपक, डहल ।
 प्रा० भपटलेना—बोल० धीननेना ।
 प्रा० भपट्टा—बोल० धावा, चढाव,
 : लपक, ३. धीन, गसोट ।
 प्रा० भपट्टामारना—बोल० भपट
 लेना, धीनलेना ।
 प्रा० भपाभपो—खी० उतावली, द-
 दबड़ी ।
 प्रा० भपास—खी० फूरी, कुहार,
 भांभी, भड़ी ।
 प्रा० भव्वा—पु० फंडा, लटकन,
 गुच्छा ।
 सं० भम—(भम=माना) क० पु०
 भोक्ता, गानेशाष्टा, भोजन ।
 प्रा० भमभम } कि० वि० ल-
 भमाभम } गानार ।
 प्रा० भमभमाना—कि० अ० चम-
 कना, भलकना ।
 प्रा० भमरभमर—कि० रि० भुं-
 द से ।
 प्रा० भर—खी० भड़ी, मेहका लगा-
 तार बरसना, २. आंच, लूका ।
 प्रा० भरना—(सं० भरण) पु० मो-
 ता, चरपा, २. भरनी, कर्दनी,
 कि० अ० चूना, टपकना, बहना,
 जारी होना, २. भिरना (जैसे फल
 गले आदि) ।
 प्रा० भरोखा—पु० जाली, गिरकी
 मोला, दरीची ।

सं० भर्मरी—खी० बेरवा, पंतुरिया ।
 सं० भर्मरी—खी० रंगरी, डफुली ।
 प्रा० भल—(सं० उवल) खी० उवाला,
 २. कोप ।
 प्रा० भलक—खी० चमक, उवाला,
 जगमगाहट ।
 प्रा० भलकना—(सं० उवलन कि०
 अ० चमकना ।
 प्रा० भलकी—खी० चपरा, दमक,
 कटाव ।
 प्रा० भलभलाना—(सं० उवलन)
 कि० अ० चमकना, भलभल कर-
 ना, २. कोप करना, टीसना ।
 प्रा० भलभलाहट—खी० चपरा,
 भलक ।
 प्रा० भलना—कि० अ० भरकना,
 पैसा चलाना वा हांकना ।
 प्रा० भलाभल—(सं० उवलने)
 पु० चपरीला, जगमगा ।
 सं० भप—(भप=पारना) पु० मच्छ,
 मकरमच्छ, बड़ीमछली, पाठीन ।
 सं० भपकेतु—(भप = मकरमच्छ,
 केतु=भंडा अर्थात् जिसके भंडे पर
 मकर का चिह्न है) पु० कामदेव ।
 प्रा० भांकना—कि० सं० दिख-
 कर देसना, हांकना, निहारना,
 कमली से देखना ।

फा० कश=लौचना, मंगी, गिरतर,
इलालखोर ।

प्रा० भावा-पु० तेल नापने का
घराना, २ मुर्ग घेद करनेका टापा ।

प्रा० भारी-(सं०भर) स्त्री० मुराही
जिसकी माली लंबी होती है और
वससे एक टोही लगी रहती है ।

प्रा० भारी-पु० सध, समूह ।

प्रा० भाल-स्त्री० चढ़ाटोकरा, २ तेजी,
३ धातु के दूटे घराने को जोड़ना ।

प्रा० भालना-क्रि० सं० ओपना,
घोटना, २ जोड़ना ।

प्रा० भालर-स्त्री० किनारा, मून या
रेशमकी जाली ।

प्रा० भालरा-(सं०भर) पु० पानी
का पड़ा कुंड, भरना ।

प्रा० भिभक्तना-क्रि० प्र० चींटना,
भड़कना, दर सठना ।

प्रा० भिड़कना-क्रि० सं० धपकाना,
टराना, गुरकना, टाटना ।

प्रा० भिड़की-(भिड़कना) स्त्री०
पक्की, पुरकी, भिड़क ।

प्रा० भिन्नभिन्नी-स्त्री० सनसनाहट,
भनभनाहट, सनसनी जो हाथ पैर
सो जाते हैं तब पालम होती है ।

प्रा० भिलम-पु० लोहे की दुरती,
कड़ब, बालर ।

प्रा० भिलमिली-स्त्री० दरवाजे
की भँकरी, भिलमिल, जाली ।

प्रा० भिली-स्त्री० पतला चपड़ा
भिगुरी ।

प्रा० भीकना } क्रि० प्र० पड़ोसावा
भीखना } करना, रोना, हाथ
हाथ करना । [मदली ।

प्रा० भीगा-स्त्री० एक तरह की

प्रा० भीगुर-पु० एक प्रकार की
कीड़ा ।

प्रा० भीन } (सं० घीण) पु० पतला,
भीना } पतिल ।

प्रा० भील-स्त्री० सरोवर, सार,
जलाशय ।

प्रा० भीसी-स्त्री० फूँसी, कुहार,
भूषास, भूदी ।

प्रा० भुकना-क्रि० प्र० नचना,
निहुरना, नीचासिर करना, जैयना,
मणाम करना, सलाप करना, नीचे
लटक आना (जैसे हस्तकी डाली)
२ क्रोध करना, प्रोषित होना,
बिड़ना, जैसे "भुकी शानि भरहु
अरगानी" (रामायण) ।

प्रा० भुमलाना-क्रि० बिड़बिड़ा
होना, बिड़ना, ग्रासिपाना, भटपट
क्रोधित होना, क्रोध करना,
क्रोधित होना ।

प्रा० भूलांना (भू) क्रि० स०
भूलांना } भूलाकरना, भूला
कलङ्क लगाना, भूला उठाना ।

प्रा० भूलालना—(भू) क्रि० स०
भूलाकर दिवाना, भूला उठाना,
० उद्दिष्ट करना, कुछ ग्राहके छोड़
देना । [गाना ।

प्रा० भूलाभूलालना—बोल० कुछ

प्रा० भूलाभूलाभूलालना—बोल०
दिवानों उमड़े भूलाकर वा मामने
भूला उठाना ।

प्रा० भूला-१० मधुर, भीड़पाड़, दल,
गूर, दूध ० देहों की भूला ।

प्रा० भूलाभूला-१० बालकों का
पढ़ सिखाना ।

प्रा० भूलाभूला-बोल० गूर, लुग ।

प्रा० भूलाका } १० देही, कर्मभूला,
भूलाका } २ बलों का वा क
लों का गुण, ० पढ़ कल का
नय । [कलना, ० भूला ।

प्रा० भूला-क्रि० अ० भूलाका ।

प्रा० भूला-भोल० बूला, बूला ।

प्रा० भूलाभूला भोल० भूला-बूला ।
क्रि० अ० भूलाका, भूलाभूला ।

प्रा० भूलाभूला-क्रि० अ० भूलाका,
भूलाभूला, भूला देना, ० भूलाभूला ।

प्रा० भूलाभूला-भोल० भूलाभूलाभूला,
भूला ।

प्रा० भूला (भोल० भूलाभूलाभूला)
भूला ।

गु० भूला, सी० उद्दिष्ट, खाने के
पीछे बचा खाना ।

प्रा० भूला-सी० भूला, भूलाभूला ।

प्रा० भूलाभूला-बोल० भूला, भूलाभूला,
भूला ।

प्रा० भूला- (भूला) गु० भूला बो-
लनेवाला, भूलाभूला, २ भूला
गाना, गाने के पीछे बचा हुआ
खाना । [खाना ।

प्रा० भूलाभूला-बोल० भूला

प्रा० भूलाभूला-क्रि० अ० भूलाभूला,
भूलाभूला, २ उंचा, सिरको उंचा
नीचा गुमाना, २ वादलों का घिर
खाना ।

प्रा० भूलाभूला-बोल० वादलों का
उभड़ना ।

प्रा० भूलाभूला-भोल० भूलाभूला (क्रि० स०
भूलाभूला भूलाभूला करना, भूलाभूला, २
पढ़ न कल भूलाभूला, क्रि० अ०
० भूलाभूला, किसी की वाद में शोध
करना, कलभूला, भूलाभूला ।

प्रा० भूलाभूला-भोल० भूलाभूला के भूलाभूला
वा भूलाभूला का भूलाभूला, भूलाभूला ।

प्रा० भूलाभूला-भोल० भूलाभूला, भूलाभूला
भूलाभूला) क्रि० अ० भूलाभूला, भूलाभूला-
भूला, भूलाभूला, २ पढ़ भूलाभूला की
भूलाभूला ।

प्रा० भूलाभूला-भोल० भूलाभूला, भूलाभूला-
भूलाभूला) २ भूलाभूला, भूलाभूला, भूलाभूला ।

वद मनें

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

वद

ला, एक रस्सी जिसपर झूलते हैं ।

प्रा० भूसी-पु० फूरी, फुहार, भौंसी,

२ इलाहाबादके सामने एक शहर जिसको पहले मनिष्ठानपुर कहते थे और चंद्रवंशियोंकी राजधानीया।

प्रा० भौंक-श्री० डकल; झूलने में

दहेनना, २ हवाका भौंका ।

प्रा० भौंकदेना-बोल० आग में

पुवालडालना, मलाना, जलादेना,

२ घुल फेरना वा डालना, ३ फेंक देना, किसीको नोतापमें डालना।

प्रा० भौंकना-क्रि० स० डालना,

फेंकना, पुसेदना, घुस्ने में डूबना डालना ।

प्रा० भौंटा-(मं० जय) पु० सिरके

विक्ले बाल, चोटी, २ दिहले का भौंटा ।

प्रा० भौंकादेना-बोल० किसीका

सिर धपरा सिर के बाल पर द कर कोरमें दिखाना ।

प्रा० भौंपड़ा-पु० } मरी, कुी
भौंपड़ी-श्री० } मटिया ।

प्रा० भौंरा-पु० गन का गुच्छा ।

प्रा० भौंका-पु० भौंरा, हवा की

भौंर, होहर, देस ।

प्रा० भौंटा } (मं० उच्छिष्ट) गु०
भौंटा } माने के बड़े बड़ा

हुआ जाना ।

प्रा० भौंला-पु० अर्द्धांग, लकवा, २ पैला ।

प्रा० भौली-श्री० कोयली पैली ।

प्रा० भौंरा-गु० गेहूंवरण, सांवला ।

प्रा० भौंड-पु० भगड़ा, बलेड़ा, टेंटा ।

मं० ट-पु० बायन, शब्दः, अवि, अ०

न्द्रपा, गान, रुद्र, भंकरा, हडावरपा ।

प्रा० टंकना-क्रि० अ० सिपागाना,

लगाया जाना, लटकना, लगना ।

प्रा० टंगना-क्रि० अ० लटकना ।

प्रा० टंगड़ा } (टङ्गा, टकि=बांध
टंगरी } ना) श्री० पिहली ।

गोद, पैर का एकभाग ।

प्रा० टेंग-पु० भगड़ा, लड़ाई, बलेड़ा,

रगड़ा ।

प्रा० टक-गो० स्वभाव, रत्नाकर, रटि ।

प्रा० टकवांधना-बोल० ताकना,

पूरना ।

प्रा० टकलगाना-बोल० वाट

देखना ।

प्रा० टकटकी-श्री०, गहर, गहर, गहर ।

प्रा० टकटकीवांधना-बोल० ता-

कना, पूरना, एक टक देखना ।

प्रा० टकराना-(टकर) क्रि० स०

-टकर मिलाना, टकर देना ।

प्रा० टकनाल-(मं० टकराला,

टह=भिरक, शाला=मरह) श्री०

मुद्रानिप, वह जगह जहाँ सिद्धा
नैवार होता है ।

प्रा० टकसालकासोटा—बोल०
गिज्ञा अथवा उपदेश में बिगड़ा
हुआ ।

प्रा० टकसालचढ़ना—बोल० शिज्ञा
पान, उपदेशगाना, मित्रापाजाना ।

प्रा० टकमानवाह—भं० अतगद,
गुनद, अतगद, ० गोरा, गगाव ।

प्रा० टका—(सं० टक=मित्र) पु०
हो पैग ।

प्रा० टकुआ } (सं० तकु, कृत्
टकुआ } अटाना) पु० तक-
ना, तकुआ, किरी ।

प्रा० टकोर—श्री० दोन का गहर,
धुने, वा० नुपहार ।

प्रा० टकर—श्री० बहा, दोहर, केला-
बेला, रेहा, दहेल, भोद, देम ।

प्रा० टकरमाना—बोल० दोहर
माना, हिमी भीत में बिदवाना,
दुःखमें गिझा, टकरमानउठाना ।

प्रा० टकरमाना—बोल० बहा ल-
माना, दोहर माना, दहेलना,
बेलना, गदहना, देम माना ।

प्रा० टकुना—पु० देवता, गुरु, गुरी ।

सं० टकु—(टिक=कंधा) श्री० टांड,
बागमोहा दोन, अंही, डेरी,
पन्ना काटने का भीड़ान, ३ जल-
वाह, टुंटे, ३ अहंदाह, दमुराणा,
० मारी ।

सं० टंककशाला—(टंक=टकरा,
शाला=मकान) श्री० टकशाल,
कपड़े बनाने का घर ।

सं० टंक—पु० रानिप, संता, सुरपा,
फरहा, टांकी, तनवारका मियान ।

सं० टंकार—' टम्=ऐसा शब्द, कृ=
करना) पु० धनुष के निक्षेप का श-
ब्द, २ अवंधा, ३ नामनरी ।

प्रा० टुका—पु० नया, ताता, मुनि
का । [येरा, वेद ।

प्रा० टुड़ी—श्री० चांदी, टांड, २

प्रा० टुगुजिया—पु० थोड़ी धनी
बाना, दिवालिया । [थोड़ी ।

प्रा० टुगानी—(टुग) श्री० छोटी

प्रा० टुगेलना—श्री० स० दोषा-
दोई करना, दोना, छूने में दूँवना
(जैसे अंग्रेजों को दूँवने हैं) । [भांग ।

प्रा० टुगुर—पु० बड़ी दही, दही,

प्रा० टुगु—श्री० दहिया, चटई का
बना हुआ छोटा दहर, भोट, आड़,
(दही समान की और दूध
आदि की भी बनती है, ' गकार
की दही की छोटा बनना = 'दे । के
करना, पान में रचना ।

प्रा० टुगु—पु० शंख, गहड़ी पोड़ा ।

प्रा० टुकना—पु० पढ़ना, गिरा
दना, घुना ।

प्रा० टुका—पु० पानी का पैर,
२ बड़े कन का गिझा ।

प्रा० टपना—क्रि० स० नांघना, फांदना, झूटना ।

प्रा० टपाना—क्रि० स० नैयवाना, कुरवाना ।

प्रा० टप्पा—पु० दाऊ का घर, दाऊराना, २ एकपक्षर का भीन अथवा रागिणी, ३ गेद अथवा गोली का उछालना, ४ कूद, उछल ।

प्रा० टप्पाखाना—शोल० गोली अथवा गेद का उछलना दूमाना ।

प्रा० टरना } (सं० टल्=टपानाकुल
टलना) होना वा गवाना)

क्रि० अ० टटना, सरकना, चंचल होना, चनेजाना, टवहरना, लौट पौट जाना, अस्थिर होना ।

प्रा० टर्ना—पु० पगारा, दुष्ट, २ बक्री, ३ जोरावर ।

प्रा० टर्ना—क्रि० स० टेंटे करना, चक्कर करना, बिड़बिड़ाना ।

सं० टलन—(टल=पववाना) भा० पु० चंचल होना, शोक, उलझ पलट ।

प्रा० टसक—स्त्री० टीस, पीड़ा, कष्ट रागा ।

प्रा० टसकना—क्रि० अ० हिलना, चनना, सरकना, उरसना, २ कराना । [डाली ।

प्रा० टहनी—स्त्री० डाली, छोटी

प्रा० टहल } स्त्री० घर का काम
टहलटकोर } कान, सेवा, नौकरी,

दास का काम । [सेवा करना ।

प्रा० टहलटकोर करना—शोल०

प्रा० टहलना—क्रि० अ० फिरना, चलना, हवा खानेको बाहरजाना ।

प्रा० टहलनी } (टहल) स्त्री० घर
टहलनी } का काम । काम करने वाली, दासी ।

प्रा० टहलवा (टहल) पु० घर का काम काम करने वाला, दास, सेवक, नौकर, चाकर ।

प्रा० टांक—(सं० टङ्क) स्त्री० 'घार भागे वा नोल, २ एक तरह की सुई, ३ सीवन ।

प्रा० टांकना—क्रि० स० सीना, टांका धारना, नुराना ।

प्रा० टांका—पु० सीवन, टांक, जोड़ना ।

प्रा० टांके लगाना—शोल० सीना, जोड़ना ।

प्रा० टांकी—(सं० टङ्क) स्त्री० रुखानी, छिनी, २ नामूर, फोड़ा, रस्सूते का चौकोर टुकड़ा जो वस्त्रको अच्छा बुरा देखने के लिये काटा जाता है ।

प्रा० टांग—(सं० टङ्क) स्त्री० टेंगड़ी, पिडली, गोड़ ।

प्रा० टांगन—पु० पहाड़ी पोड़े की एकजात ।

प्रा० टांगना-क्रि० स० लटकाना ।

प्रा० टांट-स्त्री० चांदी, टट्टी, सिर
का बिचला भाग ।

प्रा० टांडा-पु० जेप, बनजारे की
चीम वस्तु ।

अ० टाउनहाल=सभास्थान, मज-
निस, टाकार ।

प्रा० टाट-पु० मन का कपड़ा, म-
नाइ । [आइ ।

प्रा० टाटी-स्त्री० टट्टी, टटिया, भाप,

प्रा० टाप-स्त्री० थोड़े के अगले पैर
का आइट, चलने में थोड़े के गुर
का झट, = मछली पकड़ने के लि-
ये धाम का बना हुआ टांवा ।

प्रा० टापू-पु० पानी का वह टुकड़ा
जो चारों ओर पानी में विश-
ष्ट हो, उपद्वीप ।

प्रा० टारना } टारना) क०
टालना } सं० हथाना, सभ-
ना, दूरकरना, २ पशाना करना,
देरी डरना, डोल करना ।

प्रा० टालटोल } धीन० बहाना,
टालमटोल } धन, डोलनाच,
वचनमट, धीन युवाव, लपेट
सपेट, बनवट ।

प्रा० टाल-पु० बहाना, टाल टोल,
टालमटोल, = स्त्री० देर (अनाज
वा लड्डो आदि का) नूदा, धंका-

-र, अटाल, मूखी घास का गुंज ।

प्रा० टाला-पु० टालमटोल, धोल
युमाव, बनावट, लपेट सपेट, २ देर,
नूदा, गुंज, टाल ।

प्रा० टालावाला बताना—धोल०
टालना, धोलयुमाव करना, टालम-
टाल बनाना, टालटोल करना ।

प्रा० टिकटिकी—स्त्री० टिकटकी,
झिपकली ।

प्रा० टिकटी-स्त्री० तिपाई, तिगुंटी ।

प्रा० टिकना—क्रि० अ० रहना,
उठरना, बसना, मुकामहरना ।

प्रा० टिकली—पु० बंदी, बिन्दु,
२ पनली रोटी । [उठराना ।

प्रा० टिकाना—क्रि० स० रगटना,

प्रा० टिकिया—स्त्री० कोपने की
गोल गोल टिकसी, २ पनली और
आदी रोटी ।

प्रा० टिकड़-पु० पोटी रोटी ।

प्रा० टिरीहरी—(सं० टिट्टिम) स्त्री०
एक पक्षी का नाम ।

सं० टिट्टिम—(टिट्टि ऐना शब्द,
भाप=बोलना) पु० टिट्टीहरी, एक
पक्षी का नाम ।

प्रा० टिडा—पु० फनगा, पनगा ।

प्रा० टिडी-स्त्री० मूत्रप, जनान को
नाग करनेवाला कीड़ा ।

प्रा० टिपन—(टिप=फेंकना) स्त्री०

मं० टिपनी } टीका, विवरण,

व्याख्या, अर्थ, टिप्पणी, शब्द ।
 प्रा० टिहरा-पु० पुरा, पुरवा, छोटी
 बरनी ।

प्रा० टीक-स्त्री० गलेका एक मारना ।

सं० टीका-(टीक=नाना) स्त्री०
 शब्द, टिप्पणी, विवरण, कठिन
 शब्दोंके अर्थ और गूढ़मभिप्रायको
 अच्छी तरह से समझाना ।

प्रा० टीका-(सं० तिलक) पु०
 तिलक, छलाट पर चन्दन केशर
 आदिका चिह्न, २ त्रिषो के ललाट
 पर पहननेका एक मुकुटका गरनी,
 ३ व्यासमें दुलहिन के परसे जो भेट
 जाती है ४ गोटी का मुदबाना,
 छाया ।

प्रा० टीकाभेजना-बोल० व्यास के
 शुरुआत में दुलहिन के घर से दुलहे
 के घरमें बसराया नाचपन आदि
 भेट भेजना ।

प्रा० टीकालेना-बोल० व्यास की
 भेटकी लेना वा प्रारम्भ करना वा
 स्वीकार करना ।

प्रा० टीडी-स्त्री० टिडी, शुरुआत ।

प्रा० टीप-स्त्री० टिप्पणी, चोखे का
 समस्त एक निममें मूल और व्यास
 के साथीके पल्ले कमनार अनाम
 आदि निम्न देनेको इलाज देने है,
 २ जाने में राग की ऊँची लेजाना ।

३ जल्दी में कोई बात छिरालेना
 वा अटका लेना वा टांक लेना,
 ४ दबाव, दबावट । [परादी ।

प्रा० टीला-पु० मेढ़, कंची परती,
 प्रा० टीस-स्त्री० पीड़ा, टपक, टप-
 था, थकन । [रोना ।

प्रा० टीसमारना-बोल० पीड़ा

प्रा० टुक-(सं० स्तोक, टुप=मसम
 होना) पु० थोड़ा, कम, कमरा, ज-
 रा, जरासा ।

प्रा० टुकड़ा } (सं० स्तोक, टुप=
 टुक } मसम होना) पु०
 संद, भाग, हिस्सा, बिट, भंश,
 परमाणु ।

प्रा० टुमा-पु० पोष, ओढ़ा, पेहना, धारी ।

प्रा० टुंड-पु० टुंडा, काटा हुआ अंग ।

प्रा० टुंडी } (सं० तुन्दि, टुद=पीड़ा
 टुंडी } देना) स्त्री० नाभि, ताँदी,
 गु० बिन राख बी ।

प्रा० टुंडियांकसना } बोल० पीड़
 टुंडियाँचदाना } पीछे हाथों
 टुंडियाँवांधना } धी बांधना,
 मुमके बांधना ।

प्रा० टुमकना-प्रि० च० रोना,
 चिनगना, मुमकना ।

प्रा० टुट-(टुटना, सं० कुटि) स्त्री०
 टुटन, टुटन, गेटन, टोटा, बड़ी,
 शक्ति, मुहमान, ३ कोई बात जो

पुष्कर के लगाने में धन से लूट जातो है और हाशिये पर पीछे से लिमी जाती है ।

प्रा० टूटना—(सं० घोटन, टुट=काटना) क्रि० अ० टुकड़ा होना, फूटना, फटना, २ चटन, चटाई करना, धावा करना ।

प्रा० टूटा—(टूटना) गु० टूटा हुआ, टूटा हुआ, पु० टोटा, कमी, हानि, गुरुमान, घटी ।

प्रा० टूटाटूटा—बोल० टुकड़े २ संस्तर ।

प्रा० टूमी—बोल० कमी, कौमल ।

प्रा० टूट-पु० कमील का फल, क-
रामका फल, कलामका फल, आं-
ना की कुटी ।

प्रा० टूटवा—पु० मांगी, नरेदी, नरी ।

प्रा० टूट-पु० बेव, डिगिहनाइट ।

प्रा० टूक-म० श्री० धुनी, दिवार ।
महार, कबलठ, टहन, मरमा,
रेंद, २ बग, मनित्र, इत, संकल्प ।

प्रा० टूकी—गु० मनित्रगलक, धान,
का दूग दमेकला, बानका घनी ।

प्रा० टूकग—पु० टीजा, अनीधानी ।

प्रा० टूटा—गु० बर, बांछा, निरवा,
मच्छा, रेवा ।

प्रा० टूटाकम्मा—बोल० भुङ्गना,
कांछा करना, निरवा करना ।

प्रा० टूटावेदा—बोल० देवा, कांछा,
भुङ्गना ।

प्रा० टेम-श्री० बत्तीकी मजलन वा फूल ।

प्रा० टेम—गु० लप, स्वर, तान, ता-
ल, गग, २ पुकार, हांर, फर्पादि
पुकार ।

प्रा० टेमना—क्रि० म० पुकारना, लल-
कारना, बुलाना, हांकारना,
भलाना ।

प्रा० टेव—श्री० चान चलन, रीति,
चात, स्वभाव, आदत, चाट, चरका ।

प्रा० टेवकी—श्री० धुनी, संभा, टेक,
टेहन ।

प्रा० टेवना } क्रि० म० तीला क-
टेना } रना, बांछा करना,
चाइदेना, धार लगाना, पैनाना ।

प्रा० टेवा—पु० मन्मथी, २ टेव,
स्वभाव, चाट, चरका ।

प्रा० टेम्—पु० गनाश का फूल, टेम्,
२ एक महार का लेन ।

प्रा० टेहला—पु० दवाइकी एकरीनि ।

प्रा० टेवाटेई—श्री० टोलेना, हूँद ।

प्रा० टोंटा—पु० गदगना, मुरी, बाम
की गांठ, २ कारतूम, गु० मिमडा
हाथ टूटा हुआ हो ।

प्रा० टोंटी—बोल० नती, नत ।

प्रा० टोक—(टोकना) श्री० संक,
बहाव, यटहाव, २ बुरीरशि,
नम, दीड ।

प्रा० टोकना—क्रि० म० रोटना,
२ पूरना, २ हाइ करना, ४

नजर से देखना, दीड छगाना ।

प्रा० टोकरा—पु० टला, साँचा, बही,
टोकरा, छटवा, पलड़ा ।

प्रा० टोकरा—स्त्री० टालिया, पलड़ी,
सचिया ।

प्रा० टोटका—पु० मंत्र, यंत्र, गंधा,
ताबीज, टोना, मोहन, लटका,
बशीकरण ।

प्रा० टोटा—पु० घटी, पाटा, कभी,
नुकसान, टोटा, कारनूम ।

प्रा० टोड़ी—स्त्री० एकगणिकानामा ।

प्रा० टोना—पु० मोहन, टोटका, जादू,
सेरर, लटका, क्रि० स० टटोलना ।

प्रा० टोनादानी } बोल० मन्त्र, यंत्र,
टोनादामन } टोना, टोटका ।

प्रा० टोप—पु० बँड़ी टोपी, २ टोका,
सीपन ।

प्रा० टोपा—पु० टोप, शिरका टकना ।
[ता टकना ।

प्रा० टोपी—स्त्री० छोटा टोप, शिर

प्रा० टोल—पु० } योक, झुण्ड,
टोली—स्त्री० } जत्था, मप्रा, टट ।

प्रा० टोला—पु० मरवा, लंड, शहर
का एक हिस्सा, [ता टकना ।

अं० ट्यम्परेन्स—मुसापटी=आम्प-
रेन्स=पवित्र, पररेजगार, मुसाप-

टी=समूह, जपानन । [विद्वान् ।

अं० टूटा—विरवस्त, मुष्णपिद, जात
अं० टूई—दोगिश, दयोग, परिधम,
बेष्टा ।

अं० ट्रेडप्रेसोसियेशन—सौदागरों
की कमेटी ।

प्रा० ट्रेन्सलेटर—पु० मुतराजिम,
अनुवादक, उल्था करनेवाला ।

उ

सं० उ—पु० शिव, २ चंद्रविम्ब, ३
मंडल, ४ शून्य, ५ धरापुंति, ६
शक्ति, ७ जनेसमूह । [शब्द ।

प्रा० उकउक—पु० कठिन काम, २
प्रा० उकउकाना—क्रि० स० ठोंक-

ना, लट २ करना, कूटना, मारना ।

प्रा० ठकुर—(सं० ठकुर) पु० ठाकुर
शब्द को देखो ।

प्रा० ठकुराई—(सं० ठकुरा) भा०
स्त्री० ईश्वरता, प्रपानता, म्वाभीपन,
बढ़पन ।

प्रा० ठग—पु० ठगनेवाला, चट्टमार,
चोर, दगाबाज, बहकानेवाला,

झूठी, कपटी ।

प्रा० ठगवाजी } स्त्री० बोल०
ठगविद्या } ठगई, कपट,
झल, माथा ।

प्रा० ठगलाना—बोल० ठगना, छलना,
धोखा देना, बहका के लेनेना ।

प्रा० ठगलेना—बोल० छलना, धोखा
देना, छल से लेना ।

प्रा० ठगई—(ठग) भा० स्त्री० ठगई,
ठग का काम, झल, धोखा ।

उग का काम, झल, धोखा ।

प्रा० ठगना-क्रि० स० छलना, भु-
लावादेना, धोखादेना, बहकांना ।

प्रा० ठगाई-(ठग)मा० स्त्री० ठगाई, ब-
ल, धोखा ।

प्रा० ठगौरी-(ठग) स्त्री० ठगाई,
मुलावा, माया, छल, धोखा ।

प्रा० ठट्टा पु० भीड़भाड़, झुण्ड,
ठउ } मंडली, समूह ।

प्रा० ठट्टा-पु० हँसी, ठठोली, खिल्ली,
चुहल ।

प्रा० ठट्टाकरना-बोल० हँसीकरना,
ठठोलीकरना, हँसना, उपहासकरना,
मसखरापन ।

प्रा० ठट्टेवाज-बोल० गु० ठठोल,
हँसोड़, रसिक, मसखरा ।

प्रा० ठट्टेवाजी-बोल० स्त्री० ठट्टा
करना, हँसोड़पन, लेल, खिल्ली ।

प्रा० ठट्टामारना-बोल० हँसीकरना
ठठोलीकरना, हँसना, उपहास
करना ।

प्रा० ठठरी-स्त्री० ठट्टा, ठाठ, २ र-
थी, ३ टांचा, पांजर, अस्थि, पांजर,
इष्टियों का टांचा, बहुत दुबला
मनुष्य ।

प्रा० ठठकना-क्रि० अ० रुकना,
ठहरना, हटना, खड़ा, रहमाना, अ-
धेधे में खड़ा रहमाना, झुझकना,
रिचरना, चिड़कना ।

प्रा० ठठाना-क्रि० स० मारना,
पीटना, कूटना, २ दुस्त्र में अपना
सिर पीटना, ३ अपने को दुस्त्र में
ढालना ।

प्रा० ठठेरा-पु० कसेरा, मर्तिषा ।

प्रा० ठठोर } गु० हँसोड़, रसिक,
ठठोल } ठट्टेवाज ।

प्रा० ठठोली-स्त्री० ठट्टा, हँसी, खिल्ली,
हंसी । [शीतकाल]

प्रा० ठठट्ट-स्त्री० गाढ़ा, सर्दी, शीत,

प्रा० ठठट्टक-स्त्री० ठट्टाई, शीतलता ।

प्रा० ठठट्टा-गु० शीतल, सर्द ।

प्रा० कलेजाठठट्टाकरना-बोल०
मसख होना, अपने मित्र अथवा वे-
टा आदिको देखने से आनंद में हो-
ना, २ बदला छेमे से मन मसख
होना ।

प्रा० ठठट्टाकरना-बोल० शीतल
करना, सर्द करना, २ बुझाना, बु-
ताना (जैसे आग) ३ शांत करना
स्थिर करना, धीरज देना, दिलास
देना ।

प्रा० ठठट्टापरना-बोल० कमहोना
घटना (जैसे क्रोध, पीरुप, चंचलता
इत का) ।

प्रा० ठठट्टाहोना-बोल० सर्द होना
शीतल होना, २ बुझना, बुतना
३ शांत होना, धीरज घटना, स्थिर
होना ।

उएदाई—स्त्री० वंदी औपप,
(जैसे सौंफ कामनी आदि) २
भंग, ३ सदी, शीतलता ।

प्रा० उएदीसांसभरना—बोल० हाथ
मारना, आइ भरना, लंबी सांस
लेना ।

प्रा० उनकना—क्रि० अ० टीसना,
टीस मारना, शिर में दर्द होना, २
भनकना, भंभनाना, उनउनाना ।

प्रा० उनउनाना—क्रि० अ० भन-
भनाना, भनकना, उनकना ।

प्रा० उनाक—पु० भनकार, भनभ-
नाइत, उनकार ।

प्रा० उप्पा—पु० छापने की चीज,
छापा, मोहर ।

प्रा० उरक } पु० खर्चा, पुरा ।
उरर }

प्रा० उरिया—पु० एक उररका मिट्टी
का हुका ।

प्रा० ठवनि—स्त्री० चाल ।

प्रा० ठसक—स्त्री० भड़क, झेलपन,
अईकार, भूमशाम ।

प्रा० ठस्सा—पु० छांचा, डांचा, २
अईकार, घमंड ।

प्रा० ठहरना—(सं० छा=ठहरना)
क्रि० अ० ठिकना, रहना, बसना,
सड़ा रहना, रुकना, अटकना,
उतरना, ठराकरना, ठिकनाहोना,
निर्णय होना, निश्चित होना, सिद्ध

होना, पक्का होना, दृढ़ होना,
निपटना ।

प्रा० ठहरना—(ठहरना) क्रि० सं०
ठिकाना, रखना, सड़ा करना,
रुकना, अटकना, उतरना, ठेरा
देना, निर्णय करना, सिद्ध करना,
ठिकाना करना, पक्का करना, निप-
टना, दृढ़ करना, निश्चित करना,
नियम करना, ठानना, विचारना,
लगाना ।

प्रा० ठहराव—(ठहरना) भा० पु०
ठिकाव, स्थापन, निर्णय, निश्चय ।

प्रा० ठां } (सं० स्थान) पु० स्त्री०
ठांव } ठौर, जगह, ठिकाना,
ठाम } स्थान, स्थल ।

प्रा० ठांसना } क्रि० सं० दया
ठासना } दवा के भरना, घुसे-
रना, दूसना, दबाना ।

प्रा० ठाकुर—(सं० ठकुर देवता की
मूर्ति और प्रतिष्ठित पदवी) पु०
देवता, ईश्वर, २ देवता की मूर्ति,
३ स्वामी, मालिक, प्रधान, प्रभु,
नाथ, नायक, मुखिया (राजपूतों
में) ४ जमीनदार, ५ मोई ।

प्रा० ठाकुरद्वारा—(सं० ठाकुरद्वार)
पु० मन्दिर, देवालय, देवस्थान ।

प्रा० ठाकुरवाड़ी—(सं० ठाकुरवाडी)
स्त्री० मन्दिर, देवालय, ठाकुरद्वारा ।

प्रा० ठाठ—पु० ठठरी, २ तैयारी,

० तापक - (तप + क, क० पु० दुः-

खदोषी, दुःखद, दुःसदाता ।

सं० तापित - (ताप + इत) क्म० पु०

दुःखित, तापयुक्त । तिहाल ।

प्रा० तापतिस्त्री - स्त्री० श्रीर, पिलरी,

प्रा० तापना - (सं० तापन, तप=व-

पाना) क्म० अ० गर्मना, देह से-

कना, शरीर गर्म करना, जादे में

भाग के पास बैठकर देह को गर्माना,

घाम खाना ।

सं० तापस - (तपस्=तप) पु० तपसी,

तपस्वी, तप करनेवाला, योगी ।

प्रा० तामड़ा - (सं० ताम्र) पु० ताँवे

जैसे रंग का एक इलकेमोलकारतन ।

सं० तामरस - (तामर=शानी, ताम्=

सोना) पु० कमल, कैवल, २ ताँवा

का सोना ।

सं० तामस - (तमस्=तमोगुण, वा

अंधेरा) गु० तमोगुणी, तामसी,

क्रोध मोह आदि में लगा हुआ,

पु० अंधेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट, ४

अहंकार, क्रोध मोह आदि ।

प्रा० तामसी - (सं० तामसिक) गु०

क्रोध, तमोगुणी, रिस करनेवाला ।

प्रा० तामेश्वर - (सं० ताम्रेश्वर,

ताम्र + ईश्वर) पु० ताँवे की राम,

ताम्र, घंग ।

सं० ताम्बूल - (तम्=चाहना) पु०

पान, नागरवेल का पत्ता ।

सं० ताम्बूली } पु० तमोली, पान

ताम्बूलिक } बेचनेवाला ।

सं० ताम्र - (तम्=चाहना) पु० ताँवा,

२ लाछरंग ।

सं० ताम्रकार } क० पु० ठेरा, ताँ-

ताम्रकुट्टक } वा पीटनेवाला ।

फ्रा० तार - पु० लोहे आदि धातु का

विचाहूआ तागा जो सितार आदि

बाजों में लगाया जाता है, -तार

बांधना, बोल० किसी काम की

लगातार जारी रखना, -तार दु-

टना, बोल० अलग हो जाना, छूट

जाना, किसी काम का खंड हो जाना ।

सं० तारक - (तृ=पारकरना, वा घ-

वाना) क० पु० पनानेवाला,

रत्नक, उद्धार करनेवाला, पु०

एक शस्त्र का नाम, २ एक प्रकार

का मन्त्र, ३ तारा, सितारा, नक्षत्र,

४ आत्मका तारा, पुतली, पनाविक ।

सं० तारण - (तृ=पारकरना, पवाना)

गु० पार करनेवाला, पु० उद्धार,

पार करना, २ घरना, वेड़ा ।

सं० तारणतरण - (तृ=पार करना)

गु० पार करनेवाला, और पार

होनेवाला ।

प्रा० तारणा } (सं० तारण) क्म०

तारना } स०

रस तिम में नशा होना है, २ नशा
के मूड ।

मं० ताड़ित—(तर + इत) = पु०
काग गया, पीटा गया ।

मं० ताड़्यमान—रूपे० पु० मारने
वाला, पीटने वाला ।

मं० तागद्वय—(११२ एक पक्षि का
नाम जिसने पहले पक्षी इमाना हो
विहारा और गिनताया, वा यदि
नहीं तो १०० पक्षीयों और उनके ग
नों का नाम, २ पुष्पों का नाम, जैसे
'तुलसी' का वह दो फूलों का वृक्ष जिसका
पुष्प 'तुलसी' इन्द्रिय, मूलविशेष ।

मं० तान—(तन् = फैलाना) अनेक वस्तु
को फैलाना । पु० तान = ताना
देना = ताना पाना = ताना देना । तान
का अर्थ है ताना पाना । तान का अर्थ है
ताना देना । तान का अर्थ है ताना देना ।
तान का अर्थ है ताना देना । तान का अर्थ है
ताना देना । तान का अर्थ है ताना देना ।
तान का अर्थ है ताना देना । तान का अर्थ है
ताना देना । तान का अर्थ है ताना देना ।
तान का अर्थ है ताना देना । तान का अर्थ है
ताना देना । तान का अर्थ है ताना देना ।

मं० तान (मं० तान) मं० तान
ताना) तान ।

मं० ताननी—मं० ताननी ।
ताननी—मं० ताननी ।

मं० ताने (मं० ताने) ताने ।
ताने) ताने ।

सं० तात्कालिक—(तत्काल) पु०
उभी दबका, उसी समय का ।

सं० तात्पर्य—(तत्पर) पु० अभिप्राय,
आशय, अर्थ, मतलब ।

सं० तादर्थ्य—पु० तिसके लिये, तिस
के अर्थ, निमित्त ।

सं० तादृश—(तद् = वह, दृश = देराना)
वैसाही, उसी के परावर, उसी के
समान, उगका सा ।

सं० तान—(तन् = फैलाना) श्री० राग
का उच्चारण, स्वर, राग, तान ।

प्रा० तानतोड़ना—बोल० टूट्टा मान
ना, तान पूरी करना ।

प्रा० ताना (मं० तन् = फैलाना) पु०
ताना । तानने, की कलापरमका
फैलाना, ताना मूल, तानी ।

प्रा० ताना (मं० तान, वा तानन,
तानना) तान = तानन) प्रा० मं०
तान देना, तान देना, तानना ।

मं० तान्विक—(तन् =) पु० तान
का अर्थ है ताननेवाला, फैलाना ।

प्रा० ताना—(मं० तानन, तन् = फैला
ना) । तान मं० फैलाना, तानना,
तानना, तानना, तानना, तानना देना
तानना ।

मं० ताप—(ता = गर्म होना) पु० ता
प, २ दृष्ट, पीड़ा, यन्त्राण, ३ श्रेय,
द्विष्ट, मोह, मोह, तदार्थ, मोह
ता, ताप, ता ।

सं० तापक-(तप्+अक, क० पु० दुः-
सदायी, दुःखद, दुःखदाता ।

सं० तापित-(ताप्+इत, म्ये० पु०
दुःखित, तापयुक्त । तिराह ।

शा० तापतिस्त्री-स्त्री० स्त्री, पितृही,

शा० तापना-(सं० तापन, तप्=त-
पाना) क्ति० क० गर्भिणी, देह से-
रचना, शरीर गर्म करना, जाड़े में
आग के पास बैठकर देह को गर्मना,
पाम ग्याना ।

सं० तापस-(तपस्=तप) पु० तपसी,
तपस्वी, तप करनेवाला, योगी ।

प्रा० तामड़ा-(सं० ताम्र) पु० ताम्र
जैसे रंग का एक हलकेमोलका रत्न ।

सं० ताम्रस-(ताम्र=शरीर, ताम्र=
सोना) पु० ताम्रस, केवल, २ तांबा
३ सोना ।

सं० तामस-(तमस्=तमोगुण, वा
अंधेरा) गु० तमोगुणी, तामसी,
क्रोध मोह आदि में लगा हुआ,
पु० अंधेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट, ४
अहंकार, क्रोध मोह आदि ।

प्रा० तामसी-(सं० तामसिक) गु०
क्रोधी, तमोगुणी, रिस करनेवाला ।

प्रा० तामेश्वर-(सं० ताम्रेश्वर,
ताम्र+ईश्वर) पु० ताम्र की रास,
ताम्र, वंग ।

सं० ताम्रूल-(तम्=चाहना) पु०
पान, नागरबेल का पत्ता ।

सं० ताम्रूली } पु० तमोली, पान
ताम्रूलिक } बेचनेवाला ।

सं० ताम्र-(तम्=चाहना) पु० तांबा,
२ लालरंग ।

सं० ताम्रकार } क० पु० टंडरा, तां-
ताम्रकुट्टक } बा पीटनेवाला ।

प्रा० तार-पु० लोहे आदि धातु का
भिचा हुआ तारा जो सितार आदि
बाजों में लगाया जाता है, तार
बांधना, बोल० किसी काम को
लगाना जारी रखना, तार दू-
टना, बोल० अलग हो जाना, छूट
जाना, किसी काम का बंद हो जाना ।

सं० तारक-(तृ=गार करना, वा च-
वाना) क० पु० बचानेवाला,
रक्षक, उद्धार करनेवाला, पु०
एक राक्षस का नाम, २ एक प्रकार
का मन्त्र, ३ तारा, सिनारा, नक्षत्र,
४ आंमका तारा, पुतली, ५ नाविक ।

सं० तारण-(तृ=गार करना, बचाना)
गु० पार करनेवाला, पु० उद्धार,
पार करना, २ यत्न, बेड़ा ।

सं० तारणतरण-(तृ=गार करना)
गु० पार करनेवाला, और पार
होनेवाला ।

प्रा० तारणा } (सं० तारण) क्ति०
तारना } स० पार करना, ब-

हृदयही ।

प्रा० तावदेना—बोल० परोड़ना, बटना, पेंड़ना, २ मोड़ो पर हाथ फेरना, मोड़ो सँवारना, ३ गर्भ करना (जैसे लोहे को) ।

प्रा० तावपेचखाना—बोल० गर्भशोना, प्रोथिनहोना, गुस्सा होना ।

सं० तावत्—(तव=वह) क्रि० वि० छतना, इतना, यहाँ तक, यहाँ लो, तब तक ।

प्रा० तावना—सं० तपन, वा तापन, (तप=तपाना) क्रि० सं० गर्भ करना, गर्भाना, २ ताव देना, परखना, कसना, जाँचना, ३ पेंड़ना, परोड़ना ।

प्रा० ताश—पु० लप्पा, बादला, बूँदेदार पट्ट ।

प्रा० तास—पु० गंजपा, २ लप्पा, बादला, बूँदेदार पट्ट ।

प्रा० तामु—(सं० तस्य) सर्वना० उसका, तिसका ।

प्रा० तासो—(सं० तस्मात्) सर्वना० उससे, तिससे ।

प्रा० ताहि—(सं० तम्) सर्वना० उसको, उसे, तिसको तिससे ।

प्रा० तिकोनिया—(सं० त्रिगुण) गु० त्रिगुण ।

सं० तिक्र—(तिक्र=तीव्रकरना) गु० तीव्रता, कटुता ।

प्रा० तिगुन—(सं० त्रिगुण, त्रि=तीन,

गुण=गुना) गु० तिगुना, तीनगुना, तिहरा ।

सं० तिग्म—(तिक्र+म) कर्म=पु० तीव्रता, पैना, तेज ।

प्रा० तिच्छन—(सं० तीक्ष्ण) गु० तीक्ष्ण, तीखा, तीता, कठोर, कड़ा ।

प्रा० तिजारी—(सं० तृतीय उबर, तृतीय=तीसरा, उबर=तप) स्त्री० जो तब एक दिन बीच में न आकर दोसरे दिन फिर आवे, अंतरिया, उबर ।

सं० तिजिल—(तिक्र+इल्, तिक्र=छाना करना) क० पु० चन्द्रमा ।

प्रा० तित—(सं० तत्र) क्रि० वि० वहाँ, तराँ, तिथर ।

सं० तितिक्षक—क० पु० सहनशील,

सं० तितिक्षा—(तिह=सहेना) स्त्री० स्त्री० धीरज, क्षमा, सहनशीलता, धैर्य सहना ।

सं० तिथि—(त्व=जाना) स्त्री० हिंदी महीनों के दिन, हिंदी महीनों की तारीख ।

प्रा० तिनका—(सं० तुण) पु० तर, टाँकी, घासका टुकड़ा ।

प्रा० तिनकादांतोंमेंलेना—बोल० आघोना होना, जी दान माँगना, जी की भयन माँगना ।

०तिवारा-(सं०त्रि=तीन, वार=
दरवाजा) पु० तीनदरवाजेका म-
कान, कपरा निदरी, २ (तीनवार)
गु० तीनवार, तीनदफे ।

०तिमिर-(तिम=धिगोना, वा
तम=गोया होना) पु० अंधेरा,
अन्धकार, २ एक प्रकारका आंख
का रोग ।

०तिर्मा स्त्री० बड़ी मछली ।

०तिय - सं० स्त्री) स्त्री० नागी,
लगाई, स्त्री ।

०तिग्या--(सं० तृपा) स्त्री०
रूपाय, पीने की चाद, पिथाम, २
हृत्प्या, चाद ।

०तिरछा { सं० तिष्ठ-
तिर्छा } तिष्ठ-
जाना) गु० टेढ़ा, दाढ़ा, गड़हा ।

०तिरछादेखना-बोल-
औखिपोंदेखना, टेढ़ी कायमें देख
ना, तिरछी चितवनसे देखना ।

तिरना, (सं०तरण) क्रि० अ०
देखना, तैरना ।

तिरपन (सं० त्रिपवाश्व-
तिर=तीन, पवाश्व=पनाम) ग

तीन और

तिरप

ल=दरवा

ल, २ ।

प्रा०तिरसठ-(सं० त्रिपष्टि, त्रि=
तीन, पष्टि=साठ)गु० तीन और साठ

सं०तिरस्कार-(तिरस्=अवज्ञा, वा
अनादर, कृ=करना) पु० अपमान,
अवज्ञा, अनादर, निन्दा, धिन, धि-
कार । [वेद्वज्जती ।

सं०तिरस्कृत-अमे० पु० अपमानिता,

सं०तिरस्क्रिया-(तिरम्+क्रिया)
अनादर, न्याय ।

प्रा०तिराना-(तिरना) क्रि० सं०
तैराना, पैराना, हेलाना ।

प्रा०तिरानवे-(सं० त्रिनवति, त्रि=
तीन, नवति=नव्वे) गु० नव्वे और
तिन, २३ ।

प्रा०तिरासी-(सं० त्र्यशीति, त्रि=
तीन, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी
और तीन, ८३ ।

प्रा०तिरिया-(सं० स्त्री०) गु० ना
ति, त, ३, स्त्री ।

प्रा०तिरियाचमित्र-(सं० स्त्रीचमि-
त्र, स्त्री० चमित्रों के छल धल, छिपे
के कथे

सं०निगेधान-माच्छादन, गु
अन्नदान ।

०तिरोहित-(तिराग=छिया, धा
गु० छिया दूया, गुम, द

अ० धीति



याना, २ लहरना, हिलना, फड़-
फड़ाना, ३ पानीपर तेल का तेरना ।
सं०तिर्यक्—गु० देहातिरिक्ता, कुटि-
ल, पु० पशु, पक्षी ।
प्रा०तिरुत (सं०तीरमुक्ति) पु०
तिरुत एक झिल्ला का नाम
तिरुति जो सूचे बिहार में है
और जिसका मुख्य नगर मुजफ्फर-
पुर है ।

सं०तिल—(तिल+चिकना होना)
पु० एक पौधा अथवा उसका बीज
जिसका तेल निकलता है, २ देह
में एक काला चिह्न ।

सं०तिलक—(तिल=जाना) पु०
टीका लगाकर चन्दन वा केश
वा रेतली आदिका चिह्न, गु० श्रेष्ठ,
प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम, अग्रगण्य,
जैसे “रघुकुलतिलकसदातुल्य उद्य-
पन धामन” अर्थात् रघुवंशिणों में
प्रधान वा श्रेष्ठ, (जानकीमंगल)

प्रा०तिलकुट—(तिल, कुट=रूटाइ-
का) पु० एकतरहकी मिठाई जि-
समें तिल कुटकर मिलाते हैं ।

प्रा०तिलहा—(सं०तैलंग, करनाटक
देस) पु० तैलंग देश का वासी, पहलेही
पहल अंगरेजी सेना में तैलंग अ-
र्थात् करनाटक देशके लोग भरती
हुये थे इसलिये अंगरेजी सेनाके
सब सिपाहियों को तिलहा कहते हैं ।

प्रा०तिलंगी—सौ०गुड़ी, गुतंगे, चंग ।

प्रा०तिलड़ा—(सं० त्रि, प्रा० लड़,
लड़ी) पु० तीन लड़का हार ।

प्रा०तिलहा—(तैल) गु० तैल-
या तेल सा चिकना ।

प्रा०तिलुवा—(तिल) पु० तिलकेलड्डा ।

प्रा०तिल्ली—सौ० पिलई, तापतिल्ली ।

सं० तिलोत्तमा—सौ० स्वर्गेश्वरया ।

सं०तिलोदक—(पु० तिल + उदक)
तिल और जल वर्ण, पितरों
का पानी ।

सं०तिलोदन—(तिल + ओदन)
हमरात्र अर्थात् लिचड़ी ।

प्रा०तिप (सं० तृष) सौ० प्यास,
पिपास ।

प्रा०तिसरायत—(तीसरा) पु०
तीसरा अनुप्य, विचरैया, मध्यस्थ,
पंच, विहायत ।

प्रा०तिहत्तर—(सं० त्रिसप्तति, त्रि=
तीन, पञ्चदश=सत्तर) पु० सत्तर और
तीन, ७३ ।

प्रा०तिहरा—(त्रीणि=तीन) पु०
तिलड़ा, गु० निगुना ।

प्रा० तिहाई—(सं० तृतीय) सौ०
तीसरा भाग ।

प्रा०तिहायत—(तीसरा) पु० तीसरा
अनुप्य, तिसरायत, विचरैया, म-
ध्यस्थ, पंच ।

प्रा० तुल (सं० तुल्य) गु० बराबर,
तुल } समान ।

प्रा० तुलकरगड़ेहोना-चोन० लड़-
नेनेलिये साधने साधने गड़ेहोना ।

प्रा० तुलना - सं० तुल्य, तुल -
मोलना / कि० अ० तोना जाना,
० बराबर, बराबर होना, लड़ने को
गड़े होना ।

प्रा० तुलमिका } (तुलना बराबरी,
तुलमी } सम० ठेकना,
अर्थात् / समझे बराबर मष्टियों को
नहीं पड़ता ।

सं० तुलमी, तुलमीदार ।

सं० तुला - तुल्य तुल्य होना
बराबर, ० बराबर, ० मानवी राशि
अर्थात् () ।

सं० तुलाधार - (तुला + आधार)
० तुल्य आधार, बलिया, बल्य ।

सं० तुलिन-सं० तुल्य तोला

सं० तुल्य - (तुल्य=मोलना)
० तुल्य बराबर, समान समान

सं० तुल्य-वर्षा, दिनहा, बोहा

सं० तुल्य - (तुल्य=वपस होना)
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य,
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य

सं० तुल्य - (तुल्य=वपस होना) ० तुल्य
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य,
० तुल्य ।

सं० तुष्टि- (तुष्टि=वपस होना) भा०
सं० तुष्टि, मन्तोप, आनंद, वपसता ।

सं० तुहिन- (तुहिन=मारना, या हानि
पहुँचाना) पु० पाला, बर्फ, हिम ।

प्रा० तु- (सं० तुल्य) सर्वना० मध्यम
पुरुष, पुरुषवचन ।

प्रा० तु-हुने को पुकारने का शब्द ।

प्रा० तुंश - (सं० तुल्य, तुल्य=मांगना)
० तुल्य, ० तुल्य का बरतन
जिसमें माधुनोप पानी रगते हैं ।

सं० तुल - (तुल्य=भरना, या सिकु-
नाना) ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य,
० तुल्य की वेश, ० तुल्य ।

प्रा० तुलक - सं० तुल्य, तुल्य=
तुल्य (० तुल्य ० तुल्य) पु०
मांगना या

प्रा० तुल - (तुल्य=वपस होना)
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य,
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य

सं० तुल्य - (तुल्य=वपस होना)
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य,
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य

सं० तुल्य - (तुल्य=वपस होना)
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य,
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य

सं० तुल्य - (तुल्य=वपस होना)
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य,
० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य, ० तुल्य

० तृणीम्—(तृप्=सन्तोषकरना) वा सन्तुष्ट होना) क्रि० वि० चुपचाप, मौन, स्तामोर्ग ।
 ० तृण—(तृन्=नाशकरना) पु० घास, चारा, घासफूस, निनका, मर ।
 ० तृणवत्—(तृण=तिनका, वत्=परावर) गु० तिनके-के परावर, तुच्छ, हलका ।
 ० तृतीय—(त्रि=तीन) गु० तीसरा ।
 ० तृतीया—(तृतीय) स्त्री० तीसरी विधि ।
 ० तृप्त—(तृप्=तृप्त होना) क० पु० सन्तुष्ट, रपित, आनंदित, मुग्धी ।
 ० तृप्ति—(तृप्=तृप्त होना) भा० स्त्री० सन्तोष, रप, प्रसन्नता, अचाना ।
 ० तृप् (तृप्=प्यासाहोना) भा० तृपा) स्त्री० पियास, प्यास, तृष्णा, पियामा ।
 ० तृपार्त्त—(तृपा=पियास, आर्त्त=यशरायाहुषा) गु० पियास से व्याकुल, बहुत प्यासा ।
 ० तृपावन्त—(तृपा=पियास, वन्त=बाला) क० पु० पियासा, प्यासा ।
 ० तृपित—(तृपः) क० पु० पियामा, प्यासा ।
 ० तृष्णा—(तृप्=प्यासाहोना, वा लोभ करना) स्त्री० पियास, प्यास, २ लोभ, लालच, ३ चाह, इच्छा, लालसा, जो बहुत नहीं मिली हो इसकी चाह ।

सं० ते-मर्वना० वे, २ तेरा ।
 प्रा० ते } अन्यय० से ।
 ते }
 प्रा० तेंतालीस—(सं० त्रयस्त्रिंशत्=त्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और तीन ।
 प्रा० तेंतीस—(सं० त्रयस्त्रिंशत्, त्रि=तीन, चिंशत्=तीस) गु० तीस और तीन ।
 प्रा० तेंदुवा—पु० चींता, बाघ ।
 प्रा० तेईस—(सं० त्रयोविंशति, त्रि=तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और तीन ।
 सं० तेज—(तेजस्, तित्त्व=वीर्याहोना) भा० पु० प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४ तीक्ष्णता । [नायागया ।
 सं० तेजित—र्म्य० पु० शाश्विन, वै-
 प्रा० तेजपात—(सं० तेजपत्र, तेज=नीसा, पत्र=पत्ता) पु० तेज की पत्ती, एक तरह का गरम पत्ताला ।
 प्रा० तेजमान—(सं० तेजस्विन्) तेजवन्) गु० प्रतापी, ऐश्वर्यवान् । [तिनना ।
 प्रा० तेता—(सं० नावत्) क्रि० वि०
 प्रा० तेतो—क्रि० वि० तिनना ।
 सं० तोमर—पु० नाम शस्त्र, २ एक प्रकार का छन्द ।
 प्रा० तेरस—(सं० त्रयोदशी) स्त्री०

प्रा० तुल (सं० तुल्य) तु० परावर,
तुल (समान ।

प्रा० तुलकरसडेहोना-बोल० लड-
नेनेनिये आपनेमामने गडेहोना ।

प्रा० तुलना—(सं० तुलन, तुल=
मोलना (क्रि० अ० मोला जाना,
२. उपाय, बराबर होना, लडने को
गडे होना ।

प्रा० तुलमिका (तुला=बराबरी,
तुलमी) अम्=ठेकना,
अर्थात् जिसके बराबर मूट्टिमें कोई
नहीं) दूध पीने का नाम ।

सं० तुलमी (तु० हिंदी समावण
तुलमीदाम) दूधों ।

सं० तुल्य—(तुल=मोलना) श्री०
बराबरी, २. बराबर, ३. मानवीं राशि
(उरे निज में) ।

सं० तुल्यार—(तुल्य + आधार)
द० तु० बैरय, बतिया, बझाज ।

सं० तुलिन-सं० तु० मोला दूध ।

सं० तुल्य—(तुल=मोलना, वा० तुल-
न ।) तु० बराबर, समान महश, मम ।

सं० तुल=पूरी, दिनका, जोकर ।

सं० तुल्य—(तुल=तमय करना वा
होना) तु० गीत, जाना, हिम,
बर्फ, मोम, तु० डंडा ।

सं० तुल्य—(तुल=तमय होना) द० तु०
दूध, मलदूध, मयमय, आनंद, इति,
माविर ।

सं० तुष्टि—(तुल=तमय होना) मा०
सो० तुष्टि, मन्तोप, आनंद, तमयना ।

सं० तुहिन—(तुल=मारना, वा० हानि
पहुंचाना) तु० पाला, बर्फ, हिम ।

प्रा० तु—(सं० त्वम्) सर्वना० मध्यम
पुरुष, एकवचन ।

प्रा० तुत-कुले को पुकारने का शब्द ।

प्रा० तुंवा—(सं० तुभ्य, तुवि=मांगना)
तु० गुच्छा, एक तरह का बरतन
जिसमें साधुनोग पानी रसते हैं ।

सं० तुण (तुण=भरना, वा सिकु-
तुणार) दना) तु० माया, तर्कस,
सीर रसने की पेशी, निर्मग ।

प्रा० तुतक (सं० तुल्य, तुल्य=
तुतिया) कैलासाबादकना) तु०
नीलाधोया ।

प्रा० तुन—(सं० तुल, तुल्य=पीड़ा
देना) तु० एक पेड़ का नाम जिस
की लकड़ीकी भेज कुरसी आदि
बनती हैं उसके फूल पीले होते हैं
जिससे कपड़े रंगे जाते हैं ।

सं० तुल्य—(तुल्यार=मजदी कर-
ना) क्रि० वि० भटपट, तुल्य, शीघ्र ।

सं० तुल्य—(तुल=निहायना, वा
मरना) सं० कडे, निर्भीक रहे ।

सं० तुल्य—(तुल=मारना) सं० विनो
की कुरी, नीली, मीक ।

प्रा० तुल्य (तु० गजपूरी की एक
तुल्य) जाति ।

तृष्णीम्—(तृप्=सन्तोषकरना)
। सन्तुष्ट होना) क्रि० वि० चुप-
प, मौन, सामोश ।

तृण—(तृद=नाशकरना) पु०
स, चारा, घासफूस, निनका, खर ।
तृणवत्—(तृण=तिनका, वृत्=
खर) गु० निनके के बराबर,
झड़, हलका ।

तृतीय—(त्रि=तीन)गु० तीसरा ।
तृतीया—(तृतीय) स्त्री० नीस-
तिथि ।

तृप्त—(तृप्=तृप्त होना) क० पु०
गुष्ट, इष्टित, आनंदित, मुग्धी ।

तृप्ति—(तृप्=तृप्तहोना)भा० स्त्री०
शोष, इर्ष, प्रसन्नता, अपाना ।
तृप्ति (तृप्=प्यासाहोना)भा०
पा १ स्त्री० पियास, प्यास,
घा, पियासा ।

तृप्ति—तृप्ति=पियास, आर्च=
तापाहुआ) गु० पियास से व्या-
प, बहुत प्यासा ।

तृप्ति—(तृप्ति=पियास, वृत्त=
ता) क० पु० पियासा, प्यासा ।

तृप्ति—(तृप्ति)क० पु० पियासा,
ता ।

तृप्ति—(तृप्ति=प्यासाहोना, वा
प करना) स्त्री० पियास, प्यास,
हिम, लालच, ३ पाह, इच्छा,
हसा, जो वस्तु नहीं मिली हो
ही चाह ।

सं० ते—मर्चना० वे, २ तेरा ।

प्रा० ते { अन्वय० से ।

प्रा० तैतालीस—(सं० त्रयस्रचत्वारिंश-
द्वित्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस)
गु० चालीस और तीन ।

प्रा० तैतीस—(सं० त्रयस्रिंशत्, द्वित्रि=
तीन, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और
तीन ।

प्रा० तैदुवा—पु० चीता, बाघ ।

प्रा० तैईस—(सं० त्रयोविंशति, द्वित्रि=
तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और
तीन ।

सं० तेज—(तेजस्, तिस्र=तीसहोना)
भा० पु० प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम,
प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४
लोकपणा । [नायागया ।

सं० तेजित—भ्रं० पु० शाण्डिन, वै-
प्रा० तेजपान—(सं० तेजपत्र, तेज
=तीसा, पत्र=पत्ता) पु० तेज की
पत्ती, एक तरह का गरम पत्ताला ।

प्रा० तेजमान { (सं० तेजस्विन्)
तेजवन् { गु० प्रतापी, ऐश्वर्य-
वान् । [तिनना ।

प्रा० तेता—(सं० तावत्) क्रि० वि०

प्रा० तेतो—क्रि० वि० तितना ।

सं० तोमर—पु० नाम शस्त्र, २ एक
प्रकार का छन्द ।

प्रा० तेरस—(सं० त्रयोदशी) स्त्री०

प्रा० नालकी-स्त्री० एकप्रकार की पालकी ।

सं० नालिक-(नाल् + इक) क० स्त्री० बन्दूक, भुशुण्डी ।

प्रा० नाव- (सं० नाँ) स्त्री० नौका, डोंगी, तरली ।

प्रा० नाचना } (सं० नचन, नच् =
नाना } झुकना) क्रि० स०
झुकाना, मिथुराना, शिर झुकाना,
नमस्कार करना ।

प्रा० नावरि-स्त्री० नाव, झुकाना;
नाव फेरना, नावपर का खेल ।

सं० नाविक-(नाँ) क० पु० नाँकी
कर्णधार, केवट, मज्जार ।

सं० नाश-(नश् = नाश होना) भा०
पु० अंग, वस्त्रादी, नष्ट होना, क्षय,
हानि, विगाड़ ।

सं० नाशक-(नश् = नाश करना) क०
पु० नाश करनेवाला, उजाड़, वि-
गाड़ करनेवाला, हानिकारनेवाला ।

सं० नाशन (नाश + न) भा०
पु० नाश करना, विगाड़ देना,
उड़ा देना ।

सं० नाशवान्-क० पु० नाश करनेवाला ।

सं० नाशनीय } अर्थ० पु० नाश
नाशितव्य } करनेयोग्य, उजा-
नाशय } देनेवाला ।

सं० नाशी-(नाश + ई) क० पु०
नाश करनेवाला, उड़ाऊ, उजाड़ ।

प्रा० नास-(सं० नाश) पु० नाश,
२ (सं० नश्य, नासा = नाक) स्त्री०
हुलास, मुँचनी ।

सं० नासमम्-पु० अवोध, अज्ञान ।

प्रा० नासना (सं० नाश) क्रि०
अ० भागना, पताना, पीछे देना,
२ क्रि० म० नाश करना ।

सं० नासा } (नास = नाश करना)
नासिका } स्त्री० नास, शूलने की
इन्द्रिय ।

सं० नासीर-(नाश = नाश करना)
पु० सेना का मुख, आगे चलने
वाली सेना ।

सं० नास्ति (न = नहीं, अस्ति = है,
वास् = होना) नहीं है, नारी, अभाव ।

सं० नास्तिक-(नास्ति = नहीं है,
अर्थान् परलोक और ईश्वर का मूढ़
का कर्मा नहीं है ऐसा करनेवाला)
पु० ईश्वर और परलोक को नहीं
माननेवाला, अनाश्वरवादी ।

सं० नास्तिकवाद-भा० पु० ईश्वर
को न मानना, नास्तिकों का मतवाद,
कुछ भी बाने ।

सं० नास्तित्व-भा० पु० अभाव,
शून्यता, नाश ।

प्रा० नाह (सं० नावने पु० अवाही,
हानिक, नाप, रस ।

प्रा० नाह-पु० नाह, रस ।

प्रा० नाहिं (सं० नाह) क्रि० रि०
नारी ।

प्रा० निदावर-प्री० उदात्त, चलि,
कुरचन, चलिहारी ।

सं० निज-(वि० नज=रैदा होना)
मु० सर्वना० अपना, स्व, आपका,
आत्मीय ।

सं० निजगति-स्त्री० अपनी दशा,
अपनी हालत ।

सं० निजवृत्ति-स्त्री० अपनी नीति-
का, अपना देना ।

सं० निजतन्त्र-पु० स्वतन्त्र, स्वचर,
स्वदमुल्लेख ।

प्रा० निवृत्ता-गु० निवृत्त्या, मुक्त,
आनसी ।

प्रा० निवृत्त-(सं० निवृत्त) गु० क-
टोर, निर्दय, कठिन, बड़ा हूँ,
हिंसका दिल पत्थर सा कड़ाहो ।

प्रा० निवृत्ता (सं० निवृत्ता)
निवृत्ताई मा० स्त्री० कटोर

ता, निर्दयता, कड़ापन, बेरहमी ।

प्रा० निवृत्त-(सं० निवृत्त निर=नहीं,
ह=हरना) गु० निर्धय, निवृत्त,
निःशुद्ध, हीन, बेरह, अशुद्ध, बेगुनाह ।

प्रा० निवृत्त (सं० निवृत्त नि-
निवृत्त) र=नहीं, दुन=हि-
लाना) गु० अचेन, मूलमूल, नि-
रुचल, अचल ।

प्रा० नित-(सं० नित) क्रि० वि०
सदा, सर्वदा, निरन्तर, हमेशा, हमे-
श, रोज रोज ।

प्रा० नितउत्त } चोल= सदा, नि-
नितउत्तके } रन्तर, रोज रोज,
हमेश, हरदय, हमेश ।

प्रा० नितनित-चोल=सदा, नित उठ,
हरदय, रोज रोज, निरन्तर, हमेश ।

सं० नितम्ब-(नि=नौचे, तम्ब=
जान, वा स्नम्ब=ठहरना) पु०
कपड़े नीचे का भाग, पुट्टा, कूडा,
चुनड़ ।

प्रा० नितप्रति-(सं० प्रतिनिम्य म-
वि=हर एक, नित्य=सदा) क्रि०
वि० नित नित, निवृत्त, सदा, ह-
ररोज, रोजरोज, हमेश ।

सं० नितान्त-पु० एकाग्र, आविश्-
क, निरन्तर ।

सं० नित्य-(नि=निरवयव, अर्थात् जो
निरन्तरहीनो) क्रि० वि० सदा, स-
बदा, नित, हमेश, सनातन, नि-
रन्तर, लगातार, मामूली ।

सं० नित्यकर्म-(नित्य=सदा का
कर्म पर्य का काम) पु० स्नान,
सन्ध्या, वन्दन, तर्पण, पूजा, जप, व-
प आदि पदार्थ, हर एक दिनका
अवरग जाने योग्य काम ।

सं० नित्यानित्य-(सं० नित्य +
अनित्य) क्रि० वि० निरन्तर, हमेश,
हमेशगी, जावेदानी ।

सं० नित्यानन्द-(नित्य + आनन्द)

सं० निन्दित- (निन्द=निन्दा करना)

र्म० पु० दोष लगाया हुआ, दुष्ट, पुरा, बदनाम ।

सं० निन्द्य- (निन्द=निन्दा करना)

र्म० पु० निन्दा के योग्य, पुराई करने के लायक ।

सं० निन्द्यकर्म- पु० कुतिसत्कर्म, पुराताम ।

प्रा० निन्नानवे- (सं० नवनवति

नव=नौ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और नौ, ६६ ।

प्रा० निन्नानवेके फेरमें पड़ना-

घोल० धन के इकट्ठा करने की में लगा रहना २ दुःख में कैसना ।

प्रा० निपट- गु० बहुत, अधिक, अत्यन्त ।

सं० निपतन- (नि=नीचे, पत=गिरना)

ना) भा० पु० नीचे गिरना ।

सं० निपात- (नि=नीचे, पत=गिरना)

भा० पु० गिरना, मौत, शून्य, मरण, २ व्याकरण में च आदि और म आदि अन्त्य ।

सं० निपातक- (निपात + अक)

नाशक, उजाड़नेवाला, दहानेवाला ।

प्रा० निपातना- (सं० निपात) कि०

सं० गिराना, नाश करना, मारना ।

सं० निपात- र्म० पु० नाश किया, उजाड़ दिया ।

सं० निपातित- र्म० पु० अधःपतित-

त, निचिप्त, नीचे गिरा, उजाड़ा हुआ ।

सं० निपान- (नि + पा=पीना) पि०

जलाधार, चरही, कुपंकी चरवसा, दोहनी, दूधदुहने का पात्र, कठरी ।

सं० निपीड़न- (नि + पीड़=मारना,

मथना) भा० पु० पीड़ा देना, तरलीफ देना ।

सं० निपीड़ित- र्म० पीड़ा दिया

गया, घातित, निचोड़ा गया ।

सं० निपुण- (नि, पुण=प्रविश्रोना)

गु० प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान् ।

प्रा० निपुणार्थ- भा० स्त्री० चतुरार्थ,

अरुणन्दी ।

प्रा० निपूता- (सं० निपुण) गु०

जिसके लङ्का ने हो, मुमहीन, निःसन्तान, बे औलाद ।

प्रा० निवडना } (सं० निवर्तन)

निवडना } कि० अ० हो चु-

कना, निपटना, ररखे होना, नाश होना, पूरा होना, खतम होना ।

सं० निवन्धन- (बन्ध=बांधना) भा०

पु० बन्धन, बन्धन, रोक, कैद ।

सं० निवन्ध- भा० पु० प्रमाण, ब-

न्धन, प्रबन्ध, कारण, आनाद

रोग, मृत्वादि रोग, ग्रन्थ की हद्दि,

संप्रसारिण, भावबारी, सालीना,

देवीसम्पत् ।

प्रा० निवल- (सं० निर्वक) गु०

दुबला, दुबल, कमजोर ।

- साफ । निर्माणक-क० पु० मुसमिक, निर्माण- (निर्, पां=नापना, वापना) पु० वनावट, रचना, तस-नीक २ सार ।
- १० निर्माण करना-क्रि० स० बनाना, रचना ।
- १० निर्माल्य- (निर्मल से, अथवा निर् और माल्य पूज वा फलों की माला) भा० पु० देवता का लंडा मसोद, देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य, २ पवित्रता, सफाई, कर्दार, २ गुण पवित्र, साफ, शुद्ध ।
- १० निर्मित- (निर्, मा=नापना, वा बनाना) कर्म० बनाया हुआ, रचित, कवित ।
- सं० निर्मूल- (निर्=विन, मूल=मूढ़) गु० बलदा हुआ, नङ्गसे लोटा हुआ, विन नङ्ग, निर्भीक, वे ठिकाने, २ समझ, नाश, ध्वंस ।
- सं० निर्माही- (निर्=विन, मोह=स्वार) गु० निर्दय, कठोर, कड़ा ।
- सं० निर्यास- (निर्, यंस=निकलना) पु० हृत्तरस, गाँद, गंध ।
- सं० निर्लज्ज- (निर्=विन, लज्जा=छात्र) गु० निर्लज्ज, पेशर्मा, नष्ट ।
- सं० निर्लेप- (निर्=नहीं, लिप्=लेपना) गु० बेजाग, विनलगाव, अलेप, बेलास ।
- सं० निर्लोभ } (निर्=विन, लोभ=को लालच न हो, लोभहीन, धैर्य ।
- निर्लोभी } लालच) गु० नित को लालच न हो, लोभहीन, धैर्य ।
- सं० निर्वश- (निर्=विन, वश=कुल) गु० वंशहीन, नितके वंश न हो, अपूता, निपूता, बे औलाद, लाबल्द ।
- प्रा० निरवहे-गु० बीतगये, छूटगये ।
- सं० निर्वाचन- (निर्, वच=कहना) भा० पु० चुनना ।
- सं० निर्वाचक-क० पु० चुननेवाला ।
- सं० निर्वाण- (निर्, वा=हरना, जाना) पु० मुक्ति, मोक्ष, लपड़ोना, गु० बुता हुआ, बुझा हुआ, ठंढा किया हुआ, २ नष्ट ।
- सं० निर्वात-गु० वायुरहित स्थान, वे हवा का ।
- सं० निर्वास- (निर्+वास=रहना) भा० पु० निकालना, बाहर करना, मारना, मनाकरना ।
- सं० निर्वासक- (निर्वास+थक) क० पु० निकालने वाला । [गया ।
- सं० निर्वासित-कर्म० पु० निकाला ।
- सं० निर्वाह- (निर्=निधय, वर=सेवाना) पु० निवाह, पूराकरना, सपासि ।
- सं० निर्विकल्प- (निर्=नहीं, विह्वल=भेद भ्रम) गु० भेद और भ्रम से रहित, वंशक सुरा ।

प्रा० निशिचर } (सं० निशांचर
 निशिचर } वा निशि=रात में
 चर=चलनेवाला) पु० राक्षस ।

सं० निशित—(नि=अच्छी तरह से
 शि=शीला करना) पु० तीखा, ती-
 व्रण, चोखा, शक्ति, पैना ।

सं० निशीथि—(नि=अच्छी तरह +
 शी=सोना) पु० अर्द्धरात्रि, आधी
 रात ।

सं० निशीथिनी—सं० रात्रि ।

सं० निशुम्भ—(नि=निश्चय, शुम्भ
 =मारना) पु० एक राक्षस का
 नाम, जिसने दुर्गामे मारा ।

सं० निशेश—(निश=रात, ईश=
 राजा) पु० रात, शशि ।

सं० निश्चय—(निर=अच्छी तरह से
 चि=रक्ता करना) भा० पु० निर्णय,
 ठीक करना, पक्का करना, भरोसा,
 विरवास, गु० ठीक, सच, असंशय ।

सं० निश्चर—(निश=रात, चर=च-
 लनेवाला, चर=चलना) पु०
 राक्षस ।

सं० निश्चल—(निर=नहीं, चल=च-
 लना) गु० अचल, अटल, स्थिर,
 ठहरा हुआ, जो नहीं चले ।

सं० निश्चला—स्त्री० पृथ्वी, जमीन ।

सं० निश्चित—(निर=अच्छी तरह से,
 चि=रक्ता करना) अर्थ० पु० निश्चय

दिया हुआ, निर्णय दिया हुआ ।

सं० निश्चिन्त—(निर=नहीं, चिन्ता
 =शेच) गु० निश्चिन्त, वैयक्तिक,
 विनियता, चिन्तारहित ।

सं० निश्वास—(नि=बाहर, स्वप्न
 =सांस आना या लेना) पु० मुँह
 और नाक से बाहर निकली हुई
 हवा, सांस, निःसास ।

सं० निपट—(नि, पञ्च=मिलना)
 पु० भागा, नृण, तूणीर, तर्कस ।

सं० निपण—(नि=नहीं, पट्ट=चल-
 ना) अर्थ० पु० बैठा हुआ, आसी-
 न, आसन्न ।

सं० निपाद—(नि, पट्ट=मारना)
 पु० पंखाल, जो आसन्न से शूद्रों के
 गर्भ में पैदा हो, पंखार, २ एक राग
 का नाम ।

सं० निपिद्ध—(नि, पिष्ट=जाना, पर
 नि, उपसर्ग के साथ आने से अर्थ
 हुआ रोकना) अर्थ० रोक, रुका
 निवारित, योजित ।

सं० निपेधक—(नि, पिष्ट=अक) क०
 पु० रोकनेवाला, मनन करनेवाला ।

सं० निपेध—(नि, पिष्ट=रोकना) पु०
 रोक, रुकावट, बाधा, नाहीं ।

सं० निष्क—पु० अशक, सोने का रुपया,
 दीनार ।

सं० निष्कण्टक—(निर=बिन, कट-

मन्त्र मरण का निवेदा फलान्न ।

प्रा० निस्तारना (सं० निस्तारण)

क्रि० सं० बचाना, उधारना, मुक्ति देना, अन्य मार्गमै छुटकारा करना ।

प्रा० निस्तारा—(सं० निस्तार) पु०

छुटकारा, निवेदा, मोक्ष, मुक्ति २ वर, आशिष ।

० निग्रम—स्त्री० संगीत वन्दुकी ।

सं० निस्सन्देह—(निस्=विन, संदेह =एक) पु० निश्चय, वंशक ।

सं० निहत—(निहन्=मारदातना) स्त्री० पु० मारागया, बधकियागया ।

सं० निहित—(नि=निश्चय, धा=धरना) स्त्री० पु० स्थिति, गुप्त, स्थित, निहित ।

१० निहाई—स्त्री० घन, हथौड़ा ।

१० निहार पु० कुरार, कुरिहा ।

प्रा० निहारना—क्रि० सं० ताक ल-गाना, देखना ।

प्रा० निहाल—गु० मसप्र, सुखी, आनंदित, हसित, बड़ा हुआ ।

प्रा० निहाली—स्त्री० रगई, प्रद्व ।

प्रा० निहुरना—क्रि० प्र० भुकना, नमना, दबना ।

प्रा० निहोरा—पु० उपकार, २ वि-मयी, इहसान ।

प्रा० नीद } (सं० निद्रा) स्त्री०

नीद } सोने की चार, ऊँचाई ।

प्रा० नीद उचाटहोना—बोल०

नीद नहीं आना, नीद का दूटना,

घाव नहीं मिनना ।

प्रा० नीद भरसोना—बोल० गर

नींद आना, बेन से सोना ।

प्रा० नीवू—(सं० निम्बूक, निम्बू

=नीचना) पु० लोडू, एक प्रकार का लड़ा फल ।

प्रा० नीका } (का० नेक) पु०

नीकी } मला, सुन्दर, अच्छा, मुशील, चंगा ।

प्रा० नीगुने—(सं० निर्गण) पु०

बेगिनन, बेगुवार, अनगिनन, नहीं मिनना हुआ ।

सं० नीच—(नि=नीचे, अच्च्=जाना

अथवा नि=नीच संपदा को, चम्

=माना, भोगना) पु० नीचा, अ-धम, छोटा, निरुद्ध, कमीना ।

प्रा० नीचा—(सं० नीच) पु० नी-

च, अचम, छोटा, पु० तछा, तल ।

प्रा० नीचाऊँचा—बोल० ना-चरा-

वर जमीन, न हम बार ।

प्रा० नीच—(सं० नीचम्) क्रि०

वि० तले ।

सं० नीचगा—(नीच=नीचे, गम्=

जाना) स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० नीड़—(नि=निकटीतरहसे, इन्=

सोना निमर्ष) पु० पत्तेरुओं का

घर, घोंसला, तौता, आशिषाना ।

सं० नीत—(नी+त, नी=ले जाना)

मं० पु० प्राप्त, लाया गया ।

सं० नीति—(नी=ने जाना) श्री०
अन्ता चन्तन, उचित व्यवहार,
राजनीति, देशवर्गीविद्या, व्याप, ४
प्रकारके हैं गाय, दाम, दण्ड, भेद ।

मं० नीतिकला श्री० राजनीति,
हिकमत मयजी, गानगी ।

मं० नीतिवात्री } मुद्रकमा
नीतिरिवागक } दीवानी ।

मं० नीतिज्ञ नीति + ज्ञा=जानना)
पु० नीति जाननेवाला, राजज्ञानी ।

मं० नीति (मं० निष्ठा, निष्ठा-
मय) पु० एक वृत्त
नीति, ३ नाम ।

मं० नीति (नी=जाना) पु० गानी
तल, २ रस ।

मं० नीतिज्ञ—(नीति=गानी, तल=पैदा
होना) पु० कपत, कैपत, २ उद
विज्ञान, गु=गानी पैदा हुई नीति ।

मं० नीतिज्ञ—(नीति=गानी, दाम=देना)
पु० वादल देना, दन ।

मं० नीतिज्ञ—(नीति=गानी, पु=र-
कता) पु० वादल देना ।

मं० नीतिनिधि—(नीति=गानी, निधि
=जानना) पु० समुद्र, समुद्र,
सागर ।

मं० नीतिज्ञ—(नीति=गानी, तल=पैदा
हुना) पु० नीति, नीति, कपत, कैपत ।

सं० नील—(नीन्=नीला होना)

मु० नीला, काला, कृष्ण २ सौ सार ।
श्री० एक पीथा जो नीला रंगने के
काम में आता है, २ एक नदी का
नाम जो मिमर देश में है, पु० एक
पहाड़ का नाम, २ एक घानर का
नाम, ३ कुवेर की नी निधि अथवा
राजाने में का एक राजाना ।

मं० नीलकण्ठ—(नील=नीला, कण्ठ
=गला) पु० महादेव जिन्होंने
समुद्र मगने के समय विष निकला
था उसको पिया इस लिये उनका
गला नीला हो गया, २ मोर
मयूर, ३ एक पक्षी का नाम कटाग ।

मं० नीलगांव—(सं० नीलगौ)
श्री० नीली गाय, रोझ ।

मं० नीलर्षाव—(नील=नीली, र्षीय
=गानन) पु० महादेव, शिव, पु०
नीला गलावाजा, शिवका गला
नीला हो, २ मोर ।

मं० नीलम—(मं० नीलमणि) पु०
नीले रंग का रत्न, समुद्र ।

मं० नीलमणि—(मं० नील=नी-
ला, मणि=रत्न) श्री० नीलम,
समुद्र ।

मं० नीला—(मं० नील) पु० नील
में रंग हुआ, नीलमणि ।

मं० नीलाशया—पु० नीला,
नीला ।

प्रा० नीलाम—(पोर्तुगालकी भाषा
के शब्द 'लेलाम' "Lellam"

का अर्थ है) पु० किसी चीज को
एक मोल पर नहीं बिके पहले कुछ
मोल मोलना फिर ज्यों ज्यों ग्राहक
मोल बढ़ाते जाते हैं अन्त में जो सब
से अधिक बोझ उसीको बेच देना ।

सं० नीलाम्बर—(नील=नीला, अम्बर
=रूपड़ा जिसके हो) पु० बलदेव,
शंकरभर ३ नीला रूपड़ा ।

सं० नीलोत्पल } नील = नीला,
नीलोत्पल } उत्पल = लता, उ
त्पल = रूपल, पु० नीला पत्रपर,
नीलमणि वा नीलरमल ।

सं० नीवार-नी, वृ=आच्छादनकरना
पेना) पु० विभी का वृत्त, तालाब
का चावल ।

सं० नीवी—स्त्री० पत्नी का मूल धन,
पूँजी, कमरबन्द, ईजारबन्द, नारा ।

सं० नीवृत्त-पु० देश, जनपद, जनस्थान ।

सं० नीशार—(नी + शृ=पारना) पु०
नग्न, कनात देरा, कपल, रेशमी वस्त्र ।

सं० नीहार—(नी, ह=छेना) पु० घना
पाछा, भोस, कुरह, गिरिहर ।

सं० नूतन } (नव, नु=पराटना)
नूत } पु० नया, नवोत्पन्न, नववत् ।

प्रा० नून } (नं० लक्षण) पु० नि-
नोन } मर, नमक, लोन, सार ।

सं० नूपुर—(नू=गहना, पुर=धागे
जाना, अर्थात् जो सब गहनों के
धागे रहता है) पु० विलिखा, पांव
की अंगुलियों में पहनने का गहना,
नूपुर । [मनुष्य, पुरुष, नर, मर्द ।

सं० नृ—(नो=लेजाना वा चिल्ला) पु०

सं० नृग—पु० एक सूर्यवंशी राजा
का नाम ।

सं० नृत्त } (नृ=नाचना) पु० नाच,
नृत्य } नर्तन ।

सं० नृत्यक—(नृ=नाचने) पु०
नाचनेवाला, नचैया ।

सं० नृप—(नृ=मनुष्य, प=पालनेवाला,
पा=पालना) पु० राजा, भूपाल, स्वपति ।

सं० नृपघाती—(नृप=राजा, हन्=
मारना) पु० पु० राजाओं का
मारनेवाला, परशुराम ।

सं० नृपति—(नृ=मनुष्य, पति=स्वामी,
पालक) पु० राजा ।

सं० नृपाल—(नृ=मनुष्य, पाल=पा-
लना) पु० राजा ।

सं० नृगम—(नृ=मनुष्य, गम=मार-
ना) पु० मारनेवाला, दुष्ट, दुःख-
दायी, दुष्ट, गद्गदी, गद्गदी, गद्गदी ।

सं० नृमिह—(नृ + मिह) पु० नर-
मिह अन्तर ।

सं० नृहरि—(नृ=मनुष्य, हरि=मिह)
पु० नरमिह अन्तर ।

प्रा० नेवल } (मं० नकुल) पु० एक
नेवला } जानर का नाम ।

प्रा० नेवार } (फा० नेवार) स्त्री० एक
निवार } मकार की चौड़ी पट्टी

या कोर जिससे पलंग बुने जाते हैं ।

प्रा० नेह- (सं० स्नेह) पु० प्यार, मीन,
मोह, मुरच्छन । [मित्र ।

प्रा० नेही- (सं० मेरी) पु० प्यारा,

प्रा० नेन } (मं० नदन) पु० छां-
नेना } र, नेत्र, लोचन ।

सं० नेमित्तिक-भा० पु० निमित्त स-
म्बन्धी, निमित्तसे ज्ञाया, पैरमम-
मुनी, जो रोज न हो ।

सं० नेमिप- (निमित्त, अर्थान् जहां
विष्णु ने पल्लवर में एक राजस को
माराया) पु० एक तीर्थका नाम ।

सं० नेमिपारण्य- (नैमिष + आरण्य)
पु० एक जंगल का नाम जहां
बहुत ऋषि रहते थे और जहां मू-
नभी ने इन सनकादि ऋषियों को
मरामारत और पुगण आदि
मुनाये थे ।

सं० नेयायिक- (न्याय) पु० न्याय
शास्त्र ज्ञाननेवाला, न्यायशास्त्र का
पण्डित, मुनिक ।

सं० नेराश्य-भा० पु० निरासर,
न उम्भेदी, आशानुष्य, आशामित्त ।

सं० नेर्हत्य- (नैर्ह्य= एक राक्षस
का नाम जो इसकोण का दिक्पाल
है) पु० दक्षिण पश्चिमका कोण ।

सं० नेवेद्य- (निवेद पु० देवता का
योग, प्रसाद, चढ़ावा, बलि ।

सं० नैसर्गिक-भा० पु० स्वाभावि-
क, तबथी, दिखी ।

सं० नैष्ठिक-भा० पु० धार्मिक, मुश्क-
कित, विश्वासिक, स्त्री० नैष्ठिका, धा-
मिका, विश्वासिका ।

प्रा० नेहर-पु० पीहर. पैरा, स्त्री के
बाप का घर ।

प्रा० नोकचोक-बोल० स्त्री० संके-
नों से बातें करना, इशारों से बानें
करना, २ लागडाट ।

प्रा० नोकभोक-बोल० स्त्री० खंचा-
खंची, चढ़ाउपरी ।

प्रा० नोचना-कि० स० खसोटना,
खसोटना, खरोटना, बीलडालना,
नख से लसाइना ।

अं० नोट-पाददाशन, २ हुपही,
३ हागिया, ४ निशान ।

फा० नोकर-पु० बाहर, सेवक, दास ।

फा० नोकरी-स्त्री० बाकरी, सेवा ।

सं० नो } (मुह= चलाना) स्त्री०
नौका } नाव, तरण्णी ।

प्रा० नोस्तण्ड- (मं० नव सरण्ड) पु०
पृथ्वी के नव भाग, १ मरुत २ इ-
नाटन ३ सिम्पुरुपट मद्र ४ वेगुमा-
ट ५ हिरण्य ६ कुरु = रम्य ७
हरिचर्प ।

प्रा० नौगरी-स्त्री० श्रियों के हाथ में
पहनने का गहना, नौमिरही ।

प्रा० नौदावर-स्त्री० निदावर, म-

प्रा० नेक } गु० कुद, थोड़ा, अला,
नेकु } तनक, जरा ।

फ्रा० नेकनाम—नामवर, यशस्वी,
मुख्य ।

सं० नेक्ता—(निम्न + कु, मित्र = पोषण
करना) द० पु० पोषक, पालक,
पोषणकर्ता ।

प्रा० नेग } पु० व्याह में अगवा
नेगचार } और किसी उत्पन्न में
अग्ने मानेदारों को कुल देना,
व्याह में पुरोहित की दक्षिणा, २
बांटा हिम्मा ।

प्रा० नेगी—(नेग) गु० बैद्यनेवाला,
हिस्सेदार, २ पत्ता, पैगवा ।

सं० नेजक—(निम्न + अक, निम्न = शुद्ध
करना) द० पु० घोड़ी, परिष्कारक ।

सं० नेजन—पा० पु० शोधना ।

सं० नेजा—(नी = नेजाना) द० पु०
नेजानेवाला ।

सं० नेनय्य—सं० पु० नेजाने शोध ।

सं० नेनि—(न = नहीं, नि = यह) गु०
ऐसा नहीं, यह नहीं, जिसका पार
नहीं, अमल, परमेश्वर का गुण ।

प्रा० नेनी—(सं० नेत्र, नी = नेजाना वा
चजाना) श्री० दर्शन करने वाला ।

सं० नेत्र—(नी = नेजाना, वा चजाना
वा बड़े बड़ा, वा जाना) द० आंग,
नरन, लोचन, २ नेत्र, गु० ना-
बह, बटाये जाता ।

सं० नेत्रन्द—(नेत्र = आंग, दृष्टि =

दृष्टि) पु० नेत्र पुट, आँखें पट ।

सं० नेत्राम्बु—(नेत्र = आंग, अम्बु
= पानी) पु० आँसू, आँसू का पानी ।

सं० नेपथ्य } पु० पर्दा से रास्ता,
नेपथ्य } आइदा रास्ता, विनय
के लिये सभी भूमि, मनान्तर, अलं-
कार, पन्थ ।

सं० नेपाल—पु० एक देश का नाम ।

प्रा० नेपुर—(सं० नूपुर) पु० नूपुर ।

सं० नेम—गु० अर्थ, आशा, निश्चय ।

प्रा० नेम—(सं० नियम) पु० बचन
मण, प्रतिज्ञा, संकल्प, धांचा, होद,
हउ, २ मन संयम आदि ।

सं० नेमि—श्री० धुरी जिसमें पहिया
लगे पु० नित्री, जड़नी चायल ।

प्रा० नेमधर्म—(सं० नियम धर्म) पु०
उपवास, व्रत, २ अच्छा चलन ।

प्रा० नेरे } (सं० निकट) निश्चय
नेरो } पाम, समीप, नगीच ।

प्रा० नेव }
नीव } श्री० पीन की जड़ ।

प्रा० नेवतना } (सं० निमन्त्रण)
न्योतना } कि० गा० न्योतना,
गिजाने के लिये बुलाना ।

प्रा० नेवता } (सं० निमन्त्रण) पु०
नोता } बुलाइए, गिजाने के
न्योता } लिये बुलाना ।

प्रा० नेवर } पु० घोड़े के पंख का पार,
नेवल } कपड़ा रोग ।

प्रा० नेवला } (मं० नेवला) पु० एक
नेवला } जलरत्न का नाम ।

प्रा० नेवार } (फा० नेवार) स्त्री० एक
नेवार } मछार की बीड़ी पट्टी
या कीर जिसमें पलंग बुने जाते हैं ।

प्रा० नेह- (मं० नेह) पु० प्यार, प्रीति,
मोह, मुहब्बत । [मिश्र ।

प्रा० नेही- (मं० नेही) पु० प्यास ।

प्रा० नेन } (मं० नेन) पु० जं-
नेना } ग, नेत्र, लोचन ।

मं० नेमित्तिक- (मं० नेमित्तिक) निमित्त स-
म्बन्धी, निमित्तसे व्याप्य, गैरव्य-
मुक्ती, जो रीति न हो ।

सं० नेमिप- (निमित्त, अर्थात् जहां
विष्णु ने पल भर में एक राजस की
काराया) पु० एक तीर्थका नाम ।

सं० नेमिपारण्य- (नेमिप + आरण्यः
पु० एक जंगल का नाम जहां
पहुत ऋषि रहते थे और जहां स-
तभी ने इन सनरादि ऋषियों की
महाभारत और पुराण आदि
श्रुताये थे ।

सं० नेयायिक- (न्याय) पु० न्याय
शास्त्र ज्ञाननेवाला, न्यायशास्त्र का
पण्डित, मुनिसिंह ।

मं० नेरादय- (मं० नेरादय) पु० निरासरा,
न रम्भेदी, आशाशून्य, आशाशून्य ।

सं० नेर्ऋत्य- (नेर्ऋत्य= एक रासस
का नाम जो इस कोण का दिकपाल
है) पु० दक्षिण पश्चिम का कोण ।

सं० नेवेद्य- (निवेद्य पु० देवता का
भोग, मम द, चढ़ावा, बनि ।

सं० नेसर्गिक- (भा० पु० स्वाभाविक,
व्यवस्थित, दिव्य) ।

सं० नेष्टिक- (भा० पु० नाष्टिक, मुसल-
मन, विरहासिंह, स्त्री० नेष्टिका, भा-
दिष्टा, विरहासिका ।

प्रा० नेहर- पु० पीहर, पैदा, जो के
पाय का पा ।

प्रा० नोकचोक- (नोक० स्त्री० संके-
तो से पाने करना, इशारों से पाने
करना, २ नागदाट ।

प्रा० नोकभोक- (नोक० स्त्री० संवा-
रेंबी, चढ़ाउपरी ।

प्रा० नोचना- (क्रि० स० ससोटना,
बरोटना, सरोटना, झीलझलना,
नख में उतराटना ।

अं० नोट- (पाददारन, २ हुपरी,
३ हाशिपा, ४ निरान ।

फा० नोकर- पु० वाकर, सेवक, दास ।

फा० नौकरी- स्त्री० वाकर, सेवक ।

सं० नौ } (नौ= चलाना) स्त्री०
नौका } नाव, तरणी ।

प्रा० नौखण्ड- (मं० नव राण्ड) पु०
पृथ्वी के नव भाग, १ भारत २ इ-
लाह ३ हिन्दुस्थान ४ अफ्रीका ५ अमेरिका
६ अस्ट्रेलिया ७ कुरु ८ रम्य ९
हरिष्य ।

प्रा० नोगरी- स्त्री० सियों के हाथ में
पहनने का गहना, नौगिररी ।

प्रा० नौलावर- स्त्री० निदावर, ग-

नाः ॥—अर्थ ? मोहना, रमस्तकर
ना, रेमुगाना, ४ सताना या जलाना,
५ शिथिल अथवा अचेन करना
येनां कामदेवके बाण कहलाने हैं।

सं० पञ्चगात्र—पु० हाथ, कर, पां-
चगात्रा अर्थात् अंगुली ।

सं० पञ्चमुना—श्री० भीम=वय
स्थान, मुन्नी चून्हा, पेगर्मी, चन्नी,
चंदनी, गली व मोलना, उपकरण,
बहनी, उदकुम्भ, पनीपी वा पड़ा
रगनेहा स्थान ।

सं० पञ्चाक्ष—(पञ्च + अक्ष) पु०
निविपय, पञ्चा (निमये ? निधि,
० चार, ३ नक्षत्र ४ पाग ५ कण
ये पाच मान जाये) पञ्च-अक्ष
अक्षनामक द्रव्य कुंडुपं गुग्गुलुम
था । पञ्चाक्षमुद्यनं वीर्योद्धानवि-
धादमुषः पञ्चन ० अगम, ० हृष्ट
केसर, ४ गुग्गुलु, १ प. त, ० हृष्ट
३ लह, ४ पल, ३ द. र ।

सं० पञ्चानन—(पञ्च-विम्ब, वा
पांच, आनन=मुख) पु० मिष्ट,
केसरी, मेर, ० मिष्ट, महारिक्त ।

सं० पञ्चामृत—(पञ्च + अमृत) पु०
१ दूध, २ दही, ३ चीनी, ४ दही, ५
महुइन पांचों से बनो हुने चम्पु ।

प्रा० पञ्चायन—(सं० पंच) श्री०
सभा जहां पांच आदमी मिलकर
विषय हलते हैं, विचार करने

की सभा ।

सं० पञ्चाल—पु० पंजाबदेश ।

सं० पञ्चालिका—श्री० कठपुतली,
गुड़िया, गुट्टा, २ द्रौपदी ।

सं० पञ्चावस्था—श्री० बाल्य, कुमार,
पौगड, युवा, वृद्धा ।

सं० पञ्चेन्द्रिय—(पञ्च + इन्द्रिय)
श्री० पाच=इन्द्रि, (इन्द्रिय शब्द
को देगो) ।

सं० पञ्जर—(पञि=रोकना वा घेर-
ना) पु० पंचश्री, ठडली, पंचनिर्घोका
समूह, ० पिंजर ।

सं० पट—(पट-घेरना वा घेठना) पु०
कपड़ा, पत्रा, २ पगड़ा, आड़, झोटा

प्रा० पट (सं० पटव, पट=माना)
पु० गिरने वा मारने का शब्द, २
झिवाड़, झिजमिल, गु० ऊपर,
नीचे, उलटा, झींवा ।

सं० पटक—क० पु० देश, कनाम,
पटाव, दावनी कान रहने की जगह ।

सं० पटका—क० पु० मुलाहा, कोरी,
तुननेवाला ।

सं० पटवर—पु० तीर्णपत्र, पिपड़ा,
० कोर, मेव देवेराल, ठग ।

प्रा० पटकन—(पटकना) श्री०
पड़ाड़, घोट ।

प्रा० पटकनमाना—कोतः पड़ाड़
माना, नैवे गिरना ।

प्रा० पटकना—कि० ग० पड़ाड़ना

चे गिराना, दे पारना ।

पटका (सं० पट्ट=बैठना वा पेटना) पु० कपरबंधा, दुष्टा ।

पटड़ा } (सं० पट्ट, पट्ट=पेरना)

पट्टरा } पु० तस्त्रा, पाटा, पीड़ा ।

पट्टर-पु० धराधर, समान ।

पट्टना-क्रि० अ० मिलना,

र पाना (जैसे हुंदी का पटना)

(पानी सींचा माना, पनियाना,

भरना, ४ छाया जाना, ढकमाना ।

पट्टना (सं० पाटलिपुत्र) पु०

उहरकानाम जो सूखे विहार में है ।

पट्टनि-पु० रुगड़े, बख्त, उदना ।

पट्टानी } (पाट+रानी)

पाटरानी } स्त्री० परासी और

बड़ी रानी, महारानी ।

पट्टी (सं० पट्ट, पट्ट=पेरना)

स्त्री० लिप्यने की पट्टी, पट्टिया, त-

ल्ली, २ बर्षी सड़क ।

पट्टल—(पट्ट=कपड़ा, वा भाद,

ला=लेना) पु० ढकने का कपड़ा,

परदा, २ आंत का परदा, ३ समूह ।

पट्टली-स्त्री० पांत, पंक्ति, भ्रंजी ।

पट्टवाय-पु० कनान, नग्गु, देरा ।

पट्टवारी-पु० गांव का हिसाब

रखनेवाला ।

पट्टह—पु० बाना, पटा, २ टंका,

नङ्गारा, नगारा ।

प्रा० पट्ट—(सं० पट्ट, पट्ट=पेरना)

पु० पाट, पाटा, आसन जिस पर

हिन्दू लोग बैठ कर पूजा करते हैं

अथवा खाना खाते हैं, २ गद्दा ।

प्रा० पट्टका } पु० टोटा, मुर्गी,

पट्टाखा } सुवृंदर ।

प्रा० पट्टना—क्रि० स० सींचना,

पानी देना, पनियाना, २ चौका

देना, लोपना, घोपना, ३ छन को

कड़ी अथवा धरन से छाना, ४

हुंदी के कपड़े पाना, ५ भ्रगड़ा शांत

होना, भाग शांत होना ।

प्रा० पट्टाव—पा० पु० सिंघाई, २

छन बनाना, द्वार के ऊपर का काठ ।

प्रा० पट्टिया (सं० पट्टिका) स्त्री०

पट्टी, पट्टी, स्लेट, २ पु० गले में पहनने

का एक गहरा, ३ शिर के गुदे पार ।

सं० पट्टीर-पु० बसफोड़, २ चंदन,

३ पटा, ४ मूल, ५ केदार, कपारी,

६ कापदेव, ७ चलनी, ८ परीरा,

९ रांग, १० सदिह, ११ उदर ।

सं० पट्ट (पट्ट=माना वा अपराना) पु०

चतुर, निरुण, मचीण, नेत्र, होशिपार ।

सं० पट्टत्व—भा० पु० } (पट्ट)

पट्टता भा० स्त्री० } चतुराई,

निपुणता, मचीणता ।

प्रा० पट्टवा (पाट) क० पु० रेशम

२. सीस गंदे झरवा से० कौड़ी का
परिमाण, ३. व्यवहार, लेनदेन,
मूल्य, वेतन, श्राव, साग, करार ।

सं० पणन-पा० पु० विक्रय, बेचना ।

सं० पणित-म्य० पु० बेचागया स्तुन ।

सं० पणव-(पण=व्यवहार का ज्ञान
अथवा पण=सराहनः) पु० छोटा
दोल । [बुद्धि, मति, समझ ।

सं० पण्डा-(पण=सराहना) म्य०

प्रा० पण्डा-(मं०=विद्वत्) पु० दुजारी ।

सं० पण्डित-(पण्डा=बुद्धि) पु०
बुद्धिमान्, विद्वान्, पंडा हुआ,
विद्वन्, २. पढ़नेवाला, पाठक,
शिक्षक । [भियानी, दुर्ग ।

सं० पण्डितमन्य-इ० पु० विद्व-

प्रा० पण्डु-(सं० पाण्डु) पु० दि-
व्य, सीस पुराना रस, कुन्नी का
पत्र, और सुविष्ट कादि पाँचों
पाण्डवों का कान ।

सं० पण्य-(पण=देन देन करने
का सराहना) मा० पु० बेचने की
ग्य, लेन देन करने योग्य, व्यव-
हार करने योग्य, बेचने की वस्तु-
व्यापिक, २. सराहने योग्य ।

सं० पण्यगाला-(पण्य=देन देन
करने योग्य, गाला=बद) म्य०
दुकान, हाट, बाजार ।

सं० पण्यस्त्री-(पण्य=देन देन
करने योग्य, स्त्री=स्त्री) म्य०
बेचपा, नगरवासी, सुखी, सखी ।

प्रा० पत-(सं० पट=अधिकार) म्य०
प्रतिष्ठा, इज्जत, यावरु, बड़ाई,
नामवरी, २ (सं० पति) पु० स्त्रीपति,
प्रभु, धनी, मालिक, मर्चा, ३
(सं० पत्र) पत्र ।

सं० पतङ्ग-(पतन=गिरना) पु०
गङ्ग=जाना) पु० मृग, २ पतङ्ग,
पतंगा, टिहरी, उड़नेवाला कीड़ा,
३ मुर्छा, घनच्छा, ४ पतलकड़ी
जिनसे रंग निकलता है, पारा ।

प्रा० पतङ्गा-पु० चिनमासी, चिनगी ।

सं० पतञ्जलि-पु० शेष. परामाण्य
का बनानेवाला शर्करा ।

प्रा० पतङ्ग-पु० पतङ्गना, भट्ट=
भट्टना) म्य० पट शब्द का नाम
जिस में हड्डों के पत्रे भट्ट जाते हैं,
रिशिर ।

सं० पतन-(पट=गिरना) पु० पड़-
ना, गिरना, पड़ाव, पड़हन, पड़ना ।

सं० पतत्र-पु० पत्र, पत्र, पत्र ।

सं० पतदग्र-पु० पतदग्र, अग्र-
ग्रह, सेना, लश्कर ।

प्रा० पतला-(मं०=पतल) पु० पतल,
झीन्सा, पिरिन, दार्जिक, २ दूधना ।

प्रा० पतवार-म्य० पतवार में पट
बोर्ड जिन्से प्रहार करनेवाला ब्र-
ह्मा, नार का प्रहार ।

प्रा० पता-पु० विद्वान्, विद्वत्, म्य० ।

सं० पताका-(पट=पत्र

सं० पनस—(पन्=सराहना) पु० षट्-

हर, २ वन्दर का नाम ।

प्रा० पनसारी—(सं० पण्य=वेचने योग्य वस्तु, गृह=फैलाना) पु० पसारी ।

प्रा० पनसोई—स्त्री० छोटी नाव ।

प्रा० पनहारिन्—(सं० पानीय हा-
पनहारी) रिणी, पानीय=
पानी, हारिणी=लानेवाली) स्त्री०
पानी भरनेवाली ।

प्रा० पनही—(सं० पन्नद्धी, पद=पांव,
नह=चाँपना) स्त्री० जूता, जूनी,
पगरती ।

प्रा० पनारी—(सं० पणाली) स्त्री०
पनाली } मोरी, नाली, पणाली ।

प्रा० पनिया—(सं० पानीय) पु० पानी,
जल, गु० पानी का ।

प्रा० पनियाना—(पानीय) क्रि० सं०
सींचना, पानी देना ।

प्रा० पन्थ—(सं० पन्था, पथ=गाना)
पु० रस्ता, मार्ग, राह, २ मत, धर्म ।

सं० पन्नग—(पन्न=गिरता हुआ, वा
नीचे झुँक किये, गम्=चलना, वा पद=
पैर, न=नहीं, गम्=चलना, जो पैरों
से न चले) पु० साँव, सर्प, नाग ।

सं० पन्नगारि—(पन्नग=साँव, गारि=
वैरी) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।

सं० पन्नगाशन—(पन्नग=साँव, अश्न
=खाना) गरुड़, विष्णु का वाहन ।

प्रा० पनही—(सं० पन्नद्धी वा पन्नद्धी,

नह=चाँपना) स्त्री० उपानह, जूता,
पदत्राण । [पन्न, २ नीलपणि ।

प्रा० पन्ना—(सं० पर्ण) पु० पत्र,
सं० पपि—(पा=पीना) क० पु० पीने
वाला ।

सं० पपिस्—पु० मूष, चन्द्रमा, रत्नक,
पपी } पीनेवाला ।

प्रा० पपनी—स्त्री० आँसू की धरनी ।

प्रा० पपिहा—पु० एक पसेरु जो
पपीहा } बरसातमें बहुतबोला
करता है ।

सं० पपु—(पा=पाकना) क० पु० पालक,
पालनेवाला, रक्षा, रत्नक, पितृ,
पालक, स्त्री० माता, धात्री, दाई,
उपमाता, धाय ।

प्रा० पपोत्रा—पु० पलक, आँसूका पुट ।

सं० पयः—(पा=पीना) पु० दूध,
२ पानी, जल ।

प्रा० पयनिधि—(सं० पयः,
पु० समुद्र ।

सं० पयः—दूध

- दा=देना) पु० बादल, नदल ।
 सं० पयोधर-(पयस्=पानी वा दूध,
 धर=रखनेवाला, धृ=रक्षना) पु०
 धेय, बादल, २ स्त्रीकी चुंची, स्वन,
 ३ नारियल, ४ गद्या, ५ सुगंधित
 घास, ६ पर्वत, दुग्धवृक्ष ।
 सं० पयोधि-(पयस्=पानी, धा=रख-
 ना) पु० समुद्र, ७ सागर ।
 सं० पयोनिधि-(पयस्=पानी, निधि
 =छत्ताना) पु० समुद्र, सागर ।
 सं० पयोराशि-(पयस्=पानी, राशि=
 समूह, देर) पु० समुद्र, सागर ।
 सं० पर-(पू=भरना) पु० दूसरा,
 पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी,
 परदेशी, २ दूर, परे, अन्तर, पर, ३
 पिघना, ४ उचप, धेष्ट, शिरोमणि,
 मथान, सय से बढ़ा, ५ विरोधी,
 प्रतिहूल, ६ बहुत, अत्यन्त, अधिक,
 तत्पर, लगा हुआ, पु० बैरी, शत्रु,
 मि० वि० केवल, इसके पीछे,
 समुच्च० परान्तु, किन्तु, लेकिन ।
 प्रा० पर-(सं० उपरि) नित्य सं०
 ऊपर, वै ।
 सं० परकीया-(पर=दूसरा) स्त्री०
 दूसरे की स्त्री, पराये पुरुष के पास
 जानेवाली स्त्री ।
 ० परख-(सं० परीक्षा) स्त्री०
 जांच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी ।
 ० परखना-(सं० परीक्षण) क्रि०
 दा=देना) पु० बादल, नदल ।
 सं० पयोधर-(पयस्=पानी वा दूध,
 धर=रखनेवाला, धृ=रक्षना) पु०
 धेय, बादल, २ स्त्रीकी चुंची, स्वन,
 ३ नारियल, ४ गद्या, ५ सुगंधित
 घास, ६ पर्वत, दुग्धवृक्ष ।
 सं० पयोधि-(पयस्=पानी, धा=रख-
 ना) पु० समुद्र, ७ सागर ।
 सं० पयोनिधि-(पयस्=पानी, निधि
 =छत्ताना) पु० समुद्र, सागर ।
 सं० पयोराशि-(पयस्=पानी, राशि=
 समूह, देर) पु० समुद्र, सागर ।
 सं० पर-(पू=भरना) पु० दूसरा,
 पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी,
 परदेशी, २ दूर, परे, अन्तर, पर, ३
 पिघना, ४ उचप, धेष्ट, शिरोमणि,
 मथान, सय से बढ़ा, ५ विरोधी,
 प्रतिहूल, ६ बहुत, अत्यन्त, अधिक,
 तत्पर, लगा हुआ, पु० बैरी, शत्रु,
 मि० वि० केवल, इसके पीछे,
 समुच्च० परान्तु, किन्तु, लेकिन ।
 प्रा० पर-(सं० उपरि) नित्य सं०
 ऊपर, वै ।
 सं० परकीया-(पर=दूसरा) स्त्री०
 दूसरे की स्त्री, पराये पुरुष के पास
 जानेवाली स्त्री ।
 ० परख-(सं० परीक्षा) स्त्री०
 जांच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी ।
 ० परखना-(सं० परीक्षण) क्रि०
- सं० जांचना, परीक्षा करना, देख-
 ना, निरखना ।
 प्रा० परचूनिया-पु० आटा दाल
 बेचने वाला, मोदी, यनिर्या ।
 प्रा० परछना-क्रि० सं० दुल्हा और
 दुल्हिन की भारती उत्तारना ।
 प्रा० परजंक-(सं० पर्यङ्क) पु० पर्यङ्क
 सं० परजात-(पर=अन्य, जात=
 उत्पन्न) र्थ० पु० अन्य से उत्पन्न,
 दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंस्कार, जार-
 ङ, बार से पैदा किया गया,
 २ दूसरी जान का, दूसरे कामका ।
 प्रा० परत-स्त्री० पुट, तह, चुनत,
 लक, पाक, २ नकल, कापी ।
 सं० परतन्त्र-(पर=दूसरा, तन्त्र=
 मथान है जिस का, अपवा पर=
 दूसरे के तन्त्र-बश में) पु०
 परबश, पराधीन, दूसरे के बश ।
 प्रा० परतला-० तलवारकीपट्टी ।
 प्रा० परती-(पढ़ना) स्त्री० पढ़ी
 परती, बिन बोई परगी, बंजर ।
 सं० परत्र-अन्य० अन्यत्र, परलोक,
 और जगह, दूसरी जगह ।
 सं० परत्व-मा० पु० मिथना, दुर्दार्ढ,
 कासला, शत्रुता, धेष्टता, पक्षध ।
 सं० परदेश-(पर=दूसरा, देश=पुरक)
 पु० विदेश, पराधादेश, और मुल्क ।
 सं० परदेशी-(परदेश) पु० विदेशी ।
 सं० परन्तप-पु० शत्रु, दुष्ट, पु० शत्रु=

सं० परमायुस् - (परम + आयुस्)
पु० बड़ी उमर, दीर्घायु, दी-
र्घायु, दशमद्वय ।

सं० परमेश्वर - परम + ईश्वर) पु०
सर्वशक्तिमान्, परमान्, ईश्वर ।

सं० परमेश्वर - (परम + ईश्वर) पु० भेष्ट,
मदान्, परमेश्वर, मन्त्र, देवना ।

सं० परमेश्वर { पु० प्रसा, गुरु ।
परमेश्वरी }

सं० परमोदार - (पर = वडा, उ-
दार = दातार) पु० बडा दातार,
भेष्ट, उत्तम ।

सं० परम्परा - (परम् = पण्डित, पृ वा
पृ = पूरा करना वा भरना) स्त्री०
सामान, धरा, पीढ़ी, २ रीति, परि-
पाटी, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय
की रीति, कदामन, परंपरा से, कि०
वि० पहले से, जगह से समय से ।

० पराला - (सं० पर) पु० दूसरी
ओर का, उस तरफ का ।

परलोक - (पर + लोक) पु०
गी, दूसरा लोक, मृत्यु, शत्रुजन,
पञ्चन, भेष्टजन ।

विश्व (पर = दूसरे के, वश =
न) पु० पराधीन ।

{ (पर = बैरी, मृ = मारना,
नाशकरना) पु० क-
रना, कुट्टाई, टोंगी ।

पर - (परशु = फरसा, धृ = रक्ष-
ना) पु० परशुराम ।

सं० परशुराम - (परशु + राम,
करसा रगनेवाला राम) पु० म-
क्रपिका बंटा और विष्णुका
अवतार जिसने राजा-सदस्य
को मारा और इसीसे बार पृथि-
के सब क्षत्रियों को नारा किया ।

सं० परवश - पु० पराधीन, परा-
भरोसा, पराया सहारा ।

प्रा० परस - (सं० राश) पु० छूना,
गुहाघट, स्पर्श ।

प्रा० परसत - कि० वि० छूनेही, स्पर्श
करते ही ।

प्रा० परसना - (सं० राशीन, स्पर्श =
छूना) कि० स० छूना ।

प्रा० परसों - (सं० परभव, पर =
विघ्न वा दूसरा, भस् = हल का
दिन) कि० वि० आगे वा पीछे
का तीसरा दिन । [ठहरना ।

प्रा० परस्थो - पु० रहना, वास करना,
सं० परस्पर - (पर = दूसरा, पर = दूसरा)
कि० वि० आपस में, दोनों में,
अन्योन्य एक दूसरेको, ज्ञात्न ।

सं० परा - उपस० उलटा, पीछे,
विपरीत, २ प्रभुता, बड़ाई, ३ विरोध,
४ अहंकार, ५ अनादर, निरुद्धार,
६ बहुत, अधिक, ७ जोर, बल,
सामर्थ्य, ८ से ।

प्रा० परा - पु० पान्त, श्रेणी, दल,
समूह, बंद्गी, २

सं० परिहास्य—अर्थ० पु० इसी के
लायक, हैमनेयोग्य ।

सं० परिहित—अर्थ० पु० आच्छादिन,
घेरा हुआ, आच्छन्न, गृम पोशीदा ।

सं० परीक्षक—(परि=चारों ओर से,
ईश=देखना) भा० पु० परीक्षा करने
वाला, परखनेवाला, इम्तिहान
छेनेवाला ।

सं० परीक्षा—(परि=चारों ओर से,
ईश=देखना) भा० स्त्री=परख, नाँव,
इम्तिहान । [को देखो ।

सं० परीक्षित—पु० परीक्षित शब्द

सं० परीक्षोत्तीर्ण—(परीक्षा + उत्ती-
र्ण, कृ=कराना) गु० परीक्षा में
पुरा, इम्तिहानपास, केननहीं, गस ।

सं० परुष—(पृ=भरना, गु=कठोर,
कड़ा, पु० कुचबन, गाली ।

प्रा० परे—(सं० पर) क्रि० वि=उपर
उस ओर, दूर, परे रहना, चोल=
दूर रहना ।

प्रा० परेखा—(सं० परीक्षा) स्त्री०
परख, नाँव, देखना, परचाचाप ।

सं० परेत—(परा, इण=जाना) पु०
भूत, पिशाच, शैतान, गु० मुर्दा, मृतक ।

प्रा० परेता—पु० रहता, चर्खा, चर्खी ।

प्रा० परेवा—पु० कपोत, कपूर,
मदिन्दा । [कल, कर्दा ।

सं० परेशुम्—अर्थ० दुमरा दिन,
सं० परोक्ष—(पर=परे, अक्ष=माँव)

गु० नहीं देखा हुआ, माँसोंके परे ।

सं० परोपकार—(पर=दूसरे का,
उपकार=मला) पु० दूसरेकापत्ता,
पराये का हित ।

सं० परोपकारी—(परोपकार) गु०
दूसरे का मला करनेवाला ।

प्रा० परोस—पु० सपीयदा, श्वेदा,
नजदीकी ।

प्रा० परोसना—(सं० परिवेषण,
परि=चारों ओर से, विष्=फैलाना)
क्रि० म० गाना पचनोमें रखना,
खाना चुनना, पचल लगाना ।

प्रा० परोहा—(सं० परीवार, परि=
सब ओर से बढ़=छे जाना) पु०
वरस, मोट, पुर ।

सं० पर्कटि—स्त्री० पाकरि, पकरिया ।

प्रा० पर्चा { (सं० परीक्षा) पु० परख,
पर्चा } नाँव, परीक्षा ।

प्रा० पर्चाना—(सं० परिवचन) क्रि०
स० भेट कराना, मिलाना, बातों
में लगाना ।

प्रा० पर्छाई—(सं० प्रतिच्छाया, प्रति
=अपने रूप, छाया=दाँव) स्त्री०
पनिविम्ब, आवस ।

सं० पर्जन्य—(पृष=सींचना, गर्जन
गर्जना) क० पु० मेघ, इन्द्र, मेघ-
गर्जन, नवीन मेघ, बरसाती-मेघ ।

सं० पर्ण—(पर्ण=हराहोना, बाँ पृ=
भरना) पु० पत्त, पान ।

सं० परिंरंभ—(परि+रंभ=उत्सुक
होना) पु० आलिगन, भेटना,
रलेप, मुलाकात ।

सं० परिवर्जन—(परि+वृज्=त्या-
गना) भा० पु० मारना, त्यागकरना ।

सं० परिवर्त्तन—(परि, वृत्=होना,
परि परि चपसर्ग के साथ आने से
इसका अर्थ बदलना होता है) पु०
बदल, एराफरी, गलतना, तबाहिला ।

प्रा० परिवा—(सं० प्रतिपदी) स्त्री०
पत्नी पहिलीविधि, पहलीतारी ।

परिवार्द—(परि=वृग्, वृद्=
कहना) पु० गाली, निन्दा, अप-
वाद, दुर्वाद । (सद्गो-
न)

सं० परिवार्दक—क० पु० निन्दक,

सं० परिवार—(परि=चारों ओर से
वृ=घेरना वा दबना) पु० पराना,
कुटुम्ब, परिभन ।

सं० परिवारण—(परि, वृ=घेरना) भा०
पु० मांगना, तकाजा करना ।

सं० परिवह—(परि, वह=बहना) पु०
चपदब, जलका, चढलना, बहाव,
चहचह, तरंग, लहर ।

सं० परिवृत—(परि=चारों ओर से
वृत्त=रहना) र्म० पु० रक्षित आ-
च्छादित, घिराहुआ, परिवेष्टित ।

सं० परिवेष्टन—(परि, वेष्ट=लपेटना)
भा० पु० लपेटना, लिफोफा ।

सं० परिव्राज—(परि=सब तरफ
परिव्राजक) वा सवकाम छोड़

के, व्रज=फिरना) क० पु० सन्यासी,
यती, योगी, गुसाई ।

सं० परिशिष्ट—(परि, शस्=सिताना) क०
पु० अवशेष, तितित्मा, बाकी, अवशिष्ट ।

सं० परिशोधन—(परि, शुध्=शुद्ध कर-
ना) भा० पु० श्रुणचुकाना, कर्जा
अदा करना, फर्चा करना ।

सं० परिश्रम—(परि=चारों ओर से
श्रम=मिहनत करना) पु० मिहनत,
धन, र्थकावट ।

सं० परिश्रान्त—र्म० पु० थकगया ।

सं० परिश्रमी—क० पु० मेहनती ।

सं० परिपद—(परि+सद्=जाना)
अनुवर, सेवक, समासद ।

सं० परिष्कार—(परि+कार, कृ=
करना) भा० पु० सफाई, स्वच्छता,
शुद्धता [भूषित ।

सं० परिष्कृत—र्म० पु० अलंकृत,

सं० परिष्वंग—पु० आलिगन, भेटना,
हमागोश होना ।

प्रा० परिहरना—(सं० परिहरण परि,
ह=छेना) क्रि० सं० छोड़ना,
दूर करना ।

सं० परिहार—परि+हार, ह=ह-
रना, लेना) भा० पु० हरना, लेना,
छीनना, अवज्ञा, अपमान, न्याय ।

सं० परिहाम—(परि=बहुत, हस=
हँसना भा० पु० हँसी, ठट्टा, की-
तुक, खेल, मस्खरी, लोकापवाद ।

सं० परिहास्य-र्म्यं पु० इसी के
लापक, हैमनेयोग्य ।

सं० परिहित-र्म्यं पु० आच्छादित,
पेरा हुआ, आच्छाद, गुप्त पोशीदा ।

सं० परीक्षक-(परि=चारों ओर से,
ईश=देखना) भा० पु० परीक्षा करने
वाला, परखनेवाला, इन्तिशान
छेनेवाला ।

सं० परीक्षा-(परि=चारों ओर से,
ईश=देखना) भा० स्त्री० परख, मांच,
इन्तिशान । [को देखो ।

सं० परीक्षित-पु० परिचित शब्द

सं० परीक्षोत्तीर्ण-(परीक्षा+उत्ती-
र्ण, कृ०=भारमाना) पु० परीक्षा में
पूरा, इन्तिशानपास, केननहीं, रास ।

सं० परुष-(पृ०=भरना) पु० बटोर,
कड़ा, पु० कुरबन, गाली ।

प्रा० परे-(सं० पर) क्रि० वि० उधर,
उस ओर, दूर, परे रहना, बोन०
दूर रहना ।

प्रा० परेखा-(सं० परीक्षा) स्त्री०
परख, मांच, देखनावा, परखाचाप ।

सं० परेत-(परा, इत्यु०=माना) पु०
मृत, पिशाच, भूतान, पु० मुर्दा, दूतक ।

प्रा० परेता-पु० परदा, चर्या, चर्या ।

प्रा० परेता-पु० कपोत, कपूर,
मलिनदा । [बल, चर्चा ।

प्रा० परेशुम्-अरु० दूषण दिन,

प्रा० पराम-(पर=दो, मसू=मांस)

पु० नहीं देखा हुआ, भांतीके परे ।

सं० परोपकार-(पर=दूसरे का,
उपकार=भला) पु० दूसरेका भला,
पराये का हित ।

सं० परोपकारी-(परोपकार) पु०
दूसरे का भला करनेवाला ।

प्रा० परोस-पु० सधीपडा, खेड़ा,
नसदीही ।

प्रा० परोसना-(सं० परिषेपण,
परि=चारों ओर से, बिप्=फैलाना)
क्रि० म० राना पचलोंमें रखना,
छाना चुनना, पचल छगाना ।

प्रा० परोहा-(सं० परीवाद, परि=
सप ओर से बह=ले जाना) पु०
वरम, मोट, पुर ।

सं० पर्कटि-स्त्री० पाकरि, पकरिषा ।

प्रा० पर्चा (सं० परीक्षा) पु० परख,
पचाँ, मांच, परीक्षा ।

प्रा० पर्चाना-(सं० परिषेपण) क्रि०
सं० भेंट कराना, दिताना, बाँटो
में लगाना ।

प्रा० पर्छीई-(सं० मनिच्छाया, पानि
=छपने कर, छाया=छाँव) स्त्री०
रजिदिम्ब, अक्कम ।

सं० पर्जन्य-(पृ०=मीनना, गर्भन
गर्भना) पु० पु० देव, इन्द्र देव-
गर्भन, लकीन देव, रातावीर देव ।

सं० पण्य-(पर=दो, पण्य=मांस)
भरना) पु० पण्य, पान ।

सं० पर्णकार—क० पु० चरई, तम्बोली।

सं० पर्णशाला (पर्व=पत्ता, शाखा
=चर) स्त्री० पत्तों की बनी कुट्टी, भोपड़ी।

सं० पर्णी—क० पु० टुकड़ा, पेड़।

—(पर्व + जना या पूरा होना)

गोंड, गिरह।

पर्व—(परि=भास, अङ्क=गोंड

अङ्क=माना या चिह्न करना) पु०

पलंग। [पथिक।

सं० पर्यटक—क० पु० मुसाफिर,

सं० पर्यटन—(परि=चारों ओर, अ-

टन=घूमना) भा० पु० घूमना, भ्र-

मण करना, सफर करना, सै-

रकरना।

सं० पर्यन्त—(परि=भास, अन्त-

सीमा) पु० अन्त, सीमा, इद-

अव्य० तक, तलक।

सं० पर्याप्त—(परि=चारों तरफ, आ-

प्त=प्याप्त होना) पु० समर्थ, तुम योग्या

सं० पर्याय—(परि=चारों ओर से,

इज्=माना) पु० एक अर्थ का शब्द,

व्यक्ती शब्द २ — सीते, ३

प्रकार, ४ प्रवर्ग,

१०० ११११

बोधक, सुतरादिक

—(परि

करना, सब प्रकार से देखना।

सं० पर्व—(पृ=भरना) पु० त्योहार,
उत्सव, अभ्यास, परिच्छेद, रेगांड।

सं० पर्वणी (पृ=भरना) स्त्री०
पर्वणी त्योहार, उत्सव,

तिवहार।

सं० पर्वत—(पर्व=भरना) पु० पहाड़,

शैल, गिरि, भूवर।

सं० पर्वतारि—(पर्वत + अरि) पु० दंष्ट्रा

सं० पर्वतीय—(पर्वत गु० पहाड़ी,

पहाड़ का।

सं० पल—(पल=जाना स्त्री० पड़ी

का साठवां भाग, निमेष, दम, आन,

लहमा। [रुग निकारी, दूरी।

प्रा० पलगात्रि—क्रि० वि० निवार,

प्रा० पलभरमें—बोल० नुग्न, उसी

दम, पल मारने। [भरमें।

प्रा० पलमारने बोल० नुग्न, पल

प्रा० पलक—स्त्री० भाव का पुट, प-

पेटा, बरुनी, पपनी, २ पल, क्षण।

प्रा० पलंग (पं० पलंग परि + अङ्क)

पु० मेज, शय्या, रात, चारपाई।

पलन—(अं० वैयलियन)

१ सितोदियोका पुंश, या

क्रि० क्रि०

प्रा० पलटा-(पलटना) पु० बदना,
पराफेरी, पहा, बदला बदला,
२ मतिकल, पीछा, उपहार करना,
३ पीछा बैर लेना ।

प्रा० पलटालेना-बोल० पीछा ले
लेना, लौटा लेना, २ बदला लेना,
३ बैर लेना, बैर सारना ।

प्रा० पलड़ा-पु० तराजू का एक पल्ला ।

सं० पलाण्डु-पु० व्याघ्र, सस्यगम ।

प्रा० पलथी-स्त्री० कुना टेक कर
जमीन पर बैठना, एक मशर का
आसन वा बैठने का टेंग ।

प्रा० पलना-(सं० पलन, पल्ल=व-
चाना) क्रि० अ० पनपना, प्रति-
पालित होना ।

प्रा० पलवल-(सं० पटोल, पट-
ल जाना) पु० परबल, एक तरकारी
का नाम ।

प्रा० पलवार-पु० एक प्रकार की नाव ।

प्रा० पल्ला-पु० बड़ा नमचा, कलहुज,
दर्धी, डोई, तेल आदि निकालने
का बरतन ।

सं० पलायन-पिशा से, अथवा व-
लटा, अय्य=जाना) पु० भागना,
भागभाग ।

सं० पलायक-क० पु० भगोड़ा ।

सं० पलायित-क० पु० भगोड़ा,
प्रस्थित, चम्पत ।

सं० पलाश-(पल्ल=चलना, अंगु-

फैलाना वा साना) पु० टेसू का
वृक्ष, दाऊ का वृक्ष ।

सं० पलित-(पल्ल=चलना, जाना)

भा० पु० वृद्ध, बुढ़ापा, सफेदवाल,
गु० वृद्ध, शिथिल, पुराना ।

प्रा० पल्ली-स्त्री० चमची, जिससे
तेल आदि निकाला जाता है ।

प्रा० पलीत-(सं० पेत) पु० भूत,
पिशाच, भेत ।

प्रा० पलीता-(का० पलीता वा फलीता)
पु० बची, २ बंदूक का तोड़ा, जामगी ।

प्रा० पलेधन-पु० सखा आदा जो
रोटीपर बेलने के समय लगाया
जाता है ।

प्रा० पलेधननिकालना-बोल०
बहुत मारना, बहुत पीटना ।

प्रा० पलोटना-क्रि० सं० धीरे २
पाँव दाबना ।

सं० पल्ल-पु० गोला, गोली ।

सं० पल्लव-(पल्ल=जाना, और ल-
वाटना, अथवा पल्ल=जाना) पु०
नया पत्ता, अंकुर, बेल ।

सं० पल्लवग्राही-(ग्रह=लेना) क०
पु० पत्रा बांधनेवाला, पुरोहित ।

सं० पल्लवित्त-(पल्लव) पु० नये पत्तों
वाला, नये पत्तों से युक्त, २ पुनर्निवृत्त,
रोमांचित, हर्षित, प्रसन्न ।

प्रा० पल्ला-पु० अन्नार, दूरी, टप्पा,
२ सहायता, ३ कपड़े का छोर,
अंचल, ४ छोर, किनारा, ५ कि-

बाढ़, ६ तीनमन बोझका ।

सं० पहली-स्त्री० छसकिली, २ स्वला
शाय, छोटा गाँव, ३ कुटी, भोपड़ी,
४ कुटनी । [चल, अंचल, छोर ।

प्रा० पल्लू-पु० कपड़े का खंड, आं-

प्रा० पल्लूदार पु० कपड़ा जिसका
पल्ला, मुनहरी वा रूपहरी हो ।

सं० पल्लव-पु० तलैया, पानी का
मरा गड़हा, छोटा तलाव ।

सं० पवन-(पू=विचित्रकरना) स्त्री०
हवा, वायु, वपार, वतास, धाव, पवन
का पूत=हनुमान् ।

सं० पवनकुमार-(पवन=हवा, कु-
मार=बेटा) पु० हनुमान् पवन
का बेटा । [=बेटा] पु० हनुमान् ।

सं० पवनतनय-(पवन=हवा, तनय

सं० पवनायन-पु० झरोखा, लिङ्ग-
की, मोटा ।

सं० पवनरेखा-(पवन=हवा, रेखा=
वादीर) स्त्री० लग्नभेनकी स्त्री और
कंस की मा ।

सं० पवनाशन-(पवन=हवा + अ-
शन=भोजन, अश=खाना) पु०
बाहुभक्ष, मर्ग, मार्ग ।

सं० पवनमुत-(पवन=हवा,
वेष्ट) पु० हनुमान् पवन का

प्रा० पवारना-ठि० स० फे-
दातन, भेजना ।

सं० पवि-(पू=शुद्ध करना,

दुष्ट जनों को मार पीटकर शुद्ध
करना) पु० वज्र, इन्द्रकाशस्त्र, हीरा ।

सं० पवित्र-(पू=शुद्ध करना) पु०
शुद्ध, निर्मल, पापहित, साफ,
विमल, पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ, २
कुश, ३ नाँवा, जल ।

सं० पवित्रता-(पवित्र) भा० स्त्री०
निर्मलता, शुद्धता, मकई ।

प्रा० पवित्री-(सं० पवित्र) स्त्री०
कुश घामकी अथवा सोना, चांदी,
और ताँबा इन तीनों धातु की
बनी हुई अंगूठी जिसको हिंदु लोग
पूजा करने समय पहनते हैं ।

सं० पश-(पश जाना बाँधना)
पु० स्पर्श, बाँधना, मथना, पीड़ा,
गु० छूनेवाला, बाँधनेवाला, जघ्र ।

सं० पशु-(इश=देखना, जो मश को
बराबर देखता है और भले पुरेरा
विचार नहीं करता) पु० चौपाया
जन्तु, भीव, गाय भैंस घोड़ा आ-
दि, २ देवता ।

सं० पशुपति-(पशु=देवता, अथवा
चौपाया (पशुपति)
पु० महादेव,

पशुपाल }

सं० पश्चात्—क्रि० वि० पीछे, इसके
: पीछे, २ पश्चिम दिशा की ओर ।

सं० पश्चात्ताप—(पश्चात्=पीछे,
ताप=दुःख) पु० शब्दनाश, पसनावा,
अनुनास ।

सं० पश्चिम—(पश्चात्=पीछे) स्त्री०
: पश्चिमदिशा, पछाँह, गु० पश्चिमका ।

सं० पश्यतोद्हर—(पश्यतः=देखने २
हर=छुटा लेना) पु० मुनार, २
मृत्यु, ३ खोर । [पश्य, शिना ।

प्रा० पपान—(सं० पापाण) पु०

सं० पप्त—(पप्=पाँचना, पाँड देना)
पु० पाँचना, छुना, गु० पाँचनेवाला,
छुनेवाला ।

प्रा० पप्तरना—(सं० पप्तरण, प=पहुन,
रु=बानावापलना) क्रि० प्र० पलना ।

प्रा० पमली—(सं० पमर्ष) स्त्री०
पाँसुली, पछर, पाँसर ।

प्रा० पमाना—(सं० पमावण, पणु=
पूरा वा टपटना) क्रि० प्र० पाँड़
निहालना, बिदेहुदे पाँचली से से
पाती निहालना ।

सं० पमाना—(सं० पमावण, पणु=
पूरा वा टपटना) क्रि० प्र० पलना ।
विष्णु । [देखे ।

प्रा० पमर्षी—पु० पमर्षी : पमर्ष की

प्रा० पमर्षिणी—(सं० पमर्षिणी, पमर्ष=
निहालना, निहालना) क्रि०

अ० पियनना, नर्ब होना, पसीना
निहालना, २ कोमलचित्त होना ।

प्रा० पमूजना—क्रि० प्र० मुँना वा-
गना, रोना हाटना ।

प्रा० पसीना—(सं० पसेद, प, पिरद
=पसीना होना) पु० पसेर, पसेद ।

प्रा० पसेव—(सं० पसेद) पु०
पसीना, २ समझना, मुँदी ।

प्रा० पसनाना—(सं० पसापापकि०
अ० पदनाना, पदवापाव करना ।

प्रा० पट् शी० धोर, पड़वा, रोह,
भित्तार, सदेरा ।

प्रा० पट्फटना } शी० धोर होना,
पाँफटना } पड़वा होना, रो-
मुँदी फैलना, दिन निहालना ।

प्रा० पटवान—(पटवाना) स्त्री०
काजना, काज पटवान, काज, बि-
गास, लहलहा बिगासी, बिह ।

प्रा० पटवानना } (सं० पटवान)
पटवानना } बि० प्र० काजना
काजना, लहलहा करना ।

प्रा० पटनना—(सं० पटितन)
पटनना, बि० प्र० काजना
पटितना, पोटना, पटना
काजना, लहलहा करना, लहलहा

प्रा० पटनना—(पटनना) पु० का-
जना, पोटना ।

प्रा० पटन—(सं० पटन, पटनना) पु०

प्रा० पहुप (सं० पुण) पु० फूल,
पुहुप } सुमन ।
प्रा० पहेली- (सं० पहेलि अथवा
पहेलिका, प्र=बहुत, हेल् वा हेड
=प्रनादकरना) स्त्री० दृष्टकूट, गूढ
प्रदन श्लेष, सुभक्त ।
प्रा० पांक (सं० पंक) पु० कीचड़,
पांकां } दलदल, कांदा । [तीन ।
प्रा० पांच- (सं० पंच) गु० दो और
प्रा० पांचसांत-बोल० घरदार,
वशाकुलता, भ्रमर, मंजाल ।
प्रा० पांजर- (सं० पञ्जर) पु० देसली,
पारव ।
प्रा० पांडे (सं० पंडित) पु० ग्रामाणों
पांडे } की पदवी, पांडव,
अथापक, ददावेवाला ।
प्रा० पांती (सं० पंक्ति) स्त्री० कतार,
पांती } धौली, छतार, अकली,
पांति } मिषादिवाँ का पंक्ति ।
प्रा० पांयती- (सं० पादयन्त्र, पाद=
पांव + यन्त्र) स्त्री० पादयन्त्र, बिछौने
के पैर की ओर ।
प्रा० पांव- (सं० पाद, और प्रा० पा)
पु० पैर, पद, चरण, गोड़ ।
प्रा० पांवउठाना- व चलाना-
बोल० भट्ट भट्ट चलना, अन्दी
चलना ।
प्रा० पांवउठाना- बोल० चारहा
ओढ़ चलना, पांव पांव से उठाना ।

प्रा० पांवकांपना या धरथराना-
बोल० किसी कामके करनेसे डरना ।
प्रा० पाव किसीका उखाड़ना-
बोल० किसी को किसी काम पर
जमने नहीं देना ।
प्रा० पांवकिसीकागलेमें डालना-
बोल० किसी मनुष्य को उसी की
बागोंसे अथवा तर्कसे दोषी अथवा
अराराधी ठहराना ।
प्रा० पांवचलजाना- बोल० दगम-
गाना, अस्थिर होना ।
प्रा० पांवजमाना- बोल० रद्द होके
ठहरना, पतवनी में ठहरना ।
प्रा० पांवजमीन पर न ठहरना-
बोल० बहुत समयसोना, बहुतसुगु
होना, बहुत समय टहरना ।
प्रा० पांवडालना- बोल० किसी
बड़े काम के करने के लिये तैयार
होना और उसको गुरुत्व करना ।
प्रा० पांवडिगना- बोल० दिसल-
ना, गिरमटना, रपटना, किसी काम
में हिम्मत हार जाना ।
प्रा० पांवतलेमलना- बोल० किसी
को दुग देना, गिरमाना, मराना,
पीड़ा देना, गुगार करना ।
प्रा० पांव नोटना- बोल० किसी
के मितने में रुक रहना, २. किसी
मनुष्य से मितने के लिये तैयार
होना, ३. रुक जाना ।

प्रा० पावधोधीपीना—बोल० बहुत
 मानना, किसी वा बहुत विश्वास
 करना, बहुत-सुशामद करना ।
प्रा० पावनिकालना—बोल० अपनी
 मर्यादा अथवा हद से बढ़ जाना
 १ किसी बड़े कामके करनेसे फिरना
 २ किसी अपराध के करने में
 मुत्तिया होना ।
प्रा० पाव एकड़ना—बोल० गरीबी
 अथवा अधीनी से चिनती करना,
 २ किसी को जाने हो रोकना, ३
 अधीन होना, शरण लेना ।
प्रा० पावपड़ना—बोल० धिधियाना,
 गिड़गिड़ाना, गरीबी से चिनती
 करना, सुशामद करना ।
प्रा० पावपर पावरखना—बोल०
 दूसरे मनुष्यका चाल चलन ग्रहण
 करना अथवा ले लेना, दूसरे की
 चाल चरना, २ ऐल फैल बैठना
 आराम हो बैठना, एक पैर को दू
 सरे पैर पर रखकर बैठना, बड़ा
 तकाजा करना ।
प्रा० पांवपांव { बोल० पैदल, पि-
 पांवोंपांवों } यादेपांव, पैरों ।
प्रा० पावपीठना—बोल० अंगीरतासे
 पारपटवना, २ बुरा कोशिशकरना ।
प्रा० पावपूजना—बोल० किसीको
 बड़ा मानना, २ किसी से बचना
 भ्रमण रहना, दूर रहना ।

प्रा० पांवफूकफूकरखना—बोल०
 हर एक काम को सावधानी से क-
 रना समझल कर काम करना ।
प्रा० पांवफैलाकरसोना—बोल०
 सुली रहना, चैनसे रहना, बचाव
 सेरहना, बेखडकेरहना, निडररहना ।
प्रा० पावफैलाना—बोल० हठ क-
 रना, अड़ना ।
प्रा० पांवभरजाना—बोल० पांव
 ठिठरना, २ पांव सो जाना ।
प्रा० पांवसगड़ना—बोल० बुरा और
 मूर्खता से भड़कना फिरना, बुरा
 चरखाना, २ मरनेके दुगमें होना ।
प्रा० पांवलगनार—बोल० प्रणाम क-
 रना, नमस्कार करना ।
प्रा० पांवसेपांववांधना—बोल०
 किसी के पास बराबर बैठा रहना
 अथवा किसी की रूख रखवाली
 रखना । [पासहोना ।
प्रा० पांवसेपांवभिड़ाना—बोल०
प्रा० पांवसोना—बोल० पांव सुन
 हो जाना । [आना ।
प्रा० पांवदवेआना—बोल० पीरे से
प्रा० पांवड़ा—(पांव) पु० बड़ कपड़ा
 अथवा शनरंजी, सतीचाआदि जिस
 पर बड़ेमादमी पैर रखकर चलेते हैं ।
सं० पांसव—(पांगु=बांधना) पु०
 पादो नयन ।
सं० पांगु—पु० पिंडी, धूलि, रेणु,

रनोपर्म, हैजे, शुष्क-शोथ, स्मृत
 गोबर, गोबरका देर, बांस, बर
 सं० पांशुकां—श्री० रेंगु, शूलि, रज
 स्वला श्री, वेश्या ।

सं० पाशुपत्र—पु० पशुकोशाक्षर ।

सं० पांशुल—पु० शिव, शूलियुक्त ।

सं० पांशुला—श्री० कुजटाश्री, वेश्या,

“अपांशुलानां पुनि कीर्त्तनीये”

तिरपुः (अ=नहीं, पांशुल=कुलटा

अर्थात् पतिव्रता) ।

प्रा० पाई—(सं० पाद, चौथा भाग)

श्री० एक आने का चौथा भाग

एक पैसा, अंगरेजों पाई एक आने

का पोरबेबां हिस्सा होता है ।

सं० पाक—(पशु=पकाने वा पकाना)

पु० रीथना, पचन, रसोई, पिकनेवां,

पकाई हुई दवाई अथवा शौर बोई

बस्तु, उगनु, २ एकदंशका नाँव,

३ फलमांस, ४ दगा, ५ संकेदवाल

(पा=पीना) वालक, शिशु, बौंटा

लहकानी ।

सं० पाकपुटी—पु० स्थाली, बूढ़ा,

बूढ़ी, पनाँवा, आर्वा, भेट्टा, पाँक

शाली ।

प्रा० पाकड़—(सं० पकड़ी, पत्र=पि

लाना वा लूना) पु० एकलहक

नाम, पाकड़िया, एक अक्षर का

गुनरख ।

सं० पाकरिपु—(पाक=पक, अक्षरका

नाम, रिपु=पैरी) पु० इन्द्र ।

सं० पाकशाली—(पाक=पकाने,

शाली=घर) थिठे स्त्री० रसोई घर,

२ पाक स्थान, पकाने की जगह ।

सं० पाकशासन—(पाक, पकरात्तस

को नाम, शास्त्र=इन्द्रना) पु० इन्द्र ।

सं० पाकुक्—क० पु० पकानेवाला,

रसोईदार । [पत्रदेनवाली ।

सं० पाक्षिक—पु० सहायक, हिमायती,

प्रा० पावर, सं० मखर) पु० प्रोढ़े

हाथी को बचाने के लिए धारि,

भूल ।

सं० पाखण्ड—पु० दुष्प्र, हिम्प्र, पा-

सण्ड, छल ।

सं० पाखण्डी—पु० दुष्प्र, छली,

प्रा० पाग—श्री० पगड़ी ।

प्रा० पांगल—पु० पगला, सिद्धी, उ-

त्थम, भावला, जोड़ा, मूल ।

सं० पाचक—(पच=पकाना) क०

पाचुक) पु० पकानेवाली वस्तु

जैसे चरणआदि, २ आग, रसोईवां ।

सं० पाचिका—श्री० पकानेवाली ।

सं० पाश्जन्य—(पश्जन=पश्चिम से

हुआ अर्थात् पन) पु० विप्लवकार ।

सं० पाञ्चाल—पु० नाम देस ।

सं० पाञ्चाली—श्री० द्रौपदी ।

प्रा० पाछे—(सं० पश्चान्) क्रि० वि०

पाछे, पीछे, इसके बाद, इसके

वार=स पार) पुं० समुद्र, रेनदी
केन्द्रिनी सीर, कासारपार, सोर
पार इस उस पार, ४-दृष्ट, सीव ।

सिं० पाराशर—(पराशर) पुं० मृ-
शर अष्टिका घेरा घेदेव्यास, पराशर

र के पनाये हुये ग्रंथ, जैसे पाराशर
स्मृति, भिषुम्व आदि । [जेद्व्यास ।

सं० पाराशर्य—पुं० पराशरका पुत्र

सं० पारिज्ञान—(पारि=समुद्र, जन
=देना होना) पुं० देवताओं का ज्ञ-

ज्ञ, कुंदा, देवना, सुसुन्दर, २ भूमा ।

मं० परिणीति—(परि=वहू, नद=
सम्पन्न करना) भा० पुं० भवन्व-

वन्धन, रिज्जेदासी, विहादगान,
निवेदनता, चौद.ई ।

सं० पारितथ्य—स्त्री० बेंदा, टिकुनी,
पुं० पितृक, वधार्थ ।

सं० पारिपन्थिक—पुं० घोर, दग,
बधो, नुदक ।

सं० पारितोषिक—(परि=प्रेम, तुष
=पमन्न होना, भंतुष्ट होना) पुं० इ-

पेट, मानकन, दापन,
सिंह

मं०
पुं०

की

को विलिखी ।

प्रा० पारि—स्त्री० बारी, अवसर, उंसरी ।

सं० पार्थि—(पृथा=कुन्ती) पुं० कुन्ती
देवदे पुत्रिपुत्र, अर्जुन, भीम ।

मं० पार्थिव—(पृथ्वी) पुं० पृथ्वीका,
पुं० राजा, २ शिव, -पार्थिवी, स्त्री०

सीता, जानका ।

मं० पाणिपार्थिक—पुं० नर, नदी,
विष्णु, भांड ।

मं० पाणिभाष्य—पुं० कूट श्रीपत्र,
नवानन, जायिनी, अविश्वास,

अनादरता ।

मं० पाणिपट्ट—पुं० मेरक, पमामद ।

मं० पार्षण पर्व+अन, पर्व=पू-
र्णकरता । भा० पुं० पर्व अमावस

आदि में जो हो, उन्मव ।

मं० पार्वती । पर्वत-पहाड की
हिमाचलकी देवी, शिवगानी, दुर्गा ।

मं० पार्श्व पृष्ठ=पना व पशु पं
मर्जः) पुं० पानर, पाना, २ वगल

के नीचे का भाग, ३ पमनियों का
समूह, पुं० पाम, नगीच, नजदीक,
समीप ।

मं० पार्श्ववर्त्ति—(पार्श्व=पाम, वर्त्ति
होने वा रहनेवाला, वृत्त=होना वा
रहना) पुं० पाम, जिला, निह
वृत्ति, समीप

पदि का तब जिसमें रखकर कचे
मपकाने दें, ४ पालना ।

पालक-(पाल्=पालना) क० पु०
लिनेवाला, बचानेवाला, रक्षक,
रक्षित ।

पालक-(सं० पालक, पाल=
बाना, और अङ्क=माना) पु०
आ, एक तरह का साग, २(सं०
अङ्क) पलंग । [दयालुता ।

पालकता-म० पु० परवरिश,

पालकी-(सं० पर्यंक, वा पलंगक)
ही० एक प्रकार की मचारी, चौ-
पाता, दोली ।

पालन-(पाल्=पालना) पा०
१० पालना, पोषण, रक्षा, बचाव,
रक्षाना ।

पालना-(सं० पालन) क्रि० ता०
पोषना, बचाना, रक्षा करना, २ पु०
रिहोता, भूतना ।

पालनीय (पाल्+अनीय) र्भ०
पु० पालनेयोग्य, रक्षायोग्य ।

पाला-(सं० पालेय, म=बहुव
आ=पारों ओरमें, ली=विपलना)
पु० हिम, बर्फ, टार, गुफा, २ (सं०
पालन) भरोसा, विश्वास, आश्रय
बचान, ३ बचकी के सेजमें रेशमी
देड़ ओ बीच में बनाई जाती है, ४
भद्रसेवी के पत्ते ।

पालागन-(सं० पादनम्)

पाद=पैर, लग्न=लगना) पु० पांश
का हुना, मणाम करना ।

सं०पालि-(पाल्=बचाना) स्त्री०
मागधी भाकृतभाषा, मगधदेश की
मातृभाषा ।

सं० पालित-(पाल्=पालना) र्भ०
पु० रक्षित, बचाया हुआ, पाला हुआ ।

सं०पाली-स्त्री० पंचिक, कोयल, मराभा,
परितन-भोजन, पान, कर्णपत्र, कर्ण-
फूल, सेतु, बिह्व अश्वोंकी धारा, अश्व,
छोद, गोद, उरसंग, बानियाँ ।

प्रा० पाले-(सं० पालन=बचाव)
अधीन, बचाव में, हाथ में, तब में ।

प्रा०पालेपड़ना-बोल० दूसरेके बरा
में आ जाना, जैसे "मामदरवै रत्न
बाजहवाले परेउकठिनराबणके पा-
ले" (राधायण) ।

प्रा० पाव-(सं० पाद) पु० चौगाई,
चौथा भाग, चौद, बनुर्पाश ।

सं० पावक-(पु०=पवित्र करना) पु०
आग, अग्नि, गु० पवित्र ।

सं० पावन-(पु०=पवित्र करना) पु०
पवित्र, पवित्र करनेवाला, स्वच्छ,
पु० पानी, २ आग, ३ गोबर, ४
कुशा, ५ घृत, ६ मूत्र, ७ मंदा, ८ गौर ।

प्रा० पावला-(पाव) पु० चार
आना, मुद्रा अर्धरु मित्रे का चौथा
भाग ।

प्रा०पावस (सं० पावस् पा=बहुव

सी बोली हो, मीठी बोलनेवाली स्त्री ।
 १० पिचलना—(सं० प्रगलन, प्र=
 बहुत, गन्=उपकृता) क्रि० अ०
 गलना, टिघलना, पानी होना ।
 ११ पिङ्ग—(विजि=रंगना) पुं० पीला
 कपिल, पीतवर्ण ।
 १२ पिङ्गल—(पिङ्ग=पीला रंग, ला=
 लेना) पुं० पीला, पीतवर्ण, २.
 दीपा की लौ, सारंग, पुं० छन्द
 शास्त्र का कर्ता, छन्दग्रन्थ, कपिल
 वर्ण, चिमगादर, सूर्य ।
 १३ पिङ्गरा—पुं० हिंदोला, झूला ।
 १४ पिचकारी—स्त्री० पिचिका,
 दमकला । [स्पून, बड़े पेटवाला]
 १५ पिचण्डिल—क० पुं० तोंदवाला,
 १६ पिचु—पुं० रुई, कपास, कर्प, नाम
 अमुर, शरपभेद, कुष्ठभेद ।
 १७ पिचुमन्द—(पिचु=कुष्ठ मन्द=
 मद्ध करना) नीच वृद्ध ।
 १८ पिच्छ—पुं० पंख, मोरपंख, मुकुट,
 मोर, रिता, कपास वृद्ध, केला,
 सेपरा, भात का माँड़, मोड़े के पैर
 का रोग । [पिंसलना]
 १९ पिछलना—क्रि० अ० फिसलना,
 २० पिछलपाई—स्त्री० चुड़ैल, सूतनी ।
 २१ पिछला—(पीछा) पुं० पीछेछा,
 पिछाड़ी का, नया ।

प्रा० पिछवाड़ा-पुं० } (पीछ)
 पिछवाड़ी-स्त्री० } पीछ का
 भाग, पीछा । [पिछला भाग]
 प्रा० पिछेत—(पीछा) पुं० घर का
 प्रा० पिछोरा-पुं० } दोहर, चहर,
 पिछोरी-स्त्री० } दुहाई, ओढ़नी ।
 सं० पिञ्जन—पुं० मारणे, रुई का
 ओढ़ना, रुई धुनना, धनुही ।
 सं० पिञ्जर—(विजि=शब्द करना, वा
 रहना जिस में पत्तेक शब्द करते हैं
 वा रहते हैं, वा विजि रंगना) पुं०
 विमरा, पत्तेरुओं का घर, २ पीला
 रंग, लाल और पीला मिला हुआ
 रंग, सरा रंग ।
 प्रा० पिञ्जरा—(सं० विमर) पुं०
 पत्तेरुओं के रहने का काठका घर,
 विमरा होना, बोल-दुबला होना ।
 सं० पिञ्जल—पुं० अतिसयन, मिला
 हुआ पुं० विनायक, कंकण, मोशन,
 बिष्टर आर्वात कुशा ।
 प्रा० पिञ्जियारा—(पीञ्जना) पुं०
 छुनियाँ, रुई पींजनेवाला, रुई
 धुननेवाला । [पिञ्जल]
 सं० पिञ्जल—पुं० बर्तिका, बत्ती,
 सं० पिञ्जप—पुं० पोष, सड़क, पिठारा,
 पिठारी, लोभी, सड़ी ।
 सं० पिट—पुं० सड़क, टोकरा, पिठारी,

१० पुण्य—(पुण्य=विशेष) प्रा० पु०
 पवित्र काम, सुष्ठु काम, धर्म, गु०
 पवित्र, सुष्ठु, पावन, सुन्दर, सुगंधित ।
 सं० पुण्यकृत—क० पु० धार्मिक ।
 सं० पुण्यजनक—क० पु० पुण्यो-
 द्यादक, पुण्यकर्ता ।
 सं० पुण्यभूमि—(पुण्य=पवित्र, भूमि
 =धरती) स्त्री० पवित्र धरती, धार्मि-
 क, अन्तर्देह ।
 सं० पुण्यवान्—(पुण्य=धर्म, वन्=
 वाला) गु० धर्मात्मा, धार्मिक ।
 सं० पुण्यात्मा—(पुण्य=पवित्र, आ-
 त्मा, मन, जिसकी आत्मा धर्म में
 लगी हो) गु० पुण्यवान्, धर्मात्मा,
 पवित्रात्मा ।
 प्रा० पुतला } (सं० पुतल) पु० मूर्ति,
 पूतला } काठकी धनी हुई मूर्ति ।
 प्रा० पुतली } (सं० पुतली) स्त्री०
 पूतली } आँख का तारो, २
 काठ की मूरत । [मूर्ति] ।
 सं० पुत्तिका—स्त्री० पुतली, २ सुद
 सं० पुत्र—(पुत्र=पुरुष, नरक का नाम,
 प्रे=वचाना, जो पुत्र=नाम नरक से
 अपने वाप को वचाने) पु०, पुत्र ।
 सं० पुत्रिका—(पुत्र) स्त्री० पुत्री,
 पुत्री } लड़की, कन्या, २
 गुहिया ।
 प्रा० पुन } (सं० पुनर्) समुच्च-
 पुनि } फिर, वदुरि, पीछे ।

सं० पुनःपुनः—(पुनर्=बारबार, पु-
 नः=बारबार) स्त्री० पुनपुन
 नदी जो मटने से पाँच फोस गया
 के रास्ते पर है, “कीरटेपु गया
 पुण्यानदी पुण्या पुनःपुनः” (व. सु-
 पुराणा) विर्य—कीरट अर्थात् म-
 गय देश में गया और पुनपुन नदी
 पवित्र है ।
 सं० पुनःपुनर्—अव्य० बारबार, फिर
 सं० पुनर्—अव्य० मरफ, निदचप,
 अधिकारि, भेद, पसन्तर्, फिर
 फिर, और ।
 सं० पुनरागमन—(पुनः=पुनः, अगमन)
 भा० पु० फिर आना, लौटना ।
 सं० पुनरुक्ति—पुनर्=फिर, वक्ति
 =करना) स्त्री० फिर करना, दो-
 बार करना ।
 सं० पुनर्जन्म—(पुनर्=फिर, जन्म=
 पैदा होना) पु० दूसरा जन्म ।
 सं० पुनर्भव—पु० जन्म, नई, पुनर्जन्म,
 दूसरी भेदायश ।
 सं० पुनर्वसु—(पुनर्=फिर, वसु=
 रहना) पु० सातवाँ नक्षत्र, मेघर्ष,
 मुनि भेदा ।
 सं० पुनीत—(पुनः=विशेष) गु०
 पवित्र, सुष्ठु, निर्मल, स्वच्छ । [पुण्य] ।
 सं० पुमान्—क० पु० पुरुष, आदमी,
 सं० पुर—(पुर=आगे जाना, वापू=
 भरना) पु० नगर, शहर, २ घर,

१३ देह, ४ एक राक्षस का नाम ।
 सं० पुरजन—क० पु० पुर के मनुष्य ।
 सं० पुरञ्जन—पु० जीव ।
 सं० पुरःसर—(पुर=आगे, सर=सृ-
 (जाना) गु० अमुना, अग्रगामी, पेशवा ।
 सं० पुरट्ट—(पुर=आगे जाना) पु०
 सोना, कंचन ।
 सं० पुरतः—अव्य० अग्रे, आगे, पेश ।
 सं० पुरन्दर—(पुर=नगर, द=द-
 ाड़ना) क० पु० इन्द्र जो राक्षसों
 के नगरों को नाश करता है, रचौर ।
 सं० पुरन्ध्री—स्त्री० कुदुम्बिनी, भिन्न ।
 सं० पुरारि—(पुर=दैत्य, अरि=शत्रु)
 पु० मह देव, शिव ।
 सं० पुरवासी—(पुर=नगर, वासी=
 रहनेवाला) पु० शहर का रहने-
 वाला, नगरनिवासी ।
 सं० पुरस्कार—(पुर=आगे, क=कर-
 रना) पु० आदर, सत्कार, पूजा,
 दान, फल, इनाम, बदला ।
 सं० पुरस्तात्—अव्य० आगे, अग्रे,
 पेशतर, पूर्व, पूर्व में ।
 प्रा० पुरा—(सं० पुर) पु० गाँव ।
 सं० पुरा—अव्य० प्राचीन, पुराना,
 पुराण, निरुद्ध, अतीत, गोपी, पूर्व
 समय, पिछला वक्त ।
 सं० पुराकृत—(पुरा=पहले, कृत=
 किया) स्म० पु० पहले का किया
 हुआ, पूर्वमन्म ।

सं० पुराण : (पुरा=पुराना, ण=
 आगे जाना—अर्थात् जिसमें
 पुराने समय की बातें हों, वस्तु
 जो पुराने समय में बने हो) पु०
 वे ग्रन्थ जिसमें से, बहुतों से व्यास
 जी ने बनाये अथवा इकट्ठे किये ।
 पुराण सब प्रथम में लिखे हुए हैं
 और उनको हिन्दू पवित्र मानते हैं ।
 हर एक पुराण में विशेष करके
 पाँच बातों का वर्णन है जैसे—
 “सर्गश्च मेलिसर्गश्च”
 “वंशो मन्वन्तराणि च”
 “वंशानुचरितं चैव”
 “पुराणं पंच लक्षणम्”

अर्थात् १ संसार की उत्पत्ति, २
 मलय और जलय के पीढ़े लिखे
 संसार की वृत्तान्ति, ३ देवता और
 शूरवीरों की वंशावली, ४ मनुष्यों
 का राज, और ५ उनके वंश के
 लोगों का व्यवहार और चलन ।
 पुराण अठारह हैं १ ब्रह्मपुराण,
 २ वसुपुराण, ३ ब्रह्माण्डपुराण,
 ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण,
 ६ गरुडपुराण, ७ ब्रह्मवैवर्तपुराण,
 ८ शिवपुराण, ९ लिंगपुराण, १०
 नारदपुराण, ११ स्कन्दपुराण,
 १२ मार्कण्डेयपुराण, १३ मत्स्यपुराण,
 १४ मत्स्यपुराण, १५ वराह-
 पुराण, १६ कूर्मपुराण, १७ वामन
 पुराण, १८ श्रीमद्भागवतपुराण ।

इन सब पुराणोंमें चारजात्ररत्नके
गिनेगये हैं और अठारह उपपुराण
भी हैं प्राचीन, जीव गु० पुराणा,
पहले का, सबसे पहला, बृद्धा, ८०
कौड़ी की संख्या, मूल्य ।

सं० पुराणपुरुष-(पुराण=पुराणा
वा सबसे पहला, पुरुष=मनुष्य) पु०
विष्णु, भगवान्, २ बृद्धा आदमी ।

सं० पुरातन-(पुरा=पुराणा) गु०
पुराणा, प्राचीन, अगले समयका ।

प्रा० पुरातम-(सं० पुरातन) गु०
पुराणा, कदीम, प्राचीन ।

प्रा० पुराणा-(सं० पुराण) बोल०
अगले समय का, प्राचीन, पुरातन,
बौद्धा, बहुत दिनका, बृद्धा ।

प्रा० पुराणा-(सं० पूर=पूराकरण) पु०
क्रि० सं० मरदेना, मरना, पूरा क० ।

सं० पुराति (पुर एक राक्षसका
पुरारि नाम, आराति वा
अरिबरी) पु० शिव, महादेव जि-
न्होंने पुर नाम दैत्यको माराया ।

सं० पुरी-(पुर) स्त्री० नगरी ।

सं० पुरीष-(पू=भरना) विष्णु, गूढ़,
मल । [वंशी राजाका नाम ।

सं० पुरु-(पू=भरना) पु० एक चन्द्र-
प्रा० पुरुखा (सं० पुरुष) पु० बड़े,
पुरखा पापदादे, दादेपरदादे,
पुर्खा पूर्णपुरुष ।

सं० पुरुष-(पुर=आगे माना) पु०
मनुष्य, नर, परमेस्वर, २ पुरुषा ।

सं० पुरुषसिंह-(पुरुष+सिंह) पु०
पुरुषों में सिंह, श्रेष्ठमनुष्य ।

सं० पुरुषार्थ-(पुरुष=मनुष्य, अर्थ=
प्रयोजन) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,
२ बल, जोर, वीरता, साहस, पराक-
म, परोपकार ।

सं० पुरुह गु० प्राचीन, बहुत, बहुत,
पुरुह अधिक ।

सं० पुरोगम-(पुरस्=आगे, गम्=
जाना) पु० श्रेष्ठ, अग्रगामी, गेशवा ।

सं० पुरुषोत्तम-(पुरुष=मनुष्य,
उत्तम=श्रेष्ठ) पु० विष्णु, नारायण,
२ उत्तम मनुष्य ।

सं० पुरोडाश-(पुरस्=आगे, दाश=
देना) पु० होम की सामग्रीधी आदि
हविस्, स्त्री ।

सं० पुरोधा (पुरस्=आगे, धा=
पुरोहित) रत्ना पु० कुल गुरु,
उपाध्याय ।

प्रा० पुर्वी (सं० पूर्व-वायु) स्त्री०
पूर्वया पूर्व की हवा ।

प्रा० पुर्सा-(सं० पौरुष) गु० मनुष्य
की उँचाई के बराबर, पु० मनुष्यके
हौल की उँचाईके बराबर विस्तार,
चौर हाथ का नाप ।

सं० पुल-(पुल=ऊँचा होना) पु०
सेतु, बंध, बांध, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० पुलक-(पुल=बढ़ना, वा. ऊँचा
वा सड़ा होना) पु० पारे खुशी के
सोवां सड़ा होना, रोमांचित होना,

सं० पूर्वाद्धि—(पूर्व=पहला, अर्द्ध=आधा) पु० पहला, आधा ।

प्रा० पूर्विया) (सं० पूर्विक, पूर्व)

प्रा० पूर्वी) (पु० पूर्वदेशी, पूर्वका ।

सं० पूर्वोक्त—(पूर्व=पहले, उक्त=कहा हुआ) स्म० पु० पहले कहा हुआ, प्रसक्त ।

सं० पूर्वलिखित—(पूर्व=पहलेका, लिखित=लिखना) स्म० पु० पहले का लिखा हुआ ।

प्रा० पूला—(सं० पुल, पूल=ढोलागा-ना) पासका, घोडा अपवा गडा ।

सं० पूषन—(पूष=पूषना) पु० सूर्य ।

प्रा० पूस—(सं० पूष, पूष एक नक्षत्र का नाम) पु० चन्द्र वर्ष का नवरा पक्षीना, जिनमें पूषा चांद पूष नक्षत्र के पास रहता है और पूष मासी के दिन यह नक्षत्र होता है ।

सं० पूक—(पूष=विजाना) क० पु० विभिन्न, विज्ञा हुआ, मुरझा ।

सं० पूल्लक—(पूष+अक, पूष=पूषना, मरनकरना) क० पु० मरनकर्ता, मित्राणु, पूल्लकाला ।

सं० पूल्लण—प्रा० पु० पूल्लन, पूल्लन ।

सं० पूतना—स्त्री० मेघा, मौन २४३ हाथी, २४३ रत्न, ७०२ घोड़े, १२१४ मनुष्य जिन मौन में हैं ।

सं० पृथक्—(पृथ=पैरना) पु० द्वि-वि० दूर, अलग, विभिन्नता ।

सं० पृथक्तरण—(पृथक्=दूर, तरण=

हरना) पु० जडाकरना, अलग करना ।

सं० पृथक्श्रेत्र—पु० भिन्नश्रेष्ठ अलग का क्षेत्र, नगरपुत्र, वर्णमंतर माता जो यासते पुत्र-पैदाकरे ।

सं० पृथा—स्त्री० सुन्ती, गाएहु की स्त्री श्री युधिष्ठिर अर्जुन और भीम की मा, विद्वान, महेप ।

सं० पृथ्वी—(पृथ=विजयान होना पृथिवी) फैलाना) स्त्री० पर-ती, परणी, भूमि, जमीन ।

सं० पृथिवीनाथ—पृथिवी=पृथ्वी, पृथिवीपति—नाथ का पुत्र=मातृक) पु० राजा, नृपति, भूनाथ ।

सं० पृथिवीपाल—(पृथिवी=पृथ्वी, पाल=वपाना) पु० राजा, पृथिवी-नाथ, भूति ।

सं० पृथु—पृथ=पैरना, वा पृथ=विजयान होना) पु० संघे बाणधोका पांवरों राजा पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

सं० पृथिकु—(पृथ=विजयान होना) पु० बहुवेष्टियों का एक नामा और धीकृष्ण का पुत्र ।

सं० पृथुल—पृथ=पैरना, पृथ=विजयान होना) पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

सं० पृथ्वी—(पृथ=पैरना, पृथ=विजयान होना) पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

सं० पृथ्वी—(पृथ=पैरना, पृथ=विजयान होना) पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

सं० पृथ्वी—(पृथ=पैरना, पृथ=विजयान होना) पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

सं० पृथ्वी—(पृथ=पैरना, पृथ=विजयान होना) पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

सं० पृथ्वी—(पृथ=पैरना, पृथ=विजयान होना) पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

सं० पृथ्वी—(पृथ=पैरना, पृथ=विजयान होना) पु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, १ साहसिक, ४ विद्वान ।

पिबिता बालक । [टपान ।

तोमू—ताऊ, पेड़, पेयार्थ, पे-

हूना—बोल० बहुत हँसना,

हँसने लोटना, गर्भ रहना ।

वहना—बोल० बहुत आ-

सरे के हिस्से पर हाथ बढाना ।

बांधना—बोल० मूलसे कप

। [अघाके ।

भर—बोल० जी भर, भरपेट,

भरना—बोल० खाना, खा

न, अघाना, वृत्त होना ।

भारना—बोल० आत्मघात

न, आपघात करना, खुदकुशी

।

टमें पैठना—बोल० दूसरे का

लेना, २ गुलामद की बातें

हँसना ।

टमें लेना—बोल० सहना,

प रहना ।

टिरहना—बोल० पेटमे होना,

रंणी होना, गर्भ रहना ।

टिलगजाना—बोल० भूखी

ना, बहुत भूखा होना ।

टेलगरहना—बोल० बहुत

आ होना ।

पेटवाली } बोल० गर्भिणी,

पेटसे } गर्भवती ।

पेटसे होना—बोल० गर्भिणी

होना, पेट रहना ।

पेट हड़वड़ाना—बोल० दस्त

की हाजत होना, पेट गड़वड़ाना ।

सं० पेटार्थी (सं० पेट, और

प्रा० पेटार्थी) शर्षा चाहने वाला,

(अर्थ=चारना, वा माँ

गना) गु० स्नाऊ, पेड़, पेटपालू ।

सं० पेटिका—(पिड़=इकट्टा, धरना)

स्त्री० सन्दूक, पिठारा, पेट्टी, टोकरी,

दुब्बा । [एक दिन का खाना ।

प्रा० पेटिया—(पेट) पु० सीपा, हर

सं० पेट्टी—(पिड़=इकट्टा करना) स्त्री०

पिठारी, २ कमरबन्द, पेटपर बाँधने

की चपड़े की बन्धी, ३ छाती ।

प्रा० पेट्ट—(पेट) गु० अपना पेट

भरनेवाला, पेटार्थ, पेटार्थी, गर्भस्त्रा,

पेटपालू, स्नाऊ ।

प्रा० पेटौखा—(पेट) पु० पेट ब-

लना, अतिसार रोग, आँव ।

प्रा० पेटा—पु० कृष्णपट, कुम्हड़ा ।

प्रा० पेट्ट—पु० रुत, तरु, दृष्ट, पोषा ।

प्रा० पेट्टा—(सं० पिण्ड) पु० एक

प्रकार की मिट्टाई ।

प्रा० पेट्टी—स्त्री० छोटा पेट्टा, २ एक

तरह का पान. ३ नील की टाँडी ।

प्रा० पेट्ट—(पेट) पु० नाभि के नी-

चे का भाग, तलपेट, पेटगल ।

प्रा० पेम—(सं० प्रेम) पु० प्यार, स्नेह ।

प्रा० पेमी—(सं० प्रेमी) गु० प्यारा,

मीतम, प्रेमी, छोरी, मित्र ।

२ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना—(सं० पेलन, पिल् वा पेन्=नांना) क्रि० स० डेलना, डकेलना रेलना, पका देना, २ ठांसना, ३ निचोड़ना, ४ आग्रा भंग करना, बचन तोड़ना ।

सं० पेश } गु० सुन्दर, दच, कोमल,
पेशल } चतुर, निर्मेज, मनोहर,
रुबिर ।

प्रा० पेशाव—(सं० पश्चाव म, सु= चूना, बहना) पु० मूत्र, मूत्र ।

सं० पेशि—(पिशु=भंगविभा) पु० वस्त्र, अण्डा ।

सं० पेशी—स्त्री० भुंगी, पड़ी कछी, मिषान, मांस, पुंज, समूर ।

सं० पेपक—क० पु० मर्दक, पीसनेवाला ।

सं० पेपण—भा० पु० पीसना ।

सं० पेपित—र्म० पु० पीसाहुआ ।

सं० पेपणि } (पिषु=पीसना) गु०

पेपणी } स्त्री० चक्री, दलैती, गाँता ।

सं० पेपि—पु० लोटा, बट्टा ।

पु० हाथवधार, उधारभृग्ना

(सं० पपड, पपडू=नाना)

दग, कदम, पद, क

चान, चर्बी घरनी

अन्न) पु० पापन्ती, पायवत ।

प्रा० पेंतालीस—(सं० पञ्चवक्ता रिशु पंच=पांच, चत्वारिशु=चत्वारिंश) गु० चालीस और पांच ।

प्रा० पेंतीस—(सं० पञ्चविंशतु=पांच, विंशतु=नीस) गु० तीस और पांच ।

प्रा० पेंसड—(सं० पञ्चपष्टि=पांच, पष्टि=पाठ) गु० साठ और पांच ।

प्रा० पे—(सं० पपस) पु० दूध, गाँत
२ (सं० उपरि) संकेतवर्ग० पर, ऊपर
३ (सं० पर) समुच्च० परन्तु पर ।

प्रा० पैज—पु० पण, होड़, प्रति अरेद, कौल, बचन ।

प्रा० पैड—स्त्री० हुंटीकी दूसरी नक जब हुंटी खोप जाती है तर कराते हैं, २ पैठना, पहुँच, ३ मरोर

प्रा० पैठना—(सं० पठिष्ट) क्रि० प्र पुसना, पसना, प्रवेश करना ।

प्रा० पैड़ी—स्त्री० सीढ़ी, जीना, निसे

प्रा० पैतृक—(पित्र) गु० पिता का, चाप का, बपौती, मौरुसी ।

प्रा० पैदल—(सं० पादात वा पदाति) पु० पियादा, पैरोसे चलनेवाला

प्रा० पैन—(सं० पानीय) पु० नाल नाला ।

पेना—पु

अंकुश, आंकुश

३० तीर

प्रा० पैया-पु० परिषा, चक चका ।

प्रा० पैर-(सं० पद) पु० पांव,
घरण, कदम ।

प्रा० पैरना-क्रि० म० नैरना, रेलना ।

प्रा० पैराक-क० पु० पैरनेवाला,
पैरनेवाला ।

प्रा० पैवंदीवेर-पु० षडे २ पैर ।

प्रा० पैसा-पु० तांबे का सिक्का, २
पन, दीतन, रोह, रोहकड़, संपत्ति ।

प्रा० पैसाउड़ाना-पोल० बहुतनख
करना, अन्यायपूर्ण कार्य करना, २
हमारेकापन गुरालेना या टगलेना ।

प्रा० पैसाखाना-बो० पैसा उड़ाना,
पहुन रखकरना, २ मजदूरी करके
पेट भरना, १ शिखन लेना, ४
ढकारमाना, विरवासमान करके
ले लेना ।

प्रा० पैसाहुवोना-बोल० पनगैवाना ।

प्रा० पैसाहुवना-बोल० पन बरबाद
होना, रुपया पैसा खोयाजाना ।

प्रा० पैसेलगाना-बोल० पन खर्च
करना, पन लगाना ।

प्रा० पैसेवाला-पु० पनवान, दौ-
लतवंद, २ एक पैसेका ।

प्रा० पैसोसेदस्वारवांधना-बो०
शिखनदेना, घूम देना ।

प्रा० पैसार-पु० पहुँच, पैर, प्रवेश ।

प्रा० पैहें (पाना) क्रि० स० पानेगा,
पानेगे ।

प्रा० पोइस-(सं० परप=देर) क्रि०
वि० अलसगरी, दूरहो, भरे, जब
कि रस्तेपर बहुत से आदमी हों
तब उनको अलस करने और नहीं
सुमाने के लिये भंगी यह शब्द
बहुनवार बोला करना है ।

प्रा० पोछना-क्रि० स० पूँछना,
झाड़ना, फर्का करना, माँफकरना ।

प्रा० पोखर } (सं० पुच्छर) पु०
पोखरा } सालाप, साल, भील,
वडाग ।

सं० पोगण्ड-पु० विक्रान्त, लघु-
सक, अंगहीन, कुपुष्प, पु० सोलह
-वर्षकी अवस्था ।

प्रा० पोच-(क्रा० "पूच") पु०
नीच, तुच्छ, बुरा ।

प्रा० पोड-स्त्री० मोड़, गाँड़, गढरी ।

प्रा० पोडला-पु० बड़ी गढरी ।

प्रा० पोडली-स्त्री० छोटीगढरी, मोटरी,

प्रा० पोड़ा } (सं० मोड़) पु० बल-
पोड़ा } बान, २ बड़ा, ठोस, रूढ़ ।

प्रा० पोड़ाई } (सं० मोड़ता) भा०
पोड़ाई } स्त्री० बल, २ कड़ापन,
हठता, ठोसाई ।

सं० पोत-(पू=शुद्ध करना) पु०
बचा, बालक, २ स्त्री० नाव ।

प्रा० पोत-प० स्वभाव, प्रकृति,
गुण, वाचका, दाता

२ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना—(सं० पेलन, पिल् वा. पेन=माना) क्रि० स० डेलना, डकेलना रेलना, धका देना, २ ठाँसना, ३ निचोड़ना, ४ आधा भाग करना, वचन सोड़ना ।

सं० पेश } गु० मुन्दर, दच, कोपल,
पेशल } पगुर, निर्मेत, मनोहर,
दलिर ।

प्रा० पेशाय—(सं० पेशाय प्र, मु= गुना, यशना) पु० मूल, मूल ।

सं० पेशि—(पिशु=भंगनिभा ।) पु० पश, कापश ।

सं० पेशी—श्री० भृंगी, बड़ी कछी, विधान, प्राग, पुत्र, समूह ।

सं० पेपक—क० पु० पर्दक, पीसनेवाला ।

सं० पेपण—भा० पु० पीसना ।

सं० पेपित्त—अ० पु० पीमादुग्धा

सं० पेपणि (पिशु=पीसना)

पेपणी } श्री० चर्ही, द
जाता ।

सं० पेपि—पु० लोटा, बट्टा ।

प्रा० पेचा—पु० हाथउधार, ३

प्रा० पेड़—(सं० पेपक, २

पु० पाँच, दम, कदम, पद,

२० चर्ही धरती ।

२० पेपक, पेपक=त्र

अन्त) पु० पायन्ती, पायतल ।

प्रा० पेंतालीस—(सं० पञ्चचत्वारिंशत् पंच=पाँच, चत्वारिंशत्=चाँलीस) गु० चालीस और पाँच ।

प्रा० पेंतीस—(सं० पञ्चत्रिंशत् पञ्च=पाँच, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और पाँच ।

प्रा० पेंसठ—(सं० पञ्चपट्षिपञ्च=पाँच, पट्षि=साठ) गु० साठ और पाँच ।

प्रा० पे—(सं० पयस्) पु० दूध, पानी, २ (सं० उपरि) संकेतवर्ण ० पर, ऊपर, ३ (सं० पर) समुच्चय ० पर, २० पर ।

प्रा० पेज—पु० पगा, होद, प्रतिज्ञा, अश्वेद, क्रील, वचन ।

प्रा० पेठ—श्री० छुंदी की दूसरी नकल जब छुंदी सो

कराने हैं, २

पेठना—(

२०

२०

२०

२०

२०

२०

२०

२०

२०

प्रा० पैया-पु० पड़िया, चक्र चक्का ।

प्रा० पैर-(सं० पद) पु० पांव, चरण, कदम ।

प्रा० पैरना-क्रि० म० तैरना, डेलना ।

प्रा० पैराक-क० पु० तैरनेवाला, पैरनेवाला ।

प्रा० पैवंदीवेर-पु० बड़े २ वेर ।

प्रा० पैसा-पु० तांबे का सिक्का, २ धन, दौलत, रोक, रोकड़, संपत्ति ।

प्रा० पैसाउड़ाना-बोल० बहुत खर्च करना, अन्धाधुन्य खर्च करना, २ दूसरेका धन चुरालेना या ठगलेना ।

प्रा० पैसाखाना-बो० पैसा उड़ाना, बहुत खर्च करना, २ मजदूरी करके पेट भरना, १ रिश्वत लेना, २ डकारना, विरवासघात करके ले लेना ।

प्रा० पैसाहुवोना-बोल० धन गंवाना ।

प्रा० पैसाहुवना-बोल० धन बरबाद होना, रुपया पैसा खोया जाना ।

प्रा० पैसेलगाना-बोल० धन खर्च करना, धन लगाना ।

प्रा० पैसेवाला-शु० धनवान्, दौलतपंड, २ एक पैसेका ।

प्रा० पैसोसिंदरखवांचना-बो० रिश्वत देना, घूस देना ।

प्रा० पैसार-पु० पहुँच, पैठ, प्रवेग ।

प्रा० पैहें (पाना) क्रि० म० फाँसना, फाँसो ।

प्रा० पोइस-(सं० परय=देस) क्रि०

वि० अलगहो, दूरहो, भरे, जब कि रस्तेपर बहुत से आदमी हों तब उनको अलग करने और नहीं छुमाने के लिये भंगी यह शब्द बहुतवार बोला करता है ।

प्रा० पोंछना-क्रि० सं० पूछना, झाड़ना, फर्दा करना, साफ करना ।

प्रा० पोखर (सं० पुष्कर) पु० पोखरा } तालाब, ताल, भील, वड़ाग ।

सं० पोगण्ड-शु० विकृतांग, तपुः सङ्ग, भंगहीन, कुपुरुष, पु० सोलह वर्षकी अवस्था ।

प्रा० पोच-(का० "पूच") शु० नीच, तुच्छ, बुरा ।

प्रा० पोटर-खी० मोट, गाँठ, गठरी ।

प्रा० पोटरला-शु० बड़ी गठरी ।

प्रा० पोटरली-खी० छोटी गठरी, मोटरी,

प्रा० पोड़ा (सं० पीड़) शु० बल-पोड़ा } बान्, खड़ा, दोस, रद ।

प्रा० पोड़ाई (भं० पीड़ता) मा० पोड़ाई } खी० धन, २ बड़ा धन, रदता, दोसाई ।

सं० पोत-(पू=शुद्ध करना) पु० बहा, बालक, २ खी० नाव ।

प्रा० पोत-पु० स्वभाव, पहँचा, गुण, बनावट, २ कापका ।

सं० पोतक-(पु=गुदकरना)-पु०
वालक, बच्चा ।

प्रा० पोतड़ा-पु० बच्चे का बिछौना ।

प्रा० पोतना-क्रि० स० लीजना,
लेसना । [बेटा ।

प्रा० पोता-(सं० पौत्र) पु० बेटे का

प्रा० पोतिया-स्त्री० नहाने के समय
पहनने का कपड़ा, गँवार लोग के
शिर पर बाँधने का कपड़ा; २ एक
खिलौने का नाम । [की-बेटी ।

प्रा० पोती-(सं० पौत्री) स्त्री० बेटे

प्रा० पोथा-(सं० पुस्त, पुस्त्र=आदर
करना, वा बाँधना) पु० बड़ी पुस्तक ।

प्रा० पोथी-(सं० पुस्ती, पुस्त्र=आदर
करना, वा बाँधना) स्त्री० पुस्तक,
परी, किताब ।

प्रा० पोदना-एक पत्तेर का नाम ।

प्रा० पोना-क्रि० स० पिटोना, गा-
यना, गुपना, गुहना, २ रोटी बे-
लना वा बनाना ।

प्रा० पोपला-गु० बेदाँत, दाँतरहित,
अदाँत, जिस के दाँत गिरगये हों ।

प्रा० पोमचा-पु० एक तरह का
रंगीला कपड़ा ।

प्रा० पोर-(सं० पर्व) स्त्री० गाँठ,
गिरहा, दो गाँठों का बीच ।

प्रा० पोरी-(सं० पर्व) स्त्री० बाँस
की अथवा गन्ने की गाँठ ।

प्रा० पोला-गु० खाली, सूखा, को-

मल, नर्म । [पचाना कर्ता ।

अं० पोलेटिकल एजेण्ट=राज्य

अं० पोलेटिकल सभा=राज नै-
तिक सभा । [नीति शास्त्र ।

अं० पोलेटिकल एजुकेशन=राज

अं० पोलेटिकल आफिसर=राज
नैतिक रक्षकचारी ।

अं० पोलेटिकल डिपार्ट्म्यण्ट
=पोलेटिकल=राजनैतिक, डिपार्ट्-

म्यण्ट=प्रकरण, विभाग ।

सं० पोपक-(पुप्=पोसना पालना)
क० पु० पोसनेवाला, पालनेवाला,

रक्षक ।

सं० पोपण-(पुप्=पोसना) भा० पु०
पालन, भरण, रक्षा ।

प्रा० पोपना } (सं० पोपण) क्रि०
पोखना } स० पाखना, रक्षा

पोसना } करना, प्रतिपालन
करना ।

सं० पोपणीय-(पुप्+अनीय)
र्म्य० पु० रक्षायोग्य, पालनयोग्य ।

सं० पोपयित्तु-क० पु० भर्ता, स्वामी,
खाविंद ।

सं० पोप्रा-क० पु० पालनकरनेवाला ।

सं० पोप्यपुत्र-(पोप्य=पालाहुआ,
पुत्र=जड़का) र्म्य० पु० लेपालक,

दत्तपुत्र, गोद लियाहुआ बेटा,
मुतबन्ना । [शान, सुवर्ष ।

प्रा० पोह-स्त्री० मोर, तड़का, बि-

० पोहना—क्रि० रोटी बनाना ।

० पौ—स्त्री० पारे में का एका, २ वह जगह जहाँ बड़ोहियों को पानी पिलाया जाता है ।

० पौड़ा—(सं० पुण्ड्र, वा पौण्ड्र, पुण्ड्र=मलना) पु० एक प्रकार की ऊँस ।

० पौड़ना—क्रि० अ० सोना, लेटना, आराम करना । [चेड़ा ।

सं० पौत्र—(पुत्र) पु० पोता, बेटेका

सं० पौत्री—(पुत्र) स्त्री० पोती, बेटे की बही ।

प्रा० पौधा—पु० नया पेड़, केड़ा ।

प्रा० पौन—(सं० पवन) स्त्री० हवा, वायु ।

प्रा० पौन—(सं० पादोन, पाद=चौपा, हिस्सा, ऊन=कप) पु० तीन चौथाई, चौथे हिस्से तीन, चारभागका तीन ।

प्रा० पौना—पु० भरना, भरनी, एक लोहेकी चीज जिसमें बहुत ते द्रव होते हैं और उससे पकौड़ी आदि तली जाती है । [फाटक ।

प्रा० पौर—स्त्री० पड़ा दरवाजा, द्वार-

सं० पौराणिक—(पुराण) पु० पुराण वक्ता, पुराण वाक्येवान, पुराण गदाहुआ, पवित्र ।

प्रा० पौरिया—(पौर) पु० देवरी बान, द्वारपाल ।

प्रा० पौरी—स्त्री० पौर, देवरी, द्वार ।

सं० पौरुष—(पुरुष) पु० पुरुषत्व, पु-

रुपार्थ, पराक्रम, बल, जोर, २ पुरसा ।

सं० पौर्णमासी—(पूर्ण=पूरा, मास=महीना, वा चांद) स्त्री० पूर्णमासी, पूर्णमा, पूर्णमासी ।

प्रा० पौली—स्त्री० पौर, पौरी ।

प्रा० पौवा—(सं० पाद=चौपाभाग) पु० चौपाभाग, पावभरका पाँट ।

सं० पौप—पूष शब्दको, देखो ।

प्रा० प्यार—(सं० प्रीति, वा प्रेम) पु० पियार, प्रेम, प्रीति, प्रेह, छोड़, दुलार, मुहब्बत ।

प्रा० प्यारा—(सं० प्रिय) पु० प्रीति, स्नेही ।

प्रा० प्याराजानना—बोल० आदरकरना, सम्मान करना, प्रेष्ठ सम्मान ।

प्रा० प्यारी—(सं० प्रिया) पु० स्त्री० विशारी, प्रिया, २ मनोहर ।

प्रा० प्यास—(सं० पिपासा) स्त्री० पिपास, तृष्णा, तृषा, पीनेकी चाह ।

प्रा० प्यासबुझाना—बोल० प्यास दिशाना, कुदरीलाना, पानीपिलाना ।

प्रा० प्यासलगना—बोल० प्यास होना ।

प्रा० प्यासा—(सं० पिपासित) पु० पिपासा, तृष्णा, तृषा, पीने चाहता । [प्यासा होना ।

प्रा० प्यासे मरना—बोल० बहुत

मं० प्र—२३०० पाने, २ कामे बरके,

१. ३ दूर, ४ श्रेष्ठ, प्रधान, बड़ा, ऊपर,
मुख्य, ५ बहुत, अधिक, अतिशय,
६ पारम्पर्य, गुरुत्व, ७ चारों ओर से,
सब तरफ से, ८ उत्पत्ति, पैदा होना।

सं० प्रकट—(प्र=प्रवृत्त, दूर से कट
(प्र=घेरना) पु० प्रकट, प्रत्यक्ष, चौड़े,
जाहिर, स्पष्ट, खुलासा।

सं० प्रकटन—भा० पु० प्रकाश करना,
जाहिर करना। [रोशन।

सं० प्रकटित—र्म० पु० प्रकाशित,

सं० प्रकम्प—(प्र=बहुत, कंप=काँपना) पु० काँपना, धरपराहट,
कंपकंपी।

सं० प्रकरण—(प्र=बहुत, वा गुरुत्व
कृ=करना) पु० भूमिका, आशय,
धातु, हतान्त, प्रस्ताव, प्रसङ्ग, कांड,
संग्रह, विषय, अध्याय, सरिता,
अवसर, मौक़ा, विभाग।

सं० प्रकर्ष—(प्र=बहुत वा ऊपर, कृप
=लेंचना) भा० पु० उच्चमता,
बड़ाई, श्रेष्ठता, उत्कर्ष।

सं० प्रकाण्ड—पु० हथकी जड़ और
दालीके बीच की लकड़ी, हथका
धड़ वा स्तम्भ, प्रशस्त वाणी, आ-
शीर्वाद। [पूर्वक।

सं० प्रकाम—गु० पपेच्छ, पपेष्ट, इच्छा

सं० प्रकार—(प्र, कृ=करना) पु०

भेद, भाँति, दूर, दौलत, तरीक़, रीति,
सादरप, किस्म।

सं० प्रकाश—(प्र=बहुत, काश=व-
मकना) पु० उजाला, ज्योति,
रोशनी, धूप, तेज, चमक, २
फैलाव, प्रसिद्ध, गु० प्रकट, प्रसिद्ध,
विख्यात, चमकीला, उज्ज्वल,
उजागर, प्रकाशित, चमकता, कि०
वि० खुले खुले, साफ़ साफ़।

सं० प्रकाशक—प्रकाश) क० पु०
प्रकाश करनेवाला, रोशन करने
वाला, जाहिरकुर्निदा।

सं० प्रकाशात्मन्—(प्रकाश+आ-
त्मन्) पु० सूर्य, परमेश्वर।

सं० प्रकाशनीय } र्म० पु० प्रकाश
प्रकाश्य } नाई, प्रकाशयोग्य

सं० प्रकाशित—(प्रकाश) र्म० प्रकट,
प्रत्यक्ष, जाहिर, उजागर, प्रसिद्ध,

सं० प्रकीर्ण—(कृ=फैलाना) र्म० पु०
वित्तित, विस्तृत, फैला हुआ पु०
चमक, चौर, अरब।

सं० प्रकृत—(प्र, गुरुत्व वा पहले, कृ=
करना) र्म० पु० प्रियाहुमा, गुरुत्व
प्रियाहुमा, २ तीकतीव, यथार्थ, सच।

सं० प्रकृत—(प्र=बहुत, कृ=करना)
स्त्री० स्वभाव, गुण, २ माया,
परमेश्वर की शक्ति, ३ किसी वस्तु

की असली दशा, ४ एक छन्द का
नाम जिसके हर एक पद में इक्कीस
अक्षर होते हैं, प्रामा, मन्त्री, मित्र,
राजाना, देश, राजा, मित्र,

सबके सम्प्रको भी प्रकृति कहते हैं।

सं० प्रकीर्तिन-(म=बहुत, कृन्=कर-
ना) भा० पु० वर्णन, कथन, भजना।

सं० प्रकीर्त्य-(क=कैलाना) स्पर्श
विपराहुआ, द्विदकाहुआ ।

सं० प्रकीर्तित-स्पर्श पु० कथित, वर्णित।

सं० प्रकृष्ट-(म=बहुत अथवा ऊपर
कृष्=सींचना) गु० उत्तम, मुख्य,
वृहत्, श्रेष्ठ ।

सं० प्रकोष्ठ-पु० कोठे के नीचे का
कोठा, अटारी, हाथकी बल्लाई से
कोहनीतक, बल्लाई और कोहनी
के मध्यका भाग ।

सं० प्रक्रम-(म=शुरूआ, क्रम=ज्ञाना)
पु० मारंम, शुरूआ, पर्यटन, रजाना,
३ अक्षरकाश, अक्षर ४ गणना ।

सं० प्रक्रिया-(म+ठ=करना) स्त्री०
विभाग, मकारण, २ रीति, प्रकार,
विधि, व्यवहार, ३ बदती, उन्नति,
४ मरिमा, प्रभाव, प्रताप, प्रगणना,
६ स्थल, ७ अधिकार ।

सं० प्रक्लिन्न-(क्लिन्न=तरहोना) क०
पु० तप्त, अधाना, आसदा ।

सं० प्रक्षालन-(म=बहुत, क्षल=
शुद्ध करना) पु० पक्षालना, धोना,
शुद्ध करना ।

सं० प्रक्षेप-(क्षि=कैलाना) पु० कै-
लाना, त्यागकरना ।

सं० प्रखर-(म=बहुत, खर=तीखा)

गु० बहुत तीखा, तेज, पु० घोड़े
हाथी का बख्तर, पासर, घोड़ेका
चारजामा ।

सं० प्रखरांशु-पु० तीक्ष्ण किरण,
तीव्र किरण ।

सं० प्रख्यात-(म=बहुत, ख्या=प्र-
सिद्धहोना) गु० प्रसिद्ध, विख्यात,
नामवर, प्रतिष्ठित, मुष्ठाजित ।

प्रा० प्रगट् (सं० प्रकट) गु० प्र-
परंगट्) सिद्ध, जाहिर, प्रत्यक्ष ।

प्रा० प्रगटना-(सं० प्रकट) क्रि०
अ० प्रगट होना, प्रत्यक्ष होना,
पैदाहोना, उत्पन्न होना, जन्मलेना ।

सं० प्रगल्भ-(म=बहुत, गल्भ=दीठ
होना) गु० धृष्ट, शोच, दीठ, निडुर,
साहसी, दृढ़, मयल, सामर्थी ।

सं० प्रगल्भता-(मगल्भ) स्त्री०
दीठपन, साहस, पराक्रम, दृढ़ता,
ढिठाई ।

सं० प्रगाढ़-गु० दृढ़, बजोर, अधिक,
बहुत ।

सं० प्रग्रह-पु० लगाव, रोकड़ी,
बेड़ी, तराजूकी रस्सी, किरण, धे-
दन, वेध, भुजा, बाँधने की रस्सी ।

सं० प्रग्राह-पु० पगहा, बाँधने की
रस्सी ।

सं० प्रघाण-पु० बराण्डा, बराण्डा,
मद्यन के आगे का साजान ।

सं० प्रचण्ड-(म=बहुत, चण्ड=द-

रावना) पु० बहुत डरावना, भया-
नक, २ बहुत तीखा, भयान, ३
बहुत कोपी, ४ अत्यन्तगर्म अथवा
भयाना हुआ, ५ जनसंख्या नहीं
महने योग्य, अमंज, अत्युग्र,
बहुदृ, तेज ।

मं० प्रचलित-(म=आगे, चल=च-
लना) पु० व्यवहारी, चलनी,
बोझान, भिगका चलनही, जो च-
लता हो अथवा व्यवहार में आना
ही भेदे प्रचलित मित्रा—प्रचलित
भाषा ।

मं० प्रचार-(म=बहुत वा आगे,
चर=जाना) पु० चलन, व्यवहार,
गति, २ बहुर करना, ३ फैलाव,
विस्तार ।

मं० प्रचारक-व० पु० प्रकाशक,
वेक, विचारक, फैलानेवाला ।

मं० प्रचारणा-(मं० प्रचारण म=
आगे, चर=जाना) क्रि० स०
लनवाना, पुकारना ।

मं० प्रचार-व० बहुत, अधिक ।

मं० प्रचुर-पु० सार्थ, भंडारी,
संपन्न ।

मं० प्रचुरद-व० (प्रचुर=प्रचुर) पु०
ज० पु० उदार, दृढ़, दान ।

मं० प्रचुरदत्त-व० प्रदा, दान, दान,
विह ।

मं० प्रचुरदत्त-व० (प्रचुर=प्रचुर) पु०
पु० पु० दान, दान, दान ।

सं० प्रजा-(म=बहुत, जन=पैदा हो-
ना) सी० संतान, २ प्राणी,
सृष्टि, ३ राज के लोग, रहस्य,
अधिकार, स्थितन ।

मं० प्रजापति (मना + पति) पु०

सृष्टि का स्वामी, सृष्टि का बनाने
वाला, ब्रह्मा, दत्त, करण आदि
दश मुनि जिनको ब्रह्मा ने पहले
ही पहल पैदा किया और सृष्टि
बनाने का काम सौंपा उनके
नाम—१ मरीचि, २ अत्रि, ३ अ-
क्षिरा, ४ पुनस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु,
७ मनेना, ८ विश्विष्ठ, ९ भृगु, १० नारद
और कितने एक आचार्य कहते हैं
कि प्रजापति सात हैं और कितने
एक दत्त, नारद और भृगु इन तीनों
हीको प्रजापति कहते हैं और कितने
एक ग्रंथकार इसीसे प्रजापति बन-
लाने हैं २ राजा ३ बाप, पिता ४
अप, ५ जापाना ६ सूर्य ७ आग
कुमार ।

मं० प्रजाधिकारी राज्य-पु० ज-
गृही मन्त्रनय निय राज्य की
वशा पर राज करत करे राजा
कहे न हो ।

मं० प्रजाशान (वशा + शान्त कर=
बहुत कर) वा० पु० प्रजाको दृष्ट
देना, वशा का नाश करना ।

मं० प्रजाशान्त-वशा + शान्त

शास्त्र=सिखाना) भा० पु० प्रजा
को सिखाना, दृष्ट देना, संज्ञा देना ।

प्रा० प्रजारना—(सं० प्रज्वलन)
क्रि० सं० प्रजारना, जलाना ।

सं० प्रजेश (प्रजा + ईश वा ईश्वर)
प्रजेश्वर } पु० दत्तप्रजापति ।

सं० प्रज्ञ-क० पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

सं० प्रज्ञा—(प्र=बहुत, ज्ञा=ज्ञानना)
स्त्री० बुद्धि, पति, ममभक्त, २ मरम्भनी ।

सं० प्रज्ञाचक्षु—धृताक्ष, चक्षुरीन,
बुद्धिचक्षु वाला ।

सं० प्रज्ञापत्र—(का० इस्तफना)
उसे करते हैं जिसमें गुरु अपवा आ-
चार्य ले पूँछकर सामाजिक कार्य
किये जावे ।

सं० प्रज्वलित—(प्र=बहुत, ज्वलन=ज-
लना वा चपकना) क० पु० ज्वलि-
मान्, प्रकाशित, उज्ज्वल, चपकीला ।

सं० प्रज्ञीन—(प्र, ज्ञी=उड़ना) भा० पु०
उड़ना, पक्षीकी गति ।

प्रा० प्रण—(सं० पण) पु० प्रतिज्ञा,
वन, होड़, नियम, पण, वीजा ।

सं० प्रणत—(प्र=बहुत, नम्=भुक्तना)
क० पु० अधीन, भुक्ता हुआ, नम्र
भक्त, दीन शरणागत ।

सं० प्रणतपाल-भा० पु० दीनपालक ।

सं० प्रणति—(प्र=बहुत, नम्=भुक्त-
ना) स्त्री० नमस्कार, प्रणाम, दंडवत् ।

सं० प्रणय—(प्र, नी=लेजाना) पु०
प्यार, प्रेम, २ प्यार से प्रार्थना ।

१ भरोसा, प्रयुक्ति, ४ नम्रता, मुरी-
लता, ६ विनयी, स्तुति ।

सं० प्रणव—(प्र=बहुत, नु=स्तुतिकरना)
पु० अक्ष, अक्षर तीनों देवनाभों
का मंत्र ।

सं० प्रणष्ट—(नष्ट=नाश करना) प्रमं०
पु० नाश हो गया, विशेष नाश ।

सं० प्रणाम—(प्र=बहुत, नम्=भुक्तना)
पु० नमस्कार, दंडवत्, प्रणत ।

सं० प्रणमित—क० पु० प्रणाम करने
वाला, प्रणामकर्ता या प्रणाम
कराया हुआ ।

सं० प्रणम्य—प्रमं० प्रणाम योग्य,
नमस्करणीय या प्रणामकर ।

सं० प्रणाली—(प्र=बहुत अपवा चारों
ओर से, नन्=बाँधना, वा नद=
गिरना) स्त्री० नाली, पनाला, २
परम्परा की रीति, कदामन ।

भं० प्रणिधान—(प्रा=धारण, पोषण
करना) भा० पु० मन में ध्यान
करना, वर्णारसोचना, समाधिभेद ।

सं० प्रणिधि—(प्राणि + धा=धारण कर
ना) क० पु० चर, दूत, जामूस ।

सं० प्रणिपान—(प्र=बहुत, नि=नीचे
और पत्र=गिरना) पु० प्रणाम, दंड-
वत्, सत्तापी ।

सं० प्रताप—(प्र=बहुत, तप्=तपना) पु०
तेज, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, अकाला ।

सं० प्रतापवान् (प्रताप) पु० तेज-
प्रतापी स्त्री, ऐश्वर्यवान् ।

सं० प्रतारण- (वृत्त=पार जाना, तेरना)

भा० पु० प्रवृत्तना, दृत्तना ।

सं० प्रति-उपस० प्री, जेतनी, प्री

प्रो, २ पास, ३ सामने, ४ वि-

रुद्ध, उलटा, विपरीत, ५ इसकी

प्रतिपक्षा, इसके देखते=निमित्त, ६ ऊपर, पर, ७ लगभग, ८ लिये,

बास्ते, ९ विपक्ष में, १० अनुसार

से, ११ हर एक की एक एक, सब,

१२ पीछे, फिर, पीछा, १३ एवम्,

पदले में, पल्ले में, जगह में, स्थान

में, १४ भाषणमें, १५ बराबर, समान,

सदृश, १६ नकल, १७ सुस्तक, निरुद्ध ।

भा० प्रतिउपकार- (सं० प्रत्युपकार

प्रति=पीछा, उपकार=प्रजा) पु०

पीछा उपकार, उपकारकावदना ।

सं० प्रतिकार) मान=पदलेमें कृ=

प्रतीकार) करना) पु० बैर का

रदना, पल्ले, २ दुःख, दुः करके

का उपाय, इलाज, निवारण, बर्जन,

पदक, पदत ।

सं० प्रतिकारक-क० पु० निवारक,

नामिष । [कर्मयोग्य

सं० प्रतिकार्य-सं० निवार्य, सो

सं० प्रतिकूल- (प्रति=उलटा या विरु-

द्ध, कूल=गुण, कूल=दुःखना) गु-

णना, विरुद्ध, विमुख, विलिनाफ

सं० प्रतिपक्ष- (प्रति=हर एक, पक्ष

=पक्ष) क० वि० पक्षपक्ष में, हर

एक पक्ष, हर एक, हर एक ।

सं० प्रतिग्रह- (प्रति=पुनः, ग्रह=लेना)

पुनः लेना, खीरान लेना ।

सं० प्रतिवात- (प्रति=पीछा, वात=

मारना) पु० पीछा मारना, मारके

बदले मार । [क० वि०

सं० प्रतीच्छा-सं० इन्तित्तारी ।

सं० प्रतिच्छाया- (प्रति=पिच्छा, छाया

छाया) सं० प्रतिपिच्छा, पिच्छा ।

सं० प्रतिज्ञा- (प्रति=आरस में, ज्ञा=

जानना) सं० गवेष, पण, जेष,

कौनकरार । [दनाया ।

सं० प्रतिज्ञापत्र-पु० प्रमाणपत्र, अह-

सं० प्रतिदान भा० पु० दानोपरि

दान, दान के पीछे दान ।

सं० प्रतिदिन (प्रति=हर एक, दिन)

क० वि० हर एक दिन, दिन दिन ।

सं० प्रतिध्वनि- (प्रति=पीछा अपवा

बराबर, ध्वनि=शब्द) सं० प्रति-

शब्द, सुन, शब्द प्रति शब्द ।

सं० प्रतिनिधि- (प्रति=एवम्, धि

बराबर, नि=में, धा=रसना) पु०

एवम्, एक की जगह दूसरा, २ सद-

शाना, प्रतिभा, प्रति, मुखतार ।

सं० प्रतिपक्ष- (प्रति=उलटा, पक्ष=

तरफ) पु० बैरी, शत्रु, विपक्ष, दुश्मन ।

सं० प्रतिपत्ति- (पत्ति=गिरना) सं०

प्रतिपत्ति, बोध, निदान, प्राप्ति,

आगम, गौरव, पदप्राप्ति, दान,

सं० प्रतिरोध—(प्रति + रुध=रोकना)

पु० निरोध, रोक, प्रतिबन्ध, निरादर, अविष्टम्भ ।

सं० प्रतिलेखक—क० पु० परानुव-

अलेख या जिसको पत्रलिखा जाय ।

सं० प्रतिलोम—पु० विलोम, उल-

टा, वाम, बायें, विररीत, अधः, बीच, कुलित पु० रोम रोम, हर एक रोम ।

सं० प्रतिलोमन—पु० वर्णसंकर, शुद्रपुरुष और उत्तम वर्णों की से उत्पन्न ।

सं० प्रतिवादी—क० पु० विरोधी, मुहमाखलेह ।

सं० प्रतिविधान—भा० पु० कथनोपकथन, कहेको कहना, दोबारा कहना ।

सं० प्रतिवामी—(वम्=हरना) क० पु० परोसी, हमसाया ।

सं० प्रतिविम्ब—(प्रति=पौछा, वा समान, विम्ब=छाया) पु० पर्वतों, छाया, प्रतिरूप, भवत्स ।

सं० प्रतिश्रव—(श्रु=सुनना) भा० पु० अंगीकार, मंजूर । [स्वीकृत] ।

सं० प्रतिश्रुत—अर्थ० पु० अंगीकृत,

सं० प्रतिषेध—(निषेध=सिद्ध करना)

भा० पु० निषेध, निरोध, मुनानिषन, मनष करना ।

सं० प्रतिष्ठा—(प्रति, ष्ठा=उहरना)

स्त्री० बड़ाई, गौरव, मान, यश, आदर, इज्जत, सम्मान, नाम, देवता के नये मन्दिर को अथवा देवताकी नई मूरतकी संस्कारों से पवित्र करना, स्थापना ।

सं० प्रतिष्ठासूचक—प्रतिष्ठा + सूच=जाना) क० पु० इज्जत का जाहिर करनेवाला ।

सं० प्रतिष्ठित—(प्रतिष्ठा) अर्थ० पु० नामी, नामवर, प्रतिष्ठावाला, यशस्वी, गौरवयुक्त, सम्मानित, आदरित, मुण्डित, मुकर्म, गिरामी, रस्थापित, संस्कार किया हुआ ।

सं० प्रतिहत—(प्रति, हन्=मारना) अर्थ० पु० नष्ट, हर्षहीन, चेद्भिन्न, तिरस्कृत, अपमानित ।

सं० प्रतिहार—पु० द्वारपाल, द्विचारी, द्वार, सिपाह, द्वार, दरवाजा, स्वाग, ग्रहण, उपाय ।

सं० प्रतिहारक—(प्रति, हन्=हरना) पु० इन्द्रजाली, मायावी, जाजीगर, उद्योगी, उद्धारक ।

सं० प्रतीकार—(प्रति, कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, तदवीर, चारा ।

सं० प्रतिसर्ग—(प्रति, सर्ग=पैदा करना) पु० मलय, नाश, कषामत ।

सं० प्रतीक्षा—(प्रति=हर एक बार, ईश्वरदेखना) स्त्री० बाट देखना, प्रत्याशा, इन्तजारी, अपेक्षा ।

सं० प्रतीक्षक—(क० पु० राह देखने वाला, मत्प्राशी, मुन्तजिर ।

सं० प्रतीति—(मनि, इण्=जाना) र्म्य० पु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामों, जाना हुआ, सिनासा, इति ।

प्रा० प्रतीति—(यं० प्रतीति पु० इण्=जाना) स्त्री० भरोसा, विरवास ।

प्रा० प्रतीतिकरना—बोल० परीक्षा करना, २ भरोसा करना ।

सं० प्रतीति—(मति + इति) भा० स्त्री० विरवास, निश्चय, एतमोद, आदर, हर्ष ।

सं० प्रतीप—(मति + कप्=जाना) गुं० मतिरूल, नाकपावरदार, विपरीति, पु० गुप्त, राजाशत्रुकापिता ।

सं० प्रत्यक्ष—(मति=साग्रहे, कच=मात्र) गुं० सम्मुख, साग्रहे, आगे, मकट, प्रसिद्ध ।

सं० प्रत्यय—(मनि=फिर, इण्=जाना) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीति, भ्रष्टा, एतवार, २ ज्ञान, ३ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु और शब्द के ध्वन्य में जोड़ा जाता है इत्युक्तान्वी ।

सं० प्रत्याख्यान—(धातु + आख्यान, ख्या=करना) पु० स्थापन, निरस्तार, स्वरुप, तरदीद करना, मनस करना, रोक देना ।

सं० प्रत्याशा—(मति=फिर, आशा

आस) स्त्री० आशा, भरोसा, उम्मेद २ वाट देखना, इन्तजारी, प्रतीक्षा, ३ चाह, इच्छा ।

सं० प्रत्याशी—क० पु० मुन्तजिर, राह देखनेवाला ।

सं० प्रत्याहार—(मति=फिर, अ=चारों ओर से, इ=लेना) पु० व्याकरण में वर्णपाला के दो अक्षर अधिक अक्षरों का समूह—जैसे अइ-उण्, अलृ, आदि, संसर्गादि, योग ।

सं० प्रत्युत्तर—(मति=प्रीति, उत्तर=जवाब) पु० उत्तर अक्षर, प्रीति-जवाब ।

सं० प्रत्युह—(मति + ऊह=उत्कर्षण) पु० विघ्न, उपद्रव, हर्ष ।

सं० प्रतीकार—(मति + कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, उद्धार, निवार, तद्वीर, चारा ।

सं० प्रत्येक—(मनि + एक) गुं० एक एक, हर एक, अलग अलग ।

सं० प्रथम—(प्रथ=नामवर होना) गुं० पहला, ममान, उत्तम, पुरुष, आदि, क्रि० वि० पहले, परछेरी ।

सं० प्रथा—स्त्री० ख्याति, यश, विस्तार, मचेर, कीर्ति, नामवरी, पांडुकी स्त्री कुली ।

सं० प्रथित—(प्रथ=प्रसिद्ध होना) र्म्य० पु० ख्यात, प्रसिद्ध ।

सं० प्रद—(प्र=बहुत, द=देनेवाला,
दा=देना) गु० देनेवाला ।

सं० प्रदक्षिण—(प्र=मागम, दक्षिण
=दाहिना ओरसे) स्त्री० दाहिनी
ओर से देवता के चारों ओर फिर-
ना, परिक्रमा, सवाकृति ।

सं० प्रदर्शक—(प्र=आगे, दर्शक=दि-
सानेवाला) पु० दिखानेवाला,
शिक्षक, पढ़ानेवाला ।

सं० प्रदर्शनी—भा० स्त्री० नुपायश,
शोभा, सजाव ।

सं० प्रदर्शनस्थान—धि० पु० नुपाय-

सं० प्रदान—भा० पु० दान, छैराव ।

सं० प्रदीप—(प्र=बहुत, दीप्=धमकाना)
पु० दीपक, दिया, चिराग, सूर्य, प्रकाश ।

सं० प्रदेश—(प्र=मुख्य, देश=देश) पु०
मुख्यदेश, मुक्त, जिला, परगना)
२ परदेश, दूसरा मुहल ।

सं० प्रदोष—(प्र=प्रारम्भ, दोष=रान,
दुष्=बदलना वा बिगड़ना) पु०
संघर्ष, सायंकाल, मूर्ख होने के
पीछे दोषहीनता का समय, रमणी
मुख, सज्ज ।

सं० प्रदोषकाल—पु० सायंकाल,
शाम का वक ।

सं० प्रद्युम्न—(प्र=बहुत, युम्न=यत्न,
दिप्=धमकाना) पु० कामदेव का
अवतार, श्रीकृष्ण का बेटा ।

सं० प्रधान—(प्र=बहुत, प्रथि=प्राथम्य)

पु० प्रकृति, माया, २ शिव, ३
मुखिया, राजा का मुखिया, से-
नापति आदि, अधिकारि गु० मुख्य,
श्रेष्ठ, बड़ा ।

सं० प्रधी—गु० श्रेष्ठ, प्रधान, प्रथम, चारी,
बड़ा बुद्धिमान, श्रीमन्शी बुद्धिपुक्ता ।

सं० प्रध्वंस—(प्र=बहुत, ध्वंस=नाश
करना) पु० नाश, विध्वंस, शानि,
विनाश, क्षय ।

सं० प्रपञ्च—(प्र=बहुत, पचि=फैला-
ना) पु० विस्तार, फैलाव, २ वि-
रोध, विपरीतता, ३ छले, धोखा,
कपट, उगाई, चूक, झूठ, ४ संसार,
जगत्, माया, दिखाव ।

सं० प्रपा—(प्र=बहुत, पा=पान कर-
ना) स्त्री० पनपट, पानी का घर ।

सं० प्रपात—(प्र=बहुत, पत=गिरना)
पु० निर्भर, कुल, किनारा, तटहीन,
पर्वतस्थान, निरवलम्ब, पतनशाला,
शृङ्खल, पतन, गिरना ।

सं० प्रपितामह—(प्र=पिता, मा
ह=है, पितामह=दादा (जिसे) वा
प्रपितामह (दादा) पु० परदा-
दा, २ पुत्रता, ३ मन्ना ।

सं० प्रपूर्ति—(प्र=पूर=पूर=करना)
स्त्री० संपूर्णता, समाप्त, शक्तिनाम ।

सं० प्रपौत्र—(प्र=आगे, पौत्र=पुत्र)

प्रदुषा, प्रीष पोता (॥) पु० प्रीते, कृ
वेदा, परपोता ।
सं० प्रफुल्ल (प्र=वहुत, फुल्ल=विक-
प्रफुल्लित) सना, वा फूलना) गु०
फुला हुआ, खिलेला हुआ, खिलसा
हुआ, २ मसम, आनंदित, हरित,
३ समस्ता हुआ, दीप्तिमान् ।
सं० प्रफुल्लवदन- (प्रफुल्ल=मसम,
वदन=मुख) गु० जिससे मुखसे सुशी
मसम होती हो, ओ मसम देता जाया ।
सं० प्रवक्षक- (प्रवृ=वक्षता) क०
गु० प्रचारक, छद्मी, दयापात्र ।
सं० प्रवजना-भा०, पु० प्रवारणा,
पलना ।
सं० प्रवन्ध- (प्र=वहुत, प्रवधा चारों
धोरसे, दण्ड=राश्रवा) भा० पु०
बन्धोबस्त, २ क. द. वी रचन, जं-
मक, बगव, इतिजाय. कायदा ।
सं० प्रवन्धक-क० पु० बन्धनाहर्ता,
मुक्तशिव ।
सं० प्रवल- (प्र=वहुत, वल=जोर) गु०
बलवान्, जोर वर, सामर्थी,
बना, पूर, तीव्र, साहसी ।
सं० प्रवाल- (प्र=वहुत, वल=राश्रव) पु०
बलीम दावर, जय वधा, २
मंग, बगवर्त, भीम-दण्ड ।
सं० प्रवृद्ध- (प्र=वहुत, वृद्ध=मानना) गु०
मानना हुआ, सुखी ।

सं० प्रवोध- (प्र=वहुत, वृष्ट=जानना)
पु० ज्ञान, उपदेश, समझ, चेतना,
२ सावधानी, नींद से अथवा अज्ञा-
नता से जागना वा चेतन होना ।
सं० प्रवोधन- (प्र=वहुत, वृष्ट=जा-
नना) भा० पु० जगाना, चिताना,
सावधान करना, सिखाना, जतना-
ना, बनाना ।
सं० प्रगज्जन- (प्र=वहुत, भज्ज=नोड़ना)
भा० पु० इवा. पवन, वायु, पिदारण,
नोड़ना, दृशना, गु० विदारण, नोड़-
नेवाला ।
सं० प्रा० प्रभञ्जनजाया- (सं० प्र-
भञ्जन=पवन, प्रा० जाया=देहाहुआ)
पु० अनुमान । [पु० अनुमान् ।
सं० प्रभञ्जनमुत्त- (प्रभञ्जन+मुत्त)
सं० प्रभव- (प्र=देहाहना, भिमसे)
पु० दण्डि, जन्मकारण, जितगे
देहा होने हैं, जैसे मरणा, उत्पत्ति
स्थान, २ जोर, दराकय, ३ जन्म ।
सं० प्रभा- (प्र=वहुत, भा=बदलना)
ग्री० चमक, झलक, खिलोति, जोर,
मकर, दीप्ति ।
सं० प्रभाकर- (प्रभा=चमक, कर
=बनेवाना, वृ=हरना) क० पु०
सूर्य, २ चांद, ३ जामोती ।
सं० प्रमान- (प्र=वहुत, भा० बद-
लना) पु० जोर, विमान, जामा-

(फलित, फलने, सुचर ।

सं० प्रभाव- (प्र=बहुत, प्र=होना) पु०

तेज, प्रताप, बल, शक्ति ।

सं० प्रभास- (प्र=बहुत, भास=चमकना) पु० एकभीरु की जगह ।

सं० प्रभु- (प्र=पहले या बहुत, प्र=होना) पु० नाथ, स्वामी, पनी, मालिक, पति, पालक, ईश्वर, विष्णु, गु० बड़ा, समर्थ, बलवान ।

सं० प्रभुत्व भा० पु० } (प्रभु)
प्रभुता भा० स्त्री० } बढ़वान
ईश्वरता, स्वामीपन, बड़ाई, महत्त्व,
महिमा, ऐश्वर्य, हुकूमत ।

सं० प्रभृति- (प्र=बहुत, प्र=भरना)
स्त्री० प्रहार, भंगति, आदि, इत्यादि,
और सब ।

सं० प्रमथ- (प्र=बहुत, प्रमथ=मथना) पु०
महादेव के एक मण्डानाम, २ चौड़ा ।

सं० प्रमथधिप- (प्रमथ + अधिप)
पु० शिव, महादेव ।

सं० प्रमदा- (प्र=बहुत, प्रमद=प्रसन्न
होना, जिसकी देख कर) स्त्री०
श्री, नारी, सुलक्षण स्त्री, रूपवती
नारी, सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री ।

सं० प्रमा- (प्र=बहुत, मा=नापना)
स्त्री० यथार्थज्ञान, सच्चाज्ञान, ऐसा
ज्ञान जिसमें किसी तरह का भ्रम न
हो प्रमाण, उपाय ।

सं० प्रमाण- (प्र=बहुत, मा=नापना) पु० नाप, माप, तौल, अन्दाजा,
परिणाम, २ साख, साक्षी, गवाही,
सिद्धान्त, मन्त्र, निश्चय, सच्चा, उद्धारना
निर्णय, निष्पत्ति, ३ कारण, उद्देश,
सीमा, ४ उद्गाहरण, दृष्टान्त, ऐसे सा
शास्त्र जिसका अधिक प्रमाण मिले,
गु० सच्चा, मही, ठीक ठीक, यथार्थ,
मानने योग्य ।

प्रा० प्रमाणिक- (सं० प्रमाणिक)
गु० भरोसावाला, विश्वासरात्र,
योग्य, प्रनिष्ठित, पु० सभापति ।

सं० प्रमानामह- (प्र=उत्पन्न हुआ
है, मानामह=नाना जिससे) पु०
परानाना ।

सं० प्रमाथ प्रमथ=मथना) पु०
नाश परण, विनोदन, मथना, विन
हानि ।

सं० प्रमाद- (प्र=बहुत, प्रमद=प्रसन्न
होना) पु० नशा, २ मनवालापन-
मस्ती, उन्मत्तता, पागलपन, ३ अमा,
बचानी, भूल, चूक अमावधानता ।

सं० प्रमादी- (प्रमाद) क० पु०
उन्मत्त, वाबला, चौढ़हा, २ नशे में
मस्त, ३ अमावधान, अनेन, बेहोश,
हट्टी, जिद्दी ।

सं० प्रमित- (प्र, मा=नापना) प्रमे-

पु० नापा हुआ, मापा हुआ, जांचा हुआ, २ जाना हुआ । [सयभ्र ।

सं० प्रमिति—स्त्री० यथार्थज्ञान, ठीक

सं० प्रमीला—(प्र, पील=नेत्रपीचना)

भा० स्त्री० सन्द्रा, उर्नीदा, उरसाह शून्य, कारिल ।

सं० प्रमुख—पु० मान्य, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, मुखिया, सम्मुख, पु० मुनि, भारम्भ ।

सं० प्रमुदित—(प्र=बहुत, मुदु=ममभ्र होना) क० पु० मसभ्र, हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्ल, खुश ।

सं० प्रमेह—(प्र, मिह=सींचना) पु० पोत बिगाड़ रोग, बीर्य में का रोग यह रोग इक्षीस मकार का है जिरियायन ।

सं० प्रमोद—(प्र=बहुत, मुदु=मसभ्र होना) पु० रर्षे, आनन्द, खुश, हुलास ।

सं० प्रयत्—(प्र=बहुत, यत्=शांति) पु० पवित्र, नियम युक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, निपत, मैय र ।

सं० प्रयत्न—(प्र=बहुत, यत्=मनन करना) पु० बहुत परिश्रम, लगानार मिहनत, बहुत स.वधानी ।

सं० प्रयाग—(प्र=बहुत, यत्=यज्ञ करना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में इलाहाबाद भी कहते हैं जहाँ गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट

संगम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का संगम

घरनी के नीचे गुप्त हुआ है—उस जगह को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ

ब्रह्मा ने शंखामुर शक्त से, वेदों को लाकर दशभस्त्रमेधयज्ञ किये, २ यज्ञ ।

सं० प्रयाण—(प्र=गहरे वा दूर, वा बहुत वा=जाना) पु० धावा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, मस्थान ।

सं० प्रयास—(प्र=बहुत, यत्=जतन करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, धकावट, यत्न ।

सं० प्रयोग—(प्र=बहुत, यत्=मिलना) पु० अनुष्ठान, प्रयोगकरण, बराकरना, २ इष्टान्त, उदाहरण, हे कारण, प्रयोजन, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, प्रयुक्त करना नियम करना, दहरान, लगाना, इस्तमाल करना, निर्देशना, उदाहरण, सूक्ष्म योद्धा, अमलदरापद, यथाव करना ।

सं० प्रयोजक—क० पु० मेरक, मे-पफ, नियोग करनेवाला, लगाने वाला, प्रपाय करनेवाला ।

सं० प्रयोजन—(प्र=बहुत, यत्=मिन्नता) पु० कारण, अधिमाय, मनन, आशय, मनोरथ ।

सं० प्ररोह—(प्र=कर=वीजनपना, निकलना) भा० पु० ऊपरजाना, निकलना, चढ़ना ।

पु० नापा हुआ, मापा हुआ, जांचा हुआ, २ जाना हुआ । [समझ ।

सं० प्रमिति—स्त्री० यथार्थज्ञान, ठीक

सं० प्रमीला—(प्र, पीन्=ने प्रमीचन) भा० स्त्री० सन्दा, उनींदा, उरमाह शून्य, कारिल ।

सं० प्रमुख—पु० मान्य, प्रधान, मुख्य, भेष, सुमिया, सम्मुख, पु० मुनि, आरम्भ ।

सं० प्रमुदित—(प्र=बहुत मुदु=यमस होना) क० पु० यमस, हविर्त, धान्दित, मकुड, रुग ।

सं० प्रमेह—(प्र, मिह=मीचना) पु० पांशु विगाह रोग, पीरध में का रोग यह रोग इस्तीम नकार का है निरिपान ।

सं० प्रमोद—(प्र=बहुत, मुदु=यमस होना) पु० हर्ष, आनन्द, सुग, सुशी, हुलास ।

सं० प्रयत्न—(प्र=बहुत, यत्=शक्ति) पु० परिश्रम, निषय मुक्त आचारी, परिश्र, मुक्त, निषय, नैव ।

सं० प्रयत्न—(प्र=बहुत, यत्=यत्न करना) पु० बहुत परिश्रम, लगाना दिवन्त, बहुत स बनानी ।

सं० प्रयाग—(प्र=बहुत, यत्=यत्न करना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिनकी इन दिनों में इलाहाबाद भी कहते हैं जहां गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का मकर

संगम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का संगम पत्नी के नीचे गुप्त हुआ है—उस नगर को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ मन्मा ने शंखामुर हाथ से वेदों को लाकर दशभस्त्रमेधयज्ञ किया, २ यज्ञ ।

सं० प्रयाण—(प्र=गए बाहर, वा बहुत वा=जाना) पु० धारा, कूच, गवन, गपन, धारा, जाना, प्रस्थान ।

सं० प्रयाम—(प्र=बहुत, यम्=जतन करना या परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, यथावर, यत्न ।

सं० प्रयोग—(प्र=बहुत, युग्=मिलना) पु० अनुष्ठान, यगीकरण, ब्रह्मकरना, २ दृष्टान्त, उदाहरण, हे कारण, यथोजन, फल, ४ काम, कार्य, ध्याना, ५ नियुक्त करना नियत करना, ६ शाना, लगाना, इत्यन्तमाल करना, निदर्शना, उदाहरण, मुख्य योद्धा, व्यवसाय, वर्गीकरण ।

सं० प्रयोजक—क० पु० मेहन, वे-वा, निषाव करनेवाला, लगाने वाला, उत्पन्न करनेवाला ।

सं० प्रयोजन—(प्र=बहुत, युज=दिनना) पु० कारण, आपिनाय, यत्न, आनन्द, बनारस ।

सं० प्रगेह—(प्र=बहुत, गेह=योजन करना, निहनना) क० पु० उपरजाना, निहनना, चरना, चंड ।

पु० नापा हुआ, मापा हुआ, नांचा हुआ, २. जाना हुआ । [मयभ्र ।

सं० प्रमिति—(प्र० धर्माधिकार, टीक

सं० प्रमीला—(प्र०, पीलु=नेपथीचना)

भा० री० तन्त्रा, उनीडा, उरसाह शून्य, बाहिल ।

सं० प्रमुख—पु० मान्य, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, मुख्य, सन्मुख, पु० मुनि, आरम्भ ।

सं० प्रमुदित—(प्र० वदुन, मुदु=प्रसन्न होना) क० पु० मयभ्र, हर्षित, आनन्दित, मकुट, सुरा ।

सं० प्रमेह—(प्र० मिह=सींचना) पु० फोत बिगाड़ रोग, बीर्य में का रोग यह रोग इसीस प्रकार का है निरिद्यान ।

सं० प्रमोद—(प्र० वदुन, मुदु=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, आनन्द, सुग, सुरा, हुलास ।

सं० प्रयत्—(प्र० वदुन, यत्=शान्ति) पु० पवित्र, निषम युक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, निषम, मैय र ।

सं० प्रयत्न—(प्र० वदुन, यत्=प्रयत्न करना) पु० वदुन परिश्रम, लगातार प्रयत्न, वदुन स.वधानी ।

सं० प्रयाग—(प्र० वदुन, यत्=यज्ञ करना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में इलाहाबाद भी कहते हैं जहाँ गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट

संगम हुआ है और कहते हैं

बीर्य नदी सरस्वती वा

प्राची के नीचे गुप्त हुआ है

मगध को विजयी करने में और

प्रयाग ने गंगामुख राज्य से वेदों

लाकर दशमरवमेयज्ञ किया, २ यत्

सं० प्रयाण—(प्र० गच्छे वा दूर, वदुन वा=माना) पु० धावा, कूच, गहन, गहन, धावा, जाना, मस्यान ।

सं० प्रयास—(प्र० वदुन, यत्=प्रयत्न करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, धावा, यत्न ।

सं० प्रयोग—(प्र० वदुन, यत्=प्रयोग करना) पु० अनुष्ठान, परीक्षण, पराकरण, २ वृष्टान्त, उदाहरण, के कारण, प्रयोग, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, ५ नियुक्त करना नियत करना, उदाहरण, लगातार, इत्यादि, इत्यादि, निदर्शना, उदाहरण, सूत्र, योद्धा, अपमनदरापद, यथावत करना ।

सं० प्रयोजक—क० पु० मेरक, वे-पा, नियोग करनेवाला, लगाने वाला, स्थाप करनेवाला

सं० प्रयोजन—(प्र० वदुन, यत्=प्रयोजन करना) पु० वारण, अभिवाय, यत्न, भाग्य, मनोरथ ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्ररोह—(प्र० वदुन, यत्=प्ररोह, निकलना) मा० पु० ऊपर जाना, निकलना, चढ़ना, ऊँचा ।

सं० प्रलम्ब—(प्र=आगे, लवि=रो-
कना, ठहराना वा लटकाना) गु०
लम्बा, विशाल, नीचे लटका हुआ
पदा पु० एक राजस का नाम
जिसको यज्ञदेवजी ने मारा ।

सं० प्रलय—(प्र=बहुत, वा चारों
ओर से ली=गलना, वा मिलना)
पु० कल्प का अन्त, जब सारा
संसार नष्ट हो जाता है, युगान्त ।

सं० प्रलाप—(प्र=बहुत, लप=बोल-
ना) पु० वृथा बकवाद, निरर्थक
वात, अनर्थक वाक्य ।

सं० प्रलापी—(प्रलाप) क० पु०
बहुतबकनेवाला, वृथाबकनेवाला ।

सं० प्रलोभन—(प्र, बहुत, वा चारों
ओर से, लुप्=लुमाना) भा० पु०
मोहन, लुभाव, लोभ, लालच,
कुसंसारद, लुपाना ।

सं० प्रवण—(प्र=चलना) पु० गम
न, पगु, नीचीगगह, बदर, नम्र,
आपन, गुण, लुण, मुन, स्निग्ध,
चिकना, आसक्त, सीण ।

सं० प्रवर—(प्र=बहुत, वर=अच्छा, वृ-
त्तासंद करना) पु० मन्त्रान, रे
गोत्र, गोत्र, ३ एक मुनि का नाम
जिन्होंने हर एक कुछ का गोत्र उह-
राया, ४ वनवास गोत्र में का एक
गोत्र, गु० भेटु, उपप ।

प्रवर्त्तक—(प्र, वृत्=होना, पर

प्र, उपसर्ग के साथ आने से इसका
अर्थ, शुम्भ्य करना, आगे बढ़ना,
लगना, इत्यादि होने हैं) क० पु०
आरम्भ करनेवाला, उठानेवाला,
करनेवाला, उभाड़नेवाला, प्रेरक,
लगावृत्त, आदिकर्ता, मूळकारक ।

सं० प्रवर्त्तन—(प्र + वृत्=काम में
लाना) भा० पु० प्रवृत्ति, आश्लापन,
प्रेरण, प्रेषण, पठावना ।

सं० प्रवर्त्तिन—स्म० पु० आश्लापित
प्रेरित, प्रेषित ।

सं० प्रवर्षण—(प्र=बहुत, वृष्=बर-
सना) पु० एक पहाड़ का नाम जो
क्षिप्रिक्वा पुरी के पास था उसपर
श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण वरसातकी
श्रुतु में रहे थे ।

सं० प्रवास—(प्र=दूर, वस्=रहना)
पु० विदेश, परदेश में रहना ।

सं० प्रवासन—भा० पु० प्रक्षेप मा-
रण, देहत्याग, निकारना, भगाना
परदेश भेजना ।

सं० प्रवासी—क० पु० परदेशी, विदेशी ।

सं० प्रवाह—(प्र=बहुत, वा लगातार
वह्=बहना) पु० धारा, बहाव,
सोना, स्रोत ।

सं० प्रवाहक—क० पु० गाड़ीवान,
संप्रहर्णी, दस्त ।

सं० प्रविष्ट—(प्र+विष्=पुसना, जाना)
क० पु० पुसनेवाला, पैठनेवाला ।

सं० प्रवीण-(प्र, वीणा, वीन, अर्थात् जो वीणा बजाके गावे, पर यह पद रुद्रदेवसंस्थिते इसका अन्तरार्थ दीक नहीं लगता) पु० चतुर, निपुण, बुद्धिमान्, स्थाना, होशियार ।

सं० प्रवीणता-(प्रवीण) स्त्री० चतुरार्थ, निपुणता, स्थानपन, लिखाकन ।

सं० प्रवृद्ध-(प्र=बहुत, धृष्ट=ज्ञान) क० पु० जाग्रत, जगैषा ।

सं० प्रवृत्ति-(प्र, वृत्=होना) स्त्री० किसी काममें लगना, २ अभ्यास, ३ समाचार, वार्ता, खबर, ४ प्रवाह, ५ इच्छा ।

सं० प्रवेश-(प्र, विश्=पुसना) पु० पुसना, पैटना, पहुँचना ।

सं० प्रवेशक-क० पु० प्रवेशकारी, पुसनेवाला ।

सं० प्रवोधन-(प्र + धुव=समझाना) भा० पु० समझाना, उपदेश करना ।

सं० प्रवोधक-क० पु० समझाने वाला, प्रशमित (प्रत=चलना) क० पु० भिक्षु, प्रकीर्ण । [काह ।

सं० प्रव्रज्या-स्त्री० यस्मात्प्रयत्नं स्थान

सं० प्रशंसनीय (प्रशंसा) धर्म० पु० प्रशंसा के योग्य, सराहने योग्य, स्तुति करने योग्य ।

सं० प्रशंसा-(प्र=बहुत, शंस=सराहना) स्त्री० सराह, बर्दाह, स्तुति, तारीफ, रत्नाया ।

सं० प्रशंसित } धर्म० पु० स्तुति
प्रशंस्य } तारीफकेलायक

सं० प्रशमन-(प्र=बहुत, शम्=करना) पु० ठंडा करना, शांत करना, दूर करना, २ मारना ।

सं० प्रशस्त-(प्र=बहुत, शस्=सराहना) क० पु० सराहने योग्य, श्रेष्ठ, यथोचित, यथायोग्य, सत्य, योग्य, उत्तम, बहुत प्रशंसा, मुकल, अमोघ, संपन्नित ।

सं० प्रशस्ति-(प्र=बहुत, शस्=सराहना) स्त्री० सराह, बर्दाह, प्रशंसा, तारीफ, अलकाय ।

सं० प्रश्न-(प्रच्छ=पूछना) पु० पूछना, बवाल, निष्ठासा, जाननेकी इच्छा ।

सं० प्रश्न्य-(प्र + धि=सेवाकरना) पु० प्रणय, नम्रता, प्रेम, सेवा, आराधन ।

सं० प्रशान्त-भा० पु० रक्षादकाहोगया ।

सं० प्रश्रित-क० पु० विनीत आश्रित, निर्भर ।

सं० प्रष्टव्य-(प्रच्छ=पूछना) धर्म० पु० पूछने योग्य । [पूछनेवाला ।

सं० प्रष्टा (क० पु० निष्ठासु, प्रच्छक,

सं० प्रसक्त-(प्र=प्रदने, मत्=पिजना, पु० प्रस्ताव, सङ्घ, प्रेत, चर्चा, बात, कथा, सम्बन्ध ।

सं० प्रसन्न-(प्र=प्रच्छातिररसे, सङ्घटना) क० पु० इष्टि, आनन्दित

एक सफेद पुन्दा सा होजाता है ।

प्रा० कुसकुपाना—क्रि० अ० काना-
कुसी करना, कानाकानी करना ।

प्रा० कुसलाना—क्रि० स० दिनासा
देना, भूलाना, भ्रांसा देना, धो-
खा देना, बहकाना, दमदेना,
बहलाना ।

प्रा० फूंक—(फूहना) त्री० दम, सांभ ।

प्रा० फूंकदेना—बोल० आगलगादेना ।

प्रा० फूंकना—(सं० फुत्कार) क्रि०
स० मुँहसे हवा निकालना, २ आग
लगाना, जलाना, मुलगाना, ३ ब-
जाना, (जैसे तुरही, सींगी आदि) ।

प्रा० फूंकफूंककरपावधरना—बो-
ल० बहुत सावधानी से काम क-
रना या रहना ।

प्रा० फूंकारना—(सं० फुत्कार) क्रि०
अ० फाफनाना, फुहार मारना,
फुत्कारना (जैसे सांझा) ।

प्रा० फूँही } स्त्री० छोटी छोटी मेह
फोहार } की बूँदें, भीसी, मन्द
फूहार } मन्द बर्षा ।

प्रा० फूट—(सं० स्फुट, स्फुट=फूटना
वा टूटना) स्त्री० एक तरह की
कचड़ी, पकी हुई कचड़ी, २ (स्फुट)
विगाड़, बैर, विरोध, बसेड़ा, भ-
गड़ा, असम्पत्ति, अनमेल, ३ जुदा
होना, अलगगव, बिलगव, ४ ख-
टन, ५ सेव, दधार ।

प्रा० फूटपड़ना—बोल० बसेड़ा
मचना, विरोध होना, भगड़ा उठ-
ना, बीच पड़ना ।

प्रा० फूटफूटकररोना—बोल० उमड़
उमड़ कर रोना, बहुत रोना ।

प्रा० फूटहोना बोल० किसी की
सम्पत्ति नहीं मिलना, एक मता
न होना । [जाना ।

प्रा० फूटरहना—बोल० अलग हो-

प्रा० फूटना—(सं० स्फुटन, स्फुट=
फूटना) क्रि० अ० टूटना, २ बि-
भक्ति होना, बिखरना, अलग
होना, ३ फटना, चिरना, ४ उठ-
ना, फैलना (जैसे मुंगी), ५ क-
लीका खिलना, ६ भेद खुलजाना,
७ चैरी से बिलजाना ।

प्रा० फूटीसहें परं काजलन सहें-
करावत—थोड़ी घंटी नहीं सहना
और सबका सब नुकसान सहना ।

प्रा० फूफा—पु० फूफी का पति ।

प्रा० फूफी } स्त्री० बापकी बहिन ।
फूफू }

प्रा० फूल—(सं० फुल, फुल्ल=फूलना)

पु० पुष्प, पुष्प, कुसुम, सुपन, २
स्त्री का रस, निहानी, ३ मुँद की
इड़ियां जो जल जाने के पीछे जु-
नी जाती हैं, ४ एक प्रकारका कौ-
सा जो बहुतसाफ और सफेद होता
है, ५ फुजाव, सूज, गुंथहुतलका ।

प्रा० फूलजाना—बोल० मूनजाना,
प्र मसम होना, आनन्दित होना, ३
मोटाहोना ।

प्रा० फूलफड़ना—बोल० सुन्दरताई से
बोलना, मीठा बोलना, २ दीपक
से जले हुए नेत्रों के टपकों का गिरना ।

प्रा० फूलपड़ना—बोल० आग लग-
जाना, जल जाना ।

प्रा० फूलवैठना—बोल० टुराहोना,
प्र मसम होना, शपित होना, बहुत
प्रसन्न होकर बैठना । [मरझा ।

प्रा० फूलगोवी—सी० गोवी, क-
प्रा० फूलना—(सं० फुलन, फुल्लन
फूलन) क्रि० प्र० मिलना, बिक

सना, बहदहाना, २ पताय होना,
दुःख होना, दुल्लसना, निरोग रहना,
पड़ना, पनपना, फनना, ३ मूकना,
मोटाहोना, बापुसे भाना, बापुसे
फूलना, ४ पणवहना ।

प्रा० फूलताफिरना—बोल० अत्य-
न्त प्रसन्न होना ।

प्रा० फूला (सं० फुल) गू० फूना
हुमा, सुना हुमा, २ सिल्लाहुमा,
विहता हुमा, बहदहा हुमा ।

प्रा० फूलानसमाना बोल० मगन
होना, अत्यन्त आनन्दित होना,
आनन्द से फूल जाना ।

प्रा० फूस—गू० सड़ा और मूलावास,

प्रा० फूसमें चिनगारी डालना
बोल० बलेबा मचाना, भूँडा
ठगाना ।

प्रा० फूहड़—गू० अतमीरी, पूर्ण
यावद-गोड़ी (यह शब्द स्त्री के
लिये बोला जाता है) स्त्री० मैली
कुत्तली स्त्री ।

प्रा० फूहा—गू० हाँका फाहा जिस
को दूध में भिगो कर घोंचें के छुड़ म
निचोढ़ते हैं जब कि यथा अपनी मा
की चुँची से दूध नहीं पीसकता हो ।

प्रा० फेंकना—(सं० चेंपण, चिप-
कैरना) क्रि० प्र० डालना, बीगना,
दूर गिराना, अलग करना, बगभूद
दोहना (घोड़े वी) सरपट जाना ।

प्रा० फेंकदेना—बोल० दूरगिरादेना ।

प्रा० फेंट) सं० कपरवन्द, पट्टा,
फेंट) बटिन्द ।

प्रा० फेंटवांधना—बोल० दिसीयाम
के करने के लिये तैयार होना, ठान-
ना ठहगाना, कपर बांधना ।

प्रा० फेंटा } गू० स्त्री० कपरवन्द,
फेंटा } २ छोटी सी गेंदी ।

सं० फेन—(स्फाय=बहना) गू० भाग,
बफ, फेना, मसुदफेन ।

सं० फेनावाहिन, गू० मल, रस,
दुग्ध, दूध, मसुद ।

प्रा० फेनी—(सं० फेन) स्त्री० एक
भाँति की मिठाई ।

सं० फेर—पु० शृगाल, गीदड़ ।

प्रा० फेर—(फेरना) पु० घुमाव, बाँका,
चक्र, पैच, २ तवदील, बदली,
चिह्नार, ३ घुरे दिन, घुरा भाग,
अभाग्य, ४ कठिनाता, ५ दूरी, क्रि०
वि० दूरीवार, पीछा, फिर, उलटाना ।

प्रा० फेरखाना—बोल० घुपना, चक्र
खाना, २ दुखगाना, तल्लीफ उठाना ।

प्रा० फेरदेना—बोल० उलटा देना,
पीछा दे देना, लौटा देना ।

प्रा० फेरपड़ना—बोल० फेरक पड़ना,
पीछा रहना, चक्रपड़ना, दुःख होना ।

प्रा० फेरफार—बोल० झल, फोर,
धोखा, दसा, २ ओसराना, ओसरी,
परस्पर, फेरफेरी ।

प्रा० फेरफारकरना—बोल० बदल
बदल कान, परिवर्तन करना, २
कपट करना, धोखा देना ।

प्रा० फेरफेरी—बोल० आपस में
किसी बात होलेना और पीछे देना ।

प्रा० फेरना—क्रि० सं० उलटाना, घुमा-
ना, लौटाना, पीछा दे देना, हटाना,
दूर करना, २ पोतना (जैसे चूना,
कलाई आदि) ।

प्रा० सिरपरहाथफेरना—बोल० फु-
सलाकर उठाना ।

प्रा० हाथफेरना—बोल० प्यार करना,
दुनारकाना, छोड़ करना ।

फा० फेअल } काम, क्रिया ।
फेल }

सं० फेलक—(फेल + अक, फेन =
जाना) क० पु० संचिष्ट, जूट ।

सं० फेलन—भा० पु० फेंकना ।

सं० फेलित—भा० पु० फेंका हुआ ।

अं० फेनोज=म्यम्यर, अंग ।

प्रा० फेलना—क्रि० अ० पिछना,
पसरना, बिथरना, बिगारना, २
चौड़ा होना, ३ प्रसिद्ध होना ।

प्रा० फेलाना—क्रि० सं० पिछाना,
पसारना, बिथराना, २ खोल देना,
३ चौड़ा करना, ४ प्रसिद्ध करना,
प्रकट करना, ५ हिताय करना ।

प्रा० फेलाव—पु० प्रचार, बिखार,
प्रमाण, चौड़ाई ।

प्रा० फोफी—स्त्री० नजी, लूनी, २
पोली चीज ।

अं० फोटो—प्रतिविम्ब, चित्र ।

अं० फोटोग्राफर=चित्रलेखक, मु-
भांधार ।

प्रा० फोड़ना—(सं० स्फोटन, स्फुट =
फटना) क्रि० सं० तोड़ना, फाड़ना,
धीरना, दुकड़े २ करना, २ प्रकट
करना, भेद खोल देना ।

प्रा० फोड़ा—(सं० स्फोटक, स्फुट =

फूटना) पु० घाव, जखम, फूटनी

प्रा० फोला-पु० फफोला, झाना ।

फा० फोरन्-क्र० वि० मयः, तुगन्

समीप, तत्काल, तत्क्षण ।

अं० फोटो-स्वार्थः, परदेसीय, बाणिज्य ।

(व)

सं० व-पु० वरण, = घड़ा, = समुद्र

४ गानो ।

प्रा० वेंकाई-(मं० बटना, बड़, बड़ि=

टंका डोना) मा० खो० टंकागन,

टंकाई, निवाहन, पांशान, फेर,

पुणव ।

प्रा० वेंगड़ी-खो० खिचो के हाथ में

पहननेवा का एक गहना ।

प्रा० वेंगला-पु० एतद्वामकान

जो चारों ओर से घुलता रहता है,

२ (सं० बड़) एक तरह का पाव,

३ बंगाली शोधी ।

प्रा० वेंगाला-(मं० एह) पु० बंगाल

देस का नाम ।

प्रा० वेंगाली-(मं० बड़) पु० व-

गाने का रहनेवाला, खो० बेंगाले

की शैली ।

प्रा० वेंचना-(सं० बज्जन, बंज=ब-

ना) क्रि० प्र० पढ़ना, रचिना ।

प्रा० वेंदनावार-(मं० बन्द=बांधना,

१ बार=दरबार) खो० पूर

आंगणों की माना मोह्यार अगवा

कोई उत्सव और परी दिन दरवाजे

पर बाँधने हैं ।

प्रा० वेंदर-(मं० वानर) पु० एक

जानवर जिसका डोल डोल और

मुँह आदमी से बहुत मिथता है ।

प्रा० वेंदरकीसी-खो० खवदलना-

खोल० गुप्त रिसाना, अहं गुस्ते

में होना ।

प्रा० वेंदरकीतरह नचाना-खोल०

बड़ा कठिन काम करना ।

प्रा० वेंदर क्या जाने अदरक का

स्वाद-बराबर-मूर्ख आदमी अदरक

की मोटा गुण नहीं जानता ।

प्रा० वेंदवा } (सं० बंधू=भांजा)

बंधुवा } पु० कैदी ।

प्रा० वेंदो-(मं० बन्दी, गंदे=मगाना

३ भुजना, नयनहार करना) पु०

बंधुवा, कैदी, २ भाट ।

प्रा० वेंदी-खो० खिचो के लिलाट

पर पहननेवा एक गहना, बन्दिषा ।

प्रा० वेंदीगृह-(मं० बन्दाएर, बन्दी

=बंदी, एर=पर) पु० जेलखाना,

बंद खाना, कारागार ।

प्रा० वेंदीजन-(सं० बन्दी + जन)

पु० भाट, पारख, दगा बगानेवा ।

प्रा० वेंदोड-(मं० बंधू=भांजा)

खो० दासी, लोहो, कांटी ।

प्रा० वक्र-(सं० बड़, बड़ि=टंका



तराना, चिपगाना, छोटना ।

प्रा० वग - (सं० वरु) पु० वगुचा ।

प्रा० वगहूट - (वग=वगहोर, हूट=छुटना) श्री० गरपट, चचा ।

प्रा० वगहूटदोड़ना - बोल० सपट जाना, नेत्र दोड़ना ।

प्रा० वगला } (सं० वरु) पु० एक
वगुला } जलका जीव, वग ।

प्रा० वगलाभक्त - बोल० कपटी, छनी, पातण्डी, कपट धर्मी, फरेबी ।

प्रा० वगलामारेपंस्तहाथआये -
कहावत० घरीबको दुःख देनेसे बहुत
लाभ नहीं होता है ।

प्रा० वगार - पु० चरागाह, रमना,
दगावों की कसर, बाग ।

प्रा० वगुला (॥ व. भयचा वायुसे)
पु० हवाका चकर जिसमें घूम
ऊंची चउती है बरफ, चक्रवात ।

प्रा० ववार - पु० छोटका, धी और
बुद्ध ममाला गर्म करके दाल आदि
तरकारीयों में टाटना ।

प्रा० वग्घी } स्त्री० एक तरह की
वर्गी } मंगरेजों गाड़ी जिसमें
घोड़ा जोता जाता है ।

प्रा० वघेला - (वाघ) पु० एक जाति
के राजपूत, २ वाघका घवा ।

प्रा० वच - (सं० वचस्, वच्=बोल
ना) पु० वचन, वाक्य ।

प्रा० वचकाना - (का० वचासे) पु०
छोटा पु० कपटका लड़का २ छोटा
जना, बघोटा जना ।

प्रा० वचत - स्त्री० श्रेय, बानी, बकिया,
वकाय, अवशेष ।

प्रा० वचन - (सं० वचन) पु० बात,
वाक्य, कहना, २ कौल, कतार, पण,
होड़, गर्न ।

प्रा० वचनचूक - बोल० अचिरवःसी,
बैपतबार ।

प्रा० वचनछोड़ना - बोल० वचन
तोड़ना, कौलछोड़ना ।

प्रा० वचनतोड़ना - बोल० कहीहुई
बात से फिर जाना, शर्न से फिर
जाना ।

प्रा० वचनदेना - बोल० पका कौल
करना, पण करना, प्रतीक्षा करना ।

प्रा० वचननिमाना या पालना
बोल० कहेको पूरा करना, अपनी
बात पर पका रहना ।

प्रा० वचनबन्धकरना - बोल० बध-
न लेना, इकट्ठा करना ।

प्रा० वचनबंधहोना - बोल० बचन
देना ।

प्रा० वचनमानना - बोल० बात
मानना, आज्ञा पालन करना ।

प्रा० वचनलेना - बोल० इकट्ठा
करना ।

प्रा० वचनहारना - बोल० माचले-

आम जो घाँड़ी के मुँह में निकलती है (हिंदुओं के शास्त्र अनुसार) ।

प्रा० बड़हल—पु० एव फल का नाम ।

प्रा० बड़ा } (सं० बड़ा, बड़=विभाग
वग } करना, वा घेरना) पु०

पीसी हुई दाल की टिकियाँ जिन
सबो की भाँति वेत में जलकर
रामे हैं, वग ।

प्रा० बड़ा—(सं० बड़ा, बड़=घेरना)

पु० जेडा, प्रधान, मुखिया वही
हवा वा. महा ।

प्रा० बड़ाकरना—बोल० बड़ाना, २

विभाग को बुझा देना । [वान ।

प्रा० बड़ाबोल बोल० बड़बड़ की

प्रा० बड़ेबोलकाभिस्नीचा बोल०

बड़बड़ से गाली होती है ।

प्रा० बड़ागस्ताफकड़ना—बोल०

बड़ा जाना, कता करना ।

प्रा० बड़ेपेटसाटाहीना—बोल०

संतोही होना, धीर होना, क्षमा-
कर होना ।

प्रा० बड़ाई (सं० बड़ना) प्रा० श्री०

बड़ावन, बड़वान, बड़ाव, २ बड़ाव,
मृत्ति, बरसा, ३ बड़ाव, बड़ियावन ।

प्रा० बड़ाईकरना } बोल० बड़ा-
बड़ाईकरना } करना, बड़ाना

करना, २ बड़ाव कर-
ना, ३ बड़ाव करना, ४ बड़ाव

लंबी चौड़ी हाँकना, अपनी सराह-
ना करना ।

प्रा० बड़ाईदेना—बोल० आदरदेना,
उन्नत देना ।

प्रा० बड़ी—(सं० बड़ी) श्री० एक-
र की गाने की चीज जो दालकी

गनती है । [वग की तरकारी की

गाने की (बड़ा) बड़ी उमर की

श्री०, २ पु० बड़ शब्द का स्त्रीलिंग ।

प्रा० बड़ीवातनहीं—बोल० कुछ

कठिन नहीं ।

प्रा० बड़ई—(सं० बड़ई, बड़=बड़ा-
ना) पु० गानी, सुनार, बिरहरी ।

प्रा० बड़ती } (सं० बड़ना, बड़=ब-
बड़ती } दना) श्री० बड़काई

बड़ि, बड़का का बड़ना, तरकी,
वगति ।

प्रा० बड़ना (सं० बड़ना, बड़=बड़-
ना) क्रि० अ० अधिक होना, बहुत

होना, ऊँचा होना, २ आगे चलना ।

प्रा० बड़वटना—बोल० बड़वटना,
अविमर्श होना ।

प्रा० बड़जाना—बोल० अन्दाज से

बड़ाव करना ।

प्रा० बड़नी—श्री० बड़ा, पुनरी ।

प्रा० बड़ाना—क्रि० अ० अधिक होना,
बहुत होना, बड़ा करना, २ ऊँचा

करना, लम्बा करना, ३ आगे

लाना, ४ पठा लेजाना, अलग
कर देना, ५ बन्द करना (इं-
कानको) ।

प्रा० वढ़ाव- (बढ़ना) प्रा० पु० बढ़ती,
अधिकारी, २ चढ़ाव, उभाड़ना ।

प्रा० वढ़ावा- (बढ़ाना) पु० सुशोभन,
सारीफ, बढ़ाई, २ उभाड़ना ।

प्रा० वढ़िया- (बढ़ना) गु० बहुत
मोलका, महंगा, बहुसक्का ।

सं० वणिक्- (पण-लेन देन करना)
पु० बनियां महाजन, व्योपारी,
सौदागर ।

सं० वणिक्पथ- पु० हट, राह, बाजार ।

प्रा० वणिज- (सं० वणिक्पथ) पु०
व्योपार, लेन देन, सौदागरी ।

प्रा० वणिया- (सं० वणिक्पथ) पु०
बनियां, महाजन, व्योपारी,
बैरय, सौदागर, दूकानदार ।

प्रा० वत- याव, कौत ।

प्रा० वतवढ़ाव- बोल० याव बढ़ाना ।

प्रा० वतवना- बोल० बहानी, शाय
बतलवाला ।

प्रा० वतक- (अ० वतको) स्त्री०
एक जल-रस नीबू ।

प्रा० वतकढ़ाव- पु० (सं० वा-
वतकही, स्त्री०) चाँ, चूना)
चातनी ।

प्रा० वतकड़- गु० चक्री, चूना, चूनी,
बाचाल, गोपिदिया ।

प्रा० वताराना- (सं० वार्ता) कि०
अ० वार्तियाना, बातचीत करना ।

प्रा० वतलाना- (सं० वत-
वताना) कि० सज्जना, चिताना, सुझाना, सुझा-
ना, दिखाना, सिखलाना, समझा-
ना, सिखलाना, सुझाना, सुझाना,
व्याख्या करना, अर्थ करना ।

प्रा० वतास- (सं० वात, स्त्री०) इ-
बा, पवन, पाव, व्याध, वायु ।

प्रा० वतासा- (वतास, इबा) पु०
वताशा, एक तरह की मिठाई,
२ पुतपुला ।

प्रा० वती- (सं० वत्ति, वृत्त-रीना)
स्त्री० वाली, २ पत्नीता, ३ बांस
आदि की छड़, ४ झाल की छड़ी,
५ पगड़ी जिसको सिसपारी लपेट
कर जोतकर लेते हैं ।

प्रा० वतीजलाना- बोल० चिरास
जलाना, दीया जलाना ।

प्रा० वतीचढ़ाना- बोल० पाबो में
बची डालना ।

प्रा० वतीस- (सं० दासिगु) गु०
तीस और दो ।

प्रा० वतीसी- स्त्री० दांतों की लड़ी,
सब दांत, चूनीमी, चूनीला, चो-
ख दांत दिखाना, इसना ।

प्रा० वतीसी- स्त्री० चूनीमी, चूनीला,
चोख दांत दिखाना, इसना ।

प्रा० वतीसी- स्त्री० चूनीमी, चूनीला,
चोख दांत दिखाना, इसना ।

प्रा० वतीसी- स्त्री० चूनीमी, चूनीला,
चोख दांत दिखाना, इसना ।

प्रा० वतीसी- स्त्री० चूनीमी, चूनीला,
चोख दांत दिखाना, इसना ।

प्रा० वतीसी- स्त्री० चूनीमी, चूनीला,
चोख दांत दिखाना, इसना ।

प्रा० वतीसी- स्त्री० चूनीमी, चूनीला,
चोख दांत दिखाना, इसना ।

भौर बतीस दुहारा और रुखा
जो दुन्हा दुन्हन के ननिहाल को
जाना है उसे बतीसी कहते हैं ।

प्रा० बधुवा—(सं० वास्तुक) पु० एक
नर का नाम ।

प्रा० बदना—(सं० बदन. बधू=कह-
ना) कि० सं० दांव लगाना, पा-
नना, २. रचना, भाग में निभा
माना ।

सं० बदर—(बधू=कहना) पु० बेर
का पुत्र, विनोता, कलासर्पों में ।

सं० बदरि—(बधू=कहना) पु०
बेर, एक फल का नाम ।

सं० बदरिकाश्रम—(बदरिका +
आश्रम) पु० बदरिनाथ, बदरि-
नाथ का पहाड़ ।

प्रा० बदलना—(अ० बदल) क्रि०
सं० चलना, बदला करना, उल-
टना, और तरह से बना देना ।

प्रा० बदली—(बदल) स्त्री० बादल,
देर ।

प्रा० बदली—(बदलना) स्त्री० नय-
नीली, एक भगवत् समी भगव
माना ।

प्रा० बदना (सं० बधू=कहना) पु०
होनाय, मरिचक ।

सं० बद्री—स्त्री० चंद्रमा का, क-
वरी } धातु, बहने का क-
रिना कर्म ।

कदना—(सं० कदना) पु०

बादन, वेध, घटा ।

सं० वद्ध—(वन्धू=बांधना) कर्म० पु०
बांधा हुआ, रुका हुआ, रुक, रु-
चि, रुचमंद ।

सं० वध—(वधू=पारना) पु० पारना,
हिंसा, हत्या, इनना ।

प्रा० वधना—(सं० वधन, वधू=पा-
रना) क्रि० सं० मारना ।

प्रा० वधना } पु० लोटे, पैसा प-
वदना } क मिट्टी को छोड़ा
पारन ।

प्रा० वधाई, स्त्री० } मंगलाचार,
वधावा, पु० } आनन्दमय,
आनन्द के गीत, मयनयहार मुवां-
रव दी, सुशी का घाना ।

सं० वधक (वधू=पारना) क० पु०
वधिक } शिखरी, बोलिया, आ-
वधी } नेहरी, पारनेवाला ।

सं० वधनीय—(वधू=पारनीय) कर्म०
पु० पारनेयोग्य ।

प्रा० वधिया—(सं० वधू=बांधना)
पु० नपुंसक पेल, आदना ।

सं० वधिर—(वन्धू=बांधना) कर्म०
बांध निमई सुनने की इन्द्रिय बंधी
हुई हो) पु० बरग, बनरूटा ।

सं० वधू (वन्धू=बांधना, वधू=
नेहार) स्त्री० वधू, लड़के की स्त्री,
माती, पत्नी, भोक्, स्त्री—दुन-
वधू=पय पगने की स्त्री—देव-

वपू=देवी, देवता की स्त्री ।

सं० वधूटी—(वपू) स्त्री० बहु स्त्री,

पत्नी, मांया, मोरु, रत्नद्वय की स्त्री ।

सं० वधू—(वपू=पारिजात) स्त्री० पु०

मारने योग्य ।

सं० वधूस्थान—पि० कांसी देने

की जगह, वधूप्रति ।

प्रा० वन—(सं० वन) पु० जंगल,

आपसे लगे वृक्ष ।

प्रा० वनजात्रा—(सं० वनयात्रा)

स्त्री० प्रसंगे ८४ वन की यात्रा ।

प्रा० वनज } (सं० वनजिज) पु०

वनजिज } स्त्री० पार, लेन देन,

सौदागरी ।

प्रा० वनजर—(सं० वनया) स्त्री०

पक्षी धरती, ऊपर, वह धरती,

जिसमें कुछ नहीं उपज सक्ता ।

प्रा० वनजारा—(सं० वनजित) पु०

जो नाश आदि बलिजुही चीजों

की पैतों पर लाद कर के मारते हैं ।

प्रा० वनजनके—क्रि० पु० सज सज

के, भिगार करते ।

प्रा० वनन—प्री० मोटा कितारी की

बाज ।

प्रा० वनमानुष—(सं० वनमानुष)

पु० एक मानव जिसका होना

होस आदमी का सा होना है, २

अंश, वनवासी ।

फूलों की माला जो पैतों तक लंबी

बनाई जानी है और बहुत पार

मुनसी, कुन्द, पंदार, पारिजात और

रूपल के फूलों से बनती है ।

प्रा० वनरा } पु० दुलहा, पार ।

वना } स्त्री० दुलहिन ।

प्रा० वनसी } स्त्री० दुलहिन ।

वनी } स्त्री० दुलहिन ।

प्रा० वनसी—(सं० वनसी) स्त्री०

मंदती पक्षी के हाँडा, २ (सं०

वनी) मुरली, बाँसुरी ।

प्रा० वनात—स्त्री० ऊनी कपड़ा जो

दलदार मोटा होता है ।

प्रा० वनाना—क्रि० सं० रचना करना,

सँवार करना, निर्माण करना, २ त्रीक

करना, ३ ठडाना—(जैसे मकान,

दौवार आदि) ४ इच्छा रखना,

पिलाना, ५ प्रेष रचना, ६ सँवारना,

भिगारना, ७ मेल करना, पिछाना,

बनाना, ८ पढ़ाना, ९ सुपारना,

परम्पन करना, १० निरालना,

११ मुद्र करना, १२ निरालना,

विधाना, ठडाना करना, पुरल

करना, १३ निरालना, पैदा करना,

१४ पूरा करना, १५ मारना,

ठडाना, १६ पढ़ना करना ।

प्रा० वनाव—बनाना) पु० पु० वि-

नाश, मोबाद, २ देन, विनाश—

- बलाप, भीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलराम - पञ्च=जोग, रम्=सेनना) पु० यज्ञदेव, शेषजी का श्वशुर और श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलवत्-गु० वज्रयुक्त, वृत्ती, गुण,
धर्म, वस्तुमान ।

सं० मलयन्त } (वज्र=मोक्ष, वज्र=
बलवान् } बाज्ञा) गु० मोक्ष-
वज्र, वज्री, नाम्नी ।

सं० बलधर—(बत=बलदेव भी
=मां) ३० भीकृष्णकानाम् ।

बलवान-हूँ देगा, भगवा,

बलानुप्रास—(बलं=बलमय, अ-
नुप्रास=अनुप्रास) पु० भि. छन्दः ।

० इन्द्र, देवराज ।

१० बह्वर्गसि, बह्वर्ग
उत्तरादि ।

॥ १० ॥

1871

१५३

... ५५ पत्र
... ५५ पत्र

विषयः विष्णु यः

का मोग, भेद, कुर्बानी। ३३३

सं० वलिदान—(वलि + दान) पं०
 दिवना के समान बकरा आदि पशु
 को मारके खदाना, दिवना के लिये
 भोग, नैवेद्य ।

सं० बलिसङ्ग-पु० अंकुश, वायुक
कोश, चन्द्रगो का समूह ।

सं० बलिष्ठ-गु० बड़ा बलवाला ।

प्रा० बलिहारी—(संयोजित) श्री०
विद्यादास, मद्रास, कर्नाटक प्रांत ।

प्रा०वल्लिहारी ज्ञाना-शौल० निष्ठा

मं० बली (बल) गृ० जोरावर,

सं० बलीवर्द पु० भाण्ड, मां० ।

संवलामुख्य { (बकी वा बालि =
 बलिमुख्य { शीता गपदा, बन् =

निमते पुर्व पर का समझा दीला

सं० बर्लीयम् { गु० अभ्यन्तरती

वलायान) बड़ा जोरावर ।
प्राध्वनुवा - (वानू) पुं० वानुका

प्रा० बल्लभ-५०

शब्द

प्र. १००

में मरसों का रोग ।

प्रा० वस—(सं० वस, वस्=बाहना)

पु० काव, बल, जोर, २ अधिकार,

गु० आधीन,—वस करना, शील०
आधीन करना, दबाना,—वस में
आना, काबू में आना, आधीन होना ।

फ्रा० वस—(सं०) गु० बहुत, पूरा,
बहुतेरा, अतिवसत करना, बोल० दह-
रना, कर चुकना ।

प्रा० वसन्—(सं० वसन, वस्=पह-
नना) पु० कपड़ा, जोड़ा, पस्त्र, लूगा ।

प्रा० वसना—(सं० वसन, वस्=पहनना)
क्रि० प्र० रहना, ठिकना, यासा
करना, आयाद होना, घर बनाना ।

प्रा० वसन्त—(सं० वसन्त, वस्=पहनना
या मुगन्ध आना) स्त्री० एक ऋतु

का नाम जो चैत्र और कुज वैशाख

के महीने तक रहती है, २ एक राग

का नाम,—वसन्त फूलना, बोल०

सों के फूलों का भिलना,—

सों में वसन्त फूलना, बोल०

गाना—वसन्त के परधी भी

है,—कहावन यह जानने भी

पा हो रहा है ।

सन्ती—(वसन्त) पु० एक

धार का पीला रंग, गु० पीला ।

वसना—(वसना) क्रि० म०

आकाद करना, वस्ती कराना, आद-
दियों से भरना, २ (वस्=मुगन्धित

होना) मुगन्धित करना ।

प्रा० वसूला-पु० वह औजार जिस

से बड़ई छकड़ी कीलत है ।

प्रा० वसेरा—(सं० वास) पु० वासा,

रहने की जगह, पत्थर का घोंसला

अथवा अट्टा, परोर के राजकी रहने

का वासा ।

प्रा० वसुदेव—(सं० वसुदेव, वसु=पन

दिव=चपकना) श्रीकृष्ण का बाप

और गूरसेन का बेटा ।

प्रा० वस्ती—(सं० वसती, वस्=पहनना)

स्त्री० छोटा गांव, आवादी ।

प्रा० वस्तु—(सं० वस्तु, वस्=पहनना)

वस्तु } याद करना) स्त्री० चीज,

पदार्थ ।

प्रा० वस्त्र—(सं० वस्त्र, वस्=पहनना)

पु० कपड़ा, लूगा, वसन ।

प्रा० वहकना—क्रि० स० पोसा खाना,

२ नरो में कुछ कहना, ३ मीद में कुछ

बोलना, ४ यद के कहना ।

प्रा० वहकाना—क्रि० स० पोसा देना,

मुजाना । [वहारि ।

प्रा० वहँगी—(सं० विहँगी) स्त्री०

प्रा० वहत्तर—(सं० द्विसप्तति) पु०

मत्तर और दो ।

प्रा० वहधा—(सं० वाधा) पु० दुःख,

आपदा, २ रुकावट ।

प्रा० वहन } (सं० वहनी) स्त्री०

वहिन } माँ की बेटा, सौंदर्य, २

संति, बरना ।

बलराज, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलराम— बल=जोर, रम=

खेलना) पु० बलदेव, शेषजी का

अवनार और श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलवत्—गु० बलशुक्त, बली, पुष्ट,

मज्ज, बलवान् ।

सं० बलवन्त } (बल=जोर, वन्=

बलवान् } वाला) गु० जोरा-

वर, बली, सामर्थी ।

सं० बलदेव—(बल=बलदेव भी,

पु० श्रीकृष्णकानाम ।

दंगा, भगवा,

बलवान् ।

बल—(बल=बलमय, अ-

भाई)

का योग, भेटे,

सं० बलिदान—(

देवता के सामने

को मारके

योग, नैवेद्य ।

सं० बलि

कोड़ा, बन्दगी

सं० बलिष्ठ—गु

प्रा० बलिहारी

निखावर,

प्रा० बलिहारीजः

पर होना, बलवान्

सं० बली—(बल

बलवान्, पराक्रमी

सं० बलीवर्ह—पु०

सं० बलीवर्ह—(

बलीवर्ह)

बलीवर्ह)

बलीवर्ह)

बलीवर्ह)

बलीवर्ह)

बलीवर्ह)

सं० बलीयस् } गु०

बलीयान् } बड़ा

सं० बलवान्—(बल) गु

बलवान्, करकरा

पु० भाला,

सं० बली—स्त्री० नाव का दंड

बलीमारना, बोल

प्रा० क्वासीर—पु०

क्वासीर—पु०

कना

=शानी, बल=

अर्थात् जिसमें

लक पात-

लमें भेज दिया,

नैवेद्य, देवगु

लमें भेज दिया,

नैवेद्य, देवगु

लमें भेज दिया,

नैवेद्य, देवगु

में मस्तों का रोग ।

प्रा० वस—(सं० वस, वस्=वाहना)

पु० काव, चल, जोर, २ अधिकार,

गु० आधीन,—वस करना, बोल०

आधीन करना, दबाना,—वस में

आना, कारूपे आना, आधीन होना ।

फ्रा० वस—(ल०) गु० बहुल, पूरा,

बहुतेरा,—वसवसकरना, बोल० ढर-

रना, करबुदना ।

प्रा० वसन्—(सं० वसन, वस्=वह-

नना) पु० कपड़ा, मोड़ा, पत्र, लूगा ।

प्रा० वसना—(सं० वसन, वस्=रहना)

क्रि० अ० रहना, ठिकना, वासा

करना, आपाद होना, घरबनाना ।

प्रा० वसन्त—(सं० वसन्त, वस्=रहना

या सुगन्ध आना) स्त्री० एक ऋतु

का नाम जो चैत और कुज वैशाख

के महीने तक रहती है, २ एक राग

का नाम,—वसन्त फूलना, बोल०

सरसों के फूलों का भिलना,—

आँखों में वसन्त फूलना, बोल०

निमिराना—वसन्त के घरकी भी

खबर है,—कराबन यह जानने भी

हो क्या होरहा है ।

प्रा० वसन्ती—(वसन्त) पु० एक

महार का पीलारंग, गु० पीला ।

प्रा० वसना—(वसना) क्रि० म०

आपाद करना, वस्ती कराना, आदि-

वियों से भरना, २ (वस्=सुगन्धित

होना) सुगन्धित करना ।

प्रा० वसूला-पु० यह औजार मिस

से यदर्ई छकड़ी झीलत है ।

प्रा० वसेरा—(सं० वास) पु० वासा,

रहने की जगह, पसेरु को घोंसला

अथवा अड्डा, पसेरु के रावकी रहने

का वासा ।

प्रा० वसुदेव—(सं० वसुदेव, वस्=वन

दिव=वपकना)—श्रीकृष्ण का बाप

और शूरसेन का बेटा ।

प्रा० वस्ती—(सं० वसती, वस्=रहना)

स्त्री० छोटा गांव, आबादी ।

प्रा० वस्तु—(सं० वस्तु, वस्=रहना

वस्तु) यादकना) स्त्री० चीज,

पदार्थ ।

प्रा० वस्त्र—(सं० वस्त्र, वस्=परनना)

पु० कपड़ा, लूगा, वसन ।

प्रा० वहकना—क्रि० स० घोला खाना,

२ नगेमें कुछ कहना, ३ नींदमें कुछ

बोलना, ४ यद्दे करना ।

प्रा० वहकाना—क्रि० म० पोसा देना,

मुत्ताना । [वांवरि ।

प्रा० वहँगी—(सं० विहंगी) स्त्री०

प्रा० वहत्तर—(सं० दितसति) पु०

मत्तर और दो ।

प्रा० वहधा—(सं० वाधा) पु० दुःख,

आपदा, २ रुकाव ।

प्रा० वहन—(सं० वहिनी) स्त्री०

वहिन) माँकी बेटी, सरोदर, २

संति, बरना ।

प्रा० वहना—(सं० वह=वहना या ले जाना) क्रि० अ० चलना, पानीका जाना, होना, २ हवाका चलना ।
 प्रा० वहतेपानीमेंहाथधोना—क-हाथत-जयतक अपना कामबना रह तयतक अच्छा काम करलेना ।
 प्रा० वहनेऊ } (सं० भविर्नीपति) पु० वहनोई } वहिन वा पनि ।
 प्रा० वहरा } (सं० वहिर) गु० वह } आदमी भिसके सुनने की इन्दी सराव हो गई हो, कनफटा ।
 प्रा० वहल } स्त्री० एक-तेरह की वहली } गाड़ी ।
 प्रा० वहलाना—क्रि० स० मसअकरना, धुनाना, धोना, किसी चीज में लगा रंगना । [मुर्धार ।
 प्रा० वहेलिया—पु० शिकारी, प-प्रा० वहाना—(वहना) क्रि० स० चलाना, पानी जारी करना, २ पु० हल, कपट, होना । [करना ।
 प्रा० वहादेना—बोल० डनाड़ना, नाश प्रा० वहाफिना—बोल० भडकना फिरना, इधरउधर फिरना ।
 प्रा० वहाव—(वहना) भा० पु० पानीका जारी होना, वाह, चहाव ।
 प्रा० वहिर्मुख—(सं० वहिर=बाहर, मुख १० धरिरेमुख, नयनी, बागी ।
 १० वहाजती के हिसाब

रखने की किताब जो एक किनारे की ओर सी जाती है ।
 प्रा० वहिर } स्त्री० सेनाकी सामग्री, वहीड़ } डेराउपट्टायादि ।
 सं० वहु (वहि=वहना) गु० बहुत, डेर, वडा, अधिक ।
 प्रा० बहुत—(वह) गु० अधिक ।
 प्रा० बहुतगई थोड़ीगही—बोल० उतर पुग हो चुका है ।
 प्रा० बहुतान } (सं० वहना) स्त्री० बहुतायत } अधिकाई ।
 सं० बहुनिथ गु० बहुत दिन, बहुत बेर, अनेक बार, अनेक, बहुत ।
 प्रा० बहुतेरा—(सं० बहुतर) गु० बहुतसा, बहुतही बहुत ।
 सं० बहुधा—(बहु=बहुत, धा=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकारसे बहुत भांति से, बहुत बार, अकसर ।
 सं० बहुबाहु—(बहु=बहुत, बाहु=धुना) १० रावण व सरसबाहु आदि ।
 सं० बहुमूल्य—(बहु=बहुत, मूल्य=मोल) गु० बहुत मोलका, बढ़िया, महंगा ।
 प्रा० वहुरि } समुच्चय फिर, पुनि, और । वहारी }
 प्रा० बहुरूपिया—(सं० बहुरूपी) पु० भांड, स्वांगी ।
 सं० बहुवचन—(बहु+वचन) पु० बहुतको मतनानेकाना, बहुतवर्ग ।
 सं० बहुल—गु० प्रचुर, बहुत, पु०

प्रा० बांह (सं० बाहु) स्त्री० मुना,
बाहु, २ आस्तीन ।

प्रा० बांहट्टना-बोल० कोई सहा
यक न रहना ।

प्रा० बांहचढ़ाना-बोल० लड़ाई को
तैयार होना ।

प्रा० बांहदेना-बोल० सहायता दे-
ना, मदद करना ।

प्रा० बांहपकड़ना-बोल० सहायता
करना, पकड़ना, आश्रयदेना ।

प्रा० बांहवल-बोल० सहायक, सा-
थी, विभायनी । [करना ।

प्रा० बांहगहना-बोल० सहायता

प्रा० बांहगहेकीलाज-गु० जिसको
सहायता करे उसको छोड़ना पड़ी
लाज की बात है ।

प्रा० बाई-स्त्री० महारानी, (मरहटों
में) २ कंपनी ।

प्रा० बाई-(सं० बायु) स्त्री० हवा,
बादली, बात रोग ।

प्रा० बाई पचना-
उतरना, ..

प्रा० बाईमंभड़
बढ़ाना, ..

प्रा० बाईस-(सं०
बीस और दो ।

घर जो एक इने में होते हैं ।

प्रा० बाग } स्त्री० बागदोर, लगाव,
बागुरु } फंदा, जाल ।

प्रा० बागमोड़ना-बोल० शीतछाका
ढल जाना ।

प्रा० बागलूटना-बोल० वेवराहोना,
बरा में न रहना ।

प्रा० बागदोर-स्त्री० बहरसी जिस
को लगाव में लगा कर साईस घोड़े
हो ले चलता है ।

प्रा० बागा-(सं० बख) पु० जोड़ा,
पहनने के बहुत अच्छे कपड़े,
खिलबन ।

प्रा० बाघ } (सं० व्याघ्र) पु० ना-
बाघा } हर शेर ।

प्रा० बाघम्वर-(सं० व्याघ्राम्वर)
पु० बाघकी साल, शेर की पोस्त ।

प्रा० बाछना-(सं० बाछ=चाहना)
क्रि० सं० छांटना, चुनना ।

प्रा० बाजिन } (सं० बाघ) पु०
बाजा } बमाने का यंत्र, जो
बीज-बमाने के लिये बनाई जा-
ता गाया, बोल० बहुत से
की आवाज ।

सं० बाघ, बहु-
क्रि० सं० आवाज

फा०वाजू } पु० एक गहरा जिसको
वाजूबंद } बाज पर बांधने हैं,
धुमकः ।

प्रा०वाट—(सं०वाट, बट=घेरना) पु०
मार्ग, रस्ता, राह, इगल, पन्थ ।

प्रा०वाटकाटना—बोल० रास्ता च-
लना, सफर तैयार करना ।

प्रा०वाटिका—(सं०वाटिका, बट=
घेरना) स्त्री० बाड़ी, कुजबाड़ी
बगीचा, उपवन ।

प्रा०वाड़—(सं० वाट, बट=घेरना)
स्त्री० झूरी या तलवार की पार, २
अहावा या घेरा जो बाटोंसे बनाते
हैं, ३ सिपाहियों की कतार ।

प्रा० वाड़जड़ाना—बोल० एकसाथ
चन्द्रकवलाना, चन्द्रकोंको फैलकरना ।

प्रा० वाड़झाड़ना—बोल० बहुत
आदमियोंका एकसाथ बँटकर दगना ।

प्रा०वाड़दिलवाना—बोल० सान-
परचवाना, भीगाकरना, भीक्षणकरना ।

सं०वाड़व—पु० नरक, समुद्रकी अग्नि,
क्षिपों का ज्ञान, घोड़ोंका मूँह,
प्रक्षालण ।

प्रा०वाड़वांधना—बोल० बाँधों से
तेनकों वा किसी जगहको घेरना ।

प्रा०वाड़रखना—बोल० बीगाकर-
ना, सानकर बहाना ।

प्रा०वाड़हीनवसेतकी म्याद में
रखवालीकोनकरे—बुराई
जिम पर भरोसा हो या बँटकर

राले तब कोई बीजनहीमवसकी ।

प्रा०वाड़ा—(बट=घेरना) पु० झ-
डाता, घेरा ।

प्रा०वाड़ी—(सं०वाटी, बट=घेरना)
स्त्री० छोटा बाग, बगीचा, उपवन,
बगीचेमें घर, बंगाली घरको बाड़ी
कहते हैं ।

प्रा०वाड़—(वाड़ना) स्त्री० दूनी,
अधिहाई, नदी के पानीका उध-
ड़ना या अपनी रूढ़ से अधिक बढ़
जाना ।

प्रा०वाड़ना—(सं०वाड़=वाड़ना) क्रि०
अ० बढ़ना, चमकना ।

प्रा०वाण १ (सं०वाण, वाण=शरद्व
वान १ करना) पु० नीर, २ धूम
की बनी हुई गस्ती, शिरीषन का
पुत्र बाणामुर ।

सं०वाणलिंग—पु० १ बाणामुर ने
वर्मदा नदीके गहरा मिट्टी के जल-
पन को उसको बरसे हैं ।

प्रा०वाणि १ (सं० वाणिज्य)
वाणी १ वाणिज्य ।

सं०वाणिज्य—वाणिज्य ।

प्रा०वाणिज्य—वाणिज्य ।

प्रा०वाणिज्य—वाणिज्य ।

प्रा०वाणिज्य—वाणिज्य ।

प्रा० वारम्बार—(सं० वारंवार,
वार) क्रि० वि० बार बार, फिर
फिर, घड़ी घड़ी, मुताबत,
लगातार [और दो ।

प्रा० बारह (सं० द्वादश) पु० दश

प्रा० बारहवाँट—? मोह, २ दैन्य,
३ भय, ४ हाव, ५ हानि, ६ ग्लानि,
७ धुषा, ८ तृषा, ९ मृत्यु, १० लोभ,
११ मृषा, १२ अक्कीर्ति ।

प्रा० बारहवाटहोना—बोल० उत-
ड़ना, बिगड़ना, सटपानाश होना,
२ दुःखपाना, सनापा जाना ।

प्रा० बारहदरी—(बारह + दर = दर
बाजा) स्त्री० व० महानमिसरेबारह
दरवाजे हैं, बंगला, हवादार
महान ।

प्रा० वाराखरी—(सं० द्वादशखरी)
स्त्री० व० पंक्तियों में बारह स्वरों का
मिलान ।

प्रा० वारसिंगा } (सं० द्वादश
वारसिंगा } = बारह, भृंग =

सींग) पु० एक जानवर जो हरिण
सा होता है जिसके सींग लंबे
होते हैं और सींग में सींग होते हैं ।

प्रा० वाराह—(सं० वगह) पु०
शूकर, सूअर ।

प्रा० वारी—(सं० वादी) स्त्री०
वाड़ी, वगीचा, २ (सं० वालिका)
बच्ची, ३ (सं० वार) निपट

समय, पारी, नौबत, उसरी ।

प्रा० वारीदार—पु० वह नौकर जि-
सको नौकरी का समय नियत हो ।

प्रा० वारी—स्त्री० भरोमा, दरीची,
छोटा दरवाजा, २ हिंदुओं में एक
जाति, के लोग जो मशाल और
बत्ती बनाते हैं, ३ एकगरनेका नाम
जो नाक और कानों पर बना जाता है ।

प्रा० वारुणी—(सं० वारुणी, वरुण
अर्थात् मिते का देवता वरुण है)
स्त्री० मंदिरा, मेष, शराव, २ पश्चिम
दिशा, ३ शतमिषानक्षत्र, ४ दूध ।

प्रा० वारुत—स्त्री० दाक, शोरा,
गंधक और कोयला आदि से बनी
हई चीज जो आग पड़ने ही भूक
से उड़ जाती है ।

प्रा० वारो—(सं० वाल) पु० बालक ।

सं० वाल—(वल् = जीना, दान, करना)
पु० लड़का, बालक, २ केश, ३
पु० धूप, नासमझ, अज्ञान, बेहोश ।

प्रा० वाल—(सं० वाला) स्त्री० सोलाह
बारस की लड़की, २ पु० सात आठ
बारस का लड़का लड़की,—
अनात की फुनगी, ३ वह निशान
जो काच और निपाचे आदि में
होता है । [वाले, वाले पंचे ।

प्रा० वालगोपाल—बोल० लड़के
सं० वालग्रह—पु० बालकों के दुःख
—देनेवाले ग्रह, उपग्रह ।

- १० विदारना—क्रि० सं० भगाना,
विचनाना ।
- १० विताना—(वीतना) क्रि० सं०
विधाना, काटना ।
- ० वितीत—(सं० व्यतीत) गु०
वीता हुआ, गुजरा हुआ, जो पूरा
हो चुका, मुत्तकजी ।
- प्रा० वित्त—(सं० वित्त, वित्त=छो-
ड़ना, देना) पु० धन, दौलत,
दंड, २ गात, घना ।
- प्रा० विथकना—क्रि० अ० चपित होना
अधंमे में होना, ईरत में आना ।
- प्रा० विथरना } (सं० विस्तरण)
विथुरना } क्रि० अ० विलरना,
छिड़कना, फैलना ।
- प्रा० विथा—(सं० व्यथा) स्त्री०
पीडा, दुःख, दर्द ।
- प्रा० विदा } (सं० विद कटुता वा
विदाई } जुदा होना और
परपी में विद्वन्=रुखसत होना)
स्त्री० पुदी, जाने की आज्ञा, रुख-
सत, रुखसनी ।
- ० विदाकरना—शील० हरमन
करना ।
- ० विदारना—(सं० विदारण, वि-
चदुत, द=छाड़ना) क्रि० सं०
छाड़ना ।
- ० विदेश—(सं० विदेश, वि=दूसरा,
देश=मुरक) पु० दूसरा देश, दूस-

- रा मुरक, परदेश ।
- प्रा० विदेशी—(विदेश) गु० परदे-
शी, सैर मुरक का ।
- प्रा० विधना—(सं० विधि) पु० वि-
धाना, यज्मा, देव ।
- प्रा० विधवा—(सं० विधवा वि=वि-
न, धव=पति) स्त्री० रांड, बेवा, जिस
का पति मर गया हो ।
- प्रा० विन } (सं० विना, वि+ना)
विना } क्रि० वि० छोड़के, मुद,
रहित, विद्वन, सिवाय ।
- प्रा० विनआये तरना—शेक० वि-
घात मरना ।
- प्रा० विन रोये लड़का दूध नहीं
पाता—कहावत० विन मांगे कुछ
नहीं मिल सकता ।
- प्रा० विनभयप्रीत नहीं—कहावत०
विन डराये कोई नहीं मानता ।
- प्रा० विनमांगे दूध बराबर मांगे
सो पानी—कहावत० विनमांगे
मिले वही अच्छा है ।
- प्रा० विनवना } (सं० विनमन, वि=
विनोना } बहुत, नम्र=नम-
स्कारकरना) क्रि० सं० नमस्कार
करना, पूजना ।
- प्रा० विनसना—(सं० वि, नश=नाश
होना) क्रि० अ० नाश होना,
विगड़ना ।
- प्रा० विनास—(सं०
नाश, संहार,

प्रा० विनीला—पु० रुईका चीज ।

प्रा० विन्ती } (सं० विनीति, या
विनती } विनति, या विनय ।

वि=बहुत, नि=राना वा चलाना वा
नद=नमस्कारकरना) स्त्री० विनय.
नम्रता, मार्थना, अर्ज ।

प्रा० विन्द } (सं० विन्दु) स्त्री
विन्दी } गून्ग, मिफर, बिन्दु ।

प्रा० विपत } (सं० विपत्ति) स्त्री०
विपता } आपदा, दुःख, विपदा,
तत्कालीन । [गुठली ।

प्रा० विया—(सं० बीज) पु० बीज,
प्रा० वियालू—पु० रातका राना ।

प्रा० विरद—पु० यश, नाय, कृपाति,
रहियार ।

प्रा० सं० विरदावलि—(विरद=यश,
सं० अवलि=पात) स्त्री० बहुत यश,
बहुत कृपाति, बड़ी नामवरी ।

प्रा० विरमना—(सं० वि, रम्=
ठहरना, चैन करना) क्रि० अ०
ठहरना, रहना, विलम्बना ।

प्रा० विरला—(सं० विरल, वि, रा
=देना या लेना) पु० कोई कोई,
अनूठा, अपूर्ण, अनूप ।

प्रा० विरवा—पु० रुई, रुख, पौधा ।

प्रा० विरह—(सं० विरह, वि=बहुत,
रह=झोड़ना) पु० जुदाई, विद्वेद,
विप्रेष, विद्वेदना, पुरस्कार ।

प्रा० विरहनी—(सं० विरहिणी,

विरह) पु० स्त्री० वह स्त्री जो
पति से जुदा रहे ।

प्रा० विराजना—(सं० वि=बहुत
राज=शोभना) क्रि० अ० शोभना
र सुख भोग करना चैनसे रहना ।

प्रा० विराना—पु० पराया, रूखेसेकोई ।

प्रा० विरियां—(सं० बेला) स्त्री०
समय, बक, काल, बेला ।

प्रा० विरोग—(सं० विरोग) पु०
विरह, विप्रेष, जुदाई ।

प्रा० विरोगन—(सं० विरोगिनी)
पु० स्त्री० वह स्त्री जो विरह से
व्याकुल हो ।

प्रा० विल } (सं० विल, विल=द-
विला } कना या क्षिपना) पु०
घूटे आदि जानवरों के रहने का
बेद, द्विद । [लड़के का रोना ।

प्रा० विलकना—क्रि० अ० सिसकना,
प्रा० विलसना—(सं० विलस, वि=

वि=बुरा, लक्ष्य=विह) क्रि० अ०
उदास होना, क्रि० सं० देतना,
उदास होकर देखना ।

प्रा० विलग—(सं० विलग्न, वि=
नहीं, लग्न=पिनना) पु० अलग
जुदा, न्यारा । [मानना ।

प्रा० विलगमानना—(सं० विलग्न, वि=

प्रा० विलगना—(सं० विलग्न, वि=
अ० जुदा, जुदा होना, अलगा
होना, र फटना ।

१००० रुपये के जिसे माता कर
 २०००-विदुमान व रित है हिमा
 ३०००-महद र को कतिन वीम आ
 ४०००-१०० १०० १०० १०० १००
 ५०००-१०० १०० १०० १०० १००
 ६०००-१०० १०० १०० १०० १००
 ७०००-१०० १०० १०० १०० १००
 ८०००-१०० १०० १०० १०० १००
 ९०००-१०० १०० १०० १०० १००
 १००००-१०० १०० १०० १०० १००

[illegible]

ਭਾ. ੨. ਚੰਦ੍ਰਿਕਾ - ਸ੍ਰੋ. ੩. ੬੬, ੭੭, ੮੫ ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible]

महाराष्ट्र शासन - पुणे जिल्हा, पुणे नगरपालिका
पुणे नगरपालिका, पुणे जिल्हा, महाराष्ट्र
पुणे नगरपालिका, पुणे जिल्हा, महाराष्ट्र
पुणे नगरपालिका, पुणे जिल्हा, महाराष्ट्र

[illegible]

प्रा० त्रीग-पु० माई, भैरा । ॥ ७७७॥

प्रा० श्री- (सं० बीटिका) श्री०
पान की मन्त्रो । [दहाडे ।

मं० श्रीम- (मं० विंगति) गु० दो

प्रा० बीसी-श्री० अनाज नापने का
परिमाण, २ सं० विंगति) ताम, पांढी।

प्रा० बुद्धा—(सं० विन्दु) पु० विन्दो,
शुद्ध, मित्र, विदुः । [वाचस्पत्यु ।

प्रा० बुढ्या १० पुद्दंत मगड का

प्रा० बुद्धी मं० स्वर्ग, धर्म, शूर।

मं० यु०-पु० इतर वा मांय, कलें
मा, गंग, खितर, यमिन, देना०
पु० दावा, बन्ना ।

मं० बुद्धन- (बुद्ध + यन, बुद्ध = बुद्धि-
ना, यन = यत्) बुद्धि-युक्त, बुद्धि-
वान् ।

शा० बुद्धा-पु० मूर्ति धर, लखनौ ।

मं० ब्रह्म २० पृष्ठ बांय, पीठ का
बाय, दाय, कनेका, मिश्रनाद ।

म० बुधना - शि० अ० ईश होना,
 बुध०, शि० गृह गृह होना, अ० ग
 ईश होना ।

१२- बुद्धिमान-दि० म० देश क०-
२८- बुद्धिमान, विद्या मृत कथा,
आर्य वेद कथा ।

ਸ੍ਰੀ ੨ ਭੁਤ- (ਭੁਤ-ਮਾਤਾ, ਮਾਤਾ-ਮਾਤਾ)
 ੨. ਸ੍ਰੀ ੨ ਭੁਤ- (ਭੁਤ-ਮਾਤਾ, ਮਾਤਾ-ਮਾਤਾ)

- दापना गु० दापने वाला ।
 प्रा० बुढ़ाना—क्रि० स० बुढ़ाना, चोरना ।
 प्रा० बुढ़ा—(सं० वृद्ध) गु० बुढ़ा ।
 प्रा० बुढ़भस—गु० वृद्धा जो जवानों की चाल चले ।
 प्रा० बुढ़भसलगना—बोल० बुढ़ापे में जवानी की चालें करना ।
 प्रा० बुढ़वा—(सं० वृद्ध) गु० बुढ़ा ।
 प्रा० बुढ़ापा—(बुढ़ा) भा० पु० बुढ़ापन, वृद्धावस्था ।
 प्रा० बुढ़ापाविगड़ना—बोल० बुढ़ापे में दुःख होना ।
 प्रा० बुढ़िया—स्त्री० बूढ़ी स्त्री ।
 प्रा० बुत्ता—पु० टगई, छल, कपट, धोखा । [ना, धोखादेना ।
 प्रा० बुत्तादेना—बोल० टगना, छल-करना ।
 सं० बुद्ध—(बुध=ज्ञानना) पु० विष्णु का नवौं अवतार, यौग्यतका स्थापन करने वाला, २ बुद्धिमान्, पंडित, पञ्चवितवृत्त-सं० विदिन, जाना हुआ, जागता हुआ ।
 सं० बुद्धि—(बुध=ज्ञानना) स्त्री० मनीषा, मति, धी, विपण्या, समझ, सोच, विचार, ज्ञान, विवेक, पहचान, अहः ।
 सं० बुद्धिवल—पु० अहंकीताकेत ।
 सं० बुद्धिमान्—(बुद्धि+मान्) गु० समझदार, ज्ञानवान्, विवेकी, अहमन्द ।

- सं० बुद्धिहीन—(बुद्धि+हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, वमर्ह ।
 सं० बुद्धीन्द्रिय—(बुद्धि+इन्द्रिय) पु० स्त्री० आँस, नाक, कान, जीभ, त्वचा अर्थात् शरीर परेका चमड़ा ।
 सं० बुध—(बुध=ज्ञानना) पु० वृहस्पति की स्त्री के चर्द से उत्पन्न हुआ घेरा, चौंदा ग्रह, २ बुधवार, ३ पंडित, बुद्धिमान् ।
 सं० बुधजन—(बुध+जन) पु० पंडित लोग, बुद्धिमान् ।
 सं० बुधवार—(बुध+वार=दिन) पु० बुध का दिन, चौथावार ।
 सं० बुधान—क० पु० बुध, पंडित, अध्यापक, ब्रह्मा का पारंपर ।
 सं० बुधित—सं० पु० ज्ञान, जाना हुआ ।
 प्रा० बुन्ना—क्रि० स० बिन्ना ।
 सं० बुभुत्ता—(बुभु=खाना) भा० स्त्री० भुषा, भूष, खाने की चार ।
 प्रा० बुभुक्षित—(बुभुत्ता) पु० भूषा ।
 प्रा० बुरा—गु० रास, दुष्ट, नीच, निक्कमा ।
 प्रा० बुगकहना—बोल० निन्दा करना, बदनाम करना ।
 प्रा० बुगचीतना—बोल० किसी का बिगाड़ चारना, किसी की बुराई चारना ।
 प्रा० बुरावेडा, सोटा पैसाकाम आता है—कहा० अपना धेडा



मा, लगमात, स्वरो का व्यञ्जनो के साथ मिलान, २ (सं० माता) मा, माता । [नना, शङ्मान]

फा० मात-स्त्री० बाजी हराना, जी-

प्रा० मातकरना-बाजी जीतना ।

सं० मातक- (मट=मस्त होना) पु० हाथी, इस्ती, मज ।

सं० मातलि- (पन + सलह, ला=लाना अर्थात् सलह चलाना)

-पु० इन्द्र का रथवान्, इन्द्र का सारथी ।

प्रा० माता- (सं० मत्) पु० मस्त, मत्वाडा, उन्मत्त ।

सं० माता- (मान् पूजना, या मान्=आदर-मान् करना) स्त्री० मा, मैया, माँ २ शीतला ।

सं० मातामह- (माना) पु० माका चाप, नाना । [माँ, मामा]

सं० मातुल- (माह=माँ) पु० माका

सं० मातुलानी } स्त्री० मापी,

मातुली } माई ।

सं० मातृप्वसा-स्त्री० मौसी, खाला, माकी बहिन ।

सं० मातृप्वसेय-पु० मौसी का बेटा, खालाजाद ।

सं० मात्र- (मा=नापना) कि० वि० केवल, अल्प, थोड़ा, कुछ, उतनाही, बहीभर ।

सं० मात्रा- (मा=नापना) स्त्री० नाप, परिमाण, २ ह्रस्व दीर्घप्लुतस्वर के दवाका नाप, औषधका परिमाण ।

प्रा० माथा- (सं० मस्तक, न) पु० शिर, कपाल, मस्तक २ नाव का (अगना भाग) ।

प्रा० माथाउनकना-बोल० किसी कामके बिगड़ने का हाल पहले से मालूम होना ।

प्रा० माथारगड़ना-बोल० बहुत गरीबी में मारिना करना, या देवता, पुत्र, अथवा राजासे गरीबी के साथ माँगना, २ बहुत विरक्त करना ।

प्रा० माथेपरचढ़ना-बोल० अन्धसाध करना, जुल्म करना, मजाको बहुत दुश्म देना, सताना ।

सं० माथुर- (मथुरा) पु० मथुरा का रहने वाला, २ कायथी एक जात, ३ मथुरा के वासियों को एक जात ।

सं० मादक- (मट=मस्त होना) क० पु० मस्त करने वाला, नशे की चीज ।

सं० मादन-क० पु० १ पैदा कर, फा० लानसे निकली चीज (लानि)

सं० माधव- (मा=लक्ष्मी, धव=पति) पु० लक्ष्मीपति, विष्णु ।

सं० माधव- (मधु) पु० श्री कृष्ण, २ बसेन शत्रु, ३ वैशाख का महीना, ४ महुआ, मु० शरद का ।

सं० माधुर्य- (मधुर) भा० पु० मिठास, मधुरता ।

सं० माध्वी- (मधु) स्त्री० मधुवती मदिरा, २ एक तरह की मज्जी ।

२ वर्षी के नतीन जेन का फेना ।
 प्रा० मांभ-(सं० मय) पु० बीच,
 मय-मांभगर=नदी के बीचमें ।
 प्रा० मांभा-पु० पलेगकी डोर, जिस
 में बाँव पीस कर और लेई या
 मोड़ से बिनाकर लगाया जाता
 है जिनमे दूधरे की पलेगकी डोर
 को काटते हैं ।
 प्रा० मार्मा-(मय) पु० भाविक
 नार का गानिक ।
 प्रा० मांड़-(सं० मयद, मन्=रत्न
 ना) पु० मानका पानी ।
 प्रा० मांड़ना-(सं० मर्दन) क्रि०
 म० मजना, मीमना, मसलना,
 र करना, रचना, बनाना ।
 प्रा० मांद-श्री० जंगली जानवर की
 मुछा, पु० हलका, रफीका, भीठा ।
 सं० मांम-(मन्=गमना वा पूजना,
 श्री० गन्धि की पूजा और यज्ञ आदि
 में पूजा जाता है) पु० गो.वन. सालन ।
 सं० मांमल-पु० रयत, मोटा ।
 सं० मांमाद-(मांम + अद) क०
 पु० मांममानेवाला, मोहननार ।
 सं० मांमादगी-मांम + आदारी=
 मानेवाला) क० पु० मांम माने
 करना, मांममशी ।
 सं० मांममशक } (मांम मय=
 मांममशी } गाना) क० पु०
 मांम मानेवाला, मांम आदारी ।

प्रा० मांह } (सं० मय) मै, भीतर,
 मांहि } बीच ।
 प्रा० माखना-क्रि० अ० क्रीडकरना,
 कोपना, खिसियाना ।
 प्रा० माखित (माखना) पु० क्री-
 डित, खिसियाना हुआ, रींसी
 या द्वेष या डाह करता हुआ ।
 सं० मागध-(मय) पु० मयधेश
 क, पु० माट या बड़ौत तिनका
 काम राजाओं की और बड़े आद-
 मियों की बड़ाई करने का है ।
 सं० माघ-(मय एक नक्षत्र का नाम
 इस महीने में पूजा चांद इस नक्षत्र
 के नाम रहता है और इस महीने
 की पूर्णों के दिन यह नक्षत्र होता-
 है) पु० वरम का ग्याहवां महीना ।
 प्रा० माखी-(सं० मत्तिका) स्त्री०
 मक्खी, मागी ।
 प्रा० माजूफल } पु० एक फल जो
 माजूफल } दवाई में काम
 आता है । [मिट्टी, मट्टी ।
 प्रा० माटी-(सं० मृत्तिका) स्त्री०
 प्रा० माटा-पु० नरगट, दोठ, मगर,
 मुथ, २ (सं० मयित, मयु=मयना)
 पु० मट, छद्द ।
 प्रा० माणिक-सं० मागिक, म-
 गि) पु० लाल, एक लाल रंग का
 चट्टन मोल का रत्तर ।
 प्रा० मात-(सं० मात्रा) स्त्री० मा-

मा, नममात, स्वर्ग का व्यञ्जनो दे
साय विज्ञान, २ (सं० माता) मा,
माता । [वना, शृङ्गान ।

मा० मात-शी० बाजी हराना, जी-

मा० मातकरना-बाजी जीतना ।

सं० मातह-(सद्व्यवस्था होना) पु०
हाथी, रस्ती, गम ।

सं० मातलि-(मन + सत्ताह, ला =
लाना - अर्थात् सत्ताह बनाना)

पु० इन्द्रा राखना, इन्द्रा मातरणी ।

मा० माता-(सं० मत्) पु० मत्,
मत्तहा, उन्मत्त ।

सं० माता-(मान् पूजना, या मन्
= माता मान् करना) शी० मा,
मैपा, माँ २ शीतला ।

सं० मातामह-(माता) पु० माता
दाय, नाता । [माँ, दाया ।

सं० मानुल-(मान्-मा) पु० माता

सं० मानुलानी } शी० माँ,
मानुली } माँ ।

मं० मानुषला-शी० माँ, मा-
ला, माँ की बहिन ।

सं० मानुषलेय-पु० माँ की बहिन,
माताका ।

सं० मात्र-(मा=माता) प्रि० वि०
बेहान, मत्त, मोटा, बड़ा, बलवान्,
बलियार ।

सं० मात्रा-(मा=माता) शी० माँ,
माँका, २ माँ की बहिन ।

सं० मात्रा-माँ, माँका, माँकाका ।

मा० माथा-(सं० मस्तक) पु०

शिर्ष, कपाल, मस्तक, २. नाव का
अगला भाग ।

मा० माथाउनकना-चोला किसी
कामके विगड़ने का हास्य पहने से
मान्य होना ।

मा० माथारगड़ना-चोला १. बहुत
तारीकी से मारना करना, या देवता,
मुनि, अथवा राजागेपरी की दे ताथ
मांगना, २. बहुत विह्वल करना ।

मा० माथेपरचढ़ना-चोला १. अगुआ
करना, दुबल करना, मनाही बहुत
दुग्न देना, सताना ।

सं० माथुर-(मथुरा) पु० मथुरा
का रहने वाला, २. बापकी ही पद
लाग, मथुरा के प्रभावकी ही रहना ।

सं० मादक-(सद्व्यवस्था होना) पु०
पु० माता रहने वाला, नये ही नीत ।

सं० मादन-पु० पु० मथुरा,
मा=मानमे निवसती थीं (मानि)

सं० माधव-(मा=माँ, व=वनि)
पु० माँ की बहिन, विष्णु ।

मं० माधव-(मधु) पु० भीष्म,
२. बलवान्, ३. वैष्णवों की मूर्ति,
४. मधुमा, पु० मधुका ।

सं० माधुर्वे-(मधु) मा= पु०
मिठाव, मधुमा ।

मं० माधुवी-मधु) मं० मधुकी
बहिन, २. मधु मथुरा की मधुका ।

सं० मान-(मा=नापना) पु० नाप,
माप, अंदाज, परिमाण, २ (मत्त=
घमंड करना वा बढ़ा जानना)
आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम, पत्र,
३ घमंड, अभिमान, ४ चोंचला
सावभाव, नाज नस्वरा, गु० बराबर ।

सं० मानन-(मान्+अन) भा०
पु० पूजा करना, आदर करना ।

सं० मानव-(मनु) पु० मनुके बेटे
पोते, भंजुंदा, आदमी, २ बालक ।

सं० मानस-(मनस्=मन) गु० मनका,
मानसिक, पु० मन, मनमा, २
हिमालय पहाड़के पास मानसरो-
वर नामकी ल ।

सं० मानसिक-(मनस्=मन) गु०
मनका, मनसे पैदाहुआ, दिली ।

सं० मानहानि-स्त्री० अपमान, निरा-
दर, बेकदरी, घेउजती ।

सं० मानिनी-(मान=घमंड) स्त्री०
गु० घमंडकरनेवाली स्त्री, मानवती स्त्री ।

सं० मानी-(मान) गु० घमण्डी,
अभिमान । [आदमी ।

सं० मानुष-(मनु) पु० मनुष्य,

प्रा० मात्रा-(सं० मान्=विचारना)

क्रि० सं० सम्मान करना, आदर
करना, चाहना, जानना, २ पति-
याना, मरोसा करना, ३ स्वीकार
करना, कबूल करना, इकार
करना, ४ ठहरालेना, अनुमान क-

रना, कल्पना करना ।

सं० मान्य-(मान्=पूजना) र्म० पु०
पूजने योग्य, मानने योग्य, मा-
ननीय । [परिमाण ।

सं० माप-(मा=नापना) पु० नाप,

सं० मापक-(मा=नापना) व० पु०
नापने वाला, २ नाप बिद्या में दो
बराबर सेतों में कोई आप काट से
कटे हुए रेखा और बाकी दो बरा-
बर सेतों के मिलने से मापक बन-
ता है, ३ पैमाना, ४ अभीन ।

प्रा० मापा-र्म० पु० उपापा, अ-
सरकिया, लगा ।

प्रा० मामा-(सं० मापक, मप=पैरा)
पु० मा का भाई, मामू ।

सं० माया-(मा=नापना, या बना-
ना) स्त्री० ईश्वरकी शक्ति, कुदरत,
२ इन्द्रनाल, कुहक, ३ कृपा, दया,
४ मोह, प्यार, नेह, मुहब्बत, ५
बल, दम्भ, कपट, ६ धन, संपदा,
दौलत, -मायापात्र, गु० धनवान् ।

सं० मायापति-(माया+पति) पु०
विष्णु, ईश्वर ।

सं० मायावी-(माया=बल) पु०
एक राक्षस का नाम जो मय का
बेटा था जिसकी बालिने मारा,
गु० छली, फरेबी ।

सं० मार-(मृ=मरना या मारना)
पु० मरना, २ कामदेव ।

प्रा०मार—(मारना) स्त्री० मारना,
पीटना, २ लड़ाई, युद्ध, ३ घोट ।

सं०मारक—क० पु० कापड़े, २
नाशक, हिसक ।

• प्रा०मारकुटाई—बोल० मारना,
और कुचलना, मारपीट ।

सं०मारकेश—जन्म पत्र में लग्न से
दूरे व सातवें घर का स्वामी ।

प्रा०मारखाना } बोल० पिटना,
मारखानी } मार पड़ना ।

प्रा०मारगिराना—बोल० पदाङ्गना,
पटक देना ।

प्रा०मारपड़ना—बोल० पिटना,
मारखाना । (ना, पीटना ।

प्रा०मारपीट—बोल० मारकुटाई मार-

प्रा०मारमरना—बोल० आपघात
करना, आत्महत्याकरना, २ लड़ाई
में बेटी को मारके मरना ।

प्रा०मारखाना—बो० लूटखाना ।

प्रा०मारलेना—बोल० मारना, जी-
त लेना ।

• प्रा०मारहत्याना—बोल० जीवलेना,
मारना और निकाल देना ।

प्रा०मारग—(सं० मार्ग) पु० रस्ता,
राह, पन्थ, बाट, टगर, पैदा ।

प्रा०मारना—(सं० मारण, मृ=
मरना या मारना) श्रि० स० जी
लेना, मार डालना, मारण निहा-
लना, २ पीटना, टोकना, टकरा-
ना, ३ दण्ड देना, सजा देना, ४
नाश करना, बिगाड़ना ।

प्रा०मारापड़ना—बोल० माराजाना ।

प्रा०मारामाराफिरना—बोल० मट-
कना फिरना, डौबाँ डोल फिरना,
हथर ठथर फिरना ।

प्रा०मारामारी—बोल० आपस में
मार पीट, धौल घसा, लातमुकी ।

सं० मारात्मक—(मार=मारना
आत्मा=जीव) पु० मारनेवाला,
हिसक, यातक, शत्रु ।

सं०मारी—(मृ=मरना, बाँ मारना)
स्त्री० मारी, घौल, महामारी ।

सं०मारीच—(मृ=मरना, बाँ मा-
रना) पु० एक राक्षसका नाम जो
साइका राक्षसी का पेशा और सु-
बाहुका भाई और राक्षसों का मारकर
था जिसको श्रीरोमचन्द्र ने मारा ।

सं०मारुत—(मृ=मारना) पु०
हवा, पार, चयार, पवन, वायु
देवता (मरुत् शब्द को देखो) ।

सं०मारुतमुत—(मारुत + मुत) पु०
हनुमान्, पवनका पुत्र ।

सं०मारुतात्मज—(मारुत + आ-
त्मज) वायुपुत्र, हनुमान् ।

सं०मारु—(मृ=मारना) पु० लड़ाई
का राजा, २ एक राक्षसी का
नाम जो लड़ाई में गौरी जाती है ।

सं०मार्कण्डेय—पु० एक मुनि का
नाम, मरुण्ड मुनिका पुत्र ।

सं०मार्ग—(मृत्=साफ करना वा
मृत्-वा मार्ग=सोजना) पु० रस्ता
मार्ग, याद, पंथ ।

सं०मार्गित—र्म० पु० तज्जाशकिया
गया, हुंदा गया ।

सं०मार्ग्य—र्म० पु० हुंदाये योग्य ।

सं०मार्गण—(मार्ग+अन, मार्ग
=हुंदा) पु० वाण, अन्वेषण
यात्रा, भिक्षा, तलाश ।

सं०मार्गव—पु० व्याघ्र, अहेरी ।

सं०मार्गशिर } (मृगशिरा—एक
मार्गशीर्ष } नक्षत्र का नाम
इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र
के पास रहता है और इस महीने
की पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र
होता है) पु० अमरन, मंगसर,
मंगशिर ।

सं०मार्जन—(मृत्=शुद्ध करना)
पु० शुद्ध करना, पवित्र करना,
साफ करना, २ सन्ध्यापूजा अदि
करने के पहले पवित्रता के लिये
शरीरमादिमें पानीकी छिड़कालना ।

सं०मार्जनी—ण० स्त्री० झाड़ू, पदनी ।

सं०मार्जनीय—र्म० पु० साफ
करने योग्य ।

सं०मार्जार—मृत्=शुद्ध करना वा
मलना) पु० बिलार ।

सं०मार्त्तण्ड—मृत्पट्टमूर्त्यका वाप)
पु० मूर्ध, शूरर ।

सं०मालका } (माला) स्त्री०
मालिका } माला, हार, २
पांन, पांटे, श्रेणी, पंक्ति ।

सं०मालती (माल=विष्णु, अन्=
जाना, अथान् विष्णु को चढ़ाना वा
मा=शे भ ला=लेना) स्त्री० एक
फूल का नाम, चमेची ।

प्रा०मानपूवा पु० भीठा पूवा ।

सं०मालव—पु० मालवा देश ।

सं०माला—(मा=शे भ ला=लेना)
स्त्री० फूलोंका हार, सोने या मोती
आदि का हार, २ सुपरना, अपमाला
२ पात, पंक्ति, श्रेणी, कतार ।

सं०मालाकार—(माला=हार, कार=
करने वाला, कृ=करना) पु० मा-
ली, बसवान । [भेद ।

सं०मालादीपक—क० पु० अर्धालङ्कार
सं०माली (माला) पु० बसवान,
मालाकार ।

सं०माल्य (माल) र्म० माला के
योग्य, पु० फूल, २ माला, हार ।

प्रा०मावस—(सं०अमावस्या) स्त्री०
अंधेरे पास की पन्द्रहवीं तिथि,
अमावस ।

प्रा०माप—पु० क्रोध, कोप, २ उरद ।

प्रा०मापा—(सं०माप, मप्=मन्दाज
करना) पु० आठरची की तौल ।

सं०मास—(मा=नापना) पु० मही-
ना २ चाँद ।

प्रा० मासकवार-(१) पोर्तुगाल की
भाषा का शब्द (मास महीना,
calendar पर होना) से विगड़ा
हुआ) पु० महीने के अन्त का
दिन, २ माहवारी नकशा और
यह शब्द, मास एवम्बर से भी बना
मान्य होता है क्योंकि माहवारी
नकशे आदि महीने में एक बार
भेजे जाते हैं ।

सं० मासान्त-(मास + अन्त) पु०
पूर्वमासी, मङ्गलति ।

सं० मासिक-(मास) गु० महीने
का जो महीने में मिले, पु० जन्म-
लवाह, वैवाह, २ हर एक महीने में
अमावस के दिन का शब्द ।

प्रा० मासी-(सं० मातृस्वभाव=
मा, स्वयं=रहित) स्त्री० मासी य-
दिन, मौसी ।

सं० माहेश्वरी-(महेश) स्त्री० दु-
र्गा, देवी, पार्वती, शिवगामी ।

प्रा० माहुर-पु० जहर, विष ।

प्रा० मिचना-क्रि० अ० बन्द होना
हुँदना ।

प्रा० मिटना-(सं० मृष्ट, मृत=साध-
रना) क्रि० अ० बिगड़ना, सा-
ध होना, दूर होना, खोजाना,
मिलपट होना ।

प्रा० मिटिया-(मिट्टी) गु० एक
वरद का रंग, स्याही रंग, सौ०

मिट्टी का वर्तन ।

प्रा० मिठाई-(सं० मिष्टान्न, मिष्ट=
मीठा, अन्न=अनाज) भा० स्त्री०
शरीरी, मीठी चीज, मीठा एक-
वान, मिठास, मधुरता ।

प्रा० मिठास-(सं० मिष्टान्न, मिष्ट-
+ अंश) भा० पु० मिठाई, मीठापन ।

सं० मित-(मा=मापना) कर्म० पु०
मापन हुआ, मापा हुआ, परिमन ।

सं० मितम्पच-पु० मूल, विकास ।

सं० मितप्रद-पु० योद्वादेनेवाला ।

सं० मिति-स्त्री० परिमाण, सादाद,
अन्न, मर्यादा ।

प्रा० मिती-(सं० मिति, मा=मापना)
स्त्री० तिथि, २ व्याज, सूद ।

सं० मित्र-(मित्र=प्यार करना) पु०
जो पत्थर वारकी इच्छा से उपकार
करे व स्नेहकरे वह मित्र ।
दोस्त, सनेही, प्यारा, दित्त, वन्द्य,
सगा, सुहृद, ३ सूर्य ।

सं० मित्रता-(मित्र) भा० स्त्री०
मित्राई, मित्राई, दोस्ती, प्यार, हेत ।

सं० मित्रदोही-पु० मित्रतापरी ।

सं० मित्रवर्ग-पु० सुहृद ।

प्रा० मित्राई (मित्र=प्यार) भा०
मित्राई स्त्री० दोस्ती, प्यार ।

सं० मिथम्-(मिष्ट=मिलना, वा
सम्भन्ना) क्रि० वि० आपस में,
एक दूसरे को, परस्पर, सहम ।

सं० मिथिला-(मिथ=नाश, करना

वैरियों को, स्त्री० - तिरहुत, जनक
राजा की नगरी, जनकपुर ।

सं० मिथिलेश-(मिथिला+ईश)

पु० जनक राजा ।

सं० मिथिलेशकुमारी-(मिथिलेश
+कुमारी) स्त्री० जानकी, सीता
वैदेही ।

सं० मिथिलेशि-(मिथिलेश) स्त्री०
जनकराजाकी राणी ।

सं० मिथुन-(मिथु=मिलना वा सम्-
भिन्ना) पु० जोड़ा, स्त्री० पुरुष २
उद्योतिषमें एकराशिद्धा नाम ।

सं० मिथ्या-(मिथु=मारना वा हानि
पहुँचाना) क्रि० वि० अथवा गु०
दोष, भ्रूट, असत्य अन्वर्थ ।

प्रा० मिरगी-स्त्री० एकरोगकानाम ।

प्रा० मिर्च-(सं० परिच, मृ=मारना)
स्त्री० एक मसालेका नाम,—मोठ
मिर्च=बाली मिर्च ।

सं० मिलक-कं० पु० संधिकारी, मे-
ल करनेवाला ।

सं० मिलन-(मिल्=मिलना) भा०
पु० मिलना, मेल, मित्राण, संयोग ।

प्रा० मिलनसार-(मिलन) गु०
मेली, मित्राणी ।

प्रा० मिलना-(सं० मिलन) क्रि०
अ० मित्राण होना, भेंटना, मित्रा
रहना, २ पक्के होना, गढ़बढ़
होना, ३ पाना, ४ एक होना,
बराबर होना ।

प्रा० मिलनाजुलना-बोल० सदा
मित्रारहना, सदाई मेलना ।

प्रा० मिलनाहिलना-बोल० रहना,
शामिलरहना ।

प्रा० मिलेजुलेरहना-बोल० मेल
से रहना, मित्राण से रहना ।

प्रा० मिलाप-(मिलना) पु० मेल,
बनाप, भेंट, योग, संयोग ।

सं० मिलित-(मिल्=मिलना) अर्थ०
पु० मिलाहुआ, जुगाहुआ ।

सं० मिश्रक-(मिथु+अक) कं० पु०
मेलक, मिलाने वाला, देवोधान,
देववन ।

सं० मिश्र-(मिथु=मिलना) गु० मि-
लाहुआ, पु० ब्राह्मणों की पदवी
२ प्रतिष्ठित अनुप्य, ३ हिन्दू वैद्य ।

सं० मिश्रकेशी-स्त्री० स्वर्गवेदवा ।

सं० मिश्रित-(मिथु=मिलना) अर्थ०
पु० मिलाहुआ, जुगाहुआ, योगिक ।

सं० मिष-(मिथु=हिस्का वा घराघरी
करना) पु० जल, कपड, पहाना,
हीला, बनावड, २ हिस्का ।

सं० मिष्ट-(मिथु=सौधना) गु० मी-
ठा, मधुर ।

सं० मिष्टान्न-(मिष्ट+अन्न) पु०
मिठाई, शीरीनी, पकवान ।

प्रा० मिस्त्री-स्त्री० काले रंग का
चरण जिसको स्त्रियाँ दाँतों में ल-
गाती हैं ।

प्रा० मिहदी (सं० मेघी) मा०
मैहदी शोभा, इन्ध=चमक

ना) स्त्री० एक पौधा जिस के पत्तों से घियां अपने हाथ रचाती हैं।

प्रा० मिहना—(सं० बोलती डोलती, ताना।

प्रा० मिहारा—(सं० मोहला, मह
मिहरीया } = पूजना) स्त्री०
मिहरी } लुगई, नारी,
स्त्री।

सं० मिहिका—स्त्री० नीहार, कुहिरा।
हिम, वर्षा।

सं० मिहिर—पुं० सूर्य, आफलाव।

प्रा० मीजना—(सं० मृत्त=साफ़ कर-
ना) क्रि० स० मसलना, मलना,
रंगदना। [कजा।

प्रा० मीच—(सं० मृत्पु) स्त्री० मीत,

प्रा० मीचना—क्रि० स० आँख बन्द
करना, मूंदना।

प्रा० मीठा—(सं० मिष्ट) पुं० मधुर,
मिष्ट, २. पोषा, पुं० चुम्बा, चोसा।

प्रा० मीणा } पुं० जंगली आदिमि-
मीना } योंकी एक जात जो
बोर और औरों हाँक
होते हैं।

प्रा० मीत—(सं० मित्र) पुं० मित्र,
दोस्त, गुनन, सुहृद, सत्ता।

सं० मीन—(मी=मारना) स्त्री० वा
पुं० मछली, २. एक राशिक नाम।

सं० मीनकेतन—(मीन=मछली,
केतन=पताका) पुं० धामदेव।

सं० मीमांसक—(मीमांसा) पुं० पुं०
मीमांसाशास्त्र का जाननेवाला,
विचार करनेवाला।

सं० मीमांसा—(मान्=विचारना)

स्त्री० इः शास्त्रों में का एकशास्त्र, २.
सिद्धान्त विचार।

सं० मीमांसित—स्त्री० पुं० विचा-
रित, विचारगंधा।

प्रा० मिमियांना } क्रि० अ० में मे
मीमियांना } करना, धक्की
के बच्चे का बोलना।

सं० मीलन—(मील=पलक मारना)
पुं० टिमकाना, टमटमाना।

सं० मीलित—स्त्री० पुं० संकुचित, धमिता।

प्रा० मुंह } (सं० मुख) पुं० मुखका,
मुंह } मुख, बदन, चेहरा, २.
बल, शक्ति, जोर, चोखता।

प्रा० मुंहअंधेरा—बोल० सन्ध्या, सांझ
शाम, कुछ कुछ अंधेरा।

प्रा० मुंहअपनासा लेके फिरजा-
ना—बोल० निराश होकर चला जाना।

प्रा० मुंहआना—बोल० मुँहफूलना,
मुँह में खाले हो जाना।

प्रा० मुंहमुंह—बोल० खूब पूराभरा
हुआ, लबालब। [हो जाना।

प्रा० मुंहउतरजाना—बोल० उदास
हो जाना।

प्रा० मुंहकरना—बोल० सांभरने हो-
ना, मिलाना, बराबरी देना, २. गा-
ली देना, ३. फोड़े को छिदकरना,
फोड़े या घावका फूटना, ४. मचते
परने हमला करना (जैसे शि-
कारी कुत्ता या और जानवर दूसरे
कुत्ते या जानवर पर करेते हैं)

प्र० किसी चीज या जगह की ओर देखना या उसतरफ पांश उठाना ।

प्रा० मुंहकाफूहड़-बोल० बुरीयात बोलनेवाला, बदजबान, निन्दक ।

प्रा० मुंहकाला-बोल० कलङ्क, अपमान, अनादर, बुरा ।

प्रा० मुंहकालाकरना-बोल० कलङ्क लगाना, दासलगाना, आवक बतारना, २ सजा देना ।

प्रा० मुंहकेकौवेउड़जाने-बोल० वदास दिखाना देना, व्याकुल दिखाना देना ।

प्रा० मुंहखोलना-बोल० गाली देना, निन्दाकरना ।

प्रा० मुंहचढ़ाना-बोल० श्लिषित लगाना, मुंह लगाना, २ सम्मान करना, सम्मुख होना ।

प्रा० मुंहचलाना-बोल० काटना, काटा चारना (जैसे घोड़ा) ।

प्रा० मुंहचोर-बोल० शरपीला, लजाला, दरपीकना ।

प्रा० मुंहचोरी-बोल० लाज, शर्म ।

प्रा० मुंहछिपाना-बोल० लाज से मुंह ढकना ।

प्रा० मुंहठठाना-बोल० किसी के मुंह पर तमाचा मारना, मण्ड मारना ।

प्रा० मुंहडालना-बोल० मांगना, बाचना, चारना, २ काटना (जैसे घोड़ा) ।

से घोड़ा) ।

प्रा० मुंहतकना-बोल० चकित रह जाना, मैचक रहना, घबराना, व्याकुल होना ।

प्रा० मुंहतोड़ना-गु० सिझाना, मुंहमें घातना, तरुनीक देना ।

प्रा० मुंहतोदेखो-बोल० यह मुहावरा उग जगह बोल जाना है जब कोई आदमी अपनी ताकत या योग्यता से अधिक कोई काम करने का यशाना करता हो ।

प्रा० मुंहधुथाना-बोल० मुंहयनाना ।

प्रा० मुंहदिखाई-स्त्री० जब किनई दुलहिन आती है तब उसको उसकी सास ननद आदि सुसराल की लुगाइयां मुंह देख कर हाया घंघरा गहना आदि देती हैं उसको मुंहदिखाई कहते हैं ।

प्रा० मुंह देखकर बात करना-बोल० सुशामद करना, ऐसी बात कहना जो सुनेवाले के मनमाये ।

प्रा० मुंहदेखना-बोल० मददचारना, सहायता मांगना, २ किसी का बहुत आदर सम्मान करना, ३ घबराना, या बेवश होना ।

प्रा० मुंहदेखना-बोल० मुंहमें किसी चीज को रखना ।

भोर उमके पीठ पीछे घसका कुछ ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मित्राई अपना प्यार ।

प्रा० मुंहपरगर्महोना—बोल० बड़े आदमी के अपना अपने अक्सर के सामने ये अदबी अपना दिखाई से बोलना ।

प्रा० मुंहपरलाना—बोल० कहना, जताना ।

प्रा० मुंहपरहवाई उड़ना—बोल० मुह का रङ्ग बदलजाना ।

प्रा० मुंहपसारना—बोल० अच्छे में शीके मुह फाड़ना, जमुहाना ।

प्रा० मुंहफेरना—बोल० किसी काम के करने से रुक जाना ।

प्रा० मुंहफैलाना—बोल० पमेंदकरना २ बहुत चारना, १ जमुहाना, जमुहई लेना ।

प्रा० मुंहवन्दकरना—बोल० किसी को चुप करना, जीभ पकड़ना ।

प्रा० मुंहवनाना—बोल० मुह धुयाना, भौं टेढ़ी करना, स्वीरी चढ़ाना ।

प्रा० मुंहवना—बोल० मुह खोलना, मुह फाड़ना, जमुहाना, जमुहई लेना ।

प्रा० मुंहविगड़ना—बोल० अपसव होना, नाराज होना, घुरा मानना, रिसाना, २ कोई कड़वी या घुरी

चीज के खाने से मुह का स्वाद बिगड़ जाना ।

प्रा० मुंहविगाड़ना—बोल० भौं टेढ़ी करना, स्वीरी चढ़ाना, मुह बनाना ।

प्रा० मुंहबोला—बोल० मानाहुआ, कियाहुआ, धर्म का,—जैसे मुह बोला भाई=धर्मका भाई, वह आदमी जिसको अपना भाई कर माने ।

प्रा० मुंहभरी—बोल० रिशवत, घूस, अक्षोर ।

प्रा० मुंहमांगा—बोल० जैसा चारा वैसाही, जैसा मुहसे मांगा वैसाही ।

प्रा० मुंहमारना—बोल० चुप करना, जीभ पकड़ना, मुह बन्दकरना, २ काटना ।

प्रा० मुंहमेंपानीआना—या भर आना—बोल० किसी चीज को बहुत चारना, किसी चीजके लिये मन बहुत ललचाना ।

प्रा० मुंहमोड़ना—बोल० फिर नाना, चला जाना, किसी कामके करने से रुकजाना ।

प्रा० मुंहलगना—बोल० परिचयादि चरपरी चीज से मुहललना या चरपराना, २ दिल मिल जाना, १ मुसाहिबहोना, पक़ादोस्त होना ।

प्रा० मुंहलगाना—बोल० छोटे आदमीसे मेल करना, हिनामा, मुसाहिब बनाना ।



दुःखेननुदिग्नयनाः - मुन्येषुविग्न-

स्वरः । रीतरागभयक्रोधः स्थिरधी-

मुनिरुच्यते (अर्थ) दुःखमुन्मथ्ये एकसा-

रहे राग भय और क्रोधपरित्यक्त स्थिर

• मुदि मुनिरुच्यते है अपि, तपस्वी,
तपो, शनो, सातकी संख्या ।

प्रा० मुनिधरनी - (सं० मुनिधरि-

नी) श्री० मुनि की स्त्री ।

प्रा० मुनिन्द - (सं० मुनीन्द्र) पु०

बड़ा अपि, धेष्ट मुनि, मुनीश,

अपिराज ।

सं० मुनिपट - पु० बलकछ, भोजपत्र ।

• सं० मुनिपुंगव - (मुनि=अपि, पुं-

गव=धेष्ट) पु० मुनिपों में धेष्ट,

मुनिवर, मुनिनाथक ।

सं० मुनिराज } (मुनि+राजा)

प्रा० मुनिराय } पु० प्रधान अ-

पि, मुनीश ।

प्रा० मुनिन्दा } (मुनि, अपि,

सं० मुनीन्द्र } इन्द्र, वा ईश, स्वा-

मुनीश } श्री) पु० मुनिवर,

अपिराज, मुनिन्द, बड़ा अपि ।

प्रा० मुन्दना - (सं० मुद्रण) कि०

अ० रेंद होना, मिथना, दबना ।

सं० मुन्यन्न - (मुनि+अन्न) पु०

नैऋत, तिथी का चोख ।

सं० मुमुक्षु - क० पु० मुक्ति इच्छुक,

मुक्ति चाहनेवाला ।

सं० मुमूर्षु - क० पु० मृतनाथ, आ-

सद्यमृत्यु, परणाशंही, करीबमृत्यु-

सं० मुर - (मुर=घेरना) पु० एक

राजस का नाम जिसके पांचगिर

ये उसको भीकृष्ण ने मारा ।

प्रा० मुरई - (सं० मृत) स्त्री० मूली ।

प्रा० मुरकी - स्त्री० बान का एक

गरना । [बानो]

प्रा० मुरचंग - स्त्री० एक तरह का

प्रा० मुरभाना - (सं० मूर्धन

मूर्ध=मुरभाना) कि० अ० मुर

भाना, कभिलाना ।

सं० मुरली - (मुर=घेरना, और

ला=लेना) स्त्री० बंगी, बांगुरी ।

सं० मुरलीधर - (मुरली=बंगी, धर

=रामनेवाला, धृ=राता) क०

पु० भीकृष्ण, बंगीधर ।

सं० मुरारि - (मुर+अरि) पु०

विष्णु, भीकृष्ण ।

प्रा० मुरा - पु० बहंदर, पदात्ता ।

प्रा० मुलतानी - स्त्री० एकरोपिणी

का ना०, पु० मुनवान की, (जैने

मुनतानी मदी) ।

प्रा० मुलहट्टी - (मल) स्त्री० देवी

दण्ड । [धैर्य, दण्ड, निराद ।

प्रा० मुलाई - (मुलाता) स्त्री०

प्रा० मुलाता - (सं० मूल) कि०

अ० बोल करना, भाषण करना,

पढ़ना ।

असल, २. वंश, कुल, सन्तान, ३
असल, धन, ४. पुत्री, ५ मूलग्रन्थ.
किसी पुस्तकका सूत्र अथवा श्लो-
क (पर टीका नहीं) ५ उचीस
या नूतन ।

सं० मूलक—(मूल=जमान, रोपना)

५० मूला, मुरई ।

सं० मूलकारिका—स्त्री० महानस,
रसे, १. चूला, नूली । [पुं०।

सं० मूलधन—पु० मूलरथ्य, असल

सं० मूलभूत—पु० लड़, असलियत ।

सं० मूल्य—(मूल) पु० मोल, कोमत.

माँ, निंग, दर, दाप ।

सं० मूप } (मूप=चुराना) क० पु०
मूपक } मूसा, चूरा, २ चौर ।
मूपिक }

सं० मूपिका—क० स्त्री० मुमरिया ।

प्रा० मूसना—(सं० मूप=चुराना)

क्रि० म० चुराना, मोसना, नूतना ।

प्रा० मूसला—(सं० मूस=ढुङ्के २
बरना) पु० अमल जड़ ।

प्रा० मूसलाधारवरसना—शीत०
बहुत जोर से मेर बरसना ।

प्रा० मूसा—(सं० मूपक) पु० चूरा ।

सं० मृग—(मृग=सो जना) पु० १. गुमाश,
सब चीजों के मालिक, २. हरिण, कुंग.

३. शी, ४. नंदेशों नंद्य, ५. सो जना ।

प्रा० मृगलाला—(मृग=हरिण, लाला

=लपटा) स्त्री० हरिणका लपटा.

हरिणकी खान ।

सं० मृगणा—भा० स्त्री० अण्ड

द्रव्यका अन्वेषण, जातीगरी द्रव्य

का खोजना, पतालगाना ।

सं० मृगतृपा } (मृग=शु, तृपा

=तृष्णा और

मृगतृष्णा } तृष्णिका=प्यास)

मृगतृष्णिका } स्त्री० एक तरहरी

माफ जो रेतके मैदानों में बालू

रेतके बगुनों पर पड़ती है तब दूर से

पानीके देखी जानी जाती है । अ-

थवा रेतले देशों में बालू के कणों

पर सूर्य की हरिण के पड़ने से दूर

से पानी ऐसी दिखाई देती है तब

प्यासे हरिण उस ओर पानी के

लिये जाते हैं पर पानी न होकर उ-

लटे फिर आते हैं इस लिये ऐसा

नाम पड़ा, आवसुराय ।

सं० मृगनयनी—(मृग=हरिण, नयन

=आँख) पु० स्त्री० वह स्त्री जिस

की आँखें हरिणीकी ऐसी हों, सुन्दर

स्त्री, रूपवती ।

सं० मृगनाभि—(मृग=हरिण, नाभि

नाभ में पैदा हुई चीज) स्त्री० क-

स्तूरी, मृगपद ।

सं० मृगपति—(मृग+पति) पु०

पशुओं का राजा, सिंह, शेर ।

सं० मृगमंद—(मृग=हरिण, मंद=पमंद, अर्थात् जिससे हरिण को पमंद रहना है) पु० कस्तूरी ।

सं० मृगया—(मृग=लोजने को, या =जाना) स्त्री० शिकार, अहेर ।

सं० मृगयु—क० पु० व्याघ्र, शिकारी ।

सं० मृगराज—(मृग+राजा) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृगलोचनी—(मृग=हरिण, लोचन=आंख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिसकी आंखें हरिण की ऐसी हों, मृगनयनी ।

सं० मृगशिरा—(मृग=हरिण, शिर=शिर अर्थात् जिसका आकार हरिण के शिर ऐसा है) पु० एक नक्षत्र का नाम ।

सं० मृगाङ्ग—(मृग=हरिण, अङ्ग=चिह्न, अर्थात् जिस में हरिण के ऐसा चिह्न हो) पु० चांद, चन्द्रमा ।

सं० मृगित—(मृग+इत, मृग=लोचना) कर्म० पु० अन्वेषित, दर्शित ।

सं० मृगी—(मृग) स्त्री० हरिणी ।

सं० मृगेन्द्र—(मृग+इन्द्र) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृग्य—कर्म० पु० अन्वेषणीय, दर्शनीय या ढूँढने लायक ।

सं० मृजा—(मृज=गुदकरना, मांजना) भा० स्त्री० मार्जन, मांजना ।

सं० मृङ्ग—(मृङ्ग=मंसघ करना) पु० शिव, स्त्री० मृङ्गानी, पार्वती ।

सं० मृण—(मृण=मारना) पु० हेरा, शोक, २ घटी, गुं० हेरादन्त ।

सं० मृणाल—(मृण=नाशकरना) पु० कपलनाल, कपलकी जड़ व भुझीड़ा ।

सं० मृत—(मृ=मरना) कर्म०, पु० मरा हुआ, मुआ, मरा, मुदर, मुं० मरण, मरना, मौत ।

सं० मृतक—(मृ=मरना) क० पु० मुर्दा, मरा, लोप, मरा हुआ, शरीर ।

सं० मृतसंजीवनी—स्त्री० विद्याभेद, औषधभेद ।

सं० मृत्तिका—(मृत्=भूर, करना) भा० पुलना, स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।

सं० मृत्यु—(मृ=मरना) स्त्री० मौत, मरण, काल, २ यम, जम, कत्ता ।

सं० मृत्युञ्जय—(मृत्यु=मौत, यम=जीवनेवाला, जि=जीवना) पु० शिव, महादेव ।

सं० मृत्युनाशक—क० पु० अमृत, पाराशरु का रस ।

सं० मृत्युपुष्प—पु० पुष्प, ऊँस, गन्ना फूलने से खराब जाता है ।

सं० मृत्सा—स्त्री० मरसमृत्तिका, भेष मृत्तना ।

सं० मृदंग—(मृद=पीटना) पु० स्त्री० दोलक, तबलक, एक

अधीर्मी भवत्वाने के लिये बोला जाता है ।

सं० मोह—(मुह=अचेत या अज्ञानी होना) पु० मूर्च्छा, बेहोशी, गरी ।
२ अज्ञानता, अविद्या, बेवकूफी, ३ प्यार, माया, दया, दुत्तार, लाव, स्नेह, छोर ।

प्रा० मोहमें आना—बोल० अपने पित्र अथवा अपनी प्यारी के अचानक मिलने से अचेत होना ।

प्रा० मोहलेना—बोल० रिझाना, किसीका मन अपनी ओर खींचलेना, लुभाना, बश करना, मंत्र फूटना ।

सं० मोहन—(मुह=मोहना) गु० मोहनेवाला, जिस के देखने से शरीर की सुधि न रहे, मनमाना, प्यारा, पु० श्रीकृष्ण का नाम २ मोहना, बश करना ।

सं० मोहनभोग—मोहन=मनमाना, भोग=ज्ञान) पु० गीरा, उत्तमभोजन ।

सं० मोहनमाला—(मोहन+मा-
ला) स्त्री० एक तरह की माला जो सोनेके दाने और मंगेकी धनवाँ है ।

प्रा० मोहना—(मं० मोहन) क्रि० स० बश करना, मनहरना, लुभाना, मंत्र फूटना, पसम्र करना ।

सं० मोहनी—(मोहन) क० स्त्री० मन हरनेवाली स्त्री, मोहनेवाली, कन-

वती, मनोहर, सुन्दर ।

सं० मोहमय-गु० मिथ्या वं भ्रूट ।

प्रा० मोहि—सर्वना० मुझको, मुझे ।

सं० मोही—क० पु० मुग्ध, अवाच्य ।

प्रा० मौ० सं० मधु) पु० शहद, मधु ।

सं० मौक्तिक—(मुक्ता) पु० मोती ।

सं० मौञ्जी—स्त्री० मूंनकी करधनी, मेखला ।

प्रा० मौड़—(सं० मौलि) पु० सिरा, मुकुट, गौर जो दुलहा के शिरपर बांधा जाता है ।

सं० मौन—(मुनि) पु० चुप, चुप्पी, अवाक्, नहीं बोलना,—स्मृति में लिखा है कि (१ पाखाने जाते, २ पिराव करते, ३ स्त्रीसंग करते, ४ दैनवन करते, ५ दान करते, ६ खाना खाने) इन छः जगह मौन रहना चाहिए ।

सं० मौनी—(मौन) पु० एकतरहके मुनि जो सदा चुप रहने हैं, श्रद्धा, योगी ।

प्रा० मौर—पु० आम की मंजरी ।

प्रा० मोराना—क्रि० अ० आम के पौर का सिटना ।

सं० मोर्वी—स्त्री० ज्या, रोदा, धनुष की टोरी, बिज्रा ।

प्रा० मौलसरी—स्त्री० एक तरह के खुरशूदार फूलके पेड़ का नाम ।

सं० मौलि-(सूत) पु० किरीट,
मुकुट, २ शिखा, चोटी, ३ शिर, ४

स्त्री० प्रती, पृष्ठी ।
प्रा० मौसी-स्त्री० माँ की बहिन,

(मौसी शब्द की देखो) ।

सं० म्लान-क० पु० म्लानियुक्त,
उदासीन, लज्जित, पलीन, कुम्ह,
मुरझाया ।

सं० म्लानि-(म्लै=उदास होना, वा
मुरझाना) स्त्री० यकाबट, यक्षान,
२ मलिनता, पैलापन, ३ कुम्हलाना,
मुरझाना, उदास होना ।

सं० म्लिष्ट-गु० मलीन, म्लानियुक्त,
पु० अव्यक्तवचन, गूढ़गुदवाक ।

सं० म्लेच्छ(म्लेच्छ=अशुद्ध वा, बुरा
बोलना या गैवारु बोली बोलना)
पु० नीचजानि, पैलोम, जिनकी
बोली संस्कृत नहीं है, और न वे
हिन्दुओं के शास्त्र को मानते हैं, यह
शब्द मल्लियों और दूसरी बिला-
यत के लोगों के लिये बोला जाता
है, २ पापी ।

(य)

सं० य-(य=जाना) पु० हवा, २
यश, कीर्ति, ३ मेल, योग, ४
संचारी, ५ गति गु० जानेवाला ।

सं० यकृत-पु० उदररोग, वायुच्छिन्नी,
हीरा, पित्तरी रोग ।

सं० यज्ञ-(यज्ञ=पूजना,) पु० गुह्यक
देवता, कुंवरके नौकर ।

सं० यक्ष्मन् } क्षीरीरोग, राजरोग,
यक्ष्मा } तपेदिक ।

सं० यजन-(यज्ञ=पूजना) भा० पु०
यज्ञ, पूजा ।

सं० यजमान-(यज्ञ=पूजना, या
यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करने
वाला, यज्ञमान ।

सं० यजुः-(यज्ञ=पूजना) भा० पु०
यजुर्वेद, दूसरा वेद ।

सं० यज्ञ-(यज्ञ=पूजना) पु० बलि-
दान, पूजा, होम, हवन, याग, २
विष्णुभगवान् । [जनेऊ ।

सं० यज्ञसूत्र-(यज्ञ+सूत्र) पु०
सं० यज्ञोपवीत-(यज्ञ+उपवीत),
पु० जनेऊ ।

सं० यत्-अव्य० जो, जितना ।

सं० यज्वा-(यज्ञ=पूजना) क० पु०
यज्ञ करनेवाला ।

सं० यतः-अव्य० क्योंकि, यस्मान् ।

प्रा० यतन-(सं० यत्) पु० यतन,
उशय, तदवीर, हिचमन ।

सं० यति } (यन्=पवन करना
यती } मुक्ति के लिये) पु०

संन्यासी, बैरागी, भैरवों का
मित्तारी ।

सं० यन्ता } क० पु० सारथी, सूत,
यन्तार } रथचालनेवाला ।

सं० यज्ञ-(यज्ञ=पूजना करना) पु०

यतन, उपाय, उद्योग, कोशिश,
मिहनन, सावधानी ।

सं० यन्त्रित—(यन्त्र=जो) पु० वद्ध।

सं० यन्त्र—(यद्=जो) क्रि० वि० ज-
रि, जिस जगह ।

सं० यथा—(यद्=जो) क्रि० वि०
जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों, जिस
रीति से, २. वराधा, तुल्य ।

सं० यथाकाम—क्रि० वि० यथेच्छम्
२. अभिलाषा से अधिक ।

सं० यथायोरय—(यथा=जैसा, यो-
रय=ठीक) क्रि० वि० जैसा चा-
हिये, जैसा ठीक है, जैसा उचित,
यथोचित ।

सं० यथार्थ—(यथा=जैसा, अर्थ, वा-
च्यार्थ, मतलब) पु० ठीक, सत्य,
सच, हि० वि० ठीक ठीक, इकी-
कतद, जैसा चाहिये ।

सं० यथाशक्ति—(यथा=जैसी, या
अनुसार, शक्ति=बल) क्रि० वि०
जैसी सामर्थ्य हो, अपने बलके अ-
नुसार, जितना हो सके, इष्टानु-
समान ।

सं० यथासाध्य—क्रि० वि० इच्छा
पूर्वक, इष्टानुसमान ।

सं० यथेच्छा—क्रि० वि० इच्छा-
यथेच्छ—नुसार, हितानुसार ।

सं० यथेच्छाचारिता—श्री० इच्छा-
चारिता ।

सं० यथेप्सित—क्रि० वि० यथेच्छा
इच्छानुसार, मनचाहा, इच्छादिनुसार ।

सं० यथोचित—(यथा + उचित)
क्रि० वि० जैसा चाहिये, यथोपाय ।

प्रा० यद्यपि—(सं० यद्यपि) समुच्च-
जोभी, जो ।

सं० यदा—(यद्=जो) क्रि० वि०
जब, जिससमय ।

सं० यदि—(यद्=जो) क्रि० वि० जो ।

सं० यदु—पु० एक राजा का नाम जो
राजा ययाति का बड़ा बेटा और
भीकृष्ण का पुत्र था और चन्द्रवंशी
राजाओं में पाँचवाँ राजा था ।

सं० यदुकुल—(यद् + कुल) पु० यदु
राजा का घराना, यदुवंश ।

सं० यदुनाय—(यदु=यदुवंशीयों का,
यदुपति) नाथ या पति माहिक
पु० भीकृष्ण ।

सं० यदुवंश—(यद् + वंश) पु०
यदुकुल, यदु राजा का घराना ।

सं० यदुवंशी—(यदुवंश) पु० यदु
के वंश के लोग, यादव ।

सं० यदृच्छा—(यद् + श्रद्धा + आ)
स्त्री० स्वानुष्ठ, सुदृष्ट ।

सं० यद्यपि—(यदि जो, अपि=भी)
समुच्च० जोभी, यद्यपि । [ज्यों] ।

सं० यद्वा—अथवा पदान्तर, मोक्ष,
सं० यन्त्र—(यन्त्र, या यम्=रोकना)

कल, हर एक-तार का भी-
जार या रथियाग, २ बाना, ३
नेत्रगात्र में अपने हृष्ट देवता का
चक्र, ४ टोटका, पंच, ५ घ, ६ ताला,
कुन्ड ।

सं० यन्त्रणा—(यन्त्र=रोहना या य-
न्त्र=दंडदेना) शी० दुःख, गीहा-हेरा ।

सं० यन्त्रस्थ—यु० जोरवक्त्र जो ध्व-
रारा, मुद्रित हो रहा ।

सं० यन्त्रिका—(यन्त्र=रोहना,
यन्त्र करना) यु० ताला, कुन्ड ।

सं० यन्त्रित—(यन्त्र=रोहना) शी०
यु० रोहा हुआ, रथ रथि हुआ,
मुद्रित ।

सं० यम—(यम=रोहना, दंडदेना, यम
करना या दंडना) यु० यमराज,
यमराज, दंडिगदिया का दिक्
पाल, कांत, २ इन्द्रियों की रोह-
ना, यु० मोहा ।

सं० यमक—(यम=मिलना) यु०
मोहा २ एक शब्दांतरांतर जहां
एकही वद दो तीन बार आते हैं
पर जहां उस वद का अर्थ हर एक
वद का होता है ।

श्री० यममुक्ता—(यम=यमराज, शी०
यम का ना, यम की मुक्ता ।

सं० यमल—(यम=मोहा, यमराज)
यु० जो दो लड़के एक साथ जन्मे
हैं, मोहन ।

सं० यमदग्नि—यु० पाशुपताग जी
का चाप ।

श्री० यमदिया—(सं० यमद्वीरक)
यु० वह दीवक जो दानिद्वी
११ के दिन यम के नाम से जना
या जाता है । [केदुग ।

सं० यमदूत—(यम+दूत) यु० यम

सं० यमधार—(यम+धार) शी०
कटार, घुसा, तेंगा, लटकार ।

सं० यमल—(यम=मोहा, ना=लेना)
यु० मोहा ।

सं० यमलार्जुन—(यमल=मोहा,
अर्जुन एक प्रकार का पेड़) यु०
एक तरह के दो पेड़ जो यमराज
में थे कुंभ के दो लड़के जो बादलों
बदिरा को पीछर मंगा में बेरपा
को के माथ नयनवान बने थे
नारद के शत्रु से हार होकर
हृष्य श्री ब्रह्मराज ने उन को
हृष्य में मुक्त किया ।

सं० यमुना—(यम) शी० यमुना
नदी जो यमराज की बहिन और
हृष्य की बेटी है ।

सं० यपाति—(य=यम, पा=पाप)
मोहा के तरह मर जहा यमराज
है) यु० यमराज का बेटा ।

सं० यव—(यम=मिलना) यु० जो,
एक तरह का फल, २ वेद, जेठ ।

नन्द, हर्ष, सुशी, रंगरस, हँसी
सुशी, हुलास, भोगविज्ञास ।

प्रा० रंगरस—(सं० रत्न + रस)
बोछ० आनन्द, हर्ष, सुख, सुशी ।

प्रा० रंगरातना—बोछ० मूत्र गहरा
प्यार होना ।

प्रा० रंगराता—बोछ० रंग में रंगा
हुआ, मसज, आनन्दित ।

प्रा० रंगरूप—(सं० रंग + रूप)
बोछ० चमक दमक, अचि, हृस्व,
जवाब ।

प्रा० रंगलगाना—बोछ० रंगना, रंग
चवाना, २ भगदा चवाना, बले-
दा मवाना । [शोभा, हुस्न ।

प्रा० रंगत—(रत्न) स्त्री० रंग, वर्ण,
प्रा० रंगना—(सं० रञ्जन) क्रि० स०
रंग चवाना, रंग देना ।

सं० रंगभूमि—(रंग + भूमि) स्त्री०
नाथ घर, अस्तादा, नाट्यशाला,
रंगशाला, धनुषपत्र की भूमि ।

प्रा० रंगवाई } (रंगना) स्त्री०
रंगवाई } रंगनेकी यन्त्री ।

प्रा० रंगीला—(रंग + गु० चटकीला,
मटकीला, रमीला, रमिषा, रसि-
क, देना ।

प्रा० रचना—(सं० रचन, रच=र-
नाना) क्रि० स० बनाना, र-
न विधानन, मिररना, पैदा
करना, २ क्रि० अ०

बनाना, पैदा होना, तैयार होना ।

सं० रचक—(रच + चक) क० पु०
बनानेवाला, मुसन्निक, उस्तादक ।

सं० रचना—(रच=बनाना) स्त्री०
तमनाक, बनावट, सजावट, तैयारी,
२ पैदाकी हुई चीज, ३ ग्रन्थ ।

सं० रचयिता—क० पु० निर्माणक,
रचनेवाला, मुसन्निक ।

प्रा० रचाना—(सं०, रच=बनाना,
या रच=रंगना) क्रि० स० करना,
बनाना, २ मेंहदी से अथवा अलता
आदि और किसी चीज से हाथ
पैर रंगना, ३ व्याह आदि गुप्त
काम को गुप्त रखना ।

सं० रचित—(रच=बनाना) क्ति०
पु० बनाया हुआ, सिरजा हुआ,
पैदा किया हुआ, निर्मित ।

सं० रज } (रज=रंगना) स्त्री०
रजम् } रेत, धूलि, २ पराग, फूलों
की मुंगंधिन धूलि, ३ रींका बँवल
या फूल, ४ रजोगुण । [पु० घोषी ।

सं० रजक—(रज=रंगना) क०
सं० रजकी—(रजक) स्त्री० घोषिन ।

सं० रजकण—पु० धूलिकण ।

सं० रजत—(रज=रंगना, या चमक-
ना, या राह=शोभना) पु० चांदी,
रज, २ हाथी दांत, ३ हाथ, ४,
बोना, गु० घोडा, शुक्र वर्ण, श्वेत,
मरेद ।

सं० रजतद्युति—पु० महाधीर गु०
गौरवर्ण, रजतवर्ण ।

सं० रजन—भा० पु० रागोत्पादन,
रंगना, रंगसाजी ।

सं० रजनि } (रज्=प्यारकरना)
रजनी } स्त्री० रात, रात्रि ।

सं० रजनिकर } (रजनी=रात, कृ=
रजनीकर } करना) पु० चाँद,
चन्द्रमा ।

सं० रजनिचर } (रजनी=रात,
रजनीचर } चर=चलना) पु०
राक्षस, असुर, निशाचर, २ भूत,
मेन, ३ चोर, ४ रातको फिरनेवाला ।

सं० रजनीजल—पु० तुषार, ओस,
जीहार, कुहरा ।

सं० रजनीमुख—(रजनी=राति, मुख
=मुँह) पु० साँक, संध्या, प्रदोष,
राति का मारम्भ, संक्रम ।

प्रा० रजवाड़ा—(राजा) पु० राज,
राजपूताना ।

सं० रजस्वला—(रजस्) स्त्री० वह
स्त्री जो कपड़ों से हो, क्लृप्तगनी ।

प्रा० रजई } (सं० राजादेश, राज
रजायमु) =राजा, आदेश=आ-
ज्ञा) स्त्री० राजा की आज्ञा, राजा
का हुक्म ।

सं० रजोगुण—(रजस् + गुण) पु०
दूसरा गुण जिससे मोह, क्रोध प्यार,
अहंकार आदि पैदा होते हैं ।

सं० रजोग्राहि—क० पु० वायु, वात,
हवा ।

सं० रज्जु—(मृज्=पैदा होना, यो
बनाया जाना) स्त्री० रस्सी, रास
दोरी, जेबरी ।

सं० रञ्जक—(रज्=प्यार करना, वा
रंगना) क० पु० प्यारकरनेवाला,
मीति करनेवाला, खुशकरनेवाला,
मसमहरनेवाला, २ रंगनेवाला,
चित्रकार, ३ पु० रंग ।

सं० रञ्ज—पु० रंजन, रंगना, रंगसाजी,
रंग, राग ।

सं० रञ्जन—(रज्=प्यार करना, वा
रंगना) भा० पु० मसमना, प्यार,
अनुराग, २ रंगना, रंगावट, चित्र-
कारी, ३ लालचन्दन, गु० मीति
करनेवाला, मसमकरनेवाला, खुश
करनेवाला, हर्षदेनेवाला ।

सं० रञ्जित—(रज्=प्यारकरना वा
रंगना) कर्म० पु० मसम, गार कि-
या हुआ, २ रंगा हुआ ।

सं० रटन—भा० पु० घेपणा, रटना
मादकरना ।

प्रा० रटना—(सं० रटन, रट=बोल-
ना) क० सं० बोलना, बहना, बराबर
बोलना, दोहराना, तिरगुना ।

सं० रटित—कर्म० पु० घोषित, याद
किया हुआ ।

सं० रण—(रण्=शब्द करना) पु०



सं० रत्नाकर—(रत्न=कराह, अ-

परा मोती, आकर=आने) पु०

मन्द, ५. रत्नो की आने ।

सं० रत्नावली—(रत्न+आवली)

श्री० रत्नो की माला, रत्नमाला,

२ एक नटक ।

सं० रथ—(रथ=तेलनां, प्रमथ होना)

पु० एत तरह की चार पहियों की

गाड़ी ।

सं० रथकार—क० पु० रथ बनाने

जाना, बर्ह, सूत्रधार, बर्हमंजर,

चुर्बा से बैरथ कन्या में उत्पन्न उत्त

की माहिष्य कहते हैं बैरथ से शूद्र

कन्या में जन्मा ठसे करण कहते हैं

माहिष्य से करण संहायनी कन्या

में उत्पन्न पुत्र ठसे रथकार कहते हैं ।

सं० रथगर्भक—क० पु० रथ की

सजारी, शिपिका, मालकी, दोली ।

सं० रथगुप्ति—श्री० रथ का परदा,

रथ का ओहार, पोशिर, परदा ।

सं० रथवान्—पु० सारथी ।

सं० रथवाहक—क० पु० सारथी,

यंतार ।

सं० रथाङ्ग—(रथ+अंग) पु० पहिया

चक्र, चाक्र, २ चक्र बांधली, चक्रवाह ।

सं० रथिक—(रथ) क० पु० रथ का

रथी } स्वाधी, रथ पर पहने

वाला, रथ पर चढ़कर लड़नेवाला

मनाजा, ताबूत मुर्दा, की टिकरी ।

सं० रद } (रद=टुकड़े करना) पु०

रदन } दांत, दन्त, दशन, १२

संख्या ।

सं० रदनी—क० पु० हाथी ।

सं० रदच्छद } (रद या रदन=दांत

रदनच्छद } छद=ढरना) पु०

होंठ, ओष्ठ, लव ।

सं० रदपट—(रद=दांत, पट=माह)

पु० होंठ, लव ।

प्रा० रद्दी—(अ० रद्) श्री० निकुंभ

और पुराने कायना ।

प्रा० रनवास } (रानीवास) पु०

रनिवास } रानियों के रहने के

मरल ।

सं० रन्ति—श्री० श्रीहरी, प्रसन्नता,

रमण, मोति । [२ कुसुर, कुता ।

सं० रन्तिदेव—पु० पद्मेश्वरी राजा,

प्रा० रन्थना—(सं० रन्थन, रथ=

पकना) कि० अ० पकना ।

सं० रन्ध्र—(रथ=नाशहोना, या गुहा

होना) पु० भेद, छिद्र, गुहा, ३

दोष, दूषण, भ्रष्ट ।

प्रा० रपटना } (र) अ० रपटना,

गिराफना ।

प्रा० रथी—

सं० रथम—

रथगुहा ।



- ० विपर्यास—भा० पु० विलोप,
विरात, विरर्थय ।
० विपल—पु० घण, लक्ष्मा ।
० विपश्चित—पु० बुद्धिमान् ।
० विपाक—पु० कर्मभोग, फल,
नतीजा । [जंगल ।
० विपिन—(वप=बोना) पु० वन,
० विपुल—(वि=बहुत, पून्=बढ़ना,
या फैलना) पु० बड़ा, बहुत, फैला
हुआ, गंभीर ।
० विप्र—(वि=बहुत, मां=भरना,
वा वप=बोना) पु० ब्राह्मण ।
० विप्रलब्ध—स्म० बखित, पो-
रा दिवागया ।
० विप्रव—(वि, पून्=माना) पु०
देशापद, राष्ट्रापद ।
० विप्रुत—स्म० व्यसन, शहर ।
० विफल—(वि=विन, फल=ला-
भ) पु० निष्फल, टूटा, बेकार्यदर ।
० विबुध—(वि=बहुत, बुध=मान
ना) पु० देवता, २ पण्डित, ३ चांद ।
० विबुधनदी—(विबुध + नदी)
स्त्री० देवताओं की नदी, श्रीगंगात्री ।
० विबुधान—क० पु० पण्डित ।
० विबोधन—भा० पु० समझाना,
मरोप करना ।
० विभक्त—स्म० पृथक् कृत, बां-
टागया, मुक्तसिप ।
० विभक्ति—(वि, भक्त=बुद्धि

- करना, अलग करना) स्त्री० भंश;
बाँट, टुकड़ा, हिस्सा, २ व्याकरण
में कारकों के चिह्न ।
सं० विभव—(वि=बहुत, भू=होना)
पु० संपदा, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य,
एक संवत्सरका नाम ।
सं० विभाग—(वि=बहुत, भां=टु-
कड़े करना) पु० भाग, टुकड़ा,
बाँट, हिस्सा, भंग, भिन्नगुण, सारे
रना, सींगस, घर, भेद, भिन्न
तकसीम, बाँट ।
सं० विभाजक—क० पु० भंशकारी,
हिस्सेदार ।
सं० विभाजित—स्म० बाँटा, बाँटा-
सं० विभावना—(वि, भू=होना)
स्त्री० मतिद कारणके धभावसे वास्तव
की वस्तुविशुद्धतत्त्वज्ञ, भलकारभेद ।
सं० विभावस—पु० सूर्य, पदारुह, च,
बकि, चन्द्र, दारभेद ।
सं० विभीषण—(वि=बहुत, भीष
हराना, रौरेयो रो) पु० रावणका
भाई, पु० हरानेवाला, भयानक ।
सं० विभीषा—भा० पु० धप, प्रयावृत्ति ।
सं० विभीषिका—भा० स्त्री० मय-
प्रद, मय, मयदिग्याना ।
सं० विभु—(वि=बहुत, भू=होना)
पु० समर्थ, मय, मयद्वारा, २
पालिक २ शिव ३ ब्रह्मा ४ विन्द
सं० विभुक्त—(वि=बहुत, भू=होना)
पु० समर्थ, मय, मयद्वारा, २
पालिक २ शिव ३ ब्रह्मा ४ विन्द

सं० विभूति—(वि=बहुत, भू=होना)

स्त्री० सम्प्रदा, ऐश्वर्य, सिद्धि, सम्पत्ति, धन, दौलत आदि सुख, २ रास, भस्म ।

सं० विभूषण—(वि=बहुत, भूष=सिगार करना) ए० पु० गहना, अलंकार, नेवर, शोभा, आभूषण ।

सं० विभूषित—(वि=बहुत, भूष=सिगारना) र्म० पु० शोभित, सँवारानुभा, शोभायमान, फववा हुआ, सुतैयन ।

सं० विभेदक—(वि, भिद् + अक भिद्=तोड़ना) क० पु० विभेदक, तोड़नेवाला ।

सं० विभ्रम—(वि=बहुत भ्रम=भूलना) पु० चेशभेद, सम्भेद, कष्ट, एक अत्रदा आभूषण) दूमेरे अंगों धारणकरना, भ्रमि, भ्रमण, शोभा ।

सं० विभ्राज—क० पु० शोभायमान, भ्रात्रिण्यु, गुणरसे सुशोभित ।

सं० विमर्श (वि, मृग्=झुना, ध्यान विमर्शन) करना) पु० विचार, परामर्श ।

सं० विमर्ष—(वृष=) क० पु० मैत्री,

सं० विमल
सु० निर्वज,
विमाना

मा) स्त्री० सौनेली मा ।

सं० विमान—(वि=बहुत मा=मादर करना या मान=पूजना) पु० देवताओंका रथ ।

सं० विमुक्त—(वि, मुच=छुटना, बौड़ना) र्म० छुटानुभा, रिहा ।

सं० विमुख—(वि=उलटा, मुनि=मुँह) गु० विरोधी, फिरो हुआ ।

सं० विमुग्ध—गु० अज्ञान, मूढ़ ।

सं० विमूढ़—(वि=बहुत, मूढ़=मूर्ख) गु० बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ ।

सं० विमोचन—(वि, मुच=छुटना) पु० छोड़ना, मुक्तकरना, क० छुटानेवाला, छुटानेवाला ।

सं० विम्व—(वी=चमकना, वा=गाना) पु० मुरत, अदि, तसरीर, आरा, मनिविम्व, २ सूय अथवा चन्द्रवा का मरहज, ३ विम्वफल, एक लफल, कुंदक ।

सं० वियोग—(वि=नहीं, योग=मेत) मा० पु० विरह, जुदाई, विवरा, विम्वना, जुदा रहना ।

सं० वियोगी—(वियोग) क० पु० विही, जुदा रहनेवाला, विम्वना हुआ ।

सं० (वि=नहीं, रूढ़=हाना)

सं० विरञ्च (वि=बहुत, रञ्च= विरञ्चि) पनाना) पु० मुष्टि

पनाने वाला, गह्वा ।

सं० विरज-पु० क्रोशरहित, चेतनकनक ।

सं० विरत-(वि=नहीं, रत्न=लेलना)

क० पु० बैराग्यवान्, जिसने संसार छोड़ दिया हो, रिहा, बेगम ।

सं० विरति-(वि=नहीं, रत्न=लेलना)

भा० स्त्री० बैराग्य, त्याग, संसार को छोड़ देना ।

सं० विरद-(वि=नहीं, रद=रोदना)

पु० पशु, नामवरी, पाना, लिंवास, हथियार, अस्त्र शस्त्र ।

प्रा० विरदित-पु० वीर, धाना वाला ।

सं० विरह-(वि=बहुत, रह=छोड़-

ना) पु० जुदाई, बिछोड़, पिछुड़ना, वियोग ।

सं० विराग-(वि=नहीं, रञ्च=रंगना)

पु० बैराग, लोभ मोह को छोड़ना ।

सं० विराज-पु० सज्जित, आदि-पु०

रूप, विष्णु का स्थूलरूप ।

सं० विराजमान-(वि=बहुत, राज=शोभना)

क० पु० शोभायमान, सोहता हुआ ।

सं० विराजित-क० पु० दीप्त, रोशन ।

सं० विरुज-पु० नीरोग, तन्दुरुस्त, रोगरहित ।

सं० विराट्-(वि=बहुत, राट्=शो-

भना) पु० बड़ी मूरत,

विभक्त, २ एक देश का नाम ।

सं० विराध-(वि=बुरी तरहसे, राध=

=पूरा करना, सिद्ध करना) पु० एक

राक्षस का नाम ।

सं० विराम-(वि=बहुत, रम्=थानन्द

करना) पु० बहराव, विश्राम, शान्ति, अन्त, अवसान, निवृत्ति, समाप्ति ।

सं० विराम-(वि=नहीं, रम्=बैठ

करना) पु० व्याकुल, दुःखी, वैचैन ।

सं० विरामक-क० पु० छोटारनेवाला ।

सं० विरुद्ध-(वि=बहुत, रुध्=रोक-

ना) पु० उलटा, विरसी, सिद्धाफ ।

सं० विरूप-(वि=बुरा, रूप=ढील)

पु० कुरूप, भौंड़ा, धनमुहावना, बदसर ।

सं० विरेचक-(रिच्=गिराना) क०

पु० दस्तावर, मलभेदक ।

सं० विरेचन-भा० पु० कुलाय, मल-

निस्सारण ।

सं० विरेचित-स्म० मुसोहल, रोचित ।

सं० विरोचन-(वि=बहुत, रुच=चम

करना) पु० पहादका पेश और राजा बलिका बाव, २ सूर्य, ३ चाँद ।

सं० विरोध-(वि.रुध्=रोकना) भा०

पु० बैर, द्वेष, शत्रुता, दुश्मनी, २ भ्गः गदा, लड़ाई ।

सं० विरोधक-क० पु० विवादी, वैरी ।

सं० विरोधी-(विरोध) क० पु० वैरी,

शत्रु, दुश्मन, २ भ्गः शत्रु ।

सं० विल (विल=छेद करना) र्म्यं
पु० छिद्र, गर्त, गड्ढा ।

सं० विलक्षण—(वि=बहुत, लक्ष=
देखना, या चिह्न करना) गु० विच-
क्षण, अनूप, उत्तम, मला, अष्ट, २
जुदा, भिन्न ।

प्रा० विलगावना—क्रि० सं० अलग
करना, विहाल देना ।

प्रा० विलपना—क्रि० अ० रोदन, रोना ।

विलपत—गु० रोते हुये ।

सं० विलम्ब—(वि=बहुत, लघि=उह-
रना) स्त्री० देरी, अवसर, टाकमटोल,
अर्थात् ।

सं० विलाप—(वि=पुरी तरहसे ला-
प=बोलना, अर्थात् रोना) पु० रोना,
विनम्रता, शोक, मन्ताप, दुःख ।

सं० विलास—(वि=बहुत, लस=स्ने-
हना) पु० स्नेह प्रीति, कैलेश, वि-
हार, भोग, सुख, आनन्द, हर्ष प्रेश ।

सं० विलासिन—गु० पु० भोगी, प्रे-
म्यः, पु० सने २ कृष्ण २ वेदिक
कामदेव ५ महादेव २ चन्द्र ।

सं० विलासिनी—स्त्री० नारी, बरया ।

सं० विलासी—क० पु० भोगी, प्रेम्णः ।

सं० विलीन—(ली=अगना) क०
पु० विगत, नष्ट, नयनाप्त ।

सं० विलुप्त—(लुप्त=अदृश्य होना)
क० पु० अदृष्ट, नष्ट, गुप्त ।

प्रा० विलुलन—पु० बुदबुद बुझाना—

सं० विलोकन—(वि, लो=देखना)

पु० दृष्टि, दीठ, नज़र, ताक ।

सं० विलोकना—(सं० विलोकन)

क्रि० सं० देखना, ताकना ।

सं० विलोकित—र्म्यं देखना हुआ ।

सं० विलोचन—(वि, लोच=देखना)

गु० पु० आँख, नयन, नेत्र ।

सं० विलोप—भा० पु० अदर्शन, नारा ।

सं० विल्व—(विन्=डकना) पु० पेड़
का पेड़ या फल ।

सं० विवर—(वि=नहीं, वृ=डकना)

पु० विल, छेद, गड्ढा, सेंच, २ दीप ।

सं० विवरण—(वि, नहीं, वृ=डकना)

अर्थात् शब्द के अर्थ आदिक का खो-
लना) पु० टीका, व्याख्या, प्रस्तान,
२ हिजना, २ रिपोर्ट, बहस ।

सं० विवर्ण—गु० अघम, नीच, २ रंगहीन,

कर रहिन, निर्वेष्टा ।

सं० विवस्वत—पु० सूर्य, अर्क वृक्ष,

अरुण, साल ।

सं० विवाद—(वि=बहुत, वाद=

भगड़ा) पु० वाद, भगड़ा, उलट
कहना, विरोध ।

सं० विवाह—(वि=आपसमें, वह=छे-
नाना) व्याह, पु० गर्वघन, शादी ।

सं० विवाहित—(विवाह) र्म्यं पु०

व्याहाहुआ, भिम्भी शादी होगई हो ।

सं० विवाहिता—(विवाहित) र्म्यं

पु० स्त्री० व्याही हुई ।

सं०विविक्त—(वि, विच्=जुदा करना) गु० छोड़ा हुआ, २ प्रकार, निर्मित, २ पवित्र ।

सं०विवृत्ति—स्त्री० विस्तार, व्याख्यान ।

सं०विविध—(वि=बहुत, विभ=प्रकार) गु० नानाप्रकार का, प्राति २ का ।

सं०विवेक—(वि=बहुत, विच्=जुदा करना, विचारना) पु० विचार, ज्ञान ।

सं०विवेकी—(विवेक) क० पु० विचारकानेवाला, ज्ञानवान्, ज्ञानी ।

सं०विवेचना—वि=बहुत, विच्=जुदा जुदा करना, विचारना) स्त्री० भूत संबंधा विचार, विवेक, नवीका ।

सं०विवेचित } र्म० विचोसित, वि-
विवेचितव्य } चारने योग्य ।
विवेच्य }

सं०विवोदा—पु० प्रामाता, दामाद, घर, दूहा, नौशा ।

सं०विशद—(वि, शद=ज्ञाना) गु० धौला, सफेद, श्वेत, निर्मल, साफ, उज्ज्वल ।

सं०विशाखा—(वि=बहुत, शाखा=प्रकार) स्त्री० सोलहवां वृक्ष ।

सं०विशारद—(विशाल=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना) यहाँ विशाल केल को र हो गया है) गु० पण्डित, विद्वान्, निपुण, भेष्ट, प्रसिद्ध ।

सं०विशाल—(वि=बहुत, शाल=जा-

ना) गु० बड़ा, बहुत, चौड़ा, फैला हुआ ।

सं०विशिश्व—(वि=बहुत, अथाव, तीली, शिखा=चोटी अथवा अण्डा, या वि=नहीं, शिखा=चोटी) पु० तीर, पाण, गुर, गु० चिन चोटीका, शिखारहित ।

सं०विशिखासन—(विशिखा=आसन) पु० धनुष, प्रमान ।

सं०विशिष—वि० पु० पवित्र ।

सं०विशिष्ट—(वि=बहुत, शिप्=गुण सहित होना) क० पु० साध, संयुक्त, सहित, जुड़ा हुआ, २ वचन, बड़ा ।

सं०विशुद्ध—(वि=बहुत, शुद्ध=शुद्ध) गु० बहुत पवित्र, निर्मल, विमल, उज्ज्वल, उज्जल ।

सं०विशुद्धि—पा० स्त्री० शोधन, दीप दूर करना ।

सं०विशेष—(वि=बहुत, शिप्=गुण के साथ होना) पु० प्रकार, भेद, जाति, गु० मुख्य, साम, निज, २ बहुत, अधिक ।

सं०विशेषोक्ति—स्त्री० यत्रोक्ति, विशेष बानय, अर्थालङ्कार भेद ।

सं०विशेषण—(वि=बहुत, शिप्=गुण के साथ होना) क० पु० गुण, पर्व, स्वभाव, तारीफ ।

सं०विशेष्य—(वि+शिप्) पु० नाम, संज्ञा, र्म० साध, प्रधान ।

सं० विष्णु—(विष्=कैलना, जो सब

सृष्टि में कैला हुआ है) पु० परमेश्वर भगवान्, सृष्टि को पालने वाला, व्यापक ।

सं० विष्णुवल्लभा—(विष्णु=भगवान् ब्रह्मर्षि=प्यारी) स्त्री० सुतसी, रत्नपत्नी, हरिमिया ।

सं० विसर्ग—(वि, मृत्=छोड़ना) पु० स्वर के आगे की दो बिंदी, रदान, छोड़ना ।

सं० विसर्जन—(वि, मृत्=छोड़ना) मा० पु० बिदा, भेजना, छोड़करना, जाने देना, र. छोड़ना, र. देना ।

सं० विसर्जित—(वि, मृत्=छोड़ना) पु० कलमत दिया, परतारना हुआ, भेजा गया ।

प्रा० विसासिनि—स्त्री० हासिदां दा-दिशि, सौमिनी ।

सं० विसृष्टिका—(वि=रुद्ध, मूर्ख) मूर्ख जो मूर्ख के ऐसा कठोर सीखा अर्थात् बहुत दुःख वाला रोग) स्त्री० एक प्रकार के रोग ।

सं० विस्तर—(वि=दायना) पु० प्रचुर, बहुत, समृद्ध, व्यापक,

सं० विस्त,
कैलाश,
कल्याण,

सं० विस्तारक } क० पु० फैलाने
विस्तारी } वाला । [गवा ।

सं० विस्तारित—(वि=दायना) पु० फैलाया ।

सं० विस्तीर्ण—(वि=दायना) क० पु० फैला हुआ, विस्तृत ।

सं० विस्तृत—(वि=बहुत, स्त=ढकना, फैलाना) क० पु० फैला हुआ, विस्तीर्ण ।

सं० विस्फुल्लिग—पु० चिनगारी ।

सं० विस्फोट—(वि, बहुत स्फुट=फूटना, या फटना) पु० फोड़ा, पावा

सं० विस्फोटक—(वि=बहुत फूटने वाला) क० पु० फूटने वाला अर्थात् बहुत फोड़ा, शीतला, पेचका ।

सं० विस्मय—(वि=कुछ, स्मि=मुसकुराना) पु० अचरन, आश्चर्य, अनंभा, चमत्कार, तमज्जुष ।

सं० विस्मरण—(वि=नहीं, स्मरण=याद) पु० भूलना, भिरना ।

सं० विस्मृति—(वि=नहीं, स्मृति=याद) पु० भूलना, भिरना ।

सं० विस्मृति—(वि=नहीं, स्मृति=याद) पु० भूलना, भिरना ।

सं० विस्मृति—(वि=नहीं, स्मृति=याद) पु० भूलना, भिरना ।

सं० विस्मृति—(वि=नहीं, स्मृति=याद) पु० भूलना, भिरना ।

सं० विस्मृति—(वि=नहीं, स्मृति=याद) पु० भूलना, भिरना ।

सं० विस्मृति—(वि=नहीं, स्मृति=याद) पु० भूलना, भिरना ।

वीर गङ्ग=जाना अर्थात् आकाश
में उड़नेवाला) पु० पर्यट, पक्षी,
२ बादल, ३ वीर, ४ मूर्ख, ५ चांद,
६ प्र ।

सं० विहरण-(वि, ह=हैना, पर
वि उत्सर्ग के साथ आने से इस
धातु का कर्म खेल करना, या आ
मंद करना होता है) भा० पु० विहार
करन, खेल करन, फ्रीडा करना,
मूषना, सैर करना ।

सं० विहार-(वि, ह=हैना, पर वि
उत्सर्ग के साथ आने से इस धातु
का कर्म खेल करना होता है) भा०
पु० विनाम, खेल, फ्रीडा, २ आ-
मंद से फिरना ।

सं० विहारी-(विहा०) ह० पु० विहार
करनेवाला, आमंद करनेवाला, पु०
धीरुष्य ।

सं० विहित (वि=बहुत, पा=प्रयत्न
अर्थ० ठीक, ठीक, करने योग्य,
दशराया हुआ ।

सं० विहीन-(वि=बहुत, हा=होड़-
ना) अर्थ० विन, मुदा, गिरन,
फ्रीडा हुआ ।

सं० विह्वल-(वि=बहुत, हल=हिल-
ना, चलना) क० पु० दबाहुन,
परत, या हुआ, धंवल ।

सं० वी-पु० विनाम, ठीक, एका ।

सं० वीक्षण-(वी+क्ष+अन-

ईक्ष=देखना) पु० दर्शन, देखना ।
सं० वीक्ष्य-गु० देखकर, निहारकर ।
सं० वीक्षित-अर्थ० देखा हुआ, दृष्ट ।
सं० वीचि-(वि=कैलना) श्री० लहर,
तरंग, मौन, डक ।

सं० वीज-(वि=बहुत, जन=पैदा हो
ना) पु० कथा, दाना जो बोया
जाता है, २ पूल, कारण, ३ भिक्षु,
४ बोर्ये, ५ मंत्र, ६ बीजगणित,
गणित का एक भाग जिसमें अक्षों,
की मगर अक्षर लिखकर हिमाय
बनाये हैं इसको संस्कृत में अक्ष्यप्त-
गणित कहते हैं ।

सं० वीणा-(वत=जाना, वा वी=जा
ना) श्री० एक प्रकार का बाजा
जिसको नारदजीने निकाला, श्री-
यन्दको देगी ।

सं० वीन-(वी=जाना, वा वि, एण=
जाना) गु० बीता हुआ, गुहरा
हुआ, चला गया ।

सं० वीथि-(वी=जाना, वा विथ=
सांगना) श्री० गली, रस्ता, २
पंक्ति, धेणी ।

सं० वीष्मा-(वि=बहुत, वाय=है-
लना, काय) भा० श्री० बगानी-
पट्टा, फैलना, २ आदर ।

सं० वीर-(वीर=नाश करने वाला वा
कत=माना) पु० दूर, बहादुर,
दृढ़, होड़ा, काय के नैरुय में
से एक म ।

सं० वीरप्रसू—(म,सू=पैदाकरना) स्त्री०
 वीरजननी, वीर पुत्र की माता ।
 सं० वीरण—(ईर्=इहना) पुं०
 प्रा० वीरन—(वेना, गान, स्वस, गुं
 प्यारा, प्यारामाई ।
 सं० वीरता—(वीर) स्त्री० वडादुरी,
 शूमायन ।
 सं० वीरभद्र—(वीर=वडादुर, भद्र=
 बहुत अच्छा) पुं० मरादेव के एक
 गण का नाम जिसने युद्धमें दत्त
 का विनाश किया ।
 सं० वीरवृत्ति—स्त्री० शूरो का धाना,
 शूरो का पैशाबा ।
 सं० वीरा—स्त्री० वीर पुत्र की माता;
 वीर औषध ।
 सं० वीर्य—(वीर) पुं० बीज, धातु,
 पुरुषार्थ, बल, जोर, कर्मानुष,
 प्रभाव, नेत्र ।
 सं० वृक—(वृक=जेना) भेड़िया,
 हुंकार, उपासी ।
 सं० वृकोदर—पुं० भीमसेन, अर्जुन ।
 सं० वृत्—(वृत्=वाटना) पुं० वेद,
 कथ, गाद, तरवार, पादप ।
 सं० वृत्—(वृत्=होना या बढ़ना) पुं०
 घा, भेदल, चक्र, गोलगेन, रं
 द, रीत गुं हुआ, पैदा हुआ ।
 सं० वृत्तान्त—(वृत्=पैदाहोना, अ-
 न्त=निर्णय अथवा निरूपण अर्थान्
 तिम के मनुने से किसी बात का
 निर्णय होना) पुं० समाचार,

घात, डाल हकीकत, पना ।
 सं० वृत्ति—(वृत्=होना या पैदा होना)
 स्त्री० आजीविका, जीविका, रोज
 गार, रोजी, बजीका ।
 सं० वृत्त्य—म्मे=वर्णनीय, कहनेयोग्य
 सं० वृत्र—(वृत्=होना) पुं० ए
 वृत्रासुर—राक्षस जिसको इन्द्रने मारा
 सं० वृथा—(वृ=ठकना) क्रि० वि०
 'वैकाथदह, निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ
 योही [पुराणा]
 सं० वृद्ध—(वृद्ध=बढ़ना) पुं० वृद्ध,
 सं० वृद्धि—(वृद्ध=बढ़ना) स्त्री० बढ़ती,
 बढ़ती, तरफ़ी, लक्ष्मी, फ़ैदि
 सिद्धि ।
 सं० वृन्द—(वृण्=मसम होना) पुं०
 समूह, भीड़ भाड़, डेर, थोक ।
 सं० वृन्दा—(वृण्=मसम होना) स्त्री०
 तुलसी, राधिका, एक देवी का
 नाम । [मिनोहर]
 सं० वृन्दारक—पुं० देवता गुं दुखय,
 सं० वृन्दारिका—स्त्री० देवता की स्त्री ।
 सं० वृन्दावन—(वृन्दा=पेन) पुं०
 मथुरा के पास एक पन जहाँ वृन्दा
 देवी का मंदिर था और जहाँ गोकु-
 लमें नन्दजी और श्रीकृष्णभादि
 सब स्थान जा बसे थे ।
 सं० वृश्चिक—(वृश्च=वाटना) पुं०
 चिन्मू, २ आठवीं राशि ।
 सं० वृष—(वृष=सोपना का, पैदा कर

ना) पु० बेल, २ दूसरी राशि ।

सं० वृषकेतु—(वृष+केतु) पु० महा-
देव, शिव ।

सं० वृषण—पु० अण्डकोष, फोता ।

सं० वृषभ—(वृष=सींचना, या पैदा
करना) पु० बेल ।

सं० वृषल—पु० शूद्र-रजजन, गान्धर्व,
प्याज, ३ घोड़ा, ४ अधामिक, ५
चन्द्रगुप्त वृष ।

सं० वृषली—स्त्री० शूद्रा, जो पिता के
घर में दम्प्या रजोवर्ष को मात हुई
उसे भी करते हैं ।

सं० वृषोक्पि—(वृष=वर्ष, अ=नहीं,
कपि=कैपाना) जो धर्महीन कैपावे,
महादेव, बिष्णु, अग्नि, इन्द्र ।

सं० वृषोत्सर्ग—(वृष+उत्सर्ग) पु०
हनुक के हेतु बैल को दास के छोड़
देना, सांड़ ।

सं० वृष्टि—(वृष्ट=सींचना, घराणा)
स्त्री० मेहर, वर्षा, पानी का गिरना ।

सं० वृहत्—(वृह=बढ़ना) पु० बड़ा ।

सं० वृहत्पाद—पु० बड़हत्त, वर्गद ।

सं० वृहस्पति—(वृहती=बोली, पति
=मालिक अथवा वृहन्=बड़ा अर्थात्
देवता, पति=मालिक या गुरु) पु०
देवताओं का गुरु पांचवां ग्रह, २
वृहस्पतिवार, बौकी, जुमेरात ।

सं० वेग—(विह=कैपाना) पु० प्रवाह,
धारा, जव, महाकाज ।

प्रा० वेगि—स्त्री० शीघ्र, जल्दी ।

सं० वेणी—(वेणु=जाना) स्त्री० चो-
टी, बालों को सँवारना, २ नदियों के
मिलने की जगह, जैसे विवेगी आदि ।

सं० वेणु—पु० बांस, बांसुरी का पाना,
मुरली, २ राजा का नाम ।

सं० वेतन—अज्ञ=जाना, या बी=
जाना) पु० मजदूरी, मशीने की तन-
ख्वाह, मासिक, जीविका ।

सं० वेताल—(अज्ञ=जाना) पु० बह
मुर्दा जो मृत के मुसने से जीवा सा
जाना जाय, विशाच, २ शिव के
नौकर । [ननेवाला, पण्डित ।

सं० वेत्ता—(विदु=जानना) पु० ज्ञा-

सं० वेत्र—पु० वेत, वेतवृक्ष ।

सं० वेदै—(विदु=जानना) पु० श्रुति,
हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक—मुख्य
वेद तीन हैं (१ ऋग्वेद, २ सामवेद,
३ यजुर्वेद) और कहते हैं कि चौथा
अथर्व वेद पीछे से मिलाया गया है
और इतिहास और पुराणों को पां-
चवां वेद भी कहते हैं, ज्ञान, शास्त्र-
ज्ञान, चारकी संख्या, चतुर्थांश ।

सं० वेदगर्भ—पु० मन्त्र, मन्त्रण ।

सं० वेदना—(विदु=जानना) स्त्री०
पीड़ा, दुःख, क्लेश, २ जानना, मुस
दुःख का ज्ञान ।

१ वर्षवति कामानिति वृषः आकम्पयति पापानिति आकपिः वृषश्चासावाकपिश्चे
ति वा २ "तत्रापीदयेयं धान्यं वेदः"—इतिहासपुराणयोर्वेदार्थमुपबृंहयेत् । विभे
त्यल्पभुजादेदोमामयप्रहरिष्यतांति १ ॥

[The page contains dense handwritten text in Devanagari script, which is mostly illegible due to extreme blurring and low contrast.]

- सं० वेदेही -- (विदेह) स्त्री० जनक
राजा की बेटी, सीता, जानकी ।
- सं० वेद्य -- (विद् = मानना) पु० इषीयं ।
वेद, इत्यादि करनेवाला, चिकित्सा
स्तक ।
- सं० वेद्यक -- (वेद्य) पु० वेदकविद्या ।
- सं० वेद्यनाथ -- (वेद्य + नाथ) पु०
वैद्यनाथ, घनान्तरि, २ शिव, वैष्ण
नाथ, महादेव जिनका मंदिर भाद
खण्ड में है ।
- सं० वेनतेय -- (विनता, कश्यपमुनि
की स्त्री, वि = बहुल, नप् = मबना)
वि० भा० पु० विनता का बेटा, गरुड ।
पतेमर्मा का राजा ।
- सं० वैभव -- (विभव) भा० पु० वे
धव, सहादा, धन, दौलत ।
- सं० वैमनस्य -- भा० पु० वृद्धासीनता,
विगाह, रैन, नास्तिकताकी ।
- सं० वैयाकरण -- (व्याकरण) भा०
पु० व्याकरण पदा हुआ परिश्रम ।
- सं० वैयाप्य -- भा० पु० निर्लेख्यता,
वेदवादि, वेदगर्भा ।
- सं० वैर -- (वैर) पु० दुश्मनी, शत्रु-
ता, द्वेष, विरोध ।
- सं० वैराग्य -- (विराग) भा० पु० संसार
वैराग्य की विषय सामग्री का
छोड़ना, वेदुष्यता ।
- सं० वैरागी -- (वैराग) पु० जिस में
संसार की विषय सामग्री की छोड़
- दिया है, उदासीन, साधु । [शत्रु ।
- सं० वैरी -- (वैर) क० पु० दुश्मन,
- सं० वैशाख -- (विशाखा, ऐश्वर्यनाथ
का नाम इस महीने में पूरा यदि इस
महीने की पूर्णमासी के दिन विशाखा
नक्षत्र होता है) पु० वरस का दूसरा
महीना ।
- सं० वैश्य -- (विद् = मुमनी, अपने
सेवी, वनिम आदि धंधे में) पु०
वनिया, बहाजन तीसरे वर्ग के लोग ।
- सं० वैश्वानर -- पु० अग्नि गु० कृ-
पण, स्थूल, सव, यक्षा ।
- सं० वैष्णव -- (विष्णु) पु० विष्णु का
भक्त, विष्णु उपासक, गु० विष्णु का ।
- सं० व्यक्त -- (वि, अद् = जाना, पर
वि उपसर्ग के साथ जाने से उत्पन्न
अर्थ प्रकट होना होता है) अर्थ पु०
जाना हुआ, स्पष्ट, प्रकट ।
- सं० व्यक्ति -- (वि, अद् = जाना)
स्त्री० पुरना, एक-एक करके,
२. मान, अनुपम । [विह्वल ।
- सं० व्यग्र -- पु० व्याकुल, परेशान,
- सं० व्यह्न -- पु० अंगहीन, व्याकुल ।
- सं० व्यजन -- (वि, अद् = जाना) पु०
कालहन्तक, यक्षा, देवा ।
- सं० व्यञ्जक -- क० पु० मन्त्राङ्क, नर्तक,
माधुर्यवक ।
- सं० व्यञ्जन -- वि = बह्नु, कृद् = जाना,

का राजा, मुरपति ।

सं० शकजित्—(शक=इन्द्र, जि=जीतना) पु० रावण का वेदा, उन्जित्, मेघनाद ।

सं० शकमुत्—(शक + मुत्) पु० इन्द्र का वेदा, मयन्त, २ भानि बानर ।

सं० शक्राणी—श्री० पुनोमना, शची ।

सं० शङ्कर—(शङ्क=हस्याण या भङ्गा, क=करनेवाला, कृ=करना) पु० महादेव, शिव, २ शङ्कराचार्य ।

सं० शङ्का (शङ्कि=सन्देह करना या करना) श्री० सन्देह, शङ्क, शङ्कर, मय ।

सं० शङ्कित—क० पु० दराहूमा, पीत, २ संदिग्ध, विनश्चित ।

सं० शङ्कु—पु० आठ अंगुल की लकड़ी, दंड हथ, शंख, माना, गाँधी, शाय, पाप, महादेव, अंग ।

सं० शङ्ख—(शङ्क=दंडा करना) पु० एक जल के जीव की हड्डी जिसको हिंदू पवित्र समझते हैं और देवता के माँहने और लड़ाई में बजाने हैं २ मी पद्म (गिनती में) ।

सं० शङ्खप्या—(शङ्क + प्या=पताना) क० पु० शङ्खपतनेवाला ।

सं० शङ्खि—(शङ्क=बोझना) श्री० इन्द्र की शं, इन्द्राणी ।

सं० शङ्खोत्ति—(शङ्खी + उत्ति) पु० इन्द्र देवताओं का राजा ।

सं० शङ्ख—(शङ्क=झिलने करनी) पु० खनी, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठगा ।

सं० शङ्खता—(शङ्क) भा० श्री० दुष्टता, कपट, खल, ठगई, मूर्खता ।

सं० शण—पु० सनका वृत्त, पदुमा ।

सं० शण्ड—पु० नपुंसक, दिनड़ा, २ साँड़ ।

सं० शत—गु० एकसौ, १०० ।

सं० शतक—(शत) गु० सैकड़ा ।

सं० शतकोटि—पु० इन्द्र का वृत्त, श्री० सौ हरोद, अष्ट संख्या ।

सं० शतक्रतु—पु० इन्द्र, सौ यज्ञ करनेवाला ।

सं० शतम्री—(शत=सौ, मृन्=मारना) श्री० एक तरह का हथियार, शीघ्र अथवा, धनुष, २ एक रोग का नाभ ।

सं० शतदु—(शत=सौ, दु=नाश) अथवा बहना जो सौ अर्थात् बहुत सौ धारा से बहती है) श्री० सनजम नदी जो पंजाब में है ।

सं० शतदु—(शत=सौ, दु=नाश) अथवा बहना जो सौ अर्थात् बहुत सौ धारा से बहती है) श्री० सनजम नदी जो पंजाब में है ।

सं० शतपत्र—(शत=सौ, पत्र=पत्ती या पंगड़ी) पु० कमण्डलू । [नीचे ।

सं० शतमारी—(शत=सौ, मारी=मारना) क० पु०

सं० शताब्द—पु० सौ वर्ष ।

सं० शताब्दी—गु० सरी ।

सं० शत्रु—(शत्रु=नाश करना) पु० बैरा, दुश्मन, शत्रु, अति, डेवी, विरोधी । [भीतनेवाला ।

सं० शत्रुविजयी—क० पु० कुरु

संशब्ध—(शब्द=वैरी, शब्द=मारना)

पुं लक्ष्मण का छोटा भाई, विपु-
सदन । [विरोध, दुरयनी ।

संशब्धता—(शब्द) भा० स्त्री० वैर,

संशनि—(शो=सीसा होना, या

सेन होना) पुं सातवां प्रा, श-
नैरवर्, प्रहनायक, व्यापायक, सूर्य
का चक्र ।

संशनिवार—(शनि+वार) पुं

सातवां दिन, शनीवार ।

संशनेश्वर—(शनैस्=धीमे, चर=

चलना) पुं शनिप्रह, शनिवार ।

संशप—भा० पुं निरस्कार, निरा-

दर, शप ।

संशपय—(शप्=सौगन्ध लायना,

या सरापना) स्त्री० सौगन्ध कि-

रिवा, सौंर, दुर्ग, शनिष्ठा, २

सराप, शप ।

संशब्द—(शब्द=शब्द करना, या

शब्द=मारना) पुं ध्वनि, आशय,

आवाज जो कान से सुना जाय,

२ (व्याकरणमें) जो मुखसे बोला

जाय, बोल, बचन, पद, लक्षण ।

संशब्दशास्त्र—(शब्द+शास्त्र)

पुं व्याकरण आदि शास्त्र जिनसे

शब्दका ज्ञान होता है ।

संशम्—(शम्=शान्त होना, या ठं-

रा होना) पुं मन की शान्ति,

चैत, २ शस्त्रों की और मन की

शोचना ।

संशमन—(शम्=ठंडा करना) पुं

शान्ति, ठंडा करना, २ यमराज, पुं

दूर करनेवाला ठंडा करनेवाला ।

संशमित—क० पुं शान्त, सुख-

मिज, सहनेवाला ।

संशम्बल—पुं कुल, किनारा, २

पायेय, राक्षस, १ मत्सर ।

संशम्बुक—स्त्री० सीपी पुं घोषा,

शुद्ध नक्षत्री, शान्त, दैत्य ।

संशम्भु—(शम्भु=कल्याण रूप, भू=

होना) पुं महादेव, शिव ।

संशयन—(शी=सीना) पुं सीना,

नींद लेना, नींद, रसेन, विद्योना ।

संशय्या—(शी=सीना) स्त्री०

सेन, विद्योना, पलंग, खाट ।

संशर—(श्=मारना) पुं तीर,

बाण, २ सरपट्टा ।

संशरण—(श्=मारना जो शरण

में आवे उससे वैरी को मारना)

पुं बचाव, रक्षा, २ बचानेवाला,

रक्षक, १ घर, आसरा ।

संशरणागत—(शरण+आगत)

क० पुं शरण में आया हुआ,

जो बचाव के लिये आवे, शरणाधी,

आश्रित । [रक्षक ।

संशरण्य—क० रक्षक, शरण्य मन,

संशरण्य—पुं मेघ, वायु, रक्षक ।

संशरद—(श्=नाश करना, नादल

८१

सं० श्रीयुक्त } (श्री=शोभा, लक्ष्मी,
 श्रीयुत } युक्त वा युत मिला
 हुआ) गु० भाष्यवान्, धनवान्,
 श्रीमान् । ३ । १ । २ । ३ ।

सं० श्रीवत्स—(श्री=शोभा, वत्स=
 पितृव्य) पु० विष्णु ।

सं० श्रुत—(श्रु=सुनना) र्म्यं पु०
 सुनाहुआ, समझाहुआ, पु० शास्त्र ।

सं० श्रुति—(श्रु=सुनना) स्त्री० वेद,
 कान्, सुनना ।

सं० श्रुवा—(श्रु=सुनना, या टपकना)
 स्त्री० रोमका चादू, खैरका
 पनाहुआ वस्त्र या हाथके आकारका ।

सं० श्रेणी—(श्रि=सेवा करना)
 श्रेणी } स्त्री० पात, पंक्ति, कर्तार ।

सं० श्रेष्ठ—(मशस्य शब्द को श्रेष्ठ हो
 जाता है) प्र=बहुत, शंस=सराहना)

गु० बहुत अच्छा, सब से अच्छा,
 उत्तम, सब से बड़ा ।

सं० श्रेष्ठाचार—(श्रेष्ठ + आचार)
 पु० उत्तम रीति उन्मा तरीका ।

सं० श्रोता—(श्रु=सुनना) क० पु०
 सुननेवाला, सुनवया ।

सं० श्रोत्र—(श्रु=सुनना) पु० कान,
 सुनने की इन्द्रिय ।

सं० श्रोत्रिय—क० पु० वैदिक, वेद
 पढ़नेवाला, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला ।

सं० श्लाघा—(श्लाघ=सराहना)

स्त्री० सराह, प्रशंसा, तारीफ, २
 चाह, इच्छा ।

सं० श्लाघ्य—(श्ल=प्रशंसा योग्य,
 काविलतारीफ) ।

सं० श्लेष—(श्लिप्=मिलना) पु०
 मिलाव, संयोग, २ एक अलंकार

जिस में एक शब्द के बहुत अर्थ
 होते हैं, जैसे, “कीकरपाकर तार,

जापन फलसा आमिला”
 “सेष कदम कचनार,

पीपल रत्नी तून तन”
 इस में बहुत से पेड़ों के नाम दि-

खाई देते हैं पर इसका अर्थ यह है
 कि परपेश्वर ने गुह्य पर कृपा की

कि जिस को तू चाहती थी सोही
 आमिला, सो है कधी स्त्री ! अब

उसके पैरों की तू सेवा कर और
 अब अपने प्यारे को एक पल भर

भी मत छोड़ । [मुकाम ।

सं० श्लेष्मा—पु० कफ, खराब,
 सं० श्लोक—(श्लोक=बढ़ना, या

इकट्ठा करना) पु० चार पद का
 संस्कृत छंद, २ यश, कीर्ति, की-

रति, नामवरी ।

सं० श्वपच—(श्वन्=कुत्ता, पच=प-
 नाना, अर्थात् कुत्तेको खानेवाला)
 पु० भंडाल ।

सं० श्वशुर—(श्वु=बल्दी, अस्=पा-
 ना) पु० समुद्र, पति या पत्नी का बाप ।

सं० श्वश्रु—(श्वश्रु) श्व० भाग,
श्वश्रु की श्वश्रु ।

सं० श्वसु } श्वश्रु-कागोमि दिन,
श्वः } कानेरांता दिन ।

सं० श्वान—(श्वश्रु-पदना, या मा-
ना) पु० कुला, कुल ।

सं० श्वान—(श्वश्रु-पांश लेना) पु०
सांभ, माण, दप ।

सं० श्वेत—(श्वश्रु=पीला शोभा)
पु० पीला, मरुद ।

सं० श्वेतद्वीप—(श्वश्रु+द्वीप) पु०
बैरुद, १ एक द्वीप का नाम ।

(प)

सं० प—पु० केश, हृदय, पु० भेद, विद्व ।

सं० पट—(पट) पु० छः ६ ।

सं० पटुजर्मि—(पुभुजा व पिपासा
व माणव्य मनमःपुनो । शोचमोही
शरीरस्य जगद्गुरु पटुजर्मिः) पाण्य
को भुंज, व प्यास व मनकी स्मृति
में शोक, मोह व शरीर को जरा
और मृग्य ये छःजर्मियां होती हैं ।

सं० पटुर्मि—(पट + उर्मि) पु०
ग्नान, भं-पा, जप, नर्तन, देवना
का पूजन आदि, (१ वेद पढ़ना,
२ दूसरे को पढ़ाना, ३ यज्ञ करना,
४ दूसरे को कराना, ५ दान देना,
और ६ दान लेना ये आक्षेप के
आक्षेप हैं) ।

सं० पटकोण—(पट + कोण) पु०

छःकोना में छः रूट कोण, २ वज्र ।

सं० पटपद—(पट + पद) पु० भीरा ।

सं० पटप्रयोग—? शान्ति, १ शशी-
करण, २ हस्तमन, ३ विद्वेषण, ४
वषाटन, ५ पारण ।

सं० पटसमोजन—(पट=छः, रस
=दवाद, भोजन=गाना) पु० पीठा,
गुहा, राता, बटुया, कसीना, और
सीता, इन छः रसों में मिनाहूया
गाना ।

सं० पटवदन } (पट=छः, वदन
पटानन } या आनन=मुँह)
पु० वाचिकव, महादेव का चेता ।

सं० पटवर्ग—पु० काम, क्रोध, मोह,
मोह, मद, मात्सर्य ।

सं० पटशास्त्र—(पट + शास्त्र) पु०
न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त,
सांख्य, और पातञ्जल, ये छः शास्त्र
इनको पटदर्शन भी कहते हैं (दर्शन
शब्दको देखो) ।

सं० पटु—(पट + उर्मि) पु० शरीर
के छः भाग, जैसे दो हाथ, दो पैर,
शिख और कर्ण, २ वेद के छः भंग,
(जैसे १ शिखा, २ कर्ण, ३ व्या-
करण, ४ निरुक्त, ५ उपोत्तिष, ६
छन्द, वेदांग शब्दको देखो) ।

सं० पटकुम्भि—(पट=छः, कुम्भी=पांश)
पु० भीरा, भ्रमर ।

सं० पण्ड—(पण + ड) कपजादि-
कोका समूह, सांकायिक ।

सं० पण्ड—पु० नपुंसक, हिमदा,
मुखमस ।

सं० पण्डि—(पण्ड=दः, पर-आगे ति-
प्रत्यय के आने से उसका अर्थ दश
गुना होता है) गु० साठ ।

सं० पण्ड—(पण्ड) गु० दहा ।

सं० पण्डि—(पण्ड) स्त्री० दड, दडी विधि,
पण्डिदेवी ।

सं० पौडश—(पड=दः, दश=दस)
गु० सोलह, १६ ।

सं० पौडशदान—(पौडश+दान)
पु० सोलह चीजों का दान, जैसे
(१ धरती, २ आसन, ३ पानी, ४
कपड़ा, ५ दीपक (या दीपक के
लिये तेल) ६ अनाज, ७ पान, ८
दूध, ९ सुगन्धित चीज, १० फूलों
की माला, ११ फल, १२ सेन,
१३ लड़ाऊँ, १४ गाय, १५ सोना,
१६ कपा या चाँदी ।

सं० पौडशभुजा—(पौडश=सोलह
भुजा=हाथ) स्त्री० सोलह हाथकी
दुर्गा, देवी की मूर्ति ।

सं० पौडशसंस्कार या कर्म (१
गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमन्त,
४ ज्ञानक्षम, ५ नामकरण, ६ नि-
ष्क्रमण, ७ अन्नवाशन, ८ चूदा-
कर्म, अर्थात् मुष्टन, ९ कर्णवेध,
१० उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत,
११ वेदारंभ, १२ सवावर्तेन अर्थात्
ब्रह्मचर्य, १३ विवाह, १४ गृहस्थाप-
१५ द्दिगमन, १६ वानप्रस्थ,

१७ महावाक्यपरिसमाप्ति, १८ सं-
न्यासविधि, १९ सर्वसंस्कार होय
विधि, २० मृतकर्म ।

सं० पण्डुपा—स्त्री० बह, पुत्रभार्या
जैसे “सुपेयं तव कल्याण” ।

(स)

सं० म—(सो=नाश करना) पु० कि-
पण, २ साँप, ३ शिव, ४ पत्थर,
भृगु, ५ समुद्र० साय, साहित, समेन
(जैसे समीह, जीवसहित) ६ व-
रावर, वरी, पकड़ी (जैसे सपर्य
पकड़ी पर्व का) ७ सागरन ।

सं० संक्षिप्त—अर्थ० कम की हुई, मुख्य-
तिरकी हुई ।

सं० संक्षेप—(सम्=साथ, क्षिप=कै-
कना) पु० सारभूत, सारभाग,
मुख्यतर ।

प्रा० संगत—(सं० संगति) स्त्री०
मेला, साथ सोहवत, २ वह ज-
गहं सित अपने पर्व की री-
रसम करते हैं ।

प्रा० संचना (सं० सञ्चयन, सम्-
मांचना) अचञ्छीतरह से, बि-
डकटाकरना) कि० अचञ्छीतरह से

सं० संज्ञा—(सम्=अच्छी तरह से
ज्ञा=जानना) स्त्री० इस्म, नाम, ची-
का नाम, २ बुद्धि, ३ चेतना,
गायत्री, ४ मूर्ध की ची ।

प्रा० संजोवना—(सं० संयोजन,
सम्, युज्=योजना) कि० सं०
नैवार करना ।

सं० संन्यासी—संन्यासीशब्दकोदेसो।

प्रा० संपत्—(सं० सम्पत्) स्त्री०
सम्पदा, धन, दौलत ।

प्रा० संभलना—कि० प्र० धंभना,
ठहरना, सहारापाना, लड़ा होना,
गिरने २ धंभनाना ।

प्रा० संभालना } (सं० सम्भारण
संभारना) सम्, धृ=पकड़-
ना) कि० सं० धांभना, पकड़ना,
सहारा देना, मदद देना, सहायता
देना ।

सं० संयम—(सम्=मर्यादा २ से,
यम्=रीकना) प्रा० पु० नियम,
प्रति के दिन दिननी भीतों के म्याने
पीने की रूकावट, इन्द्रियनिग्रह,
परहेज, बन्धन ।

सं० संयमी—पु० मुनि, इन्द्रियरोषक ।

सं० संयुक्त—(सम्=साथ युज्=मिल-
ना) पु० मिनाहुआ, लगाहुआ,
जुड़ाहुआ ।

सं० संयुग—(सम्=साथ, युज्=मिल-
ना) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम ।

सं० संयुत—(सम्, यु=मिलना) स्मृ०
मिनाहुआ, लगाहुआ ।

सं० संयोग—(सम्, युज्=मिलना)
पु० मेल, मिनाप, सम्बन्ध, २ दैव

योग, संयोग, इतिहासक ।

सं० संयोजित—स्मृ० मिनापागया ।

सं० संरम्भ—(सम्, रम्=होसना) पु०
कोप, आक्रोश, वेग ।

सं० संराधन—(सम्, राध=सेवाकरना)
प्रा० पु० सब प्रकार से सेवाकरना,
चिन्तन करना ।

सं० संराव—(सम् + क=बोलना) पु०
ध्वनि, शब्द ।

सं० संलग्न—(सम्, लग्=मिलना)
क० पु० मिलित, संयुक्त ।

सं० संलाप—(सम्, लग्=करना) प्रा०
पु० परस्पर कहना, बाह्यगुप्ततर्क
करना ।

सं० संवत्—(सम्, वय्=जाना) पु०
विक्रमादित्य राजाका चक्षायाहुआ
माल, वरस, मन् ।

सं० संवत्सर—(सम् + वत्सर) पु०
वरस, संवत्, साल, मन् ।

सं० संवाद—(सम्, वद्=करना) पु०
पात चील, चर्चा, वार्ता, कथा, संदे-
श=संदेश, समाचार ।

प्रा० संवारना—कि० सं० सजाना,
सुधारना, सिंगारना, नैवार करना ।

सं० संशय—(सम्, शो=सोना, पर
सम्=उपमर्ग के माथ आने से इस-
का अर्थ संदेह करना होजाना है)
पु० संदेह, शक ।

ने (जोकि ग्वाडियर का रहने वाला था) बनाई, इसमें ७०० दोहे प्रगभाषा में लिखे हैं ।

प्रा० सतहत्तर—(सं० सप्तसप्तति, सप्त=सात, सप्तनि=सत्तर) गु० सत्तर और सात ।

प्रा० सताना—(सं० सन्तोषन, सम्प=साथ, तप=तपाना) क्रि० सं० दुःखदेना, छेड़ना, सित्राना, तकलीफ देना ।

प्रा० सतानन्द—(सं० शतानन्द) पु० गीतम्, श्रुति का बेटा और जनक रामा का पुरोहित ।

सं० सती—(सत्) स्त्री० पतिप्रता स्त्री० पपीसा स्त्री, २ वह स्त्री जो अपने पति की लाश के साथ जल जाती है, ३ दत्त की बेटी और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञकुंड में गिर कर जल मरी और कहते हैं कि वही सती फिर हिमाचल के पर में पार्वती होकर जन्मी ।

प्रा० सतुआ—(सं० शत्रु वा सक्नु) सत्तु पु० भूमे अनाज का चुन, सातु ।

सं० सत्कर्म—(सत्=सच्चा या अच्छा कर्म=काम) पु० मेलाकाम, अच्छा काम, पुण्य, पवित्र काम, नेत्रकाम,

सच्चा काम ।

सं० सत्कार—(सत्=आदर, कृ=करना) पु० आदर, सम्मान, छातिर ।

सं० सत्क्रिया—(सत्=अच्छा, कृ=करना) स्त्री० सत्कार, सम्मान, पूजन, वचन काम ।

प्रा० सत्तर—(सं० सप्तति) गु० दश गुना सात, सात दहाई । [सीषा ।

सं० सत्तम—गु० बड़ा साधु, अति

सं० सत्र—(सत्=बल) पु० स्थान, यज्ञ, सदा दान, आच्छादन, दाना, अरण्य, कैतर, कपट, घन, गृह, सर, तालाब ।

सं० सत्रशाला—स्त्री० अश्वतलादि के देनेका स्थान, धर्मशाला ।

सं० सत्राजित—पु० श्रीकृष्ण का श्वशुर, सत्यभामा का पिता ।

सं० सत्रिन्—पु० दुरस्थ, यममान, दानी ।

प्रा० सत्तो—(अस=हीना) स्त्री० हीना विद्यमानता, २ बल, पराक्रम, जोर, ३ बलार्थ, उत्तमता ।

प्रा० सत्ताईस—(सं० सत्तैदशति) गु० बीस और सात ।

प्रा० सत्तानवे—(सं० सत्तनवति) गु० नवे और सात ।

प्रा० सत्तावन—(सं० सत्तवाशत्) गु० पचास और सात ।

प्रा० सत्तासी—(सं० सत्तासीति) गु०

अस्ती और सोन ।

सं० सत्त्व- (सत्) पु० मनोगुण,
२ आतवन, जोर, ३ प्रीति वस्तु,
४ सार, ५ माण्ड, ६ व्यवसाय, व्यव-
स, ७ हृदय, ८ साख्य, नेत्र ।

सं० सत्पुरुष- (सत्=सत्त्व, पुरुष=
आदमी) पु० साधु, सज्जन, भला
आदमी ।

सं० सत्य- (सत्) पु० सच, सीकरी,
सही, यथार्थ, निश्चय, २ मया,
स्वा, ईमान्दार, पु० सांघ, मचाई,
सचोद, २ सत्पुरुष, परलोपुग, ३
शय, ४ प्रमलोक ।

सं० सत्यता- (सत्) भा० स्त्री०
सचाई, सचोटी ।

सं० सत्यभामा- (सत्य=मच, भा
मा=कोपिनी स्त्री), स्त्री० धीहृष्य
की एकपत्नी और सप्तोक्तिकी देवी ।

सं० सत्ययुग- (सत्य + युग) पु०
पहला युग (युग शब्द को देखो) ।

सं० सत्यलोक- (सत्य + लोक) पु०
प्रमलोक, ठार का मानवा लोक ।

सं० सत्यवादी- (सत्य=प्रच, वादी
=बोलनेवाला) क० पु० सच
बोलनेवाला, रास्तवा ।

सं० सत्यव्रत- पु० सत्य=सच, व्रत,
सत्यवतिष्ठ, पु० जिगंक्रामा ।

सं० सत्यसन्ध- पु० सत्य=च.दी,
सादिक, सच्चा ।

सं० सत्यानाश- (सं० सत्य=मच,
नाश=वर्षादी) पु० नाश, विनाश,
वर्षादी ।

प्रा० सत्यानाशकृत्ना- स्त्री०
नष्ट करना, -पराकाद करना, -पराव
करना, बिगाड़ डालना ।

प्रा० सत्यानाशजाना- स्त्री०
सत्यानाशहोना- नष्ट हो-
ना, पराकाद होना, -पराव होना
बिगाड़ जाना ।

सं० सत्वर- (सत्=साध, वर=जुद्धी,
पु० जलद, चताचला, क्रि० वि०
शीघ्र, तुल्य, भट्टपट, जल्दी से ।

सं० सत्सङ्ग-पु० } (सत्=मच, सा,
सत्सङ्गति-स्त्री० } संग या संगति
साथ) अच्छी

संगत, भले आदमीका साथ अच्छी
सोहबत ।

सं० सदन- (सद्=जाना, या बैठना
जिस में) पु० घर, स्थान, जगह,
२ पानी ।

सं० सदनुमति- (सत् + अनुमति)
स्त्री० अच्छी सम्मति, अच्छी सचाइ ।

सं० सदय- (सत्=साध + दया=कृपा)
पु० दयालु, दयासहित, कोपल ।

सं० सदसत् (सत् + असत्) पु०
सच भूद, रासुदरोष ।

सं० सदा- क्रि० वि० निरन्तर, हमेशा,
निरन्तर, रोज रोज ।

मरा

मं० मराचार मनु - य चर । प्रा० मराना मं० मराना मं० मराना
 पु० मरानन यदे। उल्लापनम
 नेकचलन । मं० मरानन मं० मरानन मं० मरानन

मं० मरानन्द (मरा + नन्द) मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 मरागिव मरादेव. ० गु हपेश
 ममन्त । प्रा० मरान मं० मरान मं० मरान

मं० मराग्रत (मरा + ग्रत पु० मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 ग्याना जो भ्रमोंको मरा दिया जाय
 मं० मरागिव - मरा - गिव पु० मं० मराना मं० मराना मं० मराना

मं० मरागिव - मरा - गिव पु० मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 महादेव, गङ्गा, गिव, गङ्गा
 मं० मरागिव मं० मराना मं० मराना मं० मराना

मं० मरागिव } म=वाच, दृश : मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 मरागिव } मरान गु- वाच
 ममान, गुन्ध, मराम । मं० मराना मं० मराना मं० मराना

मं० मरागिव मरान - मरान, गति= मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 दृश । श्री० उल्लाप गति, मरान
 मोक्ष, निम्न, लुप्तकार, ० यदे
 नेकी, ३ मराना मरानि । मं० मराना मं० मराना मं० मराना

मं० मरागिव गु- म- पु० मराना मं० मराना मं० मराना
 मराना, वेपक
 मं० मरागिव गु० मरान, मरान । मं० मराना मं० मराना मं० मराना

मं० मरागिव गु० मरान, मरान । मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 मं० मरागिव (म-साध, दृश=चमकना) मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 मरान वि० मरान, मरान, उमादय,
 मरान, मरान । मं० मराना मं० मराना मं० मराना

मं० मरागिव (मं० मान) वि० मराना मं० मराना मं० मराना
 मराना, मराना मराना मराना, मराना
 मरान मे मराना मराना । मं० मराना मं० मराना मं० मराना

मं० मरागिव (म=माय, चर=पति) मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 श्री० मराना मराना मराना मराना
 मराना मराना मराना मराना

मं० मरागिव (म=माय, चर=पति) मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 श्री० मराना मराना मराना मराना
 मराना मराना मराना मराना

मं० मरागिव (म=माय, चर=पति) मं० मराना मं० मराना मं० मराना
 श्री० मराना मराना मराना मराना
 मराना मराना मराना मराना

प्रा० सनाह—(सं० सञ्ज्ञा, सम्=अ-
च्छी तरह से; नह=बोधना) पु०
बालर गिरह, कवच ।

प्रा० सनीचर—(सं० शनैश्चर) पु०
सातवां ग्रह, २ शनिचार । [भा ।

प्रा० सनीचरा—(सनीचर) पु० अभा-

प्रा० सनेह—(सं० स्नेह) पु० प्यार,
प्रीति, नेह, छोह, मोह, प्रेम ।

सं० सन्त—(सत्) पु० साधु, सत्पुरुष,
सज्जन, पर्मात्मा ।

सं० सन्तत—(सम्=साथ, तन्=कै-
ना) क्रि० वि० लगातार, निरन्तर,
सदा; निर, रमेण, पु० विस्तीर्ण,
फला हुआ ।

सं० संतति—(सम्=साथ, तन्=कै-
लना) स्त्री० लड़का बाला, बेटा
पोता, सन्तान, वंश ।

सं० सन्तप्त—(सम्=अच्छी तरह से
तप्त=वरना या लगाना) क्मे० पु०
तथाहुआ, आनन्द, यका हुआ; गर्भ,
२ दुःखी ।

सं० सन्तान—(सम्=साथ, तन्=कै-
ना) पु० लड़का बाला, वंश, कुटुम्ब ।

सं० सन्तापक—क० पु० दुःखदाता ।

सं० सन्ताप—(सम्=अच्छी तरह से
तप्त=वरना) पु० शोक, शोच, कि
म. चिन्ता, पीडा, दुःख ।

सं० सन्तुष्ट—(सम्=अच्छी तरह से,
तुप्त=वसत होना) क० पु० मसम,

तुप्त, इर्षित, मनभरा, सन्तोषके साथ ।

सं० सन्तुष्टि—(सम् + तुष्ट + ति)

भा० स्त्री० सन्तोष, मसमता, मस,
कनायत । [कर ।

सं० सन्तोषक—क० पु० तुष्टिकर, तुष्टि

सं० सन्तोष—(सम्=अच्छी भाँति से,
तुप्त=वसत होना) भा० पु० मस, तुष्टि,

आनन्द, सुख । [न्दित ।

सं० सन्तोषित—क० इर्षित, आन-

सं० सन्तोषी—(सन्तोष) क० पु०

मन्तोष रतनेशाना, सयबाला ।

सं० सन्धा—(सं० संस्था सम्=अच्छी
तरह से, स्था=ठहरना) स्त्री० पाठ,

सपक, पदना ।

सं० सन्दर्भ—(सम्=अच्छी तरह से,
दम्=वनाना) पु० रचना, मध्यम,

गुहना, इन्तिजाय, गुहार्थवकाश ।

सं० सन्दिग्ध—सम्=साथ, दिग्=
पदना) क० सन्देहयुक्त, जिसमें

सन्देह पाया जाय ।

सं० सन्देश—(सम्=साथ, दिग्=
देना) पु० संदेश, समाचार,

खबर, हवान ।

सं० सन्दिह—(सम्=साथ, दिग्=पद-
ना, या इष्टा करना) पु० शक,

संशय, प्रवर, शंका ।

सं० सन्दिहक—क० पु० शकी शकरी,
शंकायी, सन्दिही ।

मं० सन्दोह—(सम्, दुह=दुहना, पर
सम् उपासर्ग के साथ आने से इकट्ठा
होना अर्थात् हो जाता है) पु० समूह,
बहुन गिरोह, मनमुष्मा ।

सं० सन्ध—(सम् + धा=रखना) स्त्री०
पतिप्रा, पत्नीदा, स्थिति, गु० उपाविष्ट
बैठा हुआ, मिलित, युक्त ।

सं० संन्यास—(सम्=मरजो, धा=लेना,
धा=रखना) भा० पु० भेद लेना,
भोजन, अन्नपान, पत्नी, ये छोड़ना,
मिलाना, ३ युक्ति, ४ परामर्श, ४
कार्यवृत्ति, ६ आचरण ।

मं० मन्थि—(सम्=साध, धा=रखना)
स्त्री० मेन, मिठाव, व्याकरण में
हो अक्षरों का मिलान, २ पुनरु,
मेन करना, दो राजाओं के आगम
में मेन होना, ३ शरीर में दो हृद-
यों का होना, ४ में ३, ४ दुःख, वेद ।

मं० मन्थ्या—(सम्=मरजो, धा=लेना,
धा=रखना) स्त्री० साँक,
साँकहूँ, साँक, २ श्वेत, श्वेतकर,
कीर साँक इन तीन मन्थ की पूजा
जब ध्यान आदि ।

मं० मन्थ—(सम्=मरजो, धा=लेना)
गु० लगा हुआ, लगाव ।

प्रा० मन्त्रा—(मं० मन्त्रान्) स्त्री०
वित्त, दुःख, मरना ।

प्रा० मन्त्राय—(मं० मन्त्रान्) पु०
जो मन्त्र होता है ।

सं० सन्नाह—(सं० कवच, वस्त्र)

सं० सन्निधान—(सं० + निधान) पु०
समीप, निकट ।

सं० सन्निधि—(सं० समीप, निकट,
नजदीक, पास ।

सं० मन्त्रिपान—(सन्=साध, नि=
नीचे, पन्=गिरना) पु० एकरह
का रोग जो कफ, वात, और पित्त
के विगड़ने से होता है, सन्निपान,
त्रिदोष, सरसाम ।

मं० संन्यास—(सम्, नि, अस=फेंक
ना) पु० चौथा आश्रम, संन्यासी
का धर्म, संसारकी चीजों का त्याग ।

मं० संन्यासी—(संन्यास) पु० चौथा
आश्रमी जो संसार को छोड़ देता
है परमहंस ।

प्रा० सन्मान—(सं० सम्मान, सम्=
साध, मान=आदर) पु० आदर,
सम्मान ।

प्रा० सन्मुख—(सं० सम्मुख, सम्=
साध, या सादृश्य, मुख=मुख) गु०
सादृश्य, आगे, मध्यस्थ ।

मं० सपुत्र—(स=साध, पन्=गिरना,
या मरना) गु० सहायक, मार्ग,
२ पत्नीयता, पत्नी के साथ ।

मं० सपदि—(स=साध, पन्=गिरना)
स्त्री० वि० दुःख, मरना, मृति ।

प्रा० मरना—(मं० मरना) पु० नष्ट हो
जाना, दुःख देना, मरना, नष्ट हो
जाना, दुःख देना, मरना, नष्ट हो
जाना ।

देखने सुनने मन में चिन्ता करने हैं
इति गद्यालोकको सोनेमें देगना ।

सं० संपात्रव- (स + पत्रव) गु०
नये २ पत्रे दानों के साथ ।

प्रा० सपुत्र } (सं० सुपुत्र) पु०
सपुन } अथवा लघुका, सुखी-
न पेट, २ बेटे के साथ, पुत्राभिले ।

प्रा० सपोला } (सं० सर्पोल, सर्प
सपोलिया } = सर्प, पोत = बघा)
पु० सर्प का बघा ।

सं० सम- (सप = मिथना) गु० सात, ७ ।

सं० समचत्वारिंशत्- (सप्त + चत्वारि-
रिंशत्) गु० सात और चालीस,
सैंतालिस ।

सं० सममी- (सप्त) स्त्री० सप्तमी,
सातवीं तिथि । [सप्त ।

सं० सप्तदश- (सप्त + दश) गु०

सं० सप्तर्षि- (सप्त + ऋषि) पु० ?
करपय, २ शत्रि, ३ मरदान, ४ वि-
दवाभिष, ५ गौतम, ६ जमदग्नि,
७ बशिष्ठ ।

सं० समसागर- पु० सातसमुद्र, सात
अर्थात् लवण २ इडु, ३ दधि, ४
सौर अर्थात् दूध, ५ मधु, ६ मदि-
रा, ७ पुन ।

सं० सप्ताह- (सप्त = सात, अह्न = दिन)
पु० सात दिन, हफ्ता, अठवाहा ।

सं० सप्तमिति- (स + मति) गु०
प्यारसे, प्यारसरिव, प्यार के साथ ।

सं० सप्रेम- (स + प्रेम) गु० प्यार,
प्यार के साथ ।

सं० सफर-पु० } सफर, सफरी,
सफरी-स्त्री० } दुई ।

सं० सफल- (स + फल) पु० फल
सहित, सिद्ध, फल देनेवाला, कु-
साय, सार्थक, बाधपाव ।

प्रा० सव- (सं० सर्व) गु० सर्वना०
सादा, पूरा, समूचा, संपूर्ण, समस्त ।

सं० सवल- (स = साथी, वल = जोर
या सेना) गु० बलवान्, जोरदार,
सामर्थी, मौज, २ सेना के साथ ।

प्रा० सेरा } (सं० सुवेला, सु-
मुवेरा } अथवा, बेला = समय)
पु० और, चिहान, गौर, बहका,
मभाव, मातःशाल ।

सं० सभय- (स = साथ, भय = डर)
गु० डरा हुआ, डर के साथ, सुरे-
क, भीनियुक्त ।

सं० सभा- (स = साथ, भा = चयक-
ना) वि० स्त्री० सभाज, मंडली,
२ राजदरबार, दरबार, ३ पैचायत,
४ मजलिस, जलसह ।

सं० सभापति- (सभा + पति) पु०
सभा का मालिक, पीरमजलिस,
मेसीडेंट, चेयरमन ।

सं० सभासद- (सभा = सभाज, सद
= बैठना) क० पु० सभा में बैठने-
वाला, सभा का मेम्बर, दरबारी ।

सं० सभिक—क्र० पु० मजलिसी,
सभ्य, म्यम्बर ।

सं० सभ्य—(सभा) गु० सभा के
योग्य, चतुर, बुद्धिमान् ।

सं० सभित—(स + भीत) र्मन्डरा
हुआ, समय ।

सं० सम्—उपस० अच्छी तरह से,
भले प्रकार से, सुन्दरता से, मली
भांति से, २ साथ से, ३ बहुत, ४
सब तरह से, ५ पास, साम्हने, दशुद्ध ।

सं० सम्—गु० बराबर, तुल्य, समान,
सदृश, २ सब, पूरा, ३ साधु, ४
दो, चार, छः आदि की संख्या ।

सं० समक्ष—अण्य० संपीप गु० स-
म्मुख, परपक्ष, नेत्रमोचर, साम्हने ।

सं० समग्र—(सम्=सब तरह से, अग्र
=अगि या सप=सब, ग्रह=लेना)
गु० सब, सारा, पूरा, सम्पूर्ण ।

सं० समज्या—(सम्=सब, अज्ञ=
जाना) वि० स्त्री० समझ, २ कीर्ति ।

प्रा० समझ—स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, अ-
ज्ञान, वृद्ध, २ सम्मति, राय, विचार,
ध्यान ।

प्रा० समझना—क्रि० स० जानना,
बुझना, विचारना ।

सं० समता—(सप) भा० स्त्री० ब-
राबरी, तुल्यता, सादृश्य, मुताबिकत ।

सं० समदर्शी—(सम्=बराबर, दर्शी
देखनेवाला, दृष्ट=देखना) गु०

दोनों ओर बराबर देखनेवाला,
पक्षपात नहीं करनेवाला, पक्ष नहीं
करनेवाला, अपक्षपाती, वेतस्सुत्र ।

प्रा० समधन—(समधी) स्त्री० बेटे
की या बेटों की सास ।

प्रा० समधियाना—(समधी) पु०
समधी का घराना ।

प्रा० समधी—(सं० समधधी) पु०
बेटे का या बेटों का ससुर, सगा,
नातेदार । [चारों ओर ।

सं० समन्तात्—अण्य० सब, सर्वत्र,

सं० समन्वित—गु० संयुक्त, समेत,
सहित, साथ ।

सं० समवल—गु० बराबर चलवाना ।

सं० समय—(सम्=साथ, या सयनरफ
से, इण=जाना) पु० काल, वक्त,
वेला, सप्ता, २ अवसर, कुर्वत ।

सं० समर—(सम्=साथ, क=जाना)
पु० लड़ाई, युद्ध, रण ।

सं० समर्थ—(सम्=साथ, अर्थ=पन)
गु० बलवान्, योग्य, लायक ।

सं० समर्थन—(सम्=सब, अर्थन=
पोंगना, याचना) पु० प्रमाण करना,
ताईद करेना ।

सं० समर्थना—स्त्री० मिफारिश
करना ।

सं० समर्थीधिकारी—क्र० पु० शाकि-
य मजाज ।

प्रा० समर्पना—(सं० समर्पण, सम् + श्च + इ + अन, सम्=साप, अर्प=भेंट देना) क्रि० सं० देवताको भेंट देना, सौंपना, अर्पण करना ।

सं० समवाय—(सम् + यव + इण् =ना) पु० मिनाघट, घेला, इतिहासक, सम्बन्ध ।

सं० समस्त—(सम्=साप, अस=फेंकना, या होना) पु० मंच, मारा, सम्पूर्ण, पूरा, तथाप ।

सं० समस्या—(सम्, अस=फेंकना परसम्पन्नसर्गकेसाप अ नेने मिलना या संलेप होना अर्थ होता है, ग्री० इत्थोर या दोहे आदि संज्ञान और हिंदी इन्द्रोका एक पद जो उस छन्द को पूरा करने के लिये दिया जाता है, तर्ज, नरद, इगारा ।

प्रा० समा (सं० समथ) पु० समथ, समा (सं० समथ, १ दशा, अवस्था, ४ एक ताल, एक लय, एक रस, ५ गोमा, —समापचना, योन० राग धाना ।

प्रा० समाई (समाना) मा० स्त्री० समाव, फैलाव, पौड़ाई, मुनापग, २ सं० शास्त्र, मन्त्रोप, धीरज ।

मं० समाकुल—(सम्=मर बहार से, आकुल=दुःखान) पु० व्याकुल, दुःखी, परेशान ।

सं० समागम—(सम्=साप + आगम=माना) पु० आगमन, आना, अवाई, २ मिलना, मुलाकात, मिलाप, संयोग, यजमा, भीड़माह, घेला ।

सं० समाचार—(सम्=साप, आ=चारों ओर से, चर्=चलना) पु० । सन्देश, खबर, वृत्तान्त, हाल ।

सं० समाकर्मण—(सम् + आकर्मण, कृप=रोंचना) पु० सम्बन्ध, तहसील ।

सं० समाज—(सम्=साप, अश्=जाना) पु० सभा, सांघ, सम्मूह, भुंड ।

प्रा० समाजी—(सं० संपात्रीय) पु० संप्री, तरलची, जो नाचमें तपना बनाता है, २ सभासद ।

सं० समाधान—(सम्, आ, धा=रखना) पु० किसी शब्द अथवा दलील का ठीक उत्तर, दो आदमी जो किसी दान पर बंद करने हैं उनका निवेदा करना, शक, रुकप, करना, २ दमदिल सा, दारस, इस्तीमान, धीरज, शान्ति, परदेशर का ध्यान ।

सं० समाधि—(सम्, धा, धा=रखना) स्त्री० मरता और धन से ध्यान, योगाभ्यास, हवमद्व करना, इन्द्रियों को रोचना और मन को परदेशर के ध्यान में लगाना, २ बंद नगद नहा योगी संन्यासियों की आड़वेर ।

सं० सम्प्रति—क्रि० वि० इदानीं,
अब, अभी ।

सं० सम्प्रदान—(सम्=अच्छीतरह
से, प्र=करना, दा=देना) पु० दान
देना, व्याकरण में चौथा कारक,
प्रकृतलङ् ।

सं० सम्प्रदाय—(सम्, प्र + दा=देना)
स्त्री० परम्परा का धर्म, कुल धर्म,
परिपाटी, सम्प्रदायकदीप ।

सं० सम्प्रेषित—(सम् + प्र + इष्=जाना)
कर्म० पठया गया, छारि
ज हुआ, भेजा गया ।

सं० सम्बन्ध—(सम्=साथ, बन्ध=बाँधना)
पु० मेल, लगाव योग, नाता
रिश्ता, २ व्याकरण में छठा कारक
या विभक्ति ।

सं० सम्बन्धी—(सम्बन्ध) क० सम्बन्ध
रखनेवाला, सम्पत्ति, नातेदार,
रिश्तेदार, मुजाफ ।

सं० सम्बल—(सम्ब=जाना, या सम्=से, बल=भीना) पु० रक्षा स्वर्ग,
२ तौशाराह, मागव्यय, ३ पानी ।

सं० सम्बलित—(सम् + बल=जाना)
क० समेत, सहित, मये ।

सं० सम्बुद्ध—(सम् + बुध=समझना)
कर्म० समझाया गया ।

सं० सम्बोधक—(सम् + बुध=मतलाना)
क० पु० मतलानेवाला, मुनादी ।

सं० सम्बोधन—(सम्, बोधन=मतलाना,
बुध=जानना) पु० मतलाना-

ना, चिन्तना, साम्प्रदने करना, पुका-
रना, व्याकरण में आठवाँ कारक
या विभक्ति, इकीनदा ।

सं० सम्बोधित—कर्म० पुकारा गया,
जनाया गया, मुनादा ।

सं० सम्भव—(सम्, भू=होना) पु०
उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, २
कारण, ३ मिलना, गु० होनहार,
होने योग्य, २ उचित योग्य ।

सं० सम्भावना—(सम्, भू=होना)
स्त्री० संभव होना, इच्छा, चाह, ३
संदेह, ४ दुविधा, वह फैल जिससे
वर्तमान और भविष्य का कुछ जा-
ना जाय ।

सं० सम्भाषण—(सम्=अच्छीतरह
से, भाष=करना) पु० बोलचाल,
बात चीत ।

सं० सम्भोग—(सम् + भूह=जाना)
पु० हर्ष, सुख, मुरति, मैथुन,
शृङ्गार भेद ।

सं० सम्भ्रम—(सम्=साथ, भ्रम=धूमना)
पु० घबराहट, हड़बड़ी, वेग,
उत्तावली, धूमना, दह, २ आदर-
सन्मान, छातिरदारी ।

सं० सम्मत—(सम्=समन्तरह से, मन्=समझाना)
कर्म० अनुमति, स्वी-
कृत, राय के सुवाकिक ।

सं० सम्मति—(सम्=अच्छीभाँतिसे,
मन्=जानना) स्त्री० सलाह, वि-
चार, राय, २ चाह, इच्छा ।

सं०सम्मतिपत्र—पु० राजीनामा,
सुतरनामा ।

सं०सम्मार्जनी—(सम्, मृज्=माफ
करना) ए० स्त्री० बंदनी, भाङ्ग,
कुँची, घुँस, कुचरा ।

सं०सम्यक्—(सम्=अच्छी भाँति से
सम्य=ज्ञाना) क्रि० वि० अच्छी भाँति
से, भले प्रकार से, ठीक, योग्यता
से, २ सब तरफसे, सबभाँति से,
लिपिकात्र के माथ ।

सं०संरम्भ—पारम्भ, प्रारम्भ ।

सं०सम्राज् } (राज्ञ=शोभादेना)
सम्राट् } पु० सब भूमि का
मानिक, राजमूपपन्न कर्ता, सर्व-
भूषण, चक्रवर्तीराजा ।

प्रा०सयाना } (सं० सञ्चान) गु०
सियाना } सपञ्चयान, चतुर,
स्थाना } महीण, निरुण,
मुदिमान, पक्का ।

सं०सर—(सृ=माना) पु० सरोवर,
तानाव, भील, २ तीर, बाण, ३
पानी, जल ।

प्रा०सरकंडा—(सं० सरगाण्ड) पु०
नरकट, नरमल ।

प्रा०सरकना—(सं० सृ=माना)
क्रि० घ० इटना, टलना, चलना,
भागना, सिसटना ।

सं०सरघा—(सर=रस, इन्=माना
मारन) स्त्री० मयुक्ताञ्जका, शहदकी
पहणी । [गिरगिट ।

सं०सरट

प्रा०सरदा—पु० सर्वज्ञा ।

प्रा०सरन } (सं० शरय्,) पु०
सरना } आसरे की जगह, ब-
चाव की जगह, बचाव, पनाह ।

प्रा०सरना—क्रि० अ० बनना,
चलना, निकलना, पूरा होना,
सड़ना ।

प्रा०सरपट—स्त्री० बगडूट दौड़,
घोड़े की चढ़ी दौड़ ।

प्रा०सरपटफेंकना—बोल० घोड़ेको
बगडूट दौड़ाना ।

प्रा०सरवरि } स्त्री० बराबरी ।
सरवरि }

सं०सरयु } (सृ=माना) स्त्री०
सरयु } एकनदी जो अयोध्या
के पास बहती है और उससे या-
मरा, यमरा, देविहा और देवा भी
करते हैं ।

सं०सरल—(सृ=माना) गु० सीधा,
सोझा, २ मधुर, मिन्दार, यर्षा-
स्वा, ३ भीला, जो घल काट न
जानता हो, निरुपट, सीधा, सादा,
पु० एक पेड़ का नाम, जिसकी
सरो करते हैं ।

प्रा०सरवर—(सं० सरोवर) पु०
तान, तनाव, भील, गीबरा, नानाव ।

सं०साम्म—(स=माना)

प्रा०सरस } (सं० श्रेयस्) गु०
सरसा } श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत
अच्छा, २ अधिक, बहुत ।

सं०सरस—(सा=साग, रस=स्वाद,
या पानी) गु० रसीला, रसवाला,
पु० सरोवर ।

प्रा०सरसाई—(सरस) भा० स्त्री०
अधिकारी, बहुतायत, कमरन, उत्तमपना ।

सं०सरसिज—(सरसि=जलोचन में
जन्म=पैदाहोना) पु० कमल, कुंवल ।

सं०सरसीरुह—(सरसी=जलोचन, रुह
=पैदाहोना) पु० कमल, पुष्प, कुंवल ।

प्रा०सरसौ—(सं० सरस, सं० ज्ञान)
पु० राई के ऐसी चीज ।

सं०सरस्वती—(सरस्=पानी, वती
=वाली, अथवा स=साध, रस=
स्वाद, या पानी, वती=वाली)
स्त्री० एक नदी का नाम, २ बाणी,
धोली, राग और विद्या गुणआदि
की देवी, मागीरवी, शारदा,
भारती, वाग्देवता ।

प्रा०सराप—(सं० शप) पु० शप,
फिटकार, दुराशय, बदहूँस ।

प्रा०सरापना—(सं० शपन) क्रि०
स० सराप देना, कोसना, बद-
हूँस देना ।

प्रा०सरावक—(सं० श्रावक) पु०
जैनी, जैन धर्म को मानने वाला ।

प्रा०सराह—स्त्री०, बढ़ाई, तारीफ,

स्तुति, प्रशंसा ।

प्रा०सराहना—क्रि०स० बढ़ाई क-
रना, स्तुति करना, तारीफ करना ।

सं०सरित् } (सृ=जाना, बहना)
सरिता } स्त्री० नदी, दरिया ।

सं०सरित्पति—पु० समुद्र ।

सं०सग्निमुन—पु० मंगापुत्र, भीष्म
पितामह, २ घाटिया ।

प्रा०सरिम } (सं० सदृश या सदृक्)
मरीखा } गु० बराबर, समान ।

सं०मरीमृष—पु० सर्प, विच्छा ।

सं०सरुज—(स=सहिन, रुज=रोग)
गु० रोगी, बीमार, मरीज ।

सं०सरूप—(स=बराबर, रूप=ढोल)
गु० बराबर, समान ।

प्रा०सरूप—स्वरूप शब्दको देखो ।

प्रा०सरेखा—(सं० श्लेषा) स्त्री०
नवां नक्षत्र ।

प्रा०सरेश—(सरस) पु० एक
लसलसी, चीज जिससे लकड़ीआदि
की चीजें जोड़ते हैं सींग, और खुर
के झीलन से बनता है ।

सं०सरोज—(सरस्=तालाब, जन्म=
पैदाहोना) पु० कमल, कुंवल, पद्म ।

सं०सरोजभव—(सरोज=कमल,
भू=जन्मना) पु० ब्रह्मा ।

प्रा०सरोता—पु० पु० सुपारी का-
टने का औजार ।

सं० सरोरुह—(सरस=तालाव, रुह=
पैदा होना) पु० कपल, कैवल, पद्म।

सं० सरोवर—(सरस=तालाव, वर
=बड़ा) पु० बड़ा तालाव, सरवर
भील । [कोपित, गुस्से में ।

सं० सरोप—(स + रोप) गु० क्रोषित,

प्रा० सरोकरे—क्रि० स० दण्डकरना,
कूदना, कला बरन, डरकना,
सुभक्ता ।

सं० सर्ग—(सृज=पैदा होना, या क्षो-
ड़ना) पु० उत्पत्ति, सृष्टि, २ क्षोड़ना, ३
निरवय, ४ अध्याय, वाच, च्यपदर,
स्वभाव ।

प्रा० सर्गुण—(सं० सगुण अथवा सर्व
गुण) मु० सब गुणों समेत,
२ सगुण ब्रह्म ।

सं० सज्जक—(सृज + अक, सृज=
पैदाकरना, स्थापना) क० स्थायी,
उत्पत्ति कारक, २ शाब्दवृत्त ।

सं० सर्प—(सृष्ट=जाना) पु० साँप, नागा

सं० सर्पराज—(सर्प + राजा) पु० साँपों
का राजा, शेषती, २ बामुहू ।

सं० सर्पिष—(सृष्ट + ष) पु० षी, घृत,
रोगनर्तक ।

सं० सर्व—(सर्व या सृ=जाना) गु०
सर्व, सारा, सकल, समस्त, पु०
शिव, विष्णु ।

सं० सर्वग—(सर्व=सब जगह, गम=
जाना) गु० सब जगह जाने वाला,

सब में जाने वाला, सब में फैलने
वाला, सर्वव्यापी, पु० शिव, २
परमेश्वर, ३ पानी, ४ इवा, ५
आत्मा, जीव ।

सं० सर्वज्ञ—(सर्व=सब, ज्ञा=जानना)
क० सब जानने वाला, पु० परमेश्वर,
२ शिव ।

सं० सर्वतोभद्र—पु० अने में प्रधान
देवता का आसन, सिंहासन विशेष
का रथ, मण्डल विशेष ।

सं० सर्वत्र—(सर्व=सब, त्र=जगह अथ
में प्रत्यय) क्रि० वि० सब जगह,
सब ठीर, सब स्थान में ।

सं० सर्वथा—(सर्व=सब, था=प्रकार
अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सब प्रकार
से सब भाँति से सब तरह से, सब
रीतिसे, २ निश्चय करके, निस्सन्देह,
विनयक, सबपुत्र, अवश्य ।

सं० सर्वदमन—(सर्व=सब, दम्=द
वाना) पु० दुष्पन्तका पुत्र, भरतदूत ।

सं० सर्वदा—(सर्व=सब, दा=समय
अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सदा, सब
समय में, निरन्तर, दिन दिन ।

सं० सर्वनाम—(सर्व + नाम) पु० वह
शब्द जो नाम के बदले में बोला-
जाय, जैसे मैं, तू, वह, जमीर ।

सं० सर्वभूत—पु० सब प्राणी, सब
पशुपक्ष, सर्वजन ।

सं० सर्वमङ्गला—(सर्वी) पार्वती

सं० सर्वरस-पु० राधा, धूर, गन्ना ।

प्रा० सर्वस } (सं० सर्वरस सर्व वसु
सर्वसु } सर्व=सर्व स्व वा वसु
=प्रा०) पु० सब धन, सब सम्पदा.

सब चीज, सब कुछ, कुन यश ।

सं० सर्वेश } (सर्व=सर्व, ईश या ई
सर्वेश्वर } श्वर=मानिक) पु०
सबका मालिक, परमेश्वर, विष्णु,
शिव, सब का ईश्वर ।

सं० सर्वोपरि-(सर्व+उपरि) पु०
सब से बढ़ा ।

प्रा० सर्वगृह-श्री० सुप्रताप ।

सं० सलज्ज-(स=साथ, लज्जा=
लान्) पु० लज्जान्, शर्मीला,
लज्जावान् ।

सं० सलम-पु० पंथा, दिहो, दीड़ी ।

प्रा० सलाई-(सं० सनाका) श्री०
पतले तारका टुकड़ा जिसमें आंग
में सुपा दाने हैं, और सलाई
उप लोहे के पतले तार के टुकड़े
को भी कहते हैं जिसको आंग
में सूख लाने के अर्थ अने बेग
हो आंगी में दाने हैं जिस में
आंग फूटकर दाना हो जाता है,
२ सुगन्ध केमल ।

सं० सलिल-(सल=जल) पु०
जल, जल, जल, आग, २ आ-
ग, महल ।

प्रा० सलूना } (सं० सलवण, सं
सलोना } =साथ लवण=नि-
मक) पु० निमकीय,
नीम सहित, २ सुस्वाद, मजेदार,
रोचक, स्वादिष्ट, ३ सुन्दर, साबता-
सुहावना, सुवसूरत ।

प्रा० सलूनो-(सं० भावणी) श्री०
राक्षीपूनी, सावनकी पूनी ।

प्रा० सल्ल-पु० जूना सीनेका चाप ।

सं० सवर्ण-पु० समानवर्ण, एकजाति
वाले, मतातीय, समजिन्स ।

प्रा० सवा-(सं० सवाद-स=साथ,
पाद=नीचा हिस्सा) पु० एक
और चौथाई, २५ ।

प्रा० सवाई (सवा) पु० जेपु के
गजाओं की पदवी, पु० सवा,
एक और चौथाई ।

प्रा० सवांग } (सं० स्वाङ्ग, स्व=
स्वाङ्ग } अना, अङ्ग=शरीर,
अर्थ अने अने शरीर को और तार
से बनाना) पु० भेड़नी, नकल
बनाना, वेपदलना, दोलना, तमाशा

प्रा० सवांगलाना } दोलना
स्वाङ्गलाना } ल बनाना
वेपदलना ।

प्रा० सवाद-(सं० स्वाद) पु० रस
मत्त, लज्जत, २ सुगन्ध ।

प्रा० सवाया } (सवा) पु० स
मवेया } और चौथाई, सवा

सनाका पहाड़ा सवेया । [संख्या ।

सं० सविता—पु० सूर्य, वायव्य की

सं० सव्य—(स-वेदा होना) पु०

वर्षा, दक्षिण, प्रतिकूल, विपणु ।

सं० सव्यसाचिन्—पु० अर्जुन,

पाण्डुपुत्र ।

सं० सदाह—(स=साय, शब्द=हरषा

सन्दर्भ) पु० दराहुमा, मगध,

जिसमें सन्दर्भ हो ।

प्रा० सस्ता—पु० सौधा, मन्दा, सन्तो ।

प्रा० सस्ताई—मा० श्री० सौचाई,

अर्जुनी ।

प्रा० ससा—(सं० शश) पु० शशो,

प्रा० समुर—(सं० शश) पु० पति

का या श्री का या ।

सं० सह—(सह=सहना) अर्थ०

साय, सहित, भोग, ममेत, २. वर-

वर, एकरी, बरी । [मदायनः ।

सं० सहकार—पु० सुगन्धि काय,

सं० सहगामिनी—(सह=साय, गा-

मिनी जानेवाली, गम = जाना)

श्री० मनी, अर्जुन पति के साथ

जलनेवाली श्री ।

सं० सहवर—(सह=साय वर=रत्न-

ना) पु० शश, शमरी ।

सं० सहवर्गी—(सह=साय वर्गी=व-

लनेवाली, वर = चलना) श्री०

साय रहनेवाली, सायनी, मंजिनी,

सरेली, श्री, पत्नी, अर्जुनी आदि ।

सं० सहज—(सह=साय, जन्म=पैदा

होना) पु० जो माएरी पैदा हो,

स्वाभाविक, जो स्वभावही से पैदा

हो, २. सुगम, आमान, मजल ।

सं० सहदेव—(सह=साय, दिव=ले-

लना, या चमकना) पु० पांचपाँदवाँ

में सबसे छोटा जो पाण्डु राजा की

दूसरी रानी पाद्री का बेटा है ।

सं० सहन—(सह=सहन) पु० सहनी,

वर्धन, परिष्कार, प्रमत्तारी, क्षमा

पु० सहनेवाला, मन्त्री, सहनहार ।

प्रा० सहना—(सं० सहन) कि० सं०

भोगना, बडाना, पोना, सुगमना,

सन्तोषकरना ।

प्रा० सहनाई—(सं० सहनाई) श्री०

पाँचवी के पैदा एक यात्रा जिस

को मुर्ती भी कहते हैं ।

प्रा० महमना—(का० सहित में पना

है जिसका अर्थ हर है) कि० अ०

हरना पहरना ।

सं० सहमरण—(सह=साय, मरण=

मरना) पु० पति की साय के साथ

जलना, मनी होना । [इमर ।

सं० सहयोगी—पु० साथी, संगती,

प्रा० सहयना } कि० अ० सह-

सहिगना } लाना, चुनचुना-

ना, धार २. चलना ।

सं० सहवास—(सह=साय, वस=र-

हना) पु० पड़ोस, एकत्रवास ।

सं० सहवासी—क० पु० पड़ोसी,
इपसाया ।

सं० सहसा—(सह=साथ, सो=नाश
करना या सह=सहना) क्रि० वि०
भट्टाद, बिना विचारे, पकाएकी,
चतावली से, दफ़्फ़तन ।

सं० सहस्र } गु० एक हजार, दश
प्रा० सहस्र } सौ, १००० ।

सं० सहस्रनयन } (सहस्र=हजार,
सहस्रनेत्र } नयन वा नेत्र,
आंख) पु० देवताओं का राजा इन्द्र
जिसके हजार आंखें हैं ।

सं० सहस्रपाद—पु० विष्णु, सूर्य ।

सं० सहस्रबाहु } (सहस्र=हजार,
प्रा० सहस्रबाहु } बाहु=भुजा) पु०

एक रामा का नाम जिसके हजार
हाथ थे जिसको परशुरामजी ने मारा ।

प्रा० सहसांखी—(सं० सहस्राक्ष)
पु० इन्द्र, देवताओं का राजा,
२ सहस्राक्षी, गवर्हों के साथ,
मये गवाह ।

प्रा० सहसानन—(सं० सहसानन,
सहस्र=हजार, आनन=मुँह) पु० शेष
नाग जिसके हजार मुँह हैं ।

सं० सहस्राक्ष—(सहस्र=हजार, अक्ष
=आंख, पु० इन्द्र, २ विष्णु, ईश्वर,
गु० हजार आंखवाला ।

प्रा० सहार्ई—(सं० सहाय) स्त्री० सहा-
यता, मदद, गु० मदद करनेवाला ।

सं० सहानुभूति—स्त्री० अनुवेदना, इप
दर्दी, दुःख मुग का साथी होना ।

सं० सहाय—(सह=साथ, इण्=जा-
ना) पु० मदद, सहाय, सहाई,
अनुकूल, क० पु० सहायक, मददगार,
मदद करनेवाला ।

सं० सहायक—(सह=साथ, इण्=
जाना) क० पु० मदद देनेवाला, मदद
गार, रक्षक, उपकार करनेवाला ।

सं० सहायता—(सह=साथ, इण्=
जाना) स्त्री० सहाय, मदद, सहाय ।

प्रा० सहारा—(सं० सहायता) पु०
मदद, सहायता, आसरा ।

प्रा० सहित—(सह=साथ, इण्=जाना,
अथवा सह=सहना) निरप सं० साथ,
संग, समेत, संयुक्त, मेल ।

सं० सहिदानी—स्त्री० निशानी, चिह्न ।

सं० सहिष्णु—(सह+इष्णु, सह=
सहना) क० पु० सहनशील, क्षमा-
वान्, धरदास्ती ।

प्रा० सही—(अरबी सहीह) क्रि०
वि० सच, चहुत अच्छा, हाँ, निश्चय ।

प्रा० सहेजना—क्रि० स० सौंप
देना, सिपुर्देकरना, जौबना, सँतन,
इकट्ठा करना, पटोरना ।

प्रा० सहेली—(स=साथ, आली=
सखी) स्त्री० साथ रहनेवाली,
सखी, सजनी ।

सं० सहोदर—(सह=एकही, उदर

पेट, जो एंकीरी पेटसे पैदा हो)
 पु० एकरी पासे पैदाहुआ, भाई,
 -सगा-भाई ।

सं० सह्य—(सह=सहना) स्त्री० स-
 -हने-योग्य, जो सहजाय-।

प्रा० सा—(सं० समान, या सहश) स्त्री०

परासी को जलानेवाला, अक्कप,
 (जैसे तुमसा) २ कुछ, कुछेक, थोड़ा,

(जैसे कालासा=कुछेक काला) ३

कभी २ इसका अर्थ कुछ नहीं दि-

ताई देता है पर कहीं कहीं जिस

शब्द के साथ लगाया जाता है उ-

सके अर्थ में अधिकश जलता है

(जैसे 'बहुत सा') ।

० साईं—(सं० स्वाधी) पु० या-

लिक, नाथ, स्वाधी, २ ईश्वर, पर-

मेश्वर, मधु, ३ फकीर ।

० साईं—पु० हवा के धीरे धीरे

खलने का शब्द ।

० सांकर } (सं० शृङ्गता) स्त्री०

सिकली, सांकरन, २

सांकरी } कपरी, ३ (सं० स-

त्रीय) सिकड़ीगनी, नोका, पाटा,

कठिनता, दुस्त, भोफट, ४ गु०

सिकड़ा, संकेत, संग ।

॥ साकल—(सं० शृङ्गला) स्त्री०

सिकली, सांकरली ।

॥ सांखू—पु० पुनः संग, २ एक

तरंग की लकड़ी ।

प्रा० सांग } (सं० शंकु, या शक्ति)

सांगी } स्त्री० बर्बा, सेल ।

प्रा० सांग—संग शब्द को दोता ।

प्रा० सांच—(सं० सत्य) स्त्री० ॥

चाई, सुवाच, सत्य, २ गु० ठीक,

सही, सच ।

प्रा० सांचा—पु० मिट्टी की एक चीज

जिसमें कोई चीज ढाली जाती है

या इसका रंग बनाया जाता है ।

प्रा० सांफ—(सं० सम्पा) स्त्री०

शाम, सम्पा, सांफाल ।

प्रा० सांफा } (सं० सम्पा) स्त्री०

सांफा } गोबर की मूरतें जिन-

सांफा } को लकड़के लकड़ियों

आखिबन के कृष्णपत्र में भीतां पर

बनाने हैं ।

प्रा० साड } (सं० पपड) पु० पैत ।

साड } (सं० पपड) पु० पैत ।

प्रा० सांडनी—स्त्री० ऊँची, सांडनी-

सब-र, ऊँट पर चढ़नेवाला ।

प्रा० सांडा—पु० एकमानवर जो जि-

पकली सा होता है और कहते हैं कि

उसके नेत्र में बहुत जोर होता है ।

प्रा० सांप—(सं० सर्प) पु०, स्त्री,

नाग, भुजंग ।

प्रा० सांभर—(सं० शाकम्भरी) पु०

एक-शहर जो जैपुर और जोधपुर

के मध्य में है और वहां एक भी-

लियां सर है जिसमें बहुत

लियां सर है जिसमें बहुत

निपट पैदा होता है, और उसके पास एक पहाड़ पर शकम्भरी देवीका मन्दिर है ।

प्रा० सांवला—(सं० रयामल) गु० कुब्जेक काला, रयामवर्ण ।

प्रा० सांस—(सं० रवास) पु० स्त्री० दम, प्राण ।

प्रा० सांसउलटीलेना—बोल० हांप-ना दम नाकमें आना (जैसे मरने के समय में होता है) ।

प्रा० सांसना—क्रि० स० डाटना, धमकाना, ताड़ना ।

प्रा० सांसभरना—बोल० आह भरना, छम्बी सांस लेना, ठंडी सांस लेना, पड़तावा करना ।

प्रा० सांसरुकना—बोल० दमे बन्द होना, गला घुटना ।

प्रा० सांसरोकना—बोल० गलाघोट-ना, दम बन्द करना, गला दबना ।

प्रा० सांसा—(सं० संशय) पु० सन्देह, शंका, डर, चिन्ता ।

सं० सांसारिक—(संसार) गु० संसारवा, संसारी, दुनियावा ।

सं० साकं } अव्य० सट, साथ ।
साकम् }

प्रा० साकवनिक—(सं० शकवणि-क) पु० साग बेचनेवाला, कुम्हड़ा ।

प्रा० साका—(सं० शाक) पु० संवत् ।

प्रा० साकाकरना—बोल० नया सं-

वत् चलाना, बहादुरी के काम करते नाभी होना ।

प्रा० साकेवंध—बोल० वह राजा जो नया संवत् जारी करता है ।

सं० साकार—(स + आकार) गु० आकार सहित, मूर्तिमान्, जिस की मूर्त हो ।

सं० साक्षात्—(स = साथ, या साम्हने, अक्षि = मांग) क्रि० वि० साम्हने, आँखों के आगे, मध्यक्ष, प्रकट, प्रसिद्ध, २ गु० आप, खुद, ३ बराबर, समान ।

सं० साक्षी—(स = साथ, या साम्हने, अक्षि = आँख) गु० गवाह, जिसने अपनी आँखों से देखा हो, साखी, शाहिद, २ स्त्री० गवाही, साथ, शाहिदी ।

प्रा० साख—(सं० साक्ष, साक्षी) स्त्री० गवाही, शाहिदी, २ यश, धाक, कीर्ति, नाम, भरोसा, ३ (सं० शाखा) श्रुत, फल, अनाज बाटनेका समय ।

प्रा० साखी—(सं० साक्षी) स्त्री० गवाही, साथ २ गु० गवाह, शाहिद ।

प्रा० साग—(सं० शाक) पु० हरी तरकारी, भाजी ।

प्रा० सागपात—बोल० तरकारी ।

सं० सागर—(सगर एक राजा का नाम) पु० समुद्र, समन्दर, —हिन्द

मान-समुद्र मानते हैं (१ निमक का, २ दूध का, ३ घीका, ४ दही का, ५ शराब का, ६ ऊख के रस का, ७ शहद का) ।

प्रा० सागू—पु० सागूदाना जो बहुत हलका होता है इस लिये बीमार को बहुत बार दूध में या पानी में पकाकर खिलाने हैं ।

सं० सागून—पु० एबनरहकीजबड़ी ।

सं० सांख्य—(संख्या, सम=अच्छी तरह से, खपा=वसिष्ठ होना) गु० संख्या का, पु० कपिलमुनि का बनाया हुआ एक दर्शनशास्त्र, नववराहमर्षिः ।

प्रा० साज—(सं० सज्ज, समज=जाना) पु० समान, नैपारी, सरंजाम ।

प्रा० साजन—(सं० सज्जन) पु० सज्जन, प्यारा, पति ।

प्रा० साजना सं० सज्जन, समज्ज जाना । प्रि० सः नैपार कहना, सज नः, भेदना, पहनना ।

प्रा० साभ्र सं० साहस्य, महाय सं० साह साह=महान् । पु० हि सं० साहस्य, साधना ।

प्रा० साभी साका) पु० साया, हिमेश्वर, ग्रीष्म, मंगी । [ध्वं ।

सं० साधोष—गु० बिहट पदार्थ, मग-

प्रा० साठ—(सं० पठि गु० छः गु-ना दस, ६० ।

प्रा० साठी—(साठ) पु० एक तरह के चावल जो परसात के दिनों में पैदा होते हैं और खाने के ६० दिन पीछे पक आते हैं उस लिये साठी कहलाते हैं ।

प्रा० साड़ी—(सं० साठी) री० नु-गाइयाँ के ओढ़ने का कपड़ा ।

प्रा० साद—(सं० श्याली बोदा, रयाली अपनी मुगाई की पहन, बोदा=पति, बह=जेजाना) पु० सालीका पति, हमजुल्क ।

प्रा० सादं—(सं० सार्द स=साथ, अर्ध आधा, गु० आधा के साथ, (जेमे सादे तीन=तीन और आधा) ।

प्रा० मान—(सं० सत) गु० चार और तीन, ७ -मान पांच करना, बोलः दुविधा में होना,--सान समुद्र=उद गेलवा नाम ।

प्रा० मान्दिक—(सं० सवद=मने गुगु) गु० मनेगुगी, साधु, मीथा, मद्या, मरल ।

प्रा० माथ—(सं० माथं, पगरा सह) सह, मोहन, सवेर, २ पु० गंग, गंग-वि, मोहन ।

प्रा० माथेदना—शेनः दिनना, मेन गनका, गदिल होना ।

प्रा० माथाला—गु० साया, सही ।

प्रा० माथगे—ग्री० पथीका बिहीनः-बट्टी, कामवी ।

प्रा० साधिन—(सी० संगिनी, सहेली, मनी ।

प्रा० सार्थी—(साय) गु० सही, बेली।
पिलायी, मित्र, दोस्त ।

प्रा० साध } (सं० धदा) सी० इच्छा,
साध } चाह, अभिलाषा ।

मं० सादर—(स=साय, आदर=स-
मान) क्रि० वि० आदर में समान
से, सानिरी हो ।

मं० सादृश्य—(रहण) भा० पु०
बापरी, समानता, तुल्यता ।

प्रा० साधु—(सं० साधु) पु० सन्न,
मन्यपुरुष, सज्जन, भला आदमी,
२ वैरागी ।

मं० साधक—(साध+कर्, साध=
सिद्ध करना, पूरा करना) क० पु०
साधनेवाला, अभ्यास करनेवाला,
मन्य साधनेवाला, तपस्वी, २ बद-
द्वार ।

मं० साधन—(साध=सिद्ध करना,
पूरा करना) भा० पु० उपाय, वस्तु,
साधनसिद्ध करनेकी वस्तु, २ अभ्या-
स, ३ व्याकरण में कर्णकारक ।

प्रा० साधना—(मं० साधन) क्रि० म०
सिद्ध करना, पूरा करना, लक्ष्यप्राप्त करना,
साधन करना, वचना, दीक्षा आदि
करना, २ अभ्यास करना, कर्णकार-
कालना, कर्ण साधना, धीरता ।

मं० साधनीय—(साध+नीय)

मर्म० सिद्ध करने योग्य, पूरा करने
लायक, निष्पाद्य ।

सं० साधारण—(स=साय, धारण=
रखना) गु० सामान्य, संज्ञक, २
वरावर, समान, आम ।

सं० साधारणधर्म—पु० आहिंसा-
न्यमस्तेयशौचमिन्द्रियनिग्रहः । दमस्त-
माजनेच दानं धर्म साधारणविदुः ।
आहिंसा, २ सत्य, ३ अस्तेय चोरी न
करना, ४ शौच, पवित्र रहना, ५
इन्द्रियों को रोकना, ६ दम, मनको
रोकना, ७ दान, ८ आर्जय, कीमत्ता,
९ दान यह साधारण धर्म हैं ।

मं० साधित—मं० निष्पादित, सिद्ध
किया गया, पूरा किया गया ।

सं० साधु—(साध=सिद्ध करना, पूरा
करना) गु० जो शास्त्रविहित धर्मोंको
करना है या जो परके बांधेको सिद्ध
करता है वह साधु है । सन्न, उत्तमजन,
सत्य पुरुष, सज्जन, सीपा, सगा, २
पु० साध, वैरागी, भला आदमी ।

सं० साध्य—(साध=पूरा करना) मं०
पूरा होने योग्य, सिद्ध होने के योग्य
जो होसके, २ सुगम, सहज, आसान,
३ चंगा होने के योग्य, जिसका
इलाज होसके, ४ पु० जो बात सिद्ध
ही साध, जो बात पक्की टहराई जाय ।

प्रा० सान—(सं० साण, सान् या शी-
रीमा करना) सी० सिद्धी, पदरी,
लोहे के इयियारों पर चार चढ़ाने

का पत्थर, एक चक्राकार यन्त्र ।

सं० सानन्द—(स + आनन्द) पु०

आनन्द के साथ, हर्षित, खुश ।

सं० सानुकूल—(स + अनुकूल) पु०

कृपालु, दयालु, सहायक, मित्रवान ।

प्रा० सान्ना—(सं० सन्धान) कि०स०

मिलाना, भेदना, २ (सं० शानन,

शान्=नीला करना) नीला करना,

सीला करना, लेज करना, शान

लगाना ।

प्रा० सावर } (सं० शम्बर, या शा-

सावर } म्बर, शम्भू=भाना)

पु० एक तरहका बारहसोंगा, २

बारहसोंगा का चपड़ा ।

सं० साम—(सो=नाश करना पापों

का) पु० तीसरा वेद, जिसकी श्रुति

गाई जाती है ।

सं० सामग्री—(सामग्र=सब) स्त्री०

सामा, सामान, मसबाब, चीजबस्तु ।

सं० सामन्त—पु० वीर, बहादुर, परा-

क्रमी, योद्धा, मज, २ उपराज, ज-

मीन्दाह, एक लाख रुपये साल की

आमदनी जिसको है ।

सं० सामयिक—पु० समय पर, का-

लोचित, अवसर की, बेरापर की ।

सं० सामर्थ्य } (समर्थ) स्त्री० बल, शक्ति,

प्रा० सामर्थ्य } पराक्रम, योग्यता ।

प्रा० सामर्थी—(सं० समर्थ) क०

बलवान, पराक्रमी, यत्नापी, योग्य ।

प्रा० सामा—(सं०=सामग्री) पु०

झों नाना प्रकार के भोजन, सामा-

न, सामग्री ।

सं० सामाजिक—पु० समाज, सभ्य-

क्रा० सामान—(सामान) पु० मसबाब,

अडाला, सामा, सामग्री ।

सं० सामान्य—(समान) पु० मध्यम,

साधारण, चलनसार, चलनैक,

मचलित, आम ।

सं० सामान्यतः—पु० साधारण से

आमनार पर ।

सं० सामान्या—(सामान्य) स्त्री०

साधारण नायिका, धर्म के लालच

से बराबे आदमी के पास जाने

वाली वेश्या, व्यभिचारीणी, सा-

मान्या, नायिका तीन तरह की है,

(१ अपसंभोगदुःखिता, २ अक्रो-

क्तिवर्तिता, ३ मान्यती) ।

सं० सामीप्य—(समीप) भा० पु०

समीपता, समीपी, नजदीकी, निक-

टना, बड़ोस ।

सं० सामुद्रिक—(स=साय, मुद्रा=

चिह्न) भा० पु० एक विषय जिससे

सारी पुरुषों के हाथ पैर के चिह्नों से उ-

नके मले बुरे भागको बतलाते हैं ।

सं० साम्राज्य—गुजराग्यराज्य समुद्र-

देश, सत्तार ।

प्रा० साम्ना } (सं० संमुख) पु० सम्-

साम्ना } मुख, आना, आगवाडा ।

सं० साम्प्रत—अन्व० अधुना, इदानीं, योग्य, उचित, श्व ।

प्रा० साम्हनाकरना-बोल० लड़ाई करना, लड़ना, चर्चाई करना, मुकाबिला करना ।

मं० सागझाल—(सायम=सांझ, मोनाग करना और बाना=समय) पु० सांझ, मध्याह्न का समय, दिन का अन्त ।

मं० मायुज्य—(स=साथ, युक्त=मिलना) पु० एक प्रकार की मुक्ति, परमेश्वर से मिल जाना, एक हो जाना, एकत्व, अभेद ।

मं० मार—(मृ=माना) पु० गुदा, मरना, हीर, सन, मरुत, रस, मछ मूर, २ बल, मोर, ३ मूलवान, अमलमवलक, गुलाम, ४ कीमत, मोल, ५ पाद, पात, ६ लोहा, ७ धन, ८ लाभ, कायदा, कल, ९ मु० बहुत अन्ध, उन्मत्त, भ्रष्ट ।

प्रा० मार—(सं० मार, अथवा मारि मृ=मरना) श्री० भीषणहीमोही ।

मं० मारु—(मृ=माना) पु० एक शूल का नाम, २ मोर, ३ साँप, ४ बन्दर, ५ मोरही बोली, ६ हथियार, ७ कल, ८ एक देश का नाम, ९ बन्दर, दौहा, १० हाथी, ११ बाबूत, १२ बिह, १३ कोरिया, १४ एक केर का नाम, १५ बाबूत,

१६ कई प्रकार के रंग, १७ भीरा, मधुमक्खी, १८ धनुष, १९ स्त्री, २० दीपक, २१ बल, २२ शंख, २३ चन्द्र, २४ कपूर, २५ कमल, २६ आभरण, शोभा, सुवर्ण, २७ देश, २८ पुष्प, २९ अन्न, ३० रात्रि ११ भूमि, ३२ दीप्ति ।

“ मारँगने मारँग गयो ।

मोर साँप

“ मारँग बोल्यो आय ॥

कदल ।

“ जो सारँग सारँग कहे ।

मोर मोर की बोली ।

“ मारँग मुँहने जाय ॥

साँप ।

अर्थ—मोर ने साँपको पकड़ा और वादल गजा, तो मोर अपनी बोली बोले, तो साँप मुँह से निहाल का मागे । (कहने है कि मोर का यह स्वभाव है कि जब वादल को गवेने सुनता है तो बहुत मुर्गी से बोलता है और नाचना है) ।

मं० मारुही—(मृ=माना) श्री० एक बालका नाम, द्विगिरी ।

मं० मारु—(मृ=माना) पु० रावण के एक बंधी का नाम, २ अनिवार मोर

मं० मारु—(मृ=माना, या मरु) पु० एक बन्दर, एक के मोड़े हाँड़े बाना, यन्ता, मूत ।

सं० सारदा—(सार=वच, दा=देने वाली, दा=देना) स्त्री० सारस्वती, गु० सार.देनेवाली ।

प्रा० सारना—(सं० साधन) क्रि० सं० बनाना, करना, पूरा करना, सिद्ध करना ।

सं० सारस—(सारस=तालाव) पु० एक तरह का पक्षी, जिसका कपल, ४ कमर में परनने का गहना, ५ गु० सरोवर की बीज ।

सं० सारस्वत—(सारस्वती) पु० एक देश का नाम, २. उस देश का मनुष्य, पंचगौड़ (१. सारस्वत, २. वाण्यकुल, ३. गौड़, ४. उरुज, ५ मैथिल) ये विन्ध्यपर्वत के उत्तरवासी हैं पंचद्रविड (१. महाभाष्ट्र, २. कार्नाड, ३. गुरजर, ४. द्राविड, ५ मैलंग) ये विन्ध्यपर्वत के दक्षिणवासी हैं, महागो. में एक जाति, गु० सारस्वती देवी का, सारस्वती नदी का ।

प्रा० सारा—(सं० सर्व) गु० पूरा, सम्पूर्ण, सप, समस्त, (सं० दयाल, रथ=जाना) पु० अपनी लुगई का मोड़, साना ।

सं० सारिका—(सृ=जाना) स्त्री० सनः पक्षी ।

प्रा० सारी—(सं० शास्त्री) श्री० साही सिधों के परनने अथवा ओढ़ने का कपड़ा, २. (सं० सार) दूध का सार, मलाई ।

सं० सार्धक—(स+सर्ध) गु० अर्थ सहित, २. सफल, सिद्ध, मौजूब ।

सं० सावर्ण्य—(पुं० सवर्णा, सूर्यपत्री सावर्णि) में जन्मा या सूर्य का पुत्र, १४ मनु में अष्टमपुत्र ।

सं० सार्धम्—अव्य० साकम्, साथ ।

सं० सावित्र—पुं० रुद्र. महादेव, सूर्य, बसुदेवता, ब्राह्मण ।

सं० सार्वभौम—(सर्वभूमि) पुं० सब संसार का राजा, चक्रवर्ती राजा, २. उच्चर दिया का हाथी ।

सं० साल—(सन्=जाना) पुं० एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम साख ।

प्रा० साल—(सं० शल्प, सन्=जाना) पुं० गांसी, कांसा, ताला, २. सिद्ध, ३. (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर, ४. पाठशाला, स्कूल, ५. (सं० मृगाल) पुं० सिपार, गीदड़ ।

प्रा० सालन } पुं० धाम, धांस श्री. तर-
सालना } वारी, २. साग, तरकारी ।

प्रा० सालना—(सं० शल्प, शाल=जाना) क्रि० सं० छेदना, बेचना, घसाना, पैठाना, वर्षा से छेदकरना, वर्षाना, पारकरना, लुभाना, २. क्रि० सं० दूतना, पिराना, खटकरना, दुसाथाना ।

प्रा० सालमा—पुं० एक तरह की औषध जिसका चक्र पीने से शरीर

प्रा० साही (शहदी, शहन्=जाना)

सेही) स्त्री० बंटकी, एकजानवर

निसरी पीठपर कटि बाँधे होते हैं।

प्रा० साहूकार-सं० साधुकार, साधु=

सधा, कार=करनेवाला, कृ=करना)

पु० मरामत, पैवारी, हुयडीवाला,

कोठीवाला, गढ़ा दुबानदार, रूपा-

नदार, सधा और भलाआदमी।

प्रा० साहूकारी-स्त्री० पैवारी, ले-

नदेन, सोदागरी, बगिच, व्यवहार,

हुयडी का व्यवहार।

प्रा० सिंगा-(सं० शृङ्गा) पु० तुरही,

रगसिंगा।

प्रा० सिंगार-(सं० शृंगार) पु०

शोभा, गहने कपड़ों की सजावट,

२ नौरत्नों में का एक रत्न।

प्रा० सिंगारना-(शृंगार) क्रि० सं०

सजाना, सँवरना, शोभितकरना।

प्रा० सिंघाड़ा-(सं० शृंगार) पु०

बड़ाई, अड़=जाना) पु० एहनाह

का फल जो पानी में पैदा होता है,

पानी फल।

सं० सिंह-(हिम्=मारना) पु० शेर,

केर्री, मृगराम, मृगेन्द्र पशुओं का

राजा, २ पाँचवीं राशि, ३ हिंदुओं

में एक पदवी, हिन्दू का वर्ष वि-

पर्यय होने से सिंह बनगया।

सं० सिंहदार-पु० पुरदार, फाटक।

सं० सिंहनाद-(सिंह+नाद) पु०

शेर का गर्जना, २ लड़ाई का शब्द:

सिंहके ऐसा शब्द, भयानक शब्द।

सं० सिंहनी-(सिंह) स्त्री० शेरनी।

प्रा० सिंहपौर-(सिंह+पौर) स्त्री०

बड़ा दरवाजा अथवा फाटक जहाँ

बहुत बार-सिंह की मूर्ति रखती

रखी है।

सं० सिंहलदीप-पु० लङ्का, सीलोन।

सं० सिंहविक्रान्त-पु० घोड़ा, अथवा

सं० सिंहासन-(सिंह+आसन)

पु० राजा का आसन, तख्त, फाटी

सं० सिंहिका-स्त्री० राहुकी माता,

करपपत्नी, २ सिंहनी।

सं० सिकता-स्त्री० बानू, रेत।

प्रा० सिकना-क्रि० प्र० सँवर्जना, २

सुना जाना।

प्रा० सिकरी-(सं० शृङ्गा) स्त्री०

साँकिल, सँकल, मिकली।

सं० सिक-(सिंह=सीपना) स्त्री०

सीपना हुआ, कृतसेपन।

प्रा० सिख-(सं० शिष्य) पु० चेला,

२ मानवके मनकी मानवशास्त्र।

प्रा० सिखर-(सं० शिखर) पु०

पहाड़ की चोटी, २ शिखरों के

ऊपर का मुख्यतः।

प्रा० सिखरन-(सं० शिखरिणी) पु०

दूरी में चीनी और विशदित मिनी

दूर जाने की चीज।

प्रा० सिखाई—(सिखाना) भा०
स्त्री० पढ़ाई, शिक्षा ।

प्रा० सिखाना } (सं० शिक्षण,
सिखलाना } शिक्ष=सिखाना)
क्रि० सं० पढ़ाना, पतनाना, शि-
क्षादेना, उपदेश देना, २ डाटना,
पपहाना, दंडदेना, नाड़ना करना ।

प्रा० सिगग } (सं० समग्र) गु०
सिगरी } सय, सारा, संपूर्ण,
सगग } हर एक ।

प्रा० सिफाना—(सिद्ध) क्रि० सं०
पढ़ाना, रीथना, उबालना, २
मारदाना । [संदर्भार्थ ।

प्रा० सिडाई—(गीता) स्त्री० किछाई ।

प्रा० सिद्ध—स्त्री० बीड़ाइट, बाबना-
पन, पागलपन, उन्मत्तपन ।

अ० सिगिडकेट—गोड़े व्यवहार जि-
न्हे सिगिट नियम कहती है काम
होने के लिये ।

प्रा० सिद्धा } गु० वाचता, बीड़ा,
सिद्धा } वागज, उन्मत्त, मत्त ।

सं० सिद्ध—सौजन्य कहना) गु०
कौता, संप्रद, रवेन, शुद्धपण ।

सं० सिद्ध—(सिद्ध=सिद्ध करना,
पूरा करना) पु० सद्ध प्रहार के
देवता, २ बीरी, धरमपरादि मुनि,
वेदा अपुत्र विनोद पण वेदपु-
त्रिदि हो भी विमर्श हो, बने-

मान, मनिष्यन् की बात मालूम हो,
झानी, तपस्वी, सन्त, ३ उपोनिष में
एक योग का नाम, ४ गु० पूरा,
समाप्त, पका, बना, तैयार, २ स-
सिद्ध विख्यात, जाहिर, ३ सफल,
४ साधन किया हुआ, पका ठह-
राया हुआ, सचा ठहराया हुआ,
५ निश्चय किया हुआ, निर्णय
किया हुआ ।

सं० सिद्धान्त—(सिद्ध + अन्त)
सय ठहराई हुई बात, सिद्ध
हुई बात, तर्क अर्थात् दलील
औ बात सय ठहराई भाव, क
परिणाम, नतीजा, २ सूर्य सिद्ध
आदि उपोनिष के शास्त्र ।

सं० सिद्धि—(सिद्ध=सिद्ध कर-
पूरा करना) स्त्री० मन के मनो
का पूरा होना, मनसाहित फ
का मिलना, मन चाही बात
पूरा होना, २ अणिमा आदि अ
मिद्धि (अशुद्धि शब्द को देगो)

सं० सिद्धयोग—पु० कार्यसिद्धि के
योग, मुक्तकण्ठ सुषेभदा शून्यरित
कुनेमया । गुणोत्कर्षमयुक्ता मि-
योगः प्रदीपितः । अर्थ मुक्तार
रिषा, सुषकारदुष्ट, शून्यार भी
संगत बार नीज, मूर्खानिहारद्वन्द्व
उपोनिष मन हो वक्तव्यों में उन
सिद्धि होवे तो सिद्धिबोधकरना है

प्रा० सिधारना—(सं० सिद्ध=प्राप्त)

क्रि० घ० जाना, बिदा होना, र-
वाने होना, चलाना, क्रि० स०
दुखाना करना, मरवाना, डीकटाना
करना, तरवीच देना ।

प्रा० सिनकना—क्रि० म० नाक का-
टना, नाक मारना करना ।

अं० मिनेट—युनीवर्सिटीके स्पीचरों
की कपड़ों की ।

सं० सिन्दूर—(रंग=लाल, या
टपकना) पु० एक तरह का लाल
पूराण हिमालय सिंधुमांग पर्याप्त ।

सं० सिन्धु—(रंग=लाल, या टपकना)
पु० समुद्र, समुद्र, सागर, २ एक
नदी जिसे भी इंसान और पशु भी
करते हैं, ३ सिंधु का देश, ४ हाथी
का घट, ५ एक रागिणी का नाम ।

सं० मिन्धु } (मिन्धु=हाथी का
मिन्धु } घट, कर्णार्थ घट
काहा) पु० हाथी, हाथी ।

सं० मिन्धुरगामिनी—(मिन्धुर=
हाथी, गामिनी=चलनेवाली, मन्-
=बहना) स्त्री० वह स्त्री जिसकी
हाथी की बात हो, गन्धर्विनी ।

सं० मित्र—(मित्र=मित्रता) पु० मि-
त्रता, मित्रता, मित्र, मित्र ।

सं० मित्रा—(मित्र=मित्रता) स्त्री०
एक नदी जो उत्तर के पास है, २
मित्रा, मित्र, मित्रा, मित्रा, मित्र-
ता, मित्रा के ही हैं ।

प्रा० मिमटना—क्रि० म० मिमटना,
इच्छा होना, मइरना ।

प्रा० सिय } (सं० सीता) स्त्री०
सिया } सीता, जानकी, श्री
रामचन्द्र की पत्नी और राजा
जनक की देवी ।

प्रा० सियर्षा—(सं० सीतादिप) पु०
सीतापति श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।

प्रा० सियार } (सं० मृगाक्ष) पु०
सियाल } गीदक ।

प्रा० सिर—(सं० शिर) पु० माथा,
घसनक ।

प्रा० सिरउताना—शैल० धरनेवा-
लिकमें फिरवाना, बगलबगल करना ।

प्रा० सिरकना—शैल० धुल्लुका करना ।

प्रा० सिरकाना—शैल० नादी
होना, धमिलहोना, बगल होना ।

प्रा० सिरकेजोग—शैल० कपने लोभ ।

प्रा० सिरकेमल—शैल० धोखा मि-
त्र, झूठपना ।

प्रा० सिरगुज्जलाना—शैल० बगल
काटाकाटना, मलकाकाटना, मित्र
काटना ।

प्रा० सिरवदा—शैल० घमेली, ध-
मिली ।

प्रा० सिरवदाना—शैल० बगल-
काटना, बगल काटना, धमिल
काटना, २ इच्छा, ३

प्रा० सिलपट-गु० चौपट, उमाड़,
२ चौरस, पट्टाधार ।

प्रा० सिलवट्टा-(सं० शिजापट्ट, शि-
जा=सिल, पट्ट=पीसने का पत्थर)
पु० सिल लोहा ।

प्रा० सिली (सं० शिला) स्त्री०
सिल्ली } लोहे के इयियाँ पर
घोर चढ़ानेका पत्थर, पथरी, सान ।

प्रा० सिवाना (सं० सीमा) पु०
इद, सीद, सीमा, अन्त, छोर ।

प्रा० सिवार-(सं० शैवाल, शी=सो-
ना) पु० हरी हरी काई सी चीज
जो तलाशों के पदोंमें लगती है ।

अ० सिविल-स्त्री० दीवानी का
बोहकपा ।

अ० सिविलसर्विस-स्त्री० दीवानी
की नौकरी ।

प्रा० सिसकना-क्रि० अ० सिसकी
भरना, दुनहना, बिमुरना ।

प्रा० सिहरना-क्रि० अ० सांपना,
घरघराना ।

प्रा० सिहरा-(का० सेह=तीन, औ-
र स० हार माला) पु० मौर, मुकुट,
माला, जो ग्याह में दुलहा और
दुलहिनके शिरपर पहनाई जाती है ।

प्रा० सिहराना-क्रि० अ० सरय-
राना, सनसना, बालों का सड़ा
होना, २ क्रि० स० सरलाना,

जुलजुलाना, धीरे-२ मड़ना, २
पकाना, उचाटना ।

प्रा० सिहाना-क्रि० अ० देख के
संतुष्ट होना, २ किसी अच्छी चीज
को देखकर उसके मिलने के लिये
मन ललचाना, दाद देना ।

प्रा० सीक-स्त्री० एक तरह की घास
जिसकी झाड़ बनती है ।

प्रा० सींग-(सं० शृङ्ग) पु० एक
कड़ी चीज जो चौपायों के शिर में
लगती है, शृंग, बिपाण ।

प्रा० सींगड़ा-(शृंग) पु० बारूद
रखने का बरतन, बारूतदान ।

प्रा० सींगा-(शृंग) पु० मरसिंगा ।

प्रा० सींचना-(सं० सेंचन, सिच्=
सींचना) क्रि० सं० पानी देना,
पनियाना, पाटना ।

प्रा० सींव-(सं० सीपा) स्त्री० इद,
सिवाना ।

सं० सीकर-(सीक=सींचना) पु०
जलकण, पानी के कण ।

प्रा० सीस (सं० शिजा) स्त्री०
सिखावन उपदेश, समझ की
बात नसीहत ।

प्रा० सीसना-(सं० शिञ्जण, शिष्-
=सीसना) क्रि० स० पढ़ना, बिया
का अभ्यास करना, पाना ।

प्रा० सीजना-(सं० सिद्ध=पसीना
होना) क्रि० अ० पसीनना, पसीना-



दिनेत्र, ३ कभी कभी, दृष्टा और
बाहर और संज्ञा आदि अर्थों में
भी बोला जाता है।

प्रा० सुकचाना } (सं० सक्षेप)
सुकचाना } हि० अ० लला-

ना, रुपांना, २ हरना, हि० स०
हिमी को लमाना, बचाना।

प्रा० सुकड़ना- (सं० सक्षेपन)
हि० अ० मिष्टना, इव दृष्ट होना।

सं० सुकरुण- (मु० अ० दया, दृष्ट-अ-
ला) पु० बानों वा रात्रा सुखें व।

सं० सुकर्करा- श्री० कठोर मार्ग।

सं० सुकर्म- (दृ० हरना) पु० द-
त्तन कर्म, मनपयोग, विद्वत्कर्म।

सं० सुकाल- (मु० अ० दया, वाच-अ-
मय) पु० अ० दया मय, अक्षी
अक्ष, मी० पर्व, यज्ञार्थ, इच्छाकाम्य।

सं० सुकुमार- (मु० सुन्दर, कुमार्-अ-
काल) पु० बोधना, बोधहर,
सुन्दर, नाजुह।

सं० सुहृन्- (मु० यत्ना दृ० दाना)
होले-अ० पुत्र, दृष्ट-अ० यत्ना,
होने, पु० दृष्ट-अ० यत्ना, यत्ना,
मुनि, वाचकान्।

सं० सुकेत- (मु० अ० यत्ना, नेटु-अ० यत्ना)
पु० दृष्ट-अ० यत्ना वा दृष्ट-अ० यत्ना
को दाना वा दाना वा।

सं० सुकेतुना- (सुकेतु-अ० मुनि)
श्री० दाना।

सं० सुस्त- (मुस्त=मुनी होना, अथवा
मु० अ० यत्ना वर से, दृष्ट-अ० यत्ना
(दृष्ट को) पु० यत्न, ध्यान,
अथवा, वस्तु, शान्ति, इर्ष।

प्रा० सुस्तचैन- योत० धाराम,
चैनवान।

प्रा० सुस्तपाना- योत० आराम-अ-
रना, चैन करना।

सं० सुस्तद- (मुग=यत्न, द=देने
वाता, दा=देना) क० पु० मुगदायी,
मुग देनेवाला, मुगदायक।

प्रा० सुस्तदाई } (मुग=यत्न, दा=
सं० सुस्तदायक } देना) क० पु०
मुग देनेवाला।

सं० सुवधाम- (मुग=यत्न, धाम=
पा) पु० मुग दे पर, सुवदाई।

सं० सुवताल- (मुग=यत्न + पाल्=
पालना) पु० वाचार्थ, होला।

सं० सुवना- मुग=यत्न, वा=ना-
पत्त) श्री० वाचश्रीमा, बहुतारी
सुन्दर।

प्रा० सुवार्थी (सं० मुग) पु०
[मुभी]

सं० सुवनिह- (मुग + वाच=वाचक-
अ०) क० पु० मुगपत्रक, मुगपत्र।

सं० सुवर्ती- (मुग) पु० मुगपत्र
वला, मुगपत्र-अ० यत्ना, मुगपत्र,
मुगपत्र।

सं० सुवर्ति- (मु० अ० यत्ना, अ० यत्ना=वा

ल) श्री० अरुणागति, मुक्ति, सुदृकरा।

सं० सुगन्ध-(सु=मच्छी, गन्ध=वास) श्री० अरुणावास, मङ्क, सुगन्ध।

सं० सुगन्धिन-(सुगन्ध) क० जि-
ग में अरुणी नाम हो, सुगन्ध
वाला, सुगन्धदार।

सं० सुगम-(सु=अच्छीतरहसे, गम्
=जाना) गु० सहज, आसान, सरल।

सं० सुगमता-मा० श्री० सानता,
आसानी।

सं० सुग्रीव-(सु=सुन्दर, ग्रीवा=
गर्दन) पु० वानरों का राजा
और रूद्र का बेटा जो किष्किन्धा
पुत्री का राजा और भीरामचन्द्रका
पितृ और महाबल था, २ विष्णु
के रूप का योद्धा।

सं० सुगुह-(सुगुह, सु=अच्छा, घट
=बनादृमा, घट=बनाना) गु०
सुन्दर, सुशील, सुवरा, मनोहर,
बहुत अच्छा।

सं० सुवर्णि-सं० सुन्दर रश्मि।

प्रा० सुवर्णना-(सं० सुवर्णि) क०
अ० अर्पण करना।

सं० सुवर्णि-(वा=जाना, जाना)
क० पु० श्रेष्ठ-चार, गुणवत्ता,
नेत्रचनन।

सं० सुविन्-(सु=अच्छा, विन्=पन)
गु० सुवत्, आसान, २ विविध, वे
किष्किन्धिन, रश्मिकन, महाबल।

प्रा० सुचिताई मा० श्री० निरिचिन्ता
सावधानी, बेफिक्री।

सं० सुचेत-(सु=अच्छी, चेत=सुवत्
चौकस, मावधान, शोशियार, सचेत

सं० सुजन-(सु=अच्छा, जन=
मुल्य) गु० साधु, सज्जन, म
पानस, भलाभादर्भी।

सं० सुजनता-मा० श्री० सौम्यत
सौजन्यता, सीधायन, मनमनस
भलमन्सी।

प्रा० सुजान-(सं० सज्जानी, सु
अच्छा, ज्ञानी=जाननेवाला) गु
ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, बहुत अ
जाननेवाला।

प्रा० सुमाना-कि० स० दिवान
बनाना, सममाना।

प्रा० सुति-(सं० सुन्द सु=अच्छीत
से, तथा=उपरना) गु० सुन्दर, उत
२ बहुत, अत्यन्त।

प्रा० सुडोल } (सु=अच्छा, रोज बा
सुदृढ } दब=रुग) गु० सुवत्,
सुवरा, सुन्दर, मनोहर।

सं० सुत-(सु=पैदा होना, प्र-पत्ता)
पु० बेटा, पुत्र, लड़का।

सं० सुता-(सुत) श्री० बेटा, पुत्री,
कन्या, लड़की।

प्रा० सुतार-(सं० सुत) पु० बर्त
गानी (सं० सुतारा, सु=अच्छा

सारा=नक्षत्र) अच्छा, समय, अव-
काश, पाव, दांव।

प्रा० सुधरा—पु०, अच्छा, सुन्दर,
सुदीप्त, सुहावना। [फकीर]

प्रा० सुधरासाही—पु० नानकसाही

सं० सुदर्शन—(सु=अच्छा, दर्शन=

देखना जो अच्छा देखा जाता है)
पु० विष्णु का चक्र, शु० जो देखने

में अच्छा हो सुन्दर, सुहावना।

सं० सुदामा—(सु=अच्छा, दा=देना)

पु० एक भाली का नाम जिसने मथुरा

में जाते समय श्रीकृष्ण को भाला

पहनाई थी, २ श्रीकृष्ण के साथी एक

ग्याल का नाम, ३ श्रीकृष्ण के एक

शरीर मित्र का नाम जो जाति का

प्राज्ञ तथा जिसको फिर श्रीकृष्ण ने

पहुँचरी धनवान् बना दिया, ४ धदिल

५ एक पहाड़ का नाम, ६ समुद्र।

सं० सुदि—(सु=अच्छी तरहसे, दिव=

चमकना) अण० उजाला पोखे,

सुस्पष्ट।

सं० सुदिन—(सु+दिन) पु० अच्छा

दिन, अच्छा समय।

प्रा० सुध (सं० सुधी, सु=अच्छी,

सुधि) श्री=बुद्धि) श्री० चेत,

याद, स्मरण, स्मरदात्री।

प्रा० सुधबुध—(सं० शुद्धबुद्धि) श्री०

समझ, बुझ, चेत, शुद्धज्ञ।

प्रा० सुधलेना—भोल० खरलेना।

प्रा० सुधरना—(सं० सुधारण, सु=

अच्छी तरह से, धृ=रखना) कि०

अ० सही होना, अच्छा होना, २

धनना, संकष्ट होना, ३ संभलना।

सं० सुधा—(सु=अच्छी प्रातिसे, धे=

पीना, या धा=रखना) पु० अमृत, अभी,

वीर्य, आँखें याव, २ रस, जल।

सं० सुधांशु—(सुधा=अमृत, अंशु=

किरण, जिसकी किरणें अमृत के

ऐसी आनन्द देनेवाँ हैं) पु०

चांद, चन्द्रमा, २ कपूर।

सं० सुधाकर—(सुधा=अमृत, कर=

किरण) पु० चांद, चन्द्रमा, २ कपूर।

प्रा० सुधारना—(सुधरना) कि० स०

सँवारना, पनाना, अच्छा करना, सही

करना, सजाना, ठीक ठाक करना।

सं० सुधी—(सु=अच्छी, धी=बुद्धि

जिसकी हो) पु० परिश्रम, बुद्धि-

मान, विद्वान्, सुबुद्धि, विद्व।

प्रा० सुन—(सं० श्रव्य) पु० बेरोश, मू-

च्छित्त, शीतांगी, खाली, गुमा, रीता।

प्रा० सुनसान—भोल० उजाड़, २

उपचाप, ३ पदार्थ, निराला।

प्रा० सुनना—(सं० श्रवण) कि०

स० कान देना, श्रवण करना।

सं० सुनयना—श्री० सुन्दर नेत्र वा-

ली, २. जनकपत्नी ।

प्रा० सुनहरा } (सोना) क० सो-
सुनहरी } नहला, सोने का
या सोना सा ।

प्रा० सुनार—(सं० स्वर्णकार, स्वर्ण
= सोना, कार=करनेवाला, कृ=
करना । अर्थात् जो सोने की चीज
बनावे) क० पु० सोने चांदी की
चीज बनानेवाला ।

प्रा० सुनारिन } स्त्री० सुनार की
सुनारनी } स्त्री० सुनार की
लगाई ।

प्रा० सुनारी—स्त्री० सुनारका काम ।

प्रा० सुनावनी—(सुनाना) स्त्री०
मरने के समाचार, जो कोई आद-
मी परदेश में मरजाय उसके मरने
की खबर ।

सं० सुनासीर—(सु=अच्छा, नासीर
= सेना का मुँह । अर्थात् जिसकी
सेना अच्छी सजी हुई हो) पु०
इन्द्र, देवताओं का राजा ।

सं० सुन्दर—(सु=अच्छी तरह से,
ह=मादरकरना) गु० मनोहर, सुख,
बहुत अच्छा, सुखील, खूबसूरत ।

सं० सुन्दरता—(सुन्दर) भा० स्त्री०
मनोहरता, शोभा, छवि ।

सं० सुन्दरी—(सुन्दर) स्त्री० रूपवती,
खूबसूरत स्त्री । [विन्दी ।

प्रा० सुन्ना—(सं० शून्य) स्त्री० सिकर,

सं० सुपथ—(सु=अच्छा, पथ=रास्ता)

पु० अच्छी रस्ता, सुमार्ग, अच्छी
राह, २. अच्छा चलन ।

सं० सुपर्ण—(सु=अच्छा, पर्ण=पत्ता,
या पर्ण) पु० गरुड़, २. गु० अच्छे
पत्तोंवाला ।

सं० सुपात्र—(सु+पात्र) गु० योग्य,
मलामानस, उच्चमजन, २. पु० अच्छा
घरतन, शरीर ।

प्रा० सुपारी—स्त्री० एक कड़ा फल
जिसको पान के साथ खाते हैं,
पूगीफल ।

प्रा० सुपास—पु० भाराम, सुख, सुभी-

सं० सुपुत्र—(सु=अच्छा, पुत्र=पेटा)
पु० सपूत, अच्छा लड़का ।

सं० सुप्त—(स्वप्=सोना) क० पु०
निद्रित, सोपा हुआ ।

सं० सुप्ति—भा० स्त्री० नींद, निद्रा ।

सं० सुफल—(सु+फल) गु० सिद्ध,
फलदायक, सफल, लाभकारी, २.
पु० अच्छा फलवाला पेड़ ।

सं० सुबुद्धि—(सु+बुद्धि) गु० बुद्धि-
मान, अच्छी समझवाला, चतुर,
प्रवीण ।

सं० सुभग—(सु=अच्छा, भग=पेरवर्ष)
गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, सौभाग्य-
वान्, पेरवर्षवान्, मतापी, भागवत् ।

सं० सुभगा—(सुभग) स्त्री० सौभाग्य-

स्वयनी स्त्री, सुन्दर स्त्री, यह स्त्री जिसको चसका पति बहुत चाहें।

सं० सुभगता-(सुभग)भा० स्त्री० उच्च-मिता, अच्छाई, भलाई।

सं० सुभट-(सु=अच्छा, भट=लड़ा-का) पुं० वीर, बहादुर।

सं० सुभद्रा-(सु=अच्छा, भद्र=कल्याणरूप) स्त्री० शोकपूर्ण की बहन, जिसको संन्यासी को रूप पर अर्पण कर लेगा या, २ श्रेष्ठ नारी।

सं० सुभाव-(सु+भाव)पुं० अच्छा सुभाव, सुशीलता।

प्रा० सुभीता-(सं० शुभ+रित, सु=अच्छा, रित=मैसाचारिये)पुं० अवकाश, अवसर, फुर्सत।

सं० सुभुज-(सु+भुज)पुं० सुबाहु नाम दैत्य।

सं० सुमति-(सु=अच्छी, मति=बुद्धि) स्त्री० अच्छीबुद्धि, सुमति, भलमनसाई।

प्रा० सुमन-(सं० सुमनस्, सु=अच्छा, मनस्=मन) अर्थात् जिससे मन मँसम होजाय) पुं० फूल, पुष्प, २ गुं० सुन्दर।

सं० सुमना-स्त्री० चमेली, मालती।

प्रा० सुमन्त-(सं० सुमन्त्र, सु=अच्छी, मन्त्र=सलाह देना) पुं० राजादशरथ का सारथि और मन्त्री।

सं० सुमन्त्रक-कं० पुं० बत्तोर, मुशीर, मन्त्री।

प्रा० सुमरण } (सं० स्मरण) पुं०
सुमिरण } याद, नाम लेना,
सुमरन } स्मरण, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला।

प्रा० सुमरना } (सं० स्मरण) क्रि०
सुमिरना } स० याद करना, स्मरण करना, नाम लेना, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला।

सं० सुमित्रा-(सु=अच्छी तरह से, मित्र=प्यार करना) स्त्री० दशरथ राजाकी पत्नी और लक्ष्मणकी मा।

सं० सुमुखी-(सु=सुन्दर, मुख=मुँह) स्त्री० सुन्दर मुँहवाली, सुन्दरी।

सं० सुमेरु-(सु+मेरु) पुं० मेरु पहाड़ जिसको हिंदू सोने का और रत्नों का बना हुआ कहते हैं और जहाँ देवता रहते हैं २ ज्योतिष में वृक्ष भुव, ३ जपमाला के सिरे पर का दाना या मनका। [ठसनी।

प्रा० सुम्वा-पुं० बन्दकका, कागज,

सं० सुयश-(सु+यश) पुं० अच्छा यश, अच्छा नाम, नामवरी।

सं० सुयोग-(सु+योग) पुं० अच्छी संगत, सुसंगति।

सं० सुर-(सु=अच्छा, रा=देना, अर्थात् मन चारी चीज को देने वाला, सुर=ऐश्वर्य रखना या चमकना अथवा सु=बहुत बल रखना) पुं० देवता, देव, २ सूर्य।

प्रा० सुसकारना—(क्रि० अ० फन-
फनाना, सिसकारी मारना ।

सं० सुसङ्ग—(सु+सङ्ग) पु० अ-
च्छो संगत, सुसंगति, नेक मुहवत ।

प्रा० सुसताना—(सं० स्वस्थ, या
सुस्थ) क्रि० अ० विश्रामलेना, ठह-
रना, सांसलेना, आरामकरना ।

प्रा० सुसर—(सं० श्वशुर) पु० पति
: सुसरा } या पत्नी का बाप ।

प्रा० सुसरार—(श्वशुरालय, श्व-
सुसराल } शुर=समुद्र, आलय
=घर) स्त्री० समुद्रका घर या घराना ।

सं० सुस्थ—(सु=अच्छी तरहसे, स्था-
=ठहरना) पु० भत्ताचंगा, निरोगी,
२ मुली, प्रसन्न, हर्षित ।

सं० सुस्थिर—(सु+स्थिर) पु०
मज्जल, मज्जत, निरवकाश, ठहराऊ ।

सं० सुस्वाद—(सु+स्वाद) पु०
निमग्न अथवा स्वाद हो, मजेदार,
सुरसं, मधुर, मोठा ।

प्रा० सुहाग—(सं० सौभाग्य) पु०
अच्छा भाग, २ पति का प्यार, ३
पति के जीते रहने की दशा, ४ स्त्री
का महना अर्थात् कामन दीर्घादि
जो पति के जीने का चिह्न है (यह
शब्द 'हाथा' का वलटा है) ।

प्रा० सुहागन—(सं० सौभागिनी,
सुहागिन) सुमंगा, अच्छे भाग

वाली) स्त्री० वह लुगई जिसका पति
जीता हो, सयवा स्त्री, सपतिका ।

प्रा० सुहाना—(सं० शोभन) पु०
सुहावना } सुंदर, मनभावन,
मनोहर, २ क्रि० अ० अच्छा लगना,
मनमाना, फटना, रुचना ।

सं० सुहृद—(सु=अच्छा, हृद=मन)
प्रत्युपकारकी इच्छारहित जो सप-
कारकर उसका नाम सुहृद, पु०
मित्र, दोस्त, हिन्दू, सत्ता ।

प्रा० सुअर—(सं० सूकर, सू=पेशाव
कर=करनेवाला, रु=करना) पु० एक
अंगली नखरका नाम, बराह, शूकर ।

प्रा० सूआ—
सूवा } (सं० शुक्र) पु०
सूगा } सोता, सुगा ।

प्रा० सूआ—
सूवा } पु० पकी हुई ।

प्रा० सूई—(सं० सूधी) सूय=जप-
खाना, या सिय=सीना) स्त्री०
करके सीने की चीज ।

प्रा० सूचना—(सं० सुमाण, सु, प्रा=
सूचना) क्रि० सं० पोंस लेना, बहक
लेना, सुगंध लेना ।

प्रा० सूट—स्त्री० चुन, मोन ।

प्रा० सूटमरना, यामरना—बोल-
चुपचाप रहना । [बला आना ।
प्रा० सूटमारजाना—बोल-चुपचाप
प्रा० सूड—(सं० गुणद, गुण=माना)
स्त्री० हाथी की नाक ।

प्रा० संनना } द्वि० व० - मोदना
संनना } (जैसे देह के पत्ते)

२. संनना (जैसे केनेकां) ।

प्रा० सुकी - श्री० श्री० श्री० ।

सं० सुप्र - (सु - दण्ड - सु - सुप्र, वृत्त - वृत्त, वृत्त - वृत्त) पु० सुप्र, वृत्त, वृत्त, वृत्त ।

सं० सुधम - (सुध - वृत्तनामा) पु० श्री०, श्री०, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

सं० सुधमता - (सुध - वृत्त) श्री० श्री० श्री०, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

सं० सुधमदर्शी - (सुध - वृत्त) पु० सुध, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त ।

प्रा० सुधना } (सं० वृत्त, वृत्त -
सुधना } वृत्त) द्वि० व०

वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

प्रा० सुधना - (सं० वृत्त) पु० वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त ।

सं० सुचक - (सुच - वृत्त, सुच - वृत्त -
नामा) वृ० पु० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

प्रा० सुचना - (सुच - वृत्तना) श्री० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

सं० सुचनापत्र - वृ० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

सं० सुचिक - वृ० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

सं० सुचिन - वृ० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

सं० सुचिपत्र - (सुचि - वृत्तना) वृ० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

प्रा० सुजना - (सुज - वृत्त, वृत्त - वृत्त, वृत्त - वृत्त) द्वि० व० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

प्रा० सुजी - (सं० सुचिक) वृ० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

प्रा० सुजी - श्री० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

प्रा० सुधना - द्वि० व० वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना, वृत्तना ।

प्रा० सुध - (सं० वृत्त) वृ० वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त ।

सं० सुध - वृ० वृत्त, वृत्त, वृत्त, वृत्त ।

सारथि, २ बर्हई, ३ भाट, ४ वर्ण-
संकर, दोगला, जिसका बाप राजपूत
और मा ब्राह्मणी हो, ५ पुराणों
का जाननेवाला एक पंडित जिसका
नाम लोपहर्षण था, जिसने नैमि-
षारण्य में बहुत से ऋषियों को पु-
राण और महाभारतकी कथा सुना-
ई थी और इसको बलदेव जीने मार
दाला था ।

सं० सूतक—(सू=पैदा होना) पु०
लड़के के पैदा होने से, या गर्भ के
गिरने से, या मौत होजाने से जो
अपवित्रता होती है उसे सूतक कहते हैं।

प्रा० सूतना—(सं० सुत) कि० अ०
सोना । [डोरी, रस्सी ।

प्रा० सूतली—(सूत्र) स्त्री० सन की

प्रा० सूती—(सं० सूत्रीय) पु० सूत
से बना हुआ ।

सं० सूत्र—(सूत्र=गुणना, या सिद्धि=
सीना) पु० सूत, डोरा, धागा, तागा,
२ रीति, कायदा, ३ ऐसा वाक्य
जिसमें संक्षेप से बहुत से अर्थ का
ज्ञान हो, जैसे व्याकरण आदिके सूत्र ।

सं० सूत्रधार—(धृ=चरना) पु० म-
थान नट, नाटकके खेजका मुखिया ।

प्रा० सूयन—पु० पापनामा, गानामा,
नाचिया, सुपनी ।

सं० सूदन—(सूद=मारना) पु० मा-
रना, मु० मारनेवाला ।

प्रा० सूधा—(सं० शुद्ध) पु०
भोला, निष्कपट, शुद्ध ।

सं० सूदशाला—स्त्री०
सोई घर, बाबरचीखाना, कुँ

प्रा० सूना—(सं० शुन्य) पु०
बुद्धा, रीता, २ उनाद ।

सं० सूनु—(सू=पैदा होना) पु०
पुत्र, लड़का ।

प्रा० सूय—(सं० सूर्य, सूर्य=नाम)
पु० धान, अनाज पझोरनेकी चीज ।

सं० सूयकार—(सूय=रसोई, काण
सूयकारी) करनेवाला ।

पाचक, रसोई घरदार ।

प्रा० सूम—(अ० शूम) पु० केशों
पकसी चूस, कुपण ।

सं० सूर—(सू=चलाना) पु० सूर
२ सुरदास ।

प्रा० सूर—(सं० शूर) पु० वीर, बहादुर

प्रा० सूरज—(सं० सूर्य) पु० रक्त
मानु. दिनकर, आकृताक्ष, सूर्य ।

प्रा० सूरजगहन—(सं० सूर्यगह)
सूरजग्रहण } ० सूर्य का गह ।

प्रा० सूरजमुखी—(सं० सूर्यमुखी)
पु० एक फूल का नाम ।

प्रा० सूरन—(सं० सूरण) पु० ल
मीकंद, मूरन ।

सं० सूरदास—पु० एक हिंदी कवि
और गद्दये का नाम जो अंधा
इस जिये अब हिंदुओं में अंधे हैं

होगी नमक, पहाड़ी नमक ।

प्रा० संधिया-(सिन्ध) पु० ग्वान्नियर
के महाराजा की जात जो शायद
सिन्ध नदी के पास के देश से फैले
हों, २ जहर, विष, ३ (संध)
संध लगानेवाला, चोर, घर फोरने
वाला, संधपार, संधचोर ।

सं० सेचन-(सिन्=सींचना) पु०
सींचना, छिड़काव ।

सं० सेचक-क० पु० सींचनेवाला,
भिगोनेवाला ।

सं० सेचित-स्प० आर्द्रांकृत, तरकिया
हुआ, सींचा गया, भिगोया गया ।

प्रा० सेज-(सं० शय्या) स्त्री० प-
लंग, बिछौना ।

प्रा० सेठ-(सं० श्रेष्ठ) पु० साहूकार
महाजन, दूधहीवाला, धनवान् ।

प्रा० सेत-(सं० श्वेत) पु० धौला,
सफेद, उजला ।

सं० सेतु-(सि=बांधना) पु० स्त्री०
पुल, बांध, बंध ।

सं० सेतुबन्ध-(सेतु+बन्ध) पु०
बहु जगह जहां श्रीरामचन्द्रने लंका
जानेके लिये नल और नील बानर
से पुल बंधाया था ।

सं० सेतुबन्धरामेश्वर-(सेतुबन्ध
+रामेश्वर) पु० महादेव जिन
को श्रीरामचन्द्र ने लंका जाने के
समय सेतुबन्धपर स्थापन किये थे ।

सं० सेना-(स=साथ, इन=मालिक
या सि=बांधना) स्त्री० कटक, दल,
फौज, लश्कर, सिपाह ।

सं० सेनानी-(सेना+नी=लेवल-
ना) क० पु० सेनापति, सिपाह
सालार, वृत्तान ।

सं० सेनापति-(सेना+पति) पु०
फौज का सरदार ।

प्रा० सेमल-(यं० शाल्मली) पु० एक
पेड़का नाम । [तैल ।

प्रा० सेर-पु० सोलह छटांक की

प्रा० सेल (सं० शूल) पु० बर्षी,
सेला } बर्षी, बलुप, भाला ।

प्रा० सेला-पु० एक तरह की चदर,
एक तरह का कपड़ा, २ एक
तरह का बाघ ।

प्रा० सेली-स्त्री० बड़ी या जाली
जिसको फकीर गलेमें पहने रहते हैं ।

प्रा० सेव-स्त्री० एक तरह का फल ।

सं० सेवक-(सेव=सेवाकरना) क० पु०
सेवा करनेवाला, पूजा करनेवाला,
पुजारी, नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० सेवकाई-(सेवक) मा० स्त्री०
नौकरी, चाकरी, टहल, सेवा ।

प्रा० सेवड़ा-पु० एक तरह के हिन्दू
फकीर, २ जैनमत का भित्तारी ।

प्रा० सेवती-(सं० सेवन्ती, सिम्=
नाश होना या तोड़ना) स्त्री०
एक फल का नाम ।

प्रा० सेवना—(सं० सेवन, सेव=सेवा करना) कि० सं० सेवा करना, २ पालना, अंदा सेना, अंदा को पकाना पोसना ।

सं० सेवा—(सेव=सेवा करना) स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवकाई, २ पूजा, सत्कार ।

सं० सेवित—(सेव=सेवा करना) स्त्री० उपासित, सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ ।

सं० सेवी—क० पु० पुतारी, नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० सेवें—(सं० समिता, सम्=साथ, इण्=ताना) स्त्री० बहुत ब० पैदा की बनी हुई खाने की चीज, कि० सेवा करें ।

सं० सेव्य—(सेव=सेवा करना) स्त्री० सेवा करने योग्य, पूजा करने योग्य, उपास्य, सेवने योग्य, पखडूम ।

प्रा० संकड़ा—(सं० शतद्र) पु० शतकड़ा, १०० ।

प्रा० संतालीस—(सं० सप्तचत्वारिंशत्) पु० चालीस और सात ।

प्रा० संतीस—(सं० सप्तविंशत्) पु० तीस और सात ।

प्रा० सेन } (सं० सेना) स्त्री० सं-
सेन } केत, इगारा, चिह्न, आंस का या अंगुली का इशारा, २ (सं० सैन्य) फौज, कटक, सेना, १

(सं० शयन) पु० सोना, नींदलेना ।

प्रा० सैनासैनी—बोल० आपस में आंससे या अंगुलीसे इशारा करना ।

सं० सैन्धव—(सिंधु) पु० सिंधनदी के पास के देशों में पैदा होने वाला, २ पु० सैधानिमक, लाहोरी निमक, ३ घोंदा ।

सं० सैन्य—(सेना) स्त्री० फौज, कटक, सेना, दल ।

सं० सैन्यनिकेत—पु० पदातिस्थान, सैन्यवास, छावनी ।

सं० सैन्यप्रदर्शनीय—स्त्री० फौजी नुमायश, सेना की सजावट ।

प्रा० सोअर—(सं० सूतिका सुह, सूतिका=जवा (सू=पैदा होना) और (सुह=घर) पु० कोठरी जिस में जवा अर्थात् बर खी जिस के बजा पैदा हुआ है, रहे ।

प्रा० सोआ—स्त्री० एकतरहका साग ।

प्रा० सोई—सर्वना० बरी, आप ।

प्रा० सों, से, साथ ।

प्रा० सोंग—पु० लाठी, लट्ट ।

प्रा० सोंड—(सं० सुण्डित, गुण्ड=सूचना) स्त्री० सूना अदरक ।

सं० सोढ—(सह=सहना) क० पु० चान्न, सहनशील ।

सं० सोढा—(सह=सहना) क० पु० शान्त, सहनशील, मुतरमिमत ।

सं० सोंधा—(सं० सुगन्ध) पु० सु-

गंधित मसाला जिससे बाल धोये जाते हैं, २ सुगन्ध, वास, घृ, ३ ऐसी घृ जिसी कि पिष्टी के कोरे बरतनों को भिगेने से या चने आदि के सेंकने से निकलती है ।

प्रा० सौपना } (सं० समर्पण) क्रि०
सौपना } सं० दे देना, हथाने करना, सुर्द्ध करना ।

प्रा० सौह- (सं० शाय) स्त्री-सौगंद, शयन, किरिया, कसम ।

प्रा० सौही- (सं० सम्मुख, सम्मुख) क्रि० वि० साइने, आगे, सम्मुख ।

प्रा० सोखना- (सं० शोषण, शुष्क-सूचना) क्रि० सं० सूखना, पी-लेना, सौखना ।

सोग- (सं० शोह) पु० चिन्ता, क्रिक, शोष, उदामी, दुःख ।

प्रा० सोच- (गोचना) पु० ध्यान, च-याल, विचार, २ चिन्ता, फिक्र ।

प्रा० सोचना- (सं० गोचना, मुख-सोचना) क्रि० चयाल करना, समझना, विचारना, ध्यानकरना ।

प्रा० सोभा- पु० सीधा, सड़ा ।

प्रा० सोत } (सं० मोन) पु० धारा,
सोता } चरमा, फनो ।

प्रा० सोध- (शोधना) स्त्री० शुद्ध करना, शोधन, २ मोक्ष, पता, भेट, खबर ।

प्रा० सोधना- (सं० शोधन

॥० सही करना, गलती निकालना, शुद्ध करना, जांवना, २ श्रुत चुकाना, कर्म चुकाना, ३ धानु को माफ करना ।

प्रा० सोन- (सं० शोण, शोण=माना) पु० स्त्री० एकनदीका नाम, २ रुधिर, रक्त, उदामी, प्रसवाही ।

प्रा० सोनहरा } मोना) पु०
सोनहला } गुनरा, गुनरी,
सोने का या मोने सा ।

प्रा० सोना- (सं० स्वर्ण) पु० बहुव्रीहि की धातु, कंचन, कनक ।

प्रा० मोना } (सं० शयन) क्रि० म०
मोवना } नींद लेना, पौढ़ना, सूचना ।

सं० सोपान- (स=साध, उप=पात, अनु=जीन, पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ चढ़ना होता है) स्त्री० सीढ़ी, नसेनी ।

प्रा० सोभना- (सं० शोभन) क्रि० म० सोहना, अच्छा दिरवाई देना ।

सं० सोम- (सू=वैदाहोना, या पेंकना किरण को) पु० चांद, चन्द्रमा, २ अमृत, ३ देवताओं का खतानवी कुंवर, ४ इषा, ५ यमराज, ६ कपूर, ७ मोपलतानाम मन्त्री और उसका रस, ८ (..)

महादेव, सुग्रीव, ।

सं० सोमज- (सोम + जन् = पैदा होना) पु० बुधग्रह, अमृत, दुग्ध ।

सं० सोमपा- (सोम + पा = पीना) क० पु० यज्ञवर्जिता पीनेवाला, यज्ञिन्, यज्ञ्यन् ।

सं० सोमवार- (सोम = चांद, वार = दिन) पु० चांद का दिन, चंद्रवार ।

सं० सोमवलक- पु० वरुण, केना, शीत शिरादिर, पक्षेद सौर, कैकर ।

प्रा० सोरठ- स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० सोरठा- पु० हिंदी बोली में एक छंद जिसके पहले पद में ११ और दूसरे में ११ फिर तीसरे में ११ और चौथे में ११ मात्रा होती हैं और यह छंद दोहरा उलटा है ।

प्रा० सोरह } (सं० सोदश) गु० दश मोलह } और छः ।

अं० सोशलरिक्कार्मकमेटी- सपा-जिक संशोधन समा, जलसारिकाः नाम ।

प्रा० सोहना- (सं० शोभन, शुभ = समरुना) कि० अ० शोभना, अच्छा दिखाई देना, पचना, भला दीखना ।

प्रा० सौ- (सं० शन) गु० दशद्वय ।

प्रा० सौसिरकाहोना- बोल० बहुत पल्लवान, या मगरा होना, २ बहुत सहना । [आन ।

प्रा० सौगन्द- पु० शपथ, कौरवा,

सं० सौगन्ध- मुग्ध, भा० पु० गुग्गुलु, २ कपूर ।

प्रा० सौघाई- (सं० स्वपेता, सु = अच्छा, अर्थ = मोल) स्त्री० सस्ती, सस्ताई ।

प्रा० सौफ- (सं० शनपुष्पा) स्त्री० एक देवी पावक दुर्गाई । [मीथी ।

सं० सौचि- भा० पु०; दमो भीषण,

सं० सौजन्य } (मुमन) भा० पु०

सौजन्यता } मुमनता, भलमन-सात, माधुपन, गुशीलता, शाफन ।

प्रा० सौत } (सं० सरस्ती स = एक

सौतन } ही, पनि भर्या है मिः

सवति } सका) स्त्री० एकही

पनि की दूसरी स्त्री, सौनी ।

प्रा० सौतेला- (सौत) गु० सौतसे जनपा हुआ ।

सं० सौदामनी } (मुदायन् = रादल

सौदामिनी } अर्थात् वाद्यों में

रहनेवाली, सु = बहुत, दा = देना)

स्त्री० बिजली, दापिनी ।

सं० सौध - मुषा = पोतने की एक

छाल चीज, वससे रंगा हुआ, सु

= अच्छी तरह से, पा = रखना) पु०

महल, मासाद, राजमंदिर, देवमंदिर ।

सं० सौनिक- पु० व्याध, अधिक

बहेरिया, रिसक, कसाई - जैसे

“सौनिकेनपयापगुः” ।

सं० सौन्दर्य- (सुन्दर) भा० पु०

सुन्दरता, खूबसूरती, चमकदार, रंगरूप ।

सं० सौभरि—पु० एक ऋषि का नाम जिसने मान्धाता राजा की पत्नी लक्ष्मियों से व्याह किया था जिसकी कथा विष्णुपुराण में है ये ऋषि यमुना नदी तीर पर बैठे तप कर रहे थे, वहां गरुड़ ने जाय एक मछली मार कर खाई, तब ऋषि ने गरुड़ को शापदिया कि जो फिर इस जगह आवेगा जीता न रहेगा ।

सं० सौभद्र—भा० पु० सुमद्रा का पुत्र, अभिमन्यु ।

सं० सौभाग्य—(सुभग) भा० पु० भागवान्, अच्छा भाग, २ उद्योग में चाँचा योग ।

सं० सौमित्र—(सुमित्र) भा० पु० सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण, श्रीराम-चन्द्र का छोटा भाई ।

सं० सौम्य—पु० सुभ, चन्द्र, गु० सुशील, सुन्दर, मनोहर, प्रियदर्शन, कोपराहित, मुनहमिल, बुद्धिमान ।

सं० सौम्यता—भा० स्त्री० सुशीलता, सीधायन, संमीदगी ।

सं० सौर—(सूर=सूर्य) गु० सूर्य संबंधी, सूरज का, (मरीना दिन आदि) २ पु० शनीवर ।

सं० सौरभेय } भा० पु० सुरभीपुत्र,
सौरभेयी } वृषभ, बैल व. स्त्री०
गौ, वशिष्ठ की धेनु, नन्दनी ।

प्रा० सौरज—(सं० शौर्य) भा० पु० शूरमापन, सूवीरता, बहादुरी ।

सं० सौरभ—(सुरभि) पु० सुगन्ध, सुशब्द, मदन, रंजक, १ आमकापड़।
सं० सौरि—भा० पु० शनैश्चर, कृष्ण, बसुदेव ।

सं० सौवर्चल—पु० कालान्तक ।

सं० सौहार्द—भा० पु० मित्रता, दोस्ती ।

सं० स्कन्ध—(स्कन्द=ऊपर जाना) पु० कंधा, बाँधा, २ पेड़ की धड़, मोटे गुदे, १ पुस्तक का एक भाग जिसमें कई अध्याय हों, ४ बाणासुर का बेटा ५ ब्यूह ६ युद्ध, समूह ।

सं० स्वलित—(स्वल्=गिरना) क० पु० चुन, गिरा, गिर पड़ा ।

सं० स्तन—(स्तन=शब्द करना) पु० चूँची, छाती, पयोधर ।

सं० स्तनयितु—पु० गर्भना विष्टु, विजनो, मृत्यु, रोग ।

सं० स्तब्ध—(स्तम्भ=रोकना) गु० रुका हुआ, ठहरा हुआ, मूर्ख, मुस्त, नम्रता रहित ।

सं० स्तब्धत्व—पु० अदब, दबाव ।

सं० स्तम्भ—(स्तम्भ=ठहरना, रोकना) पु० मंभा, थंभा, थंभ, धूनी, दंडाक, अटकाव ।

सं० स्तम्भन-भा० पु० शोकना,
जड़ करना ।

सं० स्तव- (स्तु=सराहना) पु० स्तुति;
बढ़ाई, प्रशंसा, तारीफ, सराह ।

सं० स्तवक-पु० गुच्छा, गुच्छदस्ता ।

सं० स्तवन-भा० पु० स्तुति, प्रशंसा ।

सं० स्तिमित-गु० अचल, स्थिर ।

सं० स्तुति- (स्तु=सराहना) स्त्री०
सराह, बढ़ाई, तारीफ, प्रशंसा-मनन ।

सं० स्तुत्य-अर्थ० प्रशंसित स्तवनीय
तारीफ के लायक ।

सं० स्तेन- (स्तेन=चोरी करना) पु०
चोर, चौर, दुहद । [दुहदी ।

सं० स्तेय-पु० चौरधर्म, चोरी,

सं० स्तोता-क० पु० प्रशंसक, तारीफ
करनेवाला ।

सं० स्तोत्र- (स्तु=सराहना) पु०
सराह, बढ़ाई, स्तुति

सं० स्तोम- (पु० पुंज, समूह, २ यज्ञ,
स्तुति, ३ मस्तक, ४ लोहदण्ड ।

सं० स्त्री- (स्त्र्यै=इच्छा होना) स्त्री०
लुगाई, नारी, औरत ।

सं० स्त्रीधन-पु० दायज, महेर ।

सं० स्वपति-वृहस्पति, यज्ञार्ता, शिल्पी ।

सं० स्थल- (स्थल=ठहरना) पु०
मूसी परती, खुरड़ी जगह ।

सं० स्थाणु-पु० शिव, २ पीपल, ३
गु० मोटा, ४ हुंकार, ५ पराविकट ।

सं० स्थान- (स्था=ठहरना) पु० जगह,
घर, ठौर, ठाँव, ठिकाना ।

सं० स्थानापन्न- (स्थान+स्थापन्न)
क० पु० जगहपनिवाला, एवजी, का-

यममुक्ताम ।

सं० स्थापन- (स्था=ठहरना) पु०
बैठाना, रखना, धरना, ठहराना,

जमाना ।

सं० स्थापित- (स्था=ठहरना) अर्थ०
बैठ याहुआ, ठहरायाहुआ, जमाया

हुआ, स्थापन कियाहुआ ।

सं० स्थायिन्-क० पु० ठहरनेवाला ।

सं० स्थाल-पु० थाला, थारा ।

सं० स्थाली-स्त्री० बटलोई, पाक
पात्र, हाँडी ।

सं० स्थावर- (स्था=ठहरना) गु०
अचल, धटल, ठहराहुआ, जो

चले नहीं, जैसे पेड़, पर्यरथादि ।

सं० स्थिति- (स्था=ठहरना) भा०
स्त्री० ठहराव, ठिकाना, पास, रहना,

पालन, धासन, मर्यादा, सीमा ।

सं० स्थिर- (स्था=ठहरना) गु० ठहरा
हुआ, अचल, धटल, दृढ़, २

शान्त, टेंटा, कोमल ।

सं० स्थिरपुंजी-स्त्री० स्थिरधन,
जायदाद और मन्कूजा ।

सं० स्थूल- (स्थूल=मोटा होना) गु०
मोटा, फूजाहुआ, बड़ा ।

सं० स्नातक- (स्ना=नहाना) क० पु०
गृहस्थब्राह्मण, ब्रवी, स्नानकारी ।

सं० स्नान- (स्ना=नहाना) गु०
नहाना । [नहानेवाला ।

सं० स्नायी-क० पु० स्नानकर्ता,

सं० स्नायु-स्त्री० नस, रग ।

सं० स्निग्ध-गु० चिकण, चिकना,
मेहरवान, दयालु ।

सं० स्नेह-(स्निह=प्यार करना, या
चिकना होना) पु० प्यार, छोह,
मोह, मेम, नेह, मिताई, २ तेल
आदि चिकनी चीज, ३ चिकनाई ।

सं० स्पन्द-संकलविह्वल, आगापीछा
पशेपेश ।

सं० स्पर्द्धा-(सार्द्ध=टाहकरना) स्त्री०
टाह मलन, हिस्सा, द्वेष, विरोध, बैर, ईर्ष्या ।

सं० स्पर्श-(स्पृश=छूना) पु० छूना,
छुहावट, परसना, २ एकतरफ की
धीमारी जो छूने से लगती है ।

सं० स्पष्ट-सश=देखना, या प्रकट
होना) गु० साफ, खुला खुजा,
शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रकट ।

सं० स्पृष्ट-(स्पृश+त, स्पृश=छूना)
गु० छुमागया, कुनसारी ।

सं० स्पृहा-(सृह=चाहना) स्त्री०
चाह, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाष ।

सं० स्पृही-क० इच्छा, अभिलाष,
दिशमन्द ।

सं० स्फटिक-(स्फट=फटना, या
खुजना) पु० विजौर का पत्थर ।

सं० स्फुटन-(स्फुट=विह्वलना) भा०
पु० गलना, फटना ।

सं० स्फुटित-क० विह्वलित, प्रफुल्लित
सं० स्फोटक-(स्फुट=फटनिह्वलना)
फोड़ा, चैचक ।

सं० स्फूर्ति-(स्फुर्=हिक्कना) स्त्री०
हिक्काव, घड़घड़ाहट, स्फुरन ।

सं० स्म-अव्य० पूर्वसमय, व्यतीत-
काल, गुजरगया ।

सं० स्मर-(स्मृ=याद करना) पु०
कामदेव, २ याद, स्मरण ।

सं० स्मरण-(स्मृ=यादकरना) पु०
चितन, याद, सुन, घेत, स्मृति ।

सं० स्मरहर-(स्मर=कामदेव, हर=
नाश करनेवाला, ह=नाशकरना)
पु० शिव, महादेव ।

सं० स्मारक-(स्मृ+मक, स्मरण
करना) क० पु० स्मृतिज्ञाता, स्मरण
करानेवाला ।

अं० स्मालकाज्जकोर्ड-अलान्याया-
लय, अदालततक्रीफा ।

सं० स्मित-स्मि=थोका हँसना) पु०
हँसना, थोकाहँसना, मुमगयाना,
मुसकुराना, गु० चिह्नित, विस्मिता

सं० स्मृति-(स्मृ=याद करना) स्त्री०
याद, सुमिरन, स्मरण, २ धर्मशास्त्र, जैसे
मनुस्मृति, और याज्ञवल्क्यस्मृति आदि ।

सं० स्यन्दन-(स्यन्द=माना) पु०
रग, २ सारथी, ३ जल, ४ वृत्त ।

सं० स्यात्-अव्य० विश्रमान, २ समी-
चीन, ३ शायद ।

प्रा० स्यानपन-(स्याना) भा० पु० स्त्री०
बुद्धिमानी, चतुराई, निपुणता,
प्रवीणता [देहो ।

प्रा० स्याना-सियाना शब्द को

प्रा० स्यार } (सं० शृगाल) पु०
स्यारल } गौदद ।

सं० सूक्- (सूक्=बनाना) स्त्री०
माता, पुण्यमाता ।

प्रा० सूचना- (सं० सूचना, सु=च-
हना) क्रि० प्र० सूना, बहना, गिरना ।

सं० सोता- (सु=बहना) पु० सोता,
बहाव, धारा, नाला ।

सं० स्व-सर्वना० अपना, और, आ-
पका, निज, निजका, २ पु० घन,
३ जाति ।

सं० स्वकीय-पु० अपना, निजका ।
सं० स्वकीया- (स्व=अपनी) स्त्री०
अपनी धारी हुई स्त्री ।

सं० स्वच्छ- (सु=बहुत, अ=छ=साफ)
पु० निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल, साफ ।

सं० स्वच्छता- (स्वच्छ) भा० स्त्री०
निर्मलता, सफाई, उज्ज्वलता ।

सं० स्वच्छन्द- (स्व=अपनी, च्छन्द=
इच्छा या मनलक्ष) पु० अपनी चाह
के अनुसार चटनेवाला, आप
मौजी, स्वाधीन, इच्छानुसार ।

सं० स्वच्छन्दता-स्त्री० स्वच्छन्दता,
स्वेच्छ-चारिता, स्वदृष्टता ।

सं० स्वतन्त्र- (स्व=अपने मन=वश)
पु० स्वाधीनता, अपने वश ।

सं० स्वतन्त्रता- (स्वतन्त्र) स्त्री०
स्वाधीनता ।

सं० स्वतः- (स्व) क्रि० वि० आपसे,
40

आपसे आप, आपही, स्वभाव से ।
सं० स्वत्वस्थापितकरना- करवा
करना, देखल करना । [खली ।

सं० स्वत्वापहरण-भा० पु० वेद-
सं० स्वधर्म- (स्व + धर्म) पु० अपनी

धर्म, अपना काम, (जैसे=वेदशास्त्र
पढ़ना पढ़ाना आकाशों का धर्म, देश

का मन्त्र करना राजपूतों का धर्म,
सेमी योजित करना बैर्यों का धर्म,

और नौकरी चाररी करना शूद्रों
का धर्म)

सं० स्वधा- (स्वद=स्वाद लेना, या
स्व=आप, धा=रखना या धे=पीना)

अव्य० पितरों को नव पिंड देते हैं,
नव घर शुद्ध बोल कर पिंड देते हैं,

२ स्त्री० दुर्गा, देवी, माया ।

सं० स्वप्न- (स्वप्=तोन) पु० सपना,
नींद में जो देखा जाय ।

सं० स्वभाव- (स्व + भाव) पु० म-
नस्सिद्धि, देव, पान, सुभाव, आदर, छ ।

सं० स्वयम्- (स्व, या सु=मन्त्रोत्तरद
से अयु=ज्ञाना) अव्य० आप, निज,
अपना, आपसे ।

सं० स्वयंवर- (स्वयम्=आपसे, वृ=
पसन्द करना) पु० स्त्रीका आपसे
पतिसे पसन्द करना ।

सं० स्वयम्भु } (स्वयम्=आपसे,
स्वयम्भु } सु=देवता) पु०

ब्रह्मा, आपसे पैदा होनेवाला ।

सं० स्वयंसिद्ध—(स्वयम्=आपसे, सिद्ध=बनाहुआ) गु० आपही सच, जो आपही से पक्का ठहराया जाय ।

सं० स्वर—(स्तृ=शब्द करना) पु० शब्द, आवाज, २ वे अक्षर जो आपसे बोले जायें और जिनके मिलने से व्यञ्जन भी बोले जायें, ३ गानविद्या में तान मुर आदि ।

सं० स्वर—(स्तृ=शब्द करना) पु० स्वर्ग, आकाश ।

सं० स्वरापगा—(स्वः=स्वर्ग, आपगा=दी) स्त्री० आकाशगंगा ।

सं० स्वरित—गु० उदात्तामुदात्त युक्त अर्थात् स्वरोंकी ऊंचीनीची आवाज ।

सं० स्वरूप—(स्व+रूप) पु० अपना रूप, २ छवि, शोभा, सुन्दरता ।

सं० स्वर्ग—(स्वर, गै=गाना या कहलाना, अर्थात् जो स्वर कहलाता है, या सु=अच्छी तरह से, श्रु=जाना अर्थात् जहाँ अच्छी तरह से जाते हैं या रहते हैं) पु० इन्द्रलोक देवताओंके रहनेकी जगह, आकाश ।

सं० स्वर्गीय } (स्वर्ग) गु० स्वर्गका ।
स्वर्ग्य }

सं० स्वर्ण—(सु=अच्छा, अर्थ या वर्ण रंग, जिस का रंग अच्छा है या सु अच्छी तरहसे, श्रुण् या श्रु=

जाना) पु० सोना, कंचन, वनक, हेम, बहुत मोल की धातु ।

सं० स्वर्णकार—(स्वर्ण=सोना, कार=करना) पु० सोनेका काम करने वाला, मुनार ।

सं० स्वल्प—(सु=बहुत, अल्प=थोड़ा) गु० बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, किञ्चित्, जरा ।

सं० स्वस्ति—(सु=अच्छा, भला, अस्=होना) अव्य० ब्रह्माण्ड, मंगल, अच्छा हो, भला हो, २ पेसाही हो, तथास्तु ।

सं० स्वस्तिवाचन—(स्वस्ति=ब्रह्माण्ड, वाचन=कहना, वच्=कहना) पु० किसी अच्छे काम के शुरुआत में किसी तरह का चिगाड़ न होने के लिये और देवताओं की आशिष पानेके लिये ब्राह्मणों ने वेद के मन्त्र पढ़वाना, शान्ति, मंगलाचार ।

सं० स्वस्तिवाचक—(वच्+अक, वच्=कहना) क० पु० मंगलपाठक दुष्मागो ।

सं० स्वस्त्ययन—(स्वस्ति+अयन) पु० शुभस्थान, शुभ का लाभ, मंगलाचरण ।

सं० स्वस्थ—(स्व=अपने, स्था=रहना) क० मुससे रहनेवाला, सावधान ।

प्रा० स्वांग-सवांग शब्द की दो ।

सं० स्वागत—(सु=अच्छी तरह से,

सं० हत—(हन्=मारना) मर्म० मारा हुआ, नष्ट ।

सं० हति—(हन्=मारना) स्त्री० मारना, हनना, गुणना ।

सं० हत्या—(हन्=मारना) स्त्री० मारना, हिंसा, खून, पाप ।

सं० हताशा—(हत+आशा) गुण० निराशा, नाउम्मीद ।

क्रा० हतुल—मान=इच्छापूर्वक, यथासाध्य ।

प्रा० हत्यारा—(सं० हत्याकार, क० पु० हत्याकरनेवाला, हिंसक, पापी, दुष्टी ।

प्रा० हथ—(सं० हस्त) पु० हाथ ।

प्रा० हथकड़ी—स्त्री० हाथकी वेड़ी, एक प्रड़ा भारी लोहेका कड़ा जो कैदियोंके हाथमें डालदिया जाता है ।

प्रा० हथखण्डा—(हथ=हाथ, खण्डा=खंजर) पु० हथ, टेंब, अन्धास, करतब, चाल, धान, हथौटी ।

प्रा० हथनी—(सं० हस्तिनी) स्त्री० हस्तिनी ।

प्रा० हथफेर—बोल० अदला बदली, परा फेरी, २ छल, क्रोव, खोटे रुपये को चाञ्चाकी से अच्छे रुपये से बदल लेना ।

प्रा० हथलेवा—(हथ=हाथ, लेवा=लेना) पु० व्याह में दुलहा दुल्हादिना का हाथ पिता देना, व्याहकी पूरतीति ।

प्रा० हथवासना—क्रि० सं० हाथ में लेना, हाथमें पकड़ना ।

प्रा० हथवासे—क्रि० वि० हाथमें अपने अधिकार में ।

प्रा० हथा—(सं० हस्त) पु० वेड, कचता, २ वेतना, खोदनी ।

प्रा० हथिया—(सं० हस्त) पु० उपोनिष में से (हवां नक्षत्र) ।

प्रा० हथियाना—(हाथ) क्रि० सं० पकड़ना, हाथ में लेलेना ।

प्रा० हथियार—(हाथ) पु० शस्त्र, २ कलकांटा, औजार ।

प्रा० हथेली—(हाथ) स्त्री० हाथ में बीचकी जगह ।

प्रा० हथौटी—(हाथ) स्त्री० चतुराई, प्रवीणता, होशियारी, गुण, हुनर ।

प्रा० हथौड़ा—पु० धन, पड़ा मातौल ।

प्रा० हथौड़ी—स्त्री० छोटा हथौड़ा ।

सं० हनन—(हन्+अन, हन्=मारना) भा० पु० मारना, घात, हिंसा ।

सं० हननीय—(हन्+अनीय, हन्=मारना) मर्म० मारनेयोग्य ।

सं० हनुमान्—(हनु=डुङ्गा, हन्=नाश करना) मनु=बाला—पु० श्रीरामचन्द्र का दूत, पवनका पुत्र, हनुमन्त, महावीर ।

सं० हन्तव्य—(हन्+तव्य) मर्म० मारने के लायक, हनने योग्य ।

सं० हन्ता—(हन् + पु०) मारनेवाला,
घातक ।

सं० हन्यमान—(हन्=मान, हन्=
माना) क० बध्पमान, मारनेवाला ।

सं० हय—(हय या हि=जाना) पु०
घोड़ा, अरब, तुरंग ।

सं० हर—(ह=लेना) पु० शिव, म-
हादेव, २ धाम, अग्नि, ३ गणित
विद्या में भातक, भिक्षुगणित में
बह अंक जो जंतुलाता है कि एक
पूरी चीज के कितने टुकड़े किये
गये हैं, नसबनुमा ।

प्रा० हर—(सं० हन्) पु० हल शब्द
को देखो ।

प्रा० हरत् (सं० हर्ष) पु० आनन्द
हरप सुख, खुशी, प्रसन्नता ।

प्रा० हरत्तना (सं० हर्षण, हर्ष=
हरपना) खुश होना) क्रि०
अ० प्रसन्न होना, खूश होना, फूल
ना, खिलना, मुसी होना, आन
न्दित होना ।

सं० हरगिरि—(हर + गिरि) पु०
महादेव का पहाड़, बैलास पहाड़ ।

सं० हरण—(ह=लेना) प्रा० पु० जव-
रदस्ती से किसीकी चीज लेलेना,
लूट, चोरी ।

प्रा० हरता—(सं० हर्ता, क० पु० लेने
वाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला,
२ चोर, लुटेरा, डग ।

प्रा० हरना—(हरण) क्रि० सं०
लेलेना, जबरदस्ती से लेना, लूटना,
चुराना ।

सं० हरणीय—(ह + अनीय, ह=
हरना) कर्म० हार्य, हरणयोग्य ।

प्रा० हरनौटा } (हरिण) पु०
हिरनौटा } हरिण का पचा

प्रा० हरमुष्टा—पु० बखी, बलवाँ,
इष्टा कष्ट ।

प्रा० हरा—(सं० हरि) पु० सफल
सबुज रंग, २ ताजा, नया ।

प्रा० हराना—(हरना) क्रि० सं०
यकाना, शिकस्त देना, हरा देना
जीतना, जीतपाना ।

प्रा० हरावल—पु० स्त्री० आगे की
सेना, (यह शब्द मुर्खी है) २
अगाड़ी, आगा ।

प्रा० हरास—(सं० हास) पु० दास,
सं० हरि—(ह=लेना, दूर करना)

पु० विष्णु, २ इन्द्र, ३ साँप, ४
मैंढक, ५ सिंह, ६ घोड़ा, ७ सूर्य,
८ चाँद, ९ मृगा, मूषा, तोता, १०
बानर, ११ यमराज, १२ हवा,

(“हरिर्विष्णोवहाविन्द्रे,
भेकेसिंहयेरवां ।

चंद्रे कीरेष्टवहे च,
यमेवावे च कीर्तिवः”) १३

१३ ब्रह्मा, १४ शिव, १५ किरण, १६
घोर, १७ वीरल, कोकिल १८

विष्णु की सवारी, गरुड़ ।
सं० हरीश—(हरि=वानर, ईश=मा-
शिक) पु० वानरों का राजा मुग्राव ।

प्रा० हरु } पु० हलका ।
हरुअ } [कावन ।

प्रा० हरुआई—श्री० हलवाई, हल-

प्रा० हर्दा } (सं० हरिनकी हरिहरावां
हर्दा } गीतारंग, ईश=पाना)
हर्दा } श्री० पदधारि का नाम ।
हर्दा }

सं० हसिन्व—(ह+हन्व, ह=लेना)
हसिन्व लेनेयोग्य ।

सं० हर्ता—(ह=लेना) क० पु० लेने
वाला, हरनेवाला, हरकरनेवाला,
पु० चौर ।

सं० हर्य—पु० अटालिका, पटारी,
पासाद, भंडा, ऊपर का कोठा ।

सं० हर्ष—(हर्ष=प्रसन्न होना) पु०
आनन्द, मुत्त, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० हर्षण—(हर्ष+अन, हर्ष=प्रसन्न
होना) भा० पु० आनन्द, उद्योति-
पत्रा एक योग ।

सं० हर्षित—(हर्ष, क० आनंदित,
प्रसन्न, खुश, भगन, प्रफुल्लित,
आह्लादित ।

सं० हल—(हल=हल चलना) पु०
हर, नांगल, लांगल, एक चीज

जिसमें किमान चीज होने म्मद,
पानी को साफ करने में २ काञ्चन
अंतर । [का पंथा ।

सं० हलभूति—श्री० कृपितृति, ऐनी
प्रा० हलका—पु० हीला, हलक,
फुलका, २ सरता, ३ ओला, नील,
अपम, मुद्ग ।

प्रा० हलकाकरना—बोल० बेभ्रतार-
ना, पत्रना, नम करना, ३ वैभ्रावक
करना, देठा करना, पानी उतारना,
लितारना, बेइसत करना ।

प्रा० हलकाजानना—बोल० मुद्ग
समझना, उपयोग जानना ।

प्रा० हलकाना—क्रि० सं० सहारा
देना, उकसाना ।

प्रा० हलकोरना—क्रि० सं० इवडा
करना, बटोरना, लपेटना, २ लह-
राना, फहराना, मौजमारना ।

प्रा० हलचल—पु० राखवली, हलच-
ली, पहरादड, दर, हुल्लड, पलया ।

प्रा० हलचलमचना—बोल० हुल्लड
होमाना, सहर होना ।

प्रा० हलदिया—(हल्दी) पु० एक
गरुड़ का जहर, २ कैंबल रोग या
पांडुरोग जिसमें सारा शरीर पीला
पड़जाता है पीछियारोग, २ मु०
पीला रंग, हल्दी सा रंग ।

प्रा० हल्दी—(सं० हरिद्रा) श्री०
एक तरह का मसाला ।

प्रा० हात } (सं० हस्त) पु० शरीर
हाथ } का एक अंग, हस्त, कर,
२ कोहनी से लेकर चौचकी अंगुली
के शिरे तकवा नाप, ३ अधिकार,
वश, कबजा ।

प्रा० हाथ आना } बोल० अपने अ-
हाथ में आना } धिकार में आना,
कपडे में आना, पिनना, हाथ
लगाना, पिनजाना ।

प्रा० हाथ उठाना — बोल० छोड़ देना,
हिमी काम के करने से रुकजाना,
२ हाथ शिरार जंग के सलाप
करना, ३ मारना, ४ भीष देना,
रोरान पांटना ।

प्रा० हाथ कमर पर रखना — बोल०
बहुत नियत होना, बहुत कमजोर
होना ।

प्रा० हाथ कानों पर रखना — बोल०
अवशेष होना, २ झटपट इनकार
कर जाना ।

प्रा० हाथ खेंचना — बोल० छोड़ना,
भुल करना, दूर भगना, हिनारि
होना, अलग होना ।

प्रा० हाथ बाटना — बोल० हिमी
अच्छे स्वाने का बहुत स्वाद लेना,
या अच्छे स्वाने को बहुत मुरी में
माना ।

प्रा० हाथ जोड़ना — बोल० चिननी
दान, विधिसना ।

प्रा० हाथ डालना — बोल० किसीका
में अपना अधिकार करना, दस्तभंद
जी करना, दखल करना, दवाना
प्रा० हाथ धोना — बोल० निराश हो
ना, नाउम्मीद होना ।

प्रा० हाथ पड़ना — बोल० अपने
धिकार में आना, कपडे में आना
हाथ लगना ।

प्रा० हाथ पत्थर तले दबना — बोल०
बेवश होना, कुछ नहीं बरसकना ।

प्रा० हाथ पसारना — बोल० माँगना,
चाहना ।

प्रा० हाथ पांव फूल जाना — बोल०
घबराना, काम करने से हिन-
किचाना ।

प्रा० हाथ पांव मारना — बोल० मिह-
नन करना, कोशिश करना, २ पका
जाना, दया परिश्रम करना ।

प्रा० हाथ फेंकना — बोल० पश या
लाकड़ी खलाना, २ मुफ्तका माल
लेना ।

प्रा० हाथ फेरना — बोल० पार क-
रना, दुनार करना, छोड़करना, गले
लगाना, फुसलाना, शाबाशी देना ।

प्रा० हाथ बन्द होना — बोल० काम
में बहुत जगा रहना, कुछ फुर्तग नहीं
जाना, २ मरीज होना, छाती हाथ
होना, निहीदस्त होना ।

प्रा० हाथवद्वाना—बोल० किसी ची-
ज के मिलने के लिये कोशिश करना,
२ दूसरे आदमी के मान असबाब
पर दखल करना ।

प्रा० हाथवांधना—बोल० हाथ जो-
ड़ना, बिनती करना ।

प्रा० हाथचैटना—बोल० जमना, किसी
हुनर में खूब अभ्यास होना ।

प्रा० हाथभरना—बोल० हाथपट्टजाना

प्रा० हाथमलना—बोल० पद्धतावा
करना, सौचकरना, क्लिष्टकरना ।

प्रा० हाथमारना—बोल० बचनदेना,
ताली मारना, २ पाना, छेछेना,
झीन लेना, लूटनेना, ३ तेलवार
से घायलकरना, धारकरना ।

प्रा० हाथमिलाना—बोल० बराबरी
का दावा करना, २ कुरती लड़ने
को तैयार होना ।

प्रा० हाथमें रखना—बोल० अपने
अधिकार में रखना, अपने अर-
थियार में रखना, वश में होना ।

प्रा० हाथलगना—बोल० हाथघाना
मिलना, पाना, हासिल होना ।

प्रा० हाथलगाना—बोल० हाथरखना,
झूना, २ झिड़कना, सजादेना, ३
किसी काम में लगना, किसीकाय
को शुरू करना ।

प्रा० हाथसमेटना—बोल० देने से

हाथको रोक लेना ।

प्रा० हाथपाईकरना } बोल० पक्षम
हाथवाहीकरना } धक्का करना,
घोलपणा चलाना, नाव मुझी
मारना, आपस में लड़ना ।

प्रा० हाथोहाथकरना—बोल० सब
मिज के करना ।

प्रा० हाथोहाथ—बोल० मुस्त, भट्ट-
पट, दुरत, फुल ।

प्रा० हाथोहाथलेजाना—बोल० भट्ट-
पट छेजाना, मुनफुर्त भपंडलेना ।

प्रा० हाथा—(सं० हस्त) पु० हाथ, २
अधिकार, वश । [का नाम ।

प्रा० हाथाजोड़ी—स्त्री० एक पौधे

प्रा० हाथी—(सं० हस्ती) पु० एक
नामवर का नामपतंग, गज ।

प्रा० हाथीदांत—(सं० हस्तीदन्त)
पु० हाथी का दांत ।

प्रा० हाथीचान्—पु० महावृक्ष ।

प्रा० हान } (हा=स्वर्गना, जोड़ना)

सं० हानि } स्त्री० घड़ी, शोधा, नुकसान ।

प्रा० हाय } (सं० हास) वि० बो०

हायहाय } आह, ओह, २ स्त्री०
दुस्त, पद्धतावा ।

सं० हायन—पु० स्त्री० वर्ष, पत्तूर,
वर्ष का दिन ।

प्रा० हायमारना—बोल० पद्धताना,
दुस्त करना, आह धारना, आह

करना) स्त्री० पुकार, गर्जन, डराने का शब्द । [उपद्रवी ।

प्रा० हुड़दंगा-पु० दंगैठ, छडाक,

प्रा० हुड़वी } स्त्री० खाने के पट्टे-
हुंडी } चाने की चिटी ।

प्रा० हुंडाभाड़ा-पु० बीमा, जोरि-
मे, पहुँचावा, किसी चीज या
सोने चांदी आदिके जेवर को एक
जगह में दूसरी जगह पहुँचा देनेके
लिये जो कुछ उधरे ।

प्रा० हुंडार-पु० भेड़िया ।

प्रा० हुंडावन } स्त्री० हुण्डी का
हुंडियावन } बड़ा, हुण्डी के
लिये जो कुछ दिया जाय ।

प्रा० हुंडीवाल-पु० फोडीवाल, वह
महामन जिसके हुण्डीका व्यवहार
होता है ।

सं० हुत-(हु=रोमना) र्मे० रोमी
हुत, पु० रोमने की चीज जैसे पीयादि ।

सं० हुतभुक्-पु० अग्निदेवता ।

सं० हुताश } (हुन+अग्नि=पचण
हुताशन } करना) अग्नि, बलि ।

प्रा० हुमकना-क्रि० अ० डडलना ।

प्रा० हुलसना-(सं० वलसन उल-
लस=सेलना, आनंद करना) क्रि०
अ० खुश होना, मसख होना, आ-
नंदित होना ।

प्रा० हुलसी-स्त्री० सुनी, खुरी,
हुलसीदास की माता का नाम ।

प्रा० हुलास-(सं० वल्लास) पु०

आनंद, हर्ष, खुरी, मसखना ।

प्रा० हुलड़-पु० रीठा, बेलड़ा, रत
चल, डोड़ा ।

प्रा० हुं-क्रि० वि० हाँ, भी, सा
भला, ठीक, अच्छा, स्वर्त्तमानका
॥ एक वचन उत्तमपुरुष का चिह्न

प्रा० हुंदां-पु० धूम्रवाम हुलड़ ।

प्रा० हूक-स्त्री० पीड़ा, दसक ।

प्रा० हूकहूककेरोना-बोल० सा
की मरके रोना, दसकके रोना ।

सं० हूति-(हे=बुलाना) स्त्री० आ-
धान, बुलावा । [सिक्का ।

प्रा० हून-पु० मदरास का सोने का

प्रा० हूलना-क्रि० स० पेलदेना,
(जैसे हाथी को) चलना, २ जु-
माना, खींचना, आंकुस मारना

सं० हत-(ह=लेना) र्मे० निपाट्टाभा

सं० हृद } (ह=लेना) पु० मन
हृदय } दिल, २ कुपट, हिरदा,
हिया, छाती ।

सं० हृषीकेश-(हृषीक=इन्द्रिय(हृष=
मसख होना) और ईश=माकि) पु०
विष्णु, मंगवान, नारायण ।

सं० हृष्ट-(हृष=मसख होना) क०
मसख, हर्षित, आनंदित, मान ।

सं० हृष्टपुष्ट-(हृष्ट=मसख, पुष्ट=पौ-

टा ताता) क० मोटा ताता, मसज,
संडमुमंद, मुतकड़ ।

सं० हे-अव्य० मगशोधन, दुजाना, आ-
हान करना, मसुषा करना, निन्दा
करना ।

प्रा० हेठ-क्रि० वि० नीचे, मलें, रेते ।

प्रा० हेठा-(सं० हेड=रोकना) गु०
दरशीकना, २ शीला, आसक्तता,
आनमी, ३ नीष । [उशला ।

सं० हेनि-सूर्यका तेन, शस्त्र, अग्निही

सं० हेतु-(हि=माना, या बदना) पु०
कारण, सचव, अर्थ, अमिश्रण,
मननय, फल ।

सं० हेम-(हि=बदना) पु० सोना,
सुरण, बंचन ।

सं० हेममाली-पु० सूर्य, स्वर्णमाली ।

सं० हेमन्त-(हि=माना, या बदना) पु०
नाके बी श्वतु, एक श्वतु जो आगहन
और पूमके महीनोमें रहती है, सर्दी ।

सं० हेय-(हा=छोड़ना) अर्थ० ह्याउव,
छोड़ने योग्य ।

प्रा० हेरना-क्रि० स० रोजना, दूदना,
२ देवना, ३ रगेदना, रगेदना ।

सं० हेरम्ब-(हे=शिव, रनि=माना)
पु० गणेश ।

प्रा० हेलना-क्रि० अ० पैरना, तैरना,
पार होना ।

सं० हेला-(रेन्=अवज्ञा करना) स्त्री०
सेल, क्रीड़ा, २ अवज्ञा, अनादर ।

प्रा० होंकना-क्रि० अ० हाँपना,
हफरफाना, ऊँचा साँन लेना ।

प्रा० होंठ } (सं० ओष्ठ) पु० मुँहके
होठ } बाहरका हिस्सा, ओष्ठ ।

प्रा० होड़-स्त्री० पण, चपन, दांव,
पेच, शर्न ।

प्रा० होड़बदना-बोल० शर्न लगाना ।

प्रा० होड़लगाना-बोल० शर्न ला-
गाना, बचन करना, पण करना, बाजी
लगाना ।

प्रा० होड़हारना-बोल० बाजी हारना ।

प्रा० होत-(होना) स्त्री० घर, शक्ति,
सामर्थ्य, पट्टा ।

प्रा० होतव-(सं० भवितव्य) पु०
भाग, किस्मत, धारण्य ।

प्रा० होतव्यता-(सं० भवितव्यता)
स्त्री० होनहार, संयोग, भाग, पारव्य ।

सं० होता-(हु=होना) क० पु०
होप करनेवाला ।

प्रा० होना-(सं० भवन, भू=होना)
क्रि० अ० रहना, विद्यमान रहना ।

प्रा० होआना-बोल० गले चला
माना ।

प्रा० होबुकना }
होलेना } बोल० पूरा होना ।

प्रा० होजाना-बोल० आपटना,
संयोग बनना ।

खानखाना नब्बाब अबदुलरहीम—जिनका छाप अर्थात् तखल्लुस् रहीम और रहमन है संवत् १५८० में उत्पन्न हुये थे याविनी भाषा तथा संस्कृत और वन-भाषा के बड़े पण्डित इनकी सभा रात दिन पण्डित जनों से भरीपूरी रहती थी संस्कृत में इनके बनाये हुये श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा में नवो रस के कविता, दोहा बहुत सुन्दर हैं संवत् १६५२ में इनका देहान्त हुआ ॥

१। गिरिधर—कविराय अन्तरवेद के रहनेवाले संवत् १७७० में उत्पन्न हुये इन की नीति सामर्थ्य सम्बन्धी कुण्डलिया विख्यात हैं ये जयपुर के जयसिंह सवाई की सभा में थे उक्त महाराजा ने इनको कविराय की पदवी दी थी ये एक कुण्डलियों का ग्रंथ बना रहे थे पर पूरा न हुआ मृत्युपश्चात् हुये परचात् उन की स्त्री ने उसे पूरा किया जिन कुण्डलियों में साई का पद पड़ा है लोग कहते हैं कि उनकी स्त्री की कही हैं ॥

१। देवकीनंदन, शिवनाथ, गुरुदत्त गुरु—ये तीन भाई कान्यकुब्ज ब्राह्मण कौशिक के समीप मकरन्द नगर के वासी हिंदी में बहुत अच्छे कवि थे इन्होंने कुंजरकाण्व तो बहुत की है परन्तु पत्नीविलास नामक एक पुस्तक की है जिसमें सब कविओं का जुदा २ रंग रंग स्वभाव आदिका वर्णन किया है जिन दिनों पत्नीविलास की रचना करते थे तब कबूतर पत्नी के वर्णन में (गुरुदत्त तुम्हें, यह झोंक़े डोला) यह पद श्रुत में कह गये जब पीछे की सोचा तो जाना कि यह काव्यागण पढ़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवश्य करके यहाँ का वात छूट्या देवयोग से गोररापुर की ओर किसी राजा के यहाँ गये यहाँ बहुत मान से ठहराये गये दो प्रायः रामा ने नानकारे दिये वहाँ गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के संवत् १८६१ में उत्पन्न हुये में (पण्डित श्रीपद त्रिपाठि) इनके मान्यों में हैं ॥

१। गंगकवि—एकनौरगांव तिला इटावा के वासी थे संवत् १५६५ में उत्पन्न हुये में बड़े कवि थे रामा घोरवर ने इनको छप्पै में एकछात्र रुपये इनाम दिये इसी प्रकार से अकबर जहाँगीर खानेखाना मानसिंह सवाई आदि सबों ने इनका बहुत मान किया और दान दिया ॥

माधकवि—कान्यकुब्ज अन्तरवेदनिवासी संवत् १७५३ में उत्पन्न हुये इनके दोहा छप्प लोकोक्ति अर्थात् जर्बुलमसज तथा नीतिसम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोल चाल में विख्यात हैं ॥

चन्द्रकवि—प्राचीन चन्दौजन सम्मलनिवासी सन् ११९८ में उत्पन्न हुये ये चन्द्रहास महाराजा पतिलदेव चौहान रणथम्भौरवाले के प्राचीन कवीरवर के श्रीलाद में ये संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आया मंत्री और कवीरवर दोनों पदों को प्राप्त हुआ और पृथ्वीराज रापसा नाम एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संस्कृत भाषा में रचे जिसमें ६९ खण्ड हैं और पुरानी पोलो हिन्दुओं की है । इस ग्रन्थ में चन्द्रकवि ने संवत् १११० से संवत् ११४० तक पृथ्वीराज का जीवन चरित्र महाकविताई के साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है छप्प छन्द तो मानों इसी कवि के भाग में थे जिसा चौपाई छन्द श्रीगुमाई मुलसीदास के हिस्से में पड़ी थी इस ग्रन्थ में क्षत्रियों की वंशावली और अनेक युद्ध और आबू पहाड़ का माहारण और दिल्ली इत्यादि राजघानियों की शोभा और क्षत्रियों के सुभाव चाल चलन व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ये कवि केवल कवीरवर ही नहीं थे वरन नीति शास्त्र और चारन के काम काज में महाशूरवीर थे संवत् ११४६ में साथ पृथ्वी राज के ये भी मारे गये इन्हीं की श्रीलाद में शारंगधर कवि ये जिन्होंने भीरनपरा और इभीर काव्य भाषा में बनाया है ॥

चिन्तामणि त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुरवाले संवत् १७२६ में उत्पन्न हुये ये महाराज भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं अन्तरवेद में सिद्धि है कि इन के पिता दुर्गापाठ करने निरत्य देवीजी के स्थान में जाते थे वे देवी जी वन की भुषां कहाती हैं टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर है एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती मसज में चारि मुख दिग्वाय बोली यही चारो तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुआ कि चिन्तामणि १ भूपण २ मतिराम ३ मठाशङ्कर या नीलकण्ठ ४ चारि पुत्र उत्पन्न हुये इन में केवल नीलकण्ठ महारथ को एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुये जेय दोनों भारी संस्कृत काव्य को पढ़ि ऐसे पण्डित हुये कि उनका नाम मलयक बोली रहेगा इन्हीं के वंश में शीतल और विशारीनाल कवि जिनका लाल भोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में मूर्धवशी भोपला महारन्द शाह के यहां रहे और इन्हीं के



वास्तवमें इसी ग्रंथके अक्षर बापभेनु दिखाई देते हैं सब तिलकमें मूर्तिमित्र आगरे
बानो का तिलक चिह्न है औ सब शतसियोंमें विक्रम शनसई औ चन्दनशतसई
इसके लगभग हैं ॥

सुन्दरेश्वर-ये कवि भाषा सारित्य के आचार्योंमें गिने जाते हैं प्रथम राजा
अर्जुनसिंह के पुत्र राजा राजासिंह गौरके यहां जाय कविराजकी पदवी पाय वृत्त
विचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रन्थको रचा तत्त्वज्ञाने राजाहिम्मतसिंह
धर्मलगायी अमेठी के यहां आय जेदविचार नाम पिंगल बनाया फिर मध्या
काजिलका गीतां धंधी औरंगजेब बादशाह के नाम भाषा सारित्य में काजिल-
काजी मर गाना मीरा पराशरद्वारा रचा इन तीनों ग्रंथों को सिवाय हमने वहीं
लिखा है कि अथात्ममत्ता ? दशरथाय २ ये दो ग्रंथ और भी इन्हों
में लिखे हुये हैं ॥

सुन्दरेश्वर-आज्ञा जालियरनिवासी संवत् १६८८ में उत्पन्न हुये ये
महाराज बादशाहके कविपे पहिले कविराय का पदपाय पीछे महाक-
विराय के पदोंपर ई इनका बनाया हुआ सुन्दरगृह नामग्रन्थ भाषा सारित्य
में बहुत ही कवि के पदमें यह अगम पड़ाया (सुन्दर कोय नहीं
सने) की इस ग्रन्थ में है ॥

संवल (कौन सुनी चन्द्रगढ़ के राजा ये इन महाराज के कोई पुत्र न
या इसलि सुरुषे सज्जननामिद पामिद पण्डित बनाकर पुत्रोत्पत्ति होने के
हेतु देवपूजा आरंभ कराया बहुत दिनोंतक पूजन होतारहा परन्तु पुत्र होने
की कुछ उम्मीद नहुी जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराशदृष्टे तब
सब पण्डितों ने एक मन होकर कहा कि आवका नाम चलना यदि आपके पुत्र
होता सो उसका नाम के दूट जानेवा संदेह या निससे उत्पन्न यह है कि हम सब
छोग मिलकर आपके नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हमारी सब
आपका नाम इस मण्डल पर बना रहे हम बात की गजाने स्वीकार किया
और आकादी कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषाकाव्य में करो तब
सब पण्डितोंने विक्रमके संवत् १८०७ में महाभारतकी भाषा चन्द्रमन्त्रमें करने
का आरंभ किया और कुछ कालमें सम्पूर्ण भारत की भाषाकाव्य में सज्जनसिंह
जी के नाम से करा है ॥

सूरदास-आज्ञा-मनवासी बाबा रामदासके पुत्र बहुभाचार्यके
१६५० में उत्पन्न हुये इन महाराज के जीवनचरित्रों से सब छोटे

उषों रपों कर बीते अन्तको अवरा होकर विक्रम के संवत् १८७१ में स्वर्गवासी हुये उनके परवान् छोटे भाई पीतमसिंहजी जो उनके स्थानाधिकृत्य उस मन्दिर को पूर्ण किया जिन्होंने देखा है वह कहते हैं कि गंगा यमुना के मध्य में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

लालाकवि लालू लालजी—गुजराती भागवतवाले संवत् १८१२ में उत्पन्न हुये महाराज बार्तिक भाषा की बोलचाल में प्रथम आचार्य हैं इनका बनाया हुआ मेघमागर ग्रन्थ इस बात का साक्ष्य है और दोहा चौपाई इत्यादि सीधे २ लयों के बनाने में भी निपुण थे सभाविनास २ माधवविलास ३ बार्तिक राजनीति ४ इत्यादि इनके ग्रन्थ बहुत सुन्दर हैं ॥

यन्त्रीदीन दोस्त्रिन—ग्राम ममनासीनिरासी त्रिला उग्राम जो कि संवत् १९२० में उत्पन्न हुये जिन्होंने महामाग्न भारतवर्ष भाषा आलहा खन्द में बनाया उक्त पण्डित भाषा काव्यादि में बड़े मनीष हैं मूरसागर रामायणादि भाषा के ग्रन्थों में बड़े विद्वान हैं महाभारत आलहाखन्द के अवलोकन करने से उनका विद्वत्पन प्रकट होता है कथनकी कोई आवश्यकता नहीं है ॥

विहारीलाल भीम प्रमथामो सं० १९०२ में ७० थे कवि जयसिंह कन्नौही महाराजा अजमेर के यहां से जयपुरकी तारीफ देरानेमे प्रकट है कि ये महाराजा बार्तिक से भी संवत् १९०१ नियमान में संवत् १८७३ तक सीनि जयसिंह हो-गरे हैं पर इतको निरवगडे कि ये कवि महाराजा बार्तिक के पुत्र जयसिंह के नाम से जो महाराजाग्रहक थे और दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रौढ संवत् १७१४ में थे यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह हिमी एक छोटी अवस्थावाली रानी पर मोहित हो रात दिन राजमन्दिर में रहने लगे राज्य के सम्पूर्ण काम काम बन्दहोगये तब विहारीलाल ने यह दोहा बनाया राजा के समक्ष हिमी जगाम मे पहुँचाया ॥ दोहा ॥ नहिं परामनहिं मयुरम नहिं विहाग यहि बात । अनी कलौही गो विजो आगे कीन हवान १ ॥ इस दोहा पर राजा अत्यन्त प्रसन्न है १०० मोहर इनाम दे कहा इमोवकार के कीन दोहा बनयो विहारीलाल ने ७०० दोहा बनाये और ७०० शतकी इनाम में गई यह सनमई ग्रन्थ अटिनीय है बहुत कवि लोगों ने इसके हजार सनमई बनाकर अपनी कविता का रंग प्रदाना चाहा पर हिमी कविओ मुख-रई बाबु नहीं हुई वह दण्ड पेमा अदुष्ट है कि अपने १८ निजद गद इसके देखे हैं और अजगद नृनि नहीं है लोग कहने हैं कि अजर कामेनु होने हैं की

पाश्र्वमे इसी ग्रंथके अन्तर वामदेनु दिखाई देते हैं सब तिलकोंमें मूर्तिमिथ आगरे वाले वा तिलक विचित्र है औ सष शतसौयोंमें विक्रम शतसई औ चन्दनशतसई इसके लगभग हैं ॥

सुन्दरविश्व-ये कवि भाषा साहित्य के आचार्योंमें गिने जाते हैं मध्यम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजारामसिंह औरके यहां भाषा कविराजकी पदवी पाय हुअ विचार नाम पिंगल सब पिंगलीमें उत्तम ग्रन्थको रचा तत्पश्चात् राजा हिम्मतसिंह बंगलगोरी अमेठी के यहां भाषा छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिर नवरात्र फाजिलगोरी राजा मंत्री औरंगजेब बादशाह के नाम भाषा साहित्य में फाजिलगोरी नाम ग्रंथ महाप्रद्युम्न रचा इन तीनों ग्रंथों के सिवाय हमने वहीं लिखा है कि अष्टात्मपकाश १-दशरथराय २ ये दो ग्रंथ और भी इन्होंने लिखे हुये हैं ॥

सुन्दरवि-प्राणाय वालियरनिवासी संवत् १६०० में उत्पन्न हुये थे राजा बादशाहके कविपे पहिले कविराज वा पदवाय पीछे महाकवि पदवी पाई इनका बनाया हुआ सुन्दरगृहकार नामग्रन्थ भाषा साहित्य में बहुत प्रसिद्ध है इन्हीं कवि के पदमें यह अंगन पढ़ाया (सुन्दर कौप नहीं सपने) कवि इस ग्रन्थ में है ॥

सबल (बौद्ध चतुर्थी चन्द्रगड के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इसलिये राजसूय सज्जनतामित्र नामिष्ठ पण्डित बुनाकर पुत्रोत्पत्ति होने के हेतु देवपूजा आरंभ कराया बहुत दिनोंतक पूजन होतारहा परन्तु पुत्र होने की कुछ उम्मीद न हुई तब इन चान से राजा और पण्डित सब निराश हुये तब सब पण्डितों ने एक मन होकर कहा कि आपका नाम सबलता यदि आपके पुत्र होता सो उस नाम के दूट जानेका संदेह थानिससे उत्तम यह है कि हम सब लोग मिलकर आपके नाम से एक पुत्रक की रचना करें जिससे हमारा वंश आपका नाम इस भूमण्डल पर बना रहे इस चान की गजाने स्वीकार किया और आकाशी कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषाकाव्य में करो तब सब पण्डितोंने विक्रमके संवत् १२२७ में महाभारतको भाषा छन्दमन्त्रमें करने का आरंभ किया और कुछ कालमें सम्पूर्ण भारत को भाषाकाव्य में सबनसिंह जी के नाम से कहा है ॥

सूरदास प्राणाय-मेनवासी बाबा रामदास के पुत्र बल्लभाचार्यके शिष्य संवत् १६७० में उत्पन्न हुये इन महाराज के जीवनचरित्रों से सब छोटे व

